श्री महावीर ग्रंथ अकादमी–अष्टम पुष्प

मुनि सभाचन्द एवम् उनका पद्मपुराण

(जैन रामायण)

(सवत् १७११ में मुनि सभाचन्द द्वारा छन्दोबद्ध हिन्दी का प्रथम जैन पद्मपुराण—विस्तृत प्रस्तावना सहित)

लेखक एवं सम्पादक
डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

प्रकाशक
श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रथम संस्करण–अक्टूबर १९८४. (वीर निर्वाण-सं. २५१०) [मूल्य–८०.००

प्रकाशक— श्री महावीर ग्रंथ अकादमी

८६७, अमृत कलश, बरकत नगर

किसान मार्ग, टोंक फाटक, जयपुर-१५

प्रतियां—११००

मूल्य—८० रुपये

मुद्रक—मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर-३ फोन : ६७६६७

अकादमी--प्रगति पथ पर

'मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण' को पाठकों एवं माननीय सदस्यों के हाथों में देते हुए अकादमी के निदेशक मंडल को अत्यधिक प्रसन्नता है। अकादमी का यह आंठवा पुष्प है और इसी के साथ सम्पूर्ण योजना की क्रियान्विति में ४० प्रतिशत सफलता प्राप्त कर ली गयी है। यद्यपि अभी ६० प्रतिशत कार्य बाकी है लेकिन अगले पांच वर्षों में हमारी योजना पूर्ण हो जावेगी ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

वैसे सभी हिन्दी जैन कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को 20 भागों में पुस्तक बद्ध कर लेना अत्यधिक कठिन कार्य है क्योंकि खोज एवं शोध में नये-नये कवि मिलते रहते हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे कवियों को हम इस योजना में प्रथम स्थान देना चाहते हैं। मुनि सभाचन्द, बाई अजीतमति, धनपाल, भ.महेन्द्रकीर्ति, सांगु, बुलाखीचन्द, गारवदास, चतुरूमल, ब्रह्म यशोधर आदि कुछ ऐसे ही कवि है जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की थाती है।

अष्टम पुष्प में केवल एक ही कवि एवं उसके पद्मपुराण को ही दे सके है लेकिन यह एक ही कवि कितने ही कवियो के बराबर है और उसका पद्मपुराण हिन्दी की अमूल्य कृति है। अब तक हिन्दी पद्मपुराण का इतिहास पं. खुशालचन्द काला से प्रारम्भ होता था जिन्होंने संवत १७८३ में पद्यबद्ध पद्मपुराण की रचना की थी लेकिन प्रस्तुत पद्मपुराण के प्रकाशन से उसका इतिहास ७२ वर्ष पूर्व चला जाता है। जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सप्तम पुष्प का विमोचन अहमदाबाद नगर में अप्रैल ८४ में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव पर आयोजित समारोह में वहां के प्रमुख व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ श्री राधेश्यामजी सरावगी द्वारा किया गया था। इसके लिये हम आपके एवं महोत्सव के संयोजक डा. शेखर जैन के आभारी हैं। विमोचन के अवसर पर अकादमी के संरक्षक एवं अ भा. दि. जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने अकादमी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए महासभा की ओर से ५००० रु. की

आर्थिक सहायता की भी घोषणा की थी। सेठी सा. की प्रेरणा से ही कलकत्ता के प्रमुख व्यवसायी श्री शांतिलाल जी जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद को स्वीकारा है। अकादमी के प्रति सेठी सा. के महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आभारी है। इसके पूर्व अकादमी का छठा पुष्प "बुलाखीचन्द बुलाकीदास एव हेमराज" महामहिम राष्ट्र पति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी द्वारा विमोचित हुआ था जो संस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण आलेख रहेगा।

नये सदस्यों का स्वागत

सप्तम भाग के विमोचन के पश्चात् जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी श्री **मानगराम जी जैन** जौहरी अकादमी के सहसरक्षक बने हैं। श्री जैन नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी, उदारमना एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। जैनाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के संघ को देहली से जयपुर लाने, जयपुर में चातुर्मास की व्यवस्था करने में आपने यशस्वी कार्य किया था। आपकी पत्नी एव सभी पुत्र आपके पदचिह्नों पर चलने वाले हैं। अकादमी के सहसंरक्षक के रूप मे हम आपका हार्दिक स्वागत करते है।

अकादमी के सह संरक्षक सदस्य बनने वालों में जयपुर के ही **श्री कपूरचन्दजी भौंसा** के हम पूर्ण आभारी है तथा अकादमी परिवार के रूप में हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री कपूरचन्दजी भौंसा नगर के सम्माननीय व्यक्ति हैं तथा सभी सामाजिक संस्थाओं को अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। सह सरक्षक सदस्यों में **आदरणीया पद्मश्री पंडिता सुमति बाईजी** शहा का हम किन शब्दों मे धन्यवाद ज्ञापित करे। **पंडिता सुमति बाईजी** महाराष्ट्र की ही नही समस्त देश की गौरव शालिनी महिलारत्न हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन शिक्षा प्रसार समाज एवं साहित्य सेवा मे समर्पित कर रखा है। आप जैन समाज में एक मात्र महिला है जिनको सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया है। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप मे हम देहली के माननीय श्री **मदनलालजी जैन घण्टेवाला** का स्वागत करते हैं। श्री मदनलाल जी देहली के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं धर्मप्रेमी महानुभाव है तथा घण्टेवाला के नाम मे देहली मे ही नहीं सर्वत्र प्रसिद्ध है। आपकी माताजी का धर्म-प्रेम दर्शनीय एवं अनुकरणीय था। ६५ वर्ष की वृद्धा होने पर भी आप नियमित मन्दिर जाती थी एवं जिन भक्ति मे अपने आपको समर्पित कर देती थी।

आकदमी के सम्माननीय सदस्यों में सर्व श्री शीलचन्द जी वृन्दावनदास जी

अहमदाबाद, मुलायमचन्द जी जैन जबलपुर, सिघई शीलचन्द जी जैन जबलपुर, माणकचन्द जी वेसाला मद्रास, पंडिता विद्युल्लता जी शहा सोलापुर, डा. बी जे. कासलीवाल सोलापुर, पंडिता गजा बहिन बाहुबली, माणकचन्द जयकुमार जी चंवरे शान्तिनाथ पाटील जयसिंगपुर, स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेनजी कोल्हापुर, एम बाई मिरजी चिक्कोड़ी, स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी भट्टारक स्वामी जी हुम्मच, कपूरचन्द जी जैन डोड्या जयपुर एवं विमल चन्द जी बैनाडा आगरा का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है समाज का हमें और भी अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

सहयोग—अकादमी के सदस्य बनाने में राजस्थानी भाषा के कवि श्री राजमल जी बेगस्या, श्री माणकचन्दजी सा. कसेरा, डा. हरीन्द्र भूषण जी जैन बाहुबली, पं. माणिकचन्दजी चंवरे कारंजा प्रभुलालजी काला एवं उनकी श्रीमती स्नेहप्रभा जी से जो सहयोग मिला है उसके लिये हम उनके पूर्ण आभारी हैं।

अमृत कलश में विद्वानों का स्वागत

सप्तम भाग के प्रकाशन के पश्चात् अर्थात् अप्रेल १९८४ से सितम्बर ८४ तक हमारे अमृत कलश में स्थित अकादमी कार्यालय में जिन विद्वानों ने पधार कर हमारे खोज शोध के कार्य को देखा तथा देखकर शुभकामनाएं एवं शुभाशीर्वाद दिया उनमें रूपायन संस्था बरूंदा के निदेशक श्री कोमल कोठारी, जैन वाड्मय के मनीषी डा. दरबारीलाल जी कोठिया, बम्बई के प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार डा. जगदीश जैन, साहू रिसर्च इन्स्टीट्यूट कोल्हापुर के निदेशक डा. विलास संगवे, अकादमी के संरक्षक माननीय श्री डालचन्दजी सा. जैन सागर, कुचामन के श्री राजमल जी छाबड़ा श्रीचन्दजी जैन सोनगढ़, श्री नन्दलाल जैन दिवाकर एडवोकेट गंज बासोदा, भगवान दास जी जैन अध्यक्ष अखिल विश्व जैन मिशन गंज बासौदा, पं सत्यन्धर कुमार जी सेठी उज्जैन एवं श्री निर्मल कुमार जी सेनानी विदिशा के नाम उल्लेखनीय है। हम अमृत कलश में पधारने के लिये सबके आभारी हैं।

८६७ अमृत कलश
बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर,

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल
निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की कलम से

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के अष्टम पुष्प "मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण" को पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता है। सप्तम पुष्प के प्रकाशन के छह महिने पश्चात् अष्टम पुष्प का प्रकाशित होना निश्चय ही स्वागत योग्य है। प्रस्तुत पुष्प में प्रथम बार हिन्दी भाषा में निबद्ध पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं उसका सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पद्मपुराण जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय ग्रंथ माना जाता है। इसलिये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं में विभिन्न आचार्यों ने पुराण ग्रंथ निबद्ध किये हैं। प्रस्तुत पद्मपुराण जैन सन्त मुनि सभाचन्द की कृति है जिसको खोज निकालने का श्रेय डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल को है। जिन्होंने इसे सम्यक् रूप से सम्पादित करके प्रकाशित भी किया है। वस्तुत: डा० कासलीवाल ने अब तक पचासों अज्ञात एवं अचर्चित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का जो यशस्वी कार्य किया है उसके सम्पूर्ण साहित्यिक समाज उनका सदैव आभारी रहेगा।

अकादमी की हिन्दी के जैन कवियों को उनका ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर बीस भागों मे प्रकाशित करने की योजना एक ऐसी योजना है जिसकी किसी से तुलना नहीं जा सकती। जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी का विशाल साहित्य है जिसका अता पता पाना भी दुष्कर कार्य है। आरम्भ में जब डा० कासलीवाल ने मुझे अकादमी का परिचय कराया तथा अपनी योजना रखी तो मुझे स्वयं को विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हे इतनी सफलता मिल जावेगी और एक के पश्चात् दूसरा भाग प्रकाशित होता रहेगा लेकिन जब अष्टम भाग पर दो शब्द मुझसे लिखने के लिये कहा गया तो स्वत. ही मन प्रसन्नता से भर गया। वास्तव मे जैसा कि गत १५–२० वर्षो से मैंने डा० कासलीवाल को देखा है उन्हें एक समर्पित सेवाभावी लेखक एव सम्पादक के रूप मे पाया हैं। साहित्य सेवा एव इतिहास की खोज ही उनके जीवन का एक मात्र मिशन है जिसका मूर्त्त रूप अब तक प्रकाशित उनकी ५० से भी अधिक पुस्तकें एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके सैकडों खोज पूर्ण लेखो मे देखा जा सकता है।

डा. कासलीवाल द्वारा स्थापित श्री महावीर ग्रंथ अकादमी का संरक्षक बनने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। मै चाहता हूं कि अकादमी द्वारा जैन हिन्दी कृतियो को 20 भागो मे प्रकाशित कराने के पश्चात् अथवा उसके पूर्व ही जैन

कथाओं पर आधारित अथवा जैन सिद्धान्तों एवं शिक्षा पर आधारित सामान्य पाठकों के लिए सीरीज में साहित्य का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हो जो हजारों की संख्या में छप कर सभी के हाथों में पहुंचे। आज इस प्रकार की पुस्तकों की बहुत अधिक मांग है। आशा है डा० कासलीवाल एवं अकादमी का निदेशक मंडल इस योजना पर भी ध्यान देगा।

अकादमी की पुस्तकें सभी पाठकों के हाथों में पहुँचे इसके लिए यह आवश्यक है कि हम उसके प्रकाशन को खरीदें अथवा उसके सदस्य बनकर प्राप्त करें। यद्यपि समाज का अकादमी को आवश्यक सहयोग मिल रहा है लेकिन अभी इसकी वृद्धि में पर्याप्त स्थान है। आशा है अकादमी को समाज का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

अन्त में मैं प्रस्तुत प्रकाशन का स्वागत करता हूं। साथ ही में मैं डा० कासलीवाल का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे प्रस्तुत पुस्तक पर दो शब्द लिखने का अवसर प्रदान किया है।

कमलचन्द कासलीवाल

लाल कोठी,
टोंक रोड, जयपुर।

दो शब्द

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्रीमहावीरजी पर आयोजित पञ्च कल्याणक महोत्सव के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सा. सेठी ने श्री महावीर ग्रंथ अकादमी एवं उसके निदेशक डा. कस्तूरचन्द जी कासलीवाल का परिचय कराया। यद्यपि डा. कासलीवाल जी का नाम एवं ख्याति तो बहुत पहिले से ही सुन रखी थी लेकिन उनसे भेंट करने का यह मेरा प्रथम अवसर था। इसी अवसर पर सेठी सा. ने मुझसे अकादमी का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का आग्रह किया तथा डा. कासलीवालजी ने कुछ पुस्तकें भी मुझे भेंट की। यद्यपि साहित्य में मेरी विशेष गति नहीं है फिर भी माननीय सेठी सा. का प्रस्ताव मुझे स्वीकार करना पड़ा। लेकिन मैं अध्यक्ष पद के उत्तरदायित्व को कितना निभा सकूंगा यह मैं स्वयं नहीं जानता।

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी एक साहित्यक संस्था है। साहित्य निर्माण एवं प्रकाशन उसका प्रमुख उद्देश्य है। समस्त हिन्दी जैन साहित्य को 20 भागो मेंप्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना उसकी मूलभूत योजना है। जिसमें वह बराबर प्रयत्नशील है और अब तक उसके द्वारा आठ भाग प्रकाशित भी हो चुके हैं। जो अपने आप में महत्त्वपूर्ण सफलता है। किसी एक भाषा के साहित्य को योजना बनाकर प्रकाशित करने वाली श्री महावीर ग्रंथ अकादमी सम्भवतः प्रथम संस्था है ऐसा मेरा अपना विचार है यहीं नहीं इसके ५०१) तक के सदस्यों को अपनी सदस्यता शुल्क से अधिक मूल्य की पुस्तकें प्राप्त हो जावेंगी जो अपने आप में एक प्रशंसनीय सेवा है।

मुझे ऐसी संस्था का अध्यक्ष बनने का जो सम्मान मिलाहै इसके लिए मै अकादमी के सभी सदस्यों का आभारी हूं। इस अवसर पर मैं निदेशक मंडल के सभी सदस्यों, सम्माननीय सदस्यों, एवं विशिष्ट सदस्यों सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं तथा उनसे विशेष सहयोग की आशा रखता हूं। मैं अकादमी के निदेशक डा. कासलीवाल जी का भी आभारी हूं जिन्होंने ऐसी संस्था की स्थापना करके सम्पूर्ण हिन्दी जैन साहित्य की खोज एवं प्रकाशन जैसी साहित्य सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

Shanti Lal Patodi
(शान्तिलाल पाटोदी)
अध्यक्ष

कलकत्ता
दिनांक ३१-७-८४

सम्पादकीय

देश के जैन ग्रंथागार हिन्दी ग्रंथों की पाण्डुलिपियों के लिए जितने समृद्ध भण्डार हैं उतने दूसरे ग्रंथागार नहीं है। इन ग्रंथालयों में ५० प्रतिशत से भी अधिक संग्रह हिन्दी ग्रंथों का रहता है जो विगत ४००–५०० वर्षों में लिखा गया है इसीलिए किसी भी ग्रंथ भण्डार की शोध खोज एवं सूचीकरण का परिणाम अचर्चित एवं अज्ञात कृतियों की प्राप्ति होती है। मैंने अभी विगत वर्ष एवं इस वर्ष में जितने शास्त्र भण्डार देखे हैं उनमें प्रत्येक में हिन्दी की अचर्चित कृतियां अवश्य मिली है।

प्रस्तुत पद्मपुराण की उपलब्धि भी सन् १९८३ में डिग्गी (राजस्थान) के शास्त्र भण्डार को देखते समय हुई थी। जब पद्मपुराण की पाण्डुलिपि मिली तो आनन्द से मन उछल पड़ा और अपूर्व प्रसन्नता छा गयी। पाण्डुलिपि को बहुत समय तक देखता रहा कि कहीं देखने में भ्रम तो नहीं हो रहा है। इसी शास्त्र भण्डार में मुझे धनपाल कवि के ऐतिहासिक गीत, भ. महेन्द्रकीर्त्ति के आध्यात्मिक पद भी उपलब्ध हुए हैं जो इसके पूर्व अज्ञात एवं अनुपलब्ध माने जाते थे। वास्तव में राजस्थान, देहली एवं आगरा मंडल के जैन कवियों ने हिन्दी की जितनी सेवा की है वह साहित्यिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है लेकिन उनकी शुद्ध साहित्यिक सेवाओं को भी साम्प्रदायिक नाम देकर उसे हिन्दी साहित्य के इतिहास में अविवेच्य घोषित कर दिया गया जिसका परिणाम जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य के साथ उपेक्षा का व्यवहार होता रहा है। श्री महावीर ग्रंथ अकादमी की स्थापना के पीछे यही एक भावना रही है कि शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत रचनाओं को प्रकाश में लाया जावे और उनमें भी अब तक अज्ञात एवं अचर्चित कवियों एव उनकी रचनाओं को प्रमुखता दी जावे। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि अब तक प्रकाशित आठ भागों मे आये हुए अधिकांश कवि अज्ञात एवं अचर्चित हैं जिनमें ब्रह्म रायमल्ल, भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, गारवदास, चतुरूमल ब्र. जिनदास, भ. रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द्र, आ. सोमकीर्ति, ब्र. यशोधर, स्व. बुलाखीचन्द, बुलाकीदास, हेमराज, बाई अजीतमति, धनपाल, देवेन्द्र व महेन्द्रकीर्त्ति एव मुनि सभाचन्द के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। लेकिन निरन्तर खोज एवं शोध के कारण हिन्दी भाषा के जैनकवियों

की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो वस्तुतः स्वागत योग्य है लेकिन संख्या में वृद्धि के कारण उन्हें २० भागों में समेटना कठिन प्रतीत होने लगा है।

पद्मपुराण कथानक एवं भाषा की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। हिन्दी में मुनि सभाचन्द्र द्वारा विरचित प्रस्तुत पद्मपुराण पुराणसंज्ञक प्रथम कृति है इसलिये इस पुराण कृति का महत्त्व और भी बढ़ गया है। पद्मपुराण–पउमचरिय–पउमचरिउ–पद्मचरित–पद्मपुराण संज्ञक कितनी ही कृतियां विभिन्न विद्वानों ने लिखी है। वैष्णव धम के १८ पुराणों मे पद्मपुराण भी एक पुराण है। आचार्य रविषेण प्रथम जैनाचार्य है जिन्होने ७वीं शताब्दि में ही पद्पुराण जैसा ग्रंथ निबद्ध करने का गौरव प्राप्त किया जिसका अनुसरण आगे होने वाले कितने ही कवियों ने किया और विभिन्न नामो से पद्मपुराण के कथानक को छन्दोबद्ध किया।

प्रस्तुत पद्मपुराण पर राजस्थानी भाषा का सबसे अधिक पुट है। सामाजिक रीति-रिवाजों के विशेष अवसरों पर मिष्ठान्न एवं खाद्य सामग्री के नामों का उल्लेख, जोधपुर एवं उदयपुर जैसे नगरो के उल्लेख इस बात का द्योतक है कि कवि का राजस्थान वासियों से अधिक सम्पर्क था। यह भी सम्भव है कि वह स्वयं भी इन नगरों मे जाकर शोभा बढ़ायी हो।

पद्मपुराण एक कोश ग्रंथ के समान है जिसमें विभिन्न शब्दावलियों के अतिरिक्त वनस्पतियों, विभिन्न प्रकार के फूलों, ग्राम एव नगरों के नामों का जो उल्लेख हुआ है वह अपने आप मे अद्वितीय है। पुराण मे विभिन्न पात्रों के इतने अधिक नाम हो गये हैं कि उनको याद रखना भी कठिन प्रतीत होता है लेकिन सभी पात्र इतने आवश्यक भी हैं कि उनके बिना कथानक अधूरा ही प्रतीत होने लगता है। पुराण में ऋषभदेव एवं महावीर के जीवन पर अच्छा इतिवृत्त दिया गया है। २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का जीवनवृत्त तो पद्मपुराण कथानक का एक भाग ही है क्योंकि पुराण के नायक राम, लक्ष्मण, सीता हनुमान, राजा जनक, सुग्रीव एवं प्रति नायक रावण, कुम्भकरण, खरदूषण तथा अंजना, पवनंजय, लव कुश सभी उन्हीं के शासन काल में हुये थे। सगर चक्रवर्ती एवं भरत बाहुबली का व्यक्तित्व भी पद्मपुराण में अंकित है। जिसके अभाव में पद्मपुराण का इतिवृत्त पूरा भी नहीं हो पाता।

पद्मपुराण में विद्याओं के सहारे अधिक लड़ाई होती है और बिना विद्याओं की सहायता के निर्णायक युद्ध नही लड़ा जा सकता है। रावण को अपनी विद्याओं पर बड़ा गर्व था किन्तु यही गर्व उसे ले बैठता है क्योंकि यह भी सही है कि पुण्यशाली व्यक्तियो पर विद्याओं का कोई असर नही होता है। सबुक को १२ वर्ष की साधना के पश्चात् भी सूरजहास प्राप्त नहीं हो सका जबकि लक्ष्मण को वह स्वतः ही प्राप्त हो गया। रावण के साथ युद्ध के उत्कर्ष काल में राम लक्ष्मण को

देवों ने दिव्य वस्त्र प्रदान किये। रावण द्वारा चलाया गया चक्र लक्ष्मण के हाथ में आ गया और फिर उसी से रावण की मृत्यु हुई।

पद्मपुराण जैन धर्म का प्रमुख कथानक पुराण है जिसका विगत १२००–१३०० वर्षों से अत्यधिक स्वाध्याय होता रहा है। पद्मपुराण के पश्चात् हरिवंशपुराण एवं महापुराण की रचनाएं हुई जो प्रथमानुयोग ग्रंथों के विषय विवेचना का आधार बना। इन ग्रंथों के अध्ययन से श्रावकों को त्रैसठ शलाका पुरुषों के जीवन की एवं दूसरे पुण्यशील व्यक्तियों के जीवन की जानकारी मिलती है जो जीवन को नया मोड़ देने में समर्थ है

प्रस्तुत भाग में पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि के आधार पर ही मूल पाठ दिया गया है। पाठ भेद अन्य प्रतियों के अभाव में नहीं दिये जा सके लेकिन एक मात्र उपलब्ध पाण्डुलिपि बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध लिखी हुई है। इस पुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द काष्ठासंघ भट्टारक पराम्परा के सन्त थे। वे काव्य रचना मे अत्यधिक कुशल थे इसलिये पद्मपुराण जैसे महाग्रंथ के कथानक को अपने पद्मपुराण मे समेट लिया। उन्होंने दोहा, चौपई, सौरठा जैसे लोकप्रिय छन्दों का प्रयोग करके अपनी कृति को और भी जन-जन की कृति बना दी।

पद्मपुराण के सभी प्रमुख पात्रों के पूर्वभव का भी वर्णन किया गया है जिसका प्रमुख उद्देश्य पूर्वकृत कर्मों के प्रभाव को बतलाना है। यही नहीं विशिष्ट वर्तमान जीवन में शुभ अशुभ अथवा इष्ट वियोग एवं अनिष्ट का संयोग बिना कर्मफल के नहीं होता। राम, लक्ष्मण, सभी प्रमुख पात्रों के पूर्व भवों का वर्णन किया है जिसके कारण उन्हें वर्तमान जीवन में विभिन्न कष्टों का सामना करना पड़ा है। इस प्रकार के प्रसंगों से पाठकों के मन पर गहरी चोट लगती है और वे शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं।

अन्त में कविवर कविवर सभाचन्द ने पद्मपुराण की प्रशंसा करते हुये लिखा है जो कोई भी पद्मपुराण को पढ़ेगा उसके मिथ्यात्व का नाश होगा और अन्त में स्वर्गलाभ होगा।

ऐसा है यह पदम चरित्र, मिथ्या मोह मिटै भव सत्र।
पढै पढावै कहैं बखान, पावै स्वर्गां देव विमान ।। ५७४६ ।।

पद्मपुराण की पाण्डुलिपि को प्रकाशन के लिए देने हेतु मैं दिगम्बर जैन मन्दिर डिग्गी के व्यवस्थापकों का एवं विशेषतः श्री माणकचन्दजी सेठी का आभारी हूं आशा है अन्य शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थापकों का भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा जिससे साहित्य प्रकाशन का कार्य व्यवस्थित रूप से होता रहे।

अन्त में मैं अकादमी के संरक्षक माननीय श्री कमलचन्दजी सा. कासलीवाल का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक पर एवं अकादमी की योजना पर दो शब्द लिखे है। श्री कासलीवाल जी नगर के उद्योगपति ही नहीं है किन्तु प्रमुख समाज सेवी भी है। इसी तरह मैं अकादमी के अध्यक्ष माननीय श्री शांतिलाल जी जैन कलकत्ता का भी आभारी हूं जिन्होंने अपना संक्षिप्त वक्तव्य लिखा है। आप युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में बराबर योगदान देते रहते है।

जयपुर
२ अक्टूबर १९८४

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रस्तावना

जैन ग्रन्थागार हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार है। इनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की खोज अभी आधी भी नहीं हो सकी है। राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डारों की यद्यपि पांच भागों में सूची प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अभी तक राजस्थान में भी कितने ही ऐसे भण्डार हैं जिन्हें कभी देखा नहीं जा सका। ऐसे ही भण्डारों में एक टोंक जिले में स्थित डिग्गी कस्बे के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार है जिसको देखने का मुझे गत वर्ष अगस्त८३ में सौभाग्य मिला और उसी समय कितनी ही अचर्चित कृतियों की प्राप्ति हुई। ऐसी अचर्चित कृतियों में मुनि सभाचन्द्र विरचित हिन्दी पद्म पुराण का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है।

जैन साहित्य में राम के जीवन पर सभी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक भाषाओं में विशाल साहित्य मिलता है। वस्तुतः राम जिस प्रकार महाकवि वाल्मीकि एवं तुलसीदास के आराध्य रहे हैं उसी प्रकार वे विमलसूरि, स्वयंभू, रविषेणाचार्य एवं पुष्पदन्त जैसे महाकवियों के काव्यों के नायक है। राम ६३ शलाका महापुरूषों में ८ वें बलभद्र हैं जो उसी भव से मोक्ष जाते हैं।

रामकथा का उद्भव एवं विकास :—

वेदों में रामकथा का कोई महत्वपूर्ण स्रोत अथवा उल्लेख नहीं मिलता नहीं मिलता। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु (१०।६०।४) एवं दशरथ (१।१२६।४) नामों का उल्लेख अवश्य मिलता है लेकिन वे रामकथा के अंगभूत नहीं है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण (१०।६।१।२) तैत्तरीय ब्राह्मण (३।१०।६) जैमनीय ब्राह्मण (१।१६।२।६३) छन्दोग्योपनिषद (५।११।४) वृहदारण्यकोपनिषद (३।१।१) में जनक का जो उल्लेख मिलता है वह रामकथा के उत्स फूटते भर मालूम पड़ते है। संस्कृत भाषा में वाल्मीकि रामायण का जो वर्तमान रूप उपलब्ध है वह सभी उपलब्ध राम कथा काव्यों में प्राचीनतम है। लेकिन विदेशी विद्वान् डा० वेबर के मत में राम कथा का मूल रूप दशरथ जातक में सुरक्षित है[1] इसी तरह डा० सेन के

१. ए. वेबर—आन दि रामायण पृष्ठ ११

मतानुसार राम कथा के मुख्य स्रोत दशरथ जातक एवं रावण सम्बन्धी आख्यान हैं।[2]

लेकिन राम कथा को जितनी लोकप्रियता वाल्मीकि रामायण ने प्रदान की उतनी लोकप्रियता इसके पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुई। वाल्मीकि रामायण के रचनाकाल पर बिद्वानों के विभिन्न विचार हैं उनमें वेल्वलकर ई० पू० २०० तक, चिन्तामणि विनायक वैद्य ने ईसा पूर्व १२०० में २०० ईस्वी पश्चात् तक, फादर बुल्के ने ६०० ईसा पूर्व तक, कीथ ने ४०० ई० पूर्व तक, विंटरनिट्ज ने ३०० ईसा पूर्व तक, बलदेव उपाध्याय ने ५०० ईसा पूर्व तक तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने १५० से २०० ईसा पूर्व तक माना है। राम कथा के विद्वानों के मतानुसार इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि की रामायण ईसा के ४००-५०० वर्ष पूर्व ही लोकप्रिय बन चुकी थी लेकिन उनकी इस रामायण के वर्तमान रूप को प्राप्त करने में उसे अवश्य ही ७००-८०० वर्ष लगे होंगे और ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दि तक उसे वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो गया होगा।

जैन धर्म में राम का स्थान :—

भगवान राम आठवें बलभद्र हैं जो २० वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के शासनकाल में हुए थे। लेकिन राम का जीवन मुनिसुव्रतनाथ के शासन काल से लेकर भगवान महावीर तक मौखिक रूप से ही चलता रहा और किसी ने लिपिबद्ध किया भी हो तो उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद जब ग्रन्थों के लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया गया और प्राकृत भाषा मे सिद्धान्त ग्रन्थों को सूत्र रूप मे लेखबद्ध किया जाने लगा। लेकिन रामकथा का प्राकृत भाषा में पउमचरिय के रूप में काव्यबद्ध करने का श्रेय आचार्य विमल सूरी ने प्राप्त किया। पउमचरिय महाराष्ट्री प्राकृत का सुन्दरतम महाकाव्य है जिसकी रचना वीर निर्वाण संवत् ५३० मे हुई थी। पूरा काव्य ११८ संधियों मे विभक्त है।

पंचवे वाससया दुसमाए तीस वरस संजुत्ता।
वीरे सिद्ध मवगये तओ निबद्धं इमे चरियं॥

तिलोयपण्णत्ति प्राकृत भाषा का महान ग्रंथ है इसमें २४ तीर्थंकरों ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन के प्रमुख

१. दिनेसचन्द्रसेन—द० बंगाली रामायण पृष्ठ ३, ७, २६-४१ आदि

तथ्य संग्रहीत हैं। उन्हीं के आधार पर एवं गुरु परम्परा से प्राप्त कथानकों के आधार पर जैन पुराणों की रचना की गई है। नवीं शताब्दि में शीलंकाचार्य ने चउपन्न महापुरिस चरिय लिखा जिसमें राम लक्खण चरिय भी दिया हुआ है। यह कथा विमलसूरि के पउमचरिय से प्रभावित है इसी तरह भद्रेश्वरकृत कहावली के अन्तर्गत रामायणम एवं भुवनतुंग सूरि कृत सीया चरिय तथा राम लक्खण चरिय कथायें प्राप्त होती हैं।

संस्कृत भाषा में आचार्य रविषेण का पद्मचरितम् (पद्मपुराण) रामकथा से सम्बन्धित प्राचीनतम रचना है जिसकी रचना वीरनिर्वाण संवत् १२०४ तथा विक्रम संवत् ७३४ में की गई थी। यह पुराण १२३ पर्वो में विभक्त है तथा १८००० श्लोक प्रमाण की बड़ी भारी कृति है। रामकथा का ऐसा सुन्दरतम वर्णन सस्कृत भाषा में प्रथम बार किया गया है। १२ वीं शताब्दि मे आचार्य हेमचन्द्र ने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में रामकथा का अच्छा वर्णन किया है। १५ वी शताब्दि में ब्रह्म जिनदास ने पद्मपुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। यह पुराण ८३ सर्गों में विभक्त है तथा १५००० श्लोक प्रमाण हैं। पुराण की भाषा सरल एवं आकर्षक है। १६ वीं शताब्दि में भट्टारक सोमसेन ने वैराट नगर (राजस्थान) में रामपुराण की रचना समाप्त की थी तथा १७ वीं शताब्दि भट्टारक धर्मकीर्ति ने पद्मपुराण की 1612A D. में रचना करके रामकथा को और भी लोकप्रियता प्रदान की। मुनि चन्द्रकीर्ति द्वारा रचित पद्मपुराण की रचना आमेर शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। अपभ्रंश भाषा में महाकवि स्वयम्भू ने पउमचरिउ की रचना करने का यशस्वी कार्य किया। पउमचरिउ एक विशाल महाकाव्य है जो पांच काण्डों—विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड एवं उत्तर काण्ड में विभक्त है। पांच काण्ड एवं ९०संधियों में काव्य बद्ध है। स्वयम्भू ८ वीं ९ वी शताब्दि के महान् कवि थे जिसे महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। १५ वीं शताब्दि में महाकवि रइधू हुए जिन्होने अपभ्रंश में विशाल काव्यो एवं पुराणों की रचना की। इन्होंने बलभद्रपुराण (पद्मपुराण) की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था।[1]

लेकिन जब हिन्दी का युग प्रारम्भ हुआ तो जैन कवि इस भाषा में भी रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने में सबसे आगे रहे। सर्वप्रथम

१. प्रशस्ति संग्रह—संपादक डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल पृष्ठ संख्या ३०

२. वहीं पृष्ठ संख्या ११६

महाकवि ब्रह्मजिनदास ने राम सीतारास (रामरास) की रचना करके रामकथा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रामरास की रचना संवत् १५०८ (सन् १४५१) में की गई थी।[1] रामरास विशाल महाकाव्य है जिसकी पाण्डुलिपि में ३०० से भी अधिक पत्र हैं। ब्रह्म जिनदास के समान ही उनके शिष्य ब्र० गुणकीर्ति ने भी रामसीतारास की रचना करने का श्रेय प्राप्त किया।[2] लेकिन ब्र० गुणकीर्ति के पश्चात् करीब २०० वर्षों तक किसी भी भट्टारक अथवा विद्वान ने राम कथा पर लेखनी नहीं चलायी। यह आश्चर्य की बात है। इसके पश्चात् अब तक जिन कवियो की रचनाओं की खोज हो चुकी है उनमें निम्न रचनाओ के नाम उल्लेखनीय हैं :—

रचना	लेखक	रचनाकाल
सीताचरित्र[3]	रामचन्द्र अपरनाम बालक	सवत् १७१३
सीता हरण[4]	ब्रह्म जयसागर	संवत् १७३२
पद्मपुराण भाषा (पद्य)[5]	पं खुशालचन्द काला	संवत् १७८३
पद्मपुराण भाषा (गद्य)[6]	पं०दौलतराम कासलीवाल	संवत् १८२३
पद्मपुराण भाषा	भगवानदास	संवत् १७५५

उक्त कृतियों में पं० दौलतराम कासलीवाल द्वारा निबद्ध पद्मपुराण भाषा सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता हैं। इसी का समाज में सबसे अधिक स्वाध्याय हुआ हैं और आज भी यह पुराण सर्वत्र पढा जाता है। दौलतराम ने इसकी जयपुर में रचना की थी। इसकी भाषा एवं शैली दोनो ही आकर्षक है। इसके अतिरिक्त शेष सभी राम काव्य अभी तक अपने प्रकाशन की प्रतीक्षा में खड़े है।

---

१. संवत पन्नर अठोतरा मांगसिर मास विशाल।
   शुक्ल पक्ष चउदिसि दिनी रास कियो गुणमाल ॥
२. राजस्थान के जैन सन्त—व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ संख्या १८६
३. प्रशस्ति सग्रह— पृष्ठ संख्या २६६
४. वही २६७
५. राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची द्वितीय भाग पृ. सं २१५
६. वही २१५
७. वही २१६

लेकिन अभी गत वर्ष सन् १९८३ में ही मुझे एक और पद्मपुराण की खोज करने में सफलता प्राप्त हुयी है। प्रस्तुत पद्मपुराण महाकवि ब्रह्मजिनदास एवं ब्र. गुणकीर्ति के बाद की रचना है लेकिन उक्त पांचों कृतियों से प्राचीन है। इस प्रकार पद्मपुराण नाम से निबद्ध हिन्दी की सभी रचनाओं में प्रस्तुत पद्मपुराण सर्वाधिक प्राचीन है जिसका विस्तृत परिचय निम्न प्रकार है—

ग्रन्थकर्ता— प्रस्तुत पद्मपुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द है जिनका पुराण के प्रारम्भ में निम्न प्रकार उल्लेख हुआ है—

सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चौपई छन्द।
मुनि पुराण कीना मंडान, मुनि जन लोक सुनुं दे कान ।।३५।।

पुराण की समाप्ति पर लिखी गयी प्रशस्ति में उन्होंनें सुभचन्द सेन के नाम का प्रयोग किया है जो उनके सेन गणीय भट्टारक परम्परा के मुनि होने का संकेत है। वे दिल्ली मंडल के मुनि थे जिनके पट्ट में और बहुत से मुनि हुए। ये कवि भी उसी परम्परा के मुनि थे। वे कुमारसेन भट्टारक मुनि के शिष्य थे। कवि ने ने अपनी गुरू परम्परा का निम्न प्रकार उल्लेख किया है।—

दिल्ली मंडल का मुनि राई, जिसके पट्ट भया बहु ठाई।
धरम उपदेस घणां कुं भया, पूजा प्रतिष्ठा जामै नया ।।४१।।

पंडित पट धारी मुनि भए, ग्यानवंत करुणां उर थए।
मलयकीर्त्ति मुनिवर गुणवंत, तिनकै हिये घ्यान भगवंत ।।४२।।

गुणकीर्त्ति अर गुणभद्रसेन, गुणावाद प्रकासै जैन।
भानकीरति महिमां अति घणी, विद्यावंत तपसी मुनि ।।४३।।

कुमरसेन भट्टारक जती, क्रिया श्रेष्ठ उजल मती।
उनके पट सुभचन्द्रसुसेन, धरम वखांन सुणावैं बैंन ।।४४।।

इस प्रकार मुनि मलयकीर्त्ति, गुणकीर्त्ति, गुणभद्रसेन, भानुकीर्त्ति, कुमरसेन मुनि भट्टारक उसकी गुरू परम्परा थी। पद्मपुराण समाप्ति के पश्चात कवि ने अपना नाम मुनि सभाचन्द इस प्रकार उल्लेख किया है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत संपूरनं।

रचना स्थान

इस प्रकार सभाचन्द कवि मुनि थे तथा वे काष्ठासंघीय सेन गण के मुनि थे। दिल्ली मंडल उनका केन्द्र था इसलिए ऐसा भी प्रतीत होता है कि सभाचन्द मुनि

देहली में ही रहते थे और उन्होंने पद्मपुराण की रचना भी देहली में रहते हुये की थी।

कवि के समय मे देहली में मूलसंघी भट्टारकों की भी गादी थी। इस गादी के भट्टारक मुनि रत्नकीत्ति थे जो गंभीर ज्ञान के धारक थे।तपस्वी थे तथा इन्द्रियों का निग्रह करने वाले थे। उन्हीं के पट्ट में रामचन्द्र मुनि हुए जो पण्डिताचार्य थे जो सूक्ष्म व्याख्याता थे तथा रामकथा सुनने में रूचि रखते थे।

श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ, रत्नकीरत मुनि धरम का पच्छ।
तारन तरण ग्यान गंभीर, जाणें सहु प्राणी की पीर ॥४५॥

तप संयम तै आतम ग्यान, धरम जिनेस्वर कहै बखांन।
छूटै मिथ्यात उपजै ग्यांन, जे निसचै धरि मनमै आन ॥४६॥

गुरू के वचन सुणि निसचै धरै ते जीव भवसागर को तिरै।
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या ससार, पहूंचे स्वर्ग लोक तिह वार ॥४७॥

उनके पट्ट रामचन्द मुनि आचारिज पण्डित बहु गुनी।
कहै ग्यान के सूक्ष्म अग भई बुधि उनकै प्रसग ॥४८॥

रामकथा के विचित्र रूपः—

जैन साहित्य मे राम कथा की दो धारायें मिलती हैं एक आचार्य रविषेण के पद्मपुराण की तथा दूसरी गुणभद्र के उत्तरपुराण की। आचार्य रविषेण की राम कथा विमलसूरि के पउमचरिय एवं स्वयम्भू के पउमचरिउ पर आधारित है। लेकिन गुणभद्राचार्य की राम कथा आचार्य रविषेण के कथानक से भिन्न है। हिन्दू धर्म की राम कथाओं में वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है जिसका प्रभाव उत्तरकालीन सभी राम कथाओं पर पड़ा है। महाभारत ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण अग्निपुराण, वायुपुराण आदि सभी में कुछ सामान्य परिवर्तन के साथ राम कथा को लिपिबद्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म-रामायण, अद्भुतरामायण आनन्दरामायण के नाम से भी कई रामकाव्य लिखे गये हैं। इन्हीं के आधार पर तिब्बती तथा खेतानी रामायण, हिन्देशिया की रामायण काकाविन जावा का आधुनिक "सेरतराम" तथा हिन्द चीन, श्याम, ब्रह्मदेश, तथा सिंहल आदि देशों की रामकथाएं मिलती हैं। बौद्ध जातक "जातकटुवण्णना" में रामकथा मिलती है। जो सक्षेप मे निम्न प्रकार है —

दशरथ महाराज वाराणसी में धर्म पूर्वक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महीषी के तीन सतान थी—दो पुत्र (राम पण्डित और लक्खण) और एक पुत्री

(सीता देवी) । इस महीषी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी को ज्येष्ठ महिषी के पद पर नियुक्त किया । उसके भी एक पुत्र (भरत) उत्पन्न हुआ । राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया । जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी तब रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य मांगा । राजा ने स्पष्ट इन्कार कर दिया । लेकिन जब रानी अन्य दिनों में भी पुनः पुनः इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यंत्रों के भय से दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा "यहां रहने से तुम्हारा अनिष्ट होने की सम्भावना है इसलिए किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो"। उसी समय राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे अपने मरने की अवधि पूछी । बारह वर्ष का उत्तर पाकर उन्होंने कहा—"हे पुत्रों ! बारह वर्ष के बाद आकर छत्र उठाना" पिता की वन्दना कर दोनों भाई चलने वाले थे सीतादेवी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो गयी । तीनों के साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिये उनको लौटाकर तीनों हिमालय पहुंच गये और वहां आश्रम बना कर रहने लगे । नौ वर्ष के पश्चात् दशरथ पुत्र शोक के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये । रानी ने भरत को राजा बनाने प्रयास किया । स्वयं भरत एवं आमात्यों के विरोध के कारण वह भरत को राजा बनाने में सफल नहीं हो सकी ।तब भरत चतुरंगिनी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन मे चले जाते है । उस समय राम अकेले ही है । भरत उनसे पिता के देहान्त का सारा वृत्तान्त कह कर रोने लगते है परन्तु राम पण्डित न तो शोक करते हैं और न रोते है ।

सध्या समय लक्खण और सीता लौटते है । पिता का देहान्त सुनकर दोनो अत्यन्त शोक करते है । इस पर राम पण्डित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मोपदेश सुनाते हैं । उसे सुनकर सब शोक रहित हो जाते है । बाद मे भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी राम पण्डित यह कह कर बन में रहने का निश्चय कहते हैं—"मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त में राज्य करने का आदेश दिया है अतः अभी लौट कर मैं उनकी आज्ञा का पालन न कर सकूंगा । मै तीन वर्ष बाद लौट आऊंगा ।"

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते है तब राम पण्डित अपनी तिणपादुका (तृण पादुका) देकर कहते है कि मेरे आने तक ये शासन करेगी तृणपादुकाओं को लेकर भरत, लक्ष्मण सीता तथा अन्य लोगों के साथ वाराणसी लौटते है । अमात्य इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं । अन्याय होते ही वे पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती और ठीक निर्णय होने पर शान्त होती थी ।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर राम पण्डित लौटकर अपनी बहिन सीता से विवाह करते हैं । सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् वे स्वर्ग चले जाते

है। जातक के अन्त में महात्मा बुद्ध जातक का सामंजस्य इस प्रकार बैठाते हैं— उस समय महाराजा शुद्धोदन महाराज दशरथ थे। महामाया (बुद्ध की माता) राम की माता, यशोधर (राहुल की माँ) सीता, आनन्द भरत थे और मैं राम पण्डित था।"[1]

इसी तरह "अनामकं जातकम्" में राम के जीवन वृत्त से सम्बन्धित कथा मिलती है। चीनी त्रिपिटक के अन्तर्गत "त्सा-पौ-त्सिंग-किंग में १२१ अवदानों का संग्रह मिलता है। यह संग्रह ४७२ई. में चीनी भाषा में अनूदित हुआ था इसमें एक 'दशरथ कथानम्" भी मिलता है जिसमें राम कथा का उल्लेख किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें सीता या किसी अन्य राजकुमारी का उल्लेख नहीं हुआ है। दशरथ की चार रानियों का वर्णन आता है उनमें प्रधान महिषी के राम, दूसरी रानी के रामन (रोमण-लक्ष्मण) तीसरी रानी के भरत और चौथी रानी के शत्रुघ्न उत्पन्न हुये थे।

अद्भुत रामायण में रामकथा का दूसरा ही रूप मिलता है जिसमें सीता को मन्दोदरी द्वारा अपने गर्भ को जमीन में गाड दिए जाने के पश्चात् उत्पन्न हुआ माना गया है जो हल जोतते समय वह गर्भजात कन्या राजा जनक को मिली और उन्होंने उसका लालन पालन किया। लेकिन राम कथा का व्यापक एवं लोकप्रिय रूप बाल्मीकि रामायण का रहा जो सर्वत्र समादृत है।

जैन कथा के दो रूप

जैन साहित्य में रामकथा के जो रूप मिलते हैं उनमें गुणभद्राचार्य द्वारा रचित उत्तरपुराण एवं रविषेण के पद्मपुराण में सुरक्षित है। दोनों ही आचार्य जैनधर्म के अधिकृत विद्वान थे। आचार्य रविषेण ने विक्रम संवत् ७३४ (६७७ ई.) में पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी जबकि आचार्य गुणभद्र ने ९ वी शताब्दि के अन्त में उत्तर पुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था। इस प्रकार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण आचार्य गुणभद्र के समक्ष रहा होगा ऐसा अनुमान किया जा सकता है क्योंकि ऐसा महापुराण लिखने वाले आचार्य जिनसेन एवं गुणभद्र अपने पूर्वाचार्यों की अधिकृत ग्रंथों को ओझल अथवा अनदेखा नहीं कर सकते। गुणभद्र आचार्य जिनसेन के शिष्य थे। जिनसेन आदि पुराण की रचना करने से पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये इसलिए आदिपुराण के अवशिष्ट भाग एवं उत्तरपुराण की रचना करने का कार्य उनके सुयोग्य शिष्य गुणभद्र ने ही किया। उनके द्वारा उत्तरपुराण में प्रतिपादित रामकथा आचार्य रविषेण से भिन्न है जिसमें सीता को जनक की पुत्री न मानकर रावण,-मन्दोदरी की पुत्री माना है।

पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने उत्तरपुराण का संक्षिप्त कथानक अपने पद्म पुराण की प्रस्तावना में निम्न प्रकार दिया है।

"वाराणसी के राजा दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं-राम सुबाला के गर्भ से,लक्ष्मण कैकयी के गर्भ से और बाद में जब दशरथ अपनी राजधानी साकेत में स्थापित करते हैं तब भरत और शत्रुघ्न भी किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न होते हैं। यहां भरत एवं शत्रुघ्न की माता का नाम नहीं दिया गया है दशानन विनमि विद्याधर वंश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमित वेग की पुत्री मणीमति को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना में विघ्न डालने का प्रयत्न करता हैं। मणिमति निदान करती है कि मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूंगी"। मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ में आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते हैं कि यह पुत्री आपका नाश करेगी अत: रावण ने भयभीत होकर मारीच को आज्ञा दी कि वह उसे कहीं छोड़ दे। कन्या को एक मन्जूषा में रख कर मारीच उसे मिथिला देश में गाड आता है। हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मन्जूषा दिखाई देती है और लोगों के द्वारा जनक के पास पहुंचाई जाती हैं। जनक मन्जूषा को खोलकर देखते हैं और उसका सीता नाम रख कर पुत्री की तरह पालन करते हैं। बहुत समय बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते हैं। युद्ध के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम अन्य सात कुमारियों के साथ विवाह करते है और लक्ष्मण पृथ्वी आदि १६ राजकन्याओं से। दोनों दशरथ की आज्ञा लेकर वाराणसी में रहने लगते है।

नारद से सीता के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे हर लाने का संकल्प करता है। सीता का मन जांचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असम्भव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका में विहार करते हैं तब मारीच स्वर्णमृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है। इतने में रावण राम का रूप धारण करके सीता से कहता है कि मैंने स्वर्णमृग महल भेजा है। और उसको पालकी पर चढने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव में पुष्पक विमान है जो सीता को लंका ले जाता है। रावण सीता का स्पर्श नहीं करता है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श करने से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जाती।

दशरथ को स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया और वह राम के पास यह समाचार भेजते हैं। इतने में सुग्रीव और हनुमान बालि

के विरूद्ध सहायता मांगने के लिए पहुंचते हैं। हनुमान लंका जाते हैं और सीता को सांत्वना देकर लौटते हैं (लंका दहन का कोई उल्लेख नहीं मिलता) इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। अब वानरो की सेना राम की सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान करती है। युद्ध के विस्तृत वर्णन के अन्त मे लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काट देते हैं। इसके बाद लक्ष्मण दिग्विजय करके और अर्धचक्री नारायण बनकर अयोध्या लौटते हैं। लक्ष्मण की सौलह हजार रानियां और राम की आठ हजार रानियां है। सीता के आठ पुत्र होते है (सीता त्याग का उल्लेख नहीं मिलता) लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मर कर रावण बध के कारण नरक में जाते है। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वी सुन्दर को राज पद पर और सीता के पुत्र अजीतंजय को युवराज पद पर अभिषिक्त करके दीक्षा लेते हैं और मुक्ति पाते हैं। सीता भी अनेक रानियो के साथ दीक्षा लेती है और अच्युत स्वर्ग में जाती है।[1]

हिन्दी में राम काव्य—

प्राकृत सस्कृत एवं अपभ्रंश पुराण रचनाओं के पश्चात् जब हिन्दी राजस्थानी मे ग्रन्थ रचना होने लगी तो जैन कवियो द्वारा इन भाषाओं में सभी तरह के ग्रन्थो का गद्य एवं पद्य में लिखा जाने लगा या फिर मूल ग्रंथों के भावों को लेकर स्वतन्त्र रूप से भी काव्य लिखे गये। हिन्दी-राजस्थानी में रामकथा को काव्य रूप मे निबद्ध करने का सर्व प्रथम श्रेय महाकवि ब्रह्म जिनदास को दिया जा सकता है क्योंकि उन्होंने संवत् १५०८ मे ही विशाल काव्य 'रामरास' की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। 'रामरास' यद्यपि रविषेणाचार्य के पद्मपुराण के आधार पर निबद्ध किया गया है लेकिन वह कवि की मौलिक एवं स्वतंत्र रचना के रूप में है। संवत् १७२८ मे देउल ग्राम मे लिपिबद्ध इस काव्य की एक प्रति डूंगरपुर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है इस पाण्डुलिपि में १२"×६" आकार वाले ४०५ पत्र हैं। कवि ने अपने काव्य के रचना काल का निम्न पद्य में उल्लेख किया है—

> संवत पन्नर अठोत्तरा, मांगसिर मास विशाल।
> शुक्ल पक्ष चउदिसी दिनी, रास कियो गुणमाल।।

पद्मपुराण संरचना

विक्रम की १७ वी शताब्दि के तृतीय/चतुर्थ चरण में मुनि सभाचन्द हुए। उनके समय मे तुलसी का रामचरितमानस (रामायण) लोकप्रियता प्राप्त करने लगा था और उत्तर भारत की अधिकाश जनता में उसे पढने की ओर रूचि बढ रही थी। वैष्णव धर्म मे फैल रही रामायण के प्रति आसक्ति को देख कर

---

१. पद्मपुराण भूमिका पृष्ठ संख्या १७—१८

सभाचन्द्र मुनि को भी आचार्य रविषेण कृत संस्कृत भाषा के पद्मपुराण को सुनने की रुचि पैदा हुई। पद्मपुराण को सुन कर मुनिश्री के हृदय में आचार्य रविषेण के प्रति गहरी श्रद्धा जाग्रत हुई। अपनी रचना पद्मपुराण के प्रारम्भ में इन्होंने रविषेणाचार्य के प्रति जो श्रद्धा एवं भक्ति प्रदर्शित की है वह अत्यधिक संवेदनशील है। इन्होंने रविषेणाचार्य को मति श्रुति एवं अवधि ज्ञान का धारक महामुनीश्वर निर्ग्रंथाचार्य एवं क्रोध मान माया आदि कषायों से रहित होना लिखा है। इन्हीं भावों को कवि के शब्दों में देखिये—

केवल वाणी सुन्यां बखान, पंडित मुनिवर रच्या पुराण।
आचार्य रविषेण महंत, संस्कृत मैं कीनो ग्रन्थ ॥३०॥
महा मुनीश्वर ग्यांनी गुनी, मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी ॥
महा निग्रंथ तपस्वी जति, क्रोध मान माया नहीं रती ॥३१॥
आरिखो वाणी शास्त्र किया, धर्म उपदेश बहुविध दिया।
जिसके भेवा भेद अपार, महामुनीश्वर कहैं विचार ॥३२॥

आचार्य रविषेण के पद्मपुराण को सुनने एवं उसका स्वाध्याय करने के पश्चात् मुनि सभाचन्द के हृदय में उसके हिन्दी रूपान्तर करने के भाव जाग्रत हुये और उन्होंने संवत् १७११ में फाल्गुन शुक्ला पचमी को हिन्दी में पद्मपुराण जैसे महान् ग्रंथ को छन्दोबद्ध करने का यशस्वी कार्य कर डाला।

संवत सत्रहसै ग्यारह बरस, सुन्यां भेद जिनवाणी सरस।
फाल्गुण मास पंचमी स्वेत, गुरुवार मन मैं धरि हेत ॥३३॥
सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चौपई छन्द।
सुनि पुराण कीनां मंडान, गुनि जन लोक सुनुं दे कान ॥३४॥

सर्व प्रथम गौतम स्वामी ने राम कथा को सबको सुनायी। उसके पश्चात् जगसेन केवली ने इसे मौखिक रूप से कहा। फिर कृतांतसेन ने एक करोड़ श्लोक प्रमाण ग्रंथ निबद्ध किया। इसके पश्चात् दूसरे आचार्यों ने पुराणों की रचना करके उन्हें पढा। उनके सबदन मुनि शिष्य हुए। फिर अरहसैन एवं लक्ष्मनसेन मुनि हुए जिन्होंने साठ हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण लिखा। उसी पुराण को आचार्य रविषेण ने अठारह हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण नाम सेनिबद्ध किया। कवि ने इनका रचना काल का निम्न प्रकार वर्णन किया हैं—

सहैंस एक अक दोई सै बरस, छह महीने बीते कछु सरस।
महावीर निरवाण कल्याण, इस अंतर है रच्या पुराण ॥

अर्थात् भगवान महावीर के निर्वाण के १२०० वर्ष और ६ महिने व्यतीत होने पर रविषेण ने पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी। किन्तु स्वयं रविषेण ने वीर निर्वाण संवत् १२०४ एवं विक्रम संवत् ७३४ में पद्मपुराण की रचना करना लिखा है। इसलिये मुनि सभाचन्द ने अपने रचना काल में ४ वर्ष का अन्तर क्यों कर लिखा इसका कोई औचित्य नही बतलाया।

मुनि सभाचन्द भट्टारक कुंवरसेन के शिष्य थे। जो काष्ठा संघ—माथुर गच्छ–सेन गणीय भट्टारक थे। भ० कमलकीत्ति के दो शुभचन्द और कुमारसेन ये दो पट्ट शिष्य हुए।[1] इनके शिष्य थे सभाचन्द जो मुनि अवस्था में रहते थे। कुमारसेन का उल्लेख आमेर शास्त्र जयपुर की एक प्रशस्ति में भी आता है जो हेमकीत्ति के शिष्य एवं भ० हेमचन्द के गुरु थे।[2] मुनि सभाचन्द के नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। फिर भी ये भट्टारकीय परम्परा के मुनि थे इसमें कोई सन्देह नही है।

जीवन परिचय

मुनि सभाचन्द की गृहस्थावस्था का क्या नाम था। उनके माता पिता कौन थे। उनका जन्म कहा हुआ तथा उन्होने किस अवस्था मुनि दीक्षा प्राप्त की इसका कोई उल्लेख नही मिलता है। सभाचन्द पद्मपुराण (हिन्दी) के अतिरिक्त और कौन २ से ग्रथों के रचयिता बने इसका भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सभाचन्द अपनी गृहस्थावस्था मे अग्रवाल जैन होंगे क्योंकि आपने ग्रंथ प्रशस्ति में अग्रवाल जैनो की उत्पत्ति का वर्णन किया है। कवि के अनुसार अग्रवाल जैन जाति की उत्पत्ति निम्न प्रकार हुई है –

एक बार लोहाचार्य ने अग्रोहा के निकट आकर योग धारण कर लिया। अग्रोहा के सभी नगरवासी उनकी वदना करने लगे। वहां उन्होने अग्रवाल श्रावको को प्रतिबोधित किया और श्रावको की ५३ क्रियाओ को पालने का उपदेश दिया। पञ्च अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत एवं तीन गुणव्रतो के महत्त्व को समझाया। नगर में व्याप्त मिथ्यात्व को दूर किया और जैनधर्म के स्वरूप को सबको बताया। लोहाचार्य के उपदेश से सबने दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय एवं व्रत विधान को अंगीकार किया। जीव दया का पालन होने लगा तथा सबने रात्रि भोजन न करने का नियम ले लिया और चउघडिया में अणवेउ (व्यालु) की जाने लगी।

---

१. देखिये भट्टारक संप्रदाय–पृष्ठ संख्या २४

२. देखिये प्रशस्ति संग्रह–पृष्ठ संख्या ८५

मुनि सभाचन्द्र काष्ठासंघी साधु थे। उस समय देहली में मूलसंघ एवं काष्ठासंघ दोनों की गादियां थी। अधिकांश अग्रवाल जैन समाज काष्ठासंघी भट्टारकों के आम्नाय में था। मुनि सभाचन्द अपने समय के प्रमुख सन्त थे। साहित्य सर्जन की ओर इनका विशेष झुकाव था।

छन्दों का प्रयोग—पद्मपुराण विशालकाय ग्रन्थ है जिसमें ११५ विधानक है। तथा दोहा, चोपई एवं सोरठा छन्दों की संख्या ६६०६ है। जैन कवियों ने हिन्दी पद्य में इतना विशाल ग्रन्थ बहुत कम निबद्ध किया है। पुराण में छन्दों की सख्या निम्न प्रकार है—

प्रथम संधि (विधानक)	४६३ पद्य
द्वितीय संधि (विधानक)	७७ पद्य
तृतीय संधि (विधानक)	२११ पद्य
चतुर्थ संधि (विधानक)	८५ पद्य
पंचम विधानक से ११५ विधानक तक	५७७० पद्य
योग	६६०६

उक्त पद्यो में छन्दानुसार संख्या निम्न प्रकार है—

दोहा (दूहा)	१३६
सोरठा	३६
अडिल्ल	३४
कवित्त	२
चौपई	६३९२

विधानक की समाप्ति दोहा, सोरठा, कवित्त एवं अडिल्ल इन चार छन्दो में से किसी एक के साथ की गयी है। लेकिन कहीं-कहीं इसका अपवाद भी है और विधानक की समाप्ति चौपई के साथ भी कर दी गयी है।

भाषा—पद्मपुराण की रचना देहली में की गयी थी इसलिए पुराण की मूल

1. अग्रोहे निकट प्रभु ठाढे जोग, करे वन्दना सब ही लोग।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध, त्रेपक किया बताई सोध।।३५।।
पंच अणुव्रत सिख्याच्यारि, गुनव्रत तीन कहे उरधारि।
बारहै व्रत बारहै तप कहै, भवि जीव सुणि चित्त मे गहे।।३६।।
मिथ्या धरम कियो तहां दूरि, जैन धरम प्रकास्या पुरि।
चिहुसों दान देई सब कोई, सासत्र भेद सुणि समकिती होई।।३७।।

भाषा खड़ी बोली है जिस पर प्रमुख रूप से राजस्थानी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्द भी आ गये हैं जो उस समय बोलचाल की भाषा में प्रचलित थे। वैसे पुराण की भाषा शुद्ध एवं परिमार्जित है। शब्दों को बिगाड करके प्रयोग करने का कवि स्वभाव नहीं है। १७वीं शताब्दी में जैन कवियों ने अपने काव्यों को खड़ी बोली में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। प्रस्तुत पद्मपुराण इस धारणा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने प्रान्तीयता अथवा भाषावाद के मोह में न पड़कर सदैव प्रदेश मे प्रचलित भाषा मे काव्य रचना की है।

पुराण की भाषा पर राजस्थानी का पुट है। कहीं-कहीं क्रिया पदों में मे राजस्थानी क्रिया पदों का प्रयोग किया गया है तो कहीं-कहीं राजस्थानी शब्दों का प्रयोग बहुतायत से हुआ है।

क्रियापद—(1) पहली दुःख प्रजा कूं द्यूं, मधुसूदन का वैर हूं ल्यूं
३८४/४३३२

यहां घूं एवं ल्यूं क्रियायें राजस्थानी भाषा की हैं।

(2) लोग खंदाया उसके पास (१०४/६२९) इसमें खंदाया क्रिया पद ठेठ राजस्थानी भाषा का है जिसका अर्थ भेजा होता है। क्रिया पदों की तरह शब्दों का और भी अधिक प्रयोग हुआ है। राजस्थानी शब्दों में से कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं—

ज्यौणार (३२/४४९) आग्योणी (४२/६६) जनवासा (५८/६८) बीजणा (२०७/२००४), तिसाया (२२६/२२७४) लेणकुं (२०६/२२९४), पांणी (२०६/१९९०), भाजी (१९४/१८२७), जान (बरात) (५८/६८), जिनावर (जानवर १५८/१३५०) व्याहण (१७१/१५७८)।

राजस्थानी शब्दों के प्रयोग की तरह उर्दू शब्दों का भी पुराण में यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है जिसका प्रमुख कारण सभाचन्द मुनि का जन सम्पर्क ही कहा जा सकता है। वकील (२७/३८३), फरमान (६१/४५५), दिलगीर (२०७/२०१३), फरमावो/सलाम (११२/१८०४) जैसे शब्दों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में देखा जा सकता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्दो का सरलीकरण भी कर दिया है। 'मलहम' शब्द का ह निकालकर मलम (८४/३५४) से काम चला लिया है।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा का भी पुराण पर स्पष्ट प्रभाव है। तौकूं, मौकूं शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त शब्दो के आगे 'कूं' प्रत्यय शब्द जोड़कर प्रयोग करने की ओर कवि की अधिक रुचि रही है। जैसे—समुद्र कूं (३६२६) मोकूं (३६२८) भानकूं (३६३०), रामकूं (३६३७) शब्दो की पुराण में बहुतायत है।

लेकिन विभिन्न भाषाओं का प्रभाव होते हुए भी पद्मपुराण मुख्यतः खड़ी

बोली की महान् कृति है जो कवि के अगाध भाषा ज्ञान की द्योतक है। हिन्दी भाषा में १७वीं शताब्दी में ही खड़ी बोली की परिष्कृत रचना मिलना भाषा साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

रस एवं अलंकार—

पद्मपुराण शुद्ध सात्विक कृति है जिसका पर्यवसान शान्त रस प्रधान है। इसके प्रमुख पात्र, राम, लक्ष्मण, रावण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव, सीता आदि हैं जिनके जीवनवृत्त के चारों ओर पुराण का कथानक घूमता है। प्रारम्भ में कवि ने भगवान महावीर के पञ्चकल्याणक एवं उनकी दिव्यध्वनि द्वारा निर्गत प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ के पावन जीवन का वर्णन किया गया है जो एक भूमिका के रूप में है एवं राम के जन्म के पूर्व में होने वाले महापुरुषों की स्मृति मात्र है। इसके अतिरिक्त वानर वंश की उत्पत्ति, हनुमान का जीवन, उनके पिता पवनंजय एवं अंजना का विवाह, विरह एवं मिलन, राक्षस वंश, रावण का जन्म, लंका की स्थिति, रावण का पराक्रमी एवं धार्मिक जीवन, रावण द्वारा लका की प्राप्ति, वैभव, अपार शक्ति एवं विशाल साम्राज्य आदि का वर्णन भी रामकथा के लिये पूर्व पीठिका का कार्य करते हैं। इसलिये पद्मपुराण की रचना समग्र दृष्टि से पूर्ण है उसमे कहीं पर भी न कोई अंश छूट सका है और न किसी अंश को अनावश्यक महत्त्व दिया गया है। इसलिए पद्मपुराण में कभी तीर्थंकरों का जन्म होता है, कभी भरत बाहुबलीयुद्ध, माली द्वारा लंका पर आक्रमण, वैश्रवन द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध और अन्त में राम रावण युद्ध होता है जहां वीररस एवं दूसरे रसों का खुल कर प्रयोग हुआ है वहीं दूसरी ओर ससारस्वरूप वर्णन (पृष्ठ ४७), तत्त्ववर्णन (४३३), राम की तपस्या (५५६६) जैसे वर्णन वैराग्य प्रधान वर्णन हैं जिसमें शान्त रस का प्रवाह होता है।

पद्मपुराण में शृंगार रस का भी बहुत प्रयोग हुआ है। पद्मोत्तर की सुन्दरता, मन्दोदरी का सौंदर्य वर्णन, आदि ऐसे कितने ही स्थल है जिनमें सौंदर्य का मुक्त हस्त से वर्णन हुआ है। श्रीकंठ की पुत्री की सुन्दरता का वर्णन देखिए—

रुपवंत ज्यूं पुन्यू चंद, घटे बढै यह सदा अनन्त।
दीरघ नयन श्रवण सौं लगे, देख कुरंग वन मांहि भगे ॥५५/१३
दंत चिमके ज्यों हीरों की ज्योत, मस्तक कपोल पृथ्वी उद्योत।
नासा भौह बनी छवि घनी, बैनी कीर्त न जाये गिनी ॥५५/१४

रावण की रानी मन्दोदरी की सुन्दरता भी देखिये—

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहै, वह घटै बधै या समनित रहै।
किम कविराज कहै मृग नैन, वई भय दायक सुख की देन ॥७८/२६८॥

इसी तरह वीर रस से तो पद्मपुराण भरा पड़ा है। पुराण में स्थान स्थान पर युद्ध होते हैं जो वीर रस से पूर्ण हैं। राम रावण युद्ध का एक वर्णन देखिये—

घोड़ा से घाडा तव लडं मंगल सौं मंगल प्रति भिडे ।
रथ को रथ पर दिया हिया पेल, ग्रैसैं भिडैं ज्यौं खेलत द्वै मल्ल ।।३२९९।।
दोउधां बरखैं विद्या बाण, गोला गोली करैं घमसान ।
मारैं खडग टूक द्वै होइ, पीछा पाव न हटिहै कोइ ।।३३००।।

विभीत्स रस—

युद्ध में योद्धाओं के सिर, हाथ, पाव, कट कट कर गिरने लगे। रक्त की धारा बहने लगी और सारा दृश्य भयानक लगने लगा। इसी का एक वर्णन देखिये—

परवत मुंड भुजा का भया, पडी लोथ पग जाई न दिया ।
सोनत नदी बहै तिहा लोथ, हाथी घोडे रथ सूर बहोत ।।३७३१।।
जैसे मगरमच्छ जल तिरैं, ग्रैसैं लोथ रकत मैं फिरैं ।
जेता रण झुझा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ।।३७३२।।

शान्त रस—पुराण मे यत्र तत्र संसार के विरक्तता, असारता, तप का महत्व एवं तत्वो का वर्णन मिलता है जिसको पढ़ कर मन को शान्ति मिलती है तथा मन रागादि भावों से दूर हटता है।

जे जीव दृढ समकित धरैं, मिथ्या धरम निवार ।
निसचैं पावैं परम पद, भुगतै सुख अपार ।।४९९१।।
जीव तत्व संसारी दोइ, भव्य अभव्य उभय विध होइ ।
अभव्य तपस्या करे अनेक, काया कष्ट बिना विवेक ।।४९९२।।

रस विधान के समान अलंकारो का भी अच्छा उपयोग हुआ हैं। इसलिये उपमा, उत्प्रेक्षा जैसे कुछ अलंकार तो यत्र तत्र मिलते हैं।

पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन—

पद्मपुराण भारतीय सस्कृति का कोश ग्रंथ है। उसमें संस्कृति एवं समाज का अच्छा वर्णन हुआ है। उसके नायक राम है जो भारतीय संस्कृति के प्रेरणा स्रोत है। राम की भक्ति एवं उनका गुणानुवाद पुण्य बंध का कारण है। पापों से मुक्ति दिलाने वाला है। राम के गुण अथाह हैं जिनका वर्णन करना भी साधारण कार्य नही है—

राम नाम गुन अगम अथाह, ते गुन किस पै वरने जाय ।
जा मुख राम नाम नीसरै, सो संकट मैं बहुरि न परै ।।२३।।

जा घट राम नाम का वास, ताकै पाप न आवै पास।
जिन श्रवरान राम जस सुने, देवलोक सुख पावै घने ॥२४॥

इसलिये कवि पद्मपुराण के अन्त में लिखा है कि जो व्यक्ति इस राम काव्य पद्मपुराण को पढ़ेगा, स्वाध्याय करेगा, उसे तीनों लोकों का यश, सम्पत्ति एवं वैभव प्राप्त होगा—

जो कोई सुणै धरम के काज, पावै तीन लोक का राज
धरम ध्यान सु पाप न रहै, केवल ज्ञान जीव वह लहै।

१. राम

राम स्वभाव से सरल, उदार, दयालु हैं। माता पीता के पूरे आज्ञाकारी हैं अपने भाइयों से स्नेह रखने वाले हैं। शक्ति बाण द्वारा लक्ष्मण के मूच्छित होने पर वे जिस तरह विलाप करते हैं वह उनके भ्रातृ प्रेम का अनूठा उदाहरण है—

मै देख्या भाई का मरण, अवर भया सीता का हरण,
काठ संकेल अगनि में जरू, लक्ष्मण का कैसे दुख भरू ॥३३१–१॥

राम प्रजावत्सल हैं। प्रजा के दुःख में दुःखी एवं सुख मे सुखी होने वाले हैं। प्रजा असन्तोष अथवा सीता के प्रति गलत धारणा के कारण वे गर्भवती होने पर भी सीता का परित्याग करने में किञ्चित् भी नहीं घबराते। इसके अतिरिक्त अग्नि परीक्षा लेते समय भी कठोर हृदय वाले बन जाते हैं इसलिए उन्हें हम उन्हे "वज्रा-दपि कठोराणि मृदूनि कुसमादपि" वाले स्वभाव का कह सकते हैं। राम पद्मपुराण के नायक हैं। पुराण का सम्पूर्ण कथानक उनके पीछे चलता है।

राम शक्ति के पुन्ज भी है। युद्ध में विजय प्राप्त करना ही उनका स्वभाव था। रावण जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध करने में वे जरा भी पीछे नहीं हटे और अन्त में उस पर विजय प्राप्त करके ही लौटे। लेकिन अकारण युद्ध करना उनका स्वभाव नहीं नहीं था। वे रावण को अन्त तक समझाते रहे और युद्ध को टालते रहे। राम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी हैं। जो भी उनकी शरण मे आ गया वह उनका होकर रह गया। सुग्रीव, हनुमान, नल नील जैसे योद्धाओं को उन्होंने सहज ही अपनी ओर मिला लिया। विभीषण जब प्रथम बार ही उनकी शरण में आया तभी उसे लंकाधिपति कह कर सहज ही में उसे भी अपने पक्ष में कर लिया।

राम जिन भक्त हैं। जहां भी अवसर मिला इन्होंने जिन मन्दिर के दर्शन किये। देशभूषण एवं कुलभूषण जैसे महामुनियों को आहार देने में कभी पीछे नहीं रहे। वे अनेक विद्याओं के धारी हैं।

राम जीवन के अन्तिम समय में दीक्षा लेते हैं तथा घोर तपस्या करते हैं।

वे जब आहार के निमित्त आते हैं तो लोग द्वारापेक्षण करते हैं और उनको आहार देने में अपना अहोभाग्य समझते हैं।

आतम ध्यान करे रामचन्द्र, वाणी सुनत होई आनन्द।
इनके गुण अति अगम अपार, राम नाम त्रिभुवन आधार ॥५५६६॥
रसनां कोटिक करें बखान, उनके गुण का अन्त न आन।
इन्द्र धरणेन्द्र जो अस्तुति करें, ते नहीं वोइ अन्त निखरें ॥५५६७॥

राम को केवल ज्ञान होता है और निर्वाण प्राप्त करते हैं।

२. लक्ष्मण

राम के लघु भ्राता है लेकिन आठवें नारायण है। छाया की तरह राम की सेवा में रहते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक वे अपने बड़े भाई का कभी साथ नहीं छोडते हैं। यद्यपि वे नारायण हैं, शक्तिशाली हैं, अनेक विद्याओं के अधिपति हैं लेकिन अपने बडे भाई को देवता तुल्य मानते हैं और उनकी सेवा करने मे ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। वे चक्रधारी हैं। रावण के चलाए हुए चक्र को वे ग्रहण करते हैं और उसी चक्र से रावण का सिर काट देते हैं लेकिन इसका उन्हें किञ्चित् भी अभिमान नहीं है लेकिन शत्रुओं के लिये वे यम के समान हैं। लक्ष्मण की मृत्यु देखकर राम विलाप ही नही करते किन्तु अपने भाई का मृतक शरीर लिये फिरते है।

रामचन्द्र देखें निरतांइ, पीत वरण देखें सब काइ।
किह कारण रूठा इह भ्रात, मुखसो कबहु न बोलै बात ॥५४४२॥
अन्य दिवस मोहि आवत देखि, आदर करता पटाभिषेक।
मेरे साथ बहुत दुख सहे, दण्डक वन मांही जब हम रहे ॥५४४३॥
रावण मारे मेरे काज, रघुवंसी की राखी लाज।
तुम बिन कैसे जीउ आप, कैसे इह मेटो संताप ॥५४४४॥

३. सीता

जनक सुता सीता राम की आदर्श पत्नी है। वह अपने शील के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह भारतीय संस्कृति की जीती जागती मूर्ति है। पति की अनुगामिनी है तथा उनकी आज्ञा पालन ही उनके जीवन की उपलब्धि है। बनवास में वह उनकी छाया की तरह सेवा करती है। अपहरण के पश्चात् वह रावण की अशोक वाटिका में रहती है। रावण उसे फुसलाने का भरसक प्रयत्न करता है लेकिन उसके पतिव्रत के कारण किसी की नहीं चलती। वह हनुमान की बातो पर जब तक विश्वास नहीं करती जब तक वह स्वयं आश्वस्त नहीं हो जाती।

सीता कहै सुणुं हणुमांन, तुम अन राम कद की पहचान।
मैं तुमकूं नहीं देख्या सुण्या, किस विध उणसों सनबंध बण्या।

उनु के कारण आये लंक, मन में कछु मन आणी संक ।।३०६८।।
ब्यौरा सूं समझाओ बात, मिटै संदेह सुणि विरतांत ।
लक्ष्मण तणी कही कुसलात, छाप एह थाई किण भांति ।।३०६९।।

सीता को राम वन में छुड़ा देते हैं और अपने भाग्य भरोसे जीने को मजबूर करते हैं फिर भी सीता अपने ही भाग्य को कोसती है और राम को कभी दोष नहीं देती ।

ऐसा कर्म उदय हुआ आय, वे सुख खोंसि भेजी इस ठाय ।
कै मैं बच्छ बिछोहा गाय, कै मैं बाल बिछोइ माय ।
कै सरवर नै बिछोहा हंस, कै परबोनीका राख्या अंस ।।४५९७।।

राम सीता की अग्नि परीक्षा लेते हैं और उसमें वह खरी उतरती है । वास्तव में विश्व मे यही एकमात्र उदाहरण है—

पंचनाम हिरदै संभाल, जिन बीसौं सुमरे तिहुकाल ।
सरव भूषण को करी नमस्कार, मन वच काय सत रहें हमार ।।४९२५।।
अगनि मांझ ते जो ऊबरूं झूठ कहै तो त्रिणां परिजलूं ।
पंच नाम पढि चिता मैं पडी, सीतल भई अगनि तिह घड़ी ।।४९२६।।

४. रावण

रावण प्रति नारायण है । वह बाल्य अवस्था से ही शूरवीर एवं युद्धप्रिय है । कुंभकर्ण एवं विभीषण उसके लघु भ्राता हैं तथा चन्द्रनखा उसकी बहिन है । जब उसे मालूम पड़ता है कि पहिले उसके पिता लंका के राजा थे जो उनसे छीन ली गयी है तो माता को अपना पौरुष दिखलाता है और फिर विद्याएं सिद्ध करने बैठ जाता है और एक साथ ग्यारहसै विद्याएं प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है ।

दसानन ग्यारहसै विद्या लई, जिनके गुण का पार न कहीं ।२३४/७५

विद्याएं सिद्ध करने के पश्चात् वह सहज ही लंका पर विजय प्राप्त कर लेता है । उसके दस सिर एवं बीस भुजाएं हैं । वह महान् बलवान है जिसे देखते ही बड़े-बड़े योद्धाओं के प्राण सूख जाते हैं । लेकिन वह जिनेन्द्र का भक्त है । जिन पूजा में उसका पूरा विश्वास है । युद्ध के समय भी वह पूजा करना नहीं छोड़ता ।

श्री जिन धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंका राज, राक्षसवंसी जग तिलक ।।४६५।।

रावण इन्द्र पर विजय प्राप्त करता है तथा अर्धचक्री बन कर समस्त पृथ्वी पर राज्य करता है । वह व्रत नियमों का पालन करता है और उन्हीं के नियमों के पालन में उसमें अपार शक्ति उत्पन्न होती है । वह अनन्तवीर्य मुनि के पास निम्न प्रकार व्रत पालन करने का निश्चय लेता है—

एक भांति व्रत पालौं सही, जे नारी मुझ इच्छे नहीं।
ताकों सील न खंडउ जाई, इहै वरत मुख बोलवैं राई ।।१०६३१।।

रावण जीवन में सीता हरण जैसी एक ही गल्ती करता है लेकिन इस एक ही गल्ती ने उसकी सारी कीर्ति धो डाली और वह सदा के लिए कलंकित बन गया। लेकिन हरण के उपरान्त भी वह उससे दूर से ही बात करता है। स्पर्श तक नहीं करता क्योंकि स्पर्श करने से सतित्व भंग होने का डर है। सीता को वापिस करने मे उसे अपयश का डर लगता है इसके अतिरिक्त वह अपनी सामर्थ्य के सामने औरों को तुच्छ समझता है।

मेरा बल है प्रगट तिहूं लोक, तू काई चिंतवे मन सोक।
कहा राम है भूमिगोचरी, जिसका भय तू चित्त मे धरी।
उनकी सेना दहबट करुं, राम है बांधि बंदि मैं धरुं।
जे मै आणी सीता नारि, फेर सकू कैसे इणबार ।।३६४०।।

लेकिन राम के समक्ष रावण का पौरुष समाप्त हो जाता है। उसका चक्र उसके हाथ से छूट कर लक्ष्मण के हाथ चला जाता है और उसकी इहलीला समाप्त हो जाती है अनेक विद्यायें भी उसका साथ नही देती।

५. हनुमान—

हनुमान वानर वंशी विद्याधर हैं। उसके पिता पवनजय एवं माता अंजना का चरित्र लोक में प्रसिद्ध हैं। हनुमान प्रारम्भ में ही वीरता के धनी है पहिले वह रावण का साथ देते हैं लेकिन राम मिलन के पश्चात् वह रावण का विरोधी बन जाते है। हनुमान राम का सन्देश लेकर लंका में जाता है। सीता से भेंट करता है। राम के समाचार कहता हैं। वह पकड़ा जाता है और रावण के समक्ष उपस्थित होता है। लेकिन अपने विद्याबल मे मुक्त होकर लंका का दाह करता है। राम लंका पर आक्रमण करते है तो वह सेनापति के रूप मे अगली पंक्ति में रहते हैं। लक्ष्मण के मूर्छित होने पर वह अयोध्या जाकर विशल्या को लाते हैं। जीवन के अन्त तक वह राम के साथ रहते हैं तथा अन्त मे तपस्या करते हुए मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं। हनुमान का जीवन जैन साहित्य मे बहुत लोकप्रिय रहा है इसीलिए सभी भाषाओ मे उनके जीवन के सम्बन्ध में कितनी ही कृतियां लिखी गयी है।

पद्मपुराण का सामाजिक जीवन—

पद्मपुराण में देव, विद्याधर, भूमिगोचरी ,म्लेच्छ जाति के प्राणियों का वर्णन आता है और इन्हीं में से पुराण के प्रमुख पात्र बनते है।

देव—देवगति के धारक देव स्वर्ग में रहने वाले होते है। कभी वे तीर्थंकरों के पंच कल्याणकरो में आते हैं तो कभी युद्ध भूमि में वृष्टि करते हैं। यक्ष एवं यक्षिणी देव जाति में ही गिनी जाती है। देवों के विक्रिया ऋद्धि होती है जिससे वे अपना कुछ भी रूप बना सकते है।

विद्याधर—मनुष्य जाति में ये विद्याधर विशेष जाति के होते हैं जो आकाशचारी होते हैं। विमानों के द्वारा ये आकाश में चलते हैं। अंजना, पवनंजय, हनुमान सभी विद्याधर जाति के मनुष्य थे। इनको विद्यायें स्वतः ही प्राप्त हो जाती है। विद्याओं के धारक होने के कारण इन्हें विद्याधर कहा जाता है। भरत की राजसभा में विद्याधर नरेश भी थे। अंजना को पुत्र के साथ विद्याधर नगर ले जाया गया था।

अंजनी मति बिवाण बैठाई, बसंतमाला संग लई बढाइ।
विद्याधर ले निजपुर चल्या, सुगन मुहूरत साध्या भला।
बैठा बिवाण चले आकास, देख्या रवि बालक आकाश ॥१३२६॥

भूमिगोचरी—भूमिगोचरी का अर्थ मनुष्यों से है जो केवल भूमि पर ही चलते है। राम, सीता, लक्ष्मण, जनक, दशरथ आदि सभी भूमिगोचरी कहलाते थे। रावण अपनी शक्ति के सामने भूमिगोचरियों की शक्ति को कुछ नहीं समझता था।

म्लेच्छ—म्लेच्छ खण्ड में रहने वालो को म्लेच्छ कहा जाता था। रावण का प्रदेश म्लेच्छ खण्ड में गिना जाता था। ये म्लेच्छ बड़ी दुष्ट प्रकृति के होते थे और सत्पुरुषों को तंग किया करते थे। रावण यद्यपि राक्षस वंशी था लेकिन उसकी गिनती भी म्लेच्छों में आती थी ये अतिशय शक्तिशाली होते थे। राजा जनक ने दशरथ से म्लेच्छों से छुटकारा पाने के लिए ही राम लक्ष्मण को आमन्त्रित किया था।

म्लेच्छ मोहि घेरया है आय, थाणा मेरा दिया उठाय।
पीड़ा परजा कु दे हैं घनी, देवल ढाहि गउ तिहां हणी
साधा कूं देहै उपसर्ग, जिसकूं तिसकूं मारेख डग ॥१८००॥

विवाह वर्णन

पुराण युग मे पति पत्नि के रूप में रहने के लिए विवाह बन्धन आवश्यक माना जाता था। पद्मपुराण में विवाह के दो रूप सामने आते है एक स्वयंबर द्वारा, दूसरा सप्तपदी द्वारा बारात लेकर कन्या के पिता के घर जाकर। दोनों प्रकार के विवाह जन समाज द्वारा मान्य थे। अमरप्रभ विवाह के लिए बारात लेकर गये थे। नगर के पास बारात आने पर अगवानी की गयी थी (४८/६७) बारात ने जनवासा किया था। विवाह में कपड़े, गहने, हाथी एवं घोडे दिये गये थे। बारात को जीमनवार देकर सन्मान किया था।

श्रीमाला का स्वयंवर रचा गया था। कन्या ने अपने पसन्द के वर के गले मे माला पहिनायी थी। रावण ने शुभ मुहूर्त में मन्दोदरी के साथ विवाह किया था। (७४/२८८) सीता ने स्वयवर में राम के गले में माला डाली थी।

जीमनवार

विवाह लग्न के पश्चात् विशाल रूप में जीमनवार होता था। पूरे नगर/गांव को जीमनवार दी जाती थी। सीता के स्वयंवर के पश्चात् एक बहुत बड़ी जीमनवार की गयी थी। सोने के थालों में खाना, चांदी के कटोरे में दूध पीना उस समय साधारण बात थी। मिष्ठानों का विवरण पढ़ने योग्य है—

फीणा फीणी अरु बरफी स्वेत, घेवर लाड़ू परुस्या हेत।
खुरमे सीरा पूरी घनी, बहुत सुवास तनोकी बनी ।।१६४१।।
घोल बडे व्यंजन बहु भांति, हूरे जरद बहु गणे न जात।
भात दाल अतिग्रत सुवास, सिखरण का दौंना धरि पाति ।।
तामें बूरा लायची लोंग, मेवा मेल्या तिहां मोहनभोग।
मीठा मिरच जीरों का मिल्या, लूण संधातें तिहां घिल्या ।।१६४२।।

जीमने के पश्चात् पान, लौंग, केशर, जावत्री दी जाती थी। विभीषण ने जब राम के स्वागत में विविध पक्वान्न बनाये थे लेकिन उनमें भात दाल दही दूध आदि की रसोई प्रमुख थी—

बहु पकवांन अर व्यंजन घने, भात दाल सामग्री मिले।
कनकतवाई सोवन थाल, बैठा जिमैं सब भूपाल ।।३६२६।।
निरमल जल सौं भारी भरी, पीवें भूपति मानै रली।
दूध दही जीमैं सब भूप, षट्रस व्यंजन बणे अनूप ।।३६३०।।

स्वप्न दर्शन और स्वप्न फल—

स्वप्न दर्शन भावी घटना के सूचक होते हैं। तीर्थंकर की माता को जो सोलह स्वप्न आते हैं उनसे माता के उदर से तीर्थंकर पुत्र जन्म के साथ उसके दूसरे लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं।

होय पुत्र फल मन आनन्द, जानहूं पूरनवासी चन्द।
सुर नर इन्द्र करेंगे सेव, तीन लोक के दानव देव ।६/।७७।
भव सागर का तोडै जाल, धर्म सरीर धर्म प्रतिपाल।
विद्याधर नृपति पसुपतो, इनमें बहोत वधावें रती ।।७८।।

राजा श्रेणिक को पद्मपुराण के कथानक के प्रति आश्चर्य एवं जिज्ञासा स्वप्न में ही प्रतिभाषित हो गयी थी जिसका समाधान भगवान महावीर की दिव्यध्वनि द्वारा हो सका था (१२/१६८-१७८)। मरुदेवी को भी सोलह स्वप्न आये थे जिनका फल तीर्थंकर ऋषभदेव के रूप में पुत्र उत्पन्न होना था। कैकेयी ने पुत्र जन्म के पूर्व तीन स्वप्न देखे थे—

प्रथम सिंघ गर्जा रव करै, हस्ती हनै बहुत मन धरै।
दूजे मैंगल देख्या बली, सरोवर में वह करता रली ।।७१/१८०।।

कमल उखारि लिया मुख मांहि, मानू मेरे मन्दिर आंहि ।
तीजे देख्यो पूरण चन्द्र, सुपने देख भया आनन्द ।।७१/१८१।।

इसी तरह लवकुश होने के पूर्व सीता ने भी स्वप्न में निम्न प्रकार देखा था—

रात पाछली घटिका च्यार, सुपिनां निष पाई तिह बार ।
दोई केहरी गर्जत देखे, सायर जल निर्मल पेखे ।।४४८५।।
देव विमाण आवता जाणि, जाणुं मुख में पसै आण ।
भए प्रभात जागण के बेर, गावें गुणीजन मधुरी टेर ।।४४८६।।

उसी तरह राम की माता अपराजिता एवं लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने भी स्वप्न देखे थे जिनका फल राम और लक्ष्मण जैसे महापुरुष पुत्र के रूप में उत्पन्न होना था ।

शकुन एवं शकुन फल

स्वप्न स्वयं व्यक्ति को आते हैं जबकि शकुन अन्यत्र होते हैं जो शुभ शकुन एव अपशकुन दोनों तरह के होते हैं । जैसे ही अयोध्या में राम और लक्ष्मण का जन्म होता है रावण के यहां अपशकुन होते है—

रावण के घर उलकापात, बिजली परी कांगिर ढह जात ।
रात दिवस रोवें मजार, कूकर रोवें बारम्बार ।।१७११।।
मेगल चारि सुपने मांझि, बोलें काग होइ जब सांझ ।
उल्लू बोलें दिन तिहां घणे, ऐसी चिंता मन रावण तणे ।।१७१२।।

इसी तरह युद्ध के अन्तिम दिन जब रावण आयुधशाला में शस्त्र लेने पहुँचता है तो उसे फिर कुछ अपशकुन होते हैं जिससे उसको बड़ी चिन्ता होती है ।

रावण आवधसाला चल्या, तिहां सुगन खोट सहूँ मिल्या ।
डंड सों छत्र पड्यो भूमि, टूटी धुरी आया रथ भूमि ।।३६२०।।
आगैं होइ निकल्या मांजार, स्वान कान झाड्या तिन बार ।
खोट सुगन रावण को भये, मंदोदरी सोचें निज हिये ।।३६२१।।

राम द्वारा गर्भवती सीता को वन में एकाकी छोड़ने से पूर्व उसकी भी दाहिनी आंख फड़कने लगी थी तब उसने निम्न प्रकार विचार भी किया था—

दहयण आंखि फरुकें सिया, पश्चाताप मन में करै सिया ।
करम उदै कन बेहड़ फिरी, वन मांहि ते रावण अपहरी ।।४५०५।।

युद्ध वर्णन

पद्मपुराण में युद्धों का वर्णन विस्तृत रूप से हुआ है । यह युद्ध राम रावण के मध्य होने वाला तो लोक चर्चित है लेकिन भरत बाहुबली युद्ध, माली द्वारा लंका पर आक्रमण, वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध वर्णन भी

पठनीय है। ऐसा लगता है वह युग भी युद्धों का युग था और बिना हार जीत के कोई समस्या नहीं सुलझती थी। लेकिन भरत बाहुबली युद्ध दोनों भाईयों के मध्य होता है उसमें सेना तो खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रहती है व्यर्थ के खून बहाने के यह अच्छी चाल थी। इन युद्धों में नेजा, बरछी, धनुष, तलवार, चक्र, गदा जैसे हथियारों के अतिरिक्त अग्निबाण, मेघबाण, धुंआबाण, अंधकार बाण, प्रकाश बाण जैसे हथियारों का प्रयोग होता है। युद्ध में नागपासनी विद्या, शक्तिबाण जैसी विद्याओं का भी खुलकर प्रयोग किया जाता था। रावण के अकेले के पास ग्यारह सौ विद्याएं थी और बहुरूपणी विद्या उसने बाद में प्राप्त की थी। कभी-कभी बड़े भयंकर युद्ध होते थे जिनमें जन हानि बहुत हुआ करती थी। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन देखिये—

> परबत मुंड भुजा का भया, पड़ी लोथ पग जाई न दिया।
> सोनत नदी बहै तिहां लोथ, हाथी घोड़े रथ सूर बहोत ।।३७३१।।
> जैसे मगर मच्छ जल तिरै, असे लोथ रकत में फिरै।
> जैता रण झूझा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ।।३७३२।।

रावण को नलकूबड़ से युद्ध करने में विमान से गोलियां, गोले बरसाना पड़ा था। चार योजन (कोश) तक गोलों की मार होती थी। कवि सभाचन्द के समय में तोप और गोलों से युद्ध होने लगा था। इसलिये उसने इस युद्ध में भी उनका वर्णन कर दिया जो तत्कालीन युद्ध कौशल का परिचायक है। युद्ध में विमानों का प्रयोग होता था। विद्याधर तो विमान से ही आते जाते थे। रावण का पुष्पक विमान का नाम तो सर्वत्र प्रसिद्ध है।

नगरों का वर्णन

पद्मपुराण में अनेक नगरों का उल्लेख आया है। इनमें से कुछ पौराणिक हैं तथा कुछ ऐतिहासिक। वैसे सभी राजाओं के अपने-अपने नगर थे जहां से वे अपने देश का शासन करते थे। सर्वप्रथम कवि ने राजगृही नगरी का वर्णन किया है जहां सात मन्जिले महल थे जिनमें भित्ति चित्रों की भरमार थी। चौड़े-चौड़े बाजार एवं चौपड थी। नगर के चारों ओर से चौड़ी एवं गहरी खाई थी यही नहीं नगर का व्यापार भी खूब तगडा था। जहां सराफी, वस्त्र व्यवसाय, लेन-देन आदि होता रहता था।

> ऊंचे मन्दिर हैं सत खिने, सबते सरस राय के बने
> बसैं सघन दीसैं नहीं भंग, लिखे चित्र जिम भले सुरंग ।।
> उज्जल वरण धवल हर किये, छत्री कलस कनक के दिये ।।१/३७।।

+ + + +

वहां सराफ सराफी करैं, बोलैं सत्ति झूठ परिहरै।
कसैं कसौटी परखे दाम, लेवा देई सहज विश्राम ।।

कुंडलपुर नगर तो स्वर्ग के समान था जहां न कोई दुःखी व्यक्ति था और न दरिद्रता से घिरा हुआ। महलों के पास बाग बगीचे बने हुए थे। यही नहीं झरनों में जल भी बहता रहता था।

कुंडलपुर सिद्धारथ राव, महापुनीत जगत में नांउ।
सोभा नगर ना जाइ गिनी, सुरगपुरी की सोभा बनी ।।५/५६।।
दुःखी दलिद्रि न कोई दीन, पंडित गुनी सकल परबीन।
हाट बाजार चौहटे बने, सोभा सकल कहां लौ भनै ।।५/६०।।

बाहुबली की राजधानी पोदनपुर की सोभा तो और भी निराली थी जहाँ सभी मकान समान थे। घरों में रहने वाली स्त्रियां अप्सराओं से कम नही लगती थी। बडी कठिनता से भरत के वकील को बाहुबली का राजमहल मिला था।

ऊंचे मन्दिर सब इकसार, ढूंढता पहुंचा राजदरबार ।।३८४/८७।।
घर-घर नारी जांणि अपछरा, राजमहल सब सेती खरा ।।

इसी तरह मिथला नगरी, उज्जयिनी, महेन्द्रपुर नगर,[1] लंका,[2] अयोध्या[3] आदि का पद्मपुराण में वर्णन आया है वह पढने योग्य है।

महावीरवाणी

पद्मपुराण में यत्र तत्र तीर्थकरो के मुख से एवं मुनियों के द्वारा धार्मिक उपदेश दिया गया है। जीवन पालने के नियम बताए गए हैं तथा चरित्र-निर्माण के कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं इसलिए पद्मपुराण केवल कथानक मात्र न रहकर जीवन-निर्माण का ग्रन्थ भी बन गया है। सामान्य व्यक्ति के लिए निम्न क्रियाओ को आवश्यक बतलाया गया है—

तिहुं काल सामायक करै, सात बिसन आठौं मद हरै।
सोलहकारन का व्रत धरै, दया धर्म दस विध बिस्तरै ।।१०/१३७।।
च्यार दान दे वित्त समान, औषद अभय अहार समान।
सास्त्र दिया पावै बहु ग्यान, विनयवत होई तजि अभिराम ।।१०/१३८।।

कवि ने दान पर बहुत जोर दिया है तथा धन होने पर भी दान नही देने को अपयश एवं पापबंध का कारण बतलाया है—

---

१. देखिये पद्य संख्या २९८३
२. ,, ,, ३६०५
३. ,, ,, ४०९२

देइ चउविध दान, अर्थ पाय धर्महि करै ।
ते पावै निरबान, जस प्रगटै तिहुं लोक में ।।११/१५३।।
चउपइ—धन पाया कछु पुन्य न किया, अपजस पोट अपने सिर लिया ।
आपै खाय न खुवावे और, सदा बहै चिंता की ढोर ।।१५४।।
जोडि द्रव्य धरती तल दियो, कैले काहू ने सौंपियो ।
कै वह धन लेवै हर चोर, कै खोया जुवा की ठौर ।।१५६।।
कै वह सात बिसन सों गया, कै रिण दिया तिहां थकी रह्या ।
कैइ राजि नें लीया दण्ड, किरपन भया जगत में भंड ।।१५७।।

ऐसे लगता है कि कवि के समय में रात्रि भोजन त्याग का नियम कुछ शिथिल हो गया था तथा पानी को छानकर पीने की प्रवृत्ति भी कुछ कम हो रही थी। इसलिए इन दोनों नियमों को दृढता से पालन करने पर जोर दिया है तथा नियमों को नहीं पालन करने वाले की खूब भर्त्सना की गयी है।

भोजन रयण तजै तिहु बात, ते कहीए मानुस की जात ।
जे नर रयण भोजन खांहि, राख्यस सम जाणिये ताहि ।

दोहा

जे नर निसी भोजन करै, कंद मूल फल खांइ ।
ते चिहुंगति भ्रमते फिरै, मोक्षपंथ तिहां नांहि ।।१०५१।।

इसी तरह बिना छना पानी सेवन करने का निषेध किया है—

अणछाण्यां जो पीवै नीर, करै स्नान मंजन सरीर ।
कंदमूलादिक सब फल खाय, सत सयम पाल्यो नही जाय ।।१४३।।
असैं जे सेवे मिथ्यात्व, ते नर मर करि नरके जात ।।

लेकिन भूखे को भोजन देने एवं प्यासे को पानी पिलाने मे अपार पुण्य बतलाया है तथा सरल चित्त रख कर दूसरे के दु:ख को दूर करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भूखा भोजन प्यासा नीर, सरल चित्त जानें पर पीर ।
पुन्नि संयोग लहै गति देव, नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१६१।।११

पराधीनता

कवि ने पराधीनता को बहुत बुरा बतलाया है।

पराधीन कछु बोल न सके, जिहा भेजे तिहां पल नही टिकै ।
जैसी आज्ञा सोई होय, ताको वरज सकै नहीं कोइ ।।४५८७।।

सुभाषित एवं सूक्तियां

पुराण मे विविध कथानक आये हैं इन कथानकों के प्रसंग में कहीं कहीं कवि ने बहुत सुन्दर सुभाषित एवं सूक्तियां कही है जो सदैव मनन चिन्तन एवं जीवन में

उतारने योग्य है। इन सुभाषितों से काव्य सौष्ठव बढ़ा है तथा वर्णन में मधुरता आयी है। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है—

(१) किसकी पृथ्वी किसका राज, मो सम बहुत कर गये राज (३०/४२३)
ये शब्द भरत ने ध्यानस्थ बाहुबली को कहे थे जिनके हृदय में एक शल्य था कि वह भरत की पृथ्वी पर तपस्या कर रहा है।

(२) भागे को पीछा न कीजे तात (६५/८६)
युद्ध में जान बचाकर भागने वाले का पीछा नहीं करना चाहिए।

(३) ऐसा यह संसार स्वरूप, नटवत भेष करै बहुरूप (६६/५५५)
संसार की वास्तविक स्थिति बतलायी है जिसमें यह प्राणी नट के समान विचित्र रूप धारण करता रहता है।

(४) जो नारी परपुरुष को रमै, सो नारी नीची गति भ्रमै (११८/८१६)

(५) ज्यौं पकडे तीतर नै बाज (१२४/८६३)

(६) सोग विजोग रहट की घडी, कबही रीती कबही भरी (१७२/१५३१)

(७) होणहार टार्‌यौ किम टरै (१८१/१६६१)

(८) होणहार कैसे टलै, बहुविध करै उपाय।
अणहोणी होणी नहीं, इह निमित्त का भाव ॥१८१/१६६२

(९) बेटी किसके घरै समाय (२०६/२०३५)

(१०) दिन सेती ज्यु भोजन खाय (२२३/२२३४)

(११) जती सन्यासी बिप्र अतीव, बाल वृद्ध नारी पसु जीव।
पसु अपाहज मत मारो मूल, इनकी हत्या है अघमूल ॥२२६/२३२१

इस प्रकार और भी बहुत सी सूक्तियां एवं सुभाषित पुराण मे से एकत्रित की जा सकती हैं वास्तव में ने कवि पुराण काव्य को सरस एव रोचक तथा प्रभावी बनाने के लिए इस प्रकार की रचना का अच्छा सहारा लिया है।

पाण्डुलिपि परिचय—

पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि डिग्गी (राजस्थान) के दि० जैन मन्दिर में संग्रहीत हैं। इस पाण्डुलिपि में ११८ पत्र हैं जो १२॥ × ६ इंच साइज के हैं। प्रत्येक पृष्ठ में २८ पंक्तियां हैं। पाण्डुलिपि संवत् १८५६ मिति असाढ़ वदि १४ सोमवार की लिखी हुई है। लिपिकार प्रशस्ति निम्न प्रकार से है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत संपूरन। संवत १८ सै ५६ मिति आषाढ बदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पण्डित मोतीराम लिखायतं साहजी श्री गंगाराम जी की बहु जाति दोराया मांडलगढ़ की उतराय अठाई का व्रत मैं पण्डित मोतीरामेन दीयो। अथ संख्या ११ हजार रुपया ७ दीया निजराना का शुभं भवतु॥ पाण्डुलिपि की प्राप्ति श्री माणकचन्द जी सेठी डिग्गी के माध्यम से हुई है। वैसे

मैं एवं श्री हरकचन्दजी चौधरी भूतपूर्व समाज कल्याण अधिकारी राजस्थान अगस्त ८२ में डिग्गी के शास्त्र भण्डार की खोज में गये थे तब मुझे यह पाण्डुलिपि ग्रन्थों की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। पद्मपुराण की अभी तक यही एक मात्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। हो सकता है राजस्थान अथवा देहली आदि के और भी शास्त्र भण्डारों मे पाण्डुलिपि मिल जावे। मै श्री हरकचन्दजी चौधरी का भी आभारी हूँ जिन्होने दो दिन तक ठहर कर ग्रन्थो की सूची बनाने मे सहयोग दिया था।

पद्मपुराण का सार—

चौबीस तीर्थंकरो के मंगलमय स्तवन से पद्मपुराण प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् जिनवाणी के स्वरूप का कथन एवं राम नाम के महात्म्य का वर्णन किया गया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ती आचार्य रविषेण के स्मरण के पश्चात् राजगृही नगरी की सुन्दरता, कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ के यशोगान के साथ ही त्रिशला माता द्वारा सोलह स्वप्न, भगवान महावीर का जन्म, तप, कैवल्य एव समवसरण का वर्णन मिलता है। महाराजा श्रेणिक रघुवंश की कथा जानने की इच्छा प्रकट करते है। भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरती है और गौतम गणधर द्वारा जिनवाणी के अनुसार रघुवश की कथा का वर्णन किया जाता है।

गौतम गणधर रामकथा कहने के पूर्व भोगभूमि एवं चौदह कुलकरों के उल्लेख के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता महाराजा नाभिराय एव महारानी मरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म, देवो द्वारा जन्मोत्सव का आयोजन, ऋषभदेव का बाल्यकाल, शारीरिक सुन्दरता, विवाह व सन्तानोत्पत्ति, राज्य प्राप्ति व उनके द्वारा तीन वर्णों (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की स्थापना का वर्णन करते हैं। दीर्घकाल तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् ऋषभदेव तपस्वी बनकर कैवल्य प्राप्त करते है। धर्मोपदेश देते हैं और अन्त मे निर्वाण प्राप्त करते हैं। ऋषभदेव के १०१ पुत्र एव २ पुत्रिया होती है। भरत का दिग्विजय के पश्चात् अपने छोटे भाई बाहुबली से युद्ध होता है। युद्ध मे यद्यपि बाहुबली की विजय होती है लेकिन उन्हे वैराग्य हो जाता है। भरत सम्राट बनते है। भरत द्वारा ब्राह्मण वर्ग की स्थापना की जाती है और उन्हें "सबसे उत्तम बांभण भने" के रूप मे स्वीकार किया जाता है।

सम्राट भरत पर्याप्त समय तक राज्य सुख भोगते हैं और अन्त में आदित-जस को राज्य भार सौंपकर स्वयं वैराग्य धारण कर लेते हैं। इस कथानक में विद्याधर वश का वर्णन एवं सत्यघोष की कथा कही गयी है। तृतीय कथानक में अजितनाथ तीर्थंकर के वर्णन के पश्चात् सगर की उत्पत्ति, उसके साठ हजार पुत्रों द्वारा कैलाश पर जाकर गंगा को खोदना, धरणेन्द्र द्वारा भीम एवं भागीरथ को छोड़कर सभी पुत्रों को अपनी फुंकार से भस्म करना, पिता द्वारा पुत्रों की मृत्यु पर दुःख प्रकट करने के पश्चात् भागीरथ को राज्य सौंपकर स्वयं जिन दीक्षा ले लेने

है इसी में लंका के राजा महाराक्षस एवं उसके पुत्र अमर राक्षस आदि का वर्णन भी आता है।

चतुर्थ कथानक में श्रेणिक द्वारा वानर वंश की कथा जानने की इच्छा, उसकी उत्पत्ति, मेघपुर नगर में राजा अतेन्द्र अपने पुत्र श्रीकंठ के साथ राज्य करता है। उसकी एक सुन्दर पुत्री को रत्नपुरी के राजा अपने पुत्र पद्मोत्तर के लिये मांगता है लेकिन उसे वह नही मिलती है। एक बार जब विद्याधर सुमेरू पर्वत पर जाता है तो पुष्पोत्तर की लडकी की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो जाते है। पुष्पोत्तर श्रीकठ का पीछा करता हैं वह भाग कर लंका चला जाता हैं। फिर पद्मावती से उसका विवाह हो जाता है। लंका नरेश कीत्तिधवल श्रीकंठ को किंधलपुर का राजा बना देता है। वहां वह वर्षों तक राज्य करता है। एक बार उसने अपने पूरे परिवार के साथ मानुषोत्तर पर्वत की यात्रा की तथा वहां देव बनकर नन्दीश्वर द्वीप की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की फिर अपने पुत्र वज्रकंठ को राज्य भार सौपकर स्वयं ने जिन दीक्षा धारण करली। श्रीकंठ राज्य करने लगा। एक बार उसने एक चारण ऋद्धि धारी मुनि से अपने पूर्व भव पूछे। पूर्व भव सुनने के पश्चात् उसे वैराग्य हो गया और अपने पुत्र को राज्य देकर स्वयं मुनि बन गया। इसके पश्चात् कितने ही राजा हुये। इसी परम्परा में होने वाले अमरप्रभ राजा का गुणवती से विवाह हुआ। कवि ने बारात एव जीमनवार का अच्छा वर्णन किया है। अमरप्रभ श्रेयास तीर्थंकर के शासन काल मे हुए थे। इसके पश्चात् जब वासुपूज्य स्वामी का शासन काल आया तो तीन तीन सागर की लम्बी अवधि व्यतीत होने के पश्चात् अमरप्रभ का फिर जन्म होता है।

लका के राजा विद्युतवेग की श्रीचन्द पटरानी थी। एक बार वे दोनों जंगल मे गये हुए थे तो एक बन्दर ने राणी के फूल की दे मारी। राजा ने बाण से बन्दर का बध कर दिया। वानर मरने के पूर्व मुनि के चरणों में आ गिरा। इससे वह मर कर देव हो गया। देव ने मायामयी सेना बना कर विद्युतवेग पर चढ़ाई कर दी। लेकिन दोनों मे मित्रता हो गयी। आदितपुर की रानी वेगवती की पुत्री श्रीमाला का स्वयंवर रचा गया। अस्ववेग ने श्रीमाला से गुप्त विवाह करके उसे विमान में बैठाकर ले गया।

माली राजा ने लंका पर चढ़ाई करके उसको ले लिया। वह लंका पर राज्य करने लगा। कुछ समय पश्चात् इन्द्रकुमार ने लंका पर चढ़ाई करके और युद्ध के पश्चात् वह लंका का स्वामी बन गया। माली मारा गया। सुमाली की पत्नी कैकसी ने तीन स्वप्न देखे। उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो रावण, कुंभकर्ण एवं विभीषण कहलाये। उधर इन्द्र को रावण के जन्म लेते ही दुःस्वप्न आने लगे। वह

चिन्तित हो गया। एक दिन रावण अपनी मां के साथ जा रहा था। तब उसने अपनी मां से राजा और उसके नगर के बारे में पूछा। मां ने लंका के बारे में रावण को सब कुछ बता दिया। इससे रावण को बड़ा क्रोध आया और लंका जीतने का निश्चय किया। उसने मां के सामने ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। फिर तीनों भाईयों ने विद्या प्राप्ति के लिए तपस्या करना प्रारम्भ किया। यक्ष ने बहुत प्रकार के विघ्न उपस्थित किये। देवागना का रूप धारण करके उन्हें अपने ध्यान से डिगाना चाहा लेकिन कोई भी अपनी साधना से नही डिगे। रावण ने एक साथ ग्यारह सौ विद्याएं प्राप्त की।

रावण ने विद्या प्राप्ति के पश्चात् पहिले मन्दोदरी से विवाह किया और फिर लंका को वैश्रवन राजा से छीन ली। लका विजय के पूर्व दशानन को मन्दोदरी से इन्द्रजीत की प्राप्ति हुई। लका राक्षस वंसी रावण की हो गयी। रावण एक बार कैलाश पर जिन वन्दना के लिये गया। मार्ग मे उसे बालि मुनि तपस्या करते हुए मिले। रावण ने अपने विद्याबल द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तपस्या करते हुए बालि ने अपना अंगूठा टेक दिया। रावण उसके भार को नहीं सह सका और चिल्लाने लगा। बालि मुनि को दया आयी तब कहीं जाकर रावण की प्राण रक्षा हो सकी। रावण ने बालि की स्तुति की तथा वैराग्य लेने की इच्छा प्रकट की। तभी धरणेन्द्र ने रावण को वृद्धावस्था में साधु जीवन अपनाने की बात कही तथा रावण को एक शक्तिबाण देकर उसे और भी बलशाली बना दिया। इसके पश्चात् रावण ने सहस्त्ररश्मि राजा पर विजय प्राप्त की।

इसके पश्चात् वसु राजा की कथा आती है। नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा छिड जाती है। पर्वत "अज किया बैकुंठा जाई" मे विश्वास करता है। नारद इस विचार का खण्डन करता है। 'अज' शब्द पर दोनों मे बहस होती है। वे वसु राजा के पास निर्णय के लिये जाते है। वसु राजा पर्वत की पक्ष लेकर अज शब्द का अर्थ बकरा बताता है। इस असत्य निर्णय से वह सिंहासन सहित नरक में जाता है। पर्वत की जब चारो ओर से निन्दा होने लगी तो वह सन्यासी बन जाता है और राजा मारुत को यज्ञ करने का परामर्श देता है। जब रावण को यज्ञ का पता चलता है तो वह राजा मारुत एवं सभी विप्रों को बांध लेता है लेकिन अन्त मे नारद दया करके उन्हें छुडा देते है।

रावण का एक विवाह कनकप्रभा से होता है। उसकी एक कन्या मधु का विवाह मथुरा के राजा हरिवाहन के पुत्र मधु के साथ होता है। रावण के कैलाश पर्वत पर जाने की सूचना पाकर इन्द्र ने नलकूबड़ राजा के भय से मुक्त करने की प्रार्थना की। रावण सहायता के लिए दौड़ा लेकिन नलकूबड़ ने गढ़ के किवाड़

बन्द कर दिये। लेकिन रावण की वीरता एवं अजेयता को सुनकर नलकूबड़ की पत्नी उपारम्भा उस पर आसक्त हो गयी। उसने अपनी दूती को भेजा और सुदर्शन चक्र होने की बात कही। पहिले तो रावण परस्त्री से बात करने के लिए ही मना कर देता है लेकिन वह विद्या प्राप्ति के लोभ में रानी के पास चला जाता है और उससे विद्या प्राप्त कर लेता है और नलकूबड़ पर विजय प्राप्त करता है। नलकूबड़ इन्द्र की सहायता करता है। इन्द्र और रावण में भयंकर युद्ध होता है इन्द्र को अपने बल पौरुष पर गर्व है। रावण सिंहरथ पर सवार होकर लड़ता है तो इन्द्र हाथी पर लड़ता है। दोनों विभिन्न विद्याओं का उपयोग करते हैं। अन्त मे दोनों में मल्ल युद्ध होता है और उसमें रावण की विजय होती है। रावण इन्द्र को दण्ड देता है। इन्द्र के पिता सहस्रार द्वारा इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना करने पर रावण इन्द्र को छोड़ देता है इन्द्र को अपनी हार से बहुत पीड़ा होती है। इतने में मुनिचन्द्र का वहाँ आगमन होता है अपने पूर्व भव का वृत्तान्त जानने के पश्चात् उसे वैराग्य हो जाता है और अन्त मे मुनि दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं।

धातकी द्वीप मे अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य होता है। देवता गण वहां वन्दना के लिए आते हैं। रावण भी वन्दना के लिए पहुँचता है। भगवान की वाणी खिरती है। छह द्रव्य, सात तत्त्व एव नव पदार्थों पर प्रवचन होता है। अणुव्रत, महाव्रत, दश धर्म आदि के पालन के साथ रात्रि भोजन-निषेध का भी उपदेश होता है। लोभदत्त सेठ की कथा भी कही जाती है जिसके अनुसार लोभदत्त नरक एव सेठ भद्रदत्त अपनी ईमानदारी से जगत में सम्मान प्राप्त करता है। कुम्भकरण रावण आदि सभी व्रत ग्रहण करते है। रावण व्रत लेता है कि जो स्त्री उसको नहीं चाहेगी उसका वह शील कभी खण्डित नहीं करेगा।

राजा श्रेणिक ने इसके पश्चात् हनुमान के बारे मे जानना चाहा। भगवान की फिर दिव्यध्वनि खिरी और गौतम गणधर ने उसका वर्णन किया। आदित्यपुर के राजा प्रहलाद एव रानी केतुकी थे। उनके पुत्र का नाम पवनजय था। उधर वंसपुर देश के राजा महेन्द्र एव उसकी रानी हृदयवेगा थी। अन्जना उनकी पुत्री थी। अन्जना जब विवाह योग्य हुई तो उसके सम्बन्ध की बात चली। महेन्द्र के एक मंत्री ने रावण का नाम सुझाया और उसके वैभव का वर्णन किया। दूसरे मन्त्री ने श्रीषेण राजा का नाम बताया। तीसरे मंत्री ने पवनंजय के लिए अनुशंसा की। राजा को पवनंजय का नाम पसन्द आया और प्रहलाद के सामने अंजना पवनंजय के सामने प्रशंसा की तो उससे उसका मन खट्टा हो गया। इससे अंजना को भी भारी दु:ख हुआ फिर भी दोनों का विवाह हो गया।

उधर रत्नदीप के राजा के साथ रावण का युद्ध छिड़ गया। रावण ने

सहायतार्थ राजा प्रह्लाद को निमन्त्रण भेजा। पवनंजय ने युद्ध में जाने का प्रस्ताव रखा और सेना लेकर वह रवाना हुआ। मार्ग में उसे एक नदी के किनारे चकवा चकवी के विरह को देखकर अंजना की याद आयी। वह सेना वहीं छोड़कर एक रात्रि के लिए अंजना से मिलने चला गया। दोनों में मिलन हुआ। अंजना गर्भवती हो गयी। जब पवनंजय की माता को उसके गर्भ का मालूम पड़ा तो उस पर पुरुष के साथ गमन का दोष लगा कर उसे घर से निकाल दिया। अंजना रोती बिलखती अपने पिता के घर पहुँची लेकिन वहां भी उसे कोई आश्रय नहीं मिला।

कवि ने अंजना का चारों ओर से तिरस्कृत होने का रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। इसे अपने पिता के यहां से भी "ढेला ईंट पत्थर की मार, नगर मांहि तें दई निकार" से तिरस्कृत होना पड़ा। अन्त में अपनी दासी के साथ सघन एवं भयानक वन में एक गुफा में जाकर शरण ली। वहीं उसे एक ध्यानस्थ मुनि के दर्शन हुए। मुनि ने उसे पूर्व भव का स्मरण कराया तथा पुत्र प्राप्ति का आर्शीवाद दिया। उसी समय रत्नचूल राजा का हाथी की खोज में वहां आना हुआ। अंजना ने पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से शिशु हनुमान विमान से गिर गया लेकिन हनुमान का कुछ भी नहीं बिगड़ा। यह घटना उसके भविष्य मे अतिशय शक्तिशाली होने का संकेत मात्र थी।

उधर पवनंजय जब युद्ध से लौटा तब अंजना को न पाकर बहुत दुःखी हुआ। इसके निष्कासन के समाचारों से वह पागल जैसे हो गया। वह तत्काल अंजना को ढूंढने निकला। अंजना के विरह मे उसकी दशा दयनीय हो जाती है लेकिन अन्त में दोनों का मिलन हो जाता है और वे सुखपूर्वक रहने लगते हैं। एक बार वरुण ने रावण पर आक्रमण कर दिया। पवनंजय की सहायता मांगी गयी। इस बार स्वयं हनुमान रावण की सहायतार्थ जाते है। रावण हनुमान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है। वरुण एवं हनुमान मे घनघोर युद्ध होता है। रावण वरुण को पकड़ लेता है। कुम्भकरण विजय के पश्चात् लूट मार मचाता है तो रावण उसकी चिन्ता करता है। वरुण को छोड़ दिया जाता है। इस युद्ध मे हनुमान की वीरता का सबको पता लग जाता है। हनुमान को सुग्रीव अपनी कन्या देता है तथा वे सब सुख से राज्य करते हैं।

20 वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का माता पद्मा के उदर से जन्म होता है। उनका जन्म कल्याणक देवों द्वारा मनाया जाता है। युवा होने पर उनका यशोमति से विवाह होता है। बहुत वर्षों तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् बिजली गिरने की घटना को देखकर उन्हे वैराग्य हो जाता है। तपस्या के पश्चात् पहले कैवल्य होता है और एक लम्बे समय तक धर्मोपदेश देने के पश्चात् निर्वाण प्राप्त करते हैं। वृषभ

नाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक हजारों राजा होते हैं। अयोध्या में वज्रबाहु, कीर्तिधर हिरण्यनाभ, नहुष, स्योदास एवं अरुण आदि एक के बाद दूसरे राजा होते हैं अरुण राजा के अनन्तरथ एवं दशरथ दो पुत्र होते हैं लेकिन अपने पिता के साथ अनन्तरथ द्वारा दीक्षा लेने के कारण दशरथ राजा बनते हैं। दशरथ के तीन रानियां थी—अपराजिता, कैकयी एवं सुमित्रा।

एक दिन रावण के यहां नारद ऋषि का आगमन हुआ। रावण द्वारा अपने मारने वाले का नाम जानना चाहा तो नारद ने दशरथ के पुत्र लक्ष्मण का नाम बताया तथा जनक की लड़की सीता का कारण बताया। रावण ने तत्काल दशरथ एवं जनक को मारने के लिए दूत भेजे लेकिन वे दूसरों को मार कर उनके सिर रावण के सामने रख दिये। रावण अपने आपको अमर समझने लगा।

कैकयी का विवाह स्वयवर द्वारा हुआ था। स्वयंवर के पश्चात् कैकयी ने दशरथ का पूरा साथ दिया। दशरथ की विजय हुई। राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर कैकयी से यथेच्छ वर मांगने के लिए कहा लेकिन रानी ने भविष्य के लिए सुरक्षित रख लिया। दशरथ सानन्द राज्य करने लगे। अपराजिता, के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण एवं कैकयी के भरत का जन्म हुआ। सुमात्रा के शत्रुघ्न पैदा हुए। इनके जन्म होते ही रावण के घर अपशकुन होने लगे। चारों भाई विभिन्न विद्यायें सीखने लगे।

जनक के घर सीता एवं भामण्डल का जन्म हुआ। भामण्डल के पूर्व भव के वैर के कारण जन्म होते ही देवतागण उसे उठा ले गये और रथुनुपुर राजा के जिन मन्दिर में बैठा गये। सुदरमणा रानी के कोई सन्तान नही होने के कारण उसका लालन पालन उसी ने किया। जनक एवं दशरथ दोनों ने भामण्डल की बहुत तलाश की लेकिन कहीं पता नही चला। एक बार जनक की नगरी मिथिला पर म्लेच्छ राजा ने आक्रमण कर दिया। जनक ने दशरथ से सहायता की याचना की। दशरथ के स्थान पर राम लक्ष्मण जनक की सहायता के लिये गये। उन्होंने युद्ध मे म्लेच्छों की सेना को भगा दिया। इससे जनक ने राम को सीता देने की इच्छा प्रकट की। इसी समय नारद ऋषि भी राम का पौरुष देखने आये। उन्होंने सीता का रूप देखना चाहा तो सीता नारद को देखकर डर गयी। इससे नारद ने जनक को करारा उत्तर देना चाहा। वह रथनुपुर के विद्याधर राजा प्रभामंडल के पास गये और सीता के चित्र को उसे दिखाया। प्रभामंडल चित्र को देखते ही उस पर आसक्त हो गया। विवाह के लिये जनक के सामने प्रस्ताव रखा गया। स्वयंबर रचने का निर्णय लिया गया। सीता का स्वयंबर हुआ और राम के साथ सीता का विवाह हो गया। विवाह के अवसर पर जो मिष्ठान्न बने कवि ने उनका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। स्वयंबर

के अवसर पर जब राम ने धनुष खेंचा तो एक मेघ के समान गर्जना हुई, एक भूचाल सा आया। देवताओ ने आकाश से जय जयकार किया। इसी समय भरत का लोक सुन्दरी से विवाह हुआ। दशरथ, राम आदि परिवार के सभी सदस्य जब अयोध्या लौट आये तो सबने जिन पूजा की और गन्धोदक को सिर पर चढा लिया।

उधर भामण्डल को सीता से विवाह करने की प्रबल इच्छा हुई लेकिन जब उसने सीता के विवाह की बात सुनी तो अपनी सेना लेकर विदेह देश की ओर चला। वहां जाने पर भामण्डल को जाति स्मरण हो गया। वह सीता की याद मे मूर्च्छित हो गया। इधर सीताजी को भी अपने भाई की याद आने लगी। दशरथ परिवार सहित मुनि के पास गये और भामडल के बिछडने का कारण पूछा। विस्तृत वृतान्त जानकर उन्हे वैराग्य हो गया। वे चिन्तन करने लगे

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समझि विचार।
सुपना का सा सुख ए, जात न लागै बार ॥२११२॥

दशरथ ने राम को राज्य देने का निश्चय किया। इतने मे ही कैकेयी ने राजसभा में आकर भरत को राज्य देने का बर मांग लिया। कैकयी की बात सुनकर दशरथ बहुत दु.खी हुए लेकिन कोई उपाय नहीं था। भरत ने प्रारम्भ मे राज्य लेने का घोर विरोध किया लेकिन राम स्वेच्छा से राज्य को त्याग कर सीता एवं लक्ष्मण के साथ वन की ओर चले गये और अयोध्या मे भरत राज्य करने लगे। दशरथ ने वैराग्य धारण कर लिया।

राम का वन गमन—

राम अपने भाई एवं पत्नी सहित सर्वप्रथम उज्जयिनी पहुंचे। वहां सिंहोदर राजा राज्य करता था। लक्ष्मण ने सहज ही उस पर विजय प्राप्त करली और वे तीनों आगे बढ़े। एक बार सीता की प्यास बुझाने के लिए गए हुए लक्ष्मण को विद्याधर राजा मिला। उसने तीनों का बहुत सम्मान किया। आगे चलकर उन्होंने रुद्रभूत राजा से बालखिल्य को छुड़वाया। वे सब कूबड़पुर आये। वहां सिंहोदर एव वज्रकरण राजा भी मिल गये। वहां से तीनों आगे बढ़े। मार्ग में एक विप्र के घर पानी पिया। लेकिन विप्र ने बहुत क्रोध किया। लक्ष्मण उसे मारने दौड़े लेकिन राम ने उन्हे शान्त कर दिया। फिर तीनों ने एक बस्ती मे जाकर मन्दिर में विश्राम किया। मन्दिर का देवता राम से बहुत प्रसन्न हुआ। इनके लिये उसने मायामयी नगरी की रचना की। तीनों ने प्रथम चातुर्मास वहीं व्यतीत किया।

चातुर्मास के पश्चात् वे विजयवन मे गये। वहां के राजा पृथ्वीधर की पुत्री वनमाला लक्ष्मण पर आसक्त हो गयी और लक्ष्मण के नही मिलने पर अपघात करने लगी। लक्ष्मण ने प्रकट होकर उसे बहुत समझाया और अन्त में पत्नी के रूप

में उसे स्वीकार कर लिया। इसी बीच अनन्तवीर्य राजा ने अयोध्या पर आक्रमण कर दिया। भरत की रक्षा के लिए पृथ्वीधर आदि राजा आ गये। दोनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध के पश्चात् अनन्तवीर्य ने वैराग्य धारण कर लिया और तपस्या करने लगा।

वहां से सुलोचना नगर के वन में गये। खेमांजलपुर में विश्राम किया। यहां जितपद्मा पर लक्ष्मण ने विजय प्राप्त की। उसके साथ विवाह कर लिया। उसे वहीं छोड़कर वे वंसस्थल नगर पहुंचे। वहां के वन में चार अजगर देवता के रूप में थे। इसी वन में देसभूषण कुलभूषण मुनि पर आये उपसर्ग को दूर किया। उन्हें वहीं कैवल्य हो गया। फिर वे रामगिरि पहुंचे। यहां दो चारण ऋद्धि धारी मासोपवासी मुनियों को आहार दिया। मार्ग और भी मुनियों के उपसर्ग दूर किये। मुनियों देख कर वृक्ष की डाल पर बैठे हुये गृद्ध पक्षी को पूर्व भव का ज्ञान हो गया। उसने व्रत धारण कर लिया।

राम लक्ष्मण आगे चले। दंडक वन में उन्होंने रहने का निश्चय किया। दंडक वन की विशालता एवं सुन्दरता का कवि ने अच्छा वर्णन किया है। इसी वन मे खरदूषण का पुत्र संबुक सूरजहास खड्ग प्राप्ति के लिए घोर साधना कर रहा था। लक्ष्मण को खड्ग की गन्ध आने पर वह भी वहां चला गया। लक्ष्मण को सूरजहास सहज ही प्राप्त हो गया। जब उसने सूरजहास के सामर्थ्य की परीक्षा लेना चाहा तो संबुक का सर कट गया जो १२ वर्ष से उसको प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहा था। वहीं पर लक्ष्मण को देवोपनीत वस्त्रों की प्राप्ति हुई। उधर खरदूषण की पत्नी एवं संबुक की माता चन्द्रनखा घोर विलाप करती हुई लक्ष्मण के पास आयी। पहले उसने लक्ष्मण से विवाह करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिलने के कारण वह खरदूषण के पास चली गयी।

संबुक के मारे जाने से खरदूषण को बहुत दुःख हुआ। उसने राम लक्ष्मण से युद्ध करना चाहा लेकिन अपने ही मंत्रियों द्वारा युद्ध की सलाह नहीं देने के कारण वह रावण के पास गया। रावण ने सीता का सौन्दर्य देखकर उसे उठा लाने की ठान ली। करणगुप्ति विद्या द्वारा उपाय बतलाने पर रावण ने बाण द्वारा अंधकार कर दिया। शंखनाद किया जिसको सुनकर राम सीता को अकेली छोड़ कर लक्ष्मण की सहायतार्थ चले गये। इसी बीच रावण ने सीता का हरण कर लिया। और उसे पुष्पक विमान में बिठा कर लंका ले गया। सीता को जटायु पक्षी ने बचाने का प्रयास किया लेकिन रावण ने पक्षी के पंख काट कर उसे जमीन पर गिरा दिया। सीता का हृदय विदारक विलाप सुनकर रावण को भी दुःख हुआ। उसने निश्चय किया कि जब तक सीता उसे स्वयं नही चाहेगी वह उसका स्पर्श नहीं करेगा। उधर

लक्ष्मण ने खरदूषण को युद्ध में जीत लिया और सूरजहास से उसका सिर काट दिया।

सीता हरण के कारण राम अत्यधिक विलाप करने लगे। लक्ष्मण भी रोने लगे। विद्याधरों के राजा रत्नजटी को सीता की तलाश करने भेजा। वह रावण के पास गया। उसे भला बुरा कहा। लेकिन रावण ने बाण मारा जिससे वह समुद्र मे जा गिरा। णमोकार मंत्र के स्मरण से वह बाहर निकल आया। सीता को अशोक वाटिका में रखा गया। रावण ने सीता को मनाने का बहुत प्रयास किया। रावण की दूतियां उसके पास पहुंची लेकिन सब व्यर्थ गया। रावण के मंत्री मण्डल ने सब परिस्थितियों पर विचार किया लेकिन वे निर्णय पर नहीं पहुंच सके।

सर्वप्रथम राम से किषंध नगर के राजा सुग्रीव आकर मिला। सुग्रीव का राज्य चला गया था। राम ने उसको वापिस दिलान का आश्वासन दिया लेकिन साथ मे सीता को ढूंढ कर लाने की भी बात कही। सुग्रीव ने सात दिन का वचन दिया। राम ने तत्काल सेना एकत्रित करके विट सुग्रीव पर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके सुग्रीव को वापिस राजा बना दिया। राज्य प्राप्ति की खुशी मे सुग्रीव ने राम को कन्यायें भेंट की जो सब कलाओ मे निपुण थी।

चारों ओर सीता की खोज होने लगी। सुग्रीव विद्याधर रत्नजटी से मिले और उसे राम के पास ले आये। रत्नजटी ने रावण द्वारा सीता का हरण की बात कही तथा उसकी शक्ति, सेना एवं विद्यासिद्धि के सम्बन्ध में बतलाया तथा कहा कि रावण को जीतना आसान नहीं है इसलिये वह दूसरा विवाह कर लेवे। जांबुनद मत्री ने भी इसका समर्थन किया। उसने कहा कि रावण ने तीन खण्ड पृथ्वी जीत लेने के पश्चात् अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में जानना चाहा। उस समय भविष्यवाणी हुई थी कि जो भी कोटिशिला को उठा लेगा उसी के हाथ से रावण की मृत्यु होगी। तत्काल राम लक्ष्मण सुग्रीव कोटिशिला उठाने चले। लक्ष्मण ने जाकर कोटिशिला को उठा लिया इससे सब यह जान गये कि लक्ष्मण नारायण है। प्रति नारायण रावण है जिसकी मृत्यु नारायण के हाथ से होगी। इससे राम लक्ष्मण के पुरुषार्थ की चारो ओर धाक जम गयी।

हनुमान को राम लक्ष्मण के बारे में एवं सुग्रीव को राज्य की प्राप्ति के बारे मे समाचार मिले तो वह भी राम की शरण मे चला आया। हनुमान ने राम की वन्दना की और राम ने भी उसे गले लगा लिया।

> चरण कमल बन्दे हनुमत, रामचन्द्र भये कृपावन्त।
> कंठ लगाई सन्मुख बैठाई, आदरि मनोहारी बहुभाय ॥२९६१–२॥

हनुमान ने सीता को लाने का वचन दिया और शीघ्र वहां से चल दिया।

उसने पहिले अपने ननिहाल के राजा महेन्द्र को आतंकित किया और अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया। आगे चल कर दो मुनियों की अग्नि बुझा कर रक्षा की। हनुमान आगे चले। लंका सुन्दरी ने जब हनुमान को देखा तो लंका सुन्दरी उस पर मोहित हो गयी। उसने विवाह सूत्र में बंधना चाहा। हनुमान लंका के लिए आगे बढ़े और लंका में पहुच गये। वहां सर्वप्रथम हनुमान ने विभीषण से भेंट की और सारी परिस्थिति समझायी। विभीषण ने रावण को समझाने का प्रयास किया लेकिन रावण क्रोधित होकर निम्न बात कही—

> कहा करेगा तपसी राम, मोसुं जीत सके संग्राम।
> जीती है मैं सगली मही, मोकूं किस का ही डर नहीं ।।३०५२।।

हनुमान वानर का रूप धारण कर सीता के पास पहुंच गया और अपने आपको राम का सेवक के रूप में प्रगट किया। सीता ने हनुमान से कितने ही प्रश्न किये। उनका सही उत्तर पाकर सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। इसके पश्चात् मन्दोदरी ने हनुमान को रावण की शक्ति के बारे में बतलाया। राम के तापसी जीवन के बारे में भी कहा लेकिन हनुमान ने सबको निरुत्तर कर दिया। जब उसने मन्दोदरी की एक भी बात नहीं मानी तो उसने अपनी अन्य रानियों के साथ बुरी हालत करली और रावण के पास जाकर शिकायत की। रावण ने अपने सैनिकों से हनुमान को पककड़र लाने के लिए कहा लेकिन कोई भी हनुमान को नहीं पकड़ सका। अन्त मे इन्द्रजीत हनुमान को नागपाश में बांध लाया और रावण के समक्ष उपस्थित किया। रावण को हनुमान द्वारा किये गये सभी कार्यों का ब्यौरा दिया। रावण ने क्रोधित होकर हनुमान को बहुत फटकारा और उसकी गरदन काटने की बात कही लेकिन उसकी एक नहीं चली। हनुमान ने मायावी विद्या के द्वारा सोने की लका को भस्म कर दिया और फिर किष्किंधपुर नगर में वापिस आ गया।

हनुमान ने आकर राम से पूरी कहानी कही। सीता की चिन्ता, रात दिन राम का स्मरण आदि सभी बातें सुनायी। राम को हनुमान की बात सुनकर गहरी चिन्ता हुई। राम के साथी सभी राजाओं ने युद्ध में रावण को जीतने की बात कही। युद्ध की तैयारी होने लगी। सब विद्याधर राजा एकत्रित होने लगे। अन्त में आसोज सुदी पंचमी के दिन से सेना ने प्रयाण किया और हंस द्वीप जाकर विश्राम किया।

उधर रावण अपनी शक्ति में अन्धा बना हुआ था। उसे अपनी विद्याओं पर गर्व था। राम लक्ष्मण को वह भूमिगोचरी कहता था। सोलह हजार मुकुटबद्ध राजा उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। लेकिन योद्धाओं ने रावण को सीता को लौटाने

के लिये समझाया। उसने किसी की नहीं सुनी। विभीषण ने इन्द्रजीत को राम की ताकत के बारे में सावधान किया लेकिन रावण समझने की बजाय उसे मारने को दौड़ा और उसे लंका से निकाल दिया। विभीषण राम की सेवा में चला गया यह राम की पहिली जीत थी। राम ने उसे लंकाधिपति कह कर सम्मान दिया। धीरे-धीरे राम की सेना लंका तक पहुंच गयी।

राम की सेना में अनेक सेनापति थे लेकिन सभी बनवास काल के साथी थे। दोनों की सेना एक दूसरे के सामने खड़ी हो गयी। युद्ध प्रारम्भ हो गया और प्रथम दिन की लड़ाई मे राम के सेनापति नल नील के हाथो से रावण के हस्त प्रहस्त ये दो सेनापति मारे गये। दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध हुआ। गोलों एवं गोली की वर्षा होने लगी। दोनों ही ओर के सैनिक मारे गये। तीसरे दिन फिर युद्ध प्रारम्भ हुआ। सुग्रीव आगे बढ़ा लेकिन हनुमान ने उसे रोक कर स्वयं जूझने लगा। दूसरी ओर रावण बढने लगा तो उसके योद्धाओं नें उसे रोक दिया और स्वयं जोर शोर मे लड़ने लगे। कुम्भकर्ण ने मूर्छा बाण छोड़ा लेकिन जब नल और नील गदा मारने लगे तो वह वहां से चला गया। इन्द्रजीत त्रैलोकसार हाथी पर चढ़कर लड़ने। मेघनाद और जंबूमाली, कुम्भकरण और हनुमान, सुग्रीव और इन्द्रजीत, मेघवाहन और भामंडल, बज्रकरण और विराधित परस्पर में भिड़ गये। गोलियां चलने लगी। बरछी, गदा, चक्र जैसे शास्त्र काम में लिये गये। हाथी से हाथी, घोड़ा से घोड़ा और पैदल से पैदल लड़ने लगे। इन्द्रजीत ने मेघ बाण छोड़ा उसके उत्तर में सुग्रीव ने बाण छोड़ा। फिर इन्द्रजीत ने अंधकार बाण छोड़ा। नागपाश की विद्या को याद कर सुग्रीव को नागपाश में बाँध लिया। भांमडल को भी नागपाश से मूर्च्छित कर दिया। कुम्भकरण ने हनुमान को पकड़ लिया तथा दांतों से चबाने लगा। दोनों वीर मुर्दे के समान पड गये। तभी विभीषण ने आकर राम को दोनों के बारे में बतलाया और तीनों की लाश को युद्ध भूमि मे जाकर उठा ले आये।

राम ने बड़े धैर्य से विभीषण को सुना। राम को देशभूषण-कुलभूषण केवली ने ऐसे समय देवों को स्मरण करने के लिए कहा था। राम ने वही किया। तत्काल देव प्रगट हुए और राम को कितनी ही प्रकार की विद्याएं दी। राम और लक्ष्मण दोनों ने देव वस्त्र पहिन लिए। चन्द्रहास तलवार बांध ली और दूसरे अस्त्र शस्त्र सम्भाल लिये। आकाश गामिनी विद्या को स्मरण किया। रथ के स्पर्श से जो हवा चली उससे नागपाश बंधन टूट गया, अंधकार दूर हो गया तथा जो लोग मूर्च्छित हो गये थे वे सब जिन्दा हो गये। फिर युद्ध होने लगा। रावण और विभीषण परस्पर में लड़ने लगे। बड़ा भयकर युद्ध हुआ। रावण ने खेंच कर धनुष बाण चलाया जो विभीषण के कठ पर लगा। धनुष टूट गया लेकिन विभीषण बच गया।

उधर राम और कुम्भकरण में, लक्ष्मण और इन्द्रजीत में युद्ध होने लगा। लक्ष्मण ने नागपाशनी विद्या से इन्द्रजीत को मूर्च्छित करके पकड़ लिया। इसी तरह राम ने कुम्भकरण को मूर्च्छित करके विराधित उसे उठा ले गया।

दूसरी ओर रावण और लक्ष्मण में युद्ध होने लगा। रावण ने लक्ष्मण को शक्तिबाण से मूर्च्छित कर दिया। राम रावण युद्ध हुआ लेकिन रावण बच के निकल गया। वह लंका में चला गया। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि उसने लक्ष्मण को मार दिया। लक्ष्मण को मूर्च्छित देख कर राम विलाप करने लगे। उधर मन्दोदरी कुम्भकर्ण एवं इन्द्रजीत के मरने के कारण तथा सीता लक्ष्मण के मूर्च्छित होने के कारण रोने लगी। उसी समय भामण्डल चन्द्रप्रति नामक वैद्य को लाया जो शक्ति बाण की मूर्च्छा को दूर करने का उपाय जानता था। उसने कहा कि विशल्या के स्नान का यदि जल मिल जावे तो लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो सकती है। हनुमान एवं अंगद को तत्काल अयोध्या भेजा गया। वहां जाकर भरत की सहायता से विशल्या को साथ लिया। विशल्या लंका आयी और मूर्च्छित लक्ष्मण के शक्ति बाण के प्रभाव को दूर किया। लक्ष्मण को होश में आने पर मंत्रियों ने रावण को पुनः समझाया लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। रावण ने अपना दूत राम के पास भेजा तथा इन्द्रजीत एवं कुम्भकरण को छोड़ने के लिए कहा। राम ने सीता को छोडने की बात दोहरायी। दूत ने सीता को भूल जाने को कहा इस पर राम ने दूत को धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

रावण पूरा व्रती था। अष्टाह्निका में युद्ध बन्द हो गया। वह विद्या सिद्धि के लिए चला गया और वह ध्यानारूढ हो गया। रावण के सामने जब विद्याएं प्रकट हुई तो उनसे राम लक्ष्मण को बांधने के लिए कहा लेकिन विद्याओं ने अपनी असमर्थता प्रगट कर दी। रावण रणवास मे वापिस आ गया। उसने समझा कि उसे विद्या सिद्ध हो गयी हैं। मंत्रियों ने रावण से सीता को फिर छोड़ने के लिए समझाया लेकिन उसने एक भी नहीं सुनी।

रावण अपनी पूरी सेना के साथ फिर युद्ध के लिये उतर पड़ा। लक्ष्मण रावण में युद्ध होने लगा। स्वर्ग के देवता गण भी दोनों के युद्ध देखने के लिए आ गये। रावण का एक सिर टूटता लेकिन उसकी जगह दूसरा लग जाता। जैसे-जैसे लक्ष्मण उन्हें काटता वे दूने हो जाते। आखिर रावण ने लक्ष्मण पर चक्र चला दिया। चक्र की प्रभा से चारों ओर प्रकाश हो गया। सभी योद्धा चकित रह गये लेकिन वह चक्र लक्ष्मण के हाथ आ गया। फिर लक्ष्मण ने उसी चक्र को रावण के ऊपर चला दिया जिससे रावण के हृदय के टुकडे-टुकडे हो गये और उसके प्राणों का अन्त हो गया।

विभीषण रावण के पास जाकर बहुत रोया। वह कितनी ही बार मूर्छित भी हो गया। राम ने वैद्य को बुलाकर उसका उपचार करवाया। रानियां विलाप करने लगी। तथा छाती पीट-पीट कर रोने लगी। रावण का विभीषण ने दाह संस्कार किया। राम ने कुम्भकरण एवं इन्द्रजीत को छोड़ दिया जिन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। उसके पश्चात् राम ने सेना के साथ लंका में प्रवेश किया जहां विभीषण नें उनका जोरदार स्वागत किया। राम सर्वप्रथम सीता के द्वार पर गये जहां सीता अपने दिन काट रही थी। वह दुर्बल देह हो गयी थी। मलिन केश थे। राम से बिछोह के पश्चात् उसने सब कुछ छोड़ दिया था। सीता ने आंखे खोली और राम के हाथ जोड़ कर दर्शन किये। लक्ष्मण ने सीता के चरण छुए। भामण्डल भाई ने सीता से कुशल क्षेम पूछी।

लका की शोभा निराली थी। वहा कितने ही जिन मन्दिर एवं सहस्रकूट चैत्यालय थे। शांतिनाथ स्वामी की जिन प्रतिमा विराजमान थी। मन्दिरों के सभी ने दर्शन किये। पूजा विधान किया। सभी राजाओं ने राम लक्ष्मण को अपना राजा स्वीकार किया। इसी समय नारद ऋषि का वहाँ आगमन हुआ। वे इससे पूर्व अयोध्या जाकर आये थे। नारद ऋषि ने राम से अपराजिता के दुःख एवं अयोध्या मे उनकी प्रतीक्षा के समाचार सुने तो राम ने शीघ्र ही अयोध्या लौटने का निश्चय कर लिया। पहिले उन्होने अयोध्या मे अपना दूत भेजा जिससे लंका विजय एवं अयोध्या आगमन का सबको समाचार मालूम हो सके। राम ने लंका का राज्य विभीषण को देकर आप सब अयोध्या के लिए रवाना हो गये। वे सभी पुष्पक विमान द्वारा चले। मार्ग मे राम ने पुष्पक विमान से वे सब स्थान दिखलाये जहां वे ठहरे थे। अयोध्या मे पहुँचने पर उनका जोरदार स्वागत हुआ। भरत एवं शत्रुघ्न ने दोनों के पैर छुए। चारो ओर आनन्द छा गया।

कुछ समय पश्चात् भरत को जगत् से वैराग्य हो गया। परिवार के सभी सदस्यो ने उन्हें बहुत समझाया लेकिन उन्होंने जगत् की नश्वरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। इतने मे एक उन्मत्त हाथी ने भरत के पास आकर और अपनी सूंड उठाकर उन्हे नमस्कार किया। हाथी को जाति स्मरण हो गया था। भरत एवं हाथी पूर्वभव मे साथी थे। हाथी पर चढ़कर भरत ने वैराग्य धारण कर लिया उधर हाथी भी भोजन पान छोड़कर खड़े-खड़े तपस्या करने लगा इतने में कुलभूषण देशभूषण मुनियों का वहां आगमन हुआ। लक्ष्मण ने हाथी के पूर्व भव के बारे में उनसे जाना। इससे सभी को जगत् की नश्वरता के बारे में और अधिक विश्वास हुआ।

राम एवं लक्ष्मण का विधिपूर्वक राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। राम ने सब

राजाओं को अलग-अलग देश दिया। सुग्रीव को किषंध नगर, नल नील को प्रति नगर, विभीषण को लंका राज्य, हनुमान को श्रीपुर का राज्य, रतनजटी को किन्नर नगर एवं भावमंडल को रथनुपुर देश का राज्य दे दिया। शत्रुघ्न ने मथुरा का राज्य मांगा लेकिन राम ने कहा कि मथुरा पर रावण का जामाता मधु राज्य कर रहा है जो बहुत बलशाली है। लेकिन शत्रुघ्न नहीं माना। उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मधु ने बहुत भयकर युद्ध किया। उसे युद्ध के मध्य ही वैराग्य हो गया। वह आत्मचिंतन करने लगा तभी शत्रुघ्न ने उसकी गर्दन उड़ा दी लेकिन जब उसे मधु के वैराग्य का पता चला तो उसने हाथी से उतर कर मधु को नमस्कार किया। मधु मर कर पांचवें स्वर्ग में गया।

मधु के मरने के दुःख से उसके व्यंतर मित्रों ने शत्रुघ्न पर आक्रमण कर दिया। धरणेन्द्र ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसने किसी की नहीं मानी। सर्वप्रथम उसने प्रजा को दुःख देना प्रारम्भ किया। शत्रुघ्न मथुरा छोड़कर अयोध्या लौट आया। कुछ समय पश्चात् वहाँ चारण ऋद्धिधारी मुनियों का आगमन हुआ। जिनके कारण नगर में शान्ति हो गयी। शत्रुघ्न ने वहाँ राम लक्ष्मण के साथ आकर मुनि को आहार दिया। चारों ओर अपूर्व शान्ति एवं सुख चैन व्याप्त हो गया।

सीता ने एक रात्रि को दो गर्जन करते हुये सिंह, समुद्र एवं देव विमान देखे राम से स्वप्न फल पूछने पर उन्होंने बतलाया कि उसके दो यशस्वी पुत्र होंगे। सीता को प्रत्येक इच्छा पूरी की जाने लगी। एक दिन सीता का दाहिना नेत्र फड़कने लगा। उससे सीता को बड़ी चिन्ता होने लगी। एक दिन नगर के व्यक्ति मिलकर राम के पास आये। वे कहने लगे कि हमारी पत्नियां बिना हमारी आज्ञा के इधर उधर जाने लगी हैं। यदि हम कहते हैं तो वे सीताजी का उदाहरण देती हैं जो रावण के घर रहकर आयी है। यह सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने तत्काल लक्ष्मण को बुलाया और पूरी बात कही।

राम ने कृतांतवक्र सेनापति को बुलाया और सीता को वन में छोड़ने का आदेश दिया। लक्ष्मण ने इसका घोर विरोध किया लेकिन राम ने किसी की नहीं सुनी। जब सीता को वास्तविकता का पता चला तो वह पछाड़ खाकर रोने लगी। उसने रोते हुए राम को निम्न सन्देश देने के लिये कहा—

परिजा नैं थे दुखि मत करो, दया समकित चित्त में धरो।
पूजा दान करो दिन राति, तुमारे समरण में इह भांति ॥४५८६॥

सीता को अपने स्वयं पर बहुत दुख होने लगा। वह सोचने लगी कि किन पापों के कारण उसे इतना दुःख उठाना पड़ रहा है। कुछ ही समय पश्चात् उस वन में पुंडरीक नरेश वज्रजंघ का हाथी के कारण वहाँ आना हुआ। उसने सीता का

विलाप सुना और उसके पास आकर जानकारी प्राप्त की। वज्रजंघ के अनुनय विनय करने पर सीता ने अपना परिचय दिया तथा उसे बहिन कहकर घर चलने को कहा। सीता वज्रजंघ के साथ उसके घर चली गयी जहां पत्नि ने उसके चरण स्पर्श करके अपने भाग्य को सराहा। उधर कृतांतवक्र ने बहुत विलाप किया और राम के पास जाकर सब कुछ निवेदन किया। राम लक्ष्मण दोनों ही सीता के वियोग मे दुःखी रहने लगे।

सीता ने श्रावण सुदी पूर्णिमा को युगल पुत्रों को जन्म दिया। चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। वज्रजघ ने खूब दान दिया। दोनों शिशु से बालक एवं बालक से बड़े हुए। सीता भी अपने बच्चों को पालने मे सब दुःख भुला बैठी। शिशु घुटनो के बल चलने लगे। कुछ बड़े होकर गुरु के पास पढ़ने लगे। सभी शास्त्र पढ़े। सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र के मर्म को जाना। धीरे-धीरे दोनो भाइयों ने यौबनावस्था मे प्रवेश किया। एक दिन वज्रजंघ ने कुश के लिए पृथ्वीधर से कन्या मागी। उसके मना करने पर वज्रजंघ ने पृथ्वीधर पर आक्रमण कर दिया। लव कुश भी अपनी माता से आज्ञा लेकर युद्ध के लिए चले गये। युद्ध में उन्हे पूर्ण विजय मिली।

राजा वज्रजघ की राज्य सभा में नारद का आगमन हुआ। नारद से उनने तीनों लोको की बात सुनी। इसी बीच नारद ने सारी रामायण कह सुनायी। सीता का अकारण निष्कासन सुनकर लव कुश ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन दोनों भाइयों ने अपनी माता सीता से फिर सारी जानकारी प्राप्त की। लव कुश ने अयोध्या पर अपनी सेना लेकर आक्रमण कर दिया। आस-पास के गांवो को लूटने लगे। जब राम ने उनके बारे में सुना तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। राम ने तत्काल अपने सेनापतियों को बुलाया। दोनों मे भयंकर युद्ध होने लगा। इधर नारद के कहने से भामण्डल सीता से जाकर मिला। और पूरी कहानी सुनी। फिर दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण ने चक्र चलाया लेकिन वह भी लव कुश के परिक्रमा देकर वापिस आ गया। इतने में नारद ऋषि ने लव कुश का परिचय राम लक्ष्मण को दिया। दोनों भाइयों ने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और अपने द्वारा किये गये सीता निष्कासन की निन्दा की। जब राम लक्ष्मण लव कुश से मिले तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी।

> पिता पुत्र सो जब मिले, हुआ अधिक उल्लास।
> चैन भयो सब नगर में, पूजी मन की आस ॥४८३८॥

राम ने सीता को लाने के लिए नल नील, एवं रतनजटी को भेजा। सीता उनके साथ अयोध्या आ गयी। सबने उठ कर सीता का स्वागत किया। लेकिन राम ने

सीता को निष्कासन का कारण बताया। सीता ने अपने सतीत्व के बारे में बात दुहरायी और किसी भी परीक्षा में समर्पित करने की बात कही। सबने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और उसे निष्कलंक बताया। लेकिन राम के आदेश से पृथ्वी खोद कर अग्नि कुंड बनाया गया। भयंकर अग्नि जलायी गयी जिसको देख कर स्वयं राम भी दुःखी हो गये। सीता से अग्नि कुण्ड में कूदने के लिए कहा गया। सीता पंच परमेष्ठी का स्मरण करके अग्निकुण्ड मे कूद पड़ी। लोगों में हाहाकार छा गया। लेकिन जब अग्नि कुण्ड के स्थान पर सरोवर एवं उसमें रत्न सिंहासन पर बैठी हुई सीता को देखा तो सब आनन्द विभोर हो गये। देवताओं ने जय-जयकार की तथा आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। सीता को नया जीवन मिला। राम भी सीता को प्रशंसा करने लगे तथा वापिस राजमहल में लौटने की प्रार्थना करने लगे।

राम के आग्रह को सीता ने स्वीकार नहीं किया तथा जगत् की असारता एव राज्य वैभव के सुखों को धिक्कार दिया तथा पृथ्वीमती आर्यिका से आर्यिका दीक्षा ले ली। इसी अवसर पर मुनि सकल भूषण ने नरकों के दुःखों का, द्वीप एवं समुद्रों का, छह द्रव्य एवं सात तत्वों का विस्तार से वर्णन किया। इस अवसर पर राम लक्ष्मण एवं सीता के जीवन मे इतने संकट, युद्ध एव वियोग किन-किन पूर्व कृत कर्मो के कारण हुए यह जानना चाहा। इसका मुनि ने विस्तार से प्रत्येक के पूर्व भव का कथन किया।

स्वयं राम को जगत् से वैराग्य हो गया। उन्होंने अन्त मे कैवल्य प्राप्त कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया। इस प्रकार पद्मपुराण महाग्रंथ पूर्ण हुआ। जो इस पद्मपुराण का स्वाध्याय करेगा उसे तीन लोक का सुख स्वयं प्राप्त हो जावेगा।

पदमपुराण कुं जे पढ़े, बाच सुणावे और।
तिहुं लोक का सुख लहै, पावै निरभय ठोर ॥५७४६॥

सभाचन्द के समकालीन कवि

मुनि सभाचन्द का समय हिन्दी काव्य रचना का स्वर्णयुग था जबकि उस समय चारों ओर हिन्दी रचनायें लिखी जा रही थी। हिन्दी ग्रन्थों का पठन पाठन बढ़ रहा था तथा संस्कृत प्राकृत के ग्रन्थों का हिन्दीकरण हो रहा था। कवि के समकालीन कवियो मे आनन्दघन, जगजीवन, पाण्डे हेमराज, पं. मनोहरदास, लालचन्द लब्धोदय, पं. हीरानन्द, पं. रायचन्द (अपरनाम बालक), जिनहर्ष, अचलकीर्ति, जोधराज गोदीका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों मे प० रायचन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने संवत् १७१३ में सीता चरित्र नामक एक स्वतन्त्र काव्य की रचना की थी। कवि का दूसरा नाम "बालक" भी था। इस काव्य मे ३६०० पद्य है। चरित्र की कितनी ही प्रतियां जयपुर एवं देहली के

शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती हैं। चरित्र का मूल आधार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण है जिसका स्वयं कवि ने निम्न शब्दों में उल्लेख किया।

कीयो ग्रंथ रविसेण नें, रघुपुराण जिय जांण।
वहै अरथ इण में कह्यो, रायचन्द उर आण॥

राम सीता के जीवन पर आधारित एक और काव्य मिलता है जिसके कवि भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य ब्रह्मा जयसागर थे। इन्होंने "सीता हरण" नामक काव्य के माध्यम से सीता के जीवन पर अच्छा काव्य लिखा है। सीता हरण की पाण्डुलिपि में ११४ पत्र हैं तथा जिसका रचना काल संवत् १७३२ है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि आमेर शास्त्र भंडार जयपुर में संग्रहीत है। कवि ने सीता के व्यक्तित्व एवं जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला है। पूरा काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है।

गोर महीचन्द्र सीष जयसागर, रच्यो सीता हरण नो रास जी।
नर नारी जे भणे छे सुणे छे, तस घर जय जयकार जी॥
सवत सतरह बत्तीसा वरसे, बैसाख सुदी तीज सार जी।
बुधवारे परिपूर्ण ज रचयूं सूर तनय रयकार जी॥

इस प्रकार पचासों कवियों ने राम के जीवन पर अनेक विभिन्न संज्ञक रचनायें लिखी है जो हिन्दी की अमूल्य कृतियां हैं।

24-10-84

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

विषय-सूची

क्रमांक

१४वां विधानक—अंजना द्वारा गर्भ धारण करना १४६ केतुमति द्वारा पूछताछ १४६ अंजना द्वारा स्पष्टीकरण १४६ अंजना को ताडना १५७ अंजना का निष्कासन १४७ अंजना का महेन्द्रपुरी जाना १४८ पिता द्वारा निष्कासन १४८ सब ओर से तिरस्कृत १४६ गुफा में शरण लेना १५० वन में मुनि दर्शन एवं वंदना १५० बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना १५१ मुनि द्वारा समाधान १५१ कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी १५२ प्रभु जन्म की भविष्य वाणी १५३ रत्नचूल का आगमन १५३ पुत्र जन्म १५४ खेचर के प्रश्न का उत्तर १५५ खेचर का परिचय १५५ अंजना का विद्याधर नगर जाना १५५ विमान से हनुमान का गिरना १५६ ।

१५वां विधानक—पवनंजय द्वारा रावण से विदा १५६ पवनंजय का आदित्यपुर आगमन, अंजना के निष्कासन के समाचारों से दुखित होना, ससुराल जाना १५७ अजना की तलाश १५८ पवनंजय का संदेश १५८ अजना की चिन्ता, पवनंजय की प्राप्ति १५६ अंजना पवनंजय मिलन १६० ।

१६वां विधानक—वरुण द्वारा रावण से युद्ध १६१ हनुमान द्वारा युद्ध मे जाने की इच्छा १६१ कुंभकरण द्वारा लूटमार १६२ रावण द्वारा निन्दा १६२ वरुण को पुन: राज देना १६2, वानरवंशी राज वर्णन १६३ ।

१७वां विधानक—बीरकसेठ वनमाला वर्णन १६४ राजा की व्याकुलता १६५, पूर्व जन्म १६६ बीरकसेठ की तपस्या १६६ स्त्री को दुःख देना १६७ मुनि सुव्रतनाथ का जन्म १६८ जीवन १६६ हरिवंसी राजा १७० राजा वज्रबाहु वर्णन १७१, कीर्तिधर राजा वर्णन १७३ ।

१८वां विधानक—कीर्तिधर की तपस्या १७४ राजकुमार द्वारा वैराग्य १७४ कठोर तपस्या १७६ चित्रमाला को पुत्रोत्पत्ति १७७, नघुष राजकुमार को राजा बनाना १७७ स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध १७७ राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा १७८ सिद्धसेन का राजा बनना १७८ दशरथ का राजा बनना १७६ ।

१६वां विधानक—दशरथ वर्णन १८० नारद का आगमन १८० नारद द्वारा रावण की वार्ता १८० ।

२०वां विधानक—कैकेयी वर्णन १८१ स्वयंबर रचना १८२ दशरथ द्वारा युद्ध ।

२१वां विधानक—अपराजिता द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ लक्ष्मण जन्म १८५ भरत जन्म, राम जन्म १८५ चारों भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन ।

के पास जाना २१६ कंकयी का आगमन २२० राम का उज्जयिनी जाना २२० सिंघोदर मिलन २२० लक्ष्मण की वज्रकरण से भेंट २२२ लक्ष्मण का सिंघोदर के पास जाना २२२ लक्ष्मण सिंघोदर के मध्य झगड़ा २२३ सिंघोदर को बांधना २२५ राज्य का बंटवारा २२५

२६वां विधानक—लक्ष्मण विद्याधर मिलन २२६ लक्ष्मण द्वारा प्रश्न २२७ रुद्रदत्त राजा से युद्ध २२८ बालखिल्य को मुक्त करना २२८

३०वां विधानक—वन भ्रमण २३० सीता की प्यास बुझाना २२६ विप्र द्वारा क्रोध करना २२६ दया के पात्र २२६ बस्ती में जाने का त्याग २३० मन्दिर मे विश्राम २३० देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना २३० कपिल ब्राह्मण की चिंता २३० धर्मोपदेश सुनना २३१

३१वां विधानक—चातुर्मास के पश्चात् गमन २३१ विजय वन में गमन २३१ वनमाला का आसक्त होना २३१ लक्ष्मण का प्रगट होना २३२ सीता द्वारा उत्तर २३३ वनमाला की तलाश २३३

३२वां विधानक—अतीवीर्य राजा का अयोध्या पर आक्रमण २३४ लड़ाई के कारण २३४ दूत द्वारा सन्देश २३४ शत्रुघ्न का उत्तर २३४ दूत का उत्तर प्रत्युत्तर २३५ युद्ध की तैयारी २३५ पृथ्वीधर का निवेदन २३५ भरत शत्रुघ्न को आमंत्रण २३६ भरत की सेना २३६ गणिका नृत्य २३६ नृत्य के भाव २३६ पातरी का उत्तर २३७ सीता की दया २३८ अतिवीर्य को अभयदान २३८ अतिवीर्य द्वारा वैराग्य २३८

३३वां विधानक—विजय राजा का विचार २३६ अतिवीर्य की तपस्या २३६ वनमाला को छोड कर आगे बढना २४० सुलोचना नगर, जितपद्मा की प्रतिज्ञा २४० लक्ष्मण का जितपद्मा के पास जाना, बरछी द्वारा वार, लक्ष्मण की विजय, दोनों का राम के पास आगमन २४१

३४वां विधानक—जितपद्मा को छोड कर आगे बढना, वंसस्थल गांव पहुंचना पर्वत पर बाजा बजना २४२ राम द्वारा विचार, अजगरों का निकलना, देश भ्रमण कुल भूषण मुनि पर उपसर्ग, राम लक्ष्मण का मुनि के पास गमन २४३ व्यन्तरों के पूर्वभव, मतिवर्धन मुनि का आगमन, तपस्या २४४ उदित मुदित द्वारा वैराग्य, मलेच्छों द्वारा उपद्रव २४५ उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति, अनुरध राजा का मान भंग, देश भूषण कुल भूषण का जन्म, वन क्रीडा २४६ कमलोत्सवा का विचार, दोनो भाइयो का वैराग्य भाव, माता पिता द्वारा संताप २४७ नाग-

४३वाँ विधानक—लंका से दूत का आगमन २७७ हनुमान द्वारा राम के दर्शन २७८ राम का हनुमान को गले लगाना, पवनपुत्र द्वारा स्तुति २७९ ।

४४वाँ विधानक—महेन्द्रपुर नगर २८० हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना, परस्पर मिलन २८१ ।

४५वाँ विधानक—तीन कन्याओं द्वारा तपस्या, हनुमान द्वारा दावानल बुझाना, विवाह की भविष्यवाणी २८३ ।

४६वाँ विधानक—वज्रमुख एवं हनुमान की वार्ता २८४ लंका सुन्दरी का प्रेम लंकापति का प्रभाव २८४ हनुमान द्वारा समझाना २८४ ।

४७वाँ विधानक—हनुमान का लंका में पहुंचना, विभीषण से भेंट २८६ रावण का क्रोधित होना, हनुमान का वानर रूप में सीता के पास पहुंचना मन्दोदरी सीता की वार्तालाप २८६ सीता द्वारा राम के सेवक के रूप में प्रकट होने के लिये कहना, सीता के प्रश्न हनुमान का उत्तर २८७ मन्दोदरी का कथन २८३ हनुमान मन्दोदरी संवाद २८९ मन्दोदरी का नाटक, हनुमान का सीता से निवेदन, हनुमान द्वारा भोजन, सीता द्वारा आहार ग्रहण, सीता का चिन्तन २९० सीता के वचन हनुमान का प्रस्थान मन्दोदरी का रावण के पास जाना रावण का क्रोधित होना हनुमान का युद्ध कौशल २९१ इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकड़ना, हनुमान का परिचय रावण का क्रोधित होना २९२ हनुमान का उत्तर हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका दहन २९३ ।

४८वाँ विधानक—हनुमान का राम के पास जाना, राम की चिन्ता २९४, राजाओं द्वारा निवेदन, युद्ध की तैयारी २९५ ।

४९वाँ विधानक—रावण का चिन्तन, युद्ध की तैयारी २९६ योद्धाओं द्वारा रावण को समझाना विभीषण का इन्द्रजीत से वचन २९७ रावण का विभीषण पर धावा, विभीषण का राम के पास जाना, विभीषण का द्वारपाल से निवेदन मन्त्रियों का परामर्श २९८ विभीषण द्वारा राम दर्शन, सेना के साथ लंका द्वीप में पहुंचना २९९ ।

५०वाँ विधानक—अक्षोहिणी संख्या, दोनों के सामर्थ्य की चर्चा ३०० ।

५१वाँ विधानक—युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान ३०१ ।

५२वाँ विधनक—राम की सेना, रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार ३०३ ।

५३वाँ विधानक—हस्त प्रहस्त कथा ३०४ ।

६८वाँ विधानक—देवताओं द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन, रावण द्वारा चिन्ता करना ३३८ अनेक रूप में रावण का लड़ना, रावण द्वारा चक्र चलाना ३३९ लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना ३४० ।

६९वाँ विधानक—रावण का पश्चाताप ३४० विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श, रावण का क्रोधित होना, लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना ३४१ ।

७०वाँ विधानक—विभीषण द्वारा विलाप, रावण की रानियों द्वारा विलाप, श्रेष्ठ मरन ३४३ अरिद्रम की कथा ३४४ ।

७१वाँ विधानक—रावण का दाह संस्कार ३४५ कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोड़ना ३४६ मुनि का संघ सहित आगमन, केवल ज्ञान प्राप्ति, धरणेन्द्र का आसन कंपित होना, राम द्वारा विचार करना ३४७ राम का मुनि के पास जाना, पूर्वभवों का वर्णन ३४८ ।

७२वाँ विधानक– राम लक्ष्मण का लंका प्रवेश ३५० सीता की दशा, राम सीता मिलन ।

७३वाँ विधानक लंका की शोभा, विभीषण द्वारा राम का स्वागत ३५३ विविध व्यंजन, इन्द्रजीत मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति ३५४ ।

७४वाँ विधानक—नारद का अयोध्या आगमन, अपराजिता से प्रश्न ३५८ राम कथा नारद का लंका में आगमन, राम द्वारा स्वागत ३५९ अयोध्या वर्णन, अयोध्या मे राम द्वारा दूत भेजना ।

७५वाँ विधानक– राम सीता का अयोध्या गमन, मार्ग परिचय, अयोध्या दर्शन, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न मिलन ।

७६वाँ विधानक—अयोध्या वैभव, सीता की नगर में चर्चा, भरत के मन में वैराग्य ३६५ राम भरत वार्ता, ३६६ उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन ३६७ ।

७७वाँ विधानक—भरत का हाथी पर चढ़ना, हाथी द्वारा तप साधना ३६८ ।

७८वाँ विधानक—देशभूषण कुलभूषण मुनि आगमन (३६९-७६) भरत के पूर्वभव ३७६ ।

७९वाँ विधानक—भरत द्वारा वैराग्य, कैकयी का विलाप, कैकयी का वैराग्य ३७७ ।

८०वाँ विधानक– राम लक्ष्मण द्वारा दु:ख प्रगट करना, राम का राज्याभिषेक ३७८ ।

पद्मपुराण (हिन्दी)

चौपई

तीर्थंकरों का स्तवन

आदिनाथ बंदू जिनराय । चरण कमल सेऊं मन लाय ।।
जैनधर्म कीया परकास । भव्यजीव की पुंगी आस ।।१।।

अजित नाथ संसारइ जीत । मोक्ष पंथ की जाणी रीत ।।
संभव जिण भव भ्रमण निवार । उतरे भव सागर लें पार ।।२।।

अभिनंदन भय कीने दूरि । सेवत सकल रिद्धि रहै पूरि ।।
सुमतिनाथ सुभ मति दातार । सेवत पावैं सुख अपार ।।३।।

ं व पदमप्रभु सेवा करौं । च्यारौं गति का दुख परिहरूं ।।
देव सुपास पूजो धरि भाव । पूजित उपजै मन को चाव ।।४।।

चन्दाप्रभु ज्यौं दुतिया चंद । दिन दिन कला वधै आनंद ।।
पुष्पदंत जिन पुष्पनि वास । तजि संसार मुगति किया वास ।।५।।

सीतल नाथ दया सौं ध्यान । सुमरत पावै मोक्ष सुथान ।।
श्रेयांसे स्वामी अरिहन्त । टूटे जनम जरा का अन्त ।।६।।

वासुपूज्य की पूजा करौ । भोसागर के दुख परिहरैं ।।
विमलनाथ जिन धर्म महंत । भविजन दरस भये भव अंत ।।७।।

अनंतनाथ स्वामी अरिहंत । दरसन पाये सुख अनंत ।।
धर्मनाथ जिन धर्म महंत । भविजन दरस भये भव अंत ।।८।।

सांतिनाथ सुमरौ दिन रैण । बाढै लछि होइ सुख चैन ।।
कुंथनाथ अरि कीने दूर । भये मुगति संसार कर चुर ।।९।।
अरहनाथ अरि कीने दूर । सुमिरत रहै सदा रिध पूर ।।
मल्लिनाथ महा सुभट सुबीर । अष्ट करम जीते धरि धीर ।।१०।।

मुनिसुव्रत पूजो परभात । असुभ करम का होवै घात ।।
नमि जिणंद ध्यावो करि जोर । तूटै जनम जरा की डोर ।।११।।

अरिष्ट नेम जादूं जग धुनी । सेवत मतिश्रुत पावै धनी ।।
पार्श्वनाथ पूजो धरि ध्यान । सुमरत पावै पूरन ग्यांन ।।१२।।

वर्द्धमान पूजो सब कोइ । मनवंछित फल बहुविध होइ ।।
आदि अंत जे जिन चौवीस । पूजैं सुरनर नावैं सीस ।।१३।।
वंदूं मुनिवर मूढ केवली । कुमति कलेस सब जाए टली ।।
केवल वाणी सदा सहाय । सुणियां नर्क सुदूरि पलाय ।।१४।।
दीप अढाई मैं जे साध । उनके गुन हिरदै मैं बाध ।।
निस वासर सुमरण मैं चित्त । ध्यावै श्री जिन चर्ण जु नित्त ।।१५।।
गणधर चर्ण सर्ण कौ गहौ । गुरु की सेवा भक्ति मैं रहूं ।।

जिनवाणी का स्वरुप

जिनवाणी मै समरुं सदा, मति श्रुति बुद्धि प्रकासै तदा ।।१६।।
उज्जल वर्ण गल मोतीहार । कवियनां गुण अगम अपार ।।
सीसफूल दोइ कुंडलकरण । रुणझण नेवर बाजैं चर्ण ।।१७।।
करकंकुल अंगुल मूंदडी । मणिमाणिक हीरे सू जडी ।।
मोती माग बनी छबि घनी । हंस चढी सोभा बहु बनी ।।१८।।
छह दरसन मुष मडन जान । सुमरत बहु विध पावै ग्यांन ।।
मूरिपतैं पढि होइ सुजान । ता कारण सेऊं धरि ध्यांन ।।१९।।
श्री जिन मुष की वानी सही । सरस्वती सम को बीजो नहीं ।।
करि डडोत कवि करै प्रणाम । भूला अक्षर आंणै ठाम ।।२०।।

सोरठा

सुमरुं जिण चऊवीस, सारद की सेवा करों ।
वे त्रिभुवन के ईश, इह दाता बुधि फल तनी ।।२१।।

चौपई

राम नाम का महात्म्य

रामचद बंदौ जगदीस । साहसवंत महाबल ईस ।।
अनुज वीर लछिमन बलवांन । तीन षंड मे ताकी आन ।।२२।।
राम नाम गुन अगम अथाह । ते गुन किस पै वरने जांय ।।
जा मुख राम नाम नीसरै । सो संकट में बहुरि न परै ।।२३।।
जा घट राम नाम का बास । ताकै पाप न आवै पास ।।
जिन श्रवणन राम जस सुने । देवलोक सुष पावैं घने ।।२४।।
सकट विपति पडै जे आय । राम नाम तिहां होइ सहाइ ।।
जल थल वन विहड ले नाम । मनवाछित सहु सीझै काम ।।२५।।
चलत विदेस नाम जो लेइ । रामचन्द्र ताकुं फल देइ ।।
जे निश्चै सौं सुमरण करै । बहुरि न भवसागर मैं फिरैं ।।२६।।

जो सहस्र रसना करि भर्णे । राम नाम गुण जाइ न गिने ॥
जैसे वृक्ष महा उत्तुंग । जाके फल दीसें सुभरंग ॥२७॥
बौनां देषि देषि ललचाय । वे फल कैसे बौना षाय ॥
वह ऊंचा वह नीची देह । क्यों वा फल कूं पावै एह ॥२८॥
जे मंमल माने मयर्यंत । उनों उखारि डारे जु तुरंत ॥
वे फल बीन बौना नें लिये । ऐसें जिनगुण सुगम कर दिये ॥२९॥

आचार्य रविषेण का उल्लेख

केवल वाणी सुण्यां बषांन । पंडित मुनीवर रच्या पुरांण ॥
आचार्य रविषेण महंत । संस्कृत मैं कीनों ग्रन्थ ॥३०॥
महा मुनीस्वर ग्यांनी गुंनी । मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी ॥
महा निर्ग्रन्थ तपस्वी जती । क्रोध मान माया नहीं रती ॥३१॥
आरिषो वानी शास्त्र किया । धर्म्म उपदेश बहु विध दिया ॥
जिसकै भेदाभेद अपार । महा मुनीस्वर कहैं विचार ॥३२॥
जैसे रवि का होइ उदोत । भाजै तिमिर निर्म्मला होत ॥
इस विधि सुनिकैं मिटै संदेह । मिथ्या तजि समकित सुं नेह ॥३३॥

रचना काल

संवत सत्रहसै ग्यारह बरस । सुन्यां भेद जिनवाणी सरस ॥
फाल्गुन मास पचमी स्वेत । गुरुवासर मनमैं धरि हेत ॥३४॥

कवि का नाम

सभाचन्द मुनि भया आनन्द । भाषा करि चौपई छद ॥
सुनि पुरांन कीनां मडान । गुनि जन लोक सुनुं दे कांन ॥३५॥

राजगृही नगरी की सुन्दरता

जंबूद्वीप में भरत षंड । मगध देस राजग्रही प्रचड ॥
ऊचे मंदिर है सत खिने । सब ते सरस राय के बने ॥३६॥
बसैं सघन दीसे नही मंग । लिखे चित्र जिमे भले सुरंग ॥
उज्जल वरण धवल हर किये । छत्री कलस कनक के दिये ॥३७॥
बनी जु बैठक नाना भांति । जिनकी लोग लिखरहे जात ॥
अति उत्तुंग सवारी पौलि । लगे कवाड बीजै सब ठौर ॥३८॥
झारि झरेखे सोभा भली । देखत उपजै मनमी रली ॥
आगै सूत रच्या बाजार । चौडी नींव लई सुसंवारि ॥३९॥

व्यापार उद्योग

भले भले आये सुत्रधारि । मंदिर रचे बडे विस्तारि ॥
वहां सराफ सराफी करैं । बोलैं सत्ति झूठ परिहरैं ॥४०॥
कसैं कसौटी परखैं दाम । लेबा देई सहज विश्राम ॥
बीच बाजार रहैं जौंहरी । मणिमाणक हीरा लाल खरी ॥४१॥

मोती लाल पनां और चुंनी । राजद्वार महिमां अति घनी ।।
भली वस्तु जो राजा लेई । मुंह मांगिया दाम गिरण देइ ।।४२।।
कही बजाज बजाजी करें । सत्य बचन मुष तैं उच्चरैं ।।
कही जरवा फजिरी सिकलात । नरमी नारग नानां भांति ।।४३।।
निरमैवंत करै व्यापार । दर वेसुरी अर साहुकार ।।
कोठीवाल करै व्यौहार । जिनके वनिज बडे विस्तार ।।४४।।
टापौ दिपै जाय जिहाज । ल्यावै दर्व धर्म के काज ।।
जेते किसबदार हैं और । बैठे सकल विराजै ठौर ।।४५।।
नगरी निकटै उपवन घने । कूप वापिका जलहर घने ।।
अति रमरगीक मनोहर खरे । जानूं गंगा जल सौ भरे ।।४६।।
मंदिर माँहि बैठिकै बनी । झरणां झरैं सीतलता घनी ।।
खलखलाट सौं जल नीसरै । उंचई उछल भूमि पर परै ।।४७।।
तिहां वाइठा राजकुमार । गुंनिजन गावै राग सवार ।।
अब जै सब व्योरा सुं कहुं । बढै पुरांण पार क्यौं लहूं ।।४८।।
किंचित् कहूं वृक्ष के नांम । गुनि जन समझौ नाना भाव ।।
सघन रुंष बहु फूले फले । जानू गूंथ बनाये घने ।।४९।।
पत्र बंध सौ सोभैं केलि । पाडल चढ़ी चमेली बेलि ।।
अब बिजौरा निंबू नरिंग । दाडिम दाख बेलि बहुचंग ।।५०।।
फलै फूल उतरै अति घने । पंछी खाय न बरजई जने ।।
सकल जाति के सौभैं रूख । वास सुगध लागैं भूष ।।५१।।

सोरठा

कमल सरोवर फूल, सबजी जात अनेक विध ।।
भ्रमर सुरग सुष मूल, राति दिवस निबसैं तिहां ।।५२।।
पंछी तिहां अनेक, बौलैं सबद सुहावने ।।
जहां तहा द्रुम बेल, आइ बसेरा लेत है ।।५३।।

चौपई

अैसा नगर बसै सुभ थान । श्रेणिक राय तपै ज्यौं भांन ।।
चेलरगा दे रानी पटधनी । मानुं कनक कांमनी बनी ।।५४।।
सीलवंत गुरग लक्षरग ईश । मानूं इन्द्राणी जीत सचीश ।।
सम्यक् दृष्टि कोमल चित्त । देवगुरु शास्त्र सेवई नित्त ।।५५।।

परजा सुखी बसैं सब लोग । पान फूल रस गोरस भोग ।।
घरि घरि पूजा सुनै पुराण । घरि घरि सुनिए अर्थ बषान ।।५६।।
श्री जिन मन्दिर बने उतंग । फरहरैं धुजा गगन के रंग ।।
इन्द्र चन्द्र सुर बासा लेहि । सुरगपुरी सम सोभा देइ ।।५७।।

सोरठा

बार बार कर सोच करि, विचार राजा श्रेणिक रहै ।।
हुवैई जनम बहोरी, कथा सुनु रघुबंस की ।।५८।।

चौपाई

कुंडलपुर नगर

कुंडलपुर सिद्धारथ राव । महापुनीत जगत में नांउ ।।
सोभा नगर न जाइ गिनी । सुरगपुरी की शोभा बनी ।।५९।।
दु:खी दलिद्री कोई न दीन । पडित गुनी सकल परबीन ।।
हाट बाजार चौहटे बने । शोभा सकल कहां लौ भनै ।।६०।।
बाग बगीचा महल आवास । दीसै सकल पास ही पास ।।
रितु रितु के फल लागे फूल । तातै रहै पथिक जन भूल ।।६१।।
उछलै जल झरना झरैं । निर्मल नीर सुषै विस्तरैं ।।
बैठे राज सभा तहां ठोर । भूपति तहां विराजैं और ।।६२।।

सिद्धार्थ एवं त्रिशला रानी

महा सुभट छत्री हू सूर । ग्यानी गुंनी ग्यान भरपूर ।।
नृप की आग्या सिर पर धरै । कोई नही उपद्रव करै ।।६३।।
प्रजा सुखी करै बहु भोग । पुन्यवन्त निबसै सब लोग ।।
च्यार दान दे वित्त समाज । षट् दर्शन का राखै मान ।।६४ ।।
त्रिसला दे राणी गुणवंत । रूप लछिन सोभै बहु भाति ।।
पतिव्रता आग्या मैं खरी । सील वंत गुंन लावण्य भरी ।।६५।।
वरनन करि गुन पार न लेइ । सामोद्रिक की सोभा देइ ।।
सुख में सूती सेज मंझार । सुपन सिध पाई एक बार ।।६६।।

माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना

सोलह सुपनां नाना भांति । एक महूर्त्त पाछली रात ।।
प्रथम गयंद इक ऊंची देह । आवत देख्यो अपनो गेह ।।६७।।
दूजै सिंह गर्जना करै । गज मयमंत देष बल हरै ।।
लषमी देखि हरषत भांति । अनंत बिभूति सौभै बहु भांति ।।६८।।

कंचन कलस षीर जल भरे । दोऊं पोर के भीतर धरे ।।
देष्यो सरोवर निरमल नीर । छाया सघन विहंगम तीर ।।६९।।
अरु सूर्य देष्यो उद्योत । तासैं तिमर निर्मला होत ।।
देष्यौ पूरणमासी चन्द । सीतल वरतें मन आनन्द ।।७०।।
फूलमाल देषी विकसात । मन आश्चर्य करैं बहु भांति ।।
सिंघासण मोती मणि जड्यौ । रत्नपुंज देषत मन भर्यौ ।।७१।।
देष्या मीन जुगल सर तिरैं । ता चपलाई कौंन सर करैं ।।
देव विमान देष गुनवंत । जात चल्या भव सागर अंत ।।७२।।
देषी अगनि धूम निरधूम । जानौं बनी रत्न की भूम ।।
देष धवल धोरी धीरन धीर । पृथ्वी सग धरैं बलवीर ।।७३।।
देष्यो वारिध ग्रीषम काल । अति गजित किल्लोल विसाल ।।
देष्यो नाग भुवन गुन सही । रात पाछली किंचित रही ।।७४।।
स्वेत गयंद जु वन में गयो । चकृत जागि अचंभा भयो ।।
ए षोडस सुपने मनमांहि रहै । प्रिय समीप व्यौरे सौं कहै ।।७५।।
सिद्धार्थ नृप सुंनि त्रिय वैन । हरषित अंतर विगसत नैन ।।
मन वच क्रम सुपने कुं सुनें । निहचै अष्ट कर्म को हनें ।।७६।।

स्वपनो का फल

होय पुत्र फल मन आनंद । जानहुं पूरनवासी चंद ।।
सुर नर इंद्र करैंगे सेव । तीन लोक के दानव देव ।।७७।।
भव सागर का तोडै जाल । चर्म सरीर धर्म प्रतिपाल ।।
विद्याधर नृपति पसुपती । इनमें बहोत चढावै रती ।।७८।।
जानहुं पंचग्यान को धनी । सब परिवार चढावै मनी ।।
सुन प्रिय वचन भया आनन्द । प्रभु के वयन गांठि सो बन्द ।।७९।।
सुदि असाढ छठि उत्तम घडी । प्रभु ने आइ ग्रभ थित करी ।।
आसन कंपा सुर सुरपती । ।चिमक्या चित्त विचारी मती ।।८०।।
जिण चोईसमैं को अवनार । सिद्धारथ घर वीर कुमार ।।
उतरि सिंहासन करि डंडोत । परंपराय ज्यौं पिछली होत ।।८१।।
मातंग जक्ष बुलाये टेर । जाउ कुंडलपुर इतनी वेर ।।
और दैवी कुमारी छपनां । आइ पहुंची देवांगना ।।८२।।

माता की सेवा

आदेश हुवा कुबेर भंडार । रतन वृष्टि करि वारंबार ।।
दीये चितेरा देवकुमार । भले सुघर जु सूत्राधार ।।८३।।
रचनां रचो मनोहर मही । चलती बेर सीष यौं कही ।।
कहुं कहुं देव चितेरा करैं । अनहद भांति सुरग की धरैं ।।८४।।

बिना जीव जानू बोले बैन । देषत होइ महा सुष चैन ।।
जा अन्तर घनहर घनघोर । बरसै रतन डेढ है कोडि ।।८५।।
जय जय ध्वनि छायो आकास । बरषै पहुप सुगंध सुवास ।।
गर्जै पटल विजुली उद्योत । अंतर मनिक दिवस सा होत ।।८६।।
हरति भूमि जल उपरि तिरै । भरे तलाव मंडि करि फिरै ।।
किनर छपन अंत है पुर आइ । नमसकार कर लागी पाइ ।।८७।।
कोई करै बीजनां वाय । सेवा करैं घेरे मनु ल्याय ।।८८।।
तेल फलेल सवारै केस । कोई सखी बनावै भेस ।।८९।।
कंचन भारी जल भर ल्याइ । और दांतण करावे आय ।।
कोई डबा धरै भरि पान । बीडी करि षुवावै आंन ।।९०।।
और जे सेवग ताकी ठौर । सेवा करि बिराजै और ।।
जैसे कमल पत्र परि नीर । यौं विरधई सांहसै धीर ।।९१।।
जानु भानु बदर छांड्यो । जानु सीप स्वांति जलदीयो ।।
इह विध सौं नगरी मैं गए । घर घर रली बधाई भए ।।९२।।
पूजा करै देहु नित दान । असे भया गर्भ कल्याण ।।

महावीर जन्म

चैत्र सुदी तेरसि कौ रली । नक्षत्र चित्रा विरयां भली ।।९३।।
भयो जनम जान्यौं जब इंद्र । ऐरापति साजियो गयंद ।।
आसण छोडि प्रदिक्षणां दई । चले मुकुटमणि नीची नई ।।९४।।
जै जै सबद करै कर जोर । किनर चले सत्ताइस कोडि ।।
छाय रह्यो आकास विमाण । नृत्य करैं गावै गुणगान ।।९५।।
बाजै पटह दुंदुभी घोर । करि करना इन फेरी जोर ।।
मधुरी धुनि बाजै मृदंग । नृत्य करत मोडै बहुअंग ।।९६।।
भयो कउलांहल सुनै न कान । आए कुंडलपुरी मीलांन ।।
नृप की पौरि भीर बहु जुडी । इंद्राणी अंतहैपुर बढी ।।९७।।
मांया का करि बालक धरया । श्री जिनेंद्र इंद्रानी हरया ।।
नींद उपाई लई चली चोर । बातके तिण डारि तौडि ।।९८।।
ह्वां तैं निकलि दियो पति गोद । निरखि रूप पावो मन मोद ।।
इंद्राणी पुंगी मन रली । गावै मंगल विरयां भली ।९९।।
बैठ गयंद ले गये मेर । पंडुक सिला थापि तीह्न वेर ।।
षीर समुंद इंद्र सुर गए । कंचन कलस नीर भर लिए ।।१००।।
सहस अठोत्तर इंद्र के हाथ । और भर भर ले आए साथ ।।
दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूज्या बारंबार ।।१०१।।

ले आए जहां बीर जिणंद । ढारि कलस मन कीया आनंद ॥
वज्र सूई सौं छेदे कान । काजल नैन सहज मुख पांन ॥१०२॥
देव पुनीत बस्त्र सुभ रंग । पहिराये श्री जिनके अंग ।।
रत्न जडित कुंडल दोई कान । वाजु बंध ताइत उर आन ॥१०३॥
माला और आभूषण बने । बहुत शृंगार श्री जिनबर वणे ॥
कटि करधनी पाए घुघरा । पहराये फूलों के सेहुरा ॥१०४॥
करि आरती स्तुति वहु पढैं । दर्शन देख्या मन सुष बढै ॥
चले देव प्रभु कूं घर लीयें । अति आनन्द परम सुष किये ॥१०५॥

सोरठा

राष्या सबका मान, जो गुन गावै जिन तणे ॥
कीयो जन्म कल्याण, सुरपति सुरथानक गये ॥१०६॥

दुहा

इन्द्राणी किंनर सहित, कीने बहुत आनंद ।
त्रिमला देई गोद मे, श्री दीना वीर जिणंद ॥१०७॥

सोरठा

वर्ष बहत्तर आव, कही जोतिगी समझिकै ॥
सप्त हाथ समकाय, श्री जिण सब जग तिलक ॥१०८॥

चउपई

ज्यौ दुतिया शशि चढै काति । यौ दिन दिन बाढै जिननाथ ॥
सेवा करैं देवता आइ । बालक रूप धरै वहु भाइ ॥१०९॥

महावीर द्वारा वैराग्य

अनुक्रम जोवन पदइ भई । पुन्य विभूति चौगुनी लई ॥
बरस तीस बीते बलवीर । सब गुन बढै लेइ सरीर ॥११०॥
मनां सिघासन कंचन धांम । व्यापा सकल न व्यापा कांम ॥
सहज विचार्यौ लोक स्वरूप । भम्यों जीव नाना धरि रूप ॥१११॥
अति वैराग चिमक चितकरी । सुर लोकांतिक स्तुति करी ॥
धनि धनि करै वे जैजैकार । सिवका आन धरी तिण बार ॥११२॥
प्रभु आरूढ भए सुषपाल । छोडि दिया माया जंजाल ॥
सिवका चढि नदन वन गए । उतरि पालषी ठाढे भए ॥११३॥
सिद्ध नाम ले लुंचे केस । श्री जिन भए दिगम्बर भेस ॥
आए इंद्र अमरपति घने । नंदै विरधै जै जै धुनि भने ॥११४॥
कीने तप कल्यांणक सार । मंगसिर वदि दसमी सुभबार ॥
रत्न पिटारी केस उठाय । लए देवनें समंद सिराय ॥११५॥

कलस षीर जल भर ले आई । ढारि नृत्य करि गाय बजाए ।।
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी । मांनू देव सफल श्रुत धरी ।।११६।।
पुष्प वृष्टि गंधोदिक करै । सीतल पवन तापकौं हरै ।।
वचन वीनती करैं डंडोत । नए मुकट ज्यौं पीछली होत ।।११७।।
यौं करि देव गए फिर गेह । तपारूढ भए जिन देह ।।
बारह विध तप आतम ध्यांन । वाहिज अभ्यंतर चित आंनि ।।११८।।
तेरह विध धार्‌या चारित्र । रागद्वेष जीते छै सत्र ।।
द्वादस अनुप्रेक्षा चित ल्याइ । दोष अठारह दिया छुडाय ।।११९।।
दस विध पालै दया का अंग । छांड्या मोह माया का संग ।।
बारह बरस रह्या छदमस्त । धर्‌या ध्यान जिन नासा दृष्ट ।।१२०।।
आनंद चिदानंदसौ चित्त । च्यारि कर्म अेसठि परकित्त ।।
टूटै घातिया कर्म कठन । छुटी प्रकृति अैसी उतन ।।१२१।।

कैवल्य

बैसाख सुदि दसमी सुभजांन । उपज्या प्रभु कुं केवल ग्यान ।।
इंद्रादिक च्यारौ विध देव । जै जै धुनि करि कारन सेव ।।१२२।।
पुहप वृष्टि फुलन की वास । गंधोदिक सुर करै उल्हास ।।
ऐरापति साज्यो गयंद । चली अपछरा सूरज चंद ।।१२३।।
जोजन एक रच्यो समोसर्ण । गणधर ग्यारह बांणक वर्ण ।।
तीन षातिका गोपुर चारि । पदमाकरि पुहप कति वार ।।१२४।।
मच्छ कच्छ जलचर खग आदि । वैर भाव अंतरि गतिवाद ।।
तीन कोट कंचन के कीये । छत्री कलस रतन जड़ दीये ।।१२५।।
सुर सूत्रधार करे आरम्भ । रच्यो अगाउ मांनसथंभ ।।
देषत मांन प्रकृति को हरै । निरमल मति अंतरगति करै ।।१२६।।
प्रथम असोक सोक कुं दहै । भविजन लोग तमासै रहै ।।
अग्रे भूमि रंगि मन षची । बारह सभा मनोहर रची ।।१२७।।

समवसरण

तीन छत्र की महिमां कहै । तीन चर्म की सोभालहै ।।
समोसरण थानक कल्यांण । चतुर वदन वइठइ भगवान ।।१२८।।
वीच सभा मंडप सुभ ठौर । सिघासन कौ राषी ठौर ।।
पंच हजार दंड उच्चंत । अंगुल च्यार रहैं जिन अंत ।।१२९।।
विपुलाचल परवत सुभ थांन । समोसर्ण पहुंता तिहां आन ।।
मुनि श्रेणिक पूजा कौं गया । सह परिवार गमन तिम किया ।।१३०।।
दे प्रदक्षिणा लाग्या पाय । बहुत भांति वइठे सुषपाय ।।
वीनती सौं जौरे कर दोइ । कहिए धरम सुने सब कोइ ।।१३१।।

महावीर वाणी

श्री जिनवर की बांनी होइ । बारह सभा सुने सब कोइ ।।
गौतम स्वामी कहै बषांन । द्वादस सभा सुनैं दे कान ।।१३२।।

सप्त तत्त्व अर पंचास्तिकाय । षट द्रव्य नो पदारथ थाय ।।
जीव अजीव आश्रव बंध । संवर निर्जरा मोक्ष की रिध ।।१३३।।

जीव तत्व दोइ विध कहे । एक सिध एक संसारी रहे ।।
ता मई दोई भव्य अभव्य । बहु संसार रुलै ए सव्व ।।१३४।।
भव्यनिकर उतरैं भव पार । अभव्य रुलै चिहुंगति मंझारि ।।
भरम्यौ लष चौरासी जोंनि । ते दुष वरन न सकै कवि कौन ।।१३५।।
जनम जरा दुष भुगते घने । श्री जिन वचन तन मन दे सुने ।।
भ्रमत भ्रमत नर देही धरी । साध संगति मति पाई खरी ।।
तीन रतन सौ उपजी रुच । दर्शनग्यान चरित्र जु सच ।।१३६।।
तिहुं काल सामायक करे । सात विस्न आठौं मद हरे ।।
सोलह कारन का व्रत धरैं । दया धर्म दस विध बिस्तरे ।।१३७।।
च्यारदान दे वित्त समान । औषद अभय अहार समान ।
सास्त्र दीया पावै बहुग्यांन । विनयवंत होई तजि अभिराम ।।१३८।।
करमकाटि पहुंचे निरवान । सिवपद पावै सुख सुथान ।।
और जे अंधकूप मैं जीव । तिनुले चिरकाल की नीव ।।१३९ ।।

दया धरम जिनकौ न सुहाय । पूजा दान नहि ठहराय ।।
सास्त्र सुनत उपहरो अकुलाइ । मिथ्यावाद करै वहु भाइ ।।१४०।।
जिहा होय जीव का बंध । तिसकुं ध्यावै मुरिख अंध ।।
नाचै कूदै करि मिथ्यात्व । भोजन करै दिवस नें राति ।।१४१।।
जे कछु करैं कर्म अरु अकर्म । जासौ कहै हमारा धर्म ।।
मूंड हलावै पाषंड करैं । जीव दया का भेद न धरैं ।।१४२।।
अणछाण्यां जो पीवै नीर । करे स्नान मंजन सरीर ।।
कदमूलादिक सब फल षाय । सत संयम पाल्यौ नहि जाय ।।१४३।।
अैसौ जे सेवै मिथ्यात्व । ते नर मर करि नरकै जात ।।
भव भव सहै ते दुष सताप । नर्क निगोद लहै विल्लाप ।।१४४।।
अइसी समझि मिथ्या परिहरौ । जैन धर्म निश्चै सौं करो ।
संयम वर्त्त करो मन ल्याय । सुख संपति बाढै अधिकाय ।।१४५।।

जा प्रसाद बहु लछमी होइ । पूजा दान करौ सब कोइ ।।
सफल लछमी सोही जांन । दुषित दलिद्री कों द्यो दांन ।।१४६।।

पूजा दान प्रतिष्ठा करै । देव सास्त्र गुरु मन में धरै ।।
धर्म तीर्थ को चलावै संग । विषसौं पालै धर्म के अंग ।।१४७।।

श्री जिन भवन संवारै भले । दया भाव के मारग चले ।।
पूजा रचना करै सांतीक । तातै बढै धर्म की लीक ।।१४८।।

मंदिर कूप बगीचे वाय । तिहां पंथी बैठे सुष पाय ।।
वनवासी मुनि ले विश्राम । सुमरै तिहां श्री जिन नांम ।।१४९।।

छह दर्शन कुं आश्रम देई । आदर भाव विशेष करेई ।।
सज्जन कुटंब सु राषै भाव । दान देयण की मनमैं बहु चाव ।।१५०।।

भूषा भोजन प्यासां नीर । सरल चित्त जानें परपीर ।।
पुनि संयोग लहै गति देव । नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१५१।।

ऊंचे कुल में पावै ठौर । ता सम सुषी न दूजा और ।।
कारण पाय जाय सिव पंथ । धरै भाव मुनिवर निर्ग्रन्थ ।।१५२।।

सोरठा

दान का फल

वेइ चउविध दांन, अर्थ पाय धर्महि करै ।
ते पावैं निरवांन, जस प्रगटै तिहुं लोक में ।।१५३।।

चउपई

धन पाया कछु पुन्य न कीया । अपजस पोट अपन सिर लिया ।
आपं खाय न खुवावै और । सदा वहै चिंता की ठौर ।।१५४।।

छह रुति कदे न मानै सुख । भली वस्तु नवि मेल्है मुख ।।
राति दिवस भ्रमतैं ही जाय । आर्त्त रौद्र में काल विहाय ।।१५५।।

जोडि द्रव्य धरती तल दीयो । कैले काहूनें सौंपियौ ।
कै वह धन लेवै हर चौर । कै षोया जुवा की ठौर ।।१५६।।

कै वह सात विसन सौं गया । कै रिण दिया तिहां थकी रह्या ।।
कैइ राजिनें लीया दंड । किरपन भया जगत में मंड ।।१५७।।

सब कोई बोलैं मुंह दै गार । पापी लीया पाप का भार ।।
पचि पचि जोड्या अर्थ भंडार । ताकौ जात लगी न बार ।।१५८।।

नबं किरपन बहुते पिछताइ । तबं भुरयां बनं न सुदांइ ।।
मरिकं भ्रमें चहुगति बीच । पावै गति जो नीच हि नीच ।।१५६।।

नरय तिरय गति भुगतं जाय । जहां न कोई होइ सहाय ।।
लछमी का फल सोई सही । तीन भुवन में जस कीरति लही ।।१६०।।

सदावर्त्त दीना कर दिया । अपनां कारज उनही किया ।
अपने संग सुजस को लिया । उसका नाम जगत में भया ।।१६१।।

दोहा

जे लछमी बहुते जुडै, करै पुन्य नहि कोइ ।।
नरकां का दुख बहु सहै, जाय भवांतर षोइ ।।१६२।।

चउपई

श्री जिनवाणी अगम अगाध । पूजित है प्राणी कौ साध ।।
रवि पुहता अस्ताचल ठौर । श्रेणिक आया अपनी ठौर ।।१६३।।

भई रयण ससि का उद्योत । पृथ्वी ऊपरिसो भई जोत ।।
उज्ज्वल वर्ण मदिर बहु भांति । छूटि रही ससि हर की क्रांति ।।१६४।।
सोमवंसी फूले बहु फूल । वने सरोवर सुष के मूल ।।
महा सुवास पवन की डोल । दंपति रहै सुष करैं किलोल ।।१६५।।
घर घर कामिन गावै गीत । तासु वयण सुभ उपजै प्रीत ।।
गोरी अबला तरनी नारी । सब सोहै ससि की उनहार ।।१६६।।
सौवा फूल पांन सुषवास । रति रति भोग रमे अतिहास ।।
श्रेणिक राय सभा संयुक्त । जिनवाणी गण कहै बहुत ।।१६७।।
सुष सेज्या पोढे थे भूप । उत्तम वस्त्र सुं महा सरूप ।।

श्रेणिक राजा द्वारा स्वप्न

सुपनें मांहि विचारै ग्यान । रामचंद्र गुन का व्याख्यान ।।१६८।।
रामचद्र त्रिभुवन पति राय । लछमन के गुण कह्या न जाय ।।
लंकापति रावन दस सीस । ताकै भुजा विराजै बीस ।।१६६।।

कुंभकरण विभीषण है वीर । महाबली कहिये रणधीर ।।
इन्द्रजीत रावण ना पूत । ताका बल कहैं बहूत ।।१७०।।

आचार्य रविषेण ने रावण के दस शीष नहीं माने हैं ।

कहै इन्द्र नें हम वसि कीया । आमन्यां बांधी अटक मैं दीया ।
नवग्रह बांधि कराई सेव । स्वर्ग लोक के जीते देव ।।१७१।।

इह आश्चर्य मेरे मन घणां । इसा वचन मिथ्यात का सुन्या ।।
इंद्रदेव का स्वर्ग निवास । नवग्रह रहैं इन्द्र के पास ।।१७२।।

तिहां रांवन पहुंचा किस रीत । इन्द्रजीत नें बांध्या जीत ।।
इह पृथ्वीपति भुवि परि रहै । किस विध जाय इन्द्र नें ग्रहैं ।।१७३।।

जो सुरपति कोपै मन मांहि । रावण नें भसम करैं छिन मांहि ।।
जा के बल को अंत न पार । वातैं कौन अडै झुझार ।।१७४।।

जे ते लरैं ते सबहु मरैं । तो इह सत्य वचन जिय धरैं ।
नवग्रह काहै स्वर्ग विश्राम । वे केम करैं आइ इहां काम ।।१७५।।

कुंभकरण नें कहै बहु सूर । नींद छमासी सोवै सूर ।।
बजे दमामा बहु सरणाय । कैसे नाव ऊपर ह्वै जाइ ।।१७६।।

तेल भरया कडाह अवटाइ । दोहु कान में देहो ढुराय ।।
तोउ न जागे एण उपाइ । जे उह जागै किस है भाय ।।१७७।।

भूष षट्मासी कहियन जाय । जोकु दृष्टि पडै सो षाय ।
हाथी घोडे ऊंट मिल जाय । तोउ न क्षुधा उदर की समाइ ।।१७८।।

इह संसै मेरे मन उचै । काचा मांस वाहि किम रुचै ।।
काचा मांस न षावै चिडाल । केम भषै प्रथ्वी भूपाल ।।१७९।।

जाग्यो राय विचारै एह । श्री जिन तैं भाजैं संदेह ।।
वीती निसा उदय भयो भान । बजे बाजित्र घुरै निसांन ।।१८०।।

सकल लोग उठे प्रभात । करि सनांन सुमरण बहु भांति ।।
अपने अपने उदि्दम लगे । बाल वृद्ध सब ही जगे ।।१८१।।

श्रेणिक की राज सभा

भूपति आभूषण सब साजि । पट्ट वैठा तवै श्रेणिक राज ।।
देस देस के भूपति आइ । नमस्कार करि लाग्या पाउ ।।१८२।।

राजसभा में भूपति घने । नामावली कहां लग गिने ।।
राजा वचन कहै सो प्रमाण । चलौ करन दरसन भगवान ।।१८३।।

समवसरण की ओर प्रस्थान

सह परिवार गमन तब किया । अस्व गयंद बहुत सा लिया ।।
के घोडा के रथ के सुषपाल । हस्ती पर बैठा भूपाल ।।१८४।।

आगे बठोतै किंकर चले । गली सकल समराई भले ।।
जिहां तिहां हुंवा छिडकांउ । ताथई बहुत बिराजै ठांउ ।।१८५।।

कोईक आइ अटारी नारि । देखै झांक झरोखा द्वारि ।।
अग्रे नाद बाजै बहोत । हय गय रथ सोभा अति होत ।।१८६।।

सेना साथ राय अति घनी । जिसकी सोभा जाय न गिनी ।।
विन सोभा सोभै बहु भांति । सकल लोग आवै जिन जात ।।१८७।।

समोसर्ण देषियो नरिंद । उतरि भूप सुमरियो जिनेंद ।।
पहुता राय जाइ समोसरन । जीव जंत का पातिक हरन ।।१८८।।

दई प्रदक्षिरणा करि डंडोत । श्रेरिणक पूछी प्रश्न बहोत ।।

भगवान महावीर से रघुवंश कथा को जानने की इच्छा प्रकट करना

स्वामी कहो कथा रघुवंस । क्यू संवूक कीया निरहंस ।।१८९।।
षडदूषरण मारचा किह भांति । बिराधित आइ मिल्या रघुनाथ ।।
किम सीता का हुआ हरन । कइसैं हुवा रावरण मरन ।।१९०।।

कैसे आय मिल्या सुग्रीव । परपच मांरि किया निरजीव ।।
वभीषरण किम पायो राज । कुंभकर्ण किया मुक्ति का साज ।।१९१।।

इंद्रजीत अरु अन इंद्रजीति । किम विध किया उसै भयभीत ।।
राजा पवन अंजना विवाह । क्यूं वियोग हुआ बहु ताहि ।।१९२।।

किम उपज्या हरणौंमान बलवांन । कैसे सुधि मीना की आंनि ।।
रामचंद्र की कीनी सेव । कैसे लह्या समुद्र का छेह ।।१९३।।

सीता आंणी दल संघार । किह कारण सा दई निकार ।
आदि अंत की पूछी बात । सब ही का ससा मिट जात ।।१९४।।

राम कथा का महत्व

श्री जिननाथ की वानी हुई । द्वादस सभा सुनै सहु कोई ।।
गौतम स्वांमी कहैं बषांन । सकल सुनेंहु तुम धरि ध्यान ।।१९५।।

स्वयंभू रमरण सायर चहुं ओर । वा सम समंद नहीं को ओर ।।
ज्यौं कठवत्ती नीर सौं भरै । तामें एक कटोरा धरै ।।१९६।।

इस विध द्वीप समुद्र मझार । तिनका है बहुत विसतार ।।
तामैं समुंद सु लवरणोदधि । जंबुदीप है ताकै मधी ।।१९७।।

मेरु सुदर्शन जाके बीचि । बज्रमई है ताकैं नींच ॥
सो बनमई बहुत विसतार । कहां कहां बहु रत्न अपार ॥१९८॥
ऊंचा सिखर अकास सु लागि । अंतर एक बाल सम पागि ॥
जोजन महा इक लाष प्रमांण । केवल वांणी सुण्यां बषांण ॥१९९॥
पंचमेरु अढाई द्वीप । दुगुणे दगुणे कहें समीप ॥
और कहे कुलाचल षटमेर । एक एक षंड ताके घेर ॥२००॥
छह षंड भये एक तई एक । दीर्घ तीइ विजयार्द्ध अनेक ॥
लघु विजयार्द्ध अनेक जु और । चउदह नदी निकसी गिर फोर ॥२०१॥
अठसठ गुफा कही हैं तिहां । इक इक मेर कुलाचल तिहां ॥
अकृत्तम चैंत्याला तिहा बने । उनके भेद पुराणन भने ॥२०२॥
सत्तरिसो षेत्र पंचमेरु मांझ । इह विध चित मे जानूं साच ॥

भोगभूमि का वर्णन

सदा सास्वता इक सो साठ । विनासीक जानूं दोय आठ ॥२०३॥
सोवर्ण मई जानुं भोगभूमि । तामें कल्पवृक्ष रहे झूमि ॥
जब तै जुगल हुवै उतपन्न । भुगतें सुष जे वंछित मन ॥२०४॥
जैसे स्वर्ग लोक के देव । अइसै ही जुगलियां का भेव ॥
तो भी श्रेणिक पूछै कर जोडि ' किस पुन्य पावैं अैसी ठौर ॥२०५॥
तबै भगवंत कहै समझाय । दान सुपात्र तणां फल राइ ॥
मन वच काय दीया जिन दान । तांतै रिध लहै असमांन ॥२०६॥
ज्यूं वट बीज तुच्छ प्रमाण । उपज्या भया बडे उन्मान ॥
ताकी छाया सीतल घनी । वहुत विस्तार कहै क्या गुंनी ॥२०७॥
इण परिवधैं सुपात्रां दांन । चौविह दौज्यौ चतुर सुजांन ॥
दांन कुपात्र तणां फल एह । बिनु विवेक जो कोई देई ॥२०८॥
सरस बीज बावै जो कोई । एक वालि एकेक ज होई ॥

चौदह कुलकर–

कुपात्र दान फल है यह तुछ । इह विध समझै चतुर्विचक्ष ॥२०९॥
चौदह कुलकर का व्याख्यान । सुणों गुणी जन सुघड सुजान ॥
प्रथम प्रतिष्ठ १ दूजा सनमित्त२ । षेमंकर ३ तीजा कुल थित्त । २१०॥
षेमंधर ४ सीमंधर ५ कुल कीया । सीमंकर षष्टम ६ कुल भया ॥
सप्तम विमल ७ बहु कुलवंत । अष्टम च चषमांन गुनवंत ॥२११॥
कल्पवृक्ष जोति घट गई । वा सुर रयण प्रगट तब भई ॥

तब वे प्रगटे चंदरभांन । आश्चर्य भया सब के मन भांति ।।२१२।।
बूझै वचन प्रमांन सु'वात । अवधि विचार कही बहु भाति ।।
पूरब भव देखि विदेहु षेत्र । इनका प्रथमई परि उद्योत ।।
रवि प्रताप ग्रीषम बहु होई । निशा शीतल शशि ही की लोई ।।२१३।।
तब ते जानौ सूरज चन्द्र । समझ्या लोग भयौ आनन्द ।।
जसाषी नवमां ६ दसमां अभिचंद १०। एकादश चंद्रान कुलनंद २१४ ।।
मरुदेव १२ प्रसन्न सेनजित भेव १३। नाभिराय १४ चउदहां कुलदेव ।।
कोई कोई कलप वृक्ष रह्या । नवां नग्र सहज मे भया ।।२१५।।

अन्तिम कुलकर नाभिराजा

सोवन मिंदर सहु रत्ने जडे । देषत सुषसों गह भरे ।।
नाभिराय जगत भूपति । मरूदेवी राणी सुभमती ।।२१६।।
पंकज चरण अरुण छवि घनी । नष की कांति चंद्र दुति हूनी ।।
अति कोमल कदलीदल जंघ । मानो मकरध्वज के थंभ ।।२१७।।
नेवर सबद हंस की चाल । मोती जडित पदारथ लाल ।।
फुनि कटि षीन सिघ केहरी । रहै षोह बन में सुधि हरी ।।२१८।।
कंचुओ झलकित सोभई ठोर । तिन की पटेतर नाहीं और ।।
कंठ कपोल कंकन सुंदरी । सुंदर निमोलिक मणि जडी ।।२१९।।
कुंडल कर्ण जोति निर्मली । सभा सकल विराजै भली ।।
वदन पटंतर कोई नहीं चंद । दशन जोति जानूं कलिकंद ।।२२०।।
अति सुरंग मुख बिना तांबोल । बानी सरस कोकिला बोल ।।
कीर नासिका बेसर चुंनी । मोतिन की सोभा छबि घनी ।।२२१।।
दीर्घ नयन कमल की भांति । तिनको सोभा कहै किस भांति ।।
सीस फूल सौभै बहु भाय । बेणी कौ छबी कही न जाय ।।२२२।।
वर्नै कबि गुन पार न लेई । सामुद्रक की सोभा देई ।।
छह मास अगाउ इह भेव । आसन कंप्यो सुरपति देव ।।२२३।।

मरुदेवी रानी की सेवा

अवधि विचारि समझियो इंद । ह्वै अवतार प्रथम जिणचंद ।।
सोलहै देवि कुमारी टेर । मरुदेवी पै जाऊ इह वेर ।।२२४।।
सेवा कीज्यो नाना भांति । गर्भ सोध कीजो दिन राति ।।

कोई मर्दन करावैं अस्नान । केई आंणि खुवावैं पान ।।२२५।।
कंचन भारी भरिकैं नीर । जानौं भरया समुद्र जल षीर ।
कोई तेल फुलेलहि आंन । कोई राग सुनावैं तांन ।।२२७।।
केइक कन्या दाबैं पाउ । सेवैं अपनी अपनी ठांउ ।।
केई दीवट नीरष बालि । केई आभूषण धरैं संवारि ।।२२८।।
वारा भूषण सोलह् सिंगार । मांगैं जब देवई तिण वारि ।।
निसवासर सेबा बहु करैं । वचन बचन गुण हिरदै धरैं ।।२२९।।
उत्तम सज्या करी सुवास । सेवा करैं सषी बहु पास ।।

सोलह् स्वप्न

मरुदेवी सोवैं सुख चैन । सुपना देखैं पछिम रैन ।।२३०।।
हस्ती स्वेत देष्यो गुनवंत । वृषभ एक देष्यो मयमंत ।।
दीख्यो स्यंघ गर्जना करंत । कंचन कलस रत्ना जडंत ।।२३१।।
पुहपमाल देषी बिगसात । सूरज उदय देष्यो परभात ।।
दीठो पुरनवासी चंद । मीन जुगल सौं मन आनंद ।।२३२।।
देष्यो समंद महा गंभीर । सिंहासन निरष्यो मणि हीर ।।
देष्यो सुमेर गिर लषमी सार । देब विमान देख्यो सुरकार ।।२३३।।
देख धरणेन्द्र रत्नमई भूमि । देषी अदषी अग्नि महा निधूँम ।।
अइरापति की उज्जल देह । आवत दीठा अपने गेह ।।२३४।।
ए सुपना सोलह गुणवंत । उठि करि निज पति सुं पुछंत ।।
नाभिराय सुणि तिय की बात । भयो आनंद सुष उपज्यो गात ।।२३५।।
मन वच काय सुपनि फल सुने । निहचैं सयल पाप नैं हने ।।

स्वप्न फल

हुवैगो पूत लक्षण संयुक्त । मानों पृथ्वी पर रवि उद्योत ।।२३६।।
अवर जे सुर अमर पद बसैं । तिनकी मणि चरननी चई धसैं ।।
तोडैं भोसागर का जाल । चरम सरीर कनक की माल ।।२३७।।
विद्याधर नरपति पसुपति । इनमें बहुत चढावैं रती ।।
इन्द्र फणीन्द्र करैंगे सेव । तीन लोक के दानब देव ।।२३८।।
जानहूं पंच ग्यांन का धनी । सुणि करि वचन उलिसी धणी ।।
आषाढ बदि दोज सुभ घडी । प्रभू ने आइ गर्भ थिति करी ।।२३९।।
आसन कंपे सुरपति राय । समझ्या चित्त ग्यांन बहु भाय ।।
सिंघासन तजि नमणि करंत । धनद कुमार बुलायो तुरंत ।।२४०।।

नगर अजोध्या सवारो जाय । बारह जोजन की लम्बाइ ॥
चौडी नव जोजन के भाय । कनक भूमि की करियो ताय ॥२४१॥

रतनवृष्टि फूलन की गिरेष्ट । बजै दुंदुभि महा सिरेष्ट ॥
कचन कोट रतनमई सार । मंदिर सत्त भुमिए संवार ॥२४२॥

ऊंची पउरी चित्र बहु बने । रषवाले तिहां ठाडे घने ॥
चिहु अवर वापिका गंभीर । तामें भरया निरमला नीर ॥२४३॥

आगें सूत रचे बाजार । चौडी नींव बडे विस्तार ॥
सत्तषिणां मंदिर सब किये । छत्री कलस रतन के दिये ॥२४४॥

करचो चितेरे देव कुमार । सुरग लोक की सी उनहार ॥
प्रजा सुषी बसै सब ठौर । ज ते किसबदार है और ॥२४५॥

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म

चैत्र बदी नौमी सुभ वार । उत्तराषाढ नक्षत्र सु सार ॥
भयो जन्म जब जान्यो इन्द्र । मनमे बहोत किया आनंद ॥२४६॥

आसन छोडि प्रदक्षणा दई । सबने मुकुट मणि नीची नई ॥
जै जै सबद भया जब षरा । सत्तांईस कोडि चली अपछरा ॥२४७॥

देव विमान छायो आकास । वरषै पुष्फ सुगंध सुवास ॥
नृत्य करैं बहु गांवै गीत । बाजैं पटह दुंदुभी रीत ॥२४८॥
ताल मृदंग बजावै बीन । गावैं सुर जिन गुण परबीन ।
भयो कोलाहल सुणैं न कान । आये नगर अजौध्या थान ॥२४९॥
नृप के द्वारै भइ अति भीर । इन्द्रानी राज लोक कै तीर ।
माया का बालक रचकर राषि । श्री जिन लीया बीनती भाष ॥२५०॥

नीदउं घाई लीया चुराय । इद्रानी ले चली उठाय ॥
ह्वां तै निकसि इन्द्र कौ दिया । देष वदन हर्षित अति हिया ॥२५१॥

जन्मोत्सव

सहस नयन करि देषै रूप । तोऊन त्रिपति सुरपति भूप ॥
बइठ गयंद मेरु ले गये । पांडुक सिला महोछव भये ॥२५२॥
षीर समुद्र जल कंचन कलस । भरे नीर जे प्रासुक सर्स ॥
सहस अठोत्तर इन्द्र जु भरे । अवर देव ले कंचन घरे ॥२५३॥

आदिनाथ का बाल्यकाल

दूध दही घ्रत रस की धार । पुजा रचैं बे बारंबार ।।
ले आए जिहां आदि जिणंद । कलस ढालि मन भयो आनंद ।।२५४।।
वज्र सूई से छेदे कर्ण । पहिराये बहुते आभर्ण ।।
कज्जल नयन मुख दिया तांबूल । कुंडल रत्न धरा अनमोल ।।२५५।।
बाजूबंध माला ताईत । तातै होय दूरि भयभीत ।।
कटि करधनी पाय घुंघरा । पहराये पुहपई सेहरा ।।२५६।।
करि आरती असतुति घनी । ते गुण सोभा जांय न गिणी ।।
चले देव प्रभु कूं सिर लिये । बहुत आनंद प्रेम सुष किये ।।२५७।।
मरुदेवी नष दीया जिणंद । तिहुं लोक में भयो आणंद ।।
धनुष पंचसय कंचन काय । लक्ष चौरासी पूरब आय ।।२५८।।
सुरपति करथा जनम कल्यांन । पहुंचे सकल आपने थान ।।
दुतिया शशि क्रांति ज्यों चढै । यौं श्री जिनवर पल पल बढैं ।।२५९।।
जननी गोद जब ही लेइ । देष रूप मन सुष धरेइ ।।
लेकर पिता लगावैं हियो । बहु आनंद उपजत हिये ।।२६०।।

शारीरिक सुन्दरता

कनक वरन काया अतिबनी । नख की जोति क्रांति दुति हनी ।।
कोमल चरन केल सम जंघ । कटि सोभै जिम के हरि सिंघ ।।२६१।।
कर पल्लव भुज बने अनूप । हृदै कंठ सोभा अति रूप ।।
दंत होठ रतन की जोति । सुभ्र कपोल सु अति उद्योत ।।२६२।।
नासा कीर नयन अति बढ़े । मस्तक किरण जोति नित चढे ।।
कोटि भांन जो करै उद्योत । तऊ न सर भर जिन की होत ।।२६३।।
स्यांम केश लांबे सुष कर्ण । अति सुगंध नीलांजन वर्ण ।।
लक्षण सहस अठोत्तर बने । तो मुष गोचर जाहि न गिने ।।२६४।।
बालक रूप देव के पूत । ले ले प्रभु ज्यौ आये बहुत ।।
रत्न चूर अरगजा कपूर । क्रीडा करैं उडावैं धूरि ।।२६५।।
बहुत भांति के फेरैं भेष । ते खेलैं बहु युगति विसेष ।।
ऐसी जुगति बहुत दिन गए । श्री जिन जोवन पदई भए ।।२६६।।

आदिनाथ का विवाह एवं सन्तान प्राप्ति

नंद सुनंदा व्याही नारि । रूप सुलक्षण शशि उनहार ।।
प्रथम पुत्र तातैं उत्पन्न । ब्राह्मी भई भरत की बहन ।।२६७।।

बहुरयो दूजी नंद रूप सो भरी । रूपबंत गुन लावण्य घरी ।।
गर्भ ताहि पुत्र सौं भए । काटि करम सो मुकतिहि गये ।।२६८।।

प्रथम बाहुबलि पाछैं और । तार्थं सकल रिद्ध दई जोडि ।।
अवर भई पुत्री सुन्दरी । सील रूप अति शोभा भरी ।।२६९।।

राज्य प्राप्ति

नाभिराय प्रभू आयस किया । राजभार रिषभ नैं सोंपिया ।।
कलपवृक्ष सहु गए बिलाय । सहु लोक की खुध्या न जाय ।।२७०।।

ताका भेद न पावै कोइ । भूष प्यास दुष दूर ही होइ ।।
आये नाभिराय के द्वार । हम किम जीवें प्राण अधार ।।२७१।।

तब थे कलप वृक्ष संसार । मनसा भोजन करत आहार ।।
अब वे कलपवृक्ष हैं नाही । हमरा किम होवै निरवाह ।।२७२।।

नाभिराय की आग्या पाय । रिषभदेव पै बिनवै आइ ।।
मननी बात कहै सब लोग । कैसे जीव का मिटै वियोग ।।२७३।।

राजा ने सब लिये बुलाय । सकल लोक नें पुछै राय ।।
सुनि परजा दुष किया विचार । उदिम बताय किया उपगार ।।२७४।।

तीन वर्णों की स्थापना

महा सुभट ते क्षत्री किया । षडग बंधाय सूर व्रत दिया ।।
धरम दया कीज्यो मन लाय । पापी दुष्टै मारो धाय ।।२७५।।
रण संग्राम न दीजे पूठि । सनमुख झुझज्यौ डिगै न दीठ ।।
स्वामी कार्य को दीजे प्रांन । ज्यूं तुम पावो स्वर्ग विमान ।।२७६।।
जे क्षत्री रण मैं से भजै । कुल कलंक लागै अनतजै ।।
जे छत्री सहु पुर रक्षा करै । रण साम्हौं जाय कै लरैं ।।२७७।।
निज परजातैं राषै सुषी । दया करैं नर देषी दुषी ।।
धर्म दया करि यासौं ध्यांन । भक्ष अभक्ष तजै धरि ध्यांन ।।२७८।।
जिनकै हिये थी दयावी घनी । थापे वइस बनिक बुधि दिनी ।।
दया दान किरिया सौ सुधि । पाप कर्म सो करैं न मनी ।।२७९।।

अवर जे नर थाई उत्तम भाव । जैसी ताहि बतावैं ठाम ।।
अविवेकी जे अपर अयान । तिणनें थाप्पे कर्म्म किसांन ।।२८०।।

हल जोति कर खेती करै । उपजै साष रासि तब करैं ।।
होए अन्न भुगतै संसार । उनकी दिया इसा उपगार ।।२८१।।

थापी सब छत्तीसौं पौंरग । अपने अपने मारग गौरग ।।
हुवा छत्री वंस सुद्र ए तीन । इह विधि समुझौ चतुर प्रवीन ।।२८२।।
वरषै मेंघ ऊपजै धान । गाडे पांन फूल सब थान ।।
मेवा सब विध उपजै जिहां । परजा सुखी विराजै तिहां ।।२८३।।
राजनीत सौं पावैं चैन । दुषी न कोई दीषै नयन ।।
धर्मरीति सौं बीतै काल । दुषी दरिद्री नहीं दुकाल ।।२८४।।
राज करत पूरव गये बीत । लक्षतियासी इम भोग की रीत ।।
एक लक्ष पूरव रही आव । सुरपति मन है विचारै भाव ।।२८५।।
ए प्रथम भगवंत अवतार । इनतें धरम चलै संसार ।।
ए माया महि रहे मुलाय । सवेगी ए किए पर थाय ।।२८६।।

नीलांजना द्वारा नृत्य

चैत्र बदी नवमी श्रेष्ठ घडी । नीलंजना पातर अवतरी ।।
आय राय की सभा मझार । नृत्य करै गावै गुण सार ।।२८७।।
दोय घडी आयुबंल रही । पूर्ण भई गिरपड़ी जे मही ।।
नाचत नाचत तिन लई पछाडि । तब राजा बोलै हंकार ।।२८८।।
बेग उठावै ठाड़ी करै । बेर वेर गिर गिर वह पडै ।।
तब मंत्री बोले समझाय । याकी आयु पूरी इन ठाय ।।२८९।।

वैराग्य भाव

तब मनमें चेत्यो भूपाल । अचेत परां बीता यह काल ।।
अब कछु करूं धर्म की रीत । तातैं पाप हुवैं भयभीत ।।२९०।।
जाण्यौं इह संसार असार । बुडत जीव ना पावै पार ।।
राग द्वेष आरति मुई रहै । भ्रमत जीव विश्राम न लहै । २९१।।
कवही हुवै देबपति भूप । कबही दुखी दलिद्री रूप ।।
कबही नर कबही तिरयचं । कबही मर करै परपंच ।।२९२।।
नट जिम भेष कीए तिन घने । दुष सुष और कहां लौं भने ।।
अब जो राखो आतम ध्यांन । जीब मैं धरि देखु पहिचान ।।२९३।।
प्रगटै धरम समझै सब कोइ । क्षत्री रीत सुत कीने दोइ ।।
भरत नै सूप्यो पृथ्वी भार । बाहुबल पोदनपुर सार ।।२९४।।
निन्याणवै देस औरन कूं दिया । भयो संतोष सबै कै हिया ।।
अपणैं मनसौं विचारा ग्यांन । लोकांतिक सुर पहुता आंन ।।२९५।।

जय जय सबद भया चहुं ओर । सिवका आनि धरी तिह ठौर ।।
धन्य धन्य वांणव सब को देव । चढे पालकी लग्यां न छेव ।।२६६।।
सिवका चढिय पराग वन गये । उतरि सिंघासन ठाढे भए ।।
नाम सिध समरघा मन सौच । पंचमुष्टी का कीनां लोंच ।।२६७।।
इन्द्रादिक आए सब देव । करि कल्याण चरण की सेव ।।
लीये केस ताईत में डारि । अवर सिराये समद मझार ।।२६८।।
तप कल्यणक इन्द्रकरि गये । ध्यानारूढ श्रीजिनवर भए ।।
अर जे पांच हजार नरेस । तेभी भए दिगंबर भेस ।।२६६।।

तपस्या

प्रभु नै वरत धरघा षट् मास । अवर सकल वइठे वनवास ।।
उनपै भुषा रह्या न जाय । अनपांणी बिन गए मुरझाय ।।३००।।
जो फिर जांय भरत तैं डरैं । तातैं वे वन में ई फिरैं ।।
जैनधर्म की सहिय न आंच । फाटा भेष तिहां पर पाच ।।३०१।।
कोई सन्यासी जटा बधाय । जोगी जगम भए कर्ण फटाय ।।
वारह बिध तप श्रीजिन करैं । चेतन चिदानंद चित धरैं ।।३०२।।
नासादृष्टि आतम ल्यो ल्याय । पदमासन बैठे जिनराय ।।
नमि विनमि तहां पहुंता आइ । विनती करैं नमरिण कै भाइ ।।३०३।।
तुम तजि राज लिया है जोग । छांडि दिये संसारी भोग ।।
भरत बाहूबली राजा किए । हमारी सुध न बिचारी हिए ।।३०४।।
हमकुं कोई बतावो देस । जहां जाय हम करैं प्रवेस ।।
श्री जिनराय तिहां छदमस्त । मुष थी कहै न एको वस्त ।।३०५।।
नमि विनमि छोडैं नहिं पास । राज्य भोग्य की छौडी आस ।।
तब धरणेन्द्र विद्या दो दई । ग्रैंसी रिध लई तब नई ।।३०६।।
विजयार्द्ध का दीना राज । दोहुं का मन वांछित काज ।।
दस जोजन पर्यन्त उचंत । मणि माणिक तहां घणे दिपंत ।।३०७।।
दक्षिण दिश रथनूपुर नगर । उत्तर दिसि अलिकाविल अगर ।।
सब संयुक्त विराजै गांव । लता लछमी नाना भाव ।।३०८।।
जैसी स्वर्वलोक की नारि । तइसी सबै नयर मझारि ।।
करैं राज सुष भुगतैं भोग । रिषभनाथ मन ल्याया जोग ।।३०६।।
बारा विध तप आतमध्यांन । षष्टमास बिन अन्न न पान ।।
तब मनमें अइसी चित चीत । प्रगट करूं भोजन की रीत ।।३१०।।

आहार किया

हमकौं भोजन बिना विहाय । अग्रे ह्वैंगी सूक्षम काय ।।
बिना आहार तप करया न जाय । ग्रैसी समझि उठे जिनराय ।।३११।।
भोजन की विध लहैं न कोइ । जिहां जायं तिहां आदर होय ।।
लाल पदारथ हीरा भेंट । मिलैं भूप नगरी सहु नेट ।।३१२।।
कोई कन्यां कोई गयंद । कोई अस्व वार आनै नारिंद ।।
केई रथ केई सुखपाल । मनकी बात न लहै भूपाल ।।३१३।।
ए सहु छोडि फिरे बहु मही । भोजन विधि को जाणैं नही ।।
हथनापुर कुरुजांगल देश । राज करैं श्रेयांस नरेस ।।३१४।।
तिहां पहुंचे बीते छह मास । एक बरस सही खुध्या प्यास ।।
श्रेयांस सुभ सुपने पाई । मंत्री पूछै तबै बुलाइ ।।३१५।।
कहै मंत्री फल सुपनां तणां । इष्ट पुरुष आवै कोई पाहुणा ।।
श्री भगवंत आवै तिह वार । राय आनंदित भया अपार ।।३१६।।
उतरि सिंहासन करि डंडोत । देइ प्रदक्षिणा करी नमोऽस्तु ।।
ज्यौ रवि फिरई मेर कै ओर । यूं सोभै नरपति तिह ठौर ।।३१७।।
धर्मवृद्धि इन मुख से कही । **श्रेयांस** सुष बहुतै लही ।।
बैठि सिंघासण गहि पडगाह । चरणोदक जल सीस चढाइ ।।३१८।।
साढा सातसैं कलस इक्षु रसी । स्वामी पिया देव सब खुसी ।।
अभयदान बोलैं कर जोरि । वरषैं रतन साढी आठ किरोड ।।३१९।।
पुष्प वृष्टि भई बहु भांति । पहुंची सकल देस ए बात ।।
ठोर ठोर विधि लिष ले गये । दांन तीर्थ आदीश्वर किये ।।३२०।।
ग्रैसी करि भोजन की रीत । अंतर है आतम सौं प्रीत ।।
सुनकर भरत मन में उल्हास । आये श्रेयांस के पास ।।३२१।।
बहुत भांति कीनूं सनमान । तो सम दाता और न जान ।।
दीये देस पुर पट्टन घने । आया भरत नगर आपने ।।३२२।।

कैलाश पर्वत पर ध्यानारूढ होना

श्री जिनराज गये कैलास । तिहां देवता करै निवास ।।
ध्यांन च्यार प्रांनी नै धरे । ताम दोय पोटे दोय परे ।।३२३।।
आरत रौद्र ध्यांन द्वै हीन । तिनकर लेस्या पोटी तीन ।।
नरना कृष्ण नील कापोत । देह दुष जा कीये हीत ।।३२४।।
आरति मैं तिरजंच गति बंधै । तातै प्रानी एस न बंधै ।
निसवासर षोटी चित गढै । रहई काल चिर वेली बढै ।।३२५।।

सूकर कूकर गैंडा रीछ । पदवी नीच बीत मैं तीछ ॥
जो तिण चरई घरै जियसंक । एही पुर्व जनम के अंक ॥३२६॥
आरत ध्यांन च्यार पद होय । इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग ॥
पीडा चितवन भोग निदांन । ए प्रानी को दुषकर जानि ॥३२७॥
अनबांछित आगै ही होय । इछा मन न धरै नहीं जोइ ॥
जे जोगीस्वर की व्रत धरै । छठे गुणथांनक तैं खरै ॥३२८॥
कुछित मरन सुरग गति रहै । मरकर तिरजंच गति कौं लहैं ।
रौद्रध्यान ए पाये च्यार । लछिन किंचित कहुं विचार ॥३२९॥
हिंसानंद मिष चौर्या विषयानंद । करकस वचन अगति के बंध ॥
रुद्र परिणाम रहै नर तास । मुषतै बुरी उपजै नित वास ॥३३०॥
निकल नरक तैं देही धरी । कै अच्या अधोगति पुरी ॥
अैसे चिह्न देषिए जिने । पंडित वर्ग कहां लौ गिने ॥३३१॥
जे धरि भेष तपी तप बढै । गुणथांनक पचम जो चढै ॥
रात दिवस मन षोटी धरै । मरकरि भूंम अधोगति परै ॥३३२॥
षोटे ध्यांन जिन के मन रहैं । अैसे वचन ग्यांन में कहै ॥
ए दोइ ध्यांन ग्यांन आरूढ । धरम सुकल प्रानी कूं गूढ ॥३३३॥
धर्मध्यान के लक्षण कहै । प्रासुष क्षेत्र उपद्रव थी रहै ॥
दिव्य संगहन पूरी परजाय । चौथे काल मिलै बिध आइ ॥३३४॥
सीत उसन वरषा रित जोग । सुभ परणांम विवर्जित भोग ॥
नासादृष्टन मेरै अंग । इन्द्री वनज विसर्जित संग ॥३३५॥
प्राण संवर नाना भिन्न । नरि बाह्यभ्यंतर लक्षन चिह्न ॥
लोक स्वरूप विचारै नित्त । सातव गुणथानक की थित्ति ॥३३६॥
लेस्या पीत पद्म की ठोर । टूटै पासि करम की जोर ॥
कै देवत कै हो भूपति । कै सिवमारग जागै रती ॥३३७॥
सुकल ध्यांन का सूक्ष्मभेद । उत्तम क्रिया भई सब छेद ॥
अंतर ध्यांन ग्यांन दिढ धार । दया सर्व की वित्त विचार ॥३३८॥
आतम भाव दाब को चढै । जिन केवली ग्यांन को बढै ॥
दसमें गुंनस्थांनक दोइ करै । उपसम सैणी चढै ते गिर्जै ॥३३९॥
दरसन ग्यांन चरण चित दिया । दया धरम दस विध कर लिया ॥
आनंद चिदानंद सौं ध्यांन । च्यार करम का करि अपमांन ॥३४०॥
प्रकृति तिरेसठ टूटी जांन । उपज्या प्रभु को केवल ग्यांन ॥
वर्ष सहस्त्र रहै छदमस्त । फागणवदि ग्यारस लही सुभ वस्त ॥३४१॥

कैवल्य प्राप्ति

केवलग्यांन लबधि जब भई । बहुविघ देव प्रदक्षिणा दई ॥
इन्द्रादिक किन्नर संयुक्त । जय जय सबद करैं बहु उक्त ॥३४२॥
बारह जोजन रच्यो समोसरण । प्रांणी का मन संसाहरण ॥
बारह सभा मनोहर कही । तीन कोट कंचन के मही ॥३४३॥
बनी खातिका जल भरपूर । वृक्ष अशोक सोक करै दूरि ॥
कलपवृक्ष अवर बहु रूप । वासावली न लागै भूख ॥३४४॥
छह रितु के फूले फल फूल । ऊंची पौरि बनी समतूल ॥
मानस्थंभ संवारया और । सिंघासण की राखी ठोर ॥३४५॥
वृषभसेन गणधर गुणवंत । अपर तियासी अवर भगवंत ॥
पंच सहस्र दंड ऊचत । चारि अंगुल अंतर अरिहंत ॥३४६॥
तीन छत्र कंचन मणि बने । चौंसठि चवर देखैं सुष घने ॥
चौरासी गणधर जगदीस । च्यारि ग्यांन पंचम जिणईस ॥३४७॥
समोसरण थानक सुभथान । चतुर बदन बैठे भगवांन ॥
भइ चतुरमुख एकै धुनि । बारह सभा भव्य सब सुनी ॥३४८॥
वानी एक भेद नव गुनें । गणधर कहें लोग सब सुनै ॥

उपदेश

निश्चय एक आतमा सार । द्वै विध इह निश्चय व्यौहार ॥३४९॥
दरसन ग्यांन चारित्र मे लीन । च्यारि बेद में सुनें प्रवीन ॥
परमेष्ठी पंचम सुधि भई । अरु षट द्रव्य सर्व गुण मई ॥३५०॥
सप्त तत्त्व अष्टम गुण सिध । कहै पदारथ नवं निध ॥
इन गुंन मई गिरा सुनि भूप । है विदेह अर तत्त्व स्वरूप ॥३५१॥
कथन समर्थ अनंत भवतनी । सिब कारन हित सब धनी ॥
पाप फेटनी पुण्य अनंद । सिथल भये कर्मन के फंद ॥३५२॥
वानी सब ही संबोधनी । प्राणी कुं आलस भेदनी ॥
जीवा सति जानें पर लोक । अमूरत भगतै सुभ सोक ॥३५३॥
अनुगुरु सकति रूप सब देह । चारू गति करि पूरन एह ॥
निश्चय सुद्ध नित्य जन जीव । अब संसारी गाढी नींव ॥३५४॥
षोटी क्रिया दुःख को मूल । रहै अनादि काल के भूलि ॥
आतम दरसन ग्यांन चरित्र । तत्व सबद है अंतर नित्त ॥३५५॥
असरण सरण जाति जिय सार । धरम एक त्रिभुवन आधार ॥
बारह व्रत सुश्रावक धरई । च्यौरासौं मनस सरधा करेई ॥३५६॥

हिंसा चौरी अनरत जांनि । ब्रह्मचर्य परिग्रह परमांन ।।
गुणव्रत तीन धरै मनु भाव । दिगव्रत देसवरत मन चाउ ।।३५७।।
अदया का व्यौहार न करै । शिक्षाव्रत च्यारु विध धरै ।।
सामायक पोसो बहु और । पूजा दान सुपात्र सुठौर ।।३५८।।

इण विध परम सुश्रावक होइ । जती धरैं तेरह विध सोइ ।।
पंच महाव्रत सावै जोग । सुमति पंच वर्जित सुभ भोग ।।३५९।।

तीन गुप्ति पालै दिन राति । मन वच काया संझ्या प्रात ।।
सहस्र अठारा अंग समेत । सीलव्रत पालै बहु हेत ।।३६०।।

आपण थकी बडी जो होइ । माता सम जाणइ सब कोइ ।।
जे अपनी सरभर की तिरी । जांनहु बहनि धरम की षरी ।।३६१।।

आपण सेती छोटी आंन । पुत्री सम जांणौ करि ज्ञान ।।
बहुत भांति के सुनि उपदेस । तिणउ धरचा मुनिवर का भेस ।।३६२।।

कोई सुनि श्रावक व्रत लेइ । वचन पयोग भांति वहु देइ ।।
कियो विहार दुंदुभी ध्वनी । प्रानी आनदे गुन गनी ।।३६२।।

नृत्य करैं गावै गुन गांन । सुरबाजे सुर दुंदु प्रमांन ।।
लोकपाल आगै पग धरैं । सौ सौ कोस लगि सोभा करैं ।।३६३।।

आगै धर्म चक्र सुभ भई । चले प्रभु जय जय धुंनि भई ।।
वीणा वेण मृदंग झालरी । सष नफीरी वाजै षरी ।।३६४।।

धनहर धमउ मंदल धुंनि घोर । हासि कुलाहल करई सुरसोर ।।
सावधांन दसहुं दिश पूर । करई दुष्ट पापी नें दूरि ।।३६५।।

आवैं लोग पूछैं विध धर्म । ह्रासैं असुभ पाप के कर्म ।।
दरसन अंध पगु पग डोल । बहिर सुनै मूंक मुष बोल ।।३६६।।

इण अतिसय सौं करई विहार । पावैं जीव वहुत आधार ।।
धरम प्रगट प्रतिबोधे देस । फिर आये कैलास जिनेस ।।३६७।।

समोसरण मे राजत धनी । च्यार ग्यान चौरासी गुनी ।।
मति श्रुति अवधि ग्यान के धनी । मनपर्यय केवल गुन गुनी ।।३६८।।

सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय

भरत चक्र पाया सुभ ठोर । देव सहस्र सेवैं कर जोर ।।
नवविध अष्ट सिद्धि संयुक्त । चौदह रतन सुलछि बहुत ।।३६९।।

हय गय वाहन अधिक असेस । सहस्र छयानवैं नवैं नरेस ।।
सहस्र छयानवै नारी भनी । ताकी उपमां जाय न गिनी ।।३७०।।

भरत भूप साधे छह षंड । देव दानव पैं कीया दंड ॥
आये अजोध्या देस सब जीत । चक्र न चलै भई मन चिंत ॥३७१॥

कवरण देस स्याधौ बिन रह्या । तब मंत्री सब व्योरा कह्या ॥
निन्याणवै तुम्हारे वीर । इतादेस भगतै बलवीर ॥३७२॥

रहई एकठा बहुत सनेह । रूपवंत कंचन सम देह ॥
मानैं नही तुम्हारी आंन । ताथी चक्र न आवै थांन ॥३७३॥

ऐसी सुनिकर भेज्या दूत । उनकौ वह समझायौं बहूत ॥
सेवा करो मांन मुझ आंन । मंत्री लिष भेज्या फरमांन ॥३७४॥

गया दूत कागद दे हाथ । मुष सौं वचन कहै बहु भांति ॥
भरत चक्रव्रत बाहुबली । तुम सेवा करौं तास की भली ॥३७५॥

आग्या मांनहु लेवरी । तुम निचंत क्यूं बैठे घरी ॥
अब तुम चलौ हमारे साथ । चलो वेग पगलावो माथ ॥३७६॥

इतनी सुरिणते भरण कुमार । भरत राज भुगतै संसार ॥
हमने देस पिता जे दिये । ते भी चुभई भरत के हिये ॥३७७॥

जइवह अजहुन त्रिपत न भया । तो ए लेहु सव एह हम दिया ॥
छाडि रिधि ते गए कविलास । दिक्षा लई पिता के पास ॥३७८॥

फिरया दूत भरत पैं गया । सब व्योरा सेती वरनया ॥
भरत सुण्यां वे हुवा जती । किया सोच मन मे बहु भती ॥३७९॥

दूत वयरण बोलीया कठोर । उनकै मन कछु बैठी और ॥
वार वारि भरत पछताय । तोउं न चक्र गढ़ भीतर जाय ॥३८०॥

फिरि मंत्री पूछे सुबुलाय । कहै मत्री सुनि पृथ्वीराय ॥
बाहुबलि पोदनपुर धनी । ताके सग सेन्यां है घनी ॥३८१॥

वह आज्ञा मानत है नाहि । ताथी चक्र न बैठहि ठाम ॥
इतनी मुंनि भेजीया वसीठ । सूरा सुभट वचनां दीठ ॥३८२॥

पोदनपुर का वैभव

पत्री लेकर चाल्या वकील । गया पोयरणपुर न लाई ढील ॥
देष्या नगर सुषी सब लोग । कीजे पान फूल को भोग ॥३८३॥

ऊंचे मंदिर सब इकसार । ढूंढता पहुंता राजदरबार ॥
सौंधा पांन घर घर के बीच । पीकतरणी गलीयां मे कीच ॥३८४॥

घर घर नांरी जांरिण अपछरा । राजमहल सब सेती षरा ॥
पौलवांन देष्या दरबार । ते सोमैं भूपति अनुहार ॥३८५॥

ताहि देष मन सोचं दूत । लषन दीसं राज संयुत्त ।।
जो इह बैठ्या कोई और । तउ टोकैंगा जातै पौर ।।३८६।।
चल्या दूत तब पौरि मझार । तिहां पौलिया हुआ अडवार ।।
पूछै कौंण किहां तू जात । वहु हमसौं समझावी बात ।।३८७।।
कहै दूत मो भेज्या भरत । राजा सौं पहुंचावो तुरत ।।
गया पौलिया राजा पास । नमस्कार करि विनती भास ।।३८८।।
राजसभा सुरपति सी जुरी । को का दूत सौन्या तिह घरी ।।
राजसभा में आया दूत । नमस्कार तब करि बहुत ।।३८९।।
ठाडा भया दूत की ठौर । ठीक ठिकाने ठाडे और ।।
पूछै भूप भरत कुसलात । बोल्या दूत धरि मस्तक हाथ ।।३९०।।
भरत चक्रधारी बलवंत । छहु षंड जीते सामंत ।।
नरपति खगपति माने सेव । छउं षंडका रह्या न भेव ।।३९१।।
तुम भी उनकी सेवा करो । आज्ञा जाकी मत वीसरो ।।
इतनी सुनि कोप्या भूपति । अजहू वाके नाहीं थिति ।।३९२।।
जे वह करै चक्र की मनी । चक्रवर्त्ति कुंभारां भी भनी ।।
भरत नाम भीडे का कहै । इता गर्व क्यों उसमें रहै ।।३९३।।
मी कौं दिया पिता ने राज । वह हम स्यौं क्या राषै काज ।।
जो वाकै मन होय संदेह । करो जुध आवो सु सनेह ।।३९४।।
इतनी सुणि फिर आया दूत । कही बात सुणि कोप्या बहुत ।।
सुतउ केहरि मारयउ ढेल । जांनु पड्या अगनि मे तेल ।।३९५ ।

भरत बाहुबली युद्ध

जानूं सकती हिये मं लगी । राते नयन लहर सी लगी ।।
नगर मांहि बाजै निसान । सेना बहुत जुरी तिहा आंन ।।३९६।।
सुर सुभट निकसे वानेत । अंगन मोडै जुडिमा षेत ।।
हय गय रथ पायक बहु चले । वाजै मारू बागे भले ।।३९७।।
सेना तिहां चली चतुरंग । पहर आंभर्न खरे सुरंग ।।
उडियन छाया आसमांन । ऊडल भया चंद अरु भान ।।३९८।।
थरहराट करै सब मही । कंपे गिरवर जलहर सही ।।
जिहां जाय सेना उतरई । प्रथिवी सही न रीती पिरई ।।३९९।।
सुरत सुनी बाहुबल बली । सूरवीर मांनी बहु रली ।।
साजी सैन्य भया असवार । घेरया आगै मारग अडवार ।।४००।।

मारचो षेत मुंह मिल गये । बजै झुझारु मारू कीये ।।
सुनै सुर नर भए अडोल । सिलहसौं झस भालै खोल ।।४०१।।
चहुं घांस छोडे अरु वांन । तुपक गोली भरि मारै तांन ।।
बरछी षांडा लीन्हे हाथ । झुझै सूर पडै धरमांष ।।४०२।।
दुहूधां सूर सुभट जो लरई । आयुध टूटै धरती परई ।।
जोधा सूर सुभट स्यौ जुटै । बाथौ बांथ आपस में कढै ।।४०३।।
मैंगल सौं मैंगल झुझंत । परै लोथ लानो परवंत ।।
झुमै स्वामि धरम के काज । जिणकै छत्री कुल की लाज ।।४०४।।
घुमैं घायल धरती पडै । गीध्र लोथर गत मैं पडै ।।
दुहुधां जुध भया बहुभाति । हारिन न मानें दोऊं भ्रात ।।४०५।।
तबहू सोच किया भूपती । कहै प्रजा की यह कुंण गती ।।
प्रजा दुख देवै बेकाज । हम तुम सनमुख झुझे आजि ।।४०६।।
सेनां कौं दुख काहे देय । हम तुम जुध मनमान करेह ।।
दृष्टि जुध थाप्या दहुं वोर । लगी दृष्टि ज्यौं चंद्र चकोर ।।४०७।।
भरत तै बाहुबलि धनुष पचीस । ऊंचा घणा करै को रीस ।।
हारया भरत जब जल जुध होय । बाहुबल जीत्या बार दोय ।।४०८।।
मुष्टि जुध थापिया बहौरि । लथ पथ हारे माची रौर ।।
बलि लीया भरथ ऊचांइ । भरत मांन भंग हुवा राइ ।।४०९।।
बाहुबलि करै मनोंहार । हम थे बाल तुम उठाए बहुवार ।।
इस कारण तुम लीए उठाय । धूलन लगी तुम्हारी काय ।।४१०।।
मुष्ट युद्ध फिर थापी बात । पहली भरत करीउ संघात ।।
पाछै बाहुबली सभागि । मुष्ठि उठाई उतनी बार ।।४११।।
तब मन में आया इह ग्यान । बड़ा वीर ए पिता समान ।।
जो भाई पर कीजे चोट । तो सिर चढै पाप की पोट ।।४१२।।

बाहुबली द्वारा विजय केपश्चात् वैराग्यलेना

कर उठाए जो रीता पडै । सूरवरत अब मेरा टरै ।।
भरी मुष्ट कर लुंचे केस । बाहुबल भए दिगंबर भेस ।।४१३।।
एक अंगुठे के धरि जोग । अचिरज भए देख सब लोग ।।
सहैं परिस्या बावीस अंग । ग्यांन लहर की उठै तरंग ।।४१४।।
बारह प्रेक्षा नौ सो चित । लोक सरूप विचारैं नित्त ।।
पंच महाव्रत समति जु पाच । मन वच इंद्री साधी षांचि ।।४१५।।

छह रित सहै परीसहै काय । स्यांम भुयंगम देह लपटाय ।।
रही वेल बन लपट सरीर । बाधा की तहँ लहै न पीर ।।४१६।।
बर्षा काल वृक्षतल जोग । सीयालै तरनी जल जोग ।।
उह्लालै परवत धरि ध्यान । तपै चहुं थां उपर भांन ।।
अंतर चिदानंद स्युं नेह । ममता रत्ती न राषी देह ।। ४१७।।

सोरठा

आतम सों ल्यौ ल्याइ, धरचो ध्यान चिद्रूप कौ ।
असुभ करम मिटाइ, केवलग्यांन आया निकट ।।४१८।।

चौपई

भरत ब्राह्मी अर सुंदरी । समवरण पहुचे तिह घरी ।।
नमस्कार करि पूछैं बात । बाहूबल सहै परीसह गात ।।४१९।।
अंगुष्ठासिउ ठाडा तप करइ । असुभ करम कब वाके षपई ।।
केवल लब्धि लहैसी कबै । मोस्युं प्रगट कहौं प्रभु अबै ।।४२०।।
श्री जिन बोले ग्यान विचार । उन राष्या मन में अहंकार ।।
दोनों चरण धरा जब धरै । अहंकार तब दूरैं टरै ।।४२१।।
उपजै केवल ग्यांन तुरत । पामें भवसायरना अंत ।।
प्रभू तणा सांभल ए वैण । आन प्रतै समभावै अैन ।।४२२।।
मांन गयंद थी उतरों वीर । क्रोध अगनि तजि हूजे नीर ।।
किसकी पृथ्वी किसका राज । मोसम बहुत कर गए राज ।।४२३।।
केते हुए होहि हैं घने । तिनकी गिनती कहां लौं गिने ।।
इह संसार भुपन की रिध । जाग्या कछुव न देख्या सिध ।।४२४।।
मन का समय कीजे दूरि । पाव धरो धरती पर पूर ।।
इतनी सुनि मन उपसम किया । पांव धरत ही केवल लिया ।।४२५।।
टूटे असुभ करम तिह बार । पहुंचे जाय सु मोक्ष मझारि ।।
जोतैं जोति मिली तव जाय । अजर अमर पदई सुख पाय ।।४२६।।

दोहा

बाहुबलि सब विधि बली, यस प्रगटचा संसार ।
ग्यांन सरीषी नाव चढि, पहुंता भवदधि पार ।।४२७।।

चौपई

भरत राज भुगतै संसार । परथी भोग भूमि अनुहारि ।।
पुत्र पांचसै सोभा घनी । सूरवीर ग्यांनी गुन घनी ।।४२८।।

ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति

श्रेणिक बहुरि करी परसन्न । ब्राह्मण की कहिए उत्पन्न ।।
कैसे थाप्या चउथा वर्ण । कहो प्रभु मो संसय हर्ण ।।४२९।।
भरत भूमि निकंटक राज । पहली करैं धरम का काज ।।
छहुं षंड की लछमी जुरी । दांन देण की इच्छा करी ।।४३०।।
बहु पकवान लक्ष्मी घनी । आभूषन सोभा अति बनी ।।
ले सब सौज गए कैलास । मन में दान देण की आस ।।४३१।।
समोसरण पहुंच्या तिह बार । दई प्रदक्षिनां करि नमस्कार ।।
प्रभूजी हम परि किरपा करो । दांन देय मम पातिग हरो ।।४३२।।
रिषभदेव बोले समझाय । ये दान न लेहै मुनिराय ।।
ए सव छोडि भए वैराग । इण कै क्या की जैसी त्याग ।।४३३।।
देही ममता राषैं नाहि । पाखण महीने भोजन षाइं ।।
जे तपसी ह्वैं लछमी गहैं । नरक निगोद महादुष लहै ।।४३४।।
जनम अकारथ तिसका जाण । ले दिष्या जे होय अयाण ।।
माया वस्त्र जो राषै जोड । दरसन नें त्यावै वह षोडि ।।४३५।।
मर करि भ्रमै चतुरगति जीव । पाप पोट ले अपनी ग्रीव ।।
तातें ए तुम फेर ले जाउ । नहिं ए दांन लेहिं मुनिनाह ।।४३६।।
तबै भरत फिर आया गेह । दांन जू काढया किस कौं देह ।।
बारबार करैं नृप सोच । दांत लेण की किसैं नहीं रुच ।।४३७।।
सब ही सुखी दुखी नहि कोइ । किसके मन लेने की होइ ।।
दांनसाला मांडी वन वीच । बोए जव[1] तहां क्यारी सींच ।।४३८।।
नगर माहि वाज्या निसांन । हाजर होय नृप तणी आंन ।।
सब मिल आवो राजा पास । देस देस नरपति नर जास ।।४३९।।
कोई न षुदै क्यारी हरी । जिनके हिये ग्यांन मति धरी ।।
जे मूरिषु ते खुंदन चले । बिनु विवेक अग्यांनी भले ।।४४०।।
चक्रवर्त्ति देषै नरताय । जे ग्यांनी ते जुदे बुलाय ।।
क्यारी खूदन आये लोग । जुदा थांन दीना तिन जोग ।।४४१।।
अग्यानी विदा कर दिये । ग्यांनी कुं आदर बहु किये ।।
नरपति वचन वीनती कहै । इह इच्छा मेरे मनु रहै ।।४४२।।
मांगु वचन देहि जो मोहि । पंचो विनय सुनावै तोहि ।।
वेग चलो जंल भरकर लेहु । जौ मैं चाहूं सो मोहि देहु ।।४४ ।।

१—जौ

सोचैं सकल विचारैं चित्त । अैसो कहा है हम पर मित्त ।।
जाकूं चाहै पृथ्वीनाथ । सब ही नीर लिये निज हाथ ।।४४४।।
बोले भरत लेहु तुम दान । अैसी सुनि ठाडे धरि ध्यान ।।
तब बोले हम चाहैं कहा । करवो टइर दान ले तहां ।.४४५।।
तुम प्रसाद हम हैं सब सुषी । कोई नाहि बसै नरु दुषी ।।
अब तुम हम पै बाचा मांगि । दीया चाहो हमको त्याग ।।४४६।।
राज वचन औ वाचा दई । तब ही दांन विधि थापी सही ।।
हैम रतन के जञन पवित्त । नव नव तार बनाई रीत ।।४४७।।
नो नो गुन का इक इक तार । गुन इक्यासी बडे विसतार ।।
धोवती मुद्रिका और जनेउ । नमस्कार करि कीनो सेउ ।।४४८।।
उत्तम रीति दइ ज्यौणार । दक्षिणा दे कीनी मनुहार ।।
ये अपनेमे नगर वे घने । सबसे उत्तम बांभण भने ।।४४९।।
पूजनीक उत्तम कुल धरा । हम सब तुल्य न को अवतारा ।।
रावरंक पूजै सब कोइ । चौथा वरण ऐसी विधि होइ ।।४५०।।
भरत गया श्री जिन की जाति । नमस्कार करि जोरे हाथ ।।
बांभण थापि दान में दीया । सब व्यवहार स्वामीस्युं कह्या ।।४५१।।
बानी तब भाषै भगवंत । ए थापेंगे पाप महत ।।
हिंसा होम करेंगे घने । तिनके पाप कहां लौं भनें ।।४५२।।
च्यार वेद थापेंगे और । तिनमे पाप अनत किरोड ।।
षोटे दांन प्रकासै वहु भांति । उलटी सब थापेंगे बात ।।४५३।।
धरती हल रगबुं असमरी । हस्ती और नुरंगम तिरी ।।
षोटे देंगे घणु उपदेस । क्रिया भ्रष्ट सुनि होंय नरेस ।।४५४।।
जैनधरम के निंदक होंइ । असंभव बात कहैगे सोय ।।
अज गज गउ थापेंगे भेद । असव और जीवों को षेद ।।४५५।।
इतनो सुनी भरत ने बात । मै इह बुरी करी बहु भांति ।।
अब इह भेष करूं जाय दूरि । इनकूं मारि गमाऊं मूर ।।४५६।।
तब स्वांमी समझावै ग्यांन । होय पाप जो हति हैं प्रान ।।
जीव हते भव भव दुःष लहै । ऐसी बात जिनेसुर कहै ।।४५७।।
होणहार टारी नहीं जाय । अैसा धरउ न षोटा भाय ।।
राजा भरत रवि जेम प्रताप । पूंन्य करई सब टूटे पाप ।।४५८ ।।

परजा सुषी वसई ता सर्ण । परदुष भंजन दारिद्र हर्ण ।।
श्री भगवंत धरम समझाय । मोक्ष मारग के भेद बताय ।।४५६।।

पुन्य विभूति सकल षिर गई । वांनी जोत एक सम भई ।।
एक मास रहे इह भांति । नां कछु वांनी नां कछु बात ।।४६०।।

माघव बदी चौदस परवांन । श्री जिन पहुंचे मुक्ति मिलांन ।।
देह कपूर समान सव षिरी । विज्वल धात चिमकसी करी ।।४६१।।

सूरपति आय किया कल्यांण । पूजा रची भगवंतिसौं आंणि ।।४६२।।

दूहा

श्री जिण धरम प्रगट किया, प्रतिबोधे वहु लोग ।।
आप मुक्ति रमणी वरी, तिहां सासते भोग ।।४६३।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रेणिकप्रश्न श्री ऋषभ महातम बिधानकं संधि ।।१।।

द्वितीय संधि

भरत का वैराग्य

चौपई

भरत भूप छह षंड का धनी । राजसभा सोभा अति वनी ।।
छत्री सहसश्रो विद्याधर भूप । एते भुमिगोचरी अनूप ।।१।।

मुकट वंध बत्तीस हजार । छयानवै सहस नारी भरतार ।।
दरपन देख धवल सिर केस । मनमें कंपा भरत नरेस ।।२।।

मंत्री सों पूछी जब बात । कप्या भूप पसीना गात ।।
भोग भुगत में बीती आव । धरम ध्यांन सो धरया न भाव ।।३।।

मोह माया में भया अचेत । जरा दूत कच आए स्वेत ।।
अब सब राज विभूति को त्याग । धरौ चारित्र मन बच वैराग ।।४।।
आदितजस को सौंप्या राज । आप संवारया आतम काज ।।
पालै प्रजा भोगवै भोग । साधैं भरथ वनमें नित जोग ।।५।।

भरत का परिवार

उपज्या केवल भया निरवांन । सुरपति पूजि गये निजथांन ।।
आदितजस के सिदजस पूत । बल अंकुस बल महाबल भूत ।।६।।

अतिबल अमरत सबद सुभद्र । महेन्द्र महोदर भीम सुरेन्द्र ।।
रवितेज प्रभतेज भूपती । परताप मनि अति वीर सुभमती ।।७।।

सुविरत उदत और बहुभूप । उनका वरनों कहा स्वरूप ।।
केइक तप करि भये केवली । गए मुक्ति पूजी मन रली ।।८।।

केई सुरग देवगति लही । इक्ष्वाकवंस कुल उत्तम सही ॥
बाहुबलि के सोमप्रभ भया । महाबल सुबल धर्म धुर किया ॥९॥
भुजबल देवमादि अतिबली । इनकी कीरति जग में भली ॥
केई मुक्त केई सुर भए । कांटि कर्म ऊंची गति गए ॥१०॥
सोमवंस का किया बषान । नवि वंसी विद्याधर जांनि ॥
विद्याधर परवत का भूप । **नमी** विद्याधर बहुत स्वरूप ॥११॥
ताकै **रत्नमाली** सुत एक । जानें राज काज की टेक ॥
रतनवीर्य रतनरथ और । रतनचित्र रथ सुष की ठौर ॥१२॥
बज्रजंघ वज्रसित दिष्ट । बज्रधुज वज्राधव जेष्ठ ॥
सुवजर अरु वज्राभृत राय । वज्रभान वज्रवाहु गुनभाय ॥१३॥
वज्रवाक बज्रसिंध नरेस । वज्राष्ट साधे बहुदेश ॥
वज्ररतन भीम वज्रवान । विद्युन्मुष सवकंच बलबान ॥१४॥
बज्रहस्त वदतांन विद्योत । **विद्युतदृढ** कांमनी सुहोत ॥
इकनिस पोढे दम्पति संग । सुष सज्या सोभै सुभ रंग ॥१५॥
देश राज की महिमा कहैं । रांणी का मन सुणि उमगहै ॥
मोहि दिषावौ वे सब ठाउ । कैसे द्वीप परवत अरु गांव ॥१६॥
इतनी सुणि साजिया विमान । दंपति बैठ चले सुष मान ॥
पंचागिर परवत तर हांन । संजै सुरति मुनि आतम ध्यान ॥१७॥
रुक्या विमान न आगे चलै । विद्याधर मन ज्वाला जलैं ॥
कै कोई मित्र कै दुरजन ठाउ । कै कोई सिद्ध तपा कै भाउ ॥१८॥
असा चितवि गहि कमांन । चारूं कूंट चलाया बांन ॥
दामिन चमकी उजयारा भया । मुनिवर देषि उपद्रव किया ॥१९॥
पापी दिया साधनें दुष । वह अपने मन मानें सुष ॥
मुनिवर चित्त में भय नवि धरी । असुभ करम टूटे तिह घरी ॥२०॥
सह परीसह अपने अंग । उपज्या केवल लहर तुरंत ॥
चउविध देव किया जयकार । कचन मढी बनी तिहवार ॥२१॥
विद्युतदृढ बाधिया धनेंद्र । विद्यालई छीन सब संघ ॥
मुनि बैठा आतम ल्यो लाइ । ते क्युं दुष दिया यहां आई ॥२२॥
तब विद्याधर विनती करै । ऐसे पाप टरै ना टरैं ।
साधहै दुख दीया वेकाज । हरत परत षोई सब लाज ॥२३॥
कठिन पाप मैं कियो अथाय । अब मैं पाप टरै किह भाय ॥
विन विद्या किम पहुचे गेह । चिंता व्यापी गगपति देह ॥२४॥

विद्याधर पावै जई मोहि । मारै प्रचुर करै जिय छोहि ॥
जो विद्या मोकुं फिर देइ । मूल न करूं पाप सौं नेह ॥२५॥

धरणेंद्र की तब आग्या भई । बारावरस कर तपस्या नई ॥
तवै पावसी विद्या सुष । फिर मत करै पाप की बुधि ॥२६॥

पूजैं धरणेन्द्र मुनिवर सौं वात । इन तुमस्यौं क्यों किया घात ॥
क्यो इननें तुम कूं दुख दिया । कारन कौन उपद्रव किया ॥२७॥

व्योरो सकल कहो समभाब । ज्यूं मेरे मन संसा जाय ॥
मुनि बोले पुनि ग्यान विचारि । प्राणी पावै सकल आधार ॥२८॥

सत्यघोष की कथा

संकर ग्राम देस का नाम । सरब जीव सुखसौं विश्राम ॥
श्रीवरधन है तहां भूपती । ता पटराणी **कुसमावती** ॥२९॥

सोम सरमा ब्राह्मण तिहां बसै । महाकुचील देख सब हंसै ॥
उन छोड़ी जीवन की आस । दिक्षा लई संन्यासी पास ॥३०॥

पंच अगन तप साधै जोग । ताकी सेव करैं बहु लोग ॥
अंतकाल उन छोडी देह । उपज्या जाय देव के गेह ॥३१॥

धूमकेतु नाम तिहां धरचा । देखत मन भय उपजैं खरा ॥
वहां भी आव वितीत सब गई । मनुप देह फिर पाई नई ॥३२॥
वांहन सिष्य ब्राह्मन के गेह । भया पुत्र अति सुन्दर देह ॥
सत्यघोष बालक का नाम । दिन दिन बढै विराजै ठाम ॥३३॥

पाईविरिध सब विद्या पढी । ज्योतिक ग्रंथ अति महा बढी ॥
व्याकर्ण का लह्या सब भेद । कहै पुराणरु व्याकरं वेद ॥३४॥
वैदिक सामोद्रिक गुण सार । ग्यांन वाधि बढी वृधि अपार ॥
छुरी कतरनी जनेउ राषै । झूठो वयण न मुख थी भाषै ॥३५॥
जो मुख असत्य वचन नीसरैं । षंड जीभ तब पर ही करैं ॥
कीरति प्रगटि जब सब संसार । ऐसी रीत सुंणी भूपार ॥३६॥
सत्यघोष प्रति लिया बुलाय । प्रोहित थाप्या आपणीं राइ ॥
आदर मान देइ सब कोई । दिन दिन कारण चौगुणां होइ ॥३७॥
नेमिदत्त वाणिक जौंहरी । लाद चल्या समंद की पुरी ॥
भरे जिहाज सौंज मन रोच । **नेमिदत्त** मन उपज्या सोच ॥३८॥
इतनां द्रव्य लिया मैं संग । कुछ घर जाउं रहै अभंग ॥
चार रतन जे धरे अमोल । **सत्यघोष** नैं सोपे तोल ॥३९॥

जब फिर आउं तव मैं लेव । इनही तुम राषौ सत देव ।।
सत्यघोष कूं सौंपे लाल । विनज निमित्त किया उंन चाल ।।४०।।
ताकूं वीत गये दिन घने । **सत्यघोष** चित्त औरैं बने ।।
विप्र विचारया मन में खोट । खोया धरम लोभ की ओट ।।४१।।
मंदिर अपने दिया ढहाय । और भांति के फेर बनाय ।।
जो कोइ देखे सो भरमाय । च्यारि पौलिकी औरैं भाइ ।।४२।।
नेमिदत्त के बहे जिहाज । फिरि आये लालौं के काज ।।
डूबी सब कछु चिंत न करी । जाती सत्यघोष नें धरी ।।४३।।
लेय रतन फिर करूं व्योपार । बढै लक्ष धन होय अपार ।।
सत्यघोष सतधने आवास । **नेमिदत्त** देख्या तट पास ।।४४।।
रूप दलिद्री फाटे चीर । आय लग्या सागर के तीर ।।
सभा मे आय चलायी बात । मैं सुपनां देष्या इण भांत ।।४५।।
एक रक मुझ सों यों कहै । मेरी थापना तो पै रहै ।।
मागे रतन सुपने में आय । तिसका फल तुम द्यो समझाय ।।४६।।

सत्यघोष के पास जाना

नेमिदत्त पहुंच्या तिहं ठोर । देखे मंदिर और ही और ।।
पूछी **सत्यघोष** की पौरि । **नेमिदत्त** आवियौ बहौरि ।।४७।।
सभा माहि **नेमिदत्त** गया । **सत्यघोष** ने वंदत भया ।।
सत्यघोष देषै नहि ताहि । **नेमिदत्त** ताहि रह्यो लोभाइ ।।४८।।
कहै रतन मेरे तुम देहु । बोलै विप्र पंचो सुणि लेहु ।।
मैं सुपना देख्या जह जात । सो तुम देखो अब ही वात ।।४९।।
राय सुहाती बोले सबै । धक्का दिये वणिक कुं तबै ।।
नेमिदत्त पहुंचो नृपद्वार । बे कर जोड करी पुकार ।।५०।।

राजा से निवेदन

च्यारि रतन प्रोहित कुं दीये । कीजे न्याय तींन धरि हिये ।।
राय कहै इह गहिलो कोय । **सत्यघोष** थी ए मन होय ।।५१।।
दूरि किया धका दिव राय । वावरि मई को करै सहाये ।।
राज सभातैं भया निरास । बसती छोडि फिरै बनवास ।।५२।।
रात रहै वृक्षन में जाय । च्यांरि लाल निस दिन विललाय ।।
एक निस सुंणि राणी ए बात । बहोत दिन भए याहि विललात ।।५३।।

करो न्याव राजा प्रभूनाथ । यह तो है तुमरी सरणाय ।।
या को न्याव वेग तुम करो । यह भ्रमतो डौलै बावरो ।।५४।।

बोले राजा राणी सुणै । सत्यघोष क्यूं कपटी घुणै ।।
बावला गहलावै क्या फिरै । ताकौ न्याव कवण विध करै ।।५५।।

राणी बोली सुणौं नरेस । इते तो भ्रमई तुम्हरे देस ।।
एक जीभ कूकै दिन रात । गहला कहिए किण भाति ।।५६।।

राणी द्वारा न्याय

जो तुम मोकूं आज्ञा देहु । याको न्याव तुम मो पै लेव ।।
नेमिदत्त तोडे तिह बार । राजा ने जाकर कियो जुहार ।।५७।।

राजा राणी मंदिर मांहि । नेमिदत्त बैठा इक ठाह ।।
सत्यघोष को क्या तिह घरी । चौपड खेलन बाजी धरी ।।५८।।
प्रोहित नें हारी मुंदडी । राणी जीत ले करमे धरी ।।
दई मुद्रिका दासी टेर । जाहु पंचडाणी पै इण बेर ।।५९।।

कहियो रतन मांगै सतघोष । जैन पतीजे छाप हि पेषि ।।
मिश्रानी देवै नहि लाल । दासी आयी चतुर विसाल ।।६०।।

घोती पतरा जनेउ हार । दासी गई फेर तिह बार ।।
स्यांम वस्त्र में बांधे रत्न । जौ न पत्यातउ देखिए जतन ।।६१।।

पोथी जनेउ घोवती देष । दीए लाल ते च्यारूं पेषि ।।
आंण दिये राणी के हाथ । अचिरज भया पृथ्वी का नाथ ।।६२।।
राजा बहुत अचंभा करै । अैसे तै अैसी क्यों सरै ।।
औरहु रत्न भराए थाल । तिनमें डारे च्यारुं लाल ।।६३।।
नेमिदत्त बुलवाया वान । अपने रतन देह पहिचान ।।
देखे सकल रत्न परिहरे । अपने थे सो लेकर धरे ।।६४।।
तव राजा प्रोहित सूं कहै । काती छुरी जनेऊ सुरेहैं ।।
अब क्यों जिभ्या राषई मूंढ । तू पाषंडी अंतर गूढ ।।६५।।
मुंड मूंडि मुष काल कराय । सकल नगर मांही फेराय ।।
देस निकारो नांम न लेहु । अब देषू तो सूली देहु ।।६६।।
बांहन शिष्य जती पै जाय । दिक्षा लई कर मन वच काय ।।
नरपति ने भी दिक्षा लई । ब्रह्मविमान देव थिति भई ।।६७।।
आव मुंज करि षेत्र विदेह । संजै सुत राजा मम देह ।।
सहज विचार किया मैं जोग । छोडि दिये संसारी भोग ।।६८।।

वा संबंध जोग जो आय । सुनि बात मन संसा जाय ।।
नेमिदत्त ने दीक्षा धरी । धरणेंद्र पदवी पाई खरी ।।६६।।

विद्युतद्द भी विद्या पाइ । फिर कर आवा अपनी ठांय ।।
राज करत बीते दिन घने । धरम विचारया अपने मने ।।७०।।

दिढधरपुत्र ने सौंप्या राज । आपन किया मुक्ति का साज ।।
अस्वधरम अस्वध्वज भये । **पदमनांभ पदमाली** थये ।।७१।।

दूहा

पद्मरथ भी सिद्ध जन, सिंघ जंघ मृग धर्ण ।।
मेघसूर सिंघ प्रभू. सिहकेतु मन हर्ण ।।७२।।

चौपई

शेशांक चन्द्र औ चन्द्र शेष । इंद्ररथ चक्रधर मे विसेष ।।
चका इन्द्र चक्रध्रत मनगर्व । मनांक मनवास मन गुन सर्व ।।७३।।

मनोज समन समेद्र नेद्र । मन सोम विजइ सोट आनंद ।।
लवात धर रक्तौ उष्ट भूप । हरिचंद्र पुरचद्र सरूप ।।७४।।

पूरण चंद्र भया काल इंद्र । चद्रमा चंद्र चूरवाचें इन्द्र ।।
उरपांन पंक केस वरराय । वुचुर सचुर वजरचुर सुभकाय ।।७५।।

भर चुरा टका वाहन जटी । वाहन ते मन हरष षग वटी ।।
याही वंस भूप अति घने । करि तपु अष्ट करम सब हने ।।७६।।

केई स्वर्ग देवता भए । केई मुक्ति रमणि मे गए ।।
विद्याधर का वरण्या वंस । वरण सुनाये तीन्यु अस ।।७७।।

इति श्री पद्मपुराणे विद्याधर वंस वर्णन सम्पूर्णम् ।।

तृतीय संधि

चौपई

इश्वाक वंश वर्णन

इष्वाक वंस बरनू बहोरि । सुनु बात चित्त मे राषो ठोर ।।
धरनीधर जगधारन धीर । तोंत्रिदसंजपुत्र बल वीर ।।१।।

धरनीधर दिक्षा पद धरया । राजा **त्रिदसंज** कौं करथा ।।
इन्द्ररेखा विवाह नारि । रूप लछिन शशि की उनहारि ।।२।।

तास गर्भ **जितसत्रु** भया । बहुत आनंद भूप मन ठया ।।
पोयनपुर सोमवंसी राय । वानेंद्र भूपति तिस आय ।।३।।

अभैमाल राणी ता गेह । **विजया** कन्या कंचन सम देह ।।
जितसत्रु सौं दई विवाह । भोग मगन नि करै उछाह ।।४।।

इक निस सुपने षोडस देषि । भली वस्तु पाई सुविशेष ।।
विजया देवी उठी प्रभात । पति सौं कहैं सुपन की बात ।।५।।

सुणि सपने मन हुआ उलास । सुख मानैं करि भोग विलास ।।
जेष्ठ वदि मावस्या शुभ वेर । भई गर्भ पूजैं सुर पैर ।।६।।

जै जै कार सबद सुर करैं । देवी छप्पन सेवा अनुसरैं ।।
जैसे कमल पत्र जल बुंद । जैसे स्वाति जल सीप समंद ।।७।।

द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ वर्णन

माघ सुदि दसमी शुभ वार । **श्री भगवंत** लिया अवतार ।।
नक्षत्र रोहणी वरियां भली । तीन लोक सुन मानें रली ।।८।।

जनम कल्याणक कर गये देव । रतन पुष्प वरषे बहु भेव ।।
दसहु दिसा दुंदुभी होय । भयौ जनम जानहु सहु कोइ ।।९।

पूरब लाष बहत्तर आव । साढे चारसै धनुष की काय ।।
सुरपति कियो महोछव आंन । रीति पाछली करी प्रमान ।।१०।।

अभयमाला व्याही सुंदरी । रूप लक्षण कर सीमै षरी ।।
राजा भोग वीते दिन घने । वन उपवन सोभा अति वने ।।११।।

जहां सरोवर निरमल नीर । छाया सघन बिहंगम तीर ।।
फूले कमल रविवसी तिहां । चद्रवंसी मुरझाये जहां ।।१२।।

तब मन मान्या लोक सरूप । बूडे जीव मोह के कूप ।।
भोग भुगति की निंदा करी । जैं जैं सबदहु अति ही षरी ।।१३।।

माघ वदी नौमि सु जिनेश । शिवका चढि वन किया प्रवेश ।।
उतर पालकी लोचे केस । श्री जिन भए जती के भेस ।।१४।।

बारह विध तप आतम ध्यांन । सुर किया तहां तप कल्यान ।।
छह उवास कीये इकसार । ब्रह्मदत्त कै लिया आहार ।।१५।।

भोजन रीति इसी विधि करी । चिदानंद त्यौं लाई षरी ।।
बारह बरस रहें छदमस्त । चार करम जीतें बहु कस्त ।।१६।।

पोस सुदि ग्यारस शुभ घरी । परकत अेसठि न्यारी करी ।।
पाया केवल ज्ञान जिनेन्द्र । सुर नर तीन लोक आनंद ।।१७।।

बाजै सुर दुंदुभी बहु भेर । रचियो समोसर्ण तिह बेर ।।
साढे ग्यारह जोजन समोसर्ण । गणरतवउ लागी छांनिकर्ण ।।१८।।

दोष अठारह कीये दूर । बारह सभा रही भरपूर ।।
चोंतिस अतिसय गुण छियालीस । तीन छत्र बिराजैं सीस ।।१६।।

चौंसठ चमर ढुरैं इक बार । बांनी हुई त्रिभुवन आधार ।।
विजयसागर त्रिदज संकावीर । मंगला राणी गुण गंभीर ।।२०।।

ताको पुत्र सगर चक्रवर्त्ति । छः षंड करि साधे सुरत्ति ।।

विजयारध दक्षिन दिस भूप । विद्या साधी नाना रूप ।।२१।।

आप तात दिक्षा पद लिया । चक्रपाल ने राजा किया ।।
पूरणघन पुत्र ता तने । विद्या बल गिनती को गिनैं ।।२२।।

चक्रपाल नैं दीक्षा लई । राज विभूति पूरणघन दई ।।
उतपन्न मति पुत्री ता तनी । रूपलक्षन सोभा अति बनी ।।२३।।

सुलोचन नें भेज्या दूत । तिलकेसर मेरे घर पूत ।।
अब तुम किरपा मोपै करउ । उतपलमति मम पुत्रै वरउ ।।२४।।

पूरणघन पूछ्या जोतगी । याकी लगन कौनसौं लगी ।
याह विवाहै राजा सगर । पटरानी होवैगी अगर ।।२५।।

इह निमत्त सौं कहै भूपाल । टीका भेज्या सगर कौं हाल ।।
सुलोचन सुनि कोप्यो राइ । जुद्ध हेत आपन चढि आइ ।।२६।।
लई खडी जोतिग गुन ग्यांन । हौनी कही आगउ आनि ।।
पूरणघन के बजै निसांन । सूरवीर सब पहुंचे आन ।।२७।।
साजी सेन्या मुंह मिल भए । दुहुंधां बानी धागी ढए ।।
झूझै दोऊ सेना खरी । सहस्रनयन उलपल मति हरी ।।२८।।
दारण जुध भया भयभीत । अंत भई पूरणघन जीत ।।
आया गेहन देषी सुता । पूरणघन कुं वाढी चिंता ।।२६।।
सुनी सहस्रनयन ले गया । उठ्या क्रोध दुचित्या भया ।।
सहस्रनयन पै कीनी दोर । वाका चाचा मारया ठौर ।।३०।।
उतपलमति सहस्रनयन के संग । मैं हूं सगर भूप की मंग ।।
तो मैं हरी किया अति बुरा । चक्रवर्त्ति का डर नहीं करा ।।३१।।
अब जो चाहै अपनौं प्रांन । लेचल सगरराय पै जांण ।।
सहस्रनयन डरप्या मनमांहि । सगर पास ले पहुंतो ताहि ।।३२।।

दई विवाह सगर सों जाय । पटराणी थापी तब राय ।।
सहस्रनयन सुणी इह बात । **पूरणघन** किया चाचा घाति ।।३३।।
कोप्या भूप जुध कौं चल्या । पूरणघन फिर कैं सांभला ।।
बहुत जुध हुवा दुहु वोर । पडै मार तिहां मांची रोर ।।३४।।
मेघवांहन पूरणघन पूत । पहुंता तिहां सैन संयुक्त ।।
बरषै वांण अषाढ सम मेह । सहस्रनयन भाग्या ले देह ।।३५।।
समोसरण में आया भाजि । तिहां भया मनवांछित काज ।।
वैर भाव सब ही मिट गया । दया प्रणांम सकल मन भया ।।३६।।
वज्रधर देखा इन जुध । चक्रवर्ति सु ं कही यह सुध ।।
चाल्यो समोसरण भगवान । पूछै इनका वैर निदान ।।३७।।
राजा वज्रधर सगर ले साथ । आये समोसरण जिन नाथ ।।
मानस्तंभ मान कौं हरै । देखत ही मति निरमल करै ।।३८।।
तीन प्रदक्षिण करि नमस्कार । डंडवता बहु वारंबार ।।
दो कर जोड करै प्रसन्न । इन्हैं बैर क्यों भया उत्पन्न ।।३९।।
अजितनाथ जिण बाणी सार । गणधर भेद कहैं सुविचार ।।
संदनगर तिहां भावन सेष्ठ । अति कीरत बहु क्रिया सरेष्ट ।।४०।।
ताकै **अरहदास** सुत भया । पाई बुधि सौ स्याणां थया ।।
आप सेठ चाल्यो व्योपार । पुत्रं सौप्या बहु **दीनार** ।।४१।।
चार कोड गिण सौंपे तांहि । धरम दया राषो मनमांहि ।।
सज्जन कुटंब की करज्यो कांण । जिन पूजा में दीज्यो दान ।।४२।।
लाद जिहाज दिशांतर चल्या । **अरहदास** ज्वारघा संग मिल्या ।।
खेलैं जुवा हरावै द्रव्य । सात विसन तिन सेये सर्व ।।४३।।
वेस्या संगमादिक सौ हेत । लछमी बहु गणिका कु ं देत ।।
खोटे कारण कीने घने । विभचारी वाकौ सब भने ।।४४।।
सर्ब दर्ब षोया इंण भाति चोरी कु ं निकस्या अधराति ।।
राज भंडारै किया प्रवेस । बांधि पोट ले चल्या असेस ।।४५।।
सुरंग मांहि ते आवै जाय । नित प्रति सात विसन सु ंषाय ।।
प्रौण बूडि समद में गए । पश्चाताप सेठ बहु कीये ।।४६।।
मेरे घर थी लछमी बहुत । ते में सौंपी पूत कपूत ।।
मेरी बुधि हरी करतार । भ्रमता फिरथा देस ससार ।।४७।।
जे संतोष सों रहता बैठि । तो क्यों होती सुखसौं अ्रैंठ ।।
हुआ दलिद्री पहूंच्यां गेह । रती न घर में देषी षेह ।।४८ ।

साहरण कही पुत्र की बात। सुणि करि दोउं मीडे पछितात ।।
कही कैं वह क्या धंधा करै। राज भंडारै चोरी करै ।।४६।।

सुरंग मांहि ते पैठे सांझ। चोरी करै भंडारा मांझ ।।
दंपति मनह विचारया एह। जो नृप सुणै तो सूली देइ ।।५०।।

इम विचार चिरण लई सुरंग। देख **अरहदास** भया मन भंग ।।
पिता पुत्र ने मारया ठोर। भाज गया नगरी ने छोरि ।।५१।।

करम कुकर्म करै दिन रैन। कबही मनकौं हुवै न चैन ।।

नरकों के दुःख

मरकर गया सातमी नर्क। छेदन भेदन काटन अर्क ।।५२।।
हुंडक देह धरो उन जाय। भूख प्यास को अंत न आय ।।
जुंवा चौर के काटै हाथ। फेर संवारै दुख के साथ ।।५३।।
जीवह तेरे मास कुं खाय। लोह पिंड दीजे मुख मांहि ।।
मांस अहार कहैं ते सुष। अभक्ष खाये पावै दुख ।।५४।।
सुरा पान मादिक जे लेह। तपत रांग ता मुख मे देह ।।
आहेटै मारे बहु जीव। सूला रोपन बैंधै ग्रीव ।।५५।।
जो भुगतें पर की असतरी। लोह तणी लावै पूतली ।।
दौरि भिडावै उनकौ धाइ। पारे ज्यों सरीर फट जाय ।।५६।।
दुख में होय देह की देह। सात विसन फल लागै एह।
वे दोन्यू कोली के गेह। भए पुत्र तिहां नहीं संदेह ।।५७।।
लरि करि मुये नरक गति लही। भूष त्रिषा करि पीडा सही ।।
वहां ते मरि परवत के तट। भए साझ करै घन घुट ।।५८।।
दहां ते मुये मेष गति पांय। दोन्यों लरई बैर के भाव ।।
यो ही जौनि भ्रमें वे घनी। अतकाल तैं भेटचा इक मुनी ।।५९।।
तिहां सुने पंच प्रभू के नाम। तातै पायो उत्तम ठाम ।।
क्षेत्र विदेह **पुष्कलावती** देस। **पुंडरीक** तहां नगर नरेस ।।६०।।
सुण्या धरम श्री जिनवर पास। सतार स्वर्ग परि पाया वास ।।
वहा थी चैकरि नरपति भए। भावन जीव पुरन घन थये ।।६१।।
अरहदास जीव सुलोचन जान। ताथी जुद्ध भया बहु आन ।।
सगर भूप जोरे दोइ हाथ। **मेघवाहन सहस्रनयन** की पूछी बात ।।६२।।
पदमाक नगर तिहा संषक देस। सीस अवली मित्र के भेस ।।
दोऊ रहैं एकही ठांउ। ससी गयो औरही के गांव ।।६३।।

अवलाचला जात हो नीर । शसिने मारया भर कर तीर ।।
देही छोडि लही गति वहल । शशि को मारया सींग सौपैल ।।६४।।
वह तो मरि मूसा अवतार । अबली जीव भया मंजार ।।
बिलाव नें मूसे कूं मारि । यौंही भ्रमे तिरजंच मझारि ।।६५।।
स्यांम रांम की दासी गेह । ताकै गर्भ भई नर देह ।।
राजा प्रीछ तबै सुनि धर्म । दिक्षा ले काटे दुह करम ।।६६।।
पाया सनत कुमार विमांन । ह्वा थी चये धातकी आन ।।
जैंवती देस अरंजय नगर । सहस्र सूर्य के सेवक अगर ।।६७।।

सगर के भव

तप करि गये स्वर्ग विमांन । ह्वां तै चइ पाया इह थान ।।
सगर नरेंद्र दोई करि जीरि । मेरे भव प्रभु कहो बहोर ।।६८।।
भोमर देस कुंरग नरेस । मुनिकौं दान दिया बहु मेस ।।
पाया अंत सुधर्म विमांन । ह्वां तै चल्या चंद्रपुर आन ।।६९।।
दैत्यराय धारादे नारि । विर्त्ति कीर्त्ति तसु भयो कुमार ।।
आप तात दिक्षा पद लिया । वीर्त्ति कीर्त्ति कौ राजा किया ।।७०।।
तिन भी तप कर आतम ध्यान । पहुंचा स्वर्ग लोक पुर थान ।।
रतनसंचय पुर षेत्र विदेह । महाघोष राजा के गेह ।।७१।।
चन्द्राननी उरलियो अवतार । अविचल भया सुभट को पार ।।
तप करि देव भया सुरलोक । पूरन आव भई मन सोक ।।७२।।
भरत क्षेत्र पृथ्वी पर बसै । जसोधर राजा के मन हसै ।।
जया नाम ताके घर प्रिया । जयकीर्त्ति पुत्र नाम कुल दिया ।।७३।।
राय यशोधर दिक्षा लई । राज रिध जैंकीर्त्त ने दई ।।
सुख मे दिन बीते बहु ताहि । दिक्षा ली मुनिवर ढिग जाय ।।७४।।
पहुंचा विजय स्वर्ग विमान । ह्वां ते सगर भया तू आंनि ।।
सकल भवांतर श्री जिन कहै । बारह सभा सुनत सुख लहे ।।७५।।

सोरठा

सुनि पिछला संबंध, मन संसय सब का गया ।।
सकल जीव आनंद । राति दिवस पालो दया ।।७६।।

चौपई

समोसरण में सुख निधान । राक्षिस अधिपति द्वै पहुंचे आंनि ।।
भीम सु भीम दुहुंन का नाम । राक्षस कुल आए इस ठांम ।।७७।।

दई प्रदिक्षन करैं डडोत । श्री जिण करी बहुत अस्तुति ।।
पूरणघन मेघवाहन सौं कहै । जो तुम चलौ परम सुख लहै ।।७८।।

सागर तट जोजन सो मांन । त्रिकुटाचल सुमेर परमांन ।।
पचास जोजन है उच्चंत । **कंचनगढ** नय जोयण हुंत ।।७९।।

जोजन तीस वसै वह नगर । सोवन घर चैत्यालय अगर ।।
मोती लाल हीरे दवहु वरण । पन्ने चुन्नी जडे सुवरण ।।८०।।

फिये चितेरे रतन के घने । प्रतिमा सहित चैत्यालय बने ।।
वन उपवन बावडी कूप । सरोवर निरमल पाल अनूप ।।८१।।

हस आदि बहु जलचर जीव । वैठक सौहें गहरी नींव ।।
कमल फूल फूले वहु भांति । दीसैं भली बाग की पांति ।।८२।।

दक्षिण दिस **लंका** जिहां नाम । सर्व वस्तु सों सींमैं ठाम ।।
चैत्यालौ परि धुज फहराय । अमर स्वर्ग सुख ऊोडैं आय ।।८३।।

सहस्रकूट बने जिण थांन । **लंकागढ** सुर्ग पुरी समान ।।
सकल वस्तु का करौ वषान । बढै कथा नहीं होय निदान ।।८४।।

मेघवाहन कुं दीयाहार । या की पूजा करो सबार ।।
जो मनवाछित करस्यौ नरेस । तैसा तुरत प्रकासै भेस ।।८५।।

पहैरैं मति गले मझार । कुल क्षय होय पहरैं जब हार ।।
या की पूजा कीजो भली । तो पूजैं मन वांछित रली ।।८६।।

अरु द्वै विद्या दीनी राक्षसी । ते निश्चल चित अतंर वसी ।।
कमला अमला सप्रत तीन । दई विद्याधर गुणह प्रवीन ।।८७।।

श्री जिणवर की आज्ञा पाय । चढि विमान लंका मे जाय ।।
बाजा बाजैं घुरैं निसान । पूरणघन मेघवाहन भान ।।८७।।

सेना वहुत लई उन संग । हाथी रथ पालकी तुरंग ।।
बैठ विमान चले आकास । देखे पुरपट्टण बहु बास ।।८९।।

देख्या सायर लहर तुरंत । मच्छ कच्छ उतरैं बहु रंग ।।
त्रिकुटाचल तिहां कंचन कोट । ताहि कान्ति रवि हुआ ओट ।।९०।।

देखी लंका कंचन मई । जिनवर भवन सोभा भति भई ।।
अष्ट द्रव्य सो पूजा रची । करैं आरती दंपति सची ।।९१।।

पूजा करि गढ ऊपर चढे । देखत सुख महा अति बढे ।।
ढाल कलस दीया लंका राज । हुवा सबै मन बांछित काज ।।९२।।

निरभयवंत राज ते करैं । भूचर षेचर सेवा करैं ।।
विजयारध पर्वत कै पास । किनर गीत नगर का वास ।।९३।।

अतिमयूष तिहा बसै नरेस । आंनमती त्रिय सोहैं केस ।।
सुप्रभा पुत्री ताकैं भई । मृगलोचन कमलाननी थई ।।९४।।

कीर नासिका सुभ्र कपोल । हीरादंत कोकिला बोल ।।
भुजा कलाई अंगुरी फरी । जंघ केल सम कटि केहरी ।।९५।।

पंकज चरण हंस गति चाल । वेणी सोभा जेम वयाल ।।
टीका **मेघवाहन** का किया । लिष्या लगन सुभ दिन साधिया ।।९६।।

रहसरली सों हुआं विवाह । सोना दीया बहु नर नाह ।।
हय गय वाहन दीये घने । चमर छत्र सिंघासन वने ।।९७।।

जीत कसौंज भूपति नइ दई । तो मोपैं नहि वरणौं गई ।।
विदा होय चाले नरनाह । आये निजपुर अधिक उछाह ।।९८।।

सुष माही दिन बीते घने । चमर छत्र सिंहासन बने ।।
भई गर्भ थिति सुप्रभा तने । **महाराक्षस** भयो उत्पने ।।९९।।

महाराक्षस भया उत्पन्न । रूप कला लक्षण सुखन्न ।।
ता पाछै हुआ सुत और । **ससांक** कुमार विराजै ठौर ।।
सगर चक्री मेघवाहन भूप । पहरि आभरण अधिक अनूप ।।१००।।

आए समोसरण जिनथान । देखत उपजै सुख दिनांन ।।
नमस्कार करि विनती करै । कर जोडि मस्तक भू धरै ।।१०१।।

स्वामी कथा कहो समभाय । मन म्हारे का संसय जाय ।।
तुमसे पुरुष और भी भए । धर्म तीर्थ कौ उनके कीये ।।१०२।।

तुमसा कोई ह्वै है और । असुभ करम को डारैं तोडि ।।
चक्रवर्त्ति केते ह्वै भूप । कामदेव ह्वै अधिक स्वरूप ।।१०३।।

नारायण केते बलिभद्र । प्रतिनारायण के ते रुद्र ।।
श्री जिनवर भाषै अब ममझाइ । बारह सभा सुणै मनलाय ।।१०४।।

उत्सर्पणी अवसर्पणी काल । त्रेसठ पुरुष ह्वै चौथेकाल ।।
चौबीस तीर्थंकर कामदेव । बारह चक्री नो बलदेव ।।१०५।।

नारायण प्रतिनारायण नौ । महारुद्र वे ग्यारह गिनो ।।
पहली हुआ जुगलिया धर्म । **रिषभदेव** परकांस्यौ मर्म ।।१०६।।

चक्री प्रथम भया ते **भरत** । कामदेव **बाहुबल** समरत्थ ।।
पंच कल्यांण इंद्रादिक देव । पूजा करैं चरण की सेव ।।१०७।।

हम सरवारथसिधि तें आय । **अजितनाथ** बीजो जिनराय ।।
गरभ जनम तप केवल ग्यान । किये महोछब सुर नर आन ।।१०८।।
चक्री **सगर** दूसरा भया । छह षंडि साधि राज भोगिया ।।
बाईस होंय और अवतार । धरम प्रगासेंगे संसार ।।१०९।।
चक्रवत्ति ह्वै हैं दस और । पाप दुष्ट मारैंगे तोडि ।।
धर्म पुन्य की रक्षा करैं । तीन काल सुमरण दिढ धरैं ।।११०।।

चौबीस तीर्थंकर

ऋषभनाथ प्रथम जिणदेव । जैन धरम प्रकास्या भेव ।।
दुजे अजितनाथ जिणराय । संभव अभिनंदन सुखदाय ।।१११।।
सुमति पदमप्रभू देव सुपास । चंद्रप्रभ मन पूरवै आस ।।
पुष्पदत सीतल श्रेयांस । वासपूज्य सुमरो जिणहंस ।।११२।।
बदौ विमलनाथ सुजिणद । अनंतनाथ चउदहौं मुणिद ।।
धरमनाथ जिणधरम महंत । शांति कुंथु श्री अरु अरिहंत ।।११३।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव । नमि नेम की कीजे सेव ।।
पार्श्वनाथ कमठ मद हया । वर्द्धमान प्रकासी दया ।।११४।।

दूहा

बाहुबलि का वल अधिक, दूजा अमर मजसेन ।
श्रीधर दरसन भद्र अति । **प्रसनचंद** सुष सेन ।।११५।।
चंद्रवरण चंद्रकला, अगाति, मुकति **सनंतकुमार** ।।
श्रीवछराजा कनकप्रभ, मेघ वरण उनहार ।।११६।।
साति कुंथ अरु अरह जिण. **विजयराज** श्रीचद ।।
नल राजा थुलभद्र अति, हनुमान छह दंद ।।११७।।

अडिल्ल

बलिराजा वसुदेव सेव बहुतै करै
प्रद्युमन रूप अपार ताहि क्यौ मन धरै ।।
नागकुमार सुदरशन सील पाल्या धरा,
धारचौ दृढ वृत सील सुभब सायर तिरचा ।।११८।।
चक्रवर्त्ति भयऊ भरथ देश वहु साधिया ।
जीते भूप अनेक जिनौ को बांधिया ।
धरचा धरम सौं ध्यान कर्म वसु क्षयकिया ।।
केवल ज्ञान उपाय मुक्ति वासा लिया ।।११९।।

सगर जीय कर चक्र देस अपने करैं ।
छहू षंड के भूप हाथ जोड्यो खरैं ।
सुन्या धरम जिन पास भाव बहु मन धरचा ।।
वाणी अगम अपार जीव सुणि निस्तरचा ।।१२०।।

दूहा

मघवसु चक्री तोसरा । सनतकुमार भी होइ ।।
सांति कुंथु अरुहनाथ जी । सुमरो नित सब कोइ ।।१२१।।
फिर सुभोम चक्री भया । पद्म सुचक्री जान ।।
हरषेन जयसेन नृप । ब्रह्मदत्त गुणषांन ।।१२२।।
त्रिविष्ट द्विविष्ट स्वयंभव । पुरुषोत्तम सिध भेव ।।
पुंडरीक दत्त लक्ष्मणां । कृष्णनारायण देव ।।१२३।।
सुत्तारिक असुग्रीव । मेर कुमेर मधु कैंट ।।
नि-संभव पहलाद । वलि रावण जरासिध हु वाहेट ।।१२४।
विस्वानल सुप्रतिष्ठ । अचलपुरीक जीतंधर ।।
विजय अचल सुधरम सुपुत्र सुदरसन आनंद ।
नदमित्र श्री रामचन्द्र हरनधर ए शुभ्रकंद ।
भीम बली जितसत्रुजी जित नाभि पोढिल इष्ट ।।१२५।।
क्रोधानलै भया ईग्यारमां । महारुद्र बलवीर ।।
त्रेसठ सीलाका पुरुष सत्र । सम्यकदृष्टी धीर ।।१२६।।

अडिल्ल

श्री जिण ग्यांन गंभीर अंत नहि पाइये ।
भव्य जीव धरि भाव प्रात उठि ध्याइये ।।
केवलग्यांन अपार सकल ससै भजं ।
दियो धरम उपदेस सुख हिरदै रजै ।।१२७।।

चौपई

संसार का स्वरूप

अब देखौ संसार सरूप । कबहू रंक कबहू ह्वै भूप ।।
जीव दया विन कबे न सुख । निरदय पावै भव भव दुख ।।१२८।।
हय गय विभव द्रव्य भंडार । रहै सकल हैगे गिगनांकार ।।
सज्जन कुटुंब दामनी उद्योत । छिनही मांहि अंधेरा होत ।।१२९।।
राजा विभूतरु पुत्र कलित्र । सबै विनासी बुदबुदावत ।।
इण ससार नहीं थिर कोय । देही आदि नहीं साथि होई ।।१३०।।

धरम सहाई जीव के साथ। सुमरण करउ पो जिण नाथ ॥
जैन धरम परखै गुणवंत। रवि प्रताप उज्जल बहु भंत ॥१३१॥
मिथ्या धरम करैं जे अध। अशुभ करम के बांधे बंध ॥
छांडैं अमृत पीवैं नीर। भवसायर ते लहैं न तीर ॥१३२॥
च्यारो गति में डोलैं सदा। काल अनंत लहै आपदा ॥
मिथ्या धरम करो मत कोई। जैनधर्म तें शिवपद होइ ॥१३३॥
छोडे भोग जोग आचरैं। बहुर न भवसागर में परैं ॥
च्यारि कषाय अठारह दोष। ए छांडैं तब पावैं मोक्ष ॥१३४॥

अडिल्ल

मेघवाहन सुनि भूष धरम पहचानिया।
जग सुपना सम देखि अनित्य जु ठानिया ॥
छांड्यो लंकाराज पुत्र जाकी ययो।
सहस्र भूप के साथ आप चारित्र लियो ॥१३५॥

चौपई

महाराक्षस जहां भोगवै राज। ससांक पुत्र छोड्या जुवराज ॥
महाराक्षस के विमला स्त्री। पतिव्रता आज्ञा मे खरी ॥१३६॥
तीन पुत्र जाके उर भये। रूपलक्षन करि सोभै नये ॥
अमर राक्षस उदयोदय रात्त। भांनु राक्षस की सोभा लाक्ष ॥१३७॥

सगर चक्रवर्ती वर्णन

स र चक्रवर्त्ति निष्कंटक राज। साठ सहस्र सुत आज्ञा काज ॥
एक दिवस सब मतउ विचार। चले पिता पैं करैं पुकार ॥१३८॥
अब हम बडे सयाने भए। अब लग कछु उद्यम नहीं किये ॥
षोडश वर्ष तणै परमांण। पुत्र पिता कै पावै थांन ॥१३९॥
बिना कुमाये यूंही फिरैं। सो कपूत नाही विस्तरैं ॥
अब हमकूं तुम आज्ञा देहु। सेवा करैं किसकी धरि नेहु ॥१४०॥
कहै पिता तुम सुणउ कुमार। हम सब भूप नही संसार ॥
ताकी सेव करौ तुम जाय। कौंन समुझि चितई सुखदाइ ॥१४१॥
सर्व वस्तु की पूरण रिद्ध। विलसो वच्छ घणेरी रिद्ध ॥
सुणत वयण कर मस्तक धरैं। हमने टहल करो सौं करैं ॥१४२॥
आज्ञा भई जाहु कैलास। महा गंगा षोदो ता पास ॥
सोवर्नमई चैत्यालै धने। रतन बिंब सोभा सब बने ॥१४३॥

आगई बहु होहिंगे मलेच्छ । वेहु वां आनि करैं परवेस ॥
महागंगा ने फेरउं तिहां । कोइ न जाइ सकैगो वहां ॥१४४॥
विदा मांगि गए कैलास । खाई खोदैं चित्त उल्लास ॥
खोदी तिणैं ऊंडी अति मही । धम धम बहु धरणेन्द्र सही ॥१४५॥
मनमें कोप्या मुंड उठाइ । सहस्रमुखी जिह्वा निकलाय ॥
करी फुंकार धूम आकार । अग्निझाल ते हुये छार ॥१४६॥
मूए सब तब उवरे दोय । भीम भागीरथ चित विसमय होय ॥१४७॥
सगर पास आए तिण वार । सकल बात कौं कह्यों विचार ॥
सुणि वृत्तान्त महादुख भया । रोवैं पीटैं कूटैं हीया ॥१४८॥
हा हा कार नगर में होय । ऐसा दुखी न दूजो कोय ॥
राजा अश्रुपात बहु करइ । ज्यौं ज्यौं दुःख हिये उच्छरइ ॥१४९॥
समझावैं सब मंत्री लोग । इस संसार संयोग वियोग ॥
किस को पुत्र पिता परिवार । इस विभूति जल पटल प्रकार ॥१५०॥
पुण्य संयोग लई बहु रिद्ध । अशुभ उदय दुख लहैं प्रसिद्ध ॥
स्वारथ रूप सबै संसार । साथी नही पुत्र परिवार ॥१५१॥
जब लग जीव तव्य सुखराज । जीव बिना कछु सरइ न काज ॥
राजा फेंरि नगर संचर्‍या । मनतैं दुःख न होवै परा ॥१५२॥
आये समोसरण की सीम । राजा सगर साथ ले भीम ॥
श्री भगवंत का दरसन पाय । बहुत भांति सों नवण कराय ॥१५३॥
देख मलीन बहुत मनमांहि । श्री जिनवर समझावैं ताहि ॥
भ्रम्या जीव इह आदि अनादि । बिना धरम नर देही वादि ॥१५४॥
सब ऊपर चक्र फिरावै काल । नोतन विरध न छोडै बाल ॥
बैठ्या ऊठ्या जागत सैन । रोवत गावत दुचिते वैन ॥१५५॥
कायर सूर राव ने रंक । काहु की नहीं मानें संक ॥
मूरिख पंडित तप व्रति जती । काजै दया न आवै रती ॥१५६॥
पूरण आव बीत जब जाय । बालक तरुण वृद्ध ने खाय ॥
काल समान बली नहीं कोइ । पकरि पछारत वार न होय ॥१५७॥
स्वर्ग पाताल अनैं भुवि लोक । सरवारथ सिध लौं चोक ॥
आगै नही काल की दौडि । मुकति थान निरभय है ठौर ॥१५८॥

दूहा

तीरथंकर अस चक्रवर्त्ति, कामदेव वलिभद्र ॥
नारायण प्रतिनारायन, तपसी नारद रूद्र ॥१५९॥

काल तणं बसि सब भये, जोधा सुभट सुजांन ।।
सकल लोक इण जीतिया, या सम वली न आंन ।।१६०।।

सोरठा

चक्रवर्त्ति मुनि भेद, भोग सोग सब परहरे ।
धरयो ध्यांन दिढ जोग, सब संसार मन ते तजा ।।१६१

राजा भागीरथ का वर्णन

दूहा

भागीरथ राजा किया, सगर भीम सहु त्याग ।
दिक्षा ली जिणराय पै, मनमें धरि वैराग ।।१६२।।

चौपई

पालै प्रजा भागीरथ भूप । मुकट छत्र सिर बने अनूप ।।
राज करत दिन बीते घने । श्रुतसागर मुनि आये सुने ।।१६३।।
नरपति के मन हरष अपार । चलै जहां मुनि प्रांण अधार ।।
नगरलोक चाले सहु साथ । वनमें ध्यांन धरयौ मुनिनाथ ।।१६४।।
आए निकट वंदना करी । साठि सहस की पुच्छी चरी ।।
किण कारण एकठे मरे । कहो कथा ज्यों संसय टरे ।।१६५।।
मुनि बोले पिछला संबंध । ताथी हुवा करम का बंध ।।
समेद शिखर चाल्यो इक संघ । दंतपुर गांम देख मनरग ।।१६६।।
देखत लोग संघ को हंसै । देखा गांव किसो तहं बसै ।।
कुंभकार वरजै तिह्नं जात । इण ठां गया जीव नो घात ।।१६७।।
बात कही भीमानी नही । गाव माहि देही गज गही ।।
पकड पछारे सगले लोग । मींड मांड सब कीन्है फोक ।।१६८।।
कुंभकार मरि वणिवर भया । तप करि बहुरि राज सुत भया ।।
तप करि फिरि पायो सुरथांन । सो तुं भयो भगीरथ आंन ।।१६९।।
साठि हजार सिघ के जीव । सगर भूप सुत उपजें तीव ।।
जात्रा माहि सब का रह्या ध्यान । राजपुत्र ते हूये आन ।।१७०।।
कारण पाए मुए इक ठोर । अशुभ करम की मिटई न षोर ।।
सुनि भागीरथ कीयो नमस्कार । राज छोड ली दीक्षा सार ।।१७१।।

लंका का राजा महाराक्षस

महाराक्षस लका का भूप । वन क्रीडा का देखन रूप ।।
सकल कुटंब लिया नृप संग । वन उपबन गुह गंभीर उतंग ।।१७२।।

निरमल सरोवर देखे घने । फूल फले कमल अति बने ।।
स्वर्गलोक किन्नर उनहार । रांणी सोमै राज दुवारं ।।१७३।।

भई रयण मुरझाये फूल । भमरा रहे बास में मूल ।।
देखई उपज्यो नृप ने ज्ञान । एके इन्द्री में भ्रमर भुलान ।।१७४।।

पंच इंद्री बसि रहे मलाय । उन जीवांनैं कौंण सहाय ।।
ग्रैसी समझि भयो वैराग । राजरिद्धि सहु परियन त्यान ।।१७५।।

भ्रमर राक्षस

भ्रमर राक्षस ने सौंप्यौ राज । दिक्षा लई मुकति कै काज ।।
संसार परीष्या पेषन किया । भंवर देखि मति श्रायी हिया ।।१७६।।

दूहा

भंमरा वींध्या कमल मे, दये प्रांन ता बीज ।।
राजा क्रीडा अति करही, विषय गणी सब नींच ।।१७७।।

अडिल्ल

मनमें धरि वैराग चित्त चिमक्या धरा ।
इह संसार असार दुख सागर भरा ।।
एक इंद्री कैं विषै प्रांण परिहरि करैं ।
पंच इन्द्री के विषै सेय क्यो निस्तरै ।।१७८।।

चौपई

श्रुतसागर मुनि के पास गमन

राजा सोचै मनमें ग्यांन । श्रुतसागर आये वन थांन ।।
धर्यो ध्यान तप करै अनेक । मन वच काय न डोलै एक ।।१७९।।

तेरह विध चारित्र सौ चित्त । सहैं परीसा बाइस नित्त ।।
अवर अनेक सिष्य ता संग । सहैं परीसा अपने अंग ।।१८०।।

रूप गुणे अति महा प्रवीण । चंद्रकांति देखत अति हीण ।।
माली गया भूप के पास । मुनिवर जोग दिया वनवास ।।१८१।।
ग्यांन तीन अंतरगत बसै । दरसत देखत पातिग नसै ।।
सुनि नरेस मन किया उल्हास । पूजण चले सुगति की आस ।।१८२।।

नगर लोग चले संग बहुत । ततक्षण वन में जाय पहूंत ।।
नमस्कार करि करी डंडोत । वदन कांति ससी की अति जोत ।।१८३।।

चरण प्रक्षालण विनती करैं । कहो धर्म मम संसय हरै ।।
मुनिवर कहै धर्म समुझाय । हिंसा व्रत पालो मन लाय ।।१८४।।

दृष्टि अगोचर गोचर जानि । षटकाया जे आप समान ।।
जांणि बुझ न विराधो कोइ । अनइ देखें जे हिंसा होय ।।१८५।।
पश्चात्ताप करै मन मांहि । मिटै सकल हिरदा की दाह ।।
अनरत विरत दूसरा कह्या । सत्य बचन ते सिव सुख लह्या ।।१८६।।
चोरी लाभ परिहरो सर्व । दान अदत्ता लेय न दर्व ।।
परिग्रह संख्या पालै सील । धर्म निमित्त न कीजे ढील ।।१८७।।
संख्या वस्तु करें परिमांण । सक्तिसमा द्यो चारों दान ।।
वइयावरत करै बहु भांति । अनंतकाय भोजण तजि राति ।।१८८।।
महाराक्षस वीनवै करि गहौ । मेरो भव व्योरास्यों कहो ।।
चारि ग्यान का धारक साध । पूजत हैं प्रांनी की साध ।।१८९।।
कही सकल पूरव भव बात । अंधकार जिम दीप मिटात ।।
पोदनपुर उदयाचल भूप । अरहण श्री राणीज अनूप ।।१९०।।
हेमरथ पुत्र ताहि कै भया । बहुत आनंद दंपति चित्त थया ।।
हितवंत महाजन तिह ठां बसई । माघवी नारि मन उल्हसइ ।।१९१।।
प्रत्यक्षपुत्र है लघु अवतार । रूपलक्षण करि सोभा सार ।।
एक दिवस गरज्यो घनघोर । नृत्य करंतउ देख्ये मोर ।।१९२।।
विद्युत घात मुवा जब मोर । नरपति के जिय उपजी ओर ।।
संसार परिक्षा पेषि तुरंत । घर परियण छोडे बहुभंत ।।१९३।।
श्री मुनि पास दिक्षा लई आय । करी तपस्या मन वच काय ।।
पहुंच्या स्वर्ग लही गति देव । किन्नर बहुत करै ता सेव ।।१९४।।
चई करि उपज्या षेत्र बिदेह । कंचनपुर देखे वर गेह ।।
श्री प्रभाराणी सुन्दरी । ताकै गर्भ आइ थिति करी ।।१९५।।
उदित नाम भया सुकुमार । रूपवंत गुंण लक्षण सार ।।
जोवन समै महा बलबंत । रविप्रताप सोभा बहु भंत ।।१९६।।
मुनिवर का उपसर्ग निवार । धरम बषाण सुण्यौ निरधार ।।
चारण मुनिपै दिक्षा लई । ग्यान ज्योति अन्तर्गत भई ।।१९७।।
असनवेग विद्याधर जहां । उदित मुनि ध्यान धरया तिहां ।।
धनिबिर विद्याधर गमे आकास । हम भूगोचरी पृथ्वी वास ।।१९८।।
मेरे तप का इह फल होइ । विद्याधर गति पाऊं सोइ ।।
देही छोडि ईसांन विमान । छोडि हुवा महा राक्षस आंन ।।१९९।।
अमरराक्षस को दीया राज । भान राक्षस छोटा युवराज ।।
महाराक्षस दिक्षा पद लई । सौधर्म विमान देव पद थई ।।२००।।

विजयारध पर्वत उत्त्वंत । किन्नर गीत नगर निवसंत ।।
श्रीधर जहां रहै सुनरेस । आदित्त स्त्री सोभै बहु भेस ।।२०१।।

विद्युत पुत्री ताकै भई । रूप लक्षण गुण सोभै मई ।।
अमर राक्षस कुं दई विवाह । भोग मगन रस करई उछाह ।।२०२।।

गंधर्व गीत नगर शुभ ठोर । सरीसनाभ सम भूप न और ।।
भारज्या नांम राणी पट धनी । गांधर्ववती पुत्री सोभा बनी ।।२०३।।

भांनराक्षस कौं कन्या दई । क्रीडा भोग रिति मानैं नई ।।
अमर राक्षस के देवराक्षस पुत्र । विजयार्द्ध जीते सहु सत्र ।।२०४।।

भांनराक्षस कै दस सुत भये । पुत्री षट्‌ग्यांन गुन हीये ।।
दसों बसाये दस ही देस । सुरगपुरी सम दीसैं भेस ।।२०५।।

संध्याकार बसाया नगर । सबल मनो लकापुर अगर ।।
मृनाल हंस हीर पुरिग्रौर । जोधपुरि समदपुरि की ठौर ।।२०६।।

देवराक्षस लंकापति राय । मनोवेग गति सोभैं ठाइ ।।
सुप्रभा विवाही असतरी । नदीनाक पुत्र भया सुभ घरी ।।२०७।।

प्रोहनमती विवाही नारि । भीमप्रभ पुत्र भयो अवतार ।।
जोवन समय भयो विवाह । सहस्रत्रियासौं भोग उछाह

भए पुत्र एक सो आठ । वरणत सकल बढैं बहु पाट ।। ।।२०८।।

दूहा

भासकर पुंजर नाम जित, संप्रति कीर्त्त सुग्रीव ।
वृहत्कीर्त्त नंदन सुनंदन, समुद्रसेन हयग्रीव ।।२०९ ।।

चौपई

चंद्रवरत भया महाराव । मेघ धवल ग्रह धवला नाव ।।
नक्षत्र दमन मेघनाह भाव । धवल प्रभु वहु बढतै दाव ।।२१०।।

कीर्तिधवल को सौप्या राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
पाले प्रजा प्रभू कीरति धवल । धरमनीत सुणि वांणी प्रबल ।।२११।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री अजित महातम राक्षस संबंधी ।

विधानक ।।३ ।

चतुर्थ संधि

वानर बंश वर्णन

चौपई

फिर श्रेणिक कीयो परसन्न । बानरबंसी की उत्पन्न ॥
श्री जिनजी की वांणी भई । मन संसय सब की मिट गयी ॥१॥

विजयारध गिर दक्षिन ओर । सुरग लोक सम सोमै ठोर ॥
मेघपुरी नगरी इक नांव । अतेंद्र भूपती को तहां ठांव ॥२॥

मंदिर सघण वणे उच्चंत । उत्तम लोग बसैं गुणवंत ॥
अत्येंद्र राजा अति बली । श्रीपती जग मानें रली ॥३॥

श्रीकंठ पुत्र ताकैं गेह । रूपवंत कंचन सम देह ॥
विद्या पढी भया उर ग्यांन । ता सम तुल्य न पंडित आंन ॥४॥

चौथी देवी पुत्री भई । लोयण मृग कांति शशि लई ॥
सकल रूप जो कहुं समझाइ । सामोद्रिक के जानो भाइ ॥५॥

रतनपुरी पुहपोत्तर भूप । जा घर राणी अधिक सरूप ॥
पद्मोत्तर सुत वाके गेह । लक्षण करि करि सोमै देह ॥६॥

अतेंद्र पास तिण भेजा दूत । विनती आप लिखी सुबहुत ॥
पद्मोत्तर सुरमोरा गुंनी । कन्या देऊ चढाओ मनी ॥७॥

अत्येंद्र पूछया श्रीकठ । करी सगाई लिष दिया संठ ॥
आंनंद भया दुहु भूपती । करैं वधाई जागी रती ॥८॥

यों ही बीत गये दिन घने । लगन काज सुत सौ नृप भने ॥
रचौ सौज करि दीजे व्याह । पुत्र पिता की मानैं नाहिं ॥९॥

कहैंक यासों व्याहुं नहीं । पद्मोत्तर सुनि चिंता थही ॥
मोमैं कहा लगाई खोर । उनैं विचारी मनमे और ॥१०॥

पुहुपोत्तर पद मौत चितवै । निस वासुर हा हा वोलवै ॥
अन्तर्गत मन राखै बैर । दाव वनैं तो मारूं घेर ॥११॥

कन्या की सुन्दरता

बिद्याधर सब गये सुमेर । पूजन चले न लागी देर ॥
पुहपोत्तर की तहां पूतरी । सकल कला गुण लावण भरी ॥१२॥

रूपवंत ज्यों पून्यूं चंद । घटै वधै यह सदा अनत ॥
दीरध नयन श्रवण सों लगे । देख कुरंग वन माहि भगे ॥१३॥

दंत चिमकैं ज्यों हीरों की ज्योति । मस्तक कपोल प्रथ्वी उद्योत ॥
नासा भौंह बनी छबि घनी । वैनी कीर्त्ति न जाये गिनी ॥१४॥

केहरि कटि कदली सम जंघ । भुजा कलाई सुभर अभंग ॥
एडी तलुवा पल्लव भली । गावैं राम मनोहर रली ॥१५॥

द्वादस आभरण सोल श्रृंगार । देखत नर भू खाइ पछार ॥
सीरीकंठनें सुणि के राग । दोन्युं वार्ता करै सराग ॥१६॥

ह्वै विद्याधर इनको देख । पुहपोत्तर की पुत्री पेष ॥
यह ससैं क्यूं लागा वात । सुंणी भणक पुत्री की तात ॥१७॥

पुहपोत्तर वे देख्या आंन । और वही षुटिक हिये मैं जांन ॥
श्रीकंठ का पीछा किया । भाज्या लंका भीतर गया ॥१८॥

श्रीकंठ भगनी पै जाय । आदर भाव किया बहु भाव ॥
पुहपोत्तर साजी सब सैंन । चढ्या कटक दिन तैं भई रैंन ॥१९॥

छाया रहे आकास विमांन । अरु बाजैं गहर निसांन ॥
दसौ दिसा भई मैंभीत । कीर्त्तिधवल मन वाढो चित ॥२०॥

कै इह कोप चढ्या है इंद । अबहो आंण करैगा बुन्द ॥
भेज्या दूत पुहपोत्तर पास । याहि वेग सुध लीज्यो तास ॥२१॥

गयो दूत जहां नाम नरेस । नमस्कार करि कहै उपदेस ॥
तुम भूपति उत्तम कुल भांन । ऐसा भूप नहीं कुहि आन ॥२२॥

सिरीकंठ मूरिख अग्यान । उण न करयो तुमरो सनमांन ॥
वह सेवक तुम परथीपती । वापर कृपा करो भूपती ॥२३॥

वह भी उत्तम कुल का बाल । करो ब्याह तो वात रसाल ॥
चार चिंतवैं भेज्या वसीठ । आया निकट भूप की दीठ ॥२४॥

पूछै राय कहो सत भाव । कौंण काज पठयौ इण ठाव ॥
कहै दुत सुणुं तुम नरेस । चारिवि देवि ने कह्या संदेस ॥२५॥

पद्मोत्तार से मांगी मोह । या जग और न जाउं गोहि ॥
एक छोडि दूजो जो करै । नरक निगोद अधोगति फिरै ॥२६॥

पद्मोत्तार तें जे नर और । तात भ्रात सम जाणों ठौर ॥
अबला विचारै और करम । कैसे रहै त्रिया को धरम ॥२७॥

दासी ह्वै विनऊं कर जोरि । मनकी षुटकै मारूं तोडि ॥
रहस रली सौं किया विवाह । दुहुं कुल हुआ अधिक उछाह ॥२८॥

हिरदा तणां बैर तव तज्या । भई बधाई मत में रज्या ॥
सोना दिया बहुत नरेन्द्र । दोन्यूं और भया आनंद ॥२९॥

भोग मगन सब सुख के साज । दोऊं नगर करैं ते राज ।।
कीर्त्तिधवल श्रीकंठ सौं कहै । लंका के जेते पुर रहै ।।३०।।
जहां कहो सोई द्यु नगर । वैरभाव भाजेंगे सगर ।।
दक्षिण दिसा भीम अति भीम । सघन बसैं सुविराजैं सीम ।।३१।।
उत्तर दिस अस्त सा दीप । मिरगदीप सौचित्र कर दीप ।।
सकल दीप की सोभा कही । श्रीकंठ सुनि मनमैं गही ।।३२।।
पद्मश्री अस्त्रीन बुलाय । दंपति विलसे सुख के भाय ।।
कीर्त्तिधवल के निकसे संग । किषल पर्वत देखिये उत्तंग ।।३३।।

वानर द्वीप

चौदह योजण पर्वत ऊंच । वांनर द्वीप बसै ता षुंच ।।
नील नगर की महिमा घनी । सायर मांइ झांइ अति बनी ।।३४।।
वन उपवन नीली चहुंओर । पंछी करैं हरष सौं सोर ।।
देख श्रीकंठ करै आनंद । कहुं पंछी गुण पढ़ै जिणंद ।।३५।।
बोलै सबद सुहाये बोल । रहस रली सों करैं किलोल ।।
छह रित के फूले फल फूल । बैठक घनी बनी अनुकुल ।।३६।।
मंदिर चित्रकारी सुं वने । कूप वापिका सरोवर घने ।।
जल में कमल विराजै भले । भवर गुंजार करै पहुफले ।।३७।।
जैसे दृग तिय कज्जल भरै । कमल ऊपर मधुकर गुंजरै ।।३८।
बहुरि गिरि चढि देखे देस । मन आनंदित भए नरेस ।।
कपि पकड़ि आणे बहु बांधि । देखे राय नयन सों सांधि ।।३९।।
ए दीसें माणस की भांति । कोंमल रोम वर्ण सुभ गात ।।
हैम सांकल जडाउ पटे । घुंघर बाल सु वानर मढे ।।४०।।
मीठें भोजन नाना भांति । उनह षुवावै संझ्या प्रात ।।
किषल गिर पै आरूढे भूप । सोभा दीषै सकल अनूप ।।४१।।

किषलपुर नगर

चौदह जोजन ऊंचा मेर । वैयालीस जोजन का फेर ।।
किषलपुर नगर ता ऊपर बसैं । वन उपवन सोभा उलसैं ।।४२।।
कंचन कोट रतन के जडित । सुरगपुरी की सोभा हरत ।।
रतनसिला की देहली वणी । नयरी सघण बसैं तिहां घणी ।।४३।।

श्रीकंठ पदमावति तिरी । रूप लक्षण गुण सोभा भरी ॥
कीर्तिधवल लंका का नरेस । दिया श्रीकंठ किषलपुर देस ॥४४॥

राजा राणी भोगवै राज । वन क्रीडा के देखन काज ॥
भद्रसाल बन सोभा और । नंदन वन आनंद की ठौर ॥४५॥

वनक्रीडा सुख देखे भले । दंपति फिर आए घर चले ॥
रूति असाढ सोभै सब भूमि । मेघ घटा चिहुं दिस रही घु मि ॥४६॥

दोन्यु चढे मंदिर सत खने । सीतल पवन ताप ने हरें ॥
इंद्रादिक च्यारौं विध देव । चढें विमांण आपणौं भेव ॥४७॥
ऐरापति पर सोभै इंद्र । चले नंदीस्वर दीप सुरेन्द्र ॥
श्रीकंठ मनमें उल्हास । वंदण निमित्त धरी चित आस ॥४८॥

सब परिवार सेन्यां संग लेइ । साजि विमांण गगन धुनि देइ ॥
मानषोत्तर पर्वत के मध्य । विद्याधर की चली न बुध ॥४९॥

वहुत उपाय किए उस वेर । विद्याधर को लांघै मेर ॥
अपनी निंदा खगपति करै । हीन पुण्य कब हम अवतरैं ॥५०॥

अधिक पुनीत देव गति लही । नंदीश्वर को पूजैं सही ॥
अब दीक्षा ल्यो इण बार । धरिहौं व्रत संयम ना भार ॥५१॥

यदि देहो तजि देवगति धरू । नंदीस्वर की पूजा करू ॥
आपण किया दिगबर साज । बज्रकंठ पुत्र ने दे राज ॥५२॥

बज्रकंठ भोग कै चाल । सुख में बीत गया कछु काल ॥
चारण मुनि का दरसन पाय । पिता बात पूछी तब आय ॥५३॥
चारण ऋषि बोले धरि ध्यान । पूरव भव का करो बखांण ॥
आवीसता नगरी का नांम । वनिक पुत्र द्वै निवसैं ताम ॥५४॥
परिच्छत दुरबुधि दोउं वीर । रूपलक्षण गुण साहस धीर ॥
परिच्छत कं मन उपज्या ग्यान । दुरिबुधि कूं लक्ष्मी का ध्यान ॥५५॥

आप जाय दीक्षा पद लिया । देही छोडि अमर गति गया ॥
दुरबुधि करै सरावग धर्म । दया अंग के जानै मर्म ॥५६॥

मिरगावती स्त्री ता गेह । सिघनी लक्षन ताकी देह ॥
करकस वचन सर्व सो कहै । दया धरम तैं परे ही रहै ॥५७॥
खोटी क्रिया करैं मन लाय । जिनवाणी चित्त को न सुहाय ॥
दुरबुधि समझि संसार सरूप । तजि गेह भया दिगंबर रूप ॥५८॥

मन वच काया साध्या जोग । देव भयो सौधर्म सुर जोग ॥
परिच्छत जीव श्रीकंठ सुभया । दुरबुधि जीव इंद्रपद लीया ॥५९॥

इन्द्र विचारी यह मन मांहि । ए चारित्र दिखाया ताहि ।।
तातैं उत्तम दिक्षा पद लह्या । वज्रकंठ का संसा गया ।।६०।।

इन्द्रीवद कौं दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
इन्द्रप्रभू इन्द्रमति मेर । समंद सभीर रविप्रभ और ।।६१।।

रविप्रभ जोगीस्वर भया । राजभार अमरप्रभ दीया ।।
अमरप्रभ परतापी खरा । या सम तुल्य न कोई नरा ।।६२।।

त्रिकुट राजा लंकापती । ता घर राणी सौभावती ।।
तास गर्भ कन्या गुणवती । रूप लक्षण सोभा बहुवती ।।६३।।

अमरप्रभ पै भेज्या विप्र । नालिपुंग लिख दीया पत्र ।।
गुणवती का मंगलाचार । आवो लंका स्यौ परिवार ।।६४।।

अमरप्रभु मन भया आनंद । वाजित्र बाजै सुख का कंद ।।
रहस रली सुं व्याहण चल्या । वेदी चोक सवारचा भला ।।६५।।

किये चितेरे बहुत अनूप । सकल भांति के मांडे रूप ।।
वन उपवन के रूंख बनाय । कनक कलस चौखूंट धराय ।।६६।।

सुघट त्रिया मिल पूरचा चौंक । कपि के चिह्न किये बहु थोक ।।
आई जान नगर के पास । साज बाज आम्योरणी भास ।।६७।।

वस्त्र आभर्ण रु मोती लाल । दीये तुरंग हस्ती सुषपाल ।।
टीका करि जनवासा दिया । भोजन बहुत जान को किया ।।६८।।

दई ज्यौंणार अति करि सनमांन । फिर आये मंडिप तिहि थांन ।।
सकल विभूत देखिए धरी । अमरप्रभु दृष्टि कपि चिह्नैं परी ।।६९।।

कपि कुं देखि कोप बहु करचा । सकल हिदय भय बहुत भरचा ।।
गुणवती ढिग वैठी आन । अमरप्रभू वोल्या करि मान ।।७०।।

इह तो मंगलचार की वार । बानर किम माडे इस बार ।।
सब के मन मे चिंता भई । दुहुं बिग्या क्या वरण है दई ।।७१।।

ब्रह्मथांन मंत्री था एक । जानें इनकी थापना बिसेष ।।
उनने बात कही समभाय । इह कुल कुशल चाहिए राय ।।७२।।

कुल पूजैं हैं तुम्हारै कपि । श्रीकंठ नै इनांको थपि ।।
तातै चित्र किये इस ठाय । इन दर्शनफल है बहु भाय ।।७३।।

इतनी सुणत क्रोध घट गया । मंगलचार दान बहु दिया ।।
पूछी सब ब्योंरा सूं बात । रोमाचित्त हुवा सव गात ।।७४।।

करि विवाह भए फिरि थान । भोग भगन बहु सुख की खांन ।।
बहुविध सैन्यां लेकर चले । विजयाधर मन साधे भले ।।७५।।

सब राजा नैं मानी आंन । धुजा मांझि कपि के निसांन ।।
कपि के चित्र मुकट में बने । वांनर वंसी प्रगटे घने ।।७६।।

देश साधि सब अपने किये । बहु पुर नगर बसाए नए ।।
कपिकेतु जनमिया कुमार । रूपवंत शशि की उनहार ।।७७।।

जोवन वय श्रीप्रभा नारि । इन्द्री सुख मानें संसारि ।।
आप तात जिण दिक्षा लई । राजविभूति पुत्र ने दई ।।७८।।

पालै प्रजा कपि ध्वज नरेस । प्रतिबल पुत्र भया सुभवेस ।।
आप लिया संयम का भार । प्रतिबल को सौंप्या संसार ।।७९।।

गगन आनंद षेचर आनंद । गिरिनंदन तप सरवर नंद ।।
श्रेयांस जिणवर के समैं । श्रीकंठ किंपपुर गमैं ।।८०।।

तीन सागर बीते जब काल । अमरप्रभ उपज्या भूवाल ।।
वासुपुज्य जिणवर के थांन पूजि चरण आयो नृप वांण ।।८१।।

याहि कुल भूपति बहु भये । काटि करम ऊंची गति गये ।।
वानर वंसी विद्याधर कहे । वरनौं सकल पार को लहै ।।८२।।

महोदधि रवि याही कुल भूप । विद्युतप्रकाम रांणी सुमरूप ।।
और स्त्री बिवाही घनी । पुत्र अठोत्तर सो गुण गुणी ।।८३।।

किंषलपुर का भोगवै राज । वानरकुली फुनिका काज ।।
उत्तिम कुल इनका सुबिनीत । दया धरम सु बहुते प्रीत ।।८४।।

अडिल्ल

राजा भए अनेक नाम कहां लौं कहैं ।
    विद्याधर गुणवंत सकल दुरजन दहै ।।
करी जगत परिजीत आण सगलैं वहै ।
अष्ट करम कुं काटि मुक्ति को पथ गहे ।।८५।।

इति श्री पद्मपुराणे वानर वंसी उत्पत्ति चतुर्थ सधि विधानक

पंचम संधि

चौपई

लंका का राजा विद्युतवेग

विद्युतवेग लंका का धनी । श्रीचंद्रा राणी गुण भरी ।।
नारी तेरण विवाही घणी । ते सुख सोभा जाय न गणी ।।१।।

स्यौं अंतेवर बन में गए । ता वन सोभा देखत भए ।।
वृक्ष ऊपर कपि बैठ्या एक । राणी कुं फल मारथा फेंक ।।२।।
आया निकट बीजुरी देह । बहुरयो चढ्या वृक्ष कै गेह ।।
राय सुण्या रांणी का सोर । खेंच बाण मारथा कपि ठोर ।।३।।
श्रवण मुनी बैठा तप करैं । बानर आय मुनी ढिग परैं ।।
श्री मुनि च्यार ग्यांन का धनी । कपि नें देख दया ऊपनी ।।४।।
कपि करण सुणाये पंच प्रभू नाम । महोदय नांम सुर पैठाम ।।
अवधि विचार एक भव तनी । आई सुरति क्रोध कंपनी ।।५।।
कपि देही तें भया हुं देव । विद्युतवेग स्युं भाष्यो भेव ।।
माया रूपी साजी सैन । जहां तहां कवि करैं कुचैन ।।६।।
विद्युतवेग सोचै मनमांहि । कै षेचर कै भूधर आई ।।
यासों जुध करैं चढि षेत । बांधु सगली सैन समेत ।।७।।
सेन्यां लेकर सनमुष चल्या । बहुंधा वांनर कीया हला ।।
धरती पग चोटी आकास । मुख विकराल भयानक रास ।।८।।
लंबे दांत भयदाई धरें । सूरवीर धीरज नहीं धरै ।।
केई परवत लेय उठाइ । केई विरख उठावै आय ।।९।।
ले ले दौडै एकै वार । मारि मारि कपि करैं पुकार ।।
विद्युतवेग नैं मानीं हार । गया जहां महोदय सुकुमार ।।१०।।
देव विचारथा हिरदय ग्यांन । धरि आये कीजे सनमान ।।
राजास्यौं समझाई बात । मैं वह बंदर मारयां प्रात ।।११।।
साध प्रसाद भया मैं देव । चालो मुनि पै पूछै भेव ।।
राजा देव गए मुनि पास । दई प्रकम्मा पूजी आस ।।१२।।
सुर षेचर दोउ स्तुति करैं । साधु संगति भव सागर तिरैं ।।
देव तणी गति वानर लही । पंच नांम करण तें सही ।।१३।।
जो कोई सेव तुम्हारी करै । मन वच काया दृढ कर धरै ।।
सुगति पंथ सो लेय तुरन्त । तोरै जनम जरा का अन्त ।।१४।।
अब प्रभूजो कहिए कछु धरम । नासैं पाप मिलै पद परम ।।
मुनिवर कहैं धरम का भेद । असुभ करम का हुवा खेद ।।१५।।

मुनि का उपदेश

पंच अणुव्रत श्रावक करैं । महाव्रत जोगीस्वर धरैं ।।
कुगुरु कुदेवां मानैं नहीं ते । उत्तम कुल श्रावक सही ।।१६।।

जे मूरिख कहिए अग्यांन । कुगुरु कुदेवई सेवै जान ।।
मरि कर होवें शूकर स्वांन । खोटी जौंणि भ्रमै बहु आंन ।।१७।।

नीची गति बहु भ्रमता फिरै । कबहुं न ऊंची गति मैं परै ।।
जोनि लाख चौरासी संताप । कबहुं होंइ गोह अरु साप ।।१८।।

भूल न मिथ्या कीजे कोइ । जैन धरम तें सुरपति होइ ।।
सूक्षम भेद कहें समुझाय । फिर पूछे पिछले परजाय ।।१९।।

मुनिवर बोले ग्यांन विचार । बूडत जीव उतारैं पार ।।
कासी देस भील इक रहै । वनमे जाय जीव बहु दहै ।।२०।।

सावत्थी नगरी का नाम । मुजसदत्त वाणिक तिह ठांम ।।
सुजसदत्त उपज्या वैराग । छोडे विषय दोष अरु राग ।।२१।।

जाण्यों इह संसार असार । दिक्षा लई संयम का भार ।।
करि बिहार कासी वन गया । तिहां जाय मुनि जोग जु दियां ।।२२।।

नगर लोक आयो सव जात । मुनिवर दीसैं मैले गात ।।
भील चल्या था करण अहेर । वनमें मुनि देख्या तिह वेर ।।२३।।

पूरव भव का बैर विरोध । मन मांहि बहु आंण्या क्रोध ।।
मुनिवर नें सरसेती हत्या । देही छोडि देवता भया ।।२४।।

मुनिवर भया सौधर्म इन्द्र । सुरग लोक में गया सुरवीन्द्र ।।
मुगत आय लीया अवतार । तडित केस तूं भया कुमार ।।२५।।

भील मुवा नरक गति लही । बहुरवो तिण खोटी गति सही ।।
भ्रम्या जोनि बहुला दुख पाय । अब इह बांदर हुवा आय ।।२६।।

पूरव भव का इह संबंध । रुद्र प्रणांम कुगति का बंध ।।
सुणी बात संसा सब गया । दया भाव अन्तर्गत भया ।।२७।।

सुकेस पुत्र कौं दीया राज । आपणि करयौ मुक्ति को साज ।।
महोदधि किषलपुर धनी । सुरगपुरी की सोभा बनी ।।२८।।

धौल अंबर विद्याधर आय । महोधर वसौ निचण कराय ।।
विनती करै दोय कर जोडि । सुनौं प्रभुजी कहूं बहौरि ।।२९।।

तडतकेस लंका का भूप । दिक्षा लई दिगम्बर रूप ।।
तुझ उसमें थी अधिकी प्रीति । सुकेस पुत्र बालक भयभीत ।।३०।।

लंका का भी साधो काज । जब वह चेतें तब दीज्यौ राज ।।
राजा सुणि बोलेसत भाव । सिघ पुत्र कौं कहा उपाव । ३१।।

जैसा बीज तैसा ज सुभाव । ऊनकूं कहा सिषावैं दाव ।।
राजा मनमें किया विचार । अंतहपुर गया तिही वार ।।३२।।
राणी सगली लई बुलाई । तिणि सूं बात कही समझाय ।।
इह विभूति सुपने की रिध । जाग्या कछु न देखैं सिध ।।३३।।
अबहुं दिक्षा दिढ मुं धरूं । काटि करम भवसायर तरूं ।।
सुणें वयन रोवैं रणवास । जैसे बोलैं बांसरी नाद ।।३४।।
कोकिल कंठ सब बोलें नारि । क्यों जल सरवर रहैं विनपार ।।
तुम बिन हम क्यूं जीवैं राय । दासी होय बिन वैं गहू पाय ३५।।
इह सुख छोडि धरो संन्यास । दिन दिन होइ रूप का नास ।।
जनम अकारथ देखैं कौन । ए सुख परिहर लीजे मौंन ।।३६।।
पचामृत भोजन सुषवास । हूवां नित होइ पराई आस ।।
निरस सरस ले हो आहार । छह रितु सहौ परीसा सार ।।३७।।
तुम सुखीयानें कोमल देह । भूमि पिलंग तजि सोवो गेह ।।
बाईस परीसा दुख की रासि । क्यों भरिहौं पिय बारहू मास ।।३८।।
बलि समझावैं मंत्री आइ । भूपति नें सहु परिजा जाइ ।।
तुम सा राजा पावैं कहा । तुम प्रसाद सकल सुख इहा ।।३९।।
अब तुम राज करो बिश्राम । चौथे आश्रम दिक्षा काम ।।
राजा कहै सुणौं चित लाइ । इन्द्रिय विषय नरक ले जांइ ।।४०।।
पुत्र कलित्र रु राज विभूत । सबै विनासी असी हुंत ।।
स्वारथ रूपी जानहु धंध । मोह करम बसि हुए अंध ।।४१।।
मन वच काय लगाऊं जोग । छांडूं सयल भांति के भोग ।।
प्रतिचन्द्र कुं राजा किया । आपण भेष दिगंबर लिया ।।४२।।
श्रवण मुनीबर के ढिग जाय । दिक्षा लई भये मुनिराय ।।
तप कर उपज्या केवल ज्ञान । धरम प्रकास भया निरवान ।।४३।।
प्रतिचंद्र तहा भोगवै राज । सुख मैं द्वै सुत उपजै काज ।।
किषर कुंवर अंधक दौउ भए । रूपवंत विधनां निरभये ।।४४।।
प्रतिचंद्र ने दीक्षा लई । राज काज दोऊ पुत्र ने दई ।।
दोंऊ भ्राता भोगवैं देस । सुख ही मे नित रहैं नरेस ।।४५।।
विजयार्द्ध रथनूपुर नगर । अश्वनवेग राजा बल अगर ।।
विजयसिंह पुत्र बलवंत । बल पौरुष का नहीं अंत ।।४६।।

आदितपुर नगरी का नाम । विद्यामंदिर राज तिहथान ।।
वेगवती राणी ता गेह । श्रीमाला पुत्री कंचन देह ।।४७।।

श्रीमाला का स्वयंवर

वाके निमित्त स्वयंवर रचा । छत्र सिंहासण बहुते सज्या ।।
देस देस के भूपति आय । बैठे अपनी अपनी ठाय ।।४८।।
राग रंग बाजित्र सुघने । मंडपनल नरपति सब बने ।।
कन्या ने कर माला लई । राय सुमंगला कुंवरि संग भई ।।४९।।
लीन्ही छडी धाइने हाथ । सब राजा का कहै वृत्तान्त ।।
एक एक से चढता भूप । उनका कहां लौं वरनुं रूप ।।५०।।
नाभस तिलक मांतुंड कुंडला । त्रिधासद्य सुदरसन भला ।।
वज्रादरज और वज्राध ।बज्रसिल वज्रपंजर साध ।।५१।।
भांनुकुमार राजा चंद्रान । नूपुरेन्द्र वज्रहंस बलवान ।।
विद्याधर नरपति तिहा घने । नामावली कहा लौं गने ।।५२।।

दूहा

देखे सब राजा आवली, कोई न आया दिष्ट ।।
अपणे मन भूपति सकल, मान भग चित भिष्ट ।।५३।।

चौपई

कन्या नई फिर माला लई । भूमि गोचरी राजा पें गई ।।
राजकुंवर देखे फिरि नैन । किकिद्ध पास गई माला दैन ।।५४।।
माला देई गले मे डाल । विजयसिघ कोप्या भुवाल ।।
वांनर क्यों आये इस ठांव । हमस्यौं करया गर्व का भाव ।।५५।।
इनसौ कहौ जाय फिरि गेह । अबही मारि मिलाउं षेह ।।
राक्षस वसी किससुं कहौ । भागो वेग जो जिया चहौ ।।५६।।
जाउ तुरत वन अतर रहौ । वनचर पै धर राष्यां रहौं ।।
बोले किकंध अरु अंधकुमार । सुकेस कहै क्रोध के भाव ।।५७।।
तुम पंथी हम लंकापती । किकधपुर की सोभा भती ।।
जैसे कौवा उडे आकास । तैसे तुम पंछी वनवास ।।५८।।
बिजैसिध की आज्ञा भई । सेना सकल एकठी थई ।।
कोई छाय रहे असमान । कोई घेर रहै उद्यांन ।।५९।।

द्वार बार घेरे चहुं ओर । भांजि न सकई किस ही ठोर ।।
अजहूं इनको कीजे दूर । घर आए मारें नहीं सूर ।।६०।।
इनकूं इहां ले आया कर्म । मारो अबै गमावो भर्म ।।
किंषध नरेन्द्र की आग्यां पाय । सईन्या सिमिट भई इकठांइ ।।६१।।
विद्या साधी सनमुख भए । धरिणधारी आगैं ह्वै गए ।।
विद्याधर झूझैं आकास । भूमिगोचरी भूमि निवास ।।६२।।
मैंगल सुं मैंगल चोदंत । पैंदल सुं पैंदल झूझंत ।।
जे ते हैं विद्या के बांन । दुहुघां छूटैं मेह समान ।।६३।।
संची तुपक तणी भइ मार । विजयसिंघ घाइया कुमार ।।
अंधक सेती कह्या हुंकार । रे वानर अब डारों मार ।।६४।।
अधक कुंवर गही तरवार । विजयसिंह मारचा तिह बार ।।
विद्याधर कीये भयभीत । सुकेस किकधक अंधक की जीत ।।६५।।
किकर अस्वन वेग पें गया । जयसिंह कुं झुंठा कह्या ।।
राजा मुरिण खाई पछार । सेवक घणे करै उपचार ।।६६।।
सीतल औषधि वीतनवार । बडी बार में हुई संभार ।।
तब कर उठ्या मार ही मार । सेनां चाली सकल अपार ।।६७।।
आदितपुर कौं घेरचा आइ । राक्षस वांनर वंसि न रहाय ।।
मनमें सूर तणें आनन्द । देखै किंनर सूरिज चंद ।।६८।।
चाहुं बिध के देखें देव । श्रीमाला समझावै भेव ।।
तुम हो तीन वहै सेन हैं घनी । जैं तुम छिपोरि कल हनी ।।६९।।
बे फिरि जाहि तब करो विवाह । मेरा वचन मानों नर नाह ।।
अधककुंवर कहै सुनि बैंन । स्यालन देखै मृगपति नैन ।।७०।।
तुम नृप बैठि रहो घर मांहि । सेनां सब मारों पल मांहि ।।
बिद्यामंदिर अस्ववेग सौं कहै । नीत मृजाद तुमौ ते रहै ।।७१।।
जा गल कन्यां डारै माल । सोई कन्यां का भरतार ।
विजयसिंघ ने मांडी राडि । तातै भई उपाधि अपार ।।७२।।
अस्वबेग के हिरदै दाह । पुत्र बैर राखै मन मांह ।।
बोले भूप दिखावो मोहि । मेरा पुत्र उन मारा द्रोह ।।७३।।
क्रोध लहर की उठै तरंग । राक्षस वानर कुं चाहै भंग ।।
अस्ववेग सेन्यां में गया । किकंध राय के सनमुख भया ।।७४।।
वाकूं मोहि दिखावो आंन । मेरा पुत्र हण्यां है जांन ।।
विद्यावाहन किंषधराय । भयो जुध वरन्यु नही जाय ।।७५।।

अंघककुमर भए सांमहि । मारचा पडगें ग्रीवा दही ।।
पड्यो भूंमि तब छूटे प्रांन । किकंधराय तिहां पहूंच्या ग्रांन ।।७६।।
गही सिला परवत की एक । ग्रस्वनवेग कुं मारी फेंक ।।
राजा गिर घोडे तें परचा । सेवक उठाय स्वार तहां करचा ।।७७।।
बडी वेर में भई संभार । घोडे चढया गहैं हथियार ।।
रे वानर अब फिरि तु चेत । आव फेर तुझ मारूं खेत ।।७८।।
मेरा वहया वज्र सरीर । अईसा कौंन जोधा बरवीर ।।
जाका घाव मो उपर चचैं । रण संग्राम नीति कै बचैं ।।७९।।
किकंध राजा ढूंढे भ्रात । झुज्या सुनि कैं कंप्या गात ।।
खाय पछार धरनी पर गिरचा । बड़ी बार में फिर संभरचा ।।८०।।
उंन पापी बालक कौं हया । वाकैं चित्त न आयी दया ।।
वह पहलै जो मारता मोहि । भ्राता दु:ख भया मम द्रोह ।।८१।।
वहोत विलाप करैं तिह बार । सुकेस कही बात सुवार ।।
इसका था इहां लौं सनबंध । मोहि करम दुरगति का बंध ।।८२।।
ग्यांनी उत्तम करैं न सोक । रण जुझै जस होय त्रिलोक ।।
बहुत भांति निवारचा दुख । जो अब बचलो तो पावो सुख ।।८३।।
ग्रस्वनवेग वज्र की देह । सेनां घनी बहुत है तेह ।।
जासु संवर होय न कहुं । चलो वेग तो सुख कौं लहुं ।।८४।।
जीवैंगे तो फिरि कै जुध । चलणे की परकासौ बुध ।।
श्रीमाला करि गुपत विवाह । बैठि विमाण ले चाले ताहि ।।८५।।
मंडलीक पुत्र सहश्र सुसार । उन पाछै दउरा तहैं बार ।।
विद्युतवाह समझावै वात । भागें को पीछा न कीजे तात ।।८६।।
ए इतने सब करैं विचार । वे पहुंचे लंका सुमंझार ।।
लंका किषपुरी का राज । ग्रस्वनवेग का साध्या काज ।।८७।।
रितु सांवन महा रवनीक । बोलैं मोर पपीहा पीक ।।
ग्रस्वनवेग मंदिर पैं चढया । देख्या घनहर मन सुख बढयां ।।८८।।
चल्यो पवन वे पटल फट गये । राजा संसय बहुविध थए ।।
ताहि देख उपज्या वैराग । राजविभूत देत सब त्याग ।।८९।।
सहस्त्रार को दीया राज । ग्रापण किया मुक्ति का साज ।।
श्रवन मुनी पैं दीष्या लई । बारहै विध तप सावैं गुणमई ।।९०।।

नरपति विद्याधर इक दिवस । पुर लंका में कीनु' परवेस ।।
उपसम भाव देस फिरि आइ । सुकेस किकंध का संसा जाइ ।।६१।।
किषंधराय परवत पर गया । श्रीमाला राणी संग भया ।।
किषंधपुर बसाया देस । सुखसौं राज पालै सुनरेस ।।६२।।
दोय पुत्र भए ता गेह । सूर्यरज ग्रक्षरज कंचन देह ।।
पुत्री सूरज कमला भई । कमल जेम सोभा तसु दई ।।६३।।
राजा मेर मेघ के धनी । पंथाणी राणी सु' जोडी बनी ।।
मृगरु दमन पुत्र गुनवंत । रूप लक्षण सोभा सौमंत ।।६४।।
इक दिन कु'वर गया था काम । देखी सूरज कमला नांम ।।
ग्रइ पिता सौं विनती करी । सूरज कमला विवाही तिरी ।।६५।।
राजा मेर किकंध पुर गया । किषध राय सौं विनैवंत भया ।।
प्रभु मो परि कृपा तुम करो । सूरज कमला मम पुत्री बरो ।।६६।।
किषंध राय नें पुत्री दई । लिख्यौ लगन सुबिधाई भई ।।
रहस रली सों हुवा विवाह । क्रीडा गमन बहु तो उछाह ।।६७।।
सुकेस राय इंद्राणी तिरी । करणकु'ड पुर नगरी करी ।।
मंदिर भले सुहावन रूप । छाया सीतल कहीं न धूप ।।६८।।
बाग बगीचे सोभै घने । चैत्याले श्रीजिनवर के बने ।।
नित उठ दरसन पूजा करैं । जिनबाणी हिरदै में धरैं ।।६९।।
ग्रनुक्रम तीन पुत्र ग्रवतरे । रूप लक्षण करि सौभै खरे ।।
प्रथम माली सुमाली ग्रौर । मालिवांन ते सोभै ठोर ।।१००।।
हेमपुर नगर व्यौम भूपती । भोगवती राणी सुभमती ।।
चन्द्रमती पुत्री ग्रवतरी । माली सौं बिवाही सुभ घरी ।।१०१।।
प्रीतंकर राजा प्रीतंकर देस । प्रीतवती राणी गुणवेस ।।
प्रीति पुत्री सुमाली कु' दई । बहुत ग्रादर बधाई भई ।।१०२।।
कनकपुर नगर कनक है देस । कनक नरेस राणी किन्नर वेस ।।
कनकावली पुत्री ता भई । मालीवान कु'वर को दई ।।१०३।।
माली कु'वर पराक्रम धरै । लंका किषधपुर क्रीडा करै ।।
माता पिता कहै समझाय । लंका किषंदपुरी मत जाय ।।१०४।।
पूछै कुवरन सौ विरतांत । किह कारण बरजु' ह्वां जात ।।
पिछली कथा कही सब बात । उठ्या क्रोध रोमखरी गात ।।१०५।।
कहें कि ग्रब लंका मैं जाउं । करि संग्राम लेहु सब ठांउं ।।
तात मात समझावै बैन । निरधात राजा कै बहुतै सैन ।।१०६।।

तुम बालक वै हैं बहुबली । जाणै सकल जुध की गली ॥
वासौं सरभर कैसैं होय । खमां करो समझाउं तोहि ॥१०७॥

माली कंवर कहै सुनि तात । देखिज अबहूं करिहुं प्रात ॥
निरघात भूप कौं मारू ठौर । लंकाराज मैं लेहु बहोर ॥१०८॥

इतनी कहि सेन्या सब लेई । दोन्यु भ्राता संग गुणमई ॥
पिता भया गयंद असवार । विद्या बांन लीया संभार ॥१०९॥

माली राजा द्वारा लंका पर आक्रमण

इह राज किषंदपुर गई । किषदसुरज असवारी हुई ॥
आए सुकेस भूप के पास । सूरवीर मन बहुत उल्हास ॥११०॥
आसि पासि के नरपनि घने । वानै भारी बहुते बने ॥
उडी रयण छाया आकास । घेरी लंका जुध की आस ॥१११॥
वाजे बजैं झुझाउ कर नाद । निरघात राय सब सैंन्य बुलाय ॥
कोप चढा जो को हो बली । महा सुभट मानें मन रली ॥११२॥

नेजा वरछी धनुष तरवार । झुझै सुभट न लागी वार ॥
दंती सों दंती चोंदत । टूटे सूंड मस्तक दहटंत ॥११३॥
निरघात राजा हस्ती पलांण । माली कुंवर पै पहुंच्या आन ॥
मारि खडग रथ डारी तोडि । माली कुंवर संभल्या वहोरि ॥११४॥
लीधो खडग हस्ती पै मारि । गहे दंत चढिया तिह बार ॥
विद्याधर मारया निरधांत । राक्षस वंसी जीते प्रांत ॥११५॥
भाजे विद्याधर के लोग । बहुत उनकै मन बाढा सोग ॥
फेर लिया लंका का राज । भया सकल मनबंछित काज ॥११६॥
वहुरि गये ते विजरभ देस । सहस्रार मान्यां उपदेस ॥
जित तित के जीते भूपाल । फेर वसाए नगर बिसाल ॥११७॥
फेरी आन्यां च्यारू ओर । आये अपने नगर बहोरि ॥
सुकेस किषद ने दीक्षा लई । राज विभूति सु तौंको दई ॥११८॥
राक्षसवंसी लंका का राज । वानर बंसी किषिधपुर साज ॥
विजयारथ रथनूपुर देस । सहस्रार नरपति असेस ॥११९॥
मानु सुंदरी राणी पटधनी । चौंसठ कला रूप अति बनी ॥
सुखमें गरभ भया सुभ घरी । दिन दिन देह दुरबल होइ तिरी ॥१२०॥
नृप पूछै राणी सौं बात । काहे सुन्ध होइ तुझ गात ॥
तुम कौं कौण बात का दुख । जो तुम चाहौं मांनु सुख ॥१२१॥

राणी कहै सुणु प्राणपती । इंद्राणी से सुख चाहो थिति ।।
राजा वचन कहै धरि ग्यांन । हम विद्याधर देव समान ।।१२२।।
पातर आदि गुनी जन घने । नाचैं गावैं सुख सब बनें ।।
नो महीने बीते सुभ घरी । भया पुत्र मानी लीधरी ।।१२३।।
रूप लक्षन ससि की उनहार । इंद्र नाम जनमिया कुमार ।।
ज्यौ दुतिया ससि कांति कौं चढै । ज्यो बालक पल पल में बढै ।।१२४।।
जोवन बसै विवाही नारि । चाली सहस्र किन्नर उनहार ।।
और आठ ब्याही पट धनी । इंद्राणी सम सोभा बनी ।।१२५।।
जोजन एक को उंचो गेह । सुरगपुरी सी सोभा देह ।।
पचीस सहस्र गुनी जन लोग । निरत करै गावैं बहु भोग ।।१२६।।
पच सबद बाजै दिन रयण । तासु सबद सुणि सोभा चैन ।।
हय गय विभव भंडार असेस । मानें सब भूपति आदेस ।।१२७।।

दूहा

सुखमें दिन बीते घने, करैं प्रजा सुख चैन ।
सुखने दुखने देखिये, निस वासर भरि नैंन ।।१२८।।

चौपई

माली भूप लंका का धनी । तिसकी आंन मांनै सब दुनी ।।
देस देस तें आवै भेंट । डरपै भूप न आवै हैठ ।।१२९।।
इंद्रकुमार प्रतापी भया । माली का लोग निकाला दिया ।।
अपने लोग तिहां बैठाय । नरपति मिले इन्द्र सौं आय ।।१३०।।
माली राय बात यह सुनी । भया कोप कापी सब दुनी ।।
विजयारध को दहवट करो । इहे म्हारी धरणी तल धरौं ।।१३१।।
सेन्या सकल लई नृप टेर । चढयो विमान न ल्यायो वेर ।।
रंग रंग के बने विमांन । चले सुभट छाया असमान ।।१३२।।
माली सुमाली सुमालिवांन । सूरज रज अंबर रज जान ।।
और बहुत भूपति संग चले । पहरि आभरण बहुतें भले ।।१३३।।
विजयारध गिरि पहूंचे जाय । दुरजन को मारै अब धाय ।।
भई रयण तिहां उतरे लोग । सुपनां देखि मन बाढा सोग ।।१३४।।
कुरितु तणां देखिया मेह । बिजली देही पडि बहु देह ।।
अगनि जलै धुवां तिहां घनां । रोवै मंजार स्वान सिर धुनां ।।१३५।।

दिसा दाहिनी गदहा पुकार । सूके वृक्ष कौं कवा चुंच मार ।।
सुमाली बडे भ्रात सों कहै । यह सुगुन तैं चिंता दहै ।।१३६।।
अब जो फेर चलो तुम वीर । तौ काहूं कों होय न पीर ।।
हम लंका का भोगवैं राज । जो फिर चलैं तो सुधरैं काज ।।१३७।।
माली बोलैं सुंणि भो भ्रात । जो अब फिरैं तो लज्जा जात ।।
देस देस में हुवा सोर । अब सुंचैतो लागैं षोर ।।१३८।।

और जे सुभट आए हम संग । ते कैसे फिरि हैं करि भंग ।।
डरैं जिको पाछा फिर जाउ । जीवत षेत न छोडुं ठाव ।।१३९।।

इतनी कह करि कीनुं दौर । आस पास तैं माची रौर ।।
देस परगने लूटे घने । सहस्रार राजा इम सुने ।।१४०।।

बोले भूप इंद्र सो कहो । वाका वचन वेग तुम गहो ।।
गये लोग इन्द्र की ठोर । करैं वीनती दो कर जोर ।।१४१।।

माली नांम लंका सुनरेस । चढि कर आया है तुम देस ।।
आस पास के लूटे गांव । घेरा है रथनूपुर ठांव ।।१४२।।

सब विरतांत सुन्यां जब इन्द्र । सूर सुभट मन भया आनद ।।
ज्यौं मंगल माता मयमंद । केहरि छांह देखि भाजत ।।१४३।।

जब लग मोकूं देखै नांहि । तौ लूंवे गरमै मन मांहि ।।
राक्षस वानर मारूं ठोर । पडी जाय लंका में सोर ।।१४४।।

सेन्यां सगली लई बुलाइ । देस देस के नरपति आय ।।
विद्या जेती थी भंडार । सहु वा समय लई संभार ।।१४५।।

सिलह संयोग बांधि हथियार । चले सुभट तिहां लगी न बार ।।
अस्व गयद घने असवार । हस्ति पैं चढि इन्द्र कुमार ।।१४६।।

चामर छत्र महा उद्योत । सूरज मुखी रतन की जोत ।।
सूर सुभट दोऊ दल जुटे । पाछे पगन कोउं नहीं हटै ।।१४७।।

झुझै स्यांम धरम के काज । जिनकौं छत्री धर्म की लाज ।।
मैगल सेती मैगल भिडे । पैंदल सों पैदल जुध करैं ।।१४८।।

माली सुमाली मालवान । पाछे कु पग अहरे जांन ।।
सूरज रज अक्षर रज आइ । राक्षस बंसी भया दिठाइ ।।१४९।।

फिरकै समट संभाले बांन । दुरजन मारि दिये घमसांन ।।
इन्द्रकुमार कोप्या करि तेह । राक्षस बांदर मिलाऊं षेह ।।१५०।।

आप कुंमर तब सनमुख भया । बहुत जुध दोउं भूपति थया ।।
परवत की सिल लई उपार । कउंधा पड़ै जो घनहुए धार ।।१५१।।

दोऊ भूपति मुष्टिका लरै । कातर लोग देख सब डरै ।।
तोउ न मानैं दोउं हार । वांन पत्र लषि मारी डारि ।।१५२।।

तुं वालक अजहू अग्यांन । मानुं कुवर रीस मति ठान ।।
गही कर डारया चक्र फिराय । माली ग्रीव पडी भुवि आय ।।१५३।।

सुमाली मालिवान दोऊ वीर । भाजि गए सब लंका तीर ।।
बैठि बिमान चले बे गेह । सोग लहरि ह्वै इन्द्रन की देह ।।१५४।।

इन्द्र तवै छोडे बहु बांन । ए राक्षस पावैं नहीं जान ।।
मंत्री तवै समझावैं बात । भाग्या कै पीछै कहा जात ।।१५५।।

मंत्री वचन सुणे तिह वार । उनकी छोड दई तलवार ।।
वे पहुंचे लंका में आंन । रांणी रोवै करै बखान ।।१५६।।

माली के गुण वरनै लोग । सब परवार मैं वाढया सोग ।।
सुमाली मालवान भय करै । इंद्र भूप भय चिंता धरै ।।१५७।।

बहोत भाँति समझाया परिवार । गए अलंका पुरी मझार ।।
जीता इन्द्र राजा महाबली । जाचिक वोलै बिरदावली ।।१५८।।

कौतिक देख सराहै दुनी । परियन मांझ बडाई घनी ।।
मात पिता के वंदे पाय । बहुत भांति के विनय कराय ।।१५९।।
आनंद मन हुआ हुल्लास । आन्यां इन्द्र फिरी चहुं पास ।।
चक्र धुजा आदित्या तिरी । ससी पुत्र भया ता घरी ।।१६०।।
लोकपाल इन्द्र का भया । सर्व जीव की पालै दया ।।
पूरव दिसा उद्योतपुर नगर । कांतिमन भूप लोकपाल अगर ।।१६१।।
मेघरथपुर महाबली भूप । परणा नारी महास्वरूप ।।
वरुण नांम पुत्र ता गेह । लोकपाल तीसरा करेह ।।१६२।।
नगर मेघपुर पच्छिम देस । रहै तिहां सूरज नरेस ।।
कनकावली का पुत्र नरसेर । वाकुं थाप्पा मंडारी टेर ।।१६३।।
कांचनपुर पूरब दिसि ओर । वला अगनि नरपति तिह ठौर ।।
श्रीप्रभा राणी पट घनी । चंद्र कर्म पुत्र सुंगुनी ।।१६४।।
नांम धरत असुर सुर मेह । और दस दिगपाल थापेहि ।।
जष्य दीप किन्नर किन्नरा । गंधर्व राग सुनावैं खरा १६५।।

अस्व अस्वनी वईस्वानर । देव समान सब विद्याधर ।।
कौतिक मंगल व्योम विद भूप । आनंदवती रांणी सु अनुप ।।१६६।।
तास कन्यां दोय गर्भमई भई । कोकसी कैकसी गुंणमई ।
वैश्रव राजा के विश्रवा पुत्र । कौकसी दई विवाह संयुक्त ।।१६७।।
वइस्वानर सौ इद्र पै गई । लंका राज बिस्वानर है दई ।।
सुमाली मालिबान अलंका रहें । मन मैं भय दुरजन का रहै ।।१६८।।
सुमाली कै पुत्र इक भया । रूपवंत विद्यानां निरमया ।।
दिन दिन वडा सयाणा भया । बल पौरिष विद्या निरमया ।।१६९।।
श्री जिनवाणी निश्चै धरै । तीन काल सामायिक करै ।।
लंका धुटक राति दिन घनी । छूटा थांन पुरषारथ हनी ।।१७०।।
जो हम अपना देश न लहै । इह चिंता निसि वासर रहै ।।
इह सोच बिजयारध गया । तपसी भेष वनवासी भया ।।१७१।।
विद्या साधी मन वच काय । कैकसी पिता की आग्या पाय ।।
विद्या निमित्त गई सुन्दरी । रूप लक्षण अवला गुण भरी ।।१७२।।
विजयारध पर पहुंती तिहां । रतनश्रवा तप करता तिहा ।।
वाके निकट कैकसी आय । करै रुदन अवला बहु भाय ।।१७३।।
रतनश्रवा बोलै तज मौन । सांची बात कहौ तुम कौन ।।
कै किन्नर कै हो अपछरा । कारण कौन रुदन तै करा ।।१७४।।
कौण दुख व्यापा है तोहि । अब तु वरण सुणावहि मोहि ।।
करूं दूरि तेरो दुख आजि । मन का भेद कहौ सच गाजि ।।१७५।।
व्यौमविद राजा मम तात । आई थी मुनिवर की जात ।।
रतनश्रवा विद्या सिध भई । मनकी इच्छा पूरण थई ।।१७६।।
कह इक नगर वसै इह बार । वस्या नगर सुख हुआ अपार ।।
कैकसी सौ विवाह विध करी । भोग मुगत में बीतै घडी ।।१७७।।
मंदिर सुरगपुरी सम जानि । सेज्या सोभै सुख की वानि ।।
कैकसी मन इच्छा इह भई । होई पुत्र मेरै जै दई ।।१७८।।

तीन स्वप्न

सुख मैं सयन करै ही रयन । सुपन तीन देखे सुख अैन ।।
किंचित रात रही पाछली । एक मुहूरत विरयां भली ।।१७९।।
प्रथम सिंघ गर्जा रव करै । हस्ती हनै बहुत मन धरै ।।
दूजे मैंगल देख्या बली । सरोवर मे वह करता रली ।।१८०।।
कमल उषारि लिया सुख माहि । मानूं मेरे मंदिर जाहि ।।
तीजे देख्यो पूरण चन्द्र । सुपने देख भया आनन्द ।।१८१।।

जागी त्रिया हुआ परभात । पति सों जांय सुणाई बात ।।
सुपिने सांभलि भया उल्हास । विधनां तुम मन पूरवै आस ।।१८२।।

होइसी पुत्र तीन गुणवत । तीन षंड के पति सोभन्त ।।
सुनि प्रिय बचन अधिक सुख पाय । अंचल गांठि दई बहु भाइ ।।१८३।।

प्रथम स्वर्ग तैं सुर इक चया । आइ गर्भ स्थिति वासा लया ।।
मनमैं गर्व करै कैंकसी । प्रिय सु' बचन कहै करि हंसी ।।१८४।।

हम सेवैं श्री जिणके पाय । हम मन रहै क्रोध किहि भाय ।।
दंपति गए मुनिवर के पास । नमसकार करि पूछै तासि ।।१८५।।

स्वामी कहौ धरम समझाय । चित्त हमारा किम गरबाय ।।
बोले मुनिवर ग्यांन बिचार । प्रतिकेशव तुम गर्भ अवतार ।।१८६।।

वासम बली न दूजा और । भूचर षेचर सेवैं कर जोडि ।।
दोय पुत्र होसी ता पछै। केवल पाव मुकति में गमै ।।१८७।।

मुनि वाणी सुनि आया गेह । अदभुत सुख पाया ता गेह ।।
जब बीते पूरे नव मास । पुत्र जनम का भया प्रकास ।।१८८।।

दीन दुखित ने दीना दान । सब ही का राज्या सनमान ।।
बाजै वाजित्र नाना भांति । सबद सुहावने लागे गात ।।१८९।।

रावण का जन्म

दुतिया शशि जु बधै कुमार । रावण रूप रवि तेज अपार ।।
दुजा कुंभकरण सुत भया । चंद्र नखा रूप गुंण धीया ।।१९०।।

तीजा भभीषन हुआ कुमार । मानूं पूनम शशि उनहार ।।
दशानन कुमर महाबलवन्त । इन्द्र भूप खोटे चिह्न जोवंत ।।१९१।।

सुपने मे गज दाबइ आय । जाग्या कछु देखै नहिं राय ।।
दामिन कडकडाय कै गिरै । लोथि आय धरणी पै परै ।।१९२।।

और घणां ह्वै उलकापात । ए चिह्न इन्द्र देखैं दिन रात ।।
कुंमरै इक दिन डबा उघारि । काढ लिया विद्या का हार ।।१९३।।

पहरी तुरत गले मे माल । दरसण सोभण लगे विसाल ।।
इह था कुल विद्या का धरा । पूजा करैं ते छूंते हरा ।।१९४।।

पुंनिवंत पहिरया गल मांहि । पुण्य प्रसाद भय व्यापै नांहि ।।
कैंकेसी सूती महल सत खनै । सेज्या तैं सुख बिलसै अति घने ।।१९५।।

दसानन कुंअर सौवै था पास । वदनदंति जोति परकास ।।
चंद्रमां की सोभा तन कांति । दसन जोति बालक बहु भांति ।।१९६।।

गले हार सहज में डारि । दस सिर सोमै राजकुमार ॥
वैश्रव विद्याधर उणबेर । सेन्यां साथि गगन सब घेर ॥१९७॥

रावण की जिज्ञासा

चले जात हैं अपने थान । बहुत भांति के धुरैं निसांन ॥
दसानन तब पूछी मात । कवण भूप इह किह पुर जात ॥१९८॥
कहां बसै कैसा प्राकर्म । कुछा न्यात कैसा कुल धर्म ॥
इन्द्र भूप बिजयारध धनी । करै सेव राजा वहुधनी ॥१९९॥

माता का उत्तर

वैश्रवा भगनी सुत मोहि । सुणौं पुत्र समझाऊं तोहि ॥
लंका छी अमहारीं आंन । अवण्ह राज करै बलवांन ॥२००॥
घने किये तुम तात उपाव । कछू न वणता देख्या दाव ॥
अब तुम उपजे तीनूं वीर । कब जीतोगे साहस धीर ॥२०१॥
म्हरै मनसा ऐसी रहै । कवण समैं फिर लंका रहै ॥
सुणी वात कोपियो कुमार । हूं लंका जीतूं इह बार ॥२०२॥
सुंणि माता समझावैं बाल । तुम हो सुत लघ वय सुकुमाल ॥
इतनी सुणि परवत पैं कूदे । मारि लात ढाह्या पद पूंद ॥२०३॥
भारी सिला इक लई उठाइ । ताड वृक्ष कर लिया उठाइ ॥
जो अब फैकुं तो पहूंचै लंक । वैश्रव राजा मानै संक ॥२०४॥
विजयार्द्ध गिर उलट कै धरूं । इन्द्र सुधा ले प्रलयल करूं ॥
मात पिता उठ चुंबई सीस । बहुन प्रकारै दई असीस ॥२०५॥
पहिलै विद्या साधउ भली । पीछैं पूरो मन की रली ॥
मात पिता की आग्या लई । तीनूं भाई सब गुण मई ॥२०६॥
नीम बन हुई विद्या की ठाउं । भयदायक नहीं मानुष नाउ ॥
अजगर सिंह देख मन डरै । वा बन में धीरज को धरै ॥२०७॥

विद्या सिद्धि

ये पुनिवंत सिला इकु देखि । बैठा तापस का धरि भेष ॥
धरयौ ध्यान विद्या सिध थई । अन्नदांन प्रथमई लई ॥२०८॥
इच्छा भोजन पावै नीर । है गुन है या विद्या तीर ॥
दूजा ध्यान धरया लउ लाइ । आया यक्ष क्रीडा के भाइ ॥२०९॥

यक्ष द्वारा परीक्षा

देख तीन तपसी बहु रूप । इन सम कोई नांहि सरूप ॥
जक्ष परीक्षा इनकी करै । कैसे ध्यान धीर तन धरै ॥२१०॥

देवांनगा इक चातुर घनी । रूपवंत लावण्य गुनवनी ॥
गावै गीत बजावै बीरण । गई जिहां तापसी तीन ॥२११॥

ताल पखावज दुंदुभी करै । निरत करत मुनि जन मन हरै ॥
कोई निकट बैठि इम कहै । किम बालक देही दुख सहै ॥२१२॥

मन मानैता भुगतो भोग । उछी वय क्यों सहौं वियोग ॥
तुम कारण हम किंनर चई । तुमारी तपस्या पूरण भई ॥२१३॥

जहां तुम चलो चलै तुम साथ । तुम हौ प्रभू अनाथो के नाथ ॥
एह्वै बैठे काठ समान । मनमें कछु वन आवै आंन ॥२१४॥

तब वे किन्नरि वसन उतारि । लपटी इनसों ज्यों गलहार ॥
कोई देह चुटकियां लेइ । कोई पांव दडवडी देइ ॥२१५॥

किन्नरी वहुत दिखाए भाव । इनका ध्यान रह्या थिर ठांव ॥
उनको चित्त न क्यों ही टरै । विलषी भई अप्सरा फिरै ॥२१६॥

आय कही यक्षसों सहु बात । उनका चित्त न चलै किह भांत ॥
आप यक्ष आया उन पास । मांगों वर पुर वो मन आस ॥२१७॥

तोउ न बोले तीनूं वीर । ठाढा कोपै यक्ष शरीर ॥
निज सेन्यां नैं दे उपदेश । सब मिल करो भयानक भेस ॥२१८॥

वेग जाइ तप टारो आज । इनका पूरण होइ न काज ॥
इतनी सुणि वितर सब जाव । दई परीस्या नाना भाति ॥२१९॥

कोई रूप सिंघ का करै । बहुत दहाडैं देख्या मन डरै ॥
कोई रूप सु करिए एव । अजगर भेस धरै वहु देव ॥२२०॥

कोई सर्प होई तन डसैं । तो उनरो मनूं नहुं का खिसैं ॥
वह औरउ सैन्यां करी मलेच्छ । कहै पुहपपुर की मन एच्छ ॥२२१॥
रतनसरवा कुं बाधन चलै । स्यूं कुटंब कहि ल्यावै भले ॥
जो तुम बहुत सूर वीरता धरौ । हमसौं जुध वेग तुम करौ ॥२२२॥
ए तापस वोले नही बोल । ध्यान लहरि में करैं किलोल ॥
ऐसे कह करि आगै चले । माया रूप चिह्न करि भले ॥२२३॥

रतनश्रवा कैकसी के हाथ । भ्राता बाधे उनकै साथ ॥
ले आये विमान मझार । मात पिता वहु करै पुकार ॥२२४॥

तुं दसानन कहिए बलवंत । हमारा होत प्राण का अंत ॥
ए मलेच्छ हम दे अति त्रास । तुमतै टूटै हम संगल पास ॥२२५॥

तू होयगा दस सीश का धणी । एक सीस का थंभयहणी ।।
तुं कहतो प्रथ्वी बसि करौं । झूठ कहत कुछ काज न सरौ ।।२२६।।
जनमतही तु मरि क्यूं न गया । हमरी तोहि न आयी दया ।।
भांन कुंमर तूं असो सुभट । तुझ आगल हम पावैं कष्ट ।।२२७।।
तैं रावल पौरिष कहां गया । तेरै चित्त न आई दया ।।
जो तुम देखो भौंह चढाय । सबै मलेच्छ भसम हो जायं ।।२२८।।
बभीषण सों कहे ए बैन । तुम बैठे हम होंय कुचैन ।।
तेरा नाम भवीषण कहै । दुरजन दुष्ट न पल में दहै ।।२२९।।
तुम देखत हम होई संताप । दुखे पावैं हैं मांई बांप ।।
जो तू हमैं छुडावै नहीं । बल पोरिष तुम हारया सही ।।२३०।।
बहुरि गहै नागी तरवार । दंपति को मारया तिहं बार ।।
सीस काटि कर आगैं धरै । तउव न ध्यांन उनका टरै ।।२३१।।
जे जोगीस्वर राखै ध्यान । निश्चै उपजै केवलज्ञान ।।
जे चाहै संसारी रिध । मनवांछित की पावै सिध ।।२३२।।
धरम जिनेस्वर का दिढ धरैं । सरब जीव की रिछ्या करै ।।
तब जिया पावै मारग मोक्ष । मेटै जन्म जरा का दोष ।।२३३।।
विद्या निमित्त इण निश्चै धरी । विद्या सकल आय कर वरी ।।
दसानन ग्यारह सै विद्या लई । जिनके गुण का पार न कहीं ।।२३४।।
जो विद्या का करो बखान । पठत सुणत कछु अंत न ग्यांन ।।
भांन करन विद्या लही च्यारि । तिनके गुण बहु अगम अपार ।।२३५।।
विद्या चतुर बभीषण लई । बहुत भांति सुखदायक भई ।।
जो वितर आए थे तिहां । ते आभूषण आपै वहां ।।२३६।।
नमस्कार करि सेवें पाय । सब वितर ठाढे भए आय ।।
विजयारध पर्वत्त उतंग । ता ऊपर गिर वण्या सुरंग ।।२३७।।
जहा इनहिव किया प्रवेस । स्वयं प्रभु सु बसाया देस ।।
कंचन कोट रतन मणि जटा । अधिक उतंग चिणाई अटा ।।२३८।।
हथिया पौलि पौलि ढिग करै । कलस परतमा ऊपर ढरै ।।
चैत्यालय जिण प्रतिमा तणे । पूजा करै सामायकुं घणे ।।२३९।।
बहुत लोक तिहां बसै असेस । तीनूं भाई जिहां नरेस ।।
अनुंबर्स पक्ष आया तिण ठाय । नमस्कार कीया बहु भाय ।।२४०।।
मै हुं जख अनुंबसक नांम । आज्ञा द्योसो साऊं काम ।।
जंबूद्वीप में जो कछु कहौ । जब चितवो तब ठाडा रहौं ।।२४१।।

छत्र सिंहासन चामर दई । दियो मुकट सुर रतनां मई ।।
बहुरयौ कथा पुहुपपुर गई । वहुत ग्रानंद बधाई भई ।।२४२।।

सुमाली एवं मालिवान की कथा

इह ग्रलका किषंधपुर सुंनी । वाजैं बाजा गावैं गुंनी ।।
सब परिवार भया ग्रानंद । पूजा कीनी देव जिणंद ।।२४३।।

स्यौं परिवार स्वयंपुर चले । सुमाली मालिवांन दोउ मिले ।।
सूरजरज ग्रंबरजि भूप । वैठि विमान बने जु ग्रनूप ।।२४४।।

परियण युत ग्राये जिण थान । पूजा कोंनी निहचै ग्राण ।।
भई रयण कीयो विश्राम । करई सामायिक ले जिण णाम ।।२४५।।

उत्तर तै रतनश्रवा कैकसी । मिले सुतउसे चिता नसी ।।
च्यारूं पुरुष ग्राए तिह घरी । ग्राए सब परिवार की तिरी ।।२४६।।

ए बालक उठि लागे पाय । उनुं हिये सौ लिये लगाय ।।
कैकसी ने करै डंडोत । उनूं दई ग्रासीस बहूत ।।२४७।।

धन धन गर्भ रतन की खानि । तुभतें बढ़े घणे संतान ।।
पुरुषां सिंघासन बैसाइ । बहुत भात कीनी मनुंहार ।।२४८।।

चउकी कनक षचत मगिलाल । हीरा पनां ग्रवर प्रवाल ।।
तिनपरि वैठे भूपति ग्राय । करै उबटना गंध मिलाय ।।२४९।।

सौंधा ग्रगरजा तेल फुलेल । किस्तुरी सामग्री मेल ।।
नाई सुघड करैं तिहां सेव । पावैं सुख नरपति बहु भेव ।।२५०।।

निरमल जल कंचन के कुंभ । ये सोमैं ज्यौं सुंदर थंभ ।।
ढारैं कलस करैं ग्रसनान । गावैं गुणियण चतुर सुजांण ।।२५१।।

उत्तम धोवती पहरी भली । तिहां मुंवर मानैं बहु रली ।।
इन सरीर में इसीं सुबास । तातैं भवर न मूकैं पास ।।२५२।।

दसानन भांन करण कुंमार । वभीषण सेव करै बहु भाइ ।।
नमस्कार चरणन कौं करै । पुरुषासुख ग्रधिक मन धरै ।।२५३।।

षट रस व्यंजन

भई रसोई व्यंजन भले । स्युं कटुंब जीमण कुं चले ।।
रतन तिवाई सोवन थाल । कंचनभारि गंगाजल घाल ।।२५४।।

घेवर बरफी लडुवा सेत । बहु पकवान परुस्या तेह ।।
षटरस भोजन कीने घने । हरे वपेरे उत्तम बने ।।२५५।।

जीमैं भोजन सब परिवार । बीरा दीनां पान संवार ।।
सिंघासन परि बैठें आय । नगर कितोहल देषैं राय ।।२५६।।

दसानन तब पूछैं बात । माली का कहै विरतांत ।।

दशानन द्वारा लंका राज्य प्राप्ति की इच्छा

किम छोड्या लंका का राज । व्यौरा सकल कहो प्रभू आज ।।२५७।।

पिछली कथा कहो समझाय । सुमाली भया मूरछा भाइ ।।
सबही कंवर करैं उपचार । बड़ी बार में भई संभार ।।२५८।।

अवर कथां कही तिहं वार । फिर कैलासह देवहू दार ।।
पूजा करी श्री भगवंत । सोवन मुनी तिहां महंत ।।२५९।।

नमसकार करि पूछी बात । लंका राज लहै किह भांत ।।
अवधि बिचार कहैं मुनिराय । पोते तीन होंयगे आय ।।२६०।।

बे पावैगा लंका राज । मन बांछित का सुधरै काज ।।
बहु परिवार बढै संतान । उन सब बली न दूजा आन ।।२६१।।

जे कछू कहैं मुनीस्वर जैन । तुमने देषि भया सुष चैन ।।
पुंनि सुं पावैं सुर की रिधि । पुन्यें होवै विद्या सिद्ध ।।२६२।।

पुण्ये भोग भूमि सुष करै । पुण्य राज प्रथ्वी कूं बरै ।।
पुण्य दु:ष दालिद्र सब हरै । पुण्यैं भव सागर जल तिरै ।।२६३।।

पुण्ये पुत्र कलित्र परिवार । पुण्ये लछमी होय अपार ।।
पुण्य विद्या लहै विमान । पून्यैं पावै उत्तम थान ।।२६४।।

पुन्ये दूरिजन लागैं पांव । पुन्य थी सदा सुषदाय ।।
जल थल वन विहंड सहाय । तातै पुन्य करो मन लाय ।।२६५।।

सुणे पुंन्य कीजे सब कोय । मनवांछित फल पावै सोय ।।
सुरगति नर नारकी तिरजंच । पुण्य बिना सुष लहै न रंच ।।२६६।।

इति श्री पद्मपुराणे देशानन उत्पत्ति बिधानक

मन्दोदरी की सुन्दरता

सुरदंतपुर दक्षिण की ओर । दैतनाथ राजा तिहं ठौर ।।
हेमावती राणी पटधनी । मंदोदरी सब गुण मय भनी ।।२६७।।

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहैं । वह घटै बधै या सम नित रहै ।।
किम कविराज कहै मृगन । वई भय दायक सुख की देन ।।२६८।।

क्यो करि कवि कहै वेणी व्याल । इह वह रहै प्रत्यक्ष पताल ।।
क्यो विजयै नासा कीर । ए पंषी ए गुण गंभीर ।।२६९।।

सकल रूप का करूं बखांन । पदमनी की सी सोभा जान ।।
कन्या खेलै ही वह बाल । अचल देषी ताम मुवाल ।।२७०।।

राय देख मन संसै किया । राणी सेती प्रकासित भया ।।
पुत्री भई विवाहन जोग । उत्तम कुल जे नामी लोग ।।२७१।।

विवाह के लिये विचार विमर्श

जहां देखिये कीजे काज । मंत्री मंत्र समारो साज ।।
इन्द्र भूप भूपन सिरमोर । वा सम बली न दूजा और ।।२७२।।

दूजा मंत्री विनती करै । दशानन कुंवर विद्या बहु धरै ।।
उत्तम कुल उजियारा पक्ष । उनकी सकल जगत में पक्ष ।।२७३।।

दिन दिन ह्वं है घणा परताप । उसका जीवै दादा बाप ।।
मंत्री बात सति चित लगी । बुलाए पंडित अरु जोतिगी ।।२७४।।

साधो लगन देख बहु भाति । सब विग्रह होवै उपसांति ।।
जोतिग देखि साधी सुभ घरी । और बहुत सामग्री करी ।।२७५।।

पुहपनगर के लिये प्रस्थान

मंत्री च्यार कन्यां इक संग । और लोग बहुरंग सुरंग ।।
पहुचे पुहपनगर मे जाय । रतनश्रवा तिहा नहि पाय ।।२७६।।

पूछे लोग नगर के घने । भीमपुर नगर रतनश्रव सुने ।।
स्वयंपुर नगर वस्या ता पास । सुख सुं तहां वे करै विलास ।।२७७।।

मंत्री स्वयंपुर नगर कुं चले । वन उपवन मंदिर तिहां घने ।।
उतरे वन जिहां श्री जिनथान । चन्द्रनषा बैठी थी आन ।।२७८।।
जब उनसो वह कन्या मिली । बहुत बात पूछी तसु भली ।।
तू किम एकाकी इण ठाम । कहो कवण अपणों कुल कांम ।।२७९।।

चन्द्रनखा से भेंट

चन्द्रनखा बोली समभाय । दशानन है मेरा भाय ।।
सयल राज पर्वत सुभ ठौर । चन्द्रहास षड्ग की दौर ।।२८०।।

ते विद्या साधन को गया । सात दिवस का वादा दिया ।।
चन्द्रहास षडग नैं पाय । अब आवसी दशानन राय ।।२८१।।
विद्या सिद्ध मन वांछित भई । चन्द्रहास की प्रापति भई ।।

रावण के दर्शन

आया रावण श्री जिन भौंन । साध्या भला महूरत सौंन ।।२८२।।
मंत्रियां आय कियो परिणाम । देख्यो रूप लक्षण गुण धाम ।।
ऊंचे आसन बैठा आय । रवि ज्यों सोभा वपु परताप ।।२८३।।

पूछै जबै दसांनन कुमार । कवण काज आया भो द्वार ।।
स्वर्गगीतपुर दक्षिण देश । दैत्यनाथ तहां बडो नरेश ।।२८४।।

ताके तनया मन्दोदरी । जाम रूप नहीं अपछरी ।।
चन्द्र ललाट पै भौंह कवांन । मृगनयनी लज्या गुंन षान ।।२८५।।

नासा कीर रू सुठट कपोल । उष्ट रंग दंत सहज तंबोल ।।
कुच भुज चरण कमर केहरी । सुघर कलाई सोमैं षरी ।।२८६।।

ऐसी है गुण गण संयुक्त । हंस गमणी नय किरण जुगत्ति ।।
तुं मनि मत्त बहै सुंदरी । लेहु लगन साधो सुभ घरी ।।२८७।।

मन्दोदरी के साथ विवाह

लियो लगन मन रहस्या घनां । स्वयंपुर गए कुटंब मैं भना ।।
आनंद हुआ दोऊ कुल मांझ । वाजे बाजैं वासुर सांझ ।।२८८।।

भले महूरत कियो विवाह । बहुत अडंबर करि उत्साह ।।

भोग भुगति में बीतैं घडी । सुखमाने दंपति तिस घडी ।।२८९।।

दोऊं कोक कला विध करैं । अधिक प्रीत उर माही धरैं ।।
मेघगिर पर्वत ऊपरि वाय । एक जोजन की हैं चउराइ ।।२९०।।

छह हजार नृप की पुत्री । पेलैं सरवर ऊपर खडी।।
बसन उतार करैं असनान । उझकि उझकि सब झांकैं आनि ।।२९१।।

जल उछाल खेलैं सहेलियां । गावैं सरस चउ बोलियां ।।
घाट बाट रखवाला रहै । मारग चलै न सब बट रहै ।।२९२।।

दसानन विद्या सभारि । पहुंतो जाय सरोवर पाल ।।
सगली कन्या रही लजाय । ताकूं देख रही मुरझाय ।।२९३।।

दसानन दोडि ग्रही तसु बांह । संकोचि प्राणि कछु बोली नांहि ।।
सगली ही समझी तिहुं बार । इह निश्चै सब का भरतार ।।२९४।।

एक महुरत भांवरि फिरी । वासमये भूप्रती सब तिरी ।।
कोक कला सब ही परवीन । किनर देखि होय गुण हीन ।।२९५।।

रखवाले ऐसी सुध पाय । कही ग्रमर सुंदसुं जाय ।।
सुनि करि नृप कोप्यो बहु भांति । सेना भेजी चाबै दांत ।।२९६।।

वाकूं मारि करो तुम षेह । दशानन नहीं राषी उस देह ।।
चले सुभट परवत पै गये । छीडे बांण ता सनमुख भए ।।२९७।।

दसानन तबै चढायै भौंह । सब सेन्या भागी सिर नौंय ।।

दशानन की वीरता

नृप सौ जाय जनाई सार । वा सनमुख न चलै हथियार ।।२९८।।

राजा कहै ग्रवर ल्यो सैंन । पकरो वेग दिखावो नैंन ।।
तब सेवक नरपति सो भनै । प्रभू तुम ग्राप चलो तो बनै ।।२९९।।

ग्रमर सुंदर ग्रमर नो वेग । कनक विद्युत प्रभ ग्रवर ग्रनेक ।।
षट्सहस्र भूपति इक ठोर । सेनां का कछू नांही ग्रोर ।।३००।।

चढे विमान चले उस थान । राजसुता देखिया निसांन ।।
पद्मावती ग्रादि जे तिरी । दसानन सुं विनती करी ।।३०१।।

तुम परि चढि ग्राया निश्चै धार । तुम जल मांहि छिपी ग्रसवार ।।
जो तुम जल नें तिर नवि सको । तो सांतिनाथ मंदिर मे लुको ।।३०२।।

विद्या ल्यो तुम ग्रालोपनी । दृष्टि न ग्रावो काहू तणी ।।
जब वे ढूंढ सोध उठि जांय । तब ले चलो ग्रापने ठांव ।।३०३।।

रावण कहै सुनो त्रिय बैंन । मेरा बल तुम देखी नयन ।।
मैं तो गरुड वे सर्प समांन । एको सनमुख झुझै ग्रान ।।३०४।।

सिंह एक हस्ती सैंस्याठ । भाजै तुरत मयंगल ठाठ ।।
मैं तो बली सिंघ सौंवाघि । मोकुं सकै कौन नर साधि ।।३०५।।

सब नै पकडि करूं दहै वाट । बंध करो सब ग्रोघट घाट ।।
पद्मावती प्रमुख इम कहै । पिता भ्रात मुझ जीवत रहैं ।।३०६।।

ग्रवर निसंष करो ग्रसिघाउ । उनकों तुम लीजियो बचाउ ।।
दसानन सुणुं तुम तिरी । उण मारन की प्रतिग्या करी ।।३०७।।

सब दल निकट पहुंतो आय । रावण भी तत सन्मुख जाय ।।
बैसि विमान गगन में गया । बहुत सुभट बिद्या के किया ।।३०८।।

चन्द्रहास तब खडग संभाल । मुराछावंत किये ततकाल ।।
नागपासनी विद्या डारि । बांधे सब नरपति तिहं बार ।।३०९।।

मानभंग सब ही नृप किये । हार मांन विनती कर नये ।।
दया आण छोडे सब राय । कन्यां ब्याहों मन धर भाव ।।३१०।।

सकल त्रिया ले घर कौं चले । भांन भभीषन सन्मुख मिले ।।
मंदिर अंतेवरह संवारि । न्यारी न्यारी राषी नारि ।।३११।।

कुंभपुर नगर सहोदर भूप । ता घर राणी महा स्वरूप ।।
तडित माला ताकै सुता । भांनकुंवर ब्याही शभमता ।।३१२।।

कुंभपुर तणां सुण्यां जब गीत । कुंभकरण नामैं सु पुनीत ।।
द्योतपुर विसुध सुकमल नरेश । मदनमाला नारी गुणवेस ।।३१३।।

सरस्वती पुत्री गुणवंत । रूपवंत लावण्य बुधिवन्त ।।
भभीषण सौं किया विवाह । भोग भुगत में करैं उछाह ।।३१४।।

मंदोदरी गर्भ स्थिति करी । इन्द्रजीत जन्म्यां शुभ घडी ।।
नानां कै ग्रह बधैं कुमार । देखत मोह करैं नरनारि ।।३१५।।

दूजे मेघनाद अवतारि । रूपवंत ससि की उनहारि ।।

कुंभकरण द्वारा उपद्रव

कुंभकरण लंका ढिग जाय । आस पासि सब लूट ले जाय ।।३१६।।
बहुत सखी आनी सुंदरी । भोग मगन मानैं मन रली ।।
इसी बात तब वैश्रव सुनी । आई लहर क्रोध कंपनी ।।३१७।।

वैश्रवण राजा के दूत का सुमाली के दरबार में जाना

लिख्या पट्ट दूत कर दिया । स्वयंप्रभ नगर सुमाली पैं गया ।।
सोभा दूत नगर की देख । देखी स्वर्गपुरी सुविवेक ।।३१८।।

जाय पहुंतो राजैं द्वार । सुमाली सुरत सुणी तिहबार ।।
राजा पासैं कोक वसीठ । लिया लेख वांच्या नृप दीठ ।।३१९।।

नमस्कार करि बोलैं दूत । निरभय जंपै वयण बहुत ।।
तुम इन्द्र ते बचे थे भाग । पातालपुरी छिपे थे लाग ।।३२०।।

दयानिमित्त दिये तुम छोड । अबके पकडे मारउ ठौर ।।
तुमने बुधि मारण की भई । तुमैं उपाधि उपाई नई ।।३२१।।

सोवत केहरि दिया जगाइ । वा आगें जीवत क्यूं जाय ।।
जों दादुर अहिमुख ते छूटि । फिर करिहै बांबी की घूंटि ।।३२२।।

ऐसे तुम निबसों इस ठौर । सुनें इन्द्र अब मारै ठौरि ।।
जो तुम अपनौ जीवत चहौ । तो अपणे मारग में रहौ ।।३२३।।

कुंभकरण अब किया बिगार । वानै बांधियो अब मार ।।
जो उस सीष हुवै इस बार । बहुरन करै अनीति लगार ।।३२४।।

जो नहीं करै तुमारी कान । तो उस बांधि भेज द्यो आनि ।।
हुं तिस कैसा लगाउं हाथ । बहुरन चूक करै किण साथ ।।३२५।।

दशानन का कोप

सांभल इतनी दसानन कोप । जैसें गरज करै घटाटोप ।।
कहै राय सुन रे अज्ञान । काक हंस होवै किह वान ।।३२६।।

मानुष इन्द्र होवै किण भांति । हम सेवक है उसका णाति ।।
जो मंगल गरजै मन माहिं । देषै नहिं केहर की छांह ।।३२७।।

तुझ पतंग डोला उणहार । कहां गरुड तापति करै मार ।।
ज्यौं पतंग ते सेवै भूप । देखत मरै अगनि का रूप ।।३२८।।

तैसे इन्द्र और वैश्रवांन । जे वै बेग मिलैं मुझ आन ।।
तो वानै छोडूं जीवता । नांतर वलिद्यउ दशदेवता ।।३२९।।

दूत राय कै सनमुख खरा । चंद्रहास खडग कर धरा ।।
कंपी धरती कंप्या सूर । भभीषण उठ कहै हजूर ।।३३०।।

इस ऊपर क्या कोपो वीर । यह किंकर आया तुम तीर ।।
कहे आपणें पति के बैंन । या कुं मारचा वात न अैन ।।३३१।।

अर याकों जो मारो डार । तो अपजस होवै संसार ।।
इतनी सुनत भया मन सांत । समझाया जब लहुडै भ्रात ।।३३२।।

धका दे पुर बांहर किया । वसीठ का भर आया हीया ।।
पगडी बांध लंका में गया । सब ब्यौरा वैश्रवन सो कह्या ।।३३३।।

वे तुमनें पतंग सम गिनें । उनकी बात कहत न बने ।।
दसानन दस सिर का धनी । अपनै मन राषै अति मनी ।।३३४।।

वीस भुजा दीसैं बलवंत । विद्या घणी करै परचंड ।।

वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध

बैंश्रवन कोप्या भूपाल । ज्यों दिया तेल अगन में डाल ।।३३५।।

सुरस सुभट सब लिये बुला । मरू बाजे अरु करनाइ ।।
देश देश में भेज्या उकील । आया सुभट न लागी ढील ।।३३६।।

उडी धूल छायो आकास । अंधकार दीसै चहूं पास ।।
चढि विमांण दोड तिंह बार । स्वयं प्रभु नगर घेरचा तिंह बार ।।३३७।।

दशमुख विद्या लई संभाल । दोन्यूं भाई लये हंकार ।।
रतनसूर पलांन तुरंग । भले सुभट लीये सब संघ ।।३३८।।

दुहूं तरफ वानैंती भूप । सनमुख भये जुध के रूप ।।
गहि तरवार चक्र कर लिया । बरछी हाथ ढाल मुख दीयां ।।३३९।।

सूर सुभट दोऊं धा लरैं मूंड तूटि धरनी परि पडैं ।।
सर छूटे वांणव की मार । मानों वर्षै घन हर धार ।।३४०।।

दसानन निज करै मनमांहि । सेना झूझ मुई मनमांहि ।।
केहरि रथ बैठा तब आय । दुरजन दलन भया संताय ।।३४१।।

गदा चक्र ले खडग चंद्रहासि । दस सिर बीस भुजा हैं तास ।।
धस्या कटक में मारे घने । जक्षनाथ आया साम्हने ।।३४२।।

दोऊ लरैं जुध कं हेत । जक्षनाथ तब राख्यो खेत ।।
तब वैश्रवन सनमुख भया । वैश्रवन चित्त ऊपजी दया ।।३४३।।

युद्ध से वैराग्य

ध्रग ध्रग ए राज ध्रग मेदिनी । विषय बेल के फल ए दुनी ।।
पिता पुत्र भ्राता थी लरैं । रुद्रध्यांन करि नरकौं पडैं ।।३४४।।

इह मो भाई मोसो के पूत । याकूं मारे पाप बहुत ।।
इण प्रणांम करि ठाढा भया । दसानन रुद्र भाव सौं गया ।।३४५।।

वैश्रवण बोलै तिहं बार । जाणौं ए संसार असार ।।
किसका राज कौण की मही । सुख दुख दाता कोई नहीं ।।३४६।।
माया मोहि में फिरहि अग्यांन । क्रोध मान वसि भया अग्यांन ।।
तृष्णा लोभ बहु दुःख का मूल । तिनमें रह्या चिदानंदि भूलि ।।३४७।।

राज करत उपजैं बहु पाप । मरि करि परिभव लहै संताप ।।
बली दसानन कहै विचार । हिवणा कवण ग्यांन को सार ।।३४८।।

जइ तुं जीव की रिक्षा करै । जती होय तो काल न टरै ॥
जो तू अपने जीव तें डरै । तो तु सेव हमारी करै ॥३४९॥
लंका हम कूं तू जो देह । तो इह बचै तुम्हारी देह ॥

दसानन द्वारा युद्ध करना

जो कछु बल पौरष मन धरौ । तो संभालि फिरि हमसों लरौ ॥३५०॥
इतनी सुनत गहै हथियार । सनमुख ह्वं करि माडी रार ॥
दसानन गदा लीन्ही हाथ । रथ फेरचा तब लंका नाथ ॥३५१॥
धनदत्त विद्याधर आया दौडि । गदा चक्र वाणौ की भौडि ॥
दसानन फिरि कीने घाउ । दसानन बज्र कीया दाउ ॥३५२॥
विद्याधर नै सिर सौं हया । रथ तें गिरथा पुत्र ले गया ॥
वैद्य बुलायो कीया जतन । घाव सिबातै कहा कठिन ॥३५३॥
सेवा करैं पुत्र सब आय । सेवै घाव अरु मलम लगाय ॥
वैश्रवनें देखैं चहुं ओर । पडी लोथ ही सगली ठौर ॥३५४॥
सेन्या सकल का भया सहार । मन वच क्रम छौडयौ अहंकार ॥
उपसम भाव उरमाही धरैं । जिरणवर चरण सरण सभरैं ॥३५५॥
या संसार अनन्त कछु नाहि । राजभोग जिम बादल छाह ॥
जिस कारण वाधे सहू पाप । चहुंगति मांहि सौहै संताप ॥३५६॥
इन्द्री सुख के कारण जीव । बहु अपराध चढावै ग्रीव ॥
बिना काज इतना जिय मरै । किये करम टारे नहीं टरैं ॥३५७॥

वैश्रवन द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण

लका राज दसानन दिया । वैश्रवन भेष दिगंबर लिया ॥
बारह विध तप उत्तम ध्यान । तेरह विध चारित्र विनांण ॥३५८॥
तन बाईस परिसा सहै । अष्ट करम छिनमांही दहै ॥
सारित रुद्र ध्यान करि दूरि । धरम सकल चित राषै पूरि ॥३५९॥
केवलग्यांन भया तिह घडी । सुरलोकातिक महिमां करी ॥
काटि कर्म पहुंच्या निरवान । पायो सिवथानक कल्यांन ॥३६०॥

सुमाली द्वारा पुनः लंका की प्राप्ति

सुमाली बैठा लंका राज । भया सकल बांछित काज ॥
ए सब कंवर करै आनंद । समरण पूजा करैं जिरणंद ॥३६१॥

दसानन विमान इक रच्या । नग तिरणै उणहारै संध्या ।।
मदिर कनक मई सब किये । बंदनमाल रतन मय हिये ।।३६२।।

छत्र सिंहासरण चामर ढरै । सब कुटंब संग लेकर चलै ।।
भ ंन कु ंमर शुभ रच्या विमांन । भभीषण है सवारचा ग्रांन ।।३६३।।

चढै विमांन अपणे आपणै । दक्षिण दिस नृप साथे घनै ।।
देस देस के भूपति मिले । आंण मनाय विजयारध चले ।।३६४।।

मारिग मांहि पूजि सुमेर । चैत्याले देखे बहु फेर ।।
ऊपर धुजा बहो फहराय । रतनबिंब जिण का तिण ठाय ।।३६५।।

सुमाली सेती करै प्रसन्न । दोउ कर जोडि बीनवै दशानन ।।
इण नगरी का भाषो नाम । चैत्यालै कब ते इस ठांम ।।३६६।।

सुमाली भूपति व्योरा कहै । हरिषेण चक्री छहखंड लहै ।।
उन श्री जिनके मंदिर किये । छत्री कलस रतन जड दिये ।।३६७।।

हरिषेण चक्रवर्त्ति की कथा

हरषेन की सुनु अब बात । उण जिण भवण किये किण भांत ।।
कपिला नगरी सिंहध्वज राय । विप्रा राणी सवै जिण पाय ।।३६८।।

ताके गर्भ भया हरषेण । वाकै भए हुआ सुख चैन ।।
राणी दस लक्षण व्रत करै । पुन्यौं दिन चाहै रथ फिरै ।।३६९।।

लक्ष्मी सोकि पति सौ बीनवै । मिथ्या धरम कुदेवै नवै ।।
मेरा रथ पहलै नीकलै । ता पाछै वाका रथ चलै ।।३७०।।

राणी के मन व्यापा सोग । छोडे अन्नपान रस भोग ।।
हरिषेण माता ढिग गया । सब व्रतांत रथ का पूछिया ।।३७१।।

तुम हो क्यों माता अग्रामणी । रथ पूजा सामग्री वणी ।।
कही पुत्रस्यौं सब समझाय । सुनि हरिषेन पसीनी काय ३७२।।

जो अब कहौ पिता सौ बैन । बधै उपाधिर होय कुचैन ।।
उठ्या कु ंमर गया उद्यान । सब वन दीसै अति भय वांन ।।३७३।।

अजगर सर्प सिंह तिहां रहैं । कोई मनुष तहां भूलि न जहै ।।
पुण्यवंत चित भय नवि धरै । वनमें कुमर अकेला फिरै ।।३७४।।

गिरि ऊपरि संन्यासी रहै । स्यों कुटंब भेष तप गहै ।।
पंच अगनि तिहां साधै घने । रूपवती पुत्री तिह तने ।।३७५।।

नीचि झांकि देख्यो हरिषेन । भया दुहां का चारौं नैन ।।
देखि कुमर गिरि ऊपर जाय । तपसी याहि कुंवर जे आय ।।३७६।।

इह उनका वरज्या नहीं रहै । गिरि ऊपरि का मारग गहै ।।
तब वे कोप उठे तापसी । आव गहि आवैं धसमसी ।।३७७।।

कन्या देखें दृष्टि पसार । तब बोली माता बच सार ।।
हम इम सुण्यां साधु मुख बैण । तू पटराणी व्याही हरिषेण ।।३७८।।

तू देखें परदेसी ऊठि । निज तन कहा लगावै पीटि ।।
तब बोले हरिषेण कुमार । अतिथन पैं क्या गहुं हथियार ।।३७९।।

परवत छोडि चल्यो वन मांहि । मनमें चित वा सुर सांझि ।।
वन फल खाय वन ही में रहै । रात दिवस दारुण दुख सहै ।।३८०।।

फूल पांन सोवैं सांथरैं । निस वितीत होवैं इण परैं ।।
इस विजोग तैं कछु न सुहाय । प्रांनी प्राण बिना दुख पाइ ।।३८१।।

मन मे ऐसी निश्चय करी । माता दुख बहुरि अस्तरी ।।
जब छह षंड का पाउं राज । जिणवर भुवण सवारौं राज ।।३८२।।

ऐसी चितत सिंघ तट गया । नदी तीर तिह ठाढा गया ।।
तिहां नारि देखै सब घरी । गोरी बाल तरुणी गुण भरी ।।३८३।।

प्रौढा विरधा बहुत सुजांन । भ्रमी स्वरूप देख इक तांन ।।
नयनह देखें रूप अथाय । सिथल भयी निज घर न सुहाय ।।३८४।।

हस्ती एक बहुत मद भरचा । पटा चुवै भय दायक परा ।।
महावंत मंगल पर चढचा । चग्बी भोई अवरछह गढचा ।।३८५।।

घेरचा जांहि चले चिहु ओर । सारे नगर मचाई रोर ।।
आवत देखिर कहै कुमार । सें महावत हाथी नें टालि ।।३८६।।

महावत कहै परदेसी सुनौं । मंगल मतवालो है घनों ।।
आंकुस गिणें न मानें काणि । यहां नहीं फिरैं हमारे पांण ।।३८७।।

किम करि यों का महरा फिरैं । तु ह्यांथें अलगो क्युं न टरैं ।।
साम्है गज पाछैं है नदी । कहां जाउं दोन्युं विध बदी ।।३८८।।

सकल नारि देखै विललाइ । महावत गज ले पहुंच्या आय ।।
तब हरिषेण धीरज बहु दिया । तुम कछु भय चित नाणउ तिया ।।३८९।।

बोले कुमर रे समझ गंवार । हाथी सहित तुझ मारू डारि ।।
कहै महावत तुझ लाग्या काल । दूरि होवै ना मूढ गंवारि ।।३९०।।

सांभल सबद कोप्यो सुकुमार । हस्ती दंत गहे तिण बार ।।
लिये उषारि मस्तग सौं हनै । भाज्यो बिलबिलाय गज मनै ।।३९१।।

एक दई महावत कै लात । जाणै करी सत्रु की घात ।।
निरमद किया महामयमंत । राजा सुधि लई बलवंत ।।३९२।।

सिंहराज भेजे सब लोग । करो महोछव कंवर संजोग ।।
बहुत करी विनती मनुहार । भली भांति ल्यावो हम द्वार ।।३९३।।

आय कुंवर कै लागे पाय । चलिये प्रभू बुलावै राय ।।
हस्ती ऊपर चढयो कुमार । बाजै प्रतिबाजे तिह बार ।।३९४।।

छाय बाजार सवराई गली । घरि घरि कामणि गावैं रली ।।
सिंह भूय भेटया उर लाय । रूप देखि अति हरष्यो राय ।।३९५।।

निजपुत्री ब्याही तिंह घरी । ताकी साथि कन्या सौ वरी ।।
इक दिन बात निमित्तक भनें । इस कन्यावर हस्ती हनैं ।।३९६।।

भोग भोगवै सुख सेझ मझार । नागवती चित करी कुमार ।।
कुंवर भणै कब बीतै रयण । चलों बेग नागवती लैण ।।३९७ ।

इम चितवन्ता आई नींद । परयो सेज पर जांणि गयंद ।।
बेगवती विद्याधर आय । कुंवर सोवतो लियो उठाय ।।३९८।।

धर विमान लेचल्या आकास । बेगवती मन करै उल्हास ।।
जाग्यो कुंवर अचुंभय भयो । देख त्रिया कर सो कर गह्यो ।।३९९।।

तूं छै कवण कहो सत भाव । किह कारण तें लिया उठाइ ।।
बेगवती बोली नहीं बात । कुंवर बिचारै घालुं घात ।।४००।।

बेगवती कंपी तिहंबार । हिवै मुनें जो डारै मार ।।
बहु करै वीनती आपणै । हुं आई कारज तुम तणै ।।४०१।।

जो तुमही विणासत हो मोय । तो सब कारण विणसैं तोहि ।।
सुरज उदयपुर नगर सुभथांन । सक्रचाप राजा जिम भांन ।।४०२।।

बधुमती राणी पट धनी । जै चंद्रा पुत्री ता तणी ।।
लिख दीने बहु षंड के भूप । कन्यां निजर न आण्यां रूप ।।४०३।।

तुमारा चित्र सीस धरि लिया । ता कारण मैं तुम हर लिया ।।
चलो बेग तुम करहु विवाह । मिटैं सकल हिरदै के दाह ।।४०४।।

सुरज उदयपुर में तब गये । राजा पास बधावा गये ।।
सुभ लगनें व्याही सुंदरी । भोग मगन में बीतैं घड़ी ।।४०५।।

गंगाधर्म महींदर भूप । दोऊं भए क्रोध के रूप ।।
इन परदेसी नें कन्या दई । हमारी उसनें काण न लई ।।४०६।।

सेन्या ले चल दौडे सूर । विद्याधर विद्या भरपूर ।।
सुरज उदयपुर घेरया आय । हरिषेण सु कहै समुझाय ।।४०७।।

तुम ग्रह रहौ हम जाहैं लरन । तुम पाहुणा न होवैं मरण ।।
तब हंसि करि बोले हरिषेन । तुम घरि बैठि करो सुखचैन ।।४०८।।

हम वैरी स्युं करि है युद्ध । अपणां मन तुम राखो सुधि ।।
सैन साथ ले मुहमल भए । सूरवीर तहां जुझ बहु भए ।।४०९।।

दारुण जुध भया भैभीत । हरिषेन की भई तब जीत ।।
जीत्या सत्रु भया आनंद । बाजे बजे महा सुखकंद ।।४१०।।

आयुधशाला कारण भया । चक्र सुदर्शन पाया नया ।।
पूजा करि सुदरसन बंदि । चल्या चक्र जीते छह षंड ।।४११।।

तब आए तापस की पुरी । बारह जोयण सेन्या परी ।।
सहु तापस आये तिह बार । आसीरवाद दे बारंबार ।।४१२।।

तब हरषेन कहै हंसि बात । में हुं वह जो तुम वरजात ।।
तपसी जांणि दया उर धरी । षिमा करी उन बाही घरी ।।४१३।।

तपसी कहैं तुम हो धरमिष्ट । पुण्यवंत क्युं होय न कष्ट ।।
वन विहंड में पुण्य सहाय । मन वांछित सुख उपजै आय ।।४१४।।

पुण्य बधै लक्ष्मी परिवार । पुण्यै भोग लहै संसार ।।
तुम बलवंत अति महापुनीत । तुमतैं कौण सकै नर जीत ।।४१५।।

सब तपस्यां मिल अस्तुति करी । ब्याही नागवती पुत्तरी ।।
पहुंते आय नगर कंपिला । कंठा कंपण परियण मिला ।।४१६।।

मात पिता के बंदे पाय । रथ चलाइया श्री जिनराइ ।।
भुंजै राज करै आनंद । ठोर ठोर देहुरा जिणंद ।।४१७।।

राज करत दिन बीते घने । एक दिवस एक कारण बने ॥
चढि मंदिर देखें वन भाव । देखे हिरण जुगल इक ठांड ॥४१८॥

सुरत रीत वे बन में फिरैं । विद्युत पात तें दीऊ मरैं ॥
ताहि निरख जाग्यो मन ग्यांन । कालचक्र है पवन समांन ॥४१९॥

खिण मैं व्यापै करै न ढील । मोह जिण राष्यउ कील ॥
इह संसार जल बुदबुद प्राय । पल पल आव घटत ही जाव ॥४२०॥

हय गय विभव अर्थ भंडार । पुत्र कलित्र मित्र परिवार ॥
सबै बिनस्वर थिर नही कोय । संपई तणां विछोहा होय ॥४२१॥

संसार परिक्षा परिषन किया । राजरिद्ध तजि संयम लिया ॥
करम काटि पंचम गति लई । हरिषेण कथा संपूरण भई ॥४२२॥

दोहा

सुनी कथा हरिषेण की, मनमें भयो आनंद ॥
दशानन को संशय मिटयौ, पूजे देव जिणंद ॥४२३॥

चौपई

दशानन द्वारा जिन पूजा

जिनवर भवन में उतरे जाय । प्रणपति करी दशानन राय ॥
आठ दरब स्युं पूजा करी । जनम सफल मान्यौ तिह घरी ॥४२४॥

वहां तैं उठि समेदगिरि गये । रैंण भई आश्रम तिह लये ॥
हसती एक महामयमंत । ढारह फोरत गरज करंत ॥४२५॥

लोक देख होवें भयवंत । दसानन चित सोच करंत ॥
कै कोई दुरजन है इह बार । आया हमसों करिबा रार ॥४२६॥

कै वैश्रवन क्रोध संभाल । यूद्ध करण आया इह काल ॥
व्हां सेती उठि लीनी सुद्ध । हाथी देखि विचारी बुद्धि ॥४२७॥

कुसुमादिक विमाण परि बैठि । आपण जोवै हस्ती हेठ ॥
धनुष सात है उदर गयंद । दस धनुष लंबा वपु छंद ॥४२८॥

नव धनुष ऊंचा गजराय । ऐरापति साम राषैं भाव ॥
दसानन उठि ऊभा थया । निकट कर्ण के संख बजाय ॥४२९॥

संख सब्द गिरिवर गिरिपडै । धरती कंपी जलहर डरै ॥
हस्ती भागो सांकल तोडि । दसों दिसा में मांची रोर ॥४३०॥

भई झंझा की रोमावलि खडी । हस्ती कै जिय थलभल पड़ी ।।
तबै गयंद भाज्यौ चिघार । दशानन चरण गह्या तिहंवार ।।४३१।।

फैंक बगाया धरती पड्या । मानु अंजनगिरि गिर पडया ।।
पकडि दांत झकझोरा घन्या । बज्रमुष्टि कर ताकूं हन्या ।।४३२।।

निरमद कीया अजा समान । सुख पाया कुटंब जन आंन ।।
पोह् फाटी रु भया परभात । गजपलाण मार कर जात ।।४३३।।

तब इक किंकर पहुता आइ । लोटै धरा सिर पाग बगाय ।।
दसानन तिहां उभा रह्या । कहो किंकर तू किणैं दह्या ।।४३४।।

तासुं वचन पूछै बलवीर । कहो बात चित राखो धीर ।।
कोण काज आया मो पास । तेरा मन की पूरूं आस ।।४३५।।

संधावली किंकर कों नाम । सेन्यावली का सुत इण ठांम ।।
इन्द्रतणा किंकर कही एक । तिण लीधी लंक कर टेक ।।४३६।।

लोग तुम्हारा दिया निकाल । सूरज रज अच्छर रज पाइ मार ।।
वै तुमारा बल कै परताप । वे दोन्युं चढि दोडे आप ।।४३७।।

दो सुं वोड जुध अति भया । वांनर बंसी दल कटि गया ।।
रहे सूरज रज अच्छर रज । किया जुद्ध राषी तिहां लज्ज ।।४३८।।

जम की सेन्यां करी संहार । जम सन्मुख आया तिहवार ।।
सूरज रज कै मारी गदा । रथ तैं पडया भूमि पर तदा ।।४३९।।

अलंका में ले गये उचाइ । मिल मिल गावें घाव सिचाइ ।।
अब वाकुं कुछ भई उसास । जम दे है लोकां नै त्रास ।।४४०।।

नरक सात सो राया इन्द्र । तहां माणस राख्या करि वृन्द ।।

लंका विजय

तिस कारण आया तुम पास । तुम चल दूर करो दुख त्रास ।।४४१।।

इतनी सुणि सब सेन्यां दही हंकार । किषंद पुरे पहुंता तिण बार ।।
बाजै मारू माची रोर । किषंदपुर देख्या दक्षिण ओर ।।४४२।।

बैतरणी अरु सातौ नर्क । बदी वान सहै उपसर्ग ।।
रखवाले बैठे तिहां घने । थंभ वाधि करि पिंजर हने ।।४४३।।

दशानन बंदि छोडि सब दई । संपोट कनें ए बात सब गई ।।
सुणित बात कोप्या संपोट । दशानन नें अपहूं पग रोप ।।४४४।।

सूर सुभट सब लिये बुलाय । चढि आया लडवे कौं आय ।।
वभीषण आय फिरया अडवार । दोवु दल गुरचा तिह बार ।।४४५।।

संप्रोट भभीषण नें कहै । अब तू मोतें सनमुख रहै ।।
तोकुं सही भभीषण नाम । जीवत पकडि बांधि ले जाउं ।।४४६।।

वभीषण की सेना बहुमरी । दशानन भी आया तिह घरी ।।
चन्द्रहाहांस लीया संभालि । संपोट का दल किया संहार ।।४४७।।

संपोट भाज गया जम पास । बोले वचन मुख लेइ उसास ।।
जम सांभलि ली सौं बात । चढ्यो कोप केहर की जात ।।४४८।।

जम की साथ चले सामंत । सेनां नही लाभै अंत ।।
चढि आया बाजित्र बजाय । कुंभकरण भभीषण समभुख आय ।।४४९।।

दूहुधा सुभट जुझैं रणमाहि । उडी रेणु मांनुं भई सांझ ।।

दशानन द्वारा युद्ध

दशानन आया उण ठाव । युध भेद समझै सब दाउ ।।४५०।।

दस सर बीस भुजा बलवांन । दुरजन मारि कीये घमसान ।।
जम इनकै सनमुख ह्वै लरया । सर लाग्या रथ सैं गिर पडया ।।४५१।।

सांतक नांम जम का इक पूत । लोथ पिता की उठाई तुरन्त ।।
लोथ राष करि किणही गांम । रथनूपुर गया इन्द्र के ठांम ।।४५२।।

व्यौरा सकल इन्द्र सौं कह्या । जमने मारि देश उन लह्या ।।
दशानन नाम महा बलिवंत । देखत ताहि प्रांण ह्वै अंत ।।४५३।।

बीस भुजा कहिए दस सीस । जाकी कर न सकै कोई रीस ।
सुणत बात कोप्या जिम सिंह । साथि सैंन भट लिये अभिन्द ।।४५४।।

देस देस तें लिख फरमान । दूत पठाया चतुर सुजान ।।
सबै नरेन्द्र बुलाये राय । जोतकी पूछे तुरत बुलाय ।।४५५।।

विद्र भरौं जोगित बुलाय । हिव चलस्यौ तो होसौं हार ।।
कहै इन्द्र अब निकल्या बार । जो फिर जाऊं नगर सभार ।।४५६।।

तो सूरिमा पणौं नवि रहै । मांनी हारि सहु कोई कहै ।।
पुरषा सब समजावैं बात । बतीस दांत नहीं मानु हार ।।४५७।।

अंतहपुर में फिर गया इंद्र । सोच बुलाय करै आनंद ।।
जम फिर आया इंद्र के पास । पुत्री दई रूप गुण जास ।।४५८।।

जम भेज्या सुरसतिपुर देस । खुसी हुए सब भूप नरेस ।।
दसानन नगर लिये सब साध । इन्द्र सु तिन भांडी उपाधि ।।४५९।।

त्रिकुटाचल रतनश्रव राज । मनबंछित का हुवा काज ।।
किकंधपुर सूरजरज दिया । किंधपुर राज अच्छरज लिया ।।४६०।।

सुमाली मालिवान दोऊ लंका ध े । सुभ साता तमु भाई घणी ।।
सेवा करैं वे तीनु वीर । लह्या सब सुख पाय सरीर ।।४६१।।

छत्र सिंघासण चामर घने । बहुत गयंद डोर के बने ।।
हय गय रथ पायक असवार । मेहल चढया देखैं नर नारि ।।४६२।।

लाल जवाहर डारैं भूप । सगली सोंभा वणी अनूप ।।
पहुंचे गढ लंका में जाय । बजैं निसांण गुणी गुण गाय ।।४६३।।

सब कुटंब भेट आगलै लागि । असुभ करम सगले गये भाग ।।
इतनी कथा कही जिणराय । श्रेणिक भूप सुणी मन लाय ।।४६४।।

सोरठा

श्री जिण धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंकाराज, राक्षसबंसी जग तिलक ।।४६५।।

इति श्री पद्मपुराणे दशग्रीव विधानकं

सप्तम विधानक

चौपई

बाली सुग्रीव वर्णन

किषिधपुर सूरज रज भूप । इन्द्रमालिनी नारि सरूप ।।
बालि पुत्र ताकै उर भया । चरम सरीरी रूप निरमया ।४६६।।

रतनमाला गर्भ भया सुग्रीव । जानैं धरम करम की नींव ।।
दिन दिन बढत सयाने भये । विद्या पढि पंडित अति थये ।।४६७।।

राजनीति का जाणै भेव । मनमें जपैं सदा जिणदेव ।।
सदा रहै हिरदै में ज्ञान । सम्यग् दृष्टि निश्चल ध्यान ।।४६८।।

सूरतिवंत पराक्रमी घने । दुरजन कंपैं नाम के सुने ।।
किषपुरी अच्छर रज राय । हरीकांत प्रिया सोभै पट ठाइ ।।४६९।।

प्रथम पुत्र जनम्यां नल नाम । दूजा नील दया का धाम ।।
चरम सरीरी उजली देह । महा पराक्रमी धरम सनेह ।।४७०।।

सूरज रज उपज्या ब्रयराम । राजरिष सबली ही त्याग ।।
बालि कुंवर प्रति सोंप्या राज । सुग्रीव ने कियो जुवराज ।।४७१।।

राज्य प्राप्ति

परहितमोह मुनिवर के पास । दिष्या लई मुक्ति की भास ।।
राजा बालि प्रतापी खरा । रामावली प्रस्त्री नें बरा ।।४७२।।

तातैं व्याही सौ औरं । तातैं अधिक बिराजै ठौर ।।
विजयार्ध मेघपुर नांम । ताकै पुत्र षरदूषण नांम ।।४७३।।

चन्द्रनषानैं चाहै हरया । निसवासर लंका में षडा ।।
दसानन कुंभकरण तें डरैं । भभीषण का भय चित्त धरैं ।।४७४।।

दसानन गया जात्रा मेर । षरदुषण आया तिह बेर ।।
चन्द्रनषा हरि चढ्या विमान । लेकर गयो आपणी थांन ।।४७५।।

कुंभकरण भभीषण दोउं वीर । ऐसी सुनि परजले सरीर ।।
मन मांहि ते कर आलोच । अभगांन छोड्या मन सोच ।।४७६।।

रतनश्रवा अर नरपति घने । कहैं कि वाकों गहि कर हने ।।
सेन्यां जोडि विजयार्द्ध चले । दसानन आवतां मारग मिले ।।४७७।।

सांभलि चन्द्रनषा की बात । कपी देइ पसीना गात ।।
इतनी सेन्यां का क्या काम । एक ही करै ते करो संग्राम ।।४७८।।

छिनमें मारि सब परलय करो । उनपरि कहा षड्ग बापरों ।।
मन्दोदरी सीष इम भनें । कंन्या घर राष्या नहि बने ।।४७९।।

उत्तम कुल उनके भी षरे । चौदह सै षेचर उण घरे ।।
विद्या सहस है बाके तीर । साहसैवत महा बलवीर ।।४८०।।

जो तुम वाकी डारौ मार । तौ विधवा होसी बहुण तुमार ।।
तब वाको दूषण अति होय । तुमने भला न कहसी कोय ।।४८१।।

अज जो षिमा करो तो भला । ह्वै सेवक ह्वै करि आवै चला ।।
जो तुम जुध करण का चाउ । तो अब बालि सुग्रीव परिजाउ ।।४८२।।

उनको दिन बीते हैं घने । न करैं सेव हुकम तुम तने ।।
आग्या मानैं नाहीं बाल । बेग जाहि इह टालो साल ।।४८३।।

दसानन सुनी त्रिया सों कहै । जो वे मुझ आग्या में रहैं ।।
हूं उनकी नहीं मानूं संक । वे हम सूं कहा करि हैं बंक ।।४८४।।

वहुरि भणै मंदोदरी वैन । सुणुं कथा चित राखो चैन ॥
पाताल लंका चंद्रदधि रहै । अनुराधा राणी सुख लहै ॥४८५॥

चंद्रोदधि सहजै मरि गया । राणी तब वनबासा लिया ॥
बनमें भया पुत्र परसूत । बलिनामें लक्षण संयुक्त ॥४८६॥

विद्या सीख भया बहु गुनी । अपने मन राखै अतिमनी ॥
वालसमीप मिल्या बल आय । दोन्यू रहैं प्रीत अधिकाइ ॥४८७॥

ऐसे सुणि करि भेज्या दूत । और बात अति लिषी बहुत ॥
पहुंच्या किषंदपुर जिहां बालि । पत्री ताहि सौंपै दरि हाल ॥४८८॥

दसानन सम भूपति नही और । जाके बल को नाहिं ओर ॥
तुमारे पुरखानें दई भूमि । वे सेवा करते तजि भूमि ॥४८९॥

तुम भी मांनु उनकी आंन । ज्यौं ए रहैं तुम्हारे प्रांन ॥
अब तुम साथि हमारे चलो । श्री प्रभा कन्यां ले मिलो ॥४९०॥

ज्यौं तुझ देश परगने देइ । आदर सहित नगर में लेइ ॥
वांलि नरेस कहै समझाय । मैं पद नमूं जिणेश्वर राय ॥४९१॥

कैसे ताहि नमांऊं सीस । मेरे बडा अर्छ जगदीस ॥
दूजा नै प्रणासूं किस भांति । मै भगवंत सुमरउं दिनराति ॥४९२॥

उह असा है क्या वलवांन । मुझने वचन कहै इम भांति ॥
जो हूं लंक उपरि चढि जाउं । मारौं उलटि सब उसका वाउ ॥४९३॥

उठां कोय चल गहै तरवार । मारउं दूत मिलाउं छारि ॥
भव वल का कर पकरै वाल । दूत न मारै को भूपाल ॥४९४॥

योह बेल निज पति का वैन । आया हमें संदेशा दैन ॥
धका दिवाय कर दिया निकार । गया दूत फिर उतनी बार ॥४९५॥

सकल बात व्योरा सौं कही । तुय तें तिण सम मानैं नहीं ॥
लंकपति सेना सब टेर । देसपति साथ लिये तह वेर ॥४९६॥

युद्ध वर्णन

चाल्यो दल छायो आकास । पहुंचे किकंधपुर कै पास ॥
बाजा तब बाज्या बहुजोर । गांम घेर लीन्हा चहूं ओर ॥४९७॥
बालि भूप नै भई संभार । नल नील आए जु कुमार ॥
सूर सुभट सब एकठें किये । हय गय रथ वाहन वहु लिये ॥४९८॥

चढे कोपि जिण पर केहरी । देखत ही सब की सुधि हरी ।।
बजे झुझाय तुरी पलान । दुहूं धा धाए सूर सुजान ।।४९९।।

हांथ गह्या नांगी तरवार । दुहुंघां पडै बांण की मार ।।
बरछी हाथ धनुंष सर लीये । ताकि मारे अरियण के हिये ।।५००।।

कोई सुभट गदा कर गहे । तब सागर मंत्री इम कहै ।।
पंडित गुंनी अधिक सुज्ञांन । वचन बालि प्रति जंपै आंन ।।५०१।।

सैन दसानन की है घनी । तुम हो एक नगर के धनी ।।
उन सगली जीती है मही । वा समान कोई खेचर नहीं ।।५०२।।

चन्द्रहास जो मारै षड्ग । तो तुझनै ह्वै बहुत उपसर्ग ।।
इतना जीव मरै रण मांहि । घर घर सोग बधै दुखदाय ।।५०३।।

इन जीवां को क्यौं ल्यौं पाप । अब तुम षिमां करो प्रभु आप ।।
बालि कहै मंत्री सुंणि बात । देखि जु इणैं लगाउं हाथ ।।५०४।।

सब सियाल मिल इकठा होय । एक सिंह नवि जीतै कोइ ।।
इणका काल लिष्या इण ठांम । मारौ ठोर मिलाउं नाम ।।५०५।।

मंत्री फेर वीनतौ करै । बाकी सर भर क्यौं बल धरै ।।
ज्यौं मनुषां केहर नें गहै । पिंजर माहि परवस दुख सहै ।।५०६।।

वह तुमनें पकडैं करि घेर । तातैं करौ छिमां इस वेर ।।
बहुरि बालि मंत्री सों कहै । सूरापन षिमा तैं न रहें ।।५०७।।

भूप कहै इन मांनी हारि । चरचा इम चालै संसार ।।
मस्तक मैं नाउं भगवंत । मुणि पैं वरत गह्यो इण मंत ।।५०८।।

बालि द्वारा दीक्षा ग्रहण

जो अब जाइ मिलुं तजि जंग । तो होवै मेरा व्रत भंग ।।
सुग्रीव नै सौंप्या सब राज । आपण किवो मुक्ति की साज ।।५०९।।

गगनचंद्र मुनि पासैं जाय । दिक्षा लई मन बच क्रम काय ।।
बारह अनुप्रेक्षा चित धरैं । मास उपास पारण करै ।।५१०।।

तेरह विध पालै चारित्र । जीत्या क्रोध लोभ मंद सत्रु ।।
बाईस परीसा सहै सरीर । मन बच काया राषी धीर ।।५११।।

निस दिन चिदानंद लिख लाइ । विद्या सिद्ध भई तब आइ ।।
बल अनंत विद्या गुण ढेर । भू उलटत नही लागै बेर ।।५१२।।

मुनि कै चित्त दया का भाव । नां कछु हरष नहीं विसमाव ।।
धरम उपदेस सुणै भवि लोक । मुनि साधै निस वासर जोग ।।५१३।।

करि बिहार पहुंते कैलास । दरसन किया मुगति की आस ।।
बारहविध लाग्या तप ध्यान । बाहर भ्यंतर उत्तम ग्यांन ।।५१४।।

सुग्रीव दशानन पासै गया । श्रीप्रभा सुं विवाह कर दिया ।।
पटराणी थापी तिह धरी । पाछै व्याही घणी असतरी ।।५१५।।

सुग्रीव नें सौंप्या निजपुर राज । सो फिर करै भूप का काज ।।
नीलकमल बिजयारध देस । तिहां रहै नील कमल नरेस ।।५१६।।

श्रीदेवी राणी तसु गेह । रतनावली पुत्री सुभ देह ।।
दशानन व्याही रतनावली । भोग भुगति मांनै बहु रली ।।५१७।।

दशानन की कैलाश वंदना

ह्वां तैं बैठि करि चले विमांण । गिरि कैलास परि थाप्यो आंन ।।
तब मन सोच करै दशसीस । मंत्री भणै सुणौं नर ईस ।।५१८।।

गिरि कैलास बहेत्तर देहुरा । तीन चोबीस रतन बिंब धरा ।।
वंदनीक हैगी इह ठौंर । या समान तीरथ नहीं और ।।५१९।।

बालि की तपस्या

इण ठां बालि तपस्या करै । तिण कारण बिवाण नही टरै ।।
सोभनींक तिहां वृक्ष उतंग । फूलत फलत बिराजै रंग ।।५२०।।

चिमकै सिला मानु रवि किरण । दरसण कीयां दुख का हरण ।।
गंगा नदी चलै तिहां धनी । उज्जल वरण सोभा जब बनी ।।५२१।।

दसानन कोप्या तिहबार । जाणै परवत लेउं उखार ।।
उलटो गिर सायर में देउं । निज बल तणी परिक्षा लेउं ।।५२२।।

उतर्‌या आप भूमि पग दिया । क्रोध अति चित्त मे किया ।।
चढि परवत पर पहुंतो तहां । करै बालि मुनिवर तप जहां ।।५२३।।

ताहि देख करि भौंह चढाय । हथेली काटई दांत चबाई ।।
निठर बयण मुख सेती कहै । तू यो ही देही क्यों दहै ।।५२४।।

तेरे मन का क्रोध न घट्या । जैन धरम कछु तप करि सटा ।।
अहंकार तें मनमें धरा । मेरा विमान रह्या जो धरा ।।५२५।।

अब तूं देख कहा मैं करौं । परवत सहित सायर संचारौं ।।
जो तैं सिध पाई कछु भली । अब कै बचै तो जाणौं बली ।।५२६।।

अैसी भांति कहैं बहु बोल । मुनिवर साधैं तप अडोल ।।
ध्यांन लहर मैं बैठा जती । राग दोष मनमें नहीं रती ।।५२७।।

आया पर्वत कै तरहांन । सुमरत विद्या ठाढी भई आनं ।।
एक महूरत एकै घडी । विद्या आई सकल तिहां गुरी
देहु वेगु प्रभु आज्ञा, आज करां जिका फरमावो काज ।
निज देही तब कीधी वडी, सब विद्यां वाकै संग चडी ।।५२८।।

मारी एक गदा गिर थांन । भई पातिका कूप समान ।।
दसानन गया तबै पाताल । गिर उठाय लिया ततकाल ।।५२९।।

छत्र समान उठाया सीस । भुजा उंचाई उंचै बीस ।।
कंपी धरती हाल्या रुंख । ऊंची पडै परवत की कुंष ।।५३०।।

हस्ती घोडा करैं चिंघाडि । डरपैं केहरि खाइ पछाड ।।
पंथी उडे हलैं तरु डाल । मानुं आया परलय काल ।।५३१।।

अंधकार दीसैं चिहुं ओर । चली नदी जल परवत फोर ।।

बाली द्वारा चिन्तन

मति श्रुति अवधि मनपर्यय ग्यांन । बालि साध तव करै विचार ।।५३२।।

अवधि प्रमाण करि चितै ध्यांन । दसानन हैं या परवत ठाम ।।
तिण उपसर्ग किया इत आइ । कहा आश्चर्य मुझ छूटै काइ ।।५३३।।

एक बार है मरण निदान । तातै सोच न करिये आन ।।
होणहार नही टारी टरै । विकलप णैं कारज नहीं सरै ।।५३४।।

वाल साध इम करैं विचार । मुनिवर यां तप करैं विचार ।।
वे मुनि केवल लोचन सार । मति श्रुति अवधि मनपरजय कार ।।५३५।।

कंचनमय अच्छै देहुरा । रतनबिंब अनसंख्या करा ।।
गिरि उपर निवसैं वहु जीव । सब नैं दुख आपै दसग्रीव ।।५३६।।

यह मुझ नैं होसी अपलोक । इण परि बलि करैं मन शोक ।।
मुझ नैं अच्छै ए तो पराक्रम । इसको तुरत गमाउं भर्म ।।५३७।।

दया निमित्त मैं लीधा जोग । अब इण पर मुझ वण्यौ नियोग ।।
जो हूं इस पर करूं कषाय । तो मुझ तप सहु निरफल जाइ ।।५३८।।

अपने जीव का भय नवि करौ । अवरा तणां सोच चित धरौं ।।
पर उपगार करैं जौ कोइ । ताको कछु वन दूषन होइ ।।५३९।।

इम चितवी अंगुठा टेक । भई विद्या ईक विद्या एक ।।
बीस भुजा सहि सकै न भार । ज्यों ज्यों दबई त्यों करै पुकार ।।५४०।।

तब लग नहीं टूटे दस सीस । बोझै व्याकुल ह्वै लंकीस ।।
नींचइ पापी करै पुकार । ह्वां तैं कोई न सकै निकार ।।५४१।।

रोवैं बहुत न निकसैं कहूं । अब हूं किरण पर मारग गहुं ।।
रोवै राण्या करै पुकार । विधवा भई हम मांझ मंझार ।।५४२।।

मुणिवर कैं मन आई दया । चरण उठाइ भूमि तैं लया ।।

रावण द्वारा बाली की वंदना

तब रावण छुट्या तिह घरी । मान भंग ह्वै अस्तुति करी ।।५४३।।
गयो आप तिहां बैठा जती । ताकै लोभ न बपु एको रती ।।
तप प्रताप सौं दिपै देह । चिदानंद सेती अति नेह ।।५४४।।

जैसे ह्वै पाणी की कार । अैसा मोक्ष मारग अहंकार ।।
रावण तीन प्रदक्षिणां दई । नमस्कार करि समता भई ।।५४५।।

तुम महंत धरम धर मीत । तातै धरी धरम की रीत ।।
मैं पापी मूरख अग्यांन । पड्यो मोह फदा मे आन ।।५४६।।

पाप करम मैं किया अथाय । तें दुख किम करि मेट्या जाय ।।

दीक्षा लेने के भाव

अब तुं मो प्रभु दिक्षा देहु । वांह पकड़ अपनी ढिग लेहु ।।५४७।।

चंद्रहास तब दीनों डारि । गदा गौमती सब हथियार ।
मुकुट सीस तें ड़ार्या तोडि । विद्याभरण दीने सब छोडि ।।५४८।।

कपडे तनके डारे फार । मन बैराग्य धर्या तिह बार ।।
करी वंदना चौबीसी तीन । वार बार बोलै आधीन ।।५४९।।

तुम भगवंत हो तारण तरण । हूं आयो प्रभु तेरी सरण ।।
मैं दीक्षा ले सेऊं चरण । मेरे होउ पापों का हरण ।।५५०।।

आसण कंप्या धरणी देव । अेसठ सिलाका होइ न छेह ।।
इनका अैसा अछै नियोग । जुगतै तीन षंड का भोग ।।५५१।।

अैसी चित आया कैलास । पूजे श्री जिण मन उल्लास ।।
रावण सु धरनेन्द्र इम कहै । तेरे दया भाव चित रहै ।।५५२।।

तैं तौ भगति करी मन लाइ । मैं सुणि धरम आया इस ठाइ ।।
जो तेरे मन इच्छा होइ । मुझ पैं मांगि लेहु तुम सोइ ।।५५३।।

रावण बिनवै मांगु यही । करूं तपस्या जिण पद गही ।।
छोडुं सकल राज का मोह । पग बंधन है माया लोग ।।५५४।।

पुत्र कलित्र न संगी कोइ । संपय तणां विछोहा होइ ।।
ऐसा ये संसार सरूप । नटवत भेष करै बहु रूप ।।५५५।।

जौनि फिरयौ चौरासी लाख । समकित की परतीत न साख ।।
तौ इह भ्रम्यो सकल जग बीच । कबहूं उत्तम कबहूं नीच ।।५५६।।

मनमे कबहूं नायो सांच । विषय किये भर इंद्री पांच ।।
इक इंद्री सुख भुगतण हार । ते भवमें दुख सहैं अपार ।।५५७।।

पांचु इंद्री विषय संयुक्त । सेवत पामें दुख बहुत ।।
पांच चोर काया में रहैं । ए जीतें तब सिव सुख लहै ।।५५८।।

धरणेन्द्र द्वारा शिक्षा

तब बहुरि बोले धरणेन्द्र । तुम राजा पृथ्वी के चन्द्र ।।
तुम बिन दुख पावेंगे लोग । चौथे आश्रम लीजो जोग ।।५५९।।

मैं आया अब तेरे पास । मांगि सिघ्र ज्यौं पूरूं आस ।।
दिन को ज्यों चिमकै बीजली । बरषै मेह पुरै मन रली ।।५६०।।

देव सरण जे भेटे आय । ये दोन्यु निरफल नहीं जाय ।।
रावण जंपै सुणि धरणेन्द्र । देह देव जो तुझ उर बिन्द ।।५६१।।

सक्ति बांण रावण प्रति दिया । ताका भेद गुण समझाइया ।।
जाके हिये लगै यह बाण । ताके गुण का इहै परमाण ।।५६२।।

ए करण ऊपर होइ जाय । वह जीवै नहीं किसही उपाय ।।
धरणेन्द्र देव गया पाताल । रावण मन में भयो विकराल ।।५६३।।

एक मास परवत पर रह्या । चित में भरम जिणेसुर गह्या ।।
समझावै परियण सब आय । मंत्री कहै ग्यांन समझाय ।।५६४।।

अब फिर चलो करो निज राज । तुझ बिन बिगडै सगरे काज ।।
च्यारि दान तुम दीज्यो नित्त । पूजा करि पालो समकित ।।५६५।।

रावण पहुंतो लंक नरेस । करै राज सुख पावै देस ।।
बालि जती लहि केवल ग्यांन । परम प्रकास गए निरवाण ।।५६६।।

इति श्री पद्म पुराणे बालि निर्वाण विधानकं ।।

नवम बिधानक

अतिगति का विवाह

चौपई

द्योतपुर नगर हुतासन भूप । हरियल राणी महा स्वरूप ।।
अतिगति पुत्री ताकै उर भई । रूप लखन करि सोभैं नई ।।५६७।।

चित्रांगद राजा कै साहसगति पूत । साहसीक वहु गुण संयुक्त ।।
इक दिन दृष्टि पडी अतिगता । देखत वढी काम द्रुम लता ।।५६८।।

जाय पिता सें विनती करी । हुतासन की ब्याहूं पुत्तरी ।।
राजा ततक्षण भेज्या दूत । लषी वीनती बचन बहुत ।।५६९।।

मेरा पुत्र बहुत गुणवंत । जाकै बल पौरष नहीं अंत ।।
अतिगति पुत्री तुम या को देहु । मेरा बचन मान प्रति लेहु ।।५७०।।

अवर दूत भेज्या सुग्रीव । वांनर वंसी अति उत्तम जीव ।।
राजा सोच करै मन माहिं । पुत्री समझि दीजिये काहि ।।५७१।।

मुनि चंद्रस्वामी पै जाइ । नमस्कार करि लग्यौ पाइ ।।
मेरे मन संसय भयो आइ । उभय दूत पठिए द्वै राइ ।।५७२।।

कन्या किसकी संबंधिनी । अवधि विचार के भाषो मुनि ।।
वोले मुनिवर ग्यांन बिचार । सुग्रीव की हैं आव अपार ।।५७३।।

सुग्रीव के साथ विवाह

साहसगति की हैं अल्प आव । कन्या देहै सुग्रीव कुं भाव ।।
राजा का संसय मिट गया । मंगलचार सुग्रीव सूं ठया ।।५७४।।

पंच सबद बाजै तिण बार । बांभण पढैं वेद झंकार ।।
रहस रली सूं भयो बिवाह । दोउं कुल मे वहुत उछाह ।।५७५।।

भए विदा किकंधपुर गया । दपति करै भोग नित नया ।।
भया पुत्र इक गर्भ अनंग । दूजे अंगद लहर तरंग ।।५७६।।

महाबली है दोनू वीर । पराक्रमी अरु दिव्य सरीर ।।
साहसगति कै हिरदै दाह । अतिगत सुग्रीव ले गया बिवाह ।।५७७।।

छलबल करिकै वाकूं हरूं । मनबांछित सुख तासों करूं ।।
जब लग अतिगति भेटूं नाहि । तब लग रहि है मुझ मन डाहि ।।५७८।।

हेमांचल पर्वत पर गया । विद्या हेत तपस्वी भया ।।
रावण साधे सकल नरेस । आण मनाय किये वसि देस ।।५७९।।

रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार

दुरजन रह्या नहि किण ठाय । इन्द्र ऊपर तसु भई चढाइ ।।
देस देस तें आए राव । परदूषण मन चिंत्या दाव ।।५८०।।

असी बार रांवण पं जाउं । वासुं मिलें मिटै अंतराव ।।
भली भांति मिलवे कूं चले । चउ देसैं भूपति संग भलै ।।५८१।।

रावण सुणि खरदूषण बात । महा सुख मान्यां इण भांत ।।
भली बार षरदूण आइ । तीनूं भाइ मिले गल लाइ ।।५८२।।

चढि सव अपणे चले विमांण । बोझल भया अबै रथ भांग ।।
बाजे बाजैं घुरै निसांण । हस्ती गरजै मेघ समांण ।।५८३।।

एक सहस छौहनि अर एक । एक सहस सुर दल की टेक ।।
पुष्प विवांण परि बैठा आप । मनमें जपै श्री जिनेस्वर जाप ।।५८४।।

सुमरण किये मनबंछित सिध । सुख संपत्ति पावै वहु रिध ।।
रवि अस्ताचल ओझल भया । परवत पर इनौ बासा लिया ।।५८५।।

सेज्या परि पौढइ सब भूप । शशि उडगण की जौति अनूप ।।
भयो प्रभात उठे सब लोग । नोबत बाजै हर्ष प्रयोग ।।५८६।।

गावै गुणियन राग बहोत । रवि की भई किरण उद्योत ।।
रावण बैठा कंचन पाट । विरुद वषांणै जाचक भाट ।।५८७।।

कंचन कलस नीर सु भरै । करि सनांन फिर सुमरण करै ।।
तुरी पलाण भये असवार । रमवाताल गए तिह बार ।।५८८।।

पाल मनोहर निरमल नीर । हंस आदि पंषी बहु तीर ।।
जलचर जीव विराजै ओर । पंछी करैं कुलाहल सोर ।।५८९।।

बैंठक छत्री चाक्रं घूंट । मंदिर वण्या वीच धरि सूत ।।
किंकर आइ बात जो कही । मै देषि है उत्तम मही ।।५९०।।

तिहां तुम प्रभु उतरो जाइ । सुख पावै सेनां तिण ठाय ।।
महिषमती नगरी है तिहां । मानसरोवर सोभैं जिहां । ५९१।।

ताके निकट रावण उतरया । सकल सैन सो वन वह भरया ।।
डेरा सोभैं सुरंगी रंग । आभूषण सोभैं अति चंगि ।।५९२।।
सहस्ररश्मि राय सरोवर माहि । सहसनारि संग करै उछाह ।।
दीसैं लोचन जेम कुरंग । क्रीडा करै भूप के संग ।।५९३।।

चौकी बैठी घाटी घेर । कोई न असंकै तिहूं बेर ।।
जलक्रीडा सरोवर बीच । षेलैं राणी माची कीच ।।५९४।।

अंजलि भरि भरि नीर उछाल । असे षेलैं तिहां भूपाल ।।
राजा लीने कमल उषारि । मारै उनें मनावैं हारि ।।५९५।।

कोई रुठि रहै मुष मोरि । ताहि मनावै भूप बहोरि ।।
विविध प्रकार की क्रीडा करी । गावैं मंगल सब मिलि तिरी ।।५९६।।

रावण द्वारा जिन पूजा

वे अपने मन निरभय षरे । रावण पूजा नें चित धरे ।।
सामग्री पूजा की सौंज । निज थांनिक साजा करि चौंज ।।५९७।।

अष्ट द्रव्य सौं पूजा करै । श्री जिनवाणी मुख उच्चरै ।।
जल धारा का इह विचार । त्रिषा दोष मिटै संसार ।।५९८।।

केसर चंदन जिण ए दले । भव आताप मिटै संषए ।।
पहुप चढावै जिण प्रतिबिंब । सीलन टरैं रहै मन थंभ ।।५९९।।

उज्वल अक्षत षंडित नहीं । इण विध पूजा कीजे सही ।।
नेवल थाल चढावै षरे । क्षुध्या आदि दोष हरे ।।६००।।

दीप चढावै रतन समान । निश्चै पावै केवल ग्यांन ।।
षेवै धूप सुगंध निमित्त । आठ करम जर जावैं अंत ।।६०१।।

फल जु चढावै जिण पद पास । पावैं मोक्ष तणां आवास ।।
विनयवंत ह्वै आरती करै । ऊछलै जल रावण ढिग परै ।।६०२।।

रावण कै मन चिंता होइ । असा निडर इहां नहीं कोइ ।।
उन कछु करी न मेरी कांणि । जिनवर कै डर करया न जांणि ।।६०३।।

अब देखउ ढूंढो तुम जाइ । वेगि बाधि आंणि इस ठांइ ।।
गई धौंस तिहां षेलै राय । रखवाला वरजै मति जाय ।।६०४।।

सूर सुभट भीतर घसि गये । वाकुं देखि अचंभित भए ।।
तू इत तें हिव नीकलि मूढि । मे तोनै अब पाया ढूंढि ।।६०५।।

तू अब चल रावण के पास पास । जो चाहै जीवण की आस ।।
और जो तू मन राषै भर्म । देख जु अब कछु ह्वै है कर्म ।।६०६।।

रावण का सहस्ररश्मि से युद्ध

राजा निकल्या जल तैं दूरि । आभूषण पहरया भर पूर ॥
शस्त्र बांधि कर भया तयार । सूर सुभट सब लिये हंकार ॥६०७॥

ऐसो बात रावण पै गई । सुन बहुत छिन आपण लई ॥
मिले परसपर मांडी राड । जैसा सू तैसा करै मार ॥६०८॥

सेना झुझि दोऊं थी मरी । रावण आया वाही घरी ॥
अपणे भागते देखे लोग । सहस्ररश्मि कै कछुवन सोग ॥६०९॥

फिर संभालि करि धीरज दिया । मार मार शब्द बहु किया ॥
रावण कै सन्मुष होय लरैं । दससिर का कछु भय नवि करैं ॥६१०॥

धनुष गह्या सर छोडे घने । निरभय होय सबै ही हने ॥
रावण मनमें अचिरज धरै । मेरे आगैं जम से टरैं ॥६११॥

यह तो दीसै है अति धीठ । याकै मुझसे डरै न दीठ ॥
धनुष ताण करि मारया बांण । रुधिर चाल्या धारा भर बांन ॥६१२॥

तब रावण हस्ती पर आय । सहस्ररश्मि नैं मारै आइ ॥
दोउं वाथांवाथ जु लरैं । हस्ती तैं धरणी पर गिरैं ॥६१३॥

कबहू ऊपर कबहू तलैं । महाबली ते इणपर लरैं ॥
बहुत लोग रावण के आय । सहस्ररश्मि नै बांध्यो राइ ॥६१४॥

वाकुं भेज्या लंका बांधि । मारग चलत लिया नृप साथि ॥
रजनी भई लिया विश्राम । सुख सेन्या सूते उस ठाम ॥६१५॥

बाजे प्रात समै बहु बजे । सबद सुनत सब का मन रजै ॥
रावण उठ सामायिक किया । सिंघासण ऊपर पग दिया ॥६१६॥

राजा आय करैं नमस्कार । मुकटबंध के भूप हजार ॥

सतबाहन मुनि द्वारा उपदेश

सतबाहन मुनिवर तप सूर । अनंतबल है रिद्धि भरपूर ॥६१७॥

आवै लोग मुनीश्वर जात । सहस्ररश्मि की भाषी वात ॥
रावण तुमारा सुत बांधिया । बंदीखानैं ले कर दिया ॥६१८॥

सुणी पुत्र की चिंता धरी । उंनौं माया सब की परिहरि ॥
फिर कछु दया भाव चित लाय । मुनिवर उठि रावण पै जाय ॥६१९॥

रावण साध को दरशन देषि । सफल जनम मानो बहुलेष ।।
उतर सिंघासण करि डंडोत । रावण अस्तुति करी बहुति ।।६२०।।

सकल सभा कीनों नमस्कार । धर्म वृद्धि दीणी तिणबार ।।
सिंघासण बैठाण्यां मुनी । बैयावत कीधा नृप धनी ।।६२१।।

हम आवै थे वनह मझारि । विघनां पूरी इच्छ हमार ।।
तुम प्रभू हम पै करतारथ किये । तुम दरसन सुख पायो हिए ।।६२२।।

अब सेवक प्रति आग्या देहु । ज्यों मेरो भागै संदेहु ।।
किण कारण यां कियो गमण । स्वामी वचन तजि भाषउ मौंन ।।६२३।।

कहै साधु तुम सुणु नरेस । मानों तुम म्हारो उपदेस ।।
सहस्ररश्मि नें छोडो राउ । या कारण आया इस ठांव ।।६२४।।

रांवण कहै सुणो प्रमु जती । मोह पुत्र का है कछु थिति ।।
जो तुम आग्या देते मोहि । में छोडतो प्रभू अब तोहि ।।६२५।।

तुम आपणनें कीधे षेद । मायाजाल कीये सब भेद ।।
मुनिबर बोलैं चित्त विचार । सकल जीव मेरैं इकसार ।।६२६।।

दया हेत आया तुम पास । अभयदान दीजे सुषवास ।।
रावण कहै सुणौ मुनिराइ । हमसे सकल मिले नुप आइ ।।६२७।।

सहस्ररश्मि अति कीनी मनी । मिलन न आया सामनी ।।
हम पूजत है श्री जगदीश । तउ उन आया नमाया सीस ।।६२८।।

जल उछालि डारयउ तिण ठाव । मोकुं चढया क्रोध का भाव ।।
लोग षंदाया उसकै पास । उण तो करघा प्रांण का नास ।।६२९।।

तब मैं आप बेग आइया । हमसौं घणां जुध तिण कियां ।।
मै इसनें लीया था बांधि । तुम आया थी छोडुं साध ।।६३०।।

बेडी हांस हथकडी काटि । आभूषण दीने मन आट ।।
ले आए तिहां रावण भूपि । राजसभा में दिपै अनूप ।।६३१।।

नमस्कार करि ऊभा भया । रावण सलहै पोरष किया ।।
बहुत भांति करि स्तुति करी । इसा चाहिजे रण की घडी ।।६३२।।

या सम सुभट न दूजा कोइ । मो सौं सनमुख लडयां न कोइ ।।
मेरा भय कछु चित्त न धरघा । मेरे सन्मुख आछा लडया ।।६३३।।

इसने करिहु सेनापति । सबतैं याहि चढाऊं रती ॥
रांवण अस्तुति कीनी घनी । और सराह करै सब दुनी ॥६३४॥

सहस्ररश्मि की बिरदावली । एक एक की कीरत भली ॥
रावज मन तैं भया मन भंग । बहुर न करौं राज सौ संग ॥६३५॥

सर्व विणासी राज विभूति । हय गय लछमी अस्त्री पूत ॥
जे मैं केल करी जलबीच । तो तो मोकूं ऊपजी थी मींच ॥६३६॥

सहस्ररश्मि द्वारा मुनि दीक्षा

अब हूं दिक्ष्या लेस्युं जाय । करौं तपस्या मन वच काय ॥
रांवण जंपै सुनहु नरिंद । मै वयराग भया सब निंद ॥६३७॥

धरणेन्द्रइ मोकूं समझाया फेर । कियो प्रथ्वीपति रय फेर ॥
तुम बालक जोवन भरि देह । क्यों करि तपस्यों धरि हो नेह ॥६३८॥

जैन धरम दुष्कर है घना । भूमि सेज करिस्यौं पोढणां ॥
बाईस परिस्या कैसे सहै । क्षुधा त्रिषा दुख तन को दहैं ॥६३९॥

अब तुम राज करो आपणां । छहु रितु दुख पावोगे घणा ॥
श्री जिनवाणी निश्चय ध्यांन । दान च्यांरि दो सक्ति समांन ॥६४०॥

सब नरिंद में तू सरदार । निरभय पालो राज द्वार ॥
श्रीप्रभा मंदोदरि की बहन । करौ ब्याह जे हुवै दुख दहन ॥६४१॥

रांवण बहुत प्रकार समझाय । वाका मन न चलै किण ठाइ ॥
सतवाहन पैं दिक्षा लई । जनम जरा की संका गई ॥६४२॥

नगर अजीध्या पूरब देस । सहस्रकिरण तहां अणे नरेस ॥
सुणी सहस्ररश्मि की बात । पुत्रैं राज महष तीई भांत ॥६४३॥

आपण लई दिक्षा उण जाइ । अणे भूप आया इस ठांय ॥
अभिनंदन सुत नें दे राज । आपण कियो दिगंबर साज ॥६४४॥

रावण सुं उत्तम क्षम करी । आवत केवल विध्य की घरी ॥
आतम ध्यान लगाया जोग । पावैगे पंचम गति भोग ॥६४५॥

इति श्री पद्मपुराणे सहस्ररश्मि अर्ण विधानकं ॥९॥

दशम विधानक

चौपई

सरोवर निकट किया दोहुरा । आदिनाथ रचना सों धरा ।।
बीस बिंब जिण प्रतिमा किये । भई प्रतिष्ठा चर्णउं नये ।।६४६।।

देस देस तें आये लोग । चलि आये वंदण जिण जोग ।।
नरपति आय बहुत तिण मिले । आदर भाव किये तिण भले ।।६४७।।

सगला ने दीन्ही ज्योणार । बहु विध कीये व्यंजन सार ।।
अष्ट द्रव्य सु पूजा करी । पंडित पढी जिनवांणी खरी ।।६४८।।

दीन दुखी जन दीनां दांन । सब ही का राष्या सनमांन ।।
धरम जुगति कीनी तिहां घनी । धरम तीर्थ की सोभा बणी ।।६४९।।

यज्ञ भेद की चर्चा

श्रेणिक राजा अस्तुति करी । यज्ञ भेद भाषो इस घरी ।।
श्री जिणवाणी अगम अगाध । पूजित है प्राणी की साध ।।६५०।।

गौतम स्वामी कहै अरथाइ । बारह सभा सुणै मन लाय ।।
नगर अजोध्या राजा सुप्रतिष्ठ । श्रीकंता रांणी समदिष्ट ।।६५१।।

वसु राजा

वसुव पुत्र जनमिया कुमार । क्षीरकदम की सोभा सार ।।
स्वस्तिमती बाकी अस्तरी । परबित पुत्र भया सुभ घरी ।।६५२।।

तीजा शिष्य नारद तिहां पढै । तीन्यां की बुधि दिन दिन बढै ।।
चारण मुनिवर निकसे आय । कहैं बात अपणै सदभाव ।।६५३।।

मुनिवर जंपै इन महला एक । जाय जीव नरक में विवेक ।।
षीर कदम सुणि कीया सोच । छुटी भई शिक्षा आलोच ।।६५४।।

वै अपणै मन मांही रली । षीरकदम जिय आई भली ।।
चल्या उनु कै पीछै लागि । पहुंच्या थाणक पूरण भागि ।।६५५।।

नमस्कार करि विनती करी । प्रभु मोहि दिक्षा दीजे शुभ घरी ।।
तुम संगति पचमगति लहुं । चरणकमल ढिग तपस्या गहुं ।।६५६।।

क्षीरकदम बैठ्या धरि मौंन । परवत पुत्र घरकुं किया गौन ।।
स्वस्ति मती तब कहै रिस्याइ । पिता साथ छोड्यो किण भाई ।।६५७।।

और बार पोथी ले कांख । तोकुं पिता आपरिण ठिम राखि ।।
तब बोले परवत समझाय । मोहि अगाउ दिया पठाय ।।६५८।।

इहां दुचितै जोवै बाट । ह्वां उन ब्यौल्याई मन आट ।।
रयरण भई आया नहिं गेह । चिंता व्यापी उनकी देह ।।६५९।।

प्रात भयो उठि चाल्यो पूत । पिता तरणी चटसाल पहूत ।।
वहां नहिं देख्या आगे गया । बनमैं पाया मौन गहि रह्या ।।६६०।।

कहै पिताजी चलिये गेह । भयो दुचितै कुटंब दुख नेह ।।
इनतो माया मोह सब तज्या । सुत ह्वातैं आया घर भज्या ।।६६१।।

सब ब्रतांत जननी प्रति कह्या । सुरणी बात मात दुख सह्या ।।
खाय पछाड करै बिललाट । परवत मारि धुरणै ललाट ।।६६२।।

तुम जोगीश्वर व्रत धरी । हमरी चिंत कछु नहीं करी ।।
वाका ध्यान निरंजन लग्या । बोलै किसही कौरण का सगा ।।६६३।।

नारद का आगमन

फिर आये घर बहुत उदास । नारद आया गुरनी पास ।।
गुरणी नैं समझावै बात । नदी नाव ज्यौं कुटंब संघात ।।६६४।।

उतरे पार बिछुर सब गये । अइसैं संग परातम भए ।।
सुपने केसा इह संयोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।६६५।।

तातैं करो मति कछु भी सोग । भयानंद मुनिश्वर साधै जोग ।।
सुप्रतिष्ठत भूप अजोध्या धनी । क्षीर कदंब की जबउ न सुनी ।।६६६।।

वसु पुत्र ने सोंप्पा राज । आपरण किया सुगति का साज ।।
पालै परजा वसुव नरेस । निरभय राज करै भुवनेस ।।६६७।।

नारद सम्यग्दृष्टी मुनी । परवत थाए मिथ्या घनी ।।
दोऊ अरण शास्त्रन पढै । परवत मन में षोटी गढै ।।६६८।।

चरचा करै यज्ञ अर दांन । पंच महाव्रत द्वै विधि जान ।।
पंच अणुव्रत श्रावक करै । महाव्रत जोगीस्वर धरै ।।६६९।।

पंच समिति अरु तीन गुपति । अठाईस मूल गुण संयुक्त ।।
क्रिया चौरासी पालै सदा । छह रितु सहै बाईस आपदा ।।६७०।।

सुछम बादर जेते जंतु । दया भाव सुं राखै संत ।।
बारह अनुप्रेक्षा सु बिचार । भवसायर तैं उतरै पार ।।६७१।।

त्रेपन क्रिया सुश्रावक करै । च्यारि प्रकार दान बिस्तरै ।।
पूजा करै सामायिक दांन । छह दरशन का राखै मान ।।६७२।।

चैत्यालै करै प्रतिष्ठा भली । संघ चलावै मन की रली ।।
तब परवत द्विज असैं लही । ब्यारदान हैं नाहीं सही ।।६७३।।

नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा

तब पूछै नारद फिर बात । कौण दाण दीजे किण भांति ।।
बोलै विप्र दाण ए सही । कन्या गउ अर दीजे मही ।।६७४।।

सत्री दांन मंदिर सतखनां । सोना रूपा जवाहर घणां ।।
अज गज महिष अश्व को होमि । प्राशुष भली संवारै भौमि ।।६७५।।

गडहा औंडा खोदैं घरे । मच्छ कच्छ तामैं ले धरैं ।।
पंडित विप्र वेद धुनि पढै । सकल जीव अग्नि मै डढै ।।६७६।।

मांस प्रसाद बांटि सब खांइ । जज्ञ किया बैकुंठा जाई ।।
नारद सुंनि समझावै ताहि । ए उपदेस नरक थिति आइ ।।६७७।।

जीव हतैर भषैंगो मांस । उनकी कदे न पूरवै आंस ।।
नीच गति वेहै भ्रम है घनी । ते दुख वरण सकै को गुनी ।।६७८।।

बोलै विप्र होम क्यूं होइ । हत्या करत डरै जो कोइ ।।
नारद कहै होमिए अचित । लगै दोष जाणिये सचित्त ।।६७६।।

अज कहिए छह बरस का धांन । हम गुरु मुखस्यौं यो वखांन ।।
ते हम होमैं अग्नि मझार । जिस का दोष न लगै लगार ।।६८०।।

परवत कहै अज कहिए वोंक । नारद मण में आंणै सोक ।।
दोन्यूं कहैं बसु नृप की साष । चरचा करै सभा में भाषि ।।६८१।।

जिसकी भूपति मांनै सांच । जिसका वचन सब मानैं पांच ।।
जे हारै रसना द्वै षंड । असा मंडया बाद प्रचंड ।।६८२।।

दोन्युं पहुंचे राजदुवार । नरपति था तब महल मझारि ।।
फिर आये वे आपणै गेह । प्रात भए पूछैगे एह ।।६८३।।

परवत कही माता सौ बात । नारद करसी वाद प्रभात ।।
मैं अज कह्या छाले का नांव । वह छह बरसी धान कहाव ।।६८४।।

जो हारैं राजा की सभा । तिसकी जीभ होयगो अभा ।।
माता सुंणि करि मुंडी धुंन । करी नपूती सुत सौं भनै ।।६८५।।

तू तो झूंठै बोल्या बैन । पडया कूप में देषत नैन ।।
जो क्यौं जीवै कूप मझारि । राजा तोहि डारिहै मारि ।।६८६।।

तैं जे उपाई पाप की बुधि । मो तन भूलि गई सब सुधि ।।
मोहि कह्या था राजा बोल । जो कछु कहूं वस्तु अमोल ।।६८७।।

मनबांछित मांगों से लेहुं । मिश्रानी जी आज्ञा देहु ।।
तब में वचन लिया निरधार । जब चाहूं दीजो तिह बार ।।६८८।।

स्वस्तिमति द्वारा वसु राजा से वचन मांगना

अब मागु राजा पैं जाय । भूंठ बचन तें लेहुं छुडाय ।।
स्वस्तिमती राजा पैं गई । आदर मांन राव बहु दई ।।६८९।।

वार बार पूछै कर जोरि । कैसे कृपा करी इस ठौर ।।
मिश्राणी बोलै समझाय । मेरी दक्षिणा दीजे राय ।।६९०।।

वेग अंजुली पाणी लेहु । अपणां वचन कह्या सो देहु ।।
राजा तब अंजुली जल भरचा । मागो जो चित भावैं धरा ।।६९१।।

परवत तणी कथा सब कही । तुम बिन सरणांगति को नहीं ।।
उसनें सांचो करो नरिंद । पुत्र भीख मुझ द्यो भवनींद ।।६९२।।

राजा सुणि करि मीडैं हाथ । बारबार धूंणै निज माथ ।।
इण मिश्रांणी मुझनैं छल्या । इण यह बयण न भाष्या भला ।।६९३।।

झूंठ न्याय जो राजा करै । निश्चै अधोगति नरकैं पडै ।।
वचन दीया फेरुं किस भांति । असे सोचत वीती रात ।।६९४।।

आया नारद उठि परभात । परवत चल्यो कहु तुम बात ।।
राजसभा में दोन्युं गया । म्यांन चरचा में वाद तब भया ।।६९५।।

राजा कहै वचन बसि काज । परवत कहै सुमानों राज ।।
धरती फाटि सिंहासण धस्या । तब नारद राजा प्रति हंस्या ।।६९६।।

भपति अजहू न्याव विचार । झूठ कहे सिर बांधि है भार ।।
नृप बोलैं परवत रूष देषि । सिंहासण धरती में प्रेषि ।।६९७।।

नारद का वचन

नारद बोले सुनि हो राव । असत्य वचन का देखो भाव ।।
वे ही बयण बोलै भूपाल । आसण सहित गया पाताल ।।६९८।।

वसु भूपाल नरक में जाय सहै दुःख तहा बिललाय ।।
झूठ श्रवै अरु करै अन्याव । ते प्राणी बहुते दुख पाव ।।६९९।।

सगली सभा अचंभै भई । वहु फटकार विप्र नैं दई ।।
पापी दुष्ट पाप का मूल । राजा तणां भया ए सूल ।।७००।।

राजा मुंह देखी जो करै । नरक निगोद सदा दुख भरै ॥

परवत द्वारा सन्यास

परवत ने अति चढ्या कलंक । छोड्या नगर लोक की संक ॥७०१॥

संन्यासी पै दिक्षा लई जाय । पंच अग्नि साधै मन लाय ॥
देही छोडि हुवो वह देव । अवधि विचार पाप कै भेद ॥७०२॥

षोडस बरस की देही करी । कंध जनेऊ धोती धरी ॥
गोपीचन्दन द्वादस तिलक । राते नयण सो भयो पलक ॥७०३॥

पोथी कांधिर जटा लटकाय । असा धरा देव नें भाव ॥
मेरा मुखतै निकली बात । मैं अब करउं जगत विख्यात ॥७०४॥

विप्र संन्यासी वेद पढाई । इह विध प्रकट करै सब ठाई ॥
पाप भेद भणै जे विप्र । पाप वुधि मे भए विचित्र ॥७०५॥

मारुत राजा को संबोधन

सव्रत रिधिस्वर राजगिरि जाइ । राजा मरुत समोध्या आई ॥
कहीक जज्ञ करो तुम एक । बडा रचाउ युगल अनेक ॥७०६॥

सकल जाति के आणौं जीव । रानो बांधि उणां की ग्रीव ॥
औंडा खाडा खणावो बडा । तिहां उनने होमैं भरि घडा ॥७०७॥

वहै जीव पावैंगे सुर लोक । होसी जस तुम लही हो मोक्ष ॥
होम जज्ञ विधि राजा ववी । देस देस ने दीन्ही चिठी ॥७०८॥

सव कुटंब वांभण सब चले । देस देस के भूपति मिले ॥
जज्ञ की ठांम पहुंते आय । च्यारौं वेद पढै तिहिं ठांय ॥७०९॥

नारद कथा

श्रेणिक पूछै नारद की कथा । इसका था कुण माता पिता ॥
ब्रह्मरुचि ब्राह्मण परमातिरी । संन्यासी की दिक्षा धरी ॥७१०॥

दंपति पंच अगनि करि जोग । कबहूं मांनैं मनका भोग ॥
कंद मूल का करै अहार । भई गरभ थिति परमा नारि ॥७११॥

मुनिवर तत्र आई निकलै । देखे दंपति जप तप तिहां करैं ॥
मुनिवर वात धरम की कही । उन दोन्यां मिल जिय में धरी ॥७१२॥

जैसैं नर कोंबै नहि द्वार । बहुरि करै नहीं अंगीकार ।।
जे जोगीस्वर माया गहै । परिग्रह बहुत कीयां जे रहै ।।७१३।।

जिसका जनम अकारथ जाइ । अंतकाल पीछे पछिताय ।।
तिरणां मात्र न परिग्रह लेह । वाकौं सब कोई उपमा देइ ।।७१४।।

जे तुम जोग करो घन तजो । माया छोडि जिनेस्वर भजो ।।
ब्रह्म रुचि का संसय मिट गया । स्त्री त्याग दिगंबर भया ।।७१५।।

परमा कहै मोहि दिक्षा देहु । जैन धरम पालो धरि नेहु ।।
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । गर्भवती नहि ले दीक्षा सार ।।७१६।।

तब वह स्त्री वन में ही रही । दसमास पूरण निरमई ।।

नारद का जन्म

भया पुत्र नारद रिष मुनी । माता मनमें सोचै घनी ।।७१७।।

मैं दिक्षा लेकर तप करौं । अवर न कछु चित्त में धरौं ।।
या का निमित्त हाय सो सही । मेरे माया मोह कछु नहीं ।।७१८।।

पानां मांहि लपेटया पुत्र । तरु तलि म्हेल्या लक्षण संयुक्त ।।
इन्द्र मालिनी अर्जिका पैं जाय । लीन्ही दीक्षा मन बच काय ।।७१९।।

वहां वालक नित वधै पुंनीत । पुन्यां कैं कछु होय न चित्त ।।
पुन्यैं रिक्षां करैं सब कोइ । सगलें पुण्य सहाई होय ।।७२०।।

जंबक देव जात हो चल्या । थक्या विमांण न ह्वां तैं हल्या ।।
अवधि विचारैं सुर मन माहि । नारद मुनि हैं या वन ठांहि ।।७२१।।

देव आय करि लिया उठाय । विजयार्द्ध पहुंचाया जाय ।।
गुफा बीच ले राख्या वाल । देव करैं ताकी प्रतिपाल ।।७२२।।

नारद का जीवन

विद्या पढि पारंगत भया । वृहस्पति का सा लक्षण लिया ।।
आकास गांमनी विद्या पाइ । भीड देष करि राजगिर जाइ ।।७२३।।

मनमें सोच करवि आपणें । वनमें लोग मिलैं क्यों घणे ।।
कौंण परबया नगर मझार । भीड़ जुडी क्यौं इतनी बार ।।७२४।।

नारद मुनि देखैं धरि ध्यांन । ब्राह्मण बहु बैठे तिहिं थांन ।।
बहु तपसु जिहां राखे घेर । होम क्रिया चाहैं तिहिं बेर ।।७२५।।

तिहां नारद मुंनि पहुंता आन । जटाजुट धोतीं तरहांन ।।
कांध जनेऊ पोथा लिये । हाथ कमडल पीची किये ।।७२६।।

देव शब्द वाता संस्कृत । नारद जांनि द्विज आदर कृत ।।
नमस्कार करैं सब लोग । वंदनीक सब पूजण जोग ।।७२७।।

संवृत नें पूछया वृत्तान्त । जीव जंत क्यों घेरे भ्रान्त ।।
भणै विप्र इण को ह्वै घात । अग्नि बीच होमैंगे प्रात ।।७२८।।

नारद का उपदेश

नारद मुंनि बिप्र सो कहे । मारया जीव नरक दुष लहै ।।
दया भाव सर्वज्ञ के बैन । दूपन दीजे देषत नैन ।।७२९।।

सकल आतमा आप समान । सब की दया कही भगवान ।।
संवृत द्विज नारद प्रति भनैं । रूप रेष अरु सबद न जिनैं । ७३०।।

उन सरवज्ञ किम थापी दया । तू मूरिख कछु भेद न लिया ।।
नारद बोलैं सुनि विपर अज्ञ । रूप न रेख जैन सरवज्ञ ।।७३१।।

पाए भेद ए तो किण कह्या । जिसके कहैं वेद तुम लह्या ।।
महा अनर्थ लिखा जिहं बीच । असा करम करैं नहि नीच ।७३२।।

ब्राह्मण कहै ब्रह्मा का ग्यांन । जिन सब रची सृष्टि परवांन ।।
ए सब पशु होम के काज । ब्रह्म वचन महकिया साज ।।७३३।।

नारद मुनि फिर उत्तर देय । जे ब्रह्मा सब सृष्टि करेय ।।
ते सब हुए पुत्र समांन । वानै दहन क्यों किया बषान ७३४।।

पसु तृणचारी है वनबास । इनके जिनका न करिये नास ।।
त्रिषा भूष धूप ए सहैं । ऐसे दुःख छहौं रितु लहैं ।।७३५।।

तिनको कहा कीजिए घात । हिंसक है बिडाली जात ।।
जीव बद्ध तैं मुक्ति न होय । आपण पाप करैं जे कोय ।।७३६।।

चारौं गति में सह संताप । जब वे आणि उदै ह्वै पाप ।।
मन वांछित नही पूजै आस । भंवर दारिद्र तजै नहि पास ।।७३७।।

जै गयंदनी माणस जणैं । तुरी गर्भ हसती गति वणैं ।।
गदही उदर तुरंग प्रसूत । तो हत्या तैं मुक्ति संयुक्त ।।७३८।।

राजा वसु ने लेहु हुंकार । नरक छोडि आवै इस बार ।।
ह्यां तैं उठि मुकति नैं चलैं । तो जग दाह जाणौं मैं भलैं ।।७३६।।

नारद पर उपसर्ग

जग्य करया राज मनवसीकरण । विषय पंच इन्द्री का हरण ।।
संतोष विप्र नै दक्षिणा दई । केश लोचनां क्रोध करेई ।।७४०।।

ध्यांन अगनि मैं जालै कर्म । इस विध होम किये ह्वै धर्म ।।
विप्र संन्यासी उठ्यो रिसाइ । नारद परि सब आए धाय ।।७४१।।

कोई मूं की कोई लात । नारद मुनि मारयो बहु भाति ।।
नारद कै मन उठयौ अहंकार । गही सिला सब उपरि मार ।।७४२।।

वे अनेक इहां एक सरीर । इण विध परी नारद पर भीर ।।
पकडि लिया दोऊ कर बांधि । सास उसास पाई असमाधि ।।७४३।।

पापी मिलि दुख दिया बहुत । रावण का तिहां आया दूत ।।
देखा बाडा पसू अति जीव । नारद ऋषि की बांधी ग्रीव ।।७४४।।

सो देखि उपसर्ग सो पाछा फिरया । देख पाप मन कोप्या खरा ।।
हिंसा घणी कही नही जात । रावण सों कही रिष की बात ।।७४५।।

रावण द्वारा नारद की सहायता करना

रावण सेना सहा पठाइ । कही मरुत नें बांधो जाइ ।।
बाजे मारू दौडे सूर । दसौं दिसा सु रही भर पूर ।।७४६।।

बाडा तोडि पसू सब छोडि । नारद ऋष के बंधन तोडि ।।
राजा मरुत बांधि गहै लिया । विप्र संन्यासी धका दिया ।।७४७।।

आग्या असी रावण दई । ए सब मारो पापी सही ।।
ए पापीष्ट पाप का मूल । दया भाव इण कै नहीं सूल ।।७४८।।

इनहि मारि षोउ अवषोज । फेरन होय पाप का बोझ ।।
जीव विणास बतावै धरम । असा करै नीच का करम ।।७४९।।

इनके मारे का नही पाप । ए जीवा नें मारै आप ।।
मारि इननैं परलय करूं । इनहि बेग तुम दहवट करउं ।।७५०।।

नारद मुनि चित आयी दया । रावण नैं उपदेस इम दिया ।।
ए बांभण उत्तम कुल भले । रसना लंपट कुमारग चले ।।७५१।।

आदि पुराण में इनका भेद । सुणौं भूप हूं कहौं न भेद ।।
नाभिराय कैं रिषभकुमार । तियासी लख पूरब राज सभार ।।७५२।।

ऋषभ वर्णन

रही आंव पूरब लष एक । इन्द्रौं के मन भया विवेक ।।
ए हैं प्रथम तीर्थंकर देव । इनतें चलई धरम का भेव ।।७५३।।

ए माया में रहे भुलाय । मन वैराग्य उपजै किहु भाय ।।
एक अपछरा थी परवीन । जाकी आव घडी दोय तीन ।।७५४।।

राज सभा में नाची भली । देख नृत्य उपजी मन रली ।।
निरत करत तहां पूरी आव । खाइ पछाड परी भुवि ठाव ।।७५५।।

बोले भूप उठावो याहि । याकी वेग गहो तुम बांह ।।
मंत्री कहैं यह पातर मुई । तब बैराग चिमक चित भई ।।७५६।।

छोड्या सब पृथ्वी का राज । आपण चले धरम के काज ।।
भरथैं दिया अजोध्या राज । बाहूबलि पोयणपुर साज ।।७५७।।

च्यार सहस राजा भए संग । दया भाव चित लहर तरंग ।।
बनमैं मौंनि गही जिनराज । राजा अवर उठै अकुलाइ ।।७५८।।

भूख छहमासी सहियन जाय । जो अपणे घरि चलिये धाइ ।।
तो फिर हमें भरत दुख देइ । अैसी मनमैं चित्त धरेय ।।७५९।।

वन फल खाई पीवें नीर । जोगी संन्यासी तप सहे सरीर ।।
एक हजार वरष गए बीत । श्री जिण उपज्या केवल चित्त ।।७६०।।

केवल वाणी संशय हरैं । ताहि सुणत भव सायर तिरैं ।।
चक्रवर्ति भरत बाहुबलि बंड । जिन भुजबल साधे छहु षंड ।।७६१।।

लक्ष्मी जुडी भरघा भंडार । जिसका गिणत न आवै पार ।।
गिर कैलास शिखर देहुरा किया । रतनबिंब संवराया नवा ।।७६२।।

तो भी लछमी घाटै नहीं । दाण देण इच्छाउ मही ।।
कोई न लेन दांन नैं आइ । तब बामण कूं थापै राय ।।७६३।।

आदिनाथ स्वामी पै गया । ब्राह्मण का ब्योरा सब [illegible] ।।
रिषभ देव की वांणी भाई । इह उपाधि तुम थापी नई ।।७६४।।

जैन धरम के निंदक होंइ । पाप उपदेस कहेंगे लोइ ।।
भरत भनैं इन कग्गिहू दूरि । सब को मारि मिराऊं मूल ।।७६५।।

श्री भगवंत चित दया दिठाय । सकल ब्राह्मण दिये छुडाय ।।
चौथा बरण उण सेती हुआ । चोटा वेद अब थाप्या जुवा ।।७६६।।

सुभूमि चक्रवर्त्ति किये संघार । तपसी ग्रहस्त भये तिह वार ।
तव तैं फेर भये उत्पन्न । छोडो इन ज्यौं पावो धन्न ।।७६७।।

बांमरण छोडि दिया ततकाल । विनयवंत बोले मरुत भूपाल ।।

रावण का कनक प्रभा से विवाह

कनक प्रभा पुत्री गुणमई । रावण प्रति विवाह कर दई ।।७६८।।

एक वरस इस वौस्या ठांम । राजा मरुत ने सुख के भाव ।।
कनक प्रभा के भई प्रसूत । चित्रा पृथ्वी लक्षण संयुक्त ।।७६९।।

हेमांचल गिर रावण गया । भूपति सकल अग्य करि नया ।।
हेमांचल परवत रमणीक । ता ढिग भूमि खरी सोभनीक ।।७७०।।

महल करण की इछा करी । सब मिल समभावैं मंतरी ।।
ह्या के रहैं परदेसी नाम । नाम लंका है पुरखां की ठांम ।।७७१।।

उनहीं लौक जांणै सब कोइ । ह्या कै वसैं न कारज होइ ।।
तब फिर कौं मारग कौं चल्या । देखैं रूप सराहैं भला ।।७७२।।

राजगिर नगर में निकल्या आय । देखैं रूप रावण बहु भाइ ।।
कोई अटारी देखैं नारि । झांखि झरोखा ऊंची द्वार ।।७७३।।

कंई गली कंई बाजार । सबैं किये सोलह सिणगार ।।
पुरुष रूप देखैं सब लोग । बहुरि सराहै पुण्य संजोग ।।७७४।।

जिणपद नगर जैसे नरेस । रावण नैं जीतै सब देस ।।
मिल्या समाउ अस्तुति करी । पुत्री ब्याह दई सुंदरी ।।७७५।।

रावण मनमें बहुत उल्हास । देखैं नगर सकल चिहुं पास ।।
प्रजा सुखी इम देह असीस । रावण जीवो कोडि वरीस ।।७७६ ।

बहुत दिवस बीते इस गांव । बहुरो चले आपणें ठाम ।।
सकल लोग मन भया उदास । जे अबके रहते चोमास ।।७७७।।

उदर पूरणां कर वे लोय । यां के आवा भयो वियोग ।।
असाढ बदी दोयज की घडी । चरणा की मन इछा धरी ।।७७८।।

वरषा आठ दिवस की झडी । चतुरमास की छांवण करी ॥
सबही की पुंगी मन आस । रावण भुंजै भोग विलास ॥७७९॥

रहै सतखनैं महल आवास । सोलह सहस्र राणि हैं पास ॥
राग रंग गावैं मल्हार । अंबरषै अति घन हन धार ॥७८०॥

मोर झंगार पपीहा रटा । चउंधा मंडी काली घटा ॥
विजुली चिमकैं गरजैं घनां । असा सुख रावण नैं बन्या ॥७८१॥

भाद्रपद के व्रत

कोई बठाउं भीजत जाइ । कीचड मांहि बहुत दुख पाय ॥
भादौ मास धरम का थान । पूजा बणी सामग्री आण ॥७८२॥

सोलहै कारण का व्रत करै । दया अंग निस वासर धरै ॥
पूजा रचना मैं बीतै घडी । चरचा करै जैनमत खरी ॥७८३॥

दस लाक्षण का पालै अंग । बहुत वरत धारी ता संग ॥
चदवा तणां बहुत देहुरै । रंग सुरंग विछवणां करै ॥७८४॥

रतनत्रय व्रत पालै लोग । मन वच काया साधैं जोग ॥
पूरणवासी पूंनिम चंद । रहस रली मनमे आनंद ॥७८५॥

सब ही मे दीनी ज्योणार । वहुत बीनती कर मनुहार ॥
पुण्य प्रसाद अधिक सुख भया । देस देस सुख भुगत्या नया ॥७८६॥

इति श्री पदमपुराणे राजा .कृत व्रत विधानकं ॥

चौपई

दशम विधानक

रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह

रावण मनमें समझै ग्यांन । कन्यां वेसकर भई प्रमांन ॥
उत्तम कुल कोई देख कुंमार । करो काज सुख बरी विचार ॥७८७॥

बहुरं कहं इन्द्र नर दौड । कैसी बात बणाइक भोरि ॥
कन्या व्याह करि नीवरूं । मन वच का संसा परिहरूं ॥७८८॥

मंत्री देस वेस कौं चले । पुरपट्टण सब देखैं भले ॥
आये मथुरा नगर मझार । हरिवाहन नृप माधवी नारि ॥७८९॥

मधुव पुत्र महा बलवंत । रूप लछन छवि शोभावंत ॥
सम्यग्दृष्टी महा विचित्र । नांम सुणत सब कांपै सत्रु ॥७९०॥

मंत्री देख भया उल्हास । चितमो पुरवी मनकी ग्रास ॥
हरिवाहन सुं कही समुझाय । मधु कुंवर नै देहु पठाइ ॥७९१॥

रावण पासि चला तिह बार । मंत्री चतुर ग्रधिक ग्रसवार ॥
बरछी हाथ गही हथियार । वाके गुण का ग्रंत न पार ॥७९२॥

रावण पास जब गया कुंवार । नमस्कार करि करयौ जुहार ॥
ग्रधिक रूप देख्यौ भरि नैन । सुभ मंत्री विनवै सुभ वैन ॥७९३॥

मध हरिवंसी है बलवंत । विद्या विनय बहुत गुणवंत ॥
वरछी दई देवता सित्त । दुरजन देख भजैं भयभीत ॥७९४॥

या सनमुख कोई रहै न सूर । विद्याधर देखिर भाजैं दूर ॥
ग्रैसे गुणवर वीर के बडे । जिहां लग चाहैं तिहां लग वढे ॥७९५॥

सेव तुमरि चित्त में धरी । ग्राया सेव करण इस घरी ॥
रावण देख किया बहु भाव । टीका किया ग्रधिक मन चाव ॥७९६॥

भली घडी सुभ दिन साधिया । मंगलाचार कुंवर का किया ॥
सोवा दीनां ग्रगम ग्रपार । भांति भांति की करी ज्यौंणार ॥७९७॥

मधु चित्रा समदे सुभवार । मगन रहै नित भोग मझारि ॥
सुख में बसै मधुपुरी देश । हरिवंसी सुख करैं ग्रसेस ॥७९८॥

मधु का वृतान्त

फिर श्रेणिक पूछैं करि जोडि । मधु की कहो मुझ बात बहोडि ॥
देव मधु किम हुवा नेह । ज्यो मेरा भाजै संदेह ॥७९९॥

तव श्री जिण की वाणि भई । सब के मन की दुविधा गई ॥
धातकी द्वीप ग्रैरावत क्षेत्र । धारा नगर तिहां राय सुमित ॥८००॥

विभवौ नाम ब्राह्मण पुत्र । दोन्युं विद्या पढैं विचित्र ॥
ब्राह्मण पुत्र ग्रधिक ग्राधीन । पड्या गिरया कणका लैं बीण ॥८०१॥

नित प्रति भिक्षा मांगिर खाई । ग्रैसी ही विध काल विहाय ॥
राय सुमित्र विद्या था वौल । राज बैठि तुझ करूं ग्रमोल ॥८०२॥

बैठ्या राज तबै सुध भई । बहुत विभव ब्राह्मण नें दई ॥
ग्राप बराबरी बांभण किया । राजा वन क्रीडा नें गया ॥८०३॥

घोडा छुट्या भील की पुरी । वन देख्या सब सुध वीसरी ॥
तिहां राजा भीलैं ने गह्या । व्याही वनमाला सुख लह्या ॥८०४॥

मास एक बीत्या तिण देस । फिर आया निज नगर प्रवेस ॥
ब्राह्मण सुणि राजा प्रति मिल्या । देखी वनमाला चित चल्या ॥८०५॥

जो ऐसी मैं भोगउं त्रिया । तौ सुख मांनौ यह चित दया ॥
या के अधिक वियाप्या मैन । निस बासर देही नहीं चैन ॥८०६॥

कामस ब्रह्मा हर तप टरया । तप सब खोइ चतुर सुख करया ॥
संकर नाच्या गदा कर ल्याइ । तप खोयो रसनारि लुभाय ॥८०७॥

कामणमंद है अति बलवंड । धन्य जिको जिन राख्यो दंड ॥
ब्राह्मण छीजै दिन दिन देह । राजा कै मन भया सदेह ॥८०८॥

इह क्यों दुरबल हुवै घणां । या कै भेद न जावै भणां ॥
विप्र प्रतै नृप पूछै बात । तुम अपणां भासो विरतांत ॥८०९॥

किस कारण तुझ षीण सरीर । तो कुं है काहै की पीर ॥
सांची बात कही समझाय । तो मेरो संसय मिट जाय ॥८१०॥

ब्राह्मण कछू न बोलै वैण । वाकै दाह लगाई मैंण ॥
लाज सबद बोलै किस भांति । कांम अगन कैसे हिसिरात ॥८११॥

छोडी लाज सुणाया भेद । इह वणमाला कारण खेद ॥
राजा कहै सुणों द्विज मित्त । तुम कछु मनमें नाणउं चित्त ॥८१२॥

जो वह इच्छै तो तुम लेहु । मैं तोकुं दीनी निसंदेह ॥
उठ्या विप्र देवी घट गया । राणी कुं उपदेस इह भया ॥८१३॥

तुम जाओ देयी की जाउं । मढ बाहर सखीय बैसाउ ॥
राणी मढ के भीतर गई । देखि सेज बिछाई नई ॥८१४॥

ब्राह्मण वचन पयंपै ताहि । राणी देखि रही मुरझाइ ॥
ब्राह्मण सुं बोलै वनमाल । परनारी जैसा है काल ॥८१५॥

विषै न खाय मरै अग्यांन । नरक जाहि वे जीव निदांन ॥
जे नारी परपुरुष को रमैं । सो नारी नीची गति भ्रमै ॥८१६॥

सूकरी कुकरी गदही होइ । खोटी गति में भरमैं सोइ ॥
इक तिल सुख बहु बहु दुख लहैं । छेदन भेदन के दुख सहैं ॥८१७॥

ताब फूतली ल्यावैं अग । ए फल लहैं सील कौर भग ॥
द्विज के मन को मिटयो कुफंल । दया भाव प्रगट्यो सुभ सील ॥८१८॥

आप करैं निंदा आपणी । खोटी बुधि करी मैं घणी ॥
ऐसा मैं चिंत माण्यां पाप । सो क्यों मिटै कियां विललाप ॥८१९॥

खडग काढि निज कांधे धरया । प्रछन्नसों नृप देखें खड़ा ॥
तव नृप द्विज का पकड्या हाथ । बहुत पाप उपजै अपघात ॥८२०॥

पाप करैं अगनि जल मरैं । विष फांसी कूवे गिर पड़ैं ॥
वाकुं नरक घणां भव होय । ताहि सहाय करै नहीं कोइ ॥८२१॥

ब्राह्मण गयों देस सब त्याग । सरि करि भ्रम्यो धरया बहु सांचि ॥
एक दिवस घनहूर घनघोर । चली पवन उडि गए बहोरि ॥८२२॥

राजा देखि भयो वैराग । राजविभूति त्रिया सब त्याग ॥
सुतने निज पद दियो नरेस । आपण लियो दिगंबर भेस ॥८२३॥

देही छोडि गया ईसान । पाया जित स्वर्ग लोक विमांण ॥
उन द्विज भ्रमत नर देही धरी । संन्यासी की तपस्या करी ॥८२४॥

मरि कर भया तिरच्छक देव । अवधि विचार किया बहु भेव ॥
सुमित्र राय था मेरा मित्र । उन मुझसौं राखी बहु प्रीत ॥८२५॥

अब वह मध्य लोक अवतरा । मधु सुमित्र मिलु मो धरा ॥
रतन बहुत तिन मधु नें दिया । वरछी एक बहु गुंणी थिया ॥८२६॥

सब सुख सौं राजै मधु भूप । कहां लग वरणाउं तास स्वरूप ॥
अठारह वरष गये जब बीत । बहुत देस के भूपति जीत ॥८२७॥

तब कैलास परवत परि गया । श्री जिण बिंब चरण प्रति नया ॥
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी । पढै मंत्र जिनवाणी खरी ॥८२८॥

दुर्लिगपुर नल कुबल दिगपाल । सुणि रावण आया भुपाल ॥
तिनने जीते हैं बहु देश । जब उन इहां कीन्ह परवेस ॥८२९॥

पत्री इंद्र भूपनें लिखी किंकर जाय दीनता भखी ॥
रावण नलकूवड परि गया । चिट्ठी वांचि करो तुम दया ॥८३०॥

प्रभुजी उसका ऊपर करों । नलकुबड़ का भय तुम हरो ॥
इन्द्र करै पूजा जिण नाथ । सेना दई दूत के हाथ ॥८३१॥

युद्ध वर्णन

मद गाढा सौं जैसों भरो । बाहिर नींकल मत लरो ॥
आप गया पांडव वन जान । पूजा करी लिये पंच नांम ॥८३२॥

वे गढ में पहूंचे सब आय । दीये किवाडें भीतर जाय ।।
सो जोजन ऊंचा गढ देखि । दस जोजन चौंडा सु विसेष ।।८३३।।

कांगुरे कांगुरे धरी कुबांन । हयनां लांका अंत न आंन ।।
पूजा करी रावण नीवरघा । देख्या गढ तापर मन भरघा ।।८३४।।

सूर सुभट बहु दिये पठाय । गढ नें हाथी दिये ढकाइ ।।
दांत टूट कर मस्तक हनें । इनका कछु दाव नहीं बनें । ८३५।।

रावण पर तब आये धने । असे कठन न देखे सुने ।।
गोला गोली लगे न बाण । ता गढ परि क्या चलै सयान ।।८३६।।

यह सुणि रावण चढघा विमांन । ग्यारह सैं क्षोहणि बलवान ।।
ऊपर तैं गोंली की मार । उलटी सेन्यां होई संघार ।।८३७।।

च्यार जोजन गोला बिस्तार । जहां पडै तहां परलय कार ।।
बहुते लोग जुडे सावत । तब बोले मंत्री विनयवंत ।।८३८।।

यह गढ कठिन आवें नहि हाथ । अब फिर चलो लंकापति नाथ ।।
बोले भूप महा बलवंत । जो छेऊं तो लोग हसंत ।।८३९।।

अब इहां रह करि करो उपाव । जो गढ आवें किण ही दाव ।।
कैलास की खोह में मोरचे किए । बहुत उपाव बिचारैं नए ।।८४०।।

ऊपर भा नल कूवर धनी । रावण के चित चिंता घणी ।।
रूपवंत सुनिये है सही । उन जीती है सगली मही ।।८४१।।

एक बार हूं दरसन करउ । दससिर देख सुख मन धरउ ।।
वनमाला दूती नें टेर । रावण पासि जाय कैं बेर ।।८४२।।

असैं कोई सूरां नहीं कोइ । कहिए अंतहैपुर की ठोर ।।
जो तुम ढील काम की करो । प्रांण वेग तुझ पर हां करो ।।८४३।।

दूती कहै अब मोहूं जाय । जंद फंद सों आनौं राय ।।
आभरण सजि कैं दूती गई । जोहन मोहन विद्या लई ।।८४४।।

मंदिर मांहि निरभय व्है धसी । रावण देखि मन में अति हंसी ।।
पूछो राय कहो सत भाव । कवण काज आयी इस ठांव ।।८४५।।

नलकूबर की है पटधनी । रूपलक्षण सोहै अति धनी ।।
तुम सौं बहुत कही बीनती । दरसण देहु कृपा करि अती ।।८४६।।

अब तुम उठो चलौ उस पास । दोन्यां की पूरै मन आस ।।
रावण कहै दूती सौं बात । पर रमणी सग नरकं जात ।।८४७।।

जैसी भूंठी पातल पडी । असे नेह जाणौं पर तिरी ।।
जैसे उलगण डारैं कोइ । कुकर दौडि गहै फुनि सोइ ।।८४८।।

असी जाणि पराई नारि । सत्त न छोडूं इस अवतार ।।
दूती बोली फेर रिसाइ । तोहि अभाग उदय भयो आय ।।८४६।।

जे तू वाकीं मानै बात । गढ तोकौ आवै परभात ।।
रावण कही मंत्री सों जाइ । बैठि मतो तहां कियो उपाइ ।।८५०।।

मत्री समझि सीख यह दई । विद्या वा पै है गुणमई ।।
रस में लेहु वे विद्या मागि । पाछै उसने कीज्यौ त्याग ।।८५१।।

रावण फिर दूती पै गया । राणी प्रति संदेसा दिया ।।
तुम मेरी इच्छा जो धरो । वेग आय तुम दर्शन करौं ।।८५२।।

रावण पासि सौ दूती गई । रस की बात घणी वरणई ।।
राणि कै मन भयो आनंद । विगसै जेम कुमोदनी चंद ।।८५३।।

विद्या सुमरि करि चढी विमांण । रावण की ढिग पहुंची आन ।।
बैठी सेज्या ऊपरि जाय । काम लहरि कहुं कहा समाय ।।८५४।।

रावण कहै देवी तुम सुणौ । गढ परि जावा चित मुझ तणौं ।।
राणी जपै सुणौं नरेस । मैं तुमकौ भेजा संदेश ।।८५५।।

तुम तो आये नहीं उस ठांम । अब किस विध जैहो उस धाम ।।
रावण कहै विद्या मुझ देहु । तो मैं तेरा कह्या करेउ ।।८५६।।

रावण द्वारा विद्या प्राप्ति

तब राणी विद्या दी भली । रावण की पूजी मन रली ।।
असालक विद्या सब तैं बडी । वज्रसाल गढ तिन सौं मढी ।।८५७।।

वे विद्या पाई तिह वेर । तब सेन्यां लीया गढ घेर ।।
तोडै पोलि कपाट मयंद । धंसे सुभट बाजे जय द्वंद ।।८५८।।

रावण की विजय

लूट लिये सब हाट बाजार । नल कुबड तब सुणी पुकार ।।
चढ्या कोप बांधे हथियार । सूर सुभट सब लिये हंकार ।।८५६।।

आया धाय इण पर केड़गी । देखत सब की सुधि बीसरी ।।
भभीषण सन्मुख दोड्या जाय । दुहूधा जुध भया अधिकाइ ।।८६०।।

नलकूबड बांधिया तुरंत । भभीषण जीत्या बलवंत ।।
वज्रमाल गढ सम नहीं और । बहुत देस पहुंच्या यह सोर ।।८६१।।

रावण का जस प्रगटया घणां । उपरंभा मांनै सुख घणा ।।
मैं विद्या रावण नें दई । गढ पायार जीत तब भई ।।८६२।।

मेरी बहुत करैगा कांग । गई अंत:पुर ऐसी जांणि ।।
रावण नै बहु आदर दिया । माता वचन मुख सौ बोलिया ।।८६३।।

तुम गुरणी मुझ विद्या दई । तुम मुझ मात धरम की भई ।।
गुरणी माता साह की स्त्री । आवज आश्रित गांव पुत्री ।।८६४।।

इतनी माता पुत्री समान । जोग अजोग करै पहिचान ।।

नलकूबड को राजा से बात

नल कूबड कौ लिया बुलाय । तिणसौं कही बात समझाय ।।८६५।।

जो तुम चाहौ आपण देस । तो मुझ आप मांनौ द्यौ येस ।।
जो तुम कुछ इंछा सो देउ । अब तुम मांनौ म्हारी सेव ।।८६६।।

अपरभा माता की ठोर । तुम दृढ राज करो सुबहोरि ।।
नलकूबड बोले करि ग्यांन । मैं पाया है इंद्र का थांन ।।८६७।।

निज प्रति बोझ अवर का होय । ताकौ भला न कहसी कोइ ।।
जनम जनम को चढ़ै कलंक । अपने जी की मानें संक ।।८६८।।

नल कूबड छोडी वह नारि । विजयार्द्ध पहुंच्या तिहबार ।।
रथनूपुरहं इंद्र पै गया । सब वृत्तान्त नर वैसो कह्या ।।८६९।।

सुणी बात जब कोप्या इंद्र । रावण नें हुं ल्याउं बदि ।।
मैं उनने दीन्ही थी छूट । उन देश मे मचाई लुटि ।।८७०।।

देखि जु वाहि लगाऊं हाथ । ऐसी फिर न करै किण साथ ।।
पूछ्या जाव फिर तासूं मता । ऐसी बात सिखाओ पिता ।।८७१।।
जिह विधि रावण नैं ल्यौ जीत । युद्ध तणी समझावो रीत ।।
सहस्रार बोलै समझाय । रावण राक्षसबंसी राइ ।।८७२।।

उन कयलास छत्र सिर लिया । वैश्रवण जम को दुख दिया ।।
बज्रसाल गढ लिया छिनाय । बहुत भूपती साथे जाय ।।८७३ ।

तुम वासौ किम सर भर करौ । रुपणी कन्यां दे क्रोध परिहरो ।।
अपणां कीज्यो निरभय राज । निज बल समझ कीजिये काज ।।८७४।।

इन्द्र द्वारा क्रोध करना

तबै इंद्र बोलिया रिसाइ । पुरखा भय बुधि सब जाय ।।
जे छत्री मरने तै डरै । तेवौं नरक निगोदौं परै ।।८७५।।

मैं केहरि वह दंती आइ । भाजै देखि सीध की छाइ ।।
मैं अब लग कीनी है गई । वाकौं बुधि मरण की भई ।।८७६।।

सूरवीर सब लिये बुलाइ । देस देस के आए राय ।।
हय गय रथ साजे तिहां घने । सब सामंत देव से बने ।।८७७।।

संजी धनुष लिये बहु बाण । जम धरम डग भले नीसांन ।।
लाख पचास हस्ति चलै डोर । आगै बानै धारी श्रोर ।।८७८।।

रावण की सेना

उनतें रावण सेन्या साजि । निकस्यो युद्ध करण के काज ।।
वानर बंसी राक्षस बंस । घणे भूपति उत्तम अंस ।।८७९।।

दैत्यनाथ षडदूषण भूप । देश देश के सुभट अनूप ।।
सब सामंत मन माहि अडोल । पालैं अपने प्रभु के बोल ।।८८०।।

पचपन लाख डोरि गज चले । अस्व अनेक सौभै तिहां भले ।।
ग्यारसय छोहणि दल संग । सिलह संजोग बने सब अंग ।।८८१।।

दोउ सनमुख दल भये आय । दोनूं तरफै घुरे नीसांन ।।
छूटै तीर तुपकहथनार । जैसे वरषै घनहर धार ।।८८२।।

दुहुधा लडै सूरमा बली । दोन्यु सेन्या बहु विध दली ।।
राक्षस रूप लडै विकराल । वानर बसी सब मुख लाल ।।८८३।।

देखि इन्हैं भय उपजै घनी । देव जेम विद्याधर गुणी ।।
मारै खडग मुंड गिर पडे । रुड मुंड बहु लडते फिरैं ।।८८४।।

मही इन्द्र सेनापति तिहबार । भई अर्भीषण स्यौ तरवार ।।
सेनापति झूझ भुईं गिर्‌या । श्रीमाली तब ऊपर कर्‌या ।।८८५।।

कुंभकरण तब कीन्ही दौर । सूरवीर झूझे दुहुं और ।।
इंद्रजीत मेघनाद तब धसे । घणे लोग जम मंदिर बसे ।।८८६।।

सिषबाहनर कनक प्रभ सूर । तिनऊ जुध किया भरपूर ।।
श्रीमाली माल्यवांन का पूत । धाइ लड्या सेनां संयुक्त ।।८८७।।

दुरजन दल ए परलय किया । रुधिर तणां अति नाला थया ।।

इन्द्र द्वारा युद्ध

इन्द्रभूप आया चढि बली । जै अंत पुत्र संग सेन्यां भली ।।८८८।।

पुत्र पिता सौं विनती करै । मेरा कह्या क्यौं न उर धरै ।।
मोकुं आज्ञा दीजे आज । वेग संवारौं तुम्हारा काज ।।८८९।।

रावण कौं बांधौ जब आय । मोहि पराक्रम देखो राइ ।।
कहै इंद्र पुत्र सों बात । तुम हो बालक कोमल गात ।।८९०।।

अब तेरे खेलण की बात । तुम सुख भुगतो इण संसार ।।
बालक क्रीडा की है वयस । तुम बिण काज कवण इह देस ।।८९१।।

तेरा मरण केम देखु नैण । असे कहै पुत्र मों वैन ।।
जैवंत इन्द्र बोलै करि जोडि । तुम पर बैठो निरभय ठौर ।।८९२।।

रावण पकडौ सेन्यां साज । ज्यौं पकडै तीतर नै बाज ।।
असी विध रावण नै गहुं । पलमांही सब सेन्या दहूं ।।८९३।।

जयंत इन्द्र करि तुरिष पलाण । भले लिये जोधा बलवांन ।।
श्रीमाली सुं लडा बहुत । लगी गदा भूं पडया तुरंत ।।८९४।।

सेवका आग करि लिया उठाइ । सीतल पवन वीभना बाय ।।
चल्या कुंवर लिये हथियार । हस्ती ऊपर भया असवार ।।८९५।।

श्रीमाली उपर मारि तरवार । माथा छेद भया तिह बार ।।
सेन्या विचल रावण की भई । इन्द्रजीत को इह सुध भई ।।८९६।।

करत चवै ज्यौं बरसै मेह । परवत समान पडी मृत देह ।।
सूर सुभट तिहां बहु कटे । पाछै पाव न कोई हटै ।।८९७।।

जयत कुंवर के लागा घाव । आया इन्द्र क्रोध के भाव ।।
इतरै रावण चढयां दससीस । सब हथियार गहै भुज बीस ।।८९८।।

सब सावंत लिये कर संग । दुरजन दल करवे को भंग ।।
रावण कहै दिखावो इन्द्र । कोस दोय देख्या मुखचंद्र ।।८९९।।

ग्रैरापति पर ग्रावत चल्या । छत्र चमर ता ऊपर भला ॥
इन्द्रजीत को घेरयो ग्राइ । इनका दल सब दीया हठाइ ॥६००॥

रावण देखी सुत पर गाढ । दोड्या तिहां क्रोध करि बाढ ॥
छूटे बांण ग्रगनि की जाल । मेघबांण ज्यों वरषा काल ॥६०१॥

ग्रस्व गयंद सूर बहु कटे । तउव न सैन दुहुंघा घटै ॥
रावण दया विचारै हिये । इत उत कौं यहां क्यों क्षय किये ॥६०२॥

रावण ग्रौर इन्द्र में युद्ध

मुझ ने तो है इन्द्र से काम । जासु सन्मुख करूं संग्राम ॥
सुमति सारथी प्रति समझाइ । इन्द्र साम्हां ही चलिए धाय ॥६०३॥

रावण चढ्या सिंह के रथ । हाथी चढ्या इन्द्र समरत्थ ॥
दोन्यूं भूप सामही लरैं । छुटैं बाण मेह जिम पड़ै ॥६०४॥

ग्रगनिबाण छोड्या मेघबांण । बुझी ग्रगनि उबरे बहु प्राण ॥
इन्द्र तणी सेन्या बहि चली । इन्द्र भूप विद्या सांभली ॥६०५॥

ग्रंधकार जब छोड्या बाण । भयां ग्रंधेरा गए ग्रोसाण ॥
उनकै सुझैउ नहिं ग्रंधेर । रावण का दल मार्या घेर ॥६०६॥

उज्वल बाण रावण चित किया । छुटत ही ग्रंधेरा मिट गया ॥
इन्द्र करै तब वज्र सौं मार । रावण क्यों नहिं मानैं हार ॥६०७॥

रावण चन्द्रहास कर गह्या । भई मार धीरज नहीं रह्या ॥
कातर भाजि छिपावै जीव । सूर सुभट नहीं मोडै ग्रीव ॥६०८॥

ग्रजित कुमार सौं इंद्रजीत । दारुण जुध भया भयभीत ॥
देखै झांक पिता की छोडि । हांकि गए दोउ नर तब छोड ॥६०६॥

किस ही भांति टरै नहीं पाव । इन्द्रजीत रह्या तिहिं ठांव ॥
इन्द्रै इन्द्रजीत कौ गह्या । वाथौंवाथि लरैं हैं तिहां ॥६१०॥

ग्रैरापति तैं दौउं उत्तरे । दोन्यूं भूप मल्ल जिम भिरैं ॥
कबहूं ऊपरि कबहूं तलै । ग्रैसा युद्ध किया उन भलैं ॥६११॥

पकड्या इन्द्र बांधि गहि लिया । लेकरि बंदीखानें दिया ॥
सब सेना मन भया ग्रानंद । निरभय थए मिटया दुख द्वंद ॥६१२॥

भूपति सकल ग्राय कर मिले । रावण फिर लंका गढ चले ॥
परियण माहिं बधावा भया । स्यौं कुटुंब लंका में गया ॥६१३॥

पुण्य प्रसाद जीत बहु भई । पुंण्य विभव चौगुणी थई ।।
तातै पुण्य करो मनल्याय । सुख संपति बाधै अधिकाइ ।।६१४।।

अडिल्ल

पुण्य तणे संयोग देश बहुते जुडे ।
जीते भूप अनेक बोल ऊपर करे ।
इन्द्र नरेन्द्रह साधि सकल जय जय भई ।
जैन धरम परसाद असाता सब गई ।।६१५।।

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्र प्रभाव विधानकं ।।

१३ वां विधानक

चौपई

सहस्रार का रावण के पास जाना

इन्द्र को सब रोवै रणवास । अन्नपानी तजि करै उपवास ।।
जयवंत कुंवर बहुत बिललाय । नगर लोग चिंतवै बहु भाय ।।६१६।।

सहस्रार करिकै मनुहार । समझाया सगला परिवार ।।
अबहुं रावण पासैं जाउं । मेरा कह्या मानैंगा राउ ।।६१७।।

इन्द्रनगरी मैं बुडाउं बंदि । ज्यौ परियण मे होय आनंद ।।
सब परियण कौं धीरज दिया । लंकौ नगरी पयाणा किया ।।६१८।।

मंत्री सुधर लिये नृप संग । रूपवंत सौभै सब अंग ।।
पहुंते लंका समुद्र मझार । देखी स्वर्ग पूरी उणहार ।।६१९।।

सिंघ दुवारै पहुंच्या भूप । बणी पोल तिहा अधिक अनूप ।।
पौलिये खबर रावण सौ करी । माहि बुलाया वाही घडी ।।६२०।।

राज्यसभा मांही नृप गया । रावण उठकर आदर किया ।।
सिंघासण बैठाया राय । पुरुषा जाणि करी बहु भाय ।।६२१।।

इन्द्र को छोडने की प्रार्थना

सहस्रार रावण प्रति कहै । पुत्र वियोग मम हिरदा दहै ।।
इन्द्रै छोड्या जस बहु होय । तुमारी कीरत करै सब कोइ ।।६२२।।

तुम आग्या मानैंगा इन्द्र । कृपा करिउ छोडो अब बंदि ।।
बोलै रावण आशा यही । नगर बुहारै नित उठ सही ।।६२३।।

धरती छिडकै अपणें हाथ । राणी चंदन विछकै साथ ।।
तो छोडुं उसने इण बेर । आग्या भंग करै नहि फेर ।।६२४।।

सुणी बात मन विस्मय भया । माथा नीचै राख्या नया ।।
तब रावण समभी मन बात । तुम पुरुषां जैसा हम तात ।।६२५।।

बोले सहस्रार सुभ चैन । मंत्री सबद होय मन चैन ।।
हमही इन्द्र समभाया घणां । महाबली उपज्या रावणा ।।६२६।।

तुम उसकी सेवा करि जाय । असे उसने रहै समभाय ।।
असुभ करम ताकी मति हरी । सीख हमारी लागी बुरी ।।६२७।।

उन तुमसूं किया युध जु घणां । पुरुषा वयण सबै अवगणा ।।
पुरुषा का मान्या नही कह्या । तो दुख मांन मग होय सह्या ।।६२८।।

जे सुबुधि पंडित सुग्यान । पुरुषां कहैं सु करैं प्रमांन ।।

इन्द्र को छोडना

रावण सहस्रारसों कहै । भ्राता इन्द्र मेरी ढिग रहै ।।६२९।।

असा दूजा बली न और । जो मन इच्छै सोद्यों ठोर ।।
अै जो चाहौ आपणा देस । करौ राज निरभय भुवनेस ।।६३०।।

अगले तैं द्यो टाल्यो राज । मनवंछित का ह्वै है काज ।।
सहस्रार नृप अस्तुति करै । तुम दरसन तैं दुख वीसरै ।।६३१।।

तुम हो त्रेसठ सलाका पुरुष । देखत मनमें उपजै हरष ।।
कृतार्थ भए हम प्रभु आज । रथनूपुर का पावै राज ।।६३२।।

वहै बडा पुरुषा की ठांव । वहां के बसै हम प्रगटे नाम ।।
बेडी काटि दिया इन्द्र छोडि । तोय हथकडी डारी तोडि ।।६३३।।

हय गय आभूषण पहराय । रथनूपुर कौं दिया पठाई ।।
अपने घरमे पहुंच्या इन्द्र । सब परियन में भयो आनंद ।।६३४।।

इन्द्र चित्त में भरमें घना । इह उपसर्ग कहां ह्वै बन्या ।।
अन्नपांन पाणी नहीं रुचै । एसा रहै रात दिन सोच ।।६३५।।

राणी देश भागि भंडार । सबै भयांनक लगै उजार ।।
हय गय विभव सेव पालकी । कुछुं न सुहाय लगै ज्वालसी ।।६३६।।

इन्द्र की व्यथा

परजा का कछु करै न न्याव । ऐसा राखै विकलप भाव ।।
बहुत दिवस बीते इस भांति । तब कछु सुरत भई नृप गात ।।६३७।
गंधमादन पर्वत पर गया । श्री जिनमंदिर में प्रगटया ।।
नमसकार करि पूजा करी । ऊंचे ते सेना दिठ पडी ।।६३८।।
इन्द्र भूप उपज्या मन सोच । सहस्रक्षोहिणी था मेरा भोग ।।
रावण ने सब परलय किये । बहुत दुःख उन मोकूं दिये ।।६३९।।
उस रावण का जाज्यो षोज । लंका माहिं पडीयो रोग ।।
वाका परलय होय ज्यों राज । उनही बिगाडया मेरा काज ।।६४०।।
मेरे थी विद्या लक्ष्मी । हय गय विभव तणी नहीं कमी ।।
उन रावण सब दहवट किया । बहुत प्रकार मुझे दुख दिया ।।६४१।।
वाकी सपति ह्वै जो नास । उन मुझ अनि ही दिखाई भास ।।
इन्द्र सरायय बारंबार । बहुर ग्यान मय किया विचार ।।६४२।।
समझि समझि मनमे पछताय । मैं क्यो सराप्यो रावण राय ।।
सराप दिये अति बाढै पाप । अपनी करनी खोवै आप ।।६४३।।
राजभोग थिर नाहीं मही । च्यारौ गति माही सुख नही ।।
पुण्य संजोग मिलै बहु रिध । पुण्य घटया नासै सब सुधि ।।६४४।।
कबहू राव कबहु ह्वै रक । कबहू जीतै गढ अति बंक ।
कबहु बैठि सिघासण चलै । कबहू पायक पीयस दलै ।।६४५।।
कबहू देव कबहू नारकी । कबहू मनुषा ह्वै तिरग चार की ।।
घटि बढि होइ कर्म की चाल । च्यारौ गति मैं व्यापै काल ।।६४६।।
राज भोग मे अछौ अचेत । या परसाद भई मुझ चेत ।।
जो वहैं इतना करता नहीं । ग्यांन मुझे किम होता सही ।।६४७।।
अब ऐसा गरवा तप करौ । काटि करम पंचम गति वरौ ।।

मुनिचन्द्र का आगमन

इह विचार चित बैठा इन्द्र । तिहा एक आया मुनि चन्द्र ।६४८।।
च्यार ज्ञान का धारक जिके । दरसन देख होय सुभ मते ।।
नमस्कार कीया कर जोर । टूटे जनम जरा की डोर ।।६४९।।

सुणे ग्यांन के सुच्छम भेद । तातै होइ करम का छेद ।।
प्रभु मेरे पूरव भव कहो । कवण करम तें दुख बहु लह्यो ।।६५०।।

इन्द्र के पूर्व भव

मुनि जंपै पिछला विरतांत । भ्रम्या लाख चौरासी जात ।।
लया जनम भील के गेह । थई पुत्री ता कुष्ठी देह ।।६५१।।

मुख विकराल चपटी नांक । चुंधी आंख मुख दीसै बांक ।।
जनमत मात पिता मर गये । ऐसे दुःख वा गति में भए ।।६५२।।

ह्वांते मरि फिरि देही धरी । मुंनि दरसन तें राजग्रह परी ।।
तप करि पहुंती स्वर्ग विमांन । पूरण आव भुगती सुर थान ।।६५३।।

रतनपुर नगर तिहां गोमटराय । कुंदमणी राणी उर आइ ।।
क्षीर धारा तहां हुई पुत्री । तप करि स्वर्ग लोक थिति करी ।।६५४।।

क्षेत्र विदेह रत्नसंचय नगर । असंमत बर्द्धन रावल अग्र ।।
गुणवंती राणी पटधनी । पुण्यसेन पुत्र भया बहु गुणी ।।६५५।।

राजा नैं दीक्ष्या पद लिया । राज्यभार सब सुतनें दिया ।।
गुणसेन सुण्यां बहुधर्म । सिथल भए असुभ सहु कर्म ।।६५६।।

छोड राज दिक्षा लई जाइ । स्वाध्यान तपसों मन ल्याइ ।।
देही छोडि अहमीन्द्र विमांण । भया इन्द्र पाया सुख थांन ।।६५७।।

वहां ते चय रथनूपुर देस । सहस्रार कै इंद्र नरेस ।।
पूछै इन्द्र दोइ कर जोडि । प्रभुजी मेरी करो बहोडि ।।६५८।।

कौण पापतें मांन भंग भया । सब सुख कवण करम तें गया ।।

रावण द्वारा इन्द्र के मान भंग के कारण

क्यों रावण मुझ दीना दुःख । भूल्या सकल राज का सुख ।।६५९।।

मुनिवर बोले आतमग्यांन । जती सुमरण धरि देख्यो ध्यांन ।।
अरजयपुर नगर अनूप । अगनिवेग विद्याधर भूप ।।६६०।।

आनंदमाला पुत्री ता गेह । कोकिल सब्द कंचन सम देह ।।
ताकै पिता स्वयंवर रच्या । सकल सौज सामग्री सच्या ।।६६१।।

देस देस के आए राय । मंडप तल बैठे सब आय ।।
कन्या हाथ लई वरमाल । गुणवंत षेचर गल दीनी डाल ।।६६२।।

कियो विवाह घडी सुभ साध । भोग भुगत कीनी अति वाधि ।।
एक दिन सूता था आवास । विद्याधर ले चले आकास ।।९६३।।

आनंदमाला जागी तिण वेर । सेज्यां अकेली देखी फेर ।।
तब उपज्या मनमें वैराग । सकल वस्तु का कीना त्याग ।।९६४।।

हंसावली नदी तट तीर । परच स्वरत मुनिवर तप धीर ।।
दिक्षा लई मुनिवर पैं जाइ । करै तपस्या मन वच काय ।।९६५।।

गुंणसेण जाग्या तिह वार । विद्याधर सौं कीनी मार ।।
भाजि गये दुरजन के लोग । आया निज नगरी में लोग ।।९६६।।

देखी नही त्रिया घर माहि । चिता करता ह्वै गई सांझ ।।
गई सुरत मुनि थानक गया । क्रोध वचन मुख सौं बोलिया ।।९६७।।

मेरे डरतें लीया जोग । अजौ अभिलाषा राखै भोग ।।
सौहागणि तैं वाई करी । आई तुझ मरने की घडी ।।९६८।।

मुनिवर कु बांध्या वहुभांति । मारया आछे मुक्की लात ।।
मुनिवर कछुवन आणै चित्त । सहै परीसा आपणैं नित्त ।।९६९।।

इत्तनों है यासुं वैंरनि । सो मुझनै मुगत्या परवांन ।।
चिदानंद सौं ल्याया ध्यान । यां इसका होसी कल्याण ।।९७०।।

बोली नारि पति ने दे गालि । रे पापिष्ट मुनि किया बेहाल ।।
ए मुनिवर मन अंतर रहैं । छह रितु के दुख असें सहैं ।।९७१।।

तै क्यों आप उपद्रव किया । किण हित साध प्रतै दुख दिया ।।
तेरा होज्यो राज का भंग । इस सराप दिया तिण संग ।।९७२।।

मुनिवर सिध रिध की भई । वा सब रिद्ध कल्यांण नैं दई ।।
गुणसेन सोच करै मन मांहि । इह सराप टलणे का नांहि ।।९७३।।

सीलवंत का वचन न टलै । मैं तो पाप बहुत ही करै ।।
बंधण दिये साधु के खोलि । अति अधीन होय बोलै बोल ।।९७४।।

मुझ मे आज भई अब बुधि । माया जाल तैं भूली सुधि ।।
अब कछु ऐसा करूं उपाव । नासै पाप लहुं सुख ठांव ।।९७५।।

मुनिवर करी धरम की टेक । सत्रु मित्र सम जाणै एक ।।
मुनिवर कहै ग्यान के भेद । तप करि महेन्द्र भया वह देव ।।९७६।।

उहां मुनि इंद्र सुधर्म विमांण । आव मुगति रावरण भया आंन ।।
गुणसेन जीव भया तू इन्द्र । वा सनमंध किया तुझ बंदि ।।६७७।।

पिछली सुंणि मन भया अडोल । रावण किया मित्र का बोल ।।
जो उन मोसों कीन्हां जुध । तो मैं लही धर्म की बुद्धि ।।६७८।।

वा कै ह्वं जौ मुकत की ठोड । वा परसाद गई मुझ षोड ।।
मुण्यां धरम रथनूपुर गया । जयंत कुंवर ने राजा किया ।।६७९।।

इन्द्र द्वारा मुनि दीक्षा

इन्द्र भूप दिगंबर भया । तेरह बिध सौ चारित्र लिया ।।
सहै परीसा बाइस गात । च्यार करम का किया घात ।।६८०।।

केवलग्यान लब्धि तसु भई । जै जै सबद दुंदुभी थई ।।
धरम प्रकास संबोधे घने । इन्द्र मुनीन्द्र भेस वे बने ।।६८१।।

दूहा

इन्द्र भूप इह विध बली, धर्यो धर्म दृढ चित्त ।।
भवसागर तै उतर करि, सुख भुगतें वर नित्त ।।६८२।।

चौपई

मुकति गया मुनिवर श्री इन्द्र । पावै सुख सास्वते आनंद ।।
ज्योति ही ज्योति एकठी भई । इन्द्र प्रभू पचम गति लही ।।६८३।।

रवि उद्योत अंधेरा मिटै । केवलवाणी संसय मिटै ।।
मन धर कथा इन्द्र की सुनैं । ते नर अष्ट करम कौ हणैं ।।६८४।।

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रनिर्वाण विधानकं ।।

१४ वां विधानक

चौपई

अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति

दीप धातकी मध्य गिर मेर । अनंतवीर्य जिण केवल बेर ।।
सावन पर्वत पर जीण साथ । इंद्र आदि देवता साथ ।।६८५।।

बैंठ विमांन देव सब चले । मुकटां की मणि सोभा भले ।।
पृथ्वी दसौं दिसा उद्योत । रतनां तणी बिराजै जोत ।।६८६।।

बाजा बाजैं नाना भांति । सब सुर चले जिनेश्वर जात ।।
देखि विमांण रावण चितवै । तब मरीच मंत्री बीनवै ।।६८७।।

अनंतवीर्य स्वामी जिणदेव । ए सब चले तास पद सेव ।।
अनंतवीर्य को केवलज्ञान । पूजा करें ग्यांन कल्याण ।।९८८।।

रावण द्वारा वन्दना

रावण के मन भया आनंद । दरसन कारण देव जिणंद ।।
सोलह सहस्र भूप संग लिये । बैठि विमांण समोसरण गये ।।९८९।।

दई प्रदक्षिणा सुर नर जाय । नमस्कार कीया बहुभाय ।।
दोई कर जोडिर पूछै इन्द्र । बारह सभा में सूरज चन्द्र ।।९९०।।

इन्द्र धरणेन्द्र तिहां नरेन्द्र । भया सकल प्राणी आनंद ।।
पूछै पुण्य पाप के भेद । सुणत वचन मिट जावै खेद ।।९९१।।

भगवान की वाणी

श्री भगवत की वाणी होय । भवियण लोग सुणै सब कोइ ।।
छह दरब अर तत्त्व नु सात । नव पदारथ अर पंचगात ।।९९२।।

पाप पुण्य का करैं बखांण । हिंसा तैं गति नरक निदांन ।।
मद्य मांस सहित जे खाइ । उंबर पच कठूंबर आय ।।९९३।।

काहू की चित दया न करें । ते जीव नीची गति पडैं ।।
सात विसन जे चित मे धरैं । सातउं नरक मांझ दुख भरैं ।।९९४।।

असत्य वचन जे मुख सों कहै । च्यारू गति मैं सुख न लहैं ।।
असत्य वचन चोरी परिहरैं । ब्रह्मचर्य व्रत विध सौं करैं ।।९९५।।

परिग्रह प्रमाण करैं नहीं मूढ । भव भव में पावैं दुख गूढ ।।
सात विसन के सेवणहार । ते कबहूं नही पावैं पार ।।९९६।।

रोग सोग दुख पडै बिजोग । काहू भव में मिटै न सोग ।।
पाप करम के भेद अनत । उनका कहत न आवैं अंत ।।९९७।।

धरम करत सुख सपति होइ । कै मनुष्य कै सुर पद होइ ।।
मनुष्य जनम का लाहा लेह । सोलह कारण वरत करेह ।।९९८।।

दशलक्षण पालै धरि भाव । रतनत्रय जंपय जिण नांम ।।
अठाईस मूल गुण पालै सुद्ध । धरम ध्यान में राखै बुधि ।।९९९।।

चार दांन दे वित्त समान । नित उठि दरसन करै विहान ।।
वइयावरत सबही सो करै । दया भाव चित अंतर धरै ।।१०००।।

मारस्त्र पुराण सुणौ मन ल्याइ । निस में भोजन भूलि न खाय ।।
जे जीव निसमे लेय ग्राहार । तिरजंच मांहि भ्रमैं ग्रपार ।।१००१।।

ब्यालू करैं न छीजती बार । दरसन ग्यांन चरित्र चित्त धारि ।।
उत्तम गति मे ह्वै ग्रारिज खंड । पंचेन्द्री कौ दीजे दंड ।।१००२।।

संयम कौ पालै धरि भाव । भोग भूमि पावै सुख ठांम ।।
सुपात्रां नें विध सों दे दांन । षट् दरसन को राषैं मान ।।१००३।।

ग्राप समांन सकल ने जांनि । दया भाव सब ऊपर ग्रांन ।।
दान कुपात्र फलै नहीं कुच्छ । कुगुरु कुदेव कुसास्त्रां तुच्छ ।।१००४।।

इन संगति नीची गति जाय । ग्रर जे कंद मूल फल खाय ।।
पाप पुन्य को भेद न करैं । कुगुरु कुदेवा निश्चै धरै ।।१००५।।

ते जीव मरि खोटी गति पडै । भव भव दुख दलिद्र ग्रनुसरैं ।।
सम्यक दर्शन देखै सुध । सम्यकग्यांन चारित्र सुबुध ।।१००६।।

श्री भगवंत नै पूजै नित्त । सुमरै गुणवाद धरि चित्त ।।
निसदिन गुरु की सेवा करैं । मिथ्या तजि समकित ग्रादरै ।।१००७।।

कै व्है देव कै भूपती । सम्यक ते होय पंचमगती ।।
समकित बिना न पावै मोक्ष । मिथ्याती ते भव भव दुख ।।१००८।।

दूहा

सम्यक है चिंतामणि रतन, तेह पाल्यो धरि ध्यांन ।।
भवसागर कौ है सगुण, महित कीजिए मान ।।१००९।।

जती विरत तेरह विध धरैं । बारह विध तपसों ग्रघ हरैं ।।
क्रोध लोभ ए च्यार कषाय । रागदोष ये देय बहाइ ।।१०१०।।

बाईस सहै ग्रबाधा नित्त । द्वादस ग्रनुप्रेक्षा सों चित्त ।।
भोजन करै उडंड ग्रहार । संयम का राखै दिढ भाव ।।१०११।।

दस लक्षण के पालै ग्रंग धरम सुकल स्यौ राषै संग ।।
बारह बरत सरावग करैं । पांच ग्रणुव्रत निश्चैं धरैं ।।१०१२।।

फुनि पालैं शिस्याव्रत च्यार । सातौं विसन तजै जिम छार ।।
पुराग्र गुणव्रत धारैं तीन । सो जाणैं श्रावक पर बीन ।।१०१३।।

राषैं सदा मनमें संतोष । तृष्णा तजै तो पावै मोक्ष ।।

लोभदत्त सेठ की कथा

लोभदत्त सेठ की कही कथा । तिण लक्ष्मी बहुते संग्रही जथा ।।१०१४।।

कुरी खाइ महादु:ख भरै । जहां तिहां पायक जिम फिरै ।।
सिर पगडी तल धोती बांधि । एक दुपट्टी राखै कांध ।।१०१५।।
जीरण वस्त्र त्रिया नें देय । दान पुन्य कबहीं न करेइ ।।
सब पुर लोग कृपण कहैं ताहि । वह मनमें कछु आणें नांहि ।।१०१६।।
चारण मुनि आए तिण वार । साहूणी दौडि करी नमस्कार ।।
स्वांमी म्हारा पूरब पाप । छती आथि हम सही संताप ।।१०१७।।
किण प्रकार होसी हम गति । लोभदत्त कै घरमन चित्त ।।
अब अैसी विद्या मुझ देहु । तीरथ दरसन सदा करेहु ।।१०१८।।
तब मुनिवर इक विद्या दई । ताहि सुमर बुधि पाई नई ।।
लकडो एक बडो विस्तार । भीतर तें पोलाइ सार ।।१०१९।।
विद्या सुमरित सु ऊपरि बैठि । तीरथ करण चाली त्रिय सेठ ।।
अैसे नित प्रति तीरथ जाइ । रतन द्वीप पूजैं जिण राइ ।।१०२०।।
तेली तेलण दोन्युं लडै । तेलणि कस लकडा मैं बडै ।।
साहणि चढि चाली आकास । उतरै रतन दीप कै पास ।।१०२१।।
तेलण देख अचंभै भई । रतन संकेलि गोद भरि लयी ।।
लकडे बीच आइकै छिपी । बहुत ज्योति रतनन की दिपी ।।१०२२।।
साहणि आई घरि आपणैं । तेलण आनंदी मन घणैं ।।
तेली प्रति दीने सब जाइ । रतन एक गाह ढिग ल्याइ ।।१०२३।।
साह देख अति अचिरज भयो । अैसो रतन कहा तैं लयो ।।
तेलण सों पूछै लोभदत्त । मोसौ सांच कहो मोहि सत्य ।।१०२४।।
तै यह कहां तै पाया रत्न । या का मोहि बतावो जत्न ।।
तेलण भणैं सुणउ मम सेठ । लकडे माहि रहो तुम पैठि ।।१०२५।।
भई सांझ सेठ तिहां धंस्या । अधिक लोभ ताके मन वस्या ।।
साहणि विद्या सुमरी आय । लकडे वैठि दीप कौं जाय ।।१०२६।।
समुद्र मांझ देख्या सहतीर । इह लकडा डाल्या गहै नीर ।।
वा लकडे चढि साहुणि गई । डुब्या साह नरक गति भई ।।१०२७।।
साहणि आयी घर आपणे । पूछै बात तब मुनिवर भणे ।।
कहो साहु गयो किंह ओर । वाकूं मैं ढूंढू किस ठौर ।।१०२८।।
मुनिवर कहैं पिछला वृत्तान्त । डूब्या साह लकडे संघात ।।
साहुणिकीया मन में सोच । लोभदत्त का इह नियोग ।।१०२९।।

नित प्रति उठि लक्ष्मी दें दान । पूजें साधु देव भगवान ।।
विलसै भोग दिन सुख में जाइ । भोजन भले भले नित खाइ ।।१०३०।।

दूहा

लोभदत्त लक्ष्मी लही, न छुबन जाण्यां भोग ।।
पाप करम करि एकठी, ताथी भयो वियोग ।।१०३१।।

चौपई

भद्रदत्त सेठ की कथा

भद्रदत्त सेठ श्राधीन । बेचै वस्तु परिग्रह लीन ।।
दान ग्रदत्ता लेइ नहीं पडचा । बाहर अभ्यंतर चित खरा ।।१०३२।।
एक दिन कंचन राय प्रधान । तसु दीनार पड्या मग थांन ।।
सब दीनार सेठ जब लही । भद्रदत्त चित्त सोचै कही ।।१०३३।।
कंचण पास गया तिण बार । नृप के मन की पूछै सार ।।
कहा दुचिते बहुत उदास । मुनै कहो करो बिसवासि ।।१०३४।।
कंचन कहै मो पास दिनार । राजा मुझे सोंपिया संभारि ।।
छूठ पडे मारग मे जात । तातै सोच करूं बहु भांति ।।१०३५।।
अन्नपान मो कछु न सुहाय । तिण कारण मै रह्यो मुरझाय ।।
वे दीनार सेठ तब दिये । भयो सुख कंचन के हिये ।।१०३६।।
भद्रदत्त की अस्तुति करैं । धन्य सेठ तु लोभ न धरै ।।
सगला लोग सराहैं ताहि । ऐसी बात सुणी नरनाह ।।१०३७।।
दई सेठ नें घणी विभूति । आदर मान किया अद्भूत ।।
ताको जस प्रगट्यो ससार । सत तें लछमी लही अपार ।।१०३८।।

दूहा

सति मारग ऐसा भला, ताहि करौं सब कोइ ।।
दोन्यु भव जस विस्तरै, बहुरि मोक्ष पद होइ ।।१०३९।।

चौपई

कुंभकरण द्वारा धर्मोपदेश की प्रार्थना

कुंभकरण पूछै कर जोडि । स्वामी भाषो धरम बहोडि ।।
कवण पुन्य तें लहिये मुक्ति । तैसी मोहि सुणावो युक्ति ।।१०४०।।
अनंतवीर्य जिण कहै वखांण । वारह सभा सुणै धरि ध्यान ।।
समिकत जे पालैं धरिचित्त । उत्तम ध्यान विचारैं मित्त ।।१०४१।।

समव्याईक वेदक समकिती । निश्चय विवहार दोइ विध थिती ।।
अरिहंत समान देव नही कोइ । गुरु निर्ग्रन्थ संतोषी होइ ।।१०४२।।

सास्त्र ते जिस माही दया । इष्ट अनिष्ट करै नही भया ।।
देव कुदेव है पूजै नही । पाखंडी गुरु की बात न सही ।।१०४३।।

कुसास्त्र में मानै नहीं सांच । निग्रह कीजे इन्द्रीं पांच ।।
अपरोषत कीजे उपवास । खोटे व्रत ते होय पुन्य का नास ।।१०४४।।

वरत करि कै कंदमूल को खाय । तो किया कराया निरफल जाय ।।
लेय आहार कहै हम व्रती । मनुष्य जन्म की खोवै कृति ।।१०४५।।

चउं घडिया अणथमी करै । अथवा घडी दोय अगासरै ।।

रात्रि भोजन निषेध

भोजन रयण तजै तिहुं वात । ते कहीए मानुष की जात ।।१०४६।।
जे नर रयण भोजन खाहि । राष्यस सम जाणिये ताहि ।।
पशु जाति ते हैं अग्यान । जैसे मांस भषी हैं स्वान ।।१०४७।।

कीट पतंग माकडी घणी । वाका दोष न जाय न गिणी ।।
तें सव गति अति षोटी लहै । रोग मोग दुख भव भव सहै ।।१०४८।।

केई जनम दलद्री होइ । थोडी आव लहै जिय सोइ ।।
लख चोंरासी भ्रमैं संसार । ते कबही नही पावै पार ।।१०४९।।

भोजन रयण तजै धरि ध्यान । ते भव भव सुख लहै निदान ।।
पंचमि गति पावैं निरवाण । सकल लोक मे उत्तम थान ।।१०५०।।

दूहा

जे नर निशि भोजन करैं, कंद मूल फल खांइ ।।
ते चिहुं गति भ्रमते फिरैं, मोक्ष पंथ निहा नाहिं ।।१०५१।।

रात्रि भोजन त्यागैं सर्व । उत्तम कुल पावै बहु दर्व ।।
भले भले मिंदिर आवास । कै सुख बिलसैं कै जाइ अकास ।।१०५२।।

बत्तीस लक्षणी पावैं नारि । रूपवंत ससि के उणिहार ।।
हंस गामिनी कोकिल वयण । सबद सुणत मन उपजत चैन ।।१०५३।।

पुत्र सपूत होंहि तिसु भले । कबहूं खोटे मार्ग न चले ।।
सज्जन कुटंबरु भाई घणे । आदर भाव कहत नही बणे ।।१०५४।।

छहों राग अरु तीस रागणी । होहि नृत्य सुख सोभा घणी ।।
कनक मई पाई अति देह । लोचन कमल है ससि नेह ।।१०५५।।

कुंडल सोमैं दोन्युं कर्ण । बडी भाव मुगतें सुख सर्ण ।।
जैन धरम सौं राखैं प्रीत । सतत धरम की पालैं रीत ।।१०५६।।
नित उठि द्वारा पेषण करै । जनम जनम के पातिग हरै ।।
मुनिवर कौं विधस्यौं दे दान । छहौं भेष का राखै मान ।।१०५७।।
बारह सभा सुणैं विध धर्म । असुभ भाव के टूटैं कर्म ।।
कँई भूप दिगम्बर भये । किनही व्रत श्रावक के लिये ।।१०५८।।
जैसा वित्त तैसा लै व्रत । जनम जनम का दुःख जहन्त ।।

रावण द्वारा व्रत ग्रहण

रावण सों बोले भगवान । तू लै व्रत कछु निश्चय आन ।।१०५९।।
रावण सोच हिया में करै । सीलवरत की इच्छा धरै ।।
परनारी सेवै अग्यांन । पावै अंत दुख की खांन ।।१०६०।।
जैसे स्वान ले वम्या आहार । जैसे विषई मूढ गंवार ।।
बहै द्वार दुरगंध निवास । ताहि देख मन होत उल्हास ।।१०६१।।
मेरी तीन षंड मे आंग । मोपै बरत सधै नहीं जांण ।।
एक भाति व्रत पालौ सही । जे नारी मुझ इच्छै नहीं ।।१०६२।।
तांका सील न खंडउं आइ । इहै वरत मुख बोलयै राइ ।।
श्री जिण पास नेम इहलीया । आगै कौं फल दाता भया ।।१०६३।।
कुंभकरण भभीषण व्रत लिया । करि डंडोत पयांणा किया ।।
आए लंका सह परिवार । करैं धर्म मन हरष अपार ।।१०६४।।
इन्द्र धरणेन्द्र सुरथानक गए । श्री जिनवाणी सुमरैं हिये ।।
सब के मन का संसय गया । धरम प्रकास जगत में भया ।।१०६५।।

अडिल्ल

अनंतवीर्य भगवंत धरम बहुविध कह्यौ ।
सुषम भेद अगाध सुणत सब सुख लह्यौ ।
व्रतधारी भए भूप मोक्षमारग गए ।
भवसागर तें जीव उतरि शिवपद लए ।।१०६६।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री अनंतवीर्य धर्म व्याख्यान विधानकं ।।

पन्द्रहवां विधानक

चौपई

हनुमान का जीवन

इहां श्रेणिक कीया परसन्न । हनुमान की कहो उत्पन्न ।।
श्री जिनवाणी दिव्य ध्वनि होइ । बारह सभा सुण सब कोई ।।१०६७।।

गौतम स्वामी निरखें भणें। सभामध्य श्रेणिक सुणें ।।
विजयारध दक्षिण दिस ओर। आदितपुर नगरी तिहा ठोर। १०६८।।
राय प्रह्लाद नगरी को धणी। केतुमती राणी तुम तणी ।।
पवनंजय पुत्र भया शुभघरी। पल पल बढै देह गुण भरी ।।१०६९।।
पर्वत सम वेसपुर देस। महेन्द्र विद्याधर तहां नरेस ।।
हृदयवेगा राणी सुंदरी। सो पुत्र जनमे सुख करी ।।१०७०।।
प्रथम अरिदमन दूजा उदपाद। अंजनी सुंदरी पूनम चांद ।।
रूप लक्षण गुण महा प्रवीण। सोलह भांत बजावै बीण १०७१।।
छहों राग अर तीस रागणी। विद्या पढै सरस्वती वणी ।।

अंजना के विवाह की चर्चा

राजा महेन्द्र तब मता उपाइ। मंत्री चारूं लिये बुलाइ ।।१०७२।।
अमर सागर सों मता विचार। कन्या बडी भई इह बार ।
उत्तम कुल जे राजकुमार। तिहा लगन भेज्यो इस बार ।।१०७३।।
अमर सागर बोल्या मतरी। रांवण की कीर्त्त हैं खरी ।।
अैसे सुं कीजे सनमंध। राक्षसबंस ज्यौं पुंनिम चंद ।।१०७४।।
इंद्रजीत दूजा मेघनाद। वेद पुराण बजावै नाद ।।
पराक्रमी वै चरम सरीर। मोक्षमार्गी एका भव तीर ।।१०७५।।
अैसे उसके महा सपूत। कंन्या देहु सुख होइ बहुत ।।
सुमति मंत्री फिरि दूजा कहै। मेरे मन इह संसा रहै ।।१०७६।।
रावण कै घर इतनी नारि। पटराणी सोलह हजार ।।
कुमरां कहै बहुत अस्त्री। एक एक सेती गुणभरी ।।१०७७।।
उस घरि कंन्या दीये नहिं वणै। श्रीषेन राजा गुण घने ।।
चरम सरीर प्राक्रमी बली। उंको देहु हौयगी रली ।।१०७८।।
तारा धर मंत्री समझावै बैन। कनकपुर नगर सोभा है अैन ।।
हिरणनाभि राजा तिण ठांम। तसु पटराणी सुमना नांम ।।१०७९।।
सौदामनि तास उस भया। मोक्षगांमी सोमैं सुभ कया ।।
वाके गुण का पार न कहीं। अैसा बली भूप को नहीं ।।१०८०।।
सदेहपारिष बोलै परधान। सौदामनी के मन में बहु ग्यांन ।।
वैराग भाव कुंमर का चित्त। संसारै समझै अनित्य ।।१०८१।।
जो उसको उपजै वैराग। वाकै लगै न करता त्याग ।।
कंन्या विधवा सम क्यूं दिन भरै। क्यों करि दिवस कंत बिन टरैं ।।१०८२।।

बाहि अठारह वरसां के गए। दिष्या ले केवल उपजए॥
पहुंते मुक्त रमणि की ठौर, आवागमण करै बहोरि ॥१०८३॥
पवनंजय कुमर विजयारध देस। रूपवंत अति बडो नरेस॥
ताका गुण व्योरा सौं कहै। कहत सुणत कछु अंत न लहै ॥१०८४॥
रितु वसंत का आगम भया। राग रंग सब घरि घरि थया॥
कांमनी मांनैं रति अतिभली। घरि घरि गावैं मंगल रली ॥१०८५॥
फूले फूल मोरे तरु अंब। नव पल्लव सई भई अचंभ॥
भ्रमर भ्रमरनी करै गुंजार। जिहां तिहां गावंति धमाल ॥१०८६॥
सकल भूप आये कैलास। महेंद्रसेण की पुंगी आस॥

राजा महेन्द्र एवं राजा प्रहलाद की भेंट

तिहां आया राजा प्रहलाद। वा संग सेन्या बहुत अगाध ॥१०८७॥
दोनूं भूपति मिले गल लागि। रूपवंत अति पूरण भाग॥
बारंबार पूछैं कुसलात। पूजा करैं जिण की सुप्रभात ॥१०८८॥
राय प्रहलाद महेन्द्रस्युं कहैं। मेरे मन को संसा दहे॥
तुम क्यौं दुर्बल अधिक नरेस। अपणें चित की भणउं असेस ॥१०८९॥
महेन्द्रसेन बोले भूपती। मुझ घर कंन्या अंजनावती॥
रूप लषण सब गुण सयुक्त। धरम भेद जाणैं सुबहुत्त ॥१०९०॥

पवनंजय के साथ विवाह प्रस्ताव

पवनंजय पुत्र तुम्हारा सुण्यां। तामें विद्या बल गुण घणां ॥१०९१॥
पवनकुमर ने अंजनी दई। दोन्युं कुला बधाई भई॥
त्रिवलसाह लिख भेज्या पत्र। आदितपुर पठया दूत विचित्र ॥१०९२॥
तीन दिवस रहै साव्हा माझि। मंत्री जाय पहूंते सांझि॥

पवनंजय द्वारा अंजना को देखने की उत्सुकता

पवनंजय पूछै अंजनी रूप। सुण्यां कुंवर नें बहुत अनूप ॥१०९३॥
तीन दिवस बीते किह भांति। व्याप्या कांम कुमर के गात॥
कब बीते ये तीन दिवस। कब अंतःपुर होइ प्रवेस ॥१०९४॥
पवनंजय कुमर विचारै ग्यांन। सीलवंत किम होय अयान॥
अष्टगुणा कांम स्त्री होय। दिढ सौं सील जु राखै सोइ ॥१०९५॥
मो सा पुरुष जो व्याकुल रहै। मोसुं भला न कोई कहै॥
प्रहसित मित्र पै गया कुमार। मन का भेद कह्या तिण बार ॥१०९६॥

अंजनी रूप सुण्यां में घणां । मोकुं काम व्याप्या चौगुणां ।।
जो हूं देखूं अपणे नयन । तो मोकुं होवै सुख चैन ।।१०९७।।
मित्र कहै धीरज धर भ्रात । दोन्यूं चल्या भई अब रात ।।
अंजनी मंदिर ढिग गए । झरोखै निकट छिपतिये भए ।।१०९८।।
नैनूं देख्यो रूप अथाह । वह सुख कहीं न वरण्यो जाय ।।
वसंततिलका दासी को नाम । अंजनी सौं बोली धर भाव ।।१०९९।।
बडा भाग तेरा अंजनी । पवनंजय सा वर पाया गुणी ।।
वा सम बली न दूजा और । सीमंगी तू पट की ठौर ।।११००।।
कंचन रतन सी जोडी बनी । उसने है तुम सोभा घणी ।।
पूरब किया पुण्य तैं भला । ऐसा वर सौं सनमध मिला ।।११०१।।

दासी द्वारा विद्युत वेग की प्रसंसा

मिश्र केस बोलै दूसरी । पिता तुमारे कीनी बुरी ।।
विद्युत वेग सा राजा छोडि । करी सगाई ऐसी टौर ।।११०२।।
वाके गुण का वार न पार । मुक्ति गामी अरु दातार ।।
बाकी तो इक घडी वहोत । कहां दीपक कहां रवि उद्योत ।।११०३।।
समंद छांडि लो चयरो भरी । असीं महेन्द्रसेन प्रति करी ।।

पवनंजय को निराशा

असे वचन पवनंजय सुनी । जानुं उर आयुध सों हनी ।।११०४।।
सोवत सिह हंकारया ढेल । मानुं दीया अगनि मे तेल ।।
काढ षडग लीया तिह वार । अंजनी सुधा डारूं मार ।।११०५।।
विभचारणी लक्षण इण भांति । इन सुणि करि कछु कहियन बात ।।
प्रहसित मित्र समझावै बैन । कह्या न षडग त्रिया परिलेन ।।११०६।।
जे वचन सुणि भया मन भंग । व्याह करूं नहीं याके संग ।।
कहै पवन मै दीक्षा लेसि । प्रात भये सब तजिस्यों भेसि ।।११०७।।
प्रात भये उठिया कुमार । मन चाहै ल्यौं दिक्षा भार ।।
प्रहसित मित्र कुंवर संग चल्या । मता विचार सुणाया भला ।।११०८।।
जे तुम लेस्यो दिक्षा जाइ । हीण कहेंगे सगला राय ।।
एक बार लुटैं इह देस । पाछै होइ दिगंबर भेस ।।११०९।।
दोनूं गये पिता के पास । म्हारै हैं दिक्षा की आस ।।

दंतीपुर पर चढाइ

एक वीणती सुंण हौ नाथ । दतीपुर कौं ल्याउं हाथ ।।१११०।।

इतनो सुणि सब सैन हकार । चढ्या कोप करि पवनकुमार ।।
कुज सेन्या रावण लणी बुलाय । दंतीपुर कौ घेरया जाय ।।१११११।।
बाजैं मापु नाना भांति । रोम उठी सूरों के गात ।।
अंजनी कांन पडी ए बात । सीस धुणैं चितवैं बहु भांति ।।१११२।।
विधना कवंण पाप मैं किया । मंगलचार समैं दुख दीया ।।
खाय पछाड धरती पर पडी । ददा उपाव सेवा बहु करी ।।१११३।।
बडी बार में भई संभालि । विभचारिणी कुं दीनी गाल ।।
इन सब भाख्या षोटा बयण । सुणे पवन देखे निज नैंण ।।१११४।।
मै अबही मांडउं संन्यास । जीवत जनम मे भई निरास ।।
नगर माहि अति हुवा सोर । व्याह बीच तब मांची रोर ।।१११५।।
पवन नाम दुलह का सुण्या । पवन समान आईया मनां ।।
जैसी बात वहै चिहुं ओर । असी याहि कुंमरि में बोरि ।।१११६।।
सुणी बात महेन्द्रसेन । प्रहलाद निकट आया सिख दैन ।।
हमतैं कहो चूक के परी । तुम आपणों मन असी धरी ।।१११७।।
हम तुम में थी पहली प्रीत । कैसे करी जुध की रीत ।
आज चाहिये रहसानन्द । किह कारण तुम कीया धंध ।।१११८।।

दूहा

पवनंजय अंजना विवाह

महैन्द्रसेन के सुणि वचन, मिटया क्रोध का भाव ।।
बहुस्वा रहस रली भई, दुहुं कुल अधिको चाव ।।१११६।।

चौपई

कुंवर के मन की षुटक ना आइ । संभा भांवर कीम छर भई ।।
अंजनी का भाज्या मन दुख । सुफल जनम करि मान्या सुख ।।११२०।।
भए बिदा बीत्या इक मास । जब पहुंचे अपने घर बास ।।
मन सेती भूलै नहीं बात । रोवै षुटक कुमरि दिन रात ।।११२१।।

दूहा

पवनंजय के मन की पुटक, कवहि न होवै दूरि ।।
अंजना सुंदरि क्या करै, दीदा कुमाया क्रूरि ।।११२२।।

चौपई

अंजना का दुःख

मंदिर न्यारा अंजनी नै दीया । रहै अकेली कंपै हिया ।।
अपणी निंदा बहुतै करैं । भुगत्या बिना करम नही टरैं ।।११२३।।

पवनंजय कुमर चरम की देह । में पापणी किय होइ सनेह ।।
कै मैं जिन गुण निन्दा करी । जिनवाणी नहीं निश्चय धरी ।।११२४।।
कै गुरु का राख्या नहीं मांन । कै मनधर नहीं सुण्यां पुराण ।।
कै किस ही को किया बिछोह । कै मिथ्या सौं ल्याया मोह ।।११२५।।
कै भोजन उठि खाया रति । परनिंदा कीनी बहु भांति ।।
तो इह मुझ नै भया वियोग । असुभ उदय तैं बाढ्या सोग ।।११२६।।
ऐसे कहि अंजनी पछिताहि । सखी सहेली कहै समझाय ।।
मनमें चित करौ मति घणि । करम उदै ते ऐसी बणी ।।११२७।।
अंजनी कै है पवन का ध्यांन । अब इहां कथा चली है आन ।।

रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध

वरण है रतनद्वीप का राय । रावण कौ नही आणै दाय ।।११२८।।
रावण ने तब भेज्या दूत । वरण भूप पै जाइ पहूत ।।
वासुं वातां कहै वसीठ । रावण नें तें दीनी पीठ ।।११२९।।
उण राजा जीते सब देस । तीन खंड के करै आदेस ।।
इन्द्र वैश्रवण जीतिया कुबेर । जम नलकूबड पकड्या घेर ।।११३०।।
तुं समुद्र मे छिपकरि रह्या । अब तुं मानि हमारा कह्या ।।
रावण सेव करो कर जोडि । आग्या मांनि तु आव बहुरि ।।११३१।।
तुज वह देस परगने देइ । आदर सहित नगर मे लेइ ।।
इतनी सुण कर कोप्या भूप । रक्त नयन भय दाई रूप ।।११३२।।
बोलै राजा सुण रे दूत । रावण ने सराहित बहुत ।।
जै वह बहुत कहावै सूर । हमसों जुध करो भर पूर ।।११३३।।
धका देइ पुर बाहर किया । दूत लगा मन विस्मय भया ।।
दूत रावण पै आया फेर । कही सकल उन उन नीचेर ।।११३४।।
सुणत वचन तब उठया रिसाइ । सूर सुभट सब लिये बुलाय ।।
रतनदीप कुं घेरा जाय । सुनत वरण तब निकस्या धाइ ।।११३५।।
राजा पीडरी दोउं सुत चले । सेना जोडि सूरमा मिले ।।
दुहुंधां लडैं बडे सामंत । पैदल सुं पैदल झुझंत ।।११३६।।
मैंगल सो मैंगल बहु भिडे । रथ सो रथ टूटि गिर पडे ।।
रावण की सेन्या अहटाइ । बांधि लिया षडदूषण राय ।।११३७।।
रावण का मन दुचिन्तां भया । मंत्री सेती मता तिन किया ।।
मंत्री जन दीया उपदेश । बुलाए नगर के भूप नरेस ।।११३८।।

वरण भूप कौं घेरचा श्राय । श्रैसा मता नृप किया उपाइ ।।
सकल ठौर कौं गए बकील । आवो बेग मति ल्याबो ढील ।।११३९।।

राय प्रहलाद के पास रावण का सन्देश

राय प्रहलाद पैं गया बसीठ । चीठी दई घडी भर बीठ ।।
माथै कागद लिया चढाय । पढि पढि पत्री सबण कराय ।।११४०।।
दल सज किया पलाणी छुरी । पवनंजय कुमर बीनती करी ।।

पवपंजय द्वारा युद्ध में जाने का प्रस्ताव

तुम ह्यां बैठि करो प्रभु राज । तुम आगैं हम साधै काज ।।११४१।।
पिता आगै सुत करै न कांम । महा कपूत कहै सब गांम ।
बोले राजा सुणी कुमार । तुम क्या जाणौं जुध की सार ।।११४२।।
कुमर पितासो विनती करै । सिंह पुत्र किसका भय धरै ।।
ताकौं कवण सिखावै दाव । भाजै हस्ती सुणतां नांव ।।११४३।।
हस्ती भाजे थानक छोडि । सिंह के सुत कौ सहै न ठोडि ।।
पिता कहै दिखावो आकर्म । मेरे मन का भाजै भर्म ।।११४४।।
जब बोल्या पवनंजय कुमार । निणका करै गज त्रिण का छार ।।
काम पडै तब देखो बात । वरुणह वापु अब ही जात ।।११४५।।
सोम माल दरी न बस । ज्यौ सरवर में सोभै हंस ।।
करि सनान बहु भोजन खाइ । उत्तम वस्त्र तिन पहरे जाय ।।११४६।।
बांधि हथियार सेमा संग लई । बहुत असीस बडे जन दई ।।

अंजना द्वारा पवनंजय को बिदाई

सब कुटुंब भेट्या गल ल्याइ । तिहां अंजनी ठाढी आय ।।११४७।।
देह मलीन रही मुरझाय । ताहि देखि मन पवन रिसाय ।।
इह क्यो आई है इण वार । निठुर बचन मुख कह्या अपार ।।११४८।।
त्रिया कौं लागे मीठे वयण । सुणि सुणि होय बहुत ही चैन ।।
धन्य धन्य हैं आज का द्योस । पिय के बचन सुने करि होंस ।।११४९।।
बहुरि अंजनी विनती करै । नीची दृष्टि चरण चित धरै ।।
जे तुम थे इस नगरी मध्य । तुमरी छित चाहैं थी सुध ।।११५०।।
मैरे मन ऐसी थी आस । इक दिन प्रभु बोलेगा हास ।।
अब तुम गमन करो परदेस । तुम बिन क्यु जीवस्यु नरेस ।।११५१।।
बहुत भांति बीनवै अंजनी । वाकै दया न आणी किणी ।।
हस्ती चढ्या साथि सुभ घडी । बहोत सौंज लीनी सुभ घडी ।।११५२।।

मानसरोवर उतरे जाय । सेना सकल रही तिह ठांय ।।
देख सरोवर निरमल नीर । मंदिर देखे ताके तीर ।।११५३।।
ऊंचे बैठा पवन कुमार । देखै इत उत दृष्टि पसार ।।
आवे सीतल पवन सुवास । पंषी सब दल बैठिहु पास ।।११५४।।

पवनंजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना

हंस आदि बहु जलचर जीव । सर ढिग करै किलोल अतीव ।।
कोई कूद जल भीतर पडै । तिहां बैठि अति क्रीडा करै ।।११५५।।
चकवी चकवा रयण वियोग । व्याप्पा तबै कंत का सोग ।।
झांई जब देखै जल मांहि । ताको समझै अपणा नाह ।।११५६।।
निरखै झांई करै पुकार । कबहा जाय चढै द्रुम डार ।।
सीतल नीर अगन सम लगै । अैसे सब निस चकवी जगै ।।११५७।।
अैसा दुःख पवनंजय देख । मनमे उपजी दया विशेष ।।

अंजना से मिलने की इच्छा

बाईस वरस मुझे व्याहां भया । अजना सुंदरी नें दुख थया ।।११५८।।
ह रं हूं चल्या जुध के काज । झुझि मरूं जो पूरी लाज ।।
मुझ बियोग अजना मरै । विना वस जनम इह गिरै ।।११५९।।
किण विध जाय अंजनी सुं मिलुं । मोक वियोग बाको सब दलौ ।।
घर तें विदा होय मैं चल्या । फेर न येन कहै कोई भला ।।११६०।।
प्रहसित मित्र सो पूछी बात । अजनी दुख पाया बहु भांति ।।
वाकी चुकि तउथी कछु नांहि । ददा कही क्या लागे ताहि ।।११६१।।
कवण जतन देखूं अजनी । मोकूं कठिन आई यह बनी ।।
सज्जन कुटंब लोग की कारिण । दोन्युं कठिन वणी है आंणि ।।११६२।।
प्रहसित कहै चलिये प्रच्छन्न । जैसे कोई लषै न चिह्न ।।
एक सोच उपज्या इण वार । सेना में ह्वैगी जो पुकार ।।११६३।।
समाधान दल का तुम करो । ता पाछै यहां तै तुम टरौ ।।
मुगदराय सौं भाषी बात । हम समेद गिर जाय है जात ।।११६४।।
इहां तुम सावधान बहु रहौ । श्री जिन के दरसन हम लहौ ।।
बहुत हार फूलन के लिये । चंदन केशरि उत्तम फल नये ।।११६५।।
वहोत सौंज ले दोनुं चले । करि आनद हीए में खिले ।।

अंजना पवनंजय मिलन

अंजनी के मंदिर मे गया । प्रहसित मित्र बाहर ही रह्या ।।११६६।।

अंजनी ने देख्या जब पौन । उठी पुकारी तु है ह्यां कौन ।।
दद्दा कौं जबै जगावरण लगी । पुरुष देखि अंजनी भगी ।।११६७।।
बोले पवन डरैं मति नारि । हूं आयो तेरा भरतार ।।
इतनी सुंणि मन भयो उलहासि । विघना पूरी मन की आस ।।११६८।।
नमस्कार पवन सौं कियौ । दरसरण देखत दुख बिसारियौ ।।
बैठा सेज्या ऊपर आय । गद गद वोल बौलै बहुभाइ ।।११६९।।
दासी बात कही छी बुरी । मैं वाकी कछु चित्त न धरी ।।
मोकुं दुख लिख्या इ भांति । कर्म रेखा मेटी नहीं जात ।।११७०।।
तब पवनंजय धीरज देइ । अपणे मन नही चित करेइ ।।
मैं तो आप भया अग्यान । मैं तुमकूं दुख दीनां जांनि ।।११७१।।
हम तुम है दोउ वालक देह । बहुत दिना दुख होत सनेह ।।
सोभा रयरण चन्द्र तैं वणै । अैसे सुख देखेगी घणे ।।११७२।।
जिम पाछली निशा के समैं । चंद्र प्रकासि ज्योति कूं गमैं ।।
जब म्है आंग किया परकास । तब ही जाणौ भोग बिलास ।।११७३।।
दोऊ बोलैं अमृत बैरग । दंपति मिलैं भया सुख चैन ।।
दोन्यू करैं कोक की रीत । प्रथम समागम त्रिया भयभीत ।।११७४।।
सरब सुख भुगत्या बलवीर । दोन्यूं सुखी इक भया सरीर ।।
बहग्यां ने सूते गल लागी । बीती रात शशि गयो भागि ।।११७५।।
पवन सरूप देखि छबि क्राति । हारि शशि मानि भाज्या प्रात: ।।
रवि उदयाचल उग्या आइ । दरसरण देख्या चाहै राइ ।।११७६।।
बसंतमाल परभातहि जागि । आयी निकट बारणै लागि ।।११७७।।
पौलि खोलि आई इरण पास । अंजनी बैठी नीचें जास ।।
कुअर जगाया कर पद चापि । जागि पवन अगराया आप ।।११७८।।
अंगुली चटकावै अरु जंभाइ । रक्त नयरण बहुलै घमाइ ।।
रावरण काजि सुरत गई भूलि । भए मगन दोउ सुख के भूलि ।।११७९।।
प्रहसित पास पवनंजय गया । भला मता दोन्युं मिल ठया ।।
अबेर भया प्रगटै इह ठाम । कातर होइ हमारा नाम ।।११८०।।
सब कोई फिर आया कहै । कपूत नांम प्रथ्वी पर लहै ।।
आगे पहरि भये तय्यार । अजनी करै अधिकी मनुहार ।।११८१।।
हमनें काज रावरण का कारणां । कारज साधि वेगा फिरणां ।।
अपणां मन राखियो अडोल । अैसें कहैं पवनंजय बोल ।।११८२।।
अंजनि के भरि आये नैंन । कहो कुटुंब सों अपने बैन ।।
मै असनांन किया है आजि । गरभ रहै तो लागै लाज ।।११८३।।

बोले पवन सुणों हो स्त्री । अैसा भय तुम ना चित धरी ।।
तीस मास लगि लधै न कोइ । फिर आउं मास वतीत न होइ ।।११८४।।
अंजनि बोली दो कर जोडि । तुम विलंब मोहि लागै षोडि ।।
जे तुम कहौ कुटुंब सौ बात । कोई न दोष लगै किण भांति ।।११८५।।
अंजनी सेती कह समझाय । सबसौं मुंह मिल हुवे हम जाय ।।
तुमसौ बिदा हुए थे नही । तातें आइ मिले हम सही ।।११८६।।

अंजना को मुद्रिका देना

जो तुम कछु मनमे भय करो । मुद्रिका मेरी तुम कर धरो ।।
इह सहनाणी दिखाइयो नारि । हमको सीष आयो इण बार ।।११८७।।
चल्या पवनंजय और प्रहसित । चढ विमांण चाल्या विहसित ।।
आकास गामनी विद्या संभारि । दोन्यूं पहुंता कटक मंझारि ।।११८८।।

सोरठा

पुन्य संजोगै होय, भोग ताहि जिय सुख समझि है ।।
विषय बेल फल होय, तब अैसा बहु दुख सहै ।।११८९।।

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ।।

सोलहवां विधानक

चौपई

अंजना द्वारा गर्भ धारण करना

सुख मे मास गये द्वै बीत । प्रगटत भई गरभ की रीत ।।
पीत वदन कचन सम जौति । दिन दिन उदर अति ऊचा होत ।।११९०।।

केतुमति द्वारा पूछताछ

चलै चाल गयंवर की भांति । केतुमती जब सुणी इह वात ।।
अंजनी पासि आइ पूछी सुरति । तैंन कवण करी इह करतूति ।।११९१।।
साचे वचन कहा मुझ आथ । देषज ताहि लगाऊं हाथ ।।
उज्जल कुल को कालष चढी । अैसी चिंता बास मैं बढी ।।११९२।।

अंजना द्वारा स्पष्टीकरण

अजनी बीनवै दोइ कर जौडि । मोकुं कछुवन लागै षोडि ।
मानसरोवर परि तुम्हारे पूत । देख्या चकवी वियोग बहुत ।।११९३।।
मेरी दया बिचारी हिये । ह्वातै आय रात सुख दिये ।।
च्यार पहर मुझ मंदिर रह्या । प्रात भये उठि मारग गह्या ।।११९४।।

मैं उनने बहु विनती करी । कुटंब सौं कहो बात इए धरी ॥
वे बोले यह लो मुंदडी लेउ । जो कोई पूछै तो इह देउ ॥११६५॥
जो मेरी मानुं नहीं बात । देख मुंदडी मानुं सांच ॥
केतुमती बोली रिसखाइ । निठुर वचन भाष्या बहु भाइ ॥११६६॥
बावीस वरष विवाह को भए । तेरा नाम सुणत दुख सहे ।
जो तेरी ह्वं देखता छाह । महा कोप उपजै था वांह ॥११६७॥
चलण समय तुझसों रिस करी । तेरी दया नही उर धरी ।
असी तोस्यूं क्या सनमंध । वह फिर आया छनै बंध ॥११६८॥
विभचारिणी तैं किया कुकर्म । मोसुं कहै पवन का भर्म ॥

अंजना को ताडना

लाठी लातै मारी घणी । ठौर ठौर अंजनी कौं हणी ॥११६६॥
बसतमाला परि कोपी बहुत । हे विभचारिणी तुहै ऊत ॥
तेरे आगै कारण इह हवा । झूठा पवनजय कु दे दुवा ॥१२००॥
तोकुं देषि कहा हू करउ । मारि तोहि जम मदिर धरउ ॥
अकुरूरा किंकर लिया बुलाइ । इनकौ पिता घर ले जाइ ॥१२०१॥
महेन्द्रपुर मांहि लेकैं छोडि । दोई जीवस्यौं क्या मारूं ठौरि ॥
जो मैं अब दोन्यू जीव हतौं । नोतम बंध भमुं चिहुं गतौ ॥१२०२॥
इह बात प्रहलाद नृप सुनी । क्रोध लहरि उपजी चित घनी ॥
वेगि निकाल मदिर तें देहु । या का नाम न फिर कैं लेहु ॥१२०३॥

अंजना का निष्कासन

रुदन करत काढी अंजनी । वसंतमाला ताकै संग दिनी ॥
उनकैं पीछे किंकर हुवा । बहुत तरास दिखावैं कुवा ॥१२०४॥
कहैक वेगि वेगि तुम चलो । उनका चरणन धरती हलौ ॥
असुभ करम ते इह दुख भया । पावैं भ्रमी महेन्द्र की धिया ॥१२०५॥
कठिन कठिन वन अंदर गई । किंकर कै मन चिन्ता भई ॥
इह पवनजय की पटधनी । या कौं बेला असी वणी ॥१२०६॥
अब मैं द्यौहौं इनको दुःख । इनके दिन फिरए लैहैं सुख ॥
सुणै पवन मारै मुझ ठौर । तब मुझ कौण छुडावै और १२०७॥
किंकर करैं वीनती बहु भांति । मेरी चूक नाहीं कछु मात ॥
तुम्हरे सासु सुसर नें कह्या । उनके वचन तुम्हैं दुख सह्या १२०८॥

मैं सेवक विनउं कर जोडि । मेरी चित्त न आर्णौं षोडि ।।
कोस च्यार जब नगरी रही । भई रयरण बन आश्रम गही ।।१२०६।।

असा दुख अंजनी कुं भया । देखि रुदन दिनकर लोपिया ।।
इह सब दोस करम कौ देइ । ऊचे नीचे उसास बहु लेइ ।।१२१०।।

गरजै सिह हस्ती तिह ठौर । वन में करैं स्याल अति सौर ।।
इनका दुख देखि सब पछी रोवैं । पात बिछाइ भूमि पर सोवैं ।।१२११।।

इक दिन बीतैं बरस समान । मनमे सुमरै श्री भगवान ।।
वसंतमाला की जांघ पर मूंड । वन भयदायक दीसैं सूंड ।।१२१२।।

कठिन कठिन बहु पीडित भई । तब कछु भय चितते मिट गयी ।।
सुमरै जिनवर बारंबार । असुभ करम के टारन हार ।।१२१३।।

दूहा

धरती पांव न जे धरैं, सोवै सेझ अनूप ।।
वनमें निस दुखस्यौ कटी, पांव चली भरि धूप ।।१२१४।।

चौपई

अंजना का महेन्द्रपुरी जाना

भए प्रभात महेन्द्रपुर गयी । पिता द्वारि जाइ ठाढी भई ।।
पौलिया भीतर जांण न देइ । बसंतमाला ताहि जंपेइ ।।१२१५।।

इह अजनी राजा की धिया । याकौ असुभ करम दुख दिया ।।
महिद्रसेन कौ इह सुधि देहु । तेरी सुता आइ तुझ गेह ।।१२१६।।

सिलकपाट पौलिये का नाम । पहूंच्या राज सभा की ठांम ।।
नमस्कार करि भाषी बात । अंजनी आई आज प्रभात ।।१२१७।।

प्रश्नकीर्त्ति को दिया उपदेश । आदर सों कीजे परवेश ।।
नगर छवावो हाठ बजार । बहुत भांति कीजे मनुहार ।।१२१८।।

तब अकरूर कहै समझाय । मेरी विनती सुनिये राय ।।
केतुमती यह दीनी काढि । उनके चित ए चिता बाढि ।।१२१९।।

बाईस बरष ब्याह कौ भए । पवनंजय निज मंदिर गये ।।
पवन गया रावरण के काज । इन ल्याई दोन्युं कुल लाज ।।१२२०।।
याकूं भई गरभ की थिति । तुम राखो जे आवैं चित्त ।।

पिता द्वारा निष्कासन

इतनी सुरणत कोपिया भूप । रक्त नयन अर क्रोध के रूप ।।१२२१।।

बेग नगर तें देहु निकार । उनकौ नीकै बडौ कुमार ।।
बसंतमाला राजा पै गई । करि डंडौत चरण को नई ।।१२२२।।
अंजनी बहौत लाडली सुता । वासौ मोह बहुत तुम हुता ।।
निसदिन जीव सम गिणते ताहि । वाका वचन डारते नांहि ।।१२२३।।
असी अति प्यारी वो धिया । केतुमती वाकौ दुख दिया ।।
मानसरोवर पवनंजय गया । चकवी रुदन देखि भई दया ।।१२२४।।
व्हाते आय किया सजोग । च्यार पहर निस भुगते भोग ।।
करौ खौज तब कीजौं क्रोध । नीके न्याव समझो नृप बोध ।।१२२५।।
केतुमती इह दीनी काढि । याकौ अब बनी अति गाढि ।।
पिता गेह नही पामे ठांह । हारे थके विरछ की छाह ।।१२२६।।
सब मंत्री समझावैं ग्यांन । कोई चित्त नहीं आवै आन ।।
बसंतमाला ऊपर रिस करी । तू विभचारिणी है अति षरी ।।१२२७।

सब ओर से तिरष्कृत

ए सब भई तुझ ही ते षोडि । तो कौ दुख दीजे ते थोडि ।।
ढेला ईंट पत्थर की मार । नगर माहिं तें दई निकारि ।।१२२८।।
जिहा जिहां तै भाई वंध । घरि घरि फिरी जांणि सनबंध ।।
कोई बारनु न देषन देह । द्वार ही ते पाथर लेय ।।१२२९।।
सब कुटब की छोडी आस । दोन्यु नारि लिया वनवास ।।
हस्ती सिंह चीते तहां फिरैं । महा भयानक वन मे डरैं ।।१२३०।।
रोवैं पीटैं करैं पुकार । ल्यावैं देही घाव विकार ।।
भूख पियास सतावै देह । कपडा फाटै लागै षेह ।।१२३१।।
आंसौ चलै दुख व्याप्या घणा । ऐसा जोग करम का वण्यां ।।
पवनंजय मोसो अस करी । विछोहा समै प्रीत चित धरी ।।१२३२।।
सासु सुसरैं दई निकार । मात पिता कछु करी न सार ।।
करम विपाक जांणि मनमांहि । जननी पिया दया उर नाहि ।।१२३३।।
वा मुझसो कछु किया न मोह । निर्दय बने असर नही लोह ।।
जो मृगपती मुझनें इहां खाइ । दु ख सकल बियोग मिट जाइ ।।१२३४।।
ताती लू लागै तन तपै । छिन छिन नाम जिनेश्वर जपै ।।
केस उखारि र पीटैं हिया । कवण पाप पूरब मैं किया ।।१२३५।।
बार बार सुमरै भगवंत । तुम विण कुण सरणागति सत ।।
दूजा कोई नही सहाय । बेर बेर सुमरै जिणराय ।।१२३६।।

बसंतमाला समझावै ताहि । सुख दुख करमतणा फल आहि ॥
इनकै होत न लागै बार । कबहुक रंक कबहु भो बार ॥१२३७॥
वनहि देखि धीरज नहीं धरै । वसंतमाला अंजनी स्युं कहै ॥

अंजना का गुफा में शरण लेना

परवत ऊपरि गुफा है भली । दोन्यु गिरिवर ऊपरि चलीं ॥१२३८॥
तिहां भौयग करैं फौंकार । बारह कोस होइ वन छार ॥
देखत वन लागै भय घणी । नांम सुणत आवै कंपणी ॥१२३९॥
झांखडी सूल पडे चिहू ओरि । पांव धरण को नाही ठौर ॥
कपडे झाडौ सो लग फटे । वारिझ कोरि देह कौं कटै ॥१२४०॥
पग भीतर बहु काटे गिडै । असे दुखसौ परवत चढै ॥
तिहां ठोर षोह बहु परी । ताहि देखि वह दोन्युं डरी ॥१२४१॥
थकी वृक्ष तल चलै न पांव । बसंतमाला बौली इह भाव ॥
जिम तिम चल करि थानक गहौ । गुफा माहि निरभय व्है रहौ ॥१२४२॥
देही छुलि छुलि हुवा पिड । पाव विगाम हुआ केई षड ॥
लेइ उसास रोवै अंजनी । चला न जाय कठिन गति बनी ॥१२४३॥
वामै दाहिणै कही न ठाव । वणी विविध किण दिस जाउ ॥
बसंतमाला कर पकड्या आइ । थाभती ठेकती गुफा में जाय ॥१२४४॥

सघन वन में मुनि दर्शन

वैठि गुफा मे आश्रम लिया । मातग वन सकल दृष्ट मे किया ।।
देखे वृक्ष मनोहर फले । ता वन मे मुनिवर तप करें ॥१२४५॥
नासा दृष्टि आतम ध्यान । तेरह बिध पालग धरि ध्यान ॥
सहै परीसा बाईस धीर । छह रितु की व्यापै नहि पीर ॥१२४६॥
मुनिवर वन मे भय नहीं धरै । देह तणी ममता परिहरै ॥
ग्यानवंत जिम समुद्र गंभीर । भूल्या भव्या बतावै तीर ॥१२४७॥

मुनि बंदना

जाकै हैं उत्तम छिमा आदि । पंच इन्द्री का लहै नही स्वाद ॥
अंजनी आइ प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि चरणां नई ॥१२४८॥
बसंतमाला किया परणाम । बारंबार पढै गुणग्राम ॥
समाधान पूछै मुनिराय । मुनिवर भणै करम परभाव ॥१२४९॥
महेन्द्रसेन की इह पुत्तरी । सत्त सील सयम गुण भरी ॥
प्रहलाद राय पवनंजय पूत । बाईस वर्ष दुख दिया बहुत ॥१२५०॥

चलती बेर किया संजोग । केतुमती ने दिया बिजोग ।।
कोई नाही हुआ सहाइ । असुभ कर्म उदय भया आइ ।।१२५१।।
असैं करम सब ही कु लगैं । कोई नाहि करम तैं भगैं ।।
अजनी बसंतमाला सुष चहै । श्री मुनि सब आगम की लहै ।।१२५२।।

बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना

बसंतमाला पूछे कर जोडि । बात हमारी कहो बहोरि ।।
कैसा जीव गरभ किम पडया । कठिन पाप करकै अवतरया ।।१२५३।।
किम वियोग हम कौं इह भया । पूरव पाप कवरण हम थया ।।
बोले मुनिवर लोचन ग्यांन । पुन्य जीव गरभ भयो आंनि ।।१२५४।।
याको दूसण नाही कोइ । अंजनी पाप उदय तें होइ ।।
महापुनीत धर्म की देह । चरम सरीर पुत्र तुझ गेह ।।१२५५।।

मुनि द्वारा समाधान

हनूमान होसी तुझे पुत्र । कामदेव बलवंत बहुत ।।
उसका भव पूरबला सुणौ । रोग सोग मन को सब हणों ।।१२५६।।
जबू द्वीप भरत क्षेत्र आहि । अमितगति नगरी ता माहि ।।
मंदिर अभिष राजा धरमिष्ट । नंदीनमें सम्यक दृष्टि ।।१२५७।।
जया देवी स्त्री ता गेह । मदी पुत्र की सोमैं गेह ।।
रितु बसत खेलै सब लोग । नंदन वन मे वृक्ष अशोक ।।१२५८।।
रागरंग गावै सब ठौर । सकल जगत मे सुख का सोर ।।
विद्याधरी जोषिता घणी । चली जात आकास गामणी ।।१२५९।।
देखि दमैं दौडया आकास । मुनिवर निरष गई ता पास ।।
नमस्कार करि पूछया धर्म । जुरगे वचन ते लागे मर्म ।।१२६०।।
इक दिन मुनि को दिया आहार । विनयवंत होइ कीनी सार ।।
नित उठ रापै आतम ध्यान । अंत समैं पढै पंच प्रभु नाम ।।१२६१।।
देही तजि गया सौधर्म विवान । भया देव पाया सुख ठाम ।।
व्हां ते चय मृगाकपुर देस । सूरज चद्र तिहां राय नरेस ।।१२६२।।
प्रीय अग ताकै पटधणी । सिंघरथ पुत्र सु सोभा वणी ।।
समकित पूरण भया काल । उपना जाय स्वर्गपुर वाल ।।१२६३।।
विजयारध तहां अरननदेस । सुकच्छ नाम तिहां तणों नरेस ।।
कनकोदरी राणी सुंदरी । घनवाहन पुत्र भया सुभघडी ।।१२६४।।
जोवन समैं विवाही नारि । वीतै निस दिन भोग मझारि ।।
विमलनाथ स्वामी अरिहंत । निरवाण गये श्री भगवंत ।।१२६५।।

तिरण अवसर धनवाहन राय । राजकरत सुख में दिन जाय ।।
घराहर देखि भयो वैराग्य । राजविभूति कूं वहीं त्याग ।।१२६६।।

लषमी तिलक मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई वयन मन काइ ।।
तेरह विध चारित्र सों ध्यान । वैयावरत करौं उत्तम ग्यांन ।।१२६७।।

सोलहकारण दसलक्षण वरत । रतनत्रय पालत गुण धरत ।।
बारह अनुप्रेक्षा चितप्रेषि । बाईस परीस्या सहैं बिशेष ।।१२६८।।

बारह विध तपसों मन ल्याइ । बाह्याभ्यंतर एकै भाइ ।।
सब जिय आप समानै जानि । धर्मोपदेस करै व्याख्यान ।।१२६९।।

आतमदरस ज्योति सौ लगी । सास उसास ग्यान करि पगी ।।
मास उपास पारणा करै । असा तप गरवा तन धरै ।।१२७०।।

लात स्वर्ग मे अमर विमाण । देही छांडि भया सुरथान ।।
वहा ते चइ तुझ कूषि मे आइ । पुन्यवंत कचन सम काय ।।१२७१।।

दूहा

अब भव सुणि अंजनी तणा, कहै संषेप वषांण ।।
वचन लगे अमृत समा, वोले ग्यांन प्रबान ।।१२७२।।

चौपई

विजयारध नगरी तिहा अर्ग । सुकठ भूप सब का दुख हर्ग ।।
ताकै घर पटराणी दोइ । सीलवती पतिवरता सोइ ।।१२७३।।

कनकोदरी न लक्ष्मीवती । दोन्यु मोमैं गुण गुणमती ।।
लक्ष्मीमती प्रतिमा जिण पूजि । अन्नपान आरोगै तुझ ।।१२७४।।

कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी

कनकोदरी तब अमी करी । प्रतिमा चोरी वाइ मे धरी ।।
लक्ष्मीवती बरत नें उठी । जिनप्रतिमां नही पाई पुठी ।।१२७५।।
लक्ष्मीमती मन व्यापी पीर । अन्नखाई नही पीवैं नीर ।।
श्रीमती अर्जिका तव आइ । लक्ष्मीमती देख मुरझाय ।।१२७६।।
तासौ अर्जिका कहै समझाय । अवर प्रतिमा पूजो जाय ।।
वेग सनान करि भोजन करो । भाव तुमारो पूरण सरो ।।१२७७।।
जिण अग्यांन ते प्रतिमा हरी । अपणी गति षोटी तिण करी ।।
जनम जनम नरकौ दुख होइ । प्रतिमा जाणि चुरावै कोइ ।।१२७८।।
भव भव ह्वैता जीव कै रोग । सदा कुटंब में पडै वियोग ।।
कनकोदरी कंपी सुणि बात । प्रतिमां आणि दई ता हाथ ।।१२७९।।

मैं तो महापाप इह कियो । प्रतिमां ले जल में राखियो ।।
लक्ष्मीमती न्हाई तिरण बार । प्रतिमां पूजि करि लिया आहार ।।१२८०।।

कनकोदरी कुं चिंता भई । वाही समै राजा पै गई ।।
जो प्रभुजी मुझ आग्या होइ । तो मैं अब संयम व्रत ल्यौह ।।१२८१।।

राजा की आग्या जब पाय । श्रीमती अजिका पासै आय ।।
विनती करि चरणन को नई । मौसौं असी चूक जो भई ।।१२८२।।

दिक्ष्या देहु ज्यौं छूटै पाप । जो तप किये मिटै संताप ।।
दिक्ष्या दई जिनवारणी कही । तपारूढ ह्वै काया देही ।।१२८३।।

तप करि किया करम का घात । देही तजि पाई सुर जात ।।
इन्द्राणी थई सौधर्म विवांण । व्हां ते भई तू अंजनी आरिण ।।१२८४।।

बाईस घडी जिन प्रतिमा हरी । बाईस वर्ष ही आपदा सही ।।
अरणछारणं जल प्रतिमाधरी । वनमें पग उगाहरणे फिरी ।।१२८५।।

सुरणां धरम उपज्या वैराग्य । मुनि कै उठि चरणां में लागि ।।
मैं गर्भ तें हो निर्वृत्त । दीक्ष्या लेई करूं शुभ व्रत ।।१२८६।।

पुत्र जन्म की भविष्यवाणी

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । तेरै होई पुत्र अवतार ।।
रामचन्द्र लक्ष्मरण का मित्र । बहुरिउ करै धरम की रीत ।।१२८७।।

कामदेव महा बलवंत । ताका नाम होसी हनुमंत ।।
पवनंजय से फिर संयोग । बहुत बरस भुगतेंगे भोग ।।१२८८।।

तेरे असुभ करम सब गये । सुख अनंत देखैंगी नए ।।
व्यौरा सुण्या किया नमस्कार । बैठी आय निज गुफा मझार ।।१२८९।।

मनमें रहसि भई अडौल । चित में राखे मुनि के बोल ।।
सब चिंता तब ही मिट गई । प्रगटया तिमिर रजनी जब भई ।।१२९०।।

दुष्ट जीव हैं वनमें घने । महा भयानक शब्द हैं सुने ।।
दावानल सा वन सब जलै । गज टक्कर तें परवत हिलै ।।१२९१।।

झांई सबद तें गुंजे गुफा । भव व्यापैं नहीं जीव में कृपा ।।
बसंतमाला अंजनी बिललाई । सोवै धरती पात बिछाइ ।।१२९२।।

अैसे दुखमौं बीतै घड़ी । इक इक पलक बरस सम टरी ।।
एक पहर जब बीती रयन । यां सेन्यां कैं हिये अबल घन ।।१२९३।।

रतन चूलि खेचर तिह ठाह । रतनचूला राणी का नाम ।।

रतनचूल का अपनी स्त्री के साथ आगमन

अजनी का दुख सुनि उपनी दया । इहै विलाप कवरण ने किया ।।१२६४।।
इनका दुख करो अब दूर । असे वन मे ए कोई सूर ।।
वाही वनकू देवता आइ । एक भवतर की अवधि उपाइ ।।१२६५।।
ईके गर्भ मे है हनुवंत । महोच्छे जाके करै बहु भांति ।।
महावली अर चरम सरीर । साहसवंत महा बलबीर ।।१२६६।।
असे बालक तरणां अवतार । याही भव पावै मित्र सार ।।
गधर्व जाति के आए देव । मंगलचार करण को सेव ।।१२६७।।
सब परवत पर भई सुवास । महारमरणीक सोभै चिहूं पास ।।
गावै गीत अर नाचै घडी । रतनचूल चित अचरज धरी ।।१२६८।।
अबही रुदन होइ था दुंद । पलमें देख्या होत आनंद ।।
भरे तलाब अर पर्वत भरै । सूके रूख भए सब हरे ।।१२६९।।
छह रितु के लागे फल फूल । सीतल पवन सुख सम तुल्य ।।
मुनिसुव्रत की जिन प्रतिमा धरी । गंधर्व देव सेव बहु करी ।।१३००।।
संस्कृत में वे गावै गीत । करै नृत्य अति महा प्रवीण ।।
देवांगना बजावै वीणा । करै नृत्य अति महाप्रवीण ।।१३०१।।
पूजा करी अजनी आय । तीन काल सुमरै जिण राय ।।
भरी घडी देरी कुसुम समाई । बसंतमाला तब लई बुलाई ।।१३०२।।
उन इसके सब समझै चिन्ह । सेज्या पर स्वाई करी जतन ।।

पुत्र जन्म

भया पुत्र शशि के उद्योत । तम घट गया उजाला होत ।।१३०३।।
रवि कीसी सोभै छबि कांति । बालक सोभै असी भांति ।।
बदन देख रोवे अजनी । कहै बचन सुभ असी बनी ।।१३०४।।
पुत्र जनम होता घर माहि । तो मनमान्या होत उछाह ।।
जो होता पवनजय गेह । पुत्र देखि करता अति नेह ।।१३०५।।
जनम समय देता बहु दान । पीहर का करता सन्मान ।।
अब वनमे आई परदेस । कहा करूं किससुं उपदेस ।।१३०६।।
देवागना समझावै ताहि । यह बालक मेटै दुखदाह ।।
पुण्यवंत जीव जन्मीयो । देव आय महोत्सव कियो ।।१३०७।।

परात्रमी एकाभव मोक्ष । ऐसा पुत्र भया तुझ कूंषि ।।
अब अपणै मन करो आनंद । यह बालक जैसे भुवि चन्द ।।१३०८।।
रक्षा बहुत करेंगे देव । देवांगना करेंगी सेव ।।
विद्याधर स्त्री संयुक्त । गुफा दुवारै आय पहूत ।।१३०९।।
विद्याधरी बालक ढिग गई । देख बदन बलिहारी लई ।।
प्रति सूरज रह्या बारही ठौर । जहा देवता बैठें और ।।१३१०।।
बसतमाला मन चिंता करै । मत कोई दुरजन बालक हरै ।।
निकलि गुफा तैं बाहर आइ । विद्याधर ढिग बैठी जाइ ।।१३११।।
तब षेचर पूछै विरतांत । तुम क्यो रही वनमे इण भांति ।।
तुम अपणा समझावो भेव । तो मेरा भाजै अहमेव ।।१३१२।।

खेचर के प्रश्न का उत्तर

पिछली बात कही समझाय । इह है सुता महेन्द्रराव ।।
मनोवेगा गर्भ ते भई । प्रहलाद राय के सुत परणाई ।।१३१३।।
इहै पवनजय की असतरी । बाईस वरष वियोग में पड़ी ।।
रावण के कारज कौं चल्या । चकवी वियोग देख फिर मिल्या ।।१३१४।।
मात पिता थी मिल्या न कुमार । एक रात रह गया तिह वार ।।
केतुमती इहै दई निकाल । याकी किनहि न करी समार ।।१३१५।।
नाथी आई गुफा मे रही । सर्वकथा ब्योरास्यु कही ।।
मुनिवर पासि सुंणे परजाइ । किये करम सो भुगतै काइ ।।१३१६।।
बसंतमाला तब पूछै बात । अपणां कहो नाम कुल जात ।।

खेचर का परिचय

विजयारध उत्तर दिस ओर । हनुरुह नगर बसै तिह ठौर ।।१३१७।।
विचित्र नाल तिहा भूपती । मदमालण राणी सुभमती ।।
प्रतिसूरज हू ताको पूत । ब्योरा सकल कह्या संयुक्त ।।१३१८।।
अजणि सुणि हिय गह भरी । मामा सो बोली तिह घरी ।।
कठ लगाय रुदन करि मिली । बसतमाला छुडावै मन रली ।।१३१९।।
नीर आणि परछाल्या मुख । दोन्यां हीए भयो अति सुख ।।
थारु संग नाम जोतगी सघात । तास्यु पुछी जनम की बात ।।१३२०।।
कैसी घडी जन्म्या इह पूत । कवण कवण लक्षण संयुक्त ।।
चैत्र बदि आठैं अधरात्रि । श्रवण नक्षत्र उदय शशि कांति ।।१३२१।।

वा समये हुवा परसूत । कौण लगन में जन्म्यां पूत ।।
पींडी लेइ करि जौतिग साधि । सुप्रभ नाम सवतसर बाधि ।।१३२२।।

सूरज स्वामि वरष का कह्या । सब विरतांत जोतिगी लह्या ।।
रवि है मीन चन्द्रा मकर । मंगल वर्ष मीन मीन का सुक्र ।।१३२३।।

बुध मीन बृहस्पति सिंह । सनीस्वर मीन का सैंह ।।
जनमपत्री लिखि जौतिगी देषि । सर्वं भले ग्रह पडे विशेषि ।।१३२४।।

दक्षिणा दई विप्र ने राइ । निवण करी सब देवां आइ ।।

अंजनी का विद्याधर के नगर जाना

अंजनी प्रति बिवाण बैठाइ । बसंतमाला संग लई चढाइ ।।१३२५।।

विद्याधर ले निजपुर चल्या । सुगन मुहूरत साध्या भला ।।
वैठि विवाण चले आकास । देख्या रवि बालक आकास ।।१३२६।।

विमान से हनुमान का शिला पर गिरना

उछल पड्या परवत पर आय । अंजनी पुत्र पुत्र विललाय ।।
रुदन करैं प्रति सूरज घणां । आंसू धार नयण सौ वण्यां ।।१३२७।।

बालक पड्या सिला पर आय । परवत चूर हुआ तिह ठाइ ।।
पुन्यवंत कै लगी न चोट । चुखै पांव अगुठा ओठ ।।१३२८।।

हसौर उछलै बारंबार । देख पुत्र सुख भया अपार ।।
लिया उछंग हिया सौ ल्याइ । पुहचे हनूरुह पुर मे जाइ ।।१३२९।।

नगर मांहि अति थयो आनंद । पूजा करि श्री देवजिणंद ।।
बालक बधै नित उत्तम देह । रहै अंजनी मामा गेह ।।१३३०।।

सोरठा

सब तैं बडो ज पुण्य, जल थल में रिक्षा करैं ।।
संकट विकट उद्यान, कष्ट पीड सगली हरैं ।।१३३१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान जन्म विधानकं ।।

१७ वाँ विधानक

चौपई

पवनंजय के द्वारा रावण से विदा

पवनंजय रावण पैं जाइ । नमस्कार कीयो सिर नाइ ।।
रावण नें अति आदर किया । विदा वरुण राजा पर किया ।।१३३२।।

पवन संग बहु सेन्यां दई । बरुण भूपसौं चरपट भई ।।
वरण राय के झूझे पूत । बांध्या बरण राय अवधूत ।।१३३३।।
खरदूषण तब लिया छुडाय । बरणं आंणि लगाया पांय ।।
पवनकुमार सराह्या भूप । या का अधिक बिराजैं रूप ।।१३३४।।

पवनंजय का आदित्यपुर आगमन

भई जीत लंका फिर गया । आदित्यपुर पवन आइया ।।
मात पिता के चरणउं नया । परियण मांहि बधावा भया ।।१३३५।।
अंजनी तणा महल में जाय । देखी नहीं त्रिया तिह ठांय ।।
मन माहीं अति चिंता भई । मंदिर थी राणी कित गई ।।१३३६।।
मात पिता सूं पूछी बात । मात कह्या उससे बिरतांत ।।

पवनंजय का अंजना के निष्कासन के समाचारों से दुखित होना

तिण कारण घरतें दी काढि । उंण दूषण किया था बाढि ।।१३३७।।
बोले पवन तब वचन रिसाइ । तुम मुझ देते लेख पठाइ ।।
तब तुम देते वाहिर निकाल । वा बिन प्राण जाहि इह बार ।।१३३८।।
वाकी मोहि बतावो सार । अंजनी पठई किसके द्वार ।।
वा हम भेजी पिता के गेह । तुम उसकी सुधि जाकर लेहि ।।१३३९।।
प्रहसित मित्र लिया तब साथ । दंतीपुर तहां महिंद्रनाथ ।।

पवनंजय का ससुराल जाना

पवनकुमार सुसर पैं गया । उन सनमांन बहुत विध किया ।।१३४०।।
अंजनी तणें महल में गया । देखी नहीं सोच तिण ठया ।।
कंन्या एक देखी तिण ठांव । पूछं बात पवनंजय राव ।।१३४१।।
उन सब कही सुसर की बात । काढी सुता पिता अर मात ।।
ऐसी सुंणत खाई पछाड । बडी बार तन भई संवार ।।१३४२।।
महैन्द्रसेन सौं तब कही आणि । तुम क्यो दई अंजना जाणि ।।
महैन्द्रसेन बोलैं समझाइ । वाकुं सासु ओलंभा लाइ ।।१३४३।।
सो हम पैं क्यूं राखी जात । ओलंभा तें सुकुल लजाइ ।।
पवन तिलक घरि घरि सुध लेइ । कोई निश्चै खबरि न देइ ।।१३४४।।
प्रहसित सों पवनंजय कहै । तुम फिर जांहि खबर वे कहै ।।
प्रहलाद केतुमती पैं जाहु । ए वारता कहो समझाय ।।१३४५।।
जो मैं अंजनी पाऊं कहीं । तो मुझ प्राण रहैंगे सही ।।
जो वह मेरे चढै न हाथ । तो मैं भी प्राण तजूं उस साथ ।।१३४६।।

प्रहसित मित्र बहु विनती करै । तुमनै छोडि जांउ किण परै ।।

अंजना की तलाश

भरतक्षेत्र ढूंढू सब देश । अंजनी पावैं कोई नरेस ।।१३४७।।
पवनंजय बिदा मित्र ने दई । हस्ति परि चढि सोधण लई ।।
वन परवत देखी बहु ठौर । रुदन करै पीछै कर सौर ।।१३४८।।
पघडी पटकी करैं पुकार । कपडे तनके फाडे डार ।।
इस वन मे वह कोमल देह । वन भय देखि भई मर षेह ।।१३४९।।
कै वह दुष्ट जिनावर गही । कै विद्याधर ले गया सही ।।
कै उन दीक्षा लीनी जाइ । अन्न पांणी बिन मुरझाय ।।१३५०।।
मैं भी मरू याहि वन बीचि । ऐसे दुखतै आछी मीच ।।
हस्ती सेती भणै कुमार । तू फिर जाह प्रहलाद कै द्वार ।।१३५१।।
भूख प्यास तूं दुखिया होइ । मेरा दुख जाणै नही कोई ।।

प्रहलादराय को पवनंजय का संदेश

प्रहलादराय सों इम जाय कहो । पवनकुमार अगनि मे दह्यो ।।१३५२।।
हस्ती देखि रुदन अति करै । आसि पासि कुंवर के फिरै ।।
प्रहसित गयां जहां प्रहलाद । पवनंजय वचन के मुख आदि ।।१३५३।।
वह अजनी बिन तजै पराण । मै तुम खबर करी छै आन ।।
राजा सुणतै खाई पछार । रोवै पीटै सब परिवार ।।१३५४।।
केतुमती आई सुणि सोर । प्रहसित बातां कही बहोर ।।
केतुमती रिस करी अनंत । तू क्यू आया छोडि तुरंत ।।१३५५।।
केस खसोटै कूटै हिया । सब परियण दुख अधिका किया ।।
तिनका दुख वरण्यां नही जाय । असे सकल लोग बिललाइ ।।१३५६।।
सीलवती कुं दिया कलंक । इन क्यो व्यापी असी सक ।।

अंजना की तलाश

देश देश के खेचर आइ । प्रहलाद ने बात कही समझाय ।।१३५७।।
पवनंजय अंजनी ढूंढे जाय । उनको तुम पै ल्याडै राइ ।।
अर जो आई पहुंचै नही । पत्री लिखी प्रति सुरज जही ।।१३५८।।
भेज्या दूत प्रतिसूरज पास । उनसौं बात कही परकास ।।
पवन अंजनी के कारणैं । आपणपै दुख कीनें घणे ।।१३५९।।

मात पिता विभव धर त्याग । ढूंढण कारण गया है भाग ।।
पवनंजय को तुम ढूंढो जाय । अैसा कहै प्रहलाद जु राय ।।१३६०।।

प्रतिसूरज अंजनी सों कही । पवनजय की कुछ सुध नहीं ।।

अंजना की चिन्ता

अैसे सुने अंजनी बैंन । चिता व्यापी भयो कुबैंन ।।१३६१।।

अब लौ थी उसकी मुझ आसि । ऊनौं लीया अब बनवास ।।
अब हूं तजूं आपने पाण । अैसी मोहि बणी है आंण ।।१३६२।।

बसंतमाला सूरिज पै गई । सकल वात तासूं बीनई ।।
तुमारी भाणजी व्याकुल होइ । तुम वा धीरज देवो कोइ ।।१३६३।।

प्रति सूरज अंजनी सौ कहै । तू क़ाहे को चिंता गहै ।।
बैठि विमांण प्रथी सव देखि । पवन मिलाउं तोहि विसेषि ।।१३६४।।

सज्या विमांण चल्या आकास । देखे बहुपुर पट्टण वास ।।
प्रहलाद तणे विद्याधर घणे । विमांण आरूढ भले सब बणे ।।१३६५।।

चले बहुत विद्याधर भूप । प्रतिसूरज पहुंच्या रवि रूप ।।
देखै सकल पवन का खोज । बहुत विनय करैं सब सौंज ।।१३६६।।

देख्या हस्ती वन के मांझि । पहिचान्या सव ही जन ताहि ।।
हस्ती ने देखी बहु भीर । वनमें कोई न आवै तीर ।।१३६७।।

पट्टा चुंखै अधिक मयमंत । परिदक्षणा देवै बहुभांति ।।
प्रभु रक्षा करैं गयंद । चलै न विद्याधर का बंद ।।१३६८।।

कागद की हथणी दिखलाइ । हाथी बांधि लियो तिन ठांय ।।
पवन बैठा कर संन्यास । गही मौन जीव तजि आस ।।१३६९।।

पवनंजय की प्राप्ति

प्रहलाद देखि अति चिंता करै । मति यह रूप दिगंबर धरैं ।।
माथा चुंब्या पुत्र का जाय । वहुत प्रकार करी समझाय ।।१३७०।।

इह दीक्षा की नाही बार । अव तुम सुख भुगतो संसार ।।
आगै जब संपति ह्वै भलौं । तब दीक्ष्या लीजो मन रली ।।१३७१।।

मौन मांहि इन सैन इम कही । त्रिया वियोग संन्यास मैं गही ।।
जब अंजनी मैं देखुं नैन । तव मैं बोलूं मुख सों बैन ।।१३७२।।

अन्न पान मैं तब ही खाउं । मैं अब धरचा मरण का भाव ।।
तब रोवै विद्याधर घणे । राक्षस वानर वंसी जणे ।।१३७३।।

प्रति सूरज बोलै हंसि बात । हूं बुलाऊं पवनंजय इक भांति ।।
तब सब बोल बेग बुलाय । तीन लोक में होइ जस नांव ।।१३७४।।

प्रति सूरज पवन ढिग जाय । प्रथम भेद भाष्यो समझाय ।।
और सब बात गुफा की कही । पुत्र जनम सुण रहस्या सही ।।१३७५।।

मुंनि केवली गया था जात । वनमें नारि देखी विललात ।।
दया निमित्त मैं तहां आइया । भाणजी कुं विमाण परि लिया ।।१३७६।।

अैसी सुणि मन आनंद भया । सब ही का संसा मिट गया ।।
बहुरि कथा बालक की कही । रूप लक्षण वा सम कोई नहीं ।।१३७७।।

रवि नैं देखि बालक उछल्या । तिहां ते आइ परवत परि पड्या ।।
बहुत दुख चित चिंता भई । हमारी सेन्या सगली ढई ।।१३७८।।
बालक की सुणि रोवै पौन । हाई हाइ करैं सब हौन ।।
प्रति सूरज तब बोल्या राव । बालक बचा लगा नही घाव ।।१३७९।।
सिला फूटि थई चकचूर । पुण्यवंत कै लगी न मूर ।।
अंगूठा चूषै खिलकैं खरा । पुन्यवंत बालक तिहा परा ।।१३८०।।
लिया गोद अंजनी कूं दिया । हनूंरुह में आश्रम लिया ।।
सेना सहित हनूरुह गये । सब राजन को भोजन दिये ।।१३८१।।

अंजना पवनंजय मिलन

मास दोय कौं सकल नरेस । बिदा मांगि पहुंचे निज देस ।।
पवनंजय अंजनी सुख कै भाव । पुत्र तणां धरया हणुमंत नाम ।।१३८२।।

कामदेव हैं सब तै बली तिसकी कथा जगत में चली ।।
हणुमान का सुणै चरित्र । धन सपति बहु लहै पवित्र ।।१३८३।।

सुणि पुराण जे निश्चय धरै । काटि करम भव सायर तिरै ।।
रवि प्रकास तैं भये अंधेर । पावै मोक्ष नासै भव फेर ।।१३८४।।

जाय मुगति में निरभय ठौर । आवागमन न होय बहोर ।।
दरसन ग्यांन तब लहैं अनंत । बलबीर्य का नावै अन्त ।।१३८५।।

दूहा

चरित्र सुणैं हनुमांन का, धरैं धरम दिढ चित्त ।।
निश्चय पावैं परमपद, होइ मुकति की थित्ति ।।१३८६।।

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ।।

चौपई

१८ वां विधानक

वरुण द्वारा रावण से युद्ध

वरण सुणी पवनंजय गृह त्याग । छोडि कुटुंब वन मैं गये भागि ।।
अब मैं भुगतौं निरभय राज । रावण सौं क्या अटका काज ।।१३८७।।

रावण का कछु भय नही धरूं । अब मैं पकडि बंदि में करूं ।।
रावण सुणी वरण की बांत । महाकोप उपज्या सब गात ।।१३८८।।

देश देश को दूत पठाइ । सकल भूपति लिया बुला बुलाइ ।।
दोइ सहस्र अषोहिणी दल जुडया । वाजंत्र वाजैं मारू धुरया ।।१३८९।।

बजै दमामा अर सहनाहि । मेघपुरी को घन घेरी जाई ।।

भेजा दूत हनूरूह देस । पवनंजय को दिया संदेस ।।१३९०।।
पवनंजय रावण की मांगि । चल्या देखि बेग्य। फरमान ।।

हनुमान द्वारा युद्ध में जाने की इच्छा

तब हणुमंत कहै इण भांति । मौकूं आग्या दोजे तात ।।१३९१।।

मेरा तुम देख्यो पराक्रम । होइ सहाइ तुम्हारा धर्म ।।
पुत्र वयण सुणि हंस्या पवन । पुत्रै कीया तहां गवन ।।१३९२।।

सेना बहुत लई तिन साथ । त्रिकुटाचल देखि छिप्यो दिननाथ ।।
तिहां उतरि कै आश्रम लिया । भया प्रभात पयाणां किया ।।१३९३।।

रावण पास गया हणुवंत । देख्या ताहि बहुत हर्षवंत ।।
बहुत प्रति थी बोलै भूप । वाका देख्या अधिक स्वरूप ।।१३९४।।

वाकी कथा कहैं सब लोक । पर्वत परि पडया माता भया सोक ।।
पुंन्यवंत कैं लगी न चोट । परवत सिला भई सब षोटि ।।१३९५।।

सिला फोडि टूकडे करे । हणौंमान जीवत ऊबरे ।।
बहुत सिरावैं रावण राय । पवनंजय भली करी बहु भाय ।।१३९६।।
अैसा बली भेजा मुझ पास । पूरैंगा मो मन की आस ।।
सेना देखी नाना भांति । केई तरह की उनकी जात ।।१३९७।।

रतनदीप घेरया चिहुंवोर । वरण राय आया चढि भोर ।।
सकल पुत्र आए चढि संग । मारू सुणि कातर चित भंग ।।१३९८।।

सूरवीर मन करैं आनंद । दुहुंघां सुभट करैं चद वंद ।।
राक्षसवंसा दिये अहराड । बानर बंसी बोले राइ ।।१३९९।।

भाज्या रण तैं लागैं लाज । अब फिरि करो भूप के काज ।।
सिमट लोग फुंन सनमुख भए । इद्रजीत मेघनाद दोऊ गए ।।१४००।।
उतनें कुमर इततें नृप घने । वरण पुत्र इनौं ने हने ।।
मार मार दोऊं घां होइ । झूझें सुभट हटैं नहि कोय ।।१४०१।।
रावण आप कटक में धस्या । बीस भुजा दस सीरनी कस्या ।।
स्यंह तणें रथ बैठ्या भूप । तब हणुवंत धाया बलरूप ।।१४०२।।
बांधे वरुण के बहु पूत । वरण राय तब आय पहुंत ।।
मनमैं सोचा रावण राय । जे बालक ने मारैं ठाय ।।१४०३।।
असे समझ आया सामही । झुझैं लोग न हारि मांनई ।।
वरण एकैं विद्याने संभारि । रावण परि छोडि तिण बार ।।१४०४।।

कुंभकरण द्वारा विजय के पश्चात् लूटपाट करना

रावण ऊपरि विद्या वही, हनुमांन वह विद्या गही ।।
वानर वसी ने बाधिया कुमार' घेरघा वरण लोह की वाडि ।।१४०५।।
आंण्यां बांधि रावण कै पास । कुंभकरणस्युं बोल्या हास ।।
लूटो नगरि करो तुम बदि । जिहां तिहां जाई मचाई दुंद ।।१४०६।।
लूटो जिको तिकोही लेह । कुंभकरण इम आग्या देह ।।
लुटया नगर हाट बाजार । राजा का लुटया भंडार ।।१४०७।।
बहुत नारि नर लीन्हे बांधि । सीलवंती मरैं बिन अपराध ।।
केई जीभ षंड करि मरैं । सीलभंग तै पतिव्रता डरैं ।।१४०८।।
केई कुंभकरण का रूप । राग प्रमाण सु देखैं भूप ।।
धन्नि भाग जे याकी नारि । यह उनकै ऐसो भरतार ।।१४०९।।
केई पुत्र पुत्र बिललाइ । केई मात पिता कोई भाइ ।।
जिणकै कुटब बिछोहा भया । परिबस पडी बहुत दुख सहा ।।१४१०।।
केई बांधि लई संगि नारि । केई ऊंटां परि असवार ।।
केई लई गाडया पै डारि । बहुत बांधि घेरी तिण बारि ।।१४११।।
असी विधि रावण वैं आनि । कुंभकरण आया वलिवांन ।।
सगली बंधि तब करै पुकार । रावण सुणि करि दया विचारि ।।१४१२।।

रावण द्वारा लूट की निन्दा करना

ए तुम क्यो बांधी अस्तरी । कुंभकर्ण तैं कीनी बुरी ।।
अर्थ दर्व दे छोडी बदि । अपणे घर तुम करो आनंद ।।१४१३।।

जाकी वस्तु लूटि में गई । ताकी ताहि मंगाय करि दई ।।
रावण में सब दई असीस । तेरो भलो करो जगदीस ।।१४१४।।

रावण फिरि लंका में गया । सुदरसण सहज ही लिया ।।
जै जै सबद करैं संसार । वरण किये बहुतें नमस्कार ।।१४१५।।

मैं तो चूक करी थी धणी । कछुवन आवै कहतां बणी ।।
मैं तो अधिक मूढता करी । तुम्हारी आग्या चित्त न धरी ।।१४१६।।

वरण को पुन: राज देना

वरुण भूप तब दीना छोडि । बंधण सकल दिये नृप तोडि ।।
वरण फेर करि पायो राज । रतनदीप का सारघा काज ।।१४१७।।

चन्द्रनखा की महाप्रभा पुत्री । हनूमान व्याही सुभ घरी ।।

वानर वंशी राजा वर्णन

अपनां पुहपश्री नगर शुभ देस । हनुमांन कुं दिया नरेस ।।१४१८।।

किषपुर का राज नल नील । श्रीमालणी रांणी सुभसील ।।
श्रीजयंता ताकी सुता । हनुमांन कुं दीनी सुखलता ।।१४१९।।

विजयारध गिर किन्नर गीत । कन्यां वाकी व्याही सुभ रीत ।।
किषंधपुर रहै सुग्रीव । सुतारा पतनी धरम की नींव ।।१४२०।।

भावमंडला पुत्री ता गेह । रूपलक्षण करि सोभै देह ।।
कंन्या बडी सयानी भई । राजा के मन चिंता थई ।।१४२१।।

कहै स्वयंबर छाउ आजि । देस देस के भूपति काज ।।
जा गलु कन्या डालै माल । कन्या सो व्याहै भूपाल ।।१४२२।।

राजा मना विचारै भला । देस देस को चितेरा चला ।।
पूतली लिखी सबै की जाइ । जहां लग थे प्रथ्वीपति राय ।।१४२३।।

जहा तहां के राजकुमार । चितेरैं लिखी मुरति सवार ।।
हनूमान की लिखी फूतली । समझि धाइ प्रति सौंपी भली ।।१४२४।।

देखी भाव सकल मंडला । हनुमांन उपरि चित चल्या ।।
राजा याकी मुरति लिखाय । हनुमान पै दूत पठाय ।।१४२५।।

गया दूत जेठैं हणुमंत । रूपलक्षण का नाहीं अंत ।।
दीया पटले वाकै हाथ । किया पयाना दूत के साथ ।।१४२६।।

तिहां नारि होवै मयमंत । जहां जाय निकसै हणुमंत ।।
भामंडला नृप दई पठाय । भोग भूमि नप करैं उछाह ।।१४२७।।

अंजनीपुत्र जाण्यां इक ओर । छत्रपति नांम विराजै ठौर ।।
निरभय राज करै तिहां भूप । दुष चिंता सब डारी कूप ।।१४२८।।

दूहा

प्रथमकांड श्रेणिक सुण्यौं, विद्याधर को बंस।।
मिथ्या वेदन मिट गई, सगली ही मन सस ।।१४२९।।

इति श्री पद्मपुराणे प्रथम कांड रावण राज विधानकं ।।

१९ वां विधानक

सोरठा

बे कर जौडि नरेस, श्रेणिक फिर परसन करै ।।
रावण बंस परमेस, मैं बहु बिध करकै सुण्या ।।१४३०।।

चौपई

जिन कोई बकै त्रिदोष का धणी । असी मैं उनके मुख सुणी ।।
केवल वयण कह्यो समझाय । सब संसय तिहा मिट जाय ।।१४३१।।
किम उपजै चौबीस जिणंद । द्वादश चक्रवर्त्त गुणवृन्द ।।
नव नारायण वलिभद्र भए । प्रति नारायण कैसे थए ।।१४३२।।
कवण पुण्य पूरवभव किया । कवण स्वर्ग ते चय आइया ।।
किम गुरु पासै दिक्ष्या लई । कवण भूमि ते इह थित भई ।।१४३३।।

अडिल्ल

वाणी ग्यान गंभीर तबै जिणवर कही ।
गौतम करै बखान सुणै श्रेणिक उर गही ।।
समकित सों धरि प्रीत सुणै मत ल्याइकै ।
सकल बंस का भेद कह्या समझाइकैं ।।१४३४।।
जंबुद्वीप भरतषंड कोसांबी नगरी
सुमुष नृपति करै राज दया चित आगरी ।।
सुखी वसैं सब लोग दुखी कोई नही,
आंई रितु बसन्त सब न क्रीडा चही ।।१४३५।।

वीरक सेठ एवं वनमाला वर्णन

वीरकसेठ तिहां रहे वनमाला असतरी ।
रूपबंत गुणचतुर सलावण अतिपरी ।।
सकल प्रजा नृप साथ सुवन क्रीडा करी ।
देख त्रिया नृप नैंन सुदिल चिंता धरी ।।१४३६।।

वनमाला पर राजा का आसक्त होना

वनमाला चित चल्यो देखि भूपाल को ।
राज रिद्धि सब देखि भयौ सुख बाल कौ ।।
मो सी नारि सरूप राय घर जोइए ।
कहा वरिणक घर जोबन थिरता खोइये ।।१४३७।।

राजा सोच अधिक मन में करै ।
नरपति करैं अनीत सुमर नरकां पडै ।।
हूं नृपति धरमिष्ट पाप कैसे करूं ।
व्याप्यो अधिको कांम सु धीरज किम धरौं ।।१४३८।।

राजा की व्याकुलता

गही राय तब मौन भेद नहि पाइये ।
करैं वैद्य उपचार सु औषध ल्याइये ।।
कहै दोष पित्त वाय का ग्रन्थ विचारि कै ।
उसको रहै न विकार पचि हार कैं ।।१४३६।।

पंडित जोतिग कहैं ग्रह चाल को ।
नवग्रह खोटे व्यापै या भूपाल को ।।
मुख बोलै नही बोल सुग्रह खोटे लगै ।।
बहुत बढी गभीर जुडे प्रीतम सगे ।।१४४०।।

दूहा

सुमति नांम इक मंत्रवी, आयो भूपति पास ।
लोग उठाय दिये सबै, पूछै करि अरदास ।।१४४१।।

सेवक स्यों मनकी कहो, किरण काररण गही मौंन ।
सांच बात मुख उचरो, तुम मन संसय कौन ।।१४४२।।

राजा मंत्री सों कहै, सांभलि सुमति सुजांरण ।।
वनमाला नें देख करि, चये जात हैं प्राण ।।१४४३।।

मंत्री विनवै राय सों. तुम नृप अछो सुग्यांन ।।
परनारी के संग थी, होइ धरम की हारिण ।।१४४४।।

बोलै नृप अकुलाय करि, सुण हो मंत्री बात ।।
ग्यांन भेद कब लग भणों, वा विनमो जीव जात ।।१४४५।।

मंत्री सोच विचार कर, दूती लई बुलाइ ।।
भेजी वनमाला कनें, लीनी तुरत मंगाय ।।१४४६।।

दोन्यु की इच्छा फली, कियो जुगति सों भोग ।।
जैसे दुखिया मानवी, भूलै रुख वियोग ।।१४४७।।

बीती निशि सुरज उदय, दंपति कर स्नान ।।
सुमरैं श्री भगवंत कौं, मुनिवर पहुंता आन ।।१४४८।।

उठि द्वाराप्रेषण करयो, मुनि कों दियो अहार ।।
दंपति बहु विनती करी, जिम थाये निस्तार ।।१४४९।।

जाप करत तस भूमिपै, पडी दामनी आय ।।
वे दपति दोउ मुवा, विजयार्द्ध उपजा जाय ।।१४५०।।

उत्तर श्रेणी हरिपुर नगर, तहां पवन गिर भूप ।।
मृगावती राणी उदर, जनम्या सुषम स्वरूप ।।१४५१।।

अडिल्ल

पूर्व जन्म

हरि विभ्रम धरा जोतिगी विप्र ने ।
दिन दिन बढै कुमार सुराजा केतु ने ।।
रूपवंत सोभंत सुख परिवार मे ।
दांन सुपात्र सहाय भयों संसार मे ।।१४५२।।

मेघपुरी को नरपति ताकी अस्तरी ।
वनमाला का जीव गर्भ तसु अवतरी ।।
मनोरमां धारयो नाम जोतिगी विप्र ने ।
रूप लक्षण सामोद्रक काहै तसु तनै ।।१४५३ ।

जोवनवंती देखि हरि विभ्रम को दई ।
लगन घडी सुभ साधि विप्र चौंगी छई ।।
रहस रली सों व्याह रह रग प्रीत सो ।
फूलन की कर सेज रमे सुख रीन सो ।।१४५४।।

दूहा

वीरक सेठ की तपस्या

वीरक सेठ उठि हाठ तें, आयो गेह मंझारि ।।
चिंता चित उपजी घणी, तिहां न पाई नारि ।।१४५५।।

घर की सुधि सब बीसरी, ढूंढै घर घर नारि ।।
कहीं न पाई अस्तरी, जती भयो तिण वार ।।१४५६।।

करी तपस्या जुगति स्यों, लही देवगति जाय ।।
उपनी अवधि इक भवतणी, रुद्रभाव सों आय ।।१४५७।।

दंपति पिछला बैर सु', लौ चाल्या आकास ।।
तु सुमुख बनमाला इहै, मैं वीर कहुं तो पास ।।१४५८।।

हूं पूर्वे थो बांणियो, तू पुष्वीपति भूप ।।
अब जो तूं कछु बल करै, हूं लडूं जुध के रूप ।।१४५९।।

चौपई

देव होकर पूर्व भव की अपनी स्त्री को दुख देना

दंपति को दुःख दीने घणे । सुर का क्रोध कहां लग गिणैं ।।
कबहुं गहिहि गयण उछालि । धरती पडतां झेलैं ख्याल ।।१४६०।।

कहै समुद्र में देहु बुडाइ । कैले धरूं सिला तलि जाइ ।।
कै या मींड करूं चकचूर । नखसिख तोडि मिलाऊं धूलि ।।१४६१।।

दूहा

बहुत त्रास उनकों दिये, उपनुं जाती ग्यांन ।।
पूरब में पाली दया, तो सुर लह्यो विमांन ।।१४६२।।

चौपई

दया के भाव

जो अब इनकी हत्या करूं । नोतम पाप आप सट भरूं ।।
जै मानुष करै कोई पाप । जप तप करि निज हरै संताप ।।१४६३।।

मेरा दोष टलैं अणरीत । राखुं जीव दया सुं प्रीत ।।
छोडे दंपत्ति आणी दया । नारि पुरुष मन आनंद भया ।।१४६४।।

दूहा

चंपापुर दक्षिण दिसा, छोडे दंपति जाय ।।
हरितिणपुर को नृप थयो, हुवो प्रताप अधिकाय ।।१४६५।।

चौपई

राज करत बीतै बहु वर्ष । जन्म्या मांनी महागिर हर्ष ।।
महा प्रताप प्रगटया संसार । हरवंसी जनमिया कुमार ।।१४६६।।

हिमगिर बसु गिर पीछे भए । महीधर आदि पुत्र बहु थए ।।
केई स्वर्ग देवगति पाइ । केइक मुक्ति विराज्या जाइ ।।१४६७।।

बहुतै नया बसाया देस । हरिबंसी बहु भए नरेस ।।
सीतलनाथ का दरसन किया । हरिराजा वा समए भया ।।१४६८।।

दूहा

सीतल नाथ जिनेन्द्र तें, हरिबंसी हुए अनंत ।।
नाम कहां लग बरणए, कहत न आवैं अंत ।।१४६९।।

चौपई

मुनिसुव्रतनाथ का जन्म

कुसागर नगर सुमित्र नरिन्द्र । पौमा देवी मन आनंद ।।
सघन ग्रह नगरी मे बसैं । दुखी दलिदी कोई न नसैं ।।१४७०।।

पदमादेवी पिछली राति । सुपने देखे नाना भाति ।।
स्वेत गयद दृषभ अरुस्यघ । लक्ष्मी माला पूनमचद ।।१४७१।।

सूरज उदै मच्छ जल तिर । कल सरोवर निरमल भरै ।।
सिंघासरण रतनन की भूमि । देखी अगनि बलै निरधूम ।।१४७२।।

कुंभ जुगल देख्या जल भरया । देव विमान अनूपम धरया ।।
देख्यो धरणेन्द्र देवता नाग । थयो प्रभात उठी जब जाग ।।१४७३।।

सोलह सपणा देख्या इण भाति । सुमित्र भूप सों कही सब बात ।।
सुणे सकल सुपना के बैंन । विगसत बदन भयो उर चैन ।।१४७४।।

होय पुत्र त्रिभुवन का धणी । हरिबंसी कुल वाणी वणी ।।
तीन लोंक के सुरपति आइ । श्री जिन के सेवेगे पाय ।।१४७५।।
नरपति षगपति दानव देव । ए सब आनि करेगे सेव ।।
पंचग्यान का त्रिभुवन पति । धर्म प्रकासि पंचमी गती ।।१४७६।।
सुंणि पिय बयण हीये सुख भया । अंचल गांठि बांधि कै लिया ।।
श्रावण बदि दोइज सुभ घडी । प्रभुजी आय गर्भ थित करी ।।१४७७।।
आसण कंप्या सुरपति इन्द्र । अवधि विचार किया आनंद ।।
श्री जिन देव तणों अवतार । उतर सिंहासण कियो नमस्कार ।।१४७८।।

भृकुटी जक्ष तब लिये बुलाइ । नगर कुसागर वेगा जाइ ।।
छपनकुमारी देवि पठाइ । गरम सोध तणी प्रभाइ ।।१४७९।।
रतनवृष्टि फूलों की वृष्टि । जै जै करत भये अघ नष्ट ।।
देवी सब मिल सेवा करै । रात दिवस टारी नहिं टरै ।।१४८०।।

जैसे रवि बादल की छांह । इम गरभ माहि दंपै जिणणाह ।।
स्वाति बूंद पर दमके पत्र । श्री भगवत महा पवित्र ।।१४८१।।

बैसाख बदि दसमी सुभवार । श्रवण नक्षत्र भयो अवतार ।।
सुरपति संग अपछरा घणी । अैरापति साज्या विधवणी ।।१४८२।।

चले देवता जै जै करैं । इन्द्राणी जिणवर नै हरैं ॥
माया का बालक उतै राखि । लीया उचाइ दीनता भाखि ॥१४८३॥
पति की गोद दिये जिनराय । दरसण देखि महा सुख पाय ॥
बाजे बाजैं नाचैं देव । दसौं दिसापति आए सेव ॥१४८४॥
मेरु सुदरसण पांडुक सिला । तिहां महोच्छव कीना भला ॥
करैं उबटणा मंगल गीत । षीराचारि करी बहु प्रीत ॥१४८५॥
सहस अठोत्तर इन्द्र ने भरे । और देवता बहु कर धरे ॥
श्री जिण ऊपर डारैं आणि । काजल नयन सहित मुख पान ॥१४८६॥
बींधे कर्ण वज्र की सुई । कुंडल तणी जोति अति हुई ॥
आभूषण पहराय अनूप । सब सिंगारैं सोमैं रूप ॥१४८७॥
अष्ट दरब सूं पूजा करी । करैं आरती विनती करी ॥
श्री जिनवर माता पैं आणि । तिहां बाजै आणंद नीसांण ॥१४८८॥
इन्द्र धरणेन्द्र सुरां लै गये । वरख्या रतन पुष्प वरणये ॥
तीस हजार वर्ष की आय । बीस धनुष की ऊंची काय ॥१४८९॥
कहैं जोतिगी लगन विचार । मुनिसुव्रत त्रिभुवन आधार ॥

मुनिसुव्रतनाथ का जीवन

परियण मांहि बधावा भया । जनम समय बहु धन खरचीया ॥१४९०॥
खेलैं संग देव के बाल । क्रीडा करैं तव रूप बिशाल ॥
सात सहस्र अरु वरष पचास । ता पाछै मन भया उल्हास ॥१४९१॥
जसोमती ब्याही वर नारि । रूपवंत शशि की उणहारि ॥
भोग करत दिन बीते घणे । भयो गरभ जसोमति तणे ॥१४९२॥
दक्ष पुत्र जन्म्या शुभ घडी । परियण मांहि बधाई करी ॥
पंद्रह सहस्र वरष करि राज । मृग मृगनीं देखे वन मांझ ॥१४९३॥
बिजली पडि करि दोन्यूं मुवा । ताहि देखि मन विस्मय हुआ ॥
मन में धरचा धरम सौं काज । दक्ष पुत्र कौं दीनों राज ॥१४९४॥
सुपरणां सरसी जांणि विभूति । सुरलौकांतिक आणि पहूंत ॥
धन्य धन देव सबद सब करैं । प्रभु आगैं शिव सुरका धरैं ॥१४९५॥
चढे पालकी प्रभु वन जाइ । सिध नाम ले लोंच कराइ ॥
भए दिगंबर आतम ध्यान । सुरपति किया चारित्र कल्यांण ॥१४९६॥
वैसाख बदी दसमी दिढ चित्त । नो वरषं रहिया छद्मस्त ॥
बैसाख वदी नवमी शुभ वार । टारे करम घातिया चार ॥१४९७॥

प्रकृति तरेसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु कूं केवल ज्ञान ।।
आए चतुरनिकाय के देव । पूजा करी बहुत बिध देव ।।१४६८।।

जोजन तीन रच्या समोसर्ण । भव्यजीव का संसय हर्ण ।।
कंचन कोट रतन के तीन । सिंहासन भामंडल लीन ।।१४६६।।

चारौं वन के वृक्ष अति बने । वृक्ष अशोक शोक को हणैं ।।
वणी षातिका अति गंभीर । तिस में दीसैं निरमल नीर ।।१५००।।

मानस्थंभ मांन कूं हरैं । देखत ही मन निर्मल करैं ।।
अठारह गणधर बैंठे पासि । च्यारौं ग्यांन कहैं वे भास ।।१५०१।।

वाणी वेद सुणैं सब कोय । बारह सभा का संसय खोय ।।
गणधर ब्योरा कहैं बखांण । भव्य जीव सांभलैं वषांण ।।१५०२।।

दानपती व्हां नृप वाहत्त । सहसराय लीयो चारित्र ।।
बैसाख बदि चौदसि निर्वाण । संमेदगिरि गए मुक्ति भगवांन ।।१५०३।।

जोतैं जोति आय करि मिली । पूजा इन्द्र करैं मन रली ।।
पालै प्रजा दक्ष प्रभु भूप । महाबली अति धर्म स्वरूप ।।१५०४।।

एलवृद्धन कूं दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ।।
श्रीवर्द्धन जयवंता भया । ताकैं पुत्र कुंनम वलि थया ।।१५०५।।

महारथ पुल वासकेत बलबंड । बहु भूपन तें लीया दंड ।।
वासकेत कैं विमलावती नारि । रूप सील संयम की पार ।।१५०६।।

जनक भूप ताकैं उर भया । दान मांन सबकौं बहु दिया ।।
दया दान सयम नित करैं । पुण्या प्रताप तै दुरजन डरैं ।।१५०७।।

दूहा

हरिवंसी राजा

हरिवंसी पुनिवंत कुल, भूपति भए अनेक ।।
काटि करम सिवपुर गए, पांच नांम की टेक ।।१५०८।।

चौपई

कोई पंचम गति को गए । कंई स्वर्ग देवता भए ।।
हरिबंसी बसाए बहु गाम । इनका कुल तीस की ठाम ।।१५०९।।
इक्ष्वाकवंस आदीश्वर किया । जिनकी कथा सुणौं धरि हिया ।।
उत्तम कुल सबही तें आदि । तिनकी चालै कथा अनादि ।।१५१०।।

दूहा

आदिनाथ मुनिसुव्रत लौं, नरपति भए अनंत ।।
नाम कहां लग वरणउं, कहत न आवैं अंत ।।१५११।।

चौपई

इणही बंस बहु भूपति भए । काटि करम शिव थानक गये ॥
केई पहुंता स्वर्ग विबांण । केई भया पृथ्वीपति भाणि ॥१५१२॥

केई पहुंच्या नरक मझारि । केई पहुंच्या स्वर्ग विमांण ॥
जैसी करणी तैसी गति । धर्मध्यांन मे राखै मति ॥१५१३॥

सकति समान दान अरु वृत्त । देवशास्त्र गुरु राखैं हित्त ॥
च्यारिउ दांन भाव सों देइ । सो ऊंची गति का सुख लेइ ॥१५१४॥

इष्वकावंसी राजा वज्रबाहु वर्णन

इष्वाक बंसी विजय नरेस । भुगतैं नगर अयोध्या देस ॥
हेमचूल राणी पटधणी । मानूं कनक कांमनी बणी ॥१५१५॥

सुन्दरमन ता पुत्र जनमिया । कीर्त्तवती तसु व्याही त्रिया ॥
प्रथम पुत्र वज्रबाहु भया । दूजा पुरीन्द्र पराक्रमी थया ॥१५१६॥

दोन्युं कुमर विद्या बहु वढ़े । बल पौरस सूं बहुते बढ़े ॥
हथनापुर हंसवाहण राय । चूडामणी राणी पटथाय ॥१५१७॥

मनोदया पुत्री ताके भयी । सो वज्रबाहु कुमर को दई ॥
लिख्या लगन साध्या सुभ द्योस । व्याहण चाल्या नृप मन हौंस ॥१५१८॥

पुरों इसो पूछै नव वात । चलोकरण मुनिवर की जात ॥
नासा दृष्टि आतमध्यान । ताकों सोभै च्यारू ग्यांन ॥१५१९॥

बसत सगि परवत परिजाय । वज्रबाहु हस्ति चढिराय ॥
मुनिवर एक तिहां तप करै । जैसे केस सुंदर नर धरै ॥१५२०॥

आतमभाव लगायो जोग । छांडे सकल जाति के भोग ॥
तन बाईस परीस्या सहै । अष्ट करम कुं नित ही दहै ॥१५२१॥

तप की अधिक बिराज जोति । तिण समान परिग्रह नहीं होत ॥
दोंनूं कुमर सराहै आइ धनि साध जे अैसे भाइ ॥१५२२॥

वज्रबाहु तिहां लाया ध्यान । देख्या मित्र उदयसुंदर नाम ॥
कहै किम चाहो दिक्षा लिया । वैरागभाव मैं तैं चित दिया ॥१५२३॥

कंवर भणैं तउ अचिरज कहा । मनुष्य ही पाले चारित्र महा ॥
उदय सुंदर बोलै तब मित्त । जैं दिक्षा तुम आणी चित्त ॥१५२४॥

मैं भी संयम ल्यौं तुम साथ । मेरी अरज सुणौं प्रभु नाथ ॥
इतनी सुनत बसन सब डाली । मन वैराग्य भयो भूपाल ॥१५२५॥

तब उठि मित्र वीनती करी । हांसीक ना सांची चित्त धरी ।।
तुम तो चले व्याह के काज । कवण समय दिक्ष्यां की आज ।।१५२६।।

बोले कुमर सुपन समरिध । मात पिता कुण भाई दंध ।।
जैसी परफुलत है सांझ । असे सुख कूं लवकं मांझ ।।१५२७।।

विणसत बाहि न लागै वार । असा है संसार असार ।।
धन्य धन्य तू मेरे मित्र । तैं मोहि कही धर्म की रीत ।।१५२८।।

तुझ प्रसाद सिव मारग गहुं । तेरा गुण मैं कवि लग कहूं ।।
असी बात सुंणी परवार । बाल वृद्ध आए तिण बार ।।१५२९।।

दादी माता सब मिल आइ । और कहैं बहु जन समझाय ।।
तु बालक जोवन की बार । करो विवाह भोग संसार ।।१५३०।।

कुंवर भणैं संसारा थिति । जीवका कोई सगा न इत्त ।।
सोग विजोग रहट की घडी । कबही रीती कबही भरी ।।१५३१।।

सब साता तैं पावैं सुख । अशुभ करम उदय तैं दुख ।।
सुख भुगतैं जो सागर बंध । इक पलके दुख मैं सब दुंद ।।१५३२।।

तातैं हूं अब तप आचरूं । धरम नाव भवसायर तिरूं ।।
गुणसागर मुणिवर के पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।१५३३।।

दोई सहस अरु छः सैं कुमार । भए दिगंवर केस उतारि ।।
मनोदया सांभली यह बात । दिक्ष्या लई अजिका के पास ।।१५३४।।

विजयसेन सुरेन्द्र मनिभूप । बैठे सकल सोग के रूप ।।
वह बालक सुकुमाल सरीर । कैसे सहेगा परीस्या पीर ।।१५३५।।

हम तो राज भोग बहु किए । ऐसी कछुवन आणी हिये ।।
जरा व्यापी देही जो जरी । कैसे होय तपस्या खरी ।।१५३६।।

जोवन समय संभाल्या नाहिं । अब पिछताया होवै काहि ।।
समझावैं सब मंत्री आय । जो कछु सधै सो करि जाय ।।१५३७।।

सोई घडी सधै सब धर्म । वाही घडी कटैं अघ कर्म ।।
सकल राज रिध करि त्याग । विजय साह हुआ वैराग्य ।।१५३८।।

पुरिंदर प्रति सोंप्या निज राज । आपण किया दिगंवर साज ।।
विजयसेन संग राजा घने । भए जती मद आठौ हणे ।।१५३९।।

निर्धाणघोष घोष मुनिवर के पास । भये साध मन पूजी आस ।।
पुरींदर राजा पृथ्वीपति अस्तरी । कीर्त्तिधर पुत्र भया सुभ घरी ।।१५४०।।

कीर्तिधर राजा वर्णन

कुसाल नग्र नरेन्द्र नृप रूप । ता घरि पुत्री अधिक अनूप ॥
सहदेव्या कन्या का नाम । कीर्तिधर सौं व्याई बाम ॥१५४१॥
भूप पुरेन्द्र हुवा जब जती । माया लोभ न ताके रती ॥
क्षेमंकर पासै दिक्षा लई । आतमध्यान मे सदा रहेइ ॥१५४२॥
कीर्त्तधर अधिक प्रतापी भया । पृथ्वीतणां राज सब लिया ॥
सकल भूप तसु माणे आंण । या सम राय न को बल जान ॥१५४३॥
एक दिवस सूरज कौं केत । किया ग्रहण असुभ कै हेत ॥
सूरज छिप्या भया अंधकार । उडगन जौति भई संसार ॥१५४४॥
राजा देखि चित चिता करी । अैसी आउ जरा सी घरी ॥
जैसे केतने रवि कूं ग्रह्या । व्यापत जरा पराक्रम ढया ॥१५४५॥
रवि तो छूटि जाय ततकाल । जरा चढै तब व्यापै काल ॥
मंत्रियां सौं इम कहै भूपाल । तुम चालियौ धरम की चाल ॥१५४६॥
प्रजा देस की कीज्यो सार । हम अब लैं संयम का भाल ॥
मंत्री सबै कहें सीस नवाय । तुम बिन क्यों देस साध्या जाय ॥१५४७॥
तुम भुगतो पृथ्वी का राज । हम तुम आगे संवारा काज ॥
परजा लोग करे सब आय । हमारा कह्या सुणौं तुम राय ॥१५४८॥
तुमारे राज प्रजा सब सुखी । तुम आगन्यां में कोई न दुखी ॥
तुम जिन छोड्यो राज आपणां । तुम तें हम सुख पाया घणां ॥१५४९॥
करो राज भोग मन ल्याइ । संतति होइ दीक्षा ल्यो जाइ ॥
राजा इनका मान्यां कह्या । राज भोग में फिर रम रह्या ॥१५५०॥
परजाने बहु दीना दांन । घर घर बाजै आनन्द निसांन ॥
इक दिन जनम्या पुत्र उदांर । तास सुकोसल नाम कुमार ॥१५५१॥
मंत्री करी एक हिकमती । पुत्र ने राखियो गुपती ॥
ब्राह्मण मने किये सब जाय । राजा पासि हुवो मति ल्याइ ॥१५५२॥
जब एक मास वीत कर गया । ब्राह्मण जबै आसीरवाद दिया ॥
दई दोब राजा कै हाथ । पुत्र जनम जाण्यां नरनाथ ॥१५५३॥

दूहा

हुआ सुकोमल तणी फिराई । आय राय दीक्ष्या लई जाय ॥
तेरह विध चारित्र व्रत लिया । आतम ध्यान मुनीश्वर किया ॥१५५४॥

इति श्री पद्मपुराणे श्री मुनिसुव्रत वज्रबाहु कीर्तिधर महातम वर्णनं ॥

२० वाँ विधानक
चौपई

कीर्तिधर की तपस्या

कीर्त्तिधर मुनिवर इम तप धरैं । मास उपास पारणा करैं ॥
सहैं परीस्या वीस अर दोइ । दयाभाव सगलां पर होइ ॥१५५५॥

बहुत बरष ऐसे तप किया । नगर आहार निमित्त आइया ॥
द्वारापेषण करै न कोइ । राजा द्वारै ठाढा होइ ॥१५५६॥

झरोखे बैठी सहदेवी नारि । आवत देख्या मुनिवर द्वार ॥
देख साध मन बहुत रिसाइ । बाहर काढया धका दिवाय ॥१५५७॥

ए मुनिवर हैं बहुत बुरे । राज भोग सुख देख्यां जरैं ॥
महा दुःख सौं लहिए राज । तिणनैं कहैं नरक का साज ॥१५५८॥

अपणां घर खोवैं व्है जती । पुत्र कलित्र की चित न रती ॥
घर तजि भीख मांगता फिरैं । लाज कांण बसत्तर परिहरैं ॥१५५९॥

वणां विणां खोवैं घरबार । देह जलाय करैं जिम छार ॥
छोडैं सब ससारी सुख । छहु रिता वे मुगतैं दुःख ॥१५६०॥

असी कुबुद्धि इनामे होइ । बूडैं आप और घर खोइ ॥
एकं मास तणा तजि पूत । छोडी सगली राज विभूति ॥१५६१॥

बालक की न दया चित धरी । असी इणि सब कीनी बुरी ॥
अब जो याहि दरसै हि कुमार । तौ वाको भी ले जाहि गंवार ॥१५६२।

निज किंकर बोल इम कह्या । सजमी पुर मां देखो जिहा ॥
तिनको मारि मारि परहा करउ । इह उपदेस हिया मा धरउ ॥१५६३॥

मुनिवर फिर गया वन माहि । करैं तपस्या वासुर[1] सांझ ॥
मनमा कछु नही आणैं आंण । जोति स्वरूप सौं लाया ध्यान ॥१५६४॥

विप्र सन्यासी पाचौ भेष । तिण की अस्तुति करैं विशेष ॥
ते राखै अजोध्या में घणे । तिण पै कुमर कोक विध भणे ॥१५६५॥

खोटे वेद रात दिन पढ़ै । जिनके सुण्यां नरक थिति बढै ॥
असी विध प्रगटयो मिथ्यात । जैन धरम की कीनी घात ॥१५६६॥

तब तैं इहां मिथ्याती बसैं । खोटे वेद कीये तिनौं इसे ॥
बसंतलता ये देख चरित्र । मंदिर मांहि रुदन बहु करंत ॥१५६७॥

---

१. रात्रि दिन

राजकुमार के द्वारा वैराग्य

राजकुंवर तब धाय सों कहै । तेरे मन की चिंता रहै ।।
जो कोई तोंसुं बोलें बुरा । ताकी रमना खंडु छुरा ।।१५६८।।

वसंतमाला इम कैहै समझाय । तुमारा पिता भया मुनिराय ।।
वह आया था लेण आहार । माता तुमरी खाई मार ।।१५६९।।

वासों राज भोग बन किये । जिसकी दया न आयी हिये ।।
आंण वसाए मिथ्यमती । पुर मैं काढि दिये सब जती ।।१५७०।।

तुझ को निकसण दे नही द्वार । बांधि राख्यो तु कारागार ।।
ता कारण मैं किया रुदन । इम सांभल नृप मोड्यो वदन ।।१५७१।।
अर्द्ध रात्रि महलां परिजाय । डोरी बांधि तलैं उतराय ।।
तिहां मुनिवर बैठा था एक । दई प्रदक्षिणा आंण विवेक ।।१५७२।।
नमस्कार करि बारंवार । बहुत प्रकार कीन्ही थुति सार ।।
जनम जरामृत डोलै जीव । चिरकाल की गाढी नींव ।।१५७३।।

च्यारौं गति में डोलै हंस । कबहि नीच कभी उत्तम बंस ।।
रोग सोग आरति में फिरै । बिन समकित भव सायर पड़ै ।।१५७४।।
प्रभुजी मो पर कृपा करेइ । भव दधि तार मुकति पद देइ ।।
मंत्री मिले आय सब पासि । समझावैं विनती मुख भासि ।।१५७५।।

अब लग थे तुम बाल अचेत । अब जोवन तुम भए सचेत ।।
हम संसय टूटण की बार । तब तुंम ल्यौ हो दीक्षा भार ।।१५७६।।
कुल मांहि कौन छै कुमार । ताकौं राज सौंपि हो सार ।।
पिता तुम्हारे जब दिक्षा लई । महीना तणें सुत कौं मु दई ।।१५७७।।
अब तो तुम भुगतो ये सुख । चित्रमाला पावैं है दु:ख ।।
वाकै बालक नाहीं कोइ । ता की गति कहु कैसे होइ ।।१५७८।।

जब संपति होवै तुम गेह । तुम तब करो दिगंबर देह ।।
बोले भूपति वचन बिचार । चित्रमाला कैं गरभ का भार ।।१५७९।।

वाकै पुत्र होयगा बली । पूरैगा सब की मन रली ।।
वाको मैं दींया सब राज । जब वह जनमें तब सारो काज ।।१५८०।।

इतनी कहि तब वसन उतारि । किया लौंच सिर केस उपारि ।।
ल्याया चिदानंद सों ध्यान । गुरु संगति पाया बहु ग्यांन ।।१५८१।।

कठोर तपस्या

सहदेवी आरत में मुई। देही छोडि सिंघरणी भई ॥
दोन्यूं मुनीस्वर करत बिहार। भवि प्रमोद गये वन मझारि ॥१५८२॥
घरणहर करि छायो आकास। मुनिवर तिहां रह्या चोमास ॥
वरषै मेह मूसलाधार। तिहां मोर कुहकै अरणपार ॥१५८३॥
जल पृथ्वी पर उमड्या आइ। नंदी नाला चलैं अधिकाय ॥
दोन्युं मुनि परवत पर जाय। देखि सिला बैठे तिरण ठांइ ॥१५८४॥
च्यार महीने का संन्यास। अैसी विध नित करैं उपवास ॥
वरषै मेह पवन अति चलै। इनकी देह न तपतें टलै ॥१५८५॥
स्याम भुवंग मल पाटै देह। डस मछर तन चूटै एह ॥
बुंद झरै तरु बारंबार। बेलि घरणी लपटी ज्यो हार ॥१५८६॥
उगी दोब देह विपरीत। महा भयानक बन भयभीत ॥
देखं कातर फाटै हिया। जिस वनमाहि इनौं तप किया ॥१५८७॥
आसोज कार्त्तिक आई रित्त। चंद्रमा ज्योति बिराजै अति ॥
गति चौमासय पूरण योग। आहार निमित्त चित वै नियोग ॥१५८८॥
वाही वनमें सिंघरणी आइ। मुख पसारि अरु पूंछ उठाइ ॥
भय दायक देख्यां डर होइ। ता वन मे नावै जन कोइ ॥१५८९॥
सुकुमार साधु सिंघरणी नै गह्या। नखि मारि कै पावां तलि लह्या ॥
भषै मांस कछु दया न करै। अैले स्यघरणी मुनि नै हरणं ॥१५९०॥
इह पूरव भव का सनबंध। भुगत्या बरणं यही कछु बध ॥
मुनिवर सुकल ध्यांन मन दीया। केवलग्यान अत छिरण भया ॥१५९१॥
सुर लौकांतिक जै जै करैं। सुकुमार मुनीस्वर मुक्त बरैं ॥
देही दहन देवता करी। वह सिंघरणी तिरण ठांगं धरी ॥१५९२॥
कीर्त्तिधर बोले तजि मौन। तेरा वन क्यौं कीया गौन ॥
तुच्छ आव अब तेरी रही। क्रोध छोडि मन समता गही ॥१५९३॥
लियौ संन्यास तजे निज प्राण। पाया पहले स्वर्ग विमांरण ॥
कीर्त्तिधर लहि केवलग्यांन। धर्म प्रकास गये निरवारण ॥१५९४॥

चित्रमाला के पुत्रोत्पत्ति–हिरण्यनाभ

विचित्रमाल तिय जनम्यां पूत। हिरण्यनाभ लक्षरण संयुक्त ॥
जोवन समय विवाही नारि। अमितमती शशि की उणहार ॥१५९५॥
राजकरत दिन बीते घने। तिरण ठामें इक कारण बणे ॥
आरसी दिखावै नाई आइ। श्वेत केस सिर देख्या राय ॥१५९६॥

कहैक वीती जीवन वेस । दई दिखाई धवले केश ।।
जमके दूत दिखाली दई । मेरी आव अकारथ गई ।।१५९७।।
धरम राह में किया न कुच्छ । अब तो आव रही है तुच्छ ।।
देह जाजरी तप किम होइ । अब पिछताये अवसर खोय ।।१५९८ ।
सकति समान किया कछु जाय । तप अर दांन करो मन मांहि ।।

नघुष राजकुमार को राजा बनाना

नघुष पुत्र को राजा किया । विमल साध पे संजय लिया ।।१५९९।।
सिधकारणी राणी पटधनी । सीलवंत अति सोभावनी ।।
दिन बीते सुख मांहि बहुत । तब इक किंकर आणि पहुंत ।।१६००।।
दक्षिण दिश का राजा बली । उन सब भूमि तुमारी दली ।।
व्हां का ऊपर करिये राय । या कारण आयो तुम पांय ।।१६०१।।
सेना बहुत भूप संग चली । सूर सुभट सोमैं अति वली ।।
नगर राज राणी नै सोंप । आप चल्या दुरजन परि कोप ।।१६०२।।
उत्तर श्रेणी के सुणी नरेस । नघुष चल्या नृप दक्षिण देस ।।
उण सब लई अयोध्या घेरि । रांणी सैन कोपी तिणवेर ।।१६०३।।
करि संग्राम भया आसत्तु । रांणी असी महा विचित्तु ।।
दक्षण साधि नरपति आइया । राणी बात सुणी अति कोपिया ।।१६०४।।
राजा को व्यापा जुर ताप । उपजी ज्वाला भयो संताप ।।
नाई देख भेद सब कहै । या को कोई जतन न रहै ।।१६०५।।
या का मरण होयगा सही । पंडित वेदौं ऐसी कही ।।
राणी नित जिन पूजा करै । पंच नांम का सुमरण करै ।।१६०६।।
हस्तपालि दीया सुभ नीर । यासों छिडको राय सरीर ।।
लेकर जल मंत्री नृप देह । किया अंगोहल अधिक सनेह ।।१६०७।।
सीलवती का लाग्या नीर । दगध रोग की भागी पीर ।।
राजा को सुख उपज्या नया । फेर सुहाग राणी को दिया ।।१६०८।।
बहुत दिन बीते भोग मझार । स्यौंदास पुत्र ने सौंप्या भार
आपण भए दिगंबर रूप । स्योदास राज करै तिहां भूप ।।१६०९।।
कनकाभा व्यांही अस्तरी । सिधसेन जनम्यां सुभघडी ।।
अठांई का व्रत करै पुनीत । श्रावक करैं धरम की रीत ।।१६१०।।

स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध

नगर मांहि डुंडी फिरवाय । जीवबंध को करै न काइ ।।
जाकैं सुणियो हिंसा नाम । ताकूं लूट लीजिये गांम ।।१६११।।

राजा आमिष आहार नित लेई । मांस बिना कछु मुख मे ना देई ॥
सुंदर नाम रसोईदार । राजा आगैं करी पुकार ॥१६१२॥
श्रावग तणौं अठाईं व्रत्त । तातै आमिष कोई न करंत ॥

राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा

राजा कहै जो आमिष ल्यावै । तो मुझ आजि रसोई भावै ॥१६१३॥

ब्राह्मण कियो नगर तलास । बधिका कैं घर में नही मांस ॥
कहूं न पाया तबे मसाणां गया । बालक मृतक उठाय कर लिया ॥१६१४॥

रांध्या आण रसोई बीच । अैसे करम किये उस नीच ॥
राजा खाइ बडाई करैं । बहुत सुबाद हुआ इण परै ॥१६१५॥
तीन सै गांव विप्र को दिये । विप्र कौ सुख हुआ अति हिये ॥
ल्यावै नित बालक चुराइ । ता बालक नै राजा खाइ ॥१६१६॥
नगर लोक मन चिंता भई । छिप छिप सुरति चोर की लई ॥
बालक गह्या रसोईदार । लोका मिल पकड्या तिन बार ॥१६१७॥
मारया घणा पासली तोडि । पुछ्या पीछैं सबै उह चोर ॥
तूं नित बालक ले ले जाय । तो कूं हम मांरेगे ठाइ ॥१६१८॥
द्विज बोल्या राजा के काज । इनको मांस रसोई काज ॥
नृप आग्या तैं बालक हरैं । प्रजा लौग सुण कर परजले ॥१६१९॥
सिद्धसेन कुंवर पै जाय । मंत्रीयां सेती कही समझाय ॥
राजा है परजा कैं वाडि । खेत करै जे बाडि उखाडि ॥१६२०॥
अैसी हम परि हुई अनीति । कैसे बसैं लोग भयभीत ॥
सब मत्री मिल कियो बिचार । स्योदास भूप तब दियो निकाल ॥१६२१॥

सिधसेन का राजा बनना

सिधसेन प्रति दीनुं राज । भयो सकल मन बंछित काज ॥
स्योदास भूप अरु सुंदर द्विज । वनमे देख्या आचारज ॥१६२२॥
नमस्कार मुनिवर कूं किया । पाप पुन्य का भेद पूछिया ॥
सुण्यां धरम आमिष का दोष । राज लिया संजम का पोष ॥१६२३॥
महापुर नगर किया परवेस । राजा विनां पड्या बहु देस ॥
तहां का राज स्योदास ने दिया । दंड सकल रायन परि लिया ॥१६२४॥
सिधसेन पैं भेज्या दूत । हमसूं आय मिलो तुम पूत ॥
सिधसेन बौलियो नरेस । प्रजा मोहि दीयो नृप भेस ॥१६२५॥

कारण कवण पिता सौं मोहि । सांची बात कहूं मैं तोहि ।।
दूत गया तब राजा पासि । निठुर वचन मुख कहे प्रकास ।।१६२६।।
कोप चढ्या भूपति स्योदास । मन में जुद्ध करण की आस ।।
अजोध्या नगर घेरथा चिहूं ओर । सिधसेन सौं कीनी भौर ।।१६२७।।
सिधसेन कूं बांध्या धाइ । फेर राज जन मुगत्या आइ ।।
राज करत कितना दिन गये । चेत्याधर्म दिगंबर भए ।।१६२८।।
सिधसेन कूं सोंप्या राज । स्योदास किया मुक्ति का साज ।।
वाकें पुत्र भया वर भरथ । चतुर्वक्र अर हेमारथ ।।१६२९।।
दशरथ उदय पाद पृथ्वीरथ भए । अंजिनरथ इंद्ररथ थए ।।
दीनानाथ मायत वीरसेन । प्रीतमन कमलवध सुभचैन ।।१६३०।।
कमलवाधवा रविमन और । वसंत तिलक तो सोभै ठोर ।।
कुमेरदत्त अकुंथभगत । कीर्त्तमन अैसा सूरज रथ ।।१६३१।।
दुंदुरथ मृगेन्द्रसेन अति बली । दमन हिरनांकुस मानैं रली ।।
धुज असथल वकुथल ननुरेस । रघुराजा जीते बहु देस ।।१६३२।।
अरुण भूप परतापी भया । बल पौरष अति प्रतिपालै दया ।।
है प्रथवीमती राणी पटधरणी । रूप लक्षण गुण सोभा अणी ।।१६३३।
तार्कै गर्भ दोइ सुत भए । अनंतरथ दसरथ निरभए ।।
अरूणराय कै धरम सुं काज । अनंतरथ कौं सोंप्या राज ।।१६३४।।
सहस्त्ररश्मि रावण सौं युधि । वा समै एक ऊपजी बुधि ।।

दशरथ का राजा बनना

अरुण अनंतरथ दोनुं आइ । सहस्र रश्मि पै दिक्षा पाइ ।।१६३५।।
राजा दसरथ पाई मही । समद्रष्टी जानुं ते सही ।।
महषमती नगरी का राव । विभ्रमधर राजा तिह ठांव ।।१६३६।।
अमृतप्रभा ताकैं अस्तरी । अंबप्रभा भई पुत्तरी ।।
राय दसरथ कौं दई विवाह । भोग मगन सों करै उछाह ।।१६३७।।
कौसल नगर अपराजित भूप । अपराजिता पुत्री सुखरूप ।।
किया ब्याव दसरथ सौं आइ । भोग मांहि सुख चैन विवाह ।।१६३८।।
महारपुर तिलकराइ । भीममती सोमै पटयाइ ।।
कैंकइ पुत्री दसरथ कुं दई । राजभोग तहां विलसत भई ।।
मंगलावती नगरी कैकै मात । सुमित्रा सोभै इह भांति ।।१६३९।।
इति श्री पद्मपुराणे कौशल महातम दसरथ उत्पत्ति विधानकं

२१ वां विधानक
चौपई

दशरथ वर्णन

राजा दसरथ अजोध्या धनी । सास्त्र मांहि जिनवाणी सुणि ।।
नितप्रति पूजै श्री भगवंत । गुरु सेवा साधै नित सत ।।१६४०।।
सरब सुखी नगरी में लोग । धरम राज सु भुगतै भोग ।।
राजसभा जे इन्द्र समान । मुनिसुव्रत का सुणै पुराण ।।१६४१।।

नारद मुनि का आगमन

तिहा नारद मुंनि पहुंच्या आइ । सकल लोक उठि लागे पाय ।।
समाधान पूछी बहु भांति । कुण कुण तीरथां करी जात ।।१६४२।।
दीप अठाई में करो गमन । बैठि विमांण चलो जिम पवन ।।
पुंडरीकणी क्षेत्र विदेह । सीमंधर जिण सासण गेह ।।१६४३।।
समोसरण जो पुराण सुणे । सौ प्रत्यक्ष हम देखे बणे ।।
संसार मेरे मन तें टरा । अनंत गुणां सु देखो खरा ।।१६४४।।
केवलि भाषी वाणी सत्य । भवियण लोग सुणै धरि चित्त ।।

नारद द्वारा रावण की बात कहना

अवर कही रावण की बांत । कुंभकरण भभीषण भ्रात ।।१६४५।।
नलनील अवर सुग्रीव । हणुमांन सुभटां की नींव ।।
सोलह सहस्र सभा मैं भूप । हाथ जोडि खडा रहै अनूप ।।१६४६।।
तीन षंड जीते सब देश । नरपति सकल करै आदेस ।।
निमितग्यानी सागर कौं पूछि । मेरी आव कहो आगम बुझि ।।१६४७।।
मैं सब जग बसि कीनां सही । एक खुटक मेरे मन रही ।।
काल रह्या है मोसुं भाजि । वा का जतन करो मैं आजि ।।१६४८।।
कहो वेग मोसुं विरतांत । तो मेरे मन होवै सांति ।।
तब निमित्ति यह कही विचार । दसरथ सुत लक्ष्मण कुमार ।।१६४६।।
जनक सुता का कारण पाय । ताकै हाथ तेरी है आय ।।
या मनि सुणि चितवै नरेन्द्र । भूमगोचरी किम व्हे बंध ।१६५०।।
दोन्युं नृप का किजे नास । तो मै रहूं अमर जग बास ।।
भभीषण समभावै सुणि बात । दशरथ कनक नांम बहुभाति ।।१६२१।।
किसकौं मारौं कहौ भुपाल । विण समझ्यां क्यों करौं जंजाल ।।
तब ही मैं पहूंच्या तिरकूट । साधे कारण भेजे दूत ।।१६५२।।

जे तुम जाय किहां छिप रहो । तो आसा जीबे की लहो ।।
अब मैं जाय जनक सुधि देहूं । तुमकों सकल सुणाया भेउ ।।१६५३।।

दशरथ तब बुलाय मंतरी । मता बिचारें चिता यरी ।।
वह षेचर हम भूमि गोचरी । वाकी सुरभर कुंणइं करी १६५४।।

राजा देश छोडि भजि गया । निज सुरत कर नृप थापिया ।।
अंतहै पुर ले राख्या थापि । रांणी वा ढिग सेवक राइ ।।१६५५।।

याही रीत जनक नृप करी । कलहनी इनकी इह विध टरी ।।
कुंभकरण भभीषण भूपाल । बहुत ले चले साथ चिडाल ।।१६५६।।

पाई सुरति अजोध्या आंन । दसरथ है सतखनें सथांन ।।
याही विध वाहुकुं मारि । दोउ सिर ले गए तिण बार ।।१६५७।।

दोऊं नगरी पीटैं लोग । सब परियण मैं बाढो सोग ।।
रावण पासि आणि दोउ सीस । पूजा दांन निमित्त जगदीस ।।१६५८।।

अपना मन कीया निश्चंत । अमर हुवा रावण वलवंत ।।
हौंणहार टार्यौ किम टरै जाइ । जै कोई करै कोडि उपाव ।।१६५९।।

दशरथ जनक पूर्व दुख दिया । या भव कौं इनमें व्यापिया ।।
बहुरि पुन्य कीया सुभ ठांम । प्रगट भया तासौं फिर नाम ।।१६६०।।

दोन्युं नृप आए निज देस । बहुरि दोन्युं भए नरेस ।।
टरयौ कलह निर्भबो आनंद । हुवा सहाई धर्म जिणंद ।।११६१।।

दूहा

होणहार कैसे टलै, बहुविध करै उपाव ।।
अणहोणी होणी नहीं इह निमित्त का भाव ।।१६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे दशरथ जनक काल बला टालण विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

कैकयी वर्णन

कौतिग मंगल उतरै सैन । शुभमति मूप प्रजा सुख चैन ।।
पृथ्वी राणी ता पटधनी । द्रोणपु कैक्या पुत्री वणी ।।१६६३।।

लक्षण रूप सकल गुणभरी । महा विचित्र केकं पुत्री ।।
छहो राग तीस रागणी । अठतालीस नंदन सोभैं घणी ।।१६६४।।

नाद भेद वीणा के भेद । ग्यांन सास्त्र के जाणें भेद ।।
देस देस की बोली बैंन । कोकिल कंठ सुणत सुख चैंन ।।१६६५।।

लिखे पढ़े बहु शास्त्र पुराण । च्यार वेद का करै बखांण ।।
जोतिग वैदक भणी ब्याकर्ण । आगम कहै मन संसय हर्ण ।।१६६६।।

चउदहै विद्या बहत्तरि कला । जुधरीत कौं जाणैं भला ।।
सीलवंत रूप की खांनि । तीन लोक का समझै ग्यान ।।१६६७।।

कन्या भई विवाहण जोग । सुमति मंत्री राजा पूछियो नियोग ।।
मंत्री सगला लीया बुलाय । बैठर मता बिचारै राय ।।१६६८।।

कन्या सो है गुण भरपूर । यातें सरस होय जे सूर ।।
तासो समझि कीजिए विवाह । उतम कुल जाणिजे नाह ।।१६६९।।

स्वयंवर रचना

मंत्री कहैं स्वयंबर रचो । भली भली सौ जौ तिहा संचो ।।
देश देश ते आवैं राय । कन्या कै कर माल दिवाय ।।१६७०।।

जा गलि डारै तास सो वरौ । यह बिचार हिये में धरौ ।।
बहुत भले पाटंवर आणि । जिण ते बहुत समाने ताण ।।१६७१।।

कनक थंभ रतनन की जोति । नरपति आए तिहा बहुत ।।
परिवाहण हेमप्रभ भूप । सिहासण तहां धरै अनूप ।१६७२।।

तब कन्या वरमाला लई । ताकै माथि नृपति धाइ दई ।।
चकडोल चढि कन्या तिहां आय । विरदाली बतावें धाइ ।।१६७३।।

दसरथ के गले घाली माल । तब सब कोप उठे भूपाल ।।
कहै इक एक नगर का धणी । यामै बल पौरिष क्या हणी ।।१६७४।।

पकडन आये रावण के लोग । भागि वच्या अब भुगते भोग ।।
असे परि रीझ के किया । माला दई राजा की धिया ।।१६७५।।

बडे बडे फिर चाले राय । या राजा को मारै ठाइ ।।
हरिवाहण हेम प्रभु पै गए । असे वचन ऊनु वनिए । १६७६।।

सगला नृपां यह मता विचार । दसरथ को घेरचा तिह बार ।।
सुभमति राय कहै समझाय । कैकेया सो अयोध्या ले जाइ ।।१६७७।।

दशरथ द्वारा युद्ध

हम इन सौ समझेंगे बात । तुम निज घर पहुंचो कुसलात ।।
बोले दसरथ राजा सुणी । इनकौं तो मैं पल में हणौं ।।१६७८।।

तुम देखो मेरा प्राकर्म । इनका मारि गमाउं भर्म ।।
चढ्या कोप दसरथ भूपती । रथ परि बैठी उजली रती ।।१६७९।।

कैकेया आय बैठी रथ बीच । विद्या साधी पूरण हीच ।।
तुम कीज्यो निर्भय ह्वों युध । रथ तुम भणा चलाऊं सुध ।।१६८०।।
सुभमति की सेन्यां सब चली । जानें सकल युध की गली ।।
हरिवाहन कै सनमुख दौड । खैंचा धनुष वांण नै छोड ।।१६८१।।
सह न सके दशरथ के बाण । सब ही के भूले अवसांन ।।
भाजे तब ही सकल नरेस । हेम प्रभु जंपै उपदेस ।।१६८२।।
रण छोडयां पति नांही रहै । कुल कलंकजुगि जुगि कौं दहैं ।।
तब सब समटि एकठे भये । सनमुख लरन भए कछु थए ।।१६८३।।
सूरवीर दोउं घां लडै । पैदल सूं पैदल कट मरैं ।।
हाथी सूं हाथी झुझंत । रथ सेती रथ टूट पडंत ।।१६८४।।
नगन खडग दामिन जिम दिपै । छुटै गोली सर कातर छिपैं ।।
जैसे बरखै घणाहर धार । ग्रैसे पडै दोऊं तरफ थी मार ।।१६८५।।
दुहु घां पडी पर्वत सम लोथ । तिण को गृध्र भषै है चुंथि ।।
मार मार वाणी तिहां होय । कायर वीरज धरै न कोय ।।१६८६।।
हेमप्रभू के सनमुख भया । मारी गदा टूटि रथ गया ।।
हेमप्रभु गिरपडिया राव । रथ नीचें आए तसु पाव ।।१६८७।।
लोग भूप को लेकर भजे । दशरथ जीत्या बाजा बजे ।।
राजा सर्व दसरथ कौं नये । छोडि क्रोध निर्मद ह्वै गये ।।१६८८।।
सुभमति नै दीणी ज्यौनार । सगला की करिकै मनुहारि ।।
कैक्या दई दसरथ को व्याह । गये अजोध्या घणें उछाह ।।१६८९।।
मत्री सकल बधाई करी । सकल प्रजा सुख आनंद भरि ।।
नया जनम दशरथ फिरि पाय । कलस ढालि पद बैंठो राय ।।१६९०।।
भोग मुगति मैं बीतैं घडी । देस प्रदेसं की रति करी ।।
जिहां तिहां दशरथ गुण चले । दुरजन दुष्ट बहुत दल मले ।।१६९१।।

दूहा

देश देश के भूपती, मांनै दसरथ आंण ।
कुलमंडल नरपति भया, रघुबंसी जग भाण ।।१६९२।।

चौपई

सकल ठाम की चिंता मिटी । दुख संताप की रज सब कटी ।।
निरभय राज करै नरनाह । कैकया कै गुण करै सराह ।।१६९३।।

देखी बहुत प्रकार गुण भरी । अवर बात रण की चित घरी ॥
राणी सुं बोलै तिण बार । जो चाहो सो मांगो नारि ॥१६६४॥

तब केकया बोलै सुंदरी । प्रभु मुझ वचन देहु इण घरी ॥
जब चाहूं तब लेस्यूं मांग । एह वचन तू द्यो हम त्याग ॥१६६५॥

सोरठा

महा विचित्रा नारि, वा समय उंन बुधि करीं ॥
पावैगी तिण बार, जिण बिरयां इच्छा करै ॥१६६६॥

इति श्री पद्मपुराणे कैकया वर प्रदानं विधानकं ॥

२३ वां विधानक

चौपई

अपराजिता रानी द्वारा स्वप्न दर्शन

अपराजिता राणी पटधणी । सीलवंत अति सोभा बणी ॥
भले महूरत पाछली राति । सुपनां देख्या नानां भांति ॥१६६७॥

स्वेता गयंद ऊजलै वर्ण । देख्यो सिंघ गर्जना कर्ण ॥
सूर्य उदय देखा परभात । देख्यो ससि पूनिम की कांति ॥१६६८॥

बाजे बाजैं गुणियण पाइ । जागी तक चकित भई आइ ॥
जा दशरथ सूं सुपने कहे । व्यौरा सुणि अगणित सुख लहे ॥१६६९॥

स्वप्न फल

होइ पुत्र त्रिभुवन का धणी । जाकी महिमा जाइ न गिणी ॥
कुल उज्जल बालक तारणतरण । नाम जपत होइ पातिग हरण ॥१७००॥

वा सम बली न दूजा और । असा अधिक प्रतापी जोर ॥
सुणि पिय सबद भया आणंद । चित मैं ध्यावै देव जिणंद ॥१७०१॥

सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन

सुमित्रा राणी पिछली राति । सुपिना देखे उठी प्रभात ॥
गर्जत देख्या सिंह केहरी । लक्ष्मी कलस सकल गुण भरी ॥१७०२॥

कमल फूल घट ऊपर धरे । देखे समुद्र लहरि उच्छरे ॥
सूरज उदय निर्मला देखि । देख्यो पूनिम चद्र विसेष ॥१७०३॥

सुदरसण चक्र देख तिण बार । जागि उठी मन हरस अपार ॥
पति सो कही सपने की बात । सुणे सुपन फल नाना भांति ॥१७०४॥

होसी पुत्र महाबलवंत । तीन खंड का राज करंत ॥
ताकी सरभर अवरन कोय । तीन लोक ताको जस होय ॥१७०५॥

लक्ष्मण जन्म

नवमासैं जब जनम्या पूत । रूपवंत लक्षण संयुक्त ।।
पंडित तेडि लगन सुभ लिया । दान मान मन वांछित दिया ।।१७०६।।

लक्ष्मण नाम कुंवर का धरया । जमनत रिध सिध गुण भरया ।।

भरत जन्म

कैकय गर्भ भरत भया पुत्र । बहूत रूप अरु सह्या विचित्र ।।१७०७।।

अपराजिता के राम जन्म

अपराजिता भई परसूत । रूपवंत लक्षण संयुक्त ।।
पदमनाभ ससि की उद्योत । सब परियण में सोभा होत ।।१७०८।।
सुप्रभा पुत्र सत्रुधन भया । सो भी देव लोक तैं चया ।।
रामचंद्र पदम का नांम । च्यारौ वीर दिये वपियांम ।।१७०९।।
सेवा करैं देवता घने । बोलैं भासा सोभा बने ।।
च्यारों बाल खेल अति करें । देख रूप सब का मन हरैं ।।१७१०।।

रावण के घर में अशुभ शकुन

रावण के घर उलका पात । बिजली पडौ कांगिर ढह जात ।।
रात दिवस रोवैं मंजार । कूकर रोवैं बारंबार ।।१७११।।
मेगल चांरि सुपने मांझि । बोलैं काग होइ जब सांझ ।।
उल्लु बोलै दिन तिहां घणे । असी चिंता मन रावण तणे ।।१७१२।।

दूहा

दशरथ अजोध्या का धणी, ताकै पुत्र जु च्यारि ।।
रामचंद्र लक्ष्मण बली, भरत सत्रुघन सारि ।।१७१३।।

अडिल्ल

पूजैं श्री जिणराय सुगुरु सेवा करैं,
वाणी सुणैं मन लाय सुद्ध समकित धरैं ।।
प्रगटयो जस संसार कीर्त्ति बहु तिण तणी,
देइ सुपात्रह दान दया पालैं घणी ।।१७१४।।

चौपई

चारों भाइयों द्वारा शिक्षा सीखने का वर्णन

कंपिला नगर का थान । आरंभ सिद्ध क्षत्री का नाम ।।
जब उह पुत्र सयाना भया । नित्य उलाहणा आवैं नया ।।१७१५।।

गागर फोडै निकसै पणिहार । गली गली में खावै गार ।।
मात पिता भए कलि कांन । दिया निकाल कुपात्र हि जांन ।।१७१६।।
भूख्या प्यासा दूषित घणां । ग्रैसा ताहि कठिन दिन बण्यां ।।
मांगै भीख उदर निठ भरै । इण विध गया राज गिर पुरै ।।१७१७।।
कुसाग्र राय नगरी का धणी । ताकै विद्या साला बणी ।।
वैस्वासुत ते गुरु प्रबीण । ग्रावध विद्या सिखावैं लीन ।।१७१८।।
कुंवर साथ शिष्य बहु जुरे । सीखै विद्या ते इण परैं ।।
तिहां एलते पहुंचा जाइ । दानसाला मां भोंजन खाइ ।।१७१६।।
सीखै विद्या रहै उन पास । बहु विद्या सीखी उन पास ।।
राजा पासि गया इक बार । नृपति ग्रग्रे कही पुकार ।।१७२०।।
ग्राया एक विदेसी भेष । उनं विद्या सीखी सब देख ।।
कुंवर न लही विद्या हीण । परदेसी ते महाप्रवीण ।।१७२१।।
राजा ने गुरु लिया बुलाय । सिष्य प्रतें गुरु कहैं समझाय ।।
राजा देखत चलायो बाण । ग्रैंडे बैंडे छोडे जाणि ।।१७२२।।
राज सभा गुरु पहुंचे जाय । गये ग्रायुध साला की छांय ।।
राजकुंवर सर छोडे भले । ग्रौरा का सर बांका चलै ।।१७२३।।
एल प्रदेशी धनुष कर गह्या । गुरु का वाकि सुध लह्या ।।
टेढे सर कूं छोडत भया । राजा का संसय मिट गया ।।१७२४।।
गुरु परदेसी परतुष्ट मांन । कन्या देण कही तिण जाणि ।।
एल प्रदेशी ज्ञान चित किया । माहिन समान गुरु की धिया ।।१७२५।।
एमई ब्याहुं तो लागई दोष । किस ही जनम उहै नहीं मोक्ष ।।
ग्ररध रात्रि तब भाग्या एल । ग्रजोध्या नगरी ग्राया तिह वेर १७२६।।
दसरथ नृप के ग्राया पास । ग्रपना गुण कीना परकास ।।
राय दशरथ ने कन्या दई । इसकूं तिहां सुख थिति भई ।।१७२७।।
च्यारू राजसुत तिहां मिल्या । विद्या गुण सीखैं तिहां भला ।।

इति श्री पद्मपुराणे रामलक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न विद्या विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

जनक भूप विदेही ग्रस्त्री । निर्भय राज करैं तिहं पुरी ।।
चक्रध्वज पुर का इक धणी । मनसेणी राणी तसु तणी ।।१७२८।।

चित्रोत्सवा पुत्री ताकै उर भई। रूप लक्षण सोमैं उरमई ।।
धूमसेन विप्र स्वाहा नारि। पिंगल पुत्र लियो अवतार।।१७२९।।
राजसुता सेती अति प्रीत। एक विचारी खोटी रीत ।।
दोन्यां ने मिल कियो विचार। नगरी छोडि भज्या तिण बार ।।१७३०।।
लषमी घणी लेकर नृप सुता। निकसे दोनूं करके मता ।।
विदरभ देस प्रकृति सिधराय। ए उस नगरी पहुंते जाय ।।१७३१।।
दंपति गये नगर के पासि। छाय भूंपडी करैं विलास ।।
षोयां षाय दलिद्री भये। लकडी बेचत कछु दिन गये ।।१७३२।।
कुंडल मंडल राजकुमार। वन क्रीडा आये इक बार ।।
देखी त्रिया रूप गुण रासि। कुमर कांम की उपजी प्यास ।।१७३३।।
दूती भेज तिन लई बुलाइ। नृप संग मिली महा सुखपाय ।।
रात दिवस भुगते सुख भोग। इनका ऐसा बण्यां संजोग ।।१७३४।।

विप्र द्वारा विलाप

विप्र आया घर संभ्या वार। सूनां घर पाया बिन नारि ।।
सारा दिन का हारा थका। भया अकेला गई कालिका ।।१७३५।।
त्रिया त्रिया मुख करैं पुकार। कबही रोवैं खाय पछारि ।।
गली गली मे रोवत फिरैं। राय अग्रे जाय गिर पडैं ।।१७३६।।
मेरा न्याव करो तुम नरेस। मेरी अस्त्री गई तुम देस ।।
मुझ नारी तुम देहु ढुंढाय। नांतर तजों प्राण विष खाय ।।१७३७।।
सरणं आइ तुमारे मैं बस्या। महारा घर बिणसैं बिन वसा ।।
राजा मंत्री लिया बुलाय। तिणसैं बात कही समझाय ।।१७३८।।

राजा द्वारा षडयन्त्र

जब वह विप्र आवै मो पासि। तब तुम झूंठ कहो कैं साज ।।
नृप मंत्रीय सभा सब जुरी। विप्र फेर आयो ता घरी ।।१७३९।।
मंत्री इक बोल्या इण भांति। मैं देखी मारग में जात ।।
पोदनपुर के मारग मांहि। मैं आवं था देखी तरु छांह ।।१७४०।।
आरजिका तिहां तप करै। घणी साथ चेली तप करैं ।।
सखी एक अति रूप की खासि। उनकी दिक्षा लीनी आंन ।।१७४१।।
वेग जाय पोदनपुर ढूंढ। इहां क्यूं सोर करत है मूढ ।।
विप्र कूं सब ही दिया बहकाय। पोदणपुर उस सोधण जाय ।।१७४२।।

देखे वन उपवन चहुं ओर । देखी गुफा परवत की ठोर ॥
देह् सिथल वन देख्या भला । जिहां तिहां देवालय मिला ॥१७४३॥

पाई नहीं फिर आभा विप्र । ताकौ आवत देखा नृप ॥
बडी दार तब दीया लगाय । गाय मारि कर दिया भजाय ॥१७४४॥

मुनि दीक्षा

बन में बहुत दुखी बिललाय । आरिज गुपति मुनि भेटया जाय ॥
सुणे धरम के सूक्ष्म भेद । सोह् करम की टूटी खेद ॥१७४५॥

दिक्षा लई दिगम्बर भया । जैन धरम निश्चै चित दिया ॥
सियालै रहैं नदी के तीर । सहै परीसा काया धीर ॥१७४६॥

उंनालै गिरि पर वरि जोग । तपै भानु लू बाजै रोग ॥
चालै पसेव पाप बहि जांय । असा तप साधै मुनिराय ॥१७४७॥

वरषा काल वृक्ष कै तलैं । वर्षै मेघ अरु नाला चलै ॥
पानि चुवै मुनि उपरि पडैं । माछर डास सदेह सो लगैं ॥१७४८॥

लागें बेलि अग लपटाइ । मुनिवर सहैं परीसा काइ ॥
चिदानंद सौं लाया ध्यान । दया छह् काया की जांन ॥१७४९॥

रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध करना

अनरण रत्नावली का राय । अहिकुंडल का सुण्या अनाय ॥
चक्रपुरी तिण घेरी आय । कुंडल मंडल निकस्या आय ॥१७५०॥

दुहुधां जुध भया भयभीत । फिर आया गढ भीतर जीत ॥
मूंद किवाड गोला की मार । अनरन भूपति मानी हार ॥१७५१॥

किमहि न पावै गढ का भेद । राजा कै मन उपजी खेद ॥
दिन दिन हुवै दुरबलि देह् । वालचंद्र सेनापति पूछै एह ॥१७५२॥

किण कारण देही तुम षीण । मन की बात कहो परवींण ॥
राजा सेनापति सो कहै । मेरे मन मे संसा रहै ॥१७५३॥

मंत्री द्वारा उपाय बतलाना

चक्रपुरी आई निज हाथ । ताथै चिंता है मन साथ ॥
बालचंद्र बोलै बलवान । कुंडल मंडल पकड़ो राजान ॥१७५४॥

बालचंद्र ले सेन्या संग । गढ ततकाल कियो तिण भंग ॥
कुंडल मंडल वांध्या जाय । निज पति पास आया तिहं ठांय ॥१७५५॥

दई मार पग सांकल घालि । असी रीति पडया वह् जालि ॥
बसन उतारि दिया सब छोडि । वन मे गया करम की खोडि ॥१७५६॥

वैराग्य भाव

तिहां श्रवण मुनिवर तप करैं । नमस्कार करि पाइम पडै ।।
सांचा कहो धरम समझाय । मेरा पाप कटैं किहि भाय ।।१७५७।।
राज रिद्धि मद धरम न किया । विपति नै करुणा समझिया ।।
मेरा किण विध होइ सहाइ । किम भवसायर उतरों पार ।।१७५८।।

उपदेश

बोलै मुनिवर लोचन ग्यांन । सप्त विसनतैं धरम की हांणि ।।
सातों नरक अनंता भ्रमैं । छेदन भेदन विनसह जमैं ।।१७५९।।
भूख त्रिषा का नावै अंत । इण विध प्राणी दु:ख लहंत ।
जे तीरथ बहुतेरा फिरैं । भद्र होई कुं दान नित करैं ।।१७६०।।
क्रोध मांन माया मद होइ । असा गुरु सेवो मत कोइ ।।
नख अर केस तीरथैं बहाइ । आपा वरणतैं ह्वै पाप उटाइ ।।१७६१।।
अण छाणै जल करैं सनांन । अण गल जल पीवैं जल पान ।।
ते निहचैं नरक में जांइ । इण विध धरम धरो मन ल्याव ।।१७६२।।
समकित सुध आतमा जोइ । दया भाव जाकै चित होइ ।।
मनुष देव गति ऊंची लहै । दुष्टि हुवैं सो नीची गति सहै ।।१७६३।।

राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना

सुणि राजा तबै अणुव्रत लिया । हिस्या झूठ चोरी परत्रिया ।।
नमस्कार करि मारग गह्या । इह ससा उसकै मन रह्या ।।१७६४।
मेरा कुटंब अरण की वदि । वे छूटैं तब हुवै आनद ।।
अब हू साधूं कोई देश । बांधू मैं आणि अरन नरेस ।।१७६५।।
मै अपणे बल छुडाउं जाइ । अइसै चित वन राजा आइ ।।
तृषा पिव लागी तिस भूख । देही सकल गई तिस सूख ।।१७६६।।
अंतै भया प्राण का नास । सुमरयां प्रभु पांच की आस ।।
समकित सों पावै गति भली । अग्रे पूजैगी मन रली ।।१७६७।।

चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना

चित्रोत्सवा उपज्यो वैराग । सकल विभूति कुटब ही त्याग ।।
आर्यिका पास ली दिक्ष्या जाइ । वईबरत करै बहु भाइ ।।१७६८।।
बारह विध तप साधै नित्त । निसवासर अनुप्रेक्षा चित्त ।।
तप करि कष्ट अति देही दहै । सत संयम आतम सुध लहै ।।१७६९।।

देह छोडि लियो स्वर्ग विमांण । उहां तै चई जनक घर आंण ।।

सीता का गर्भ में आना

विदेहा गरभ आणि थिति करी । कुंडल मंडलीभी तसु धरी ।।१७७०।।
पिंगल मुनिवर तजे परांण । पुंहच्या महाशुक्र विमांण ।।
अवधि विचार एक भव तणी । श्रवण पुन्य तै सुरगति वणी ।।१७७१।।
पिछली सुरति तैं कोप्या देव । कुंडल मंडल का जाण्या भेव ।।
उन मेरी थी लीनी नारि । मुझको मारि दीया निकालि ।।१७७२।।
मोहि घणे दुख दीने भूप । तब मैं भया दिगंबर रूप ।।
तप प्रसाद असी गति लही । बे दोन्यूं विदेहा उदर मे सही ।।१७७३।।
जनम समैं ताकूं मैं हरूं । अपणं मन मांने हू करूं ।।
आया देव गरभ रिख्या काज । असी सुरत चितै सुरराज ।।१७७४।।

सीता भामण्डल का जन्म

नव मास जब पूरण भए । पुत्री पुत्र जनक घरि भए ।।

देवता द्वारा बालक का अपहरण

बालक लिया तबै देव उठाइ । पकडि वांह गयण ले जाइ ।।१७७५।।
मारै पेडि तबै बालक हसै । तबै सुर तणै क्रोध मन बसै ।।
तू कुंडल मंडल था भूप । चित्रोत्सवा देखि स्वरूप ।।१७७६।।
तिसनें चुराय लेय तु गया । मो कूं भी तैं अति दुख दिया ।।
तब मैं था भिक्षुक आधीन । पिगल विप्र मै वह सम कौन ।।१७७७।।
फैंकूं गगन गरुड ले जाय । डालूं सिंध में मच्छ तोहि खाय ।।
कै पर्वत पर पटकूं तोहि । सिला तलै दाबूं अइसा छोहि ।।१७७८।।
असे मनमें करै उपाव । बहुरि भया दया का भाव ।।
में था विप्र भिक्षुक आधीन । दया आणि साधे गुण तीन ।।१७७६।।
सम्यकदर्शन सम्यक ग्यांन । तप करि भया देवता आणि ।।
अब मैं नया पाप क्यों करूं । याकुं ले सुभ थानक धरूं ।।१७८०।।
रथनूपुर विजयारध जाय । राय तणे मंदिर बइठाय ।।
नृप तब बालक लिया उठाइ । सुदरसना राणी लई बुलाय ।।१७८१।।
उठि तू पुत्र तइही जण्या । मींडत आंखि उठी जब सुण्यां ।।
हूं थी बांझि जण्या सुत केम । बिना गर्भ सुत होवें एम ।।१७८२।।

राजा कहै गर्भ तुझ गूढ । सोचैं कहां लैहु सुत मूढ ।।
देवता कानैं कुंडल दिये । तिनकौ देखि अचंभैं भए ।।१७८३।।
सोचैं पुत्र जण्यां मैं आजि । किण पहरावे कुंडल साजि ।।
तब राजा बोल्यो सत भाय । यां कुं सुर ल्याया इण ठांय ।।१७८४।।
पुण्यवंत मह शशि की जोति । मा की करियो सेव बहोति ।।
नगरी मध्य खबर यह दई । रांणी पुत्र प्रसूता भई ।।१७८५।।
सुख में बधै धाय कै बाल । अगणित धन खरच्यो भूपाल ।।

जनक राजा द्वारा विलाप

विदेहा बालक देखै नांहि । रुदन करै नयना परवाह ।।१७८६।।
जनक राय रोवै तिण वार । हम क्या पाप किया करतार ।।
असा कवण पुत्र मुझ हरै । पूरव कर्म उदय दुख पडै । १७८७।।
देश देश कौं पत्र लिखाइ । करूं इलाज पावै किण ठाइ ।।
राजा दशरथ मेरा मित्र । वह ढूंढैगा अंतर प्रीत ।।१७८८।।

राजा दशरथ द्वारा खोज

दशरथ सुणि ढूंढे सब थांन । कहीं न पाया अपणे जान ।।
जनक त्रिया सो कहै समझाय । पुण्यवंत बालक बहु भाय । १७८९।।
वहै तो वढै काहु के गेह । तुम चिंता न करो संदेह ।।
जे कछु सनमध है हम साथि । तो आणि मिलावैगा जिण नाथ ।।१७९० ।

कन्या का सीता नाम रखना

कंन्या का सीता धरया नाम । लीला करै बाल सुख धांम ।।
रूप लक्षण शशि की जोति । गुण वरण्यां कहूं पार न होत ।।१७९१।।
वस्त्र आभरण वण्यां सब अंग । गोद लिया परियण उछरंत ।।
दिन दिन बाढैं सुखस्यौं तेह । मात पिता अति धरै सनेह ।।१७९२।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता भामंडल उत्पत्ति विधानकं

२३ वां विधानक

श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह को जानने की इच्छा

जब जोडे श्रेणिक नृप हाथ । एक संसय मो मन जिननाथ ।।
रामचंद्र सीता का व्याह । किण विध किया जनक नर नाह ।।१७९३।।
राम कवण पराक्रम किया । कैसें व्याही जनक की धिया ।।
वाणी कहैं तबैं जिनराय । गणधर वचन कहै समझाय ।।१७९४।।

विजयारध गिरि दक्षिण ओर । कैलाश गिर उत्तर की ठोर ॥
वर वर देस और विदग्ध । मैं उरमाल नगरपति वग्ध ॥१७६५॥
रद्रवर बर राजा तिह नग्र । अंकन और भूपती सग्र ॥
म्लेछ षंड का राजा जुडया । अैसा मता उनु कर मिल्या ॥१७६६॥
आरज षंड पर कीजे दौड । कोई नहीं नामी तिहं ठौर ॥
रावण हैं लंका का देस । इह ठांम जाय हम करैं प्रवेस ॥१७६७॥

जनक की नगरी मिथिलापुरी पर आक्रमण

म्लेछ षंड का दोडया भूप । ढाहत फोडत आवैं जम रूप ॥
मिथलापुरी जनक तिहां राय । घेरया नगर म्लेच्छां आय ॥१७६८॥
जनक दसरथ कनैं दूत पठाइ । लिख्यो सकल विरतांत बनाय ॥

जनक द्वारा दशरथ के पास सन्देश भेजना

म्लेच्छ मोहि घेरया है आप । थाणा मेरा दिया उठाय ॥१७६६॥
पीडा परजा कूं दे हैं घनी । देवल ढाहि गउ तिहां हणी ॥
साधा कूं देहैं उपसर्ग । जिसकूं तिसकूं मारैं खड्ग ॥१८००॥
मैं तो आय गढ भ्यतर रहूं । प्रजा दुःख किण बिरते सहुं ॥
प्रजा सुखी तो राजा सुखी । परजा पीडित राजा दुखी ॥१८०१॥
जो कुछ प्रजा पुंन नित करै । छठा अंस राजा नैं पडै ॥
उनका डर तैं प्रजा सब भजै । जो हूं भाजुं तो कुल लजै ॥१८०२॥
तुम जो मेरा ऊपर करो । तो मैं निकल दुष्ट मों लरो ॥

दूत का अयोध्यापुरी आना

आया दूत अजोध्यापुरी । राजसभा देखैं सब जुरी ॥१८०३॥
दसरथ च्यारूं पुत्र संयुक्त । करैं सलाम आय तिहा दूत ॥
दिया लेख राजन निज हाथ । बांच पुत्र सूं करै नरनाथ १८०४॥
रामचद्र कुं राजा करो । ढालो कलस मुकट सिर धरो ॥
करो आरती पटह बजाय । हूं साधूं म्लेच्छ कूं जाय ॥१८०५॥
रामचंद्र पूछै तब बात । मो कूं राज क्युं देत हो तात ॥
दसरथ कहै तुम सुणो कुमार । म्लेच्छां परिजास्यां इण बार ॥१८०६॥
तुम साधो पृथ्वी का राज । हम जावैं करिवा पर काज ॥

रामचन्द्र को जाने की इच्छा प्रकट करना

श्री रामचन्द्र बोले बलवीर । करो राज मन राखो धीर ॥१८०७॥

वे मलेच्छ जैसा सुरण लिया । कहां सिंध अग्रे चालिया ।।
जो तुमारी सरभर कहा होइ । ता परि भला कहै सहु कोइ ।।१८०८।।
हम हैं प्रभुजी आग्या देह । सकल म्लेच्छ मिलाऊं खेह ।।
राय भरणै तुम हो लघु वैस । वे म्लेच्छ भयानक देस ।।१८०९।।
किरण पर जुध करोगे जाय । असे भूप कही समझाय ।।
रामचंद्र तब उत्तर कहैं । स्यंघ पुत्र किसका भय करैं ।।१८१०।।
हस्ती जूथ सबद सुरण डरै । वे भाजैं सकल सुध वीसरै ।।
तिरणमा एक करैं वन छार । हम सूं जोवे वह मानैं हार ।।१८११।।
अइमैं उनही लगाऊं हाथ । फेरि न बोलैं काहू साथ ।।
रामचंद्र लक्ष्मरण तिहां चले । सूर सुभग संग लीने भले ।।१८१२।।

राम का मिथिला गमन

मिथलापुर मां पहुंचे जाइ । इनका दल दृष्टि न समाइ ।।
जनक कनक नैं छोडे बारण । मारि म्लेच्छ किये घमसांरण ।।१८१३।।
उत म्लेच्छ नीसांन बजाय । जनक कनक भेटया गल लाइ ।।
बाजे बजै भेरि करनाइ । बहुत भूप आये उस ठांइ ।।१८१४।।
जनक तरणा दल हटया जारिण । घरणें लोगां तज्या परांरण ।।

राम द्वारा युद्ध करना

श्री रामचंद्र धनुष टंकार । गह्या धनुष लक्ष्मरण कुमार ।।१८१५।।
पडे धाइ दल ऊपर जाय । दुहुं धां जुध भयो बहु भाइ ।।
दुरजन जाय दहवट करैं । तब म्लेच्छ सब फिरि कैं लरैं ।।१८१६।।
लक्ष्मरण ऊपर आये धाय । तोडया रथ मारे दुरजन राय ।।
श्री रामचंद्र पहुंच्या तिह बेर । मारि म्लेच्छ किये सब ढेर ।।१८१७।।
इनका है रवि जेम प्रताप । इरण प्रकार धाए प्रभु आप ।।
अंधकार भाजै जिम देखि । रवि की प्रगटैं किरण विशेष ।।१८१८।।
जैसे पटल महा घनघोर । भागै फाट पवन के जोर ।।
मलेच्छां की फोज चली सब भाग । ए दोडे उन पीछे लाग ।।१८१९।।
इनके दल बल हुवा घरणां । राम प्रसादै पौरिस अति वरणा ।।
पकडै जिसनैं मारैं ठौर । पडी लोथ तिरण की नहीं वोड ।।१८२०।।

राम का आदेश

रामचंद्र इह आग्या भई । हिंसा जीव करो मति कोइ ।।
भागे का पीछा मति करो । अब तुम अपरणे थानक फिरो ।।१८२१।।

रामचंद्र लक्ष्मण की जीत । जनकराय सों बांधी प्रीत ।।
जै जै सबद करैं सब लोग । भाजे ताके सब सोग वियोग ।।१८२२।।

इति श्री पद्मपुराणे म्लेच्छ पराजय विधानकं

२४ वां विधानक

चौपई

जनक की इच्छा

जनक बिचारी तब मन मांहि । असी वसत कछु मेरैं नांहि ।।
रामचन्द्र के अग्रे धरूं । इनके गुनां को पार न लहूं ।।१८२३।।
सीता देण की इच्छा करी । नारद कांन बात यह पडी ।।

नारद द्वारा कन्या को देखना

नारद जुध इनों का देखि । अपणै मन हरषियो विशेष ।।१८२४।।
कन्यां देखण कूं धरि भाव । आया अंतहपुर की ठांव ।।
जनक मंदिर नारद मुनि गया । दर्पण लीयां थी वहां सिया ।।१८२५।।

नारद को देख सीता का डरना

कन्यां देखै अपणां वरण । सब सरीर दीसै लगि चरण ।।
सीस जटा जुट देह मलीन । हाथ कमंडल पीछीं लीन ।।१८२६।।
कटि पडदनी अति तापस मुनी । सीलवंत नारद रिष गुनी ।।
देखी छाया सीता डरी । भाजी कन्यां वाही घडी ।।१८२७।।
मा मा करि दौडी घर मांहि । नारद पाछैं दौडे ताहि ।।
पोलीदार जाबा नहि देहि । नारद सेती बाड करेहि ।।१८२८।।
भया कोलाहल नरपति सुण्या । कहा सार अंतहपुर वणां ।।
आगन्यां भई दौडे सब सूर । आवध बहुत लिये भरपूर ।।१८२९।।
नारद निज विद्या संभालि । गिरि कइलास गया तिहं काल ।।
ऊंचे नीचे लेइ उसास । नही थी जीवण की आस ।।१८३०।।

नारद का विचार

नारद मुनी चल्या बडी वार । मनमें उपज्या तब अहंकार ।।
मोसुं नृप जनक असी करी । मोहि देखि सीता भाजि दुरी ।।१८३१।।
मिथलापुरं जनक की मही । करूं उपद्रव तो नारद सही ।।
लीख्या पट्ट सीता का रूप । रथनूपुर चंद्रगति भूप ।।१८३२।।

प्रभामंडल है तासु कुमार । नारद गयौ तिण सभा मझारि ।।
उठें लोग जोडे दोउ हाथ । दरसन देखि नारद मुनि नाथ ।।१८३३।।
नमस्कार बहुत बिध किया । नारद नैं बहु आदर किया ।
प्रभामंडल नैं पट्ट दिखाइ । निरखैं रूप अधिक सुख पाइ ।।१८३४।।
पदमावती के सुरपती धणी । कै किंनर सोभा अति बणी ।।
बोले नारद सुणो कुमार । इन्द्रकेतु सुत जनक भुवाल ।।१८३५।।
मिथलापुर का भुगतै राज । बिदेहा राणी ताअ सिहाज ।।
तास गरभ सीता अवतरी । उसका रूप लिख्या तिस घडी ।।१८३६।।
इह सूरत बा मैं गुण घणे । हाव भाव बहु जाय न गिणे ।।
रामचंद्र को इहै दई निमित्त । तबैं इहै मेरे आयी चित्त ।।१८३७।।

भामण्डल की सीता को पाने की चिन्ता

ऐसी त्रिया भामंडल जोग्य । विद्याधर जे भोग नियोग ।।
इस कारण आया तुम पासि । चलो मिथलापुर पूजै आज ।।१८३८।।
भामंडल की सुध बीसरी । सीतां सीतां चित में धरी ।।
जे हूं मिलूं जनक की सुता । दरसण देखें भाजैं चिंता ।।१८३९।।
घरि आंगण ता कछु न सुहाय । अन्न पांन मुख कबहुं न खाय ।।
दिन दिन कुंवर भ्रमता जाइ । तन सूकै राणी पिछताय ।।१८४०।।
प्रभामंडल मन सीता लागि । सुख संसारी दीया त्याग ।।
मात पिता की लज्जा करैं । विरह अगनि सूं देही जरैं १८४१।।
मंत्री सोच करै अधिकाइ । ता दिन देखी फुतली राय ।।
वाही दिन तैं है यह सूल । या की औषधि मंत्र न मूल ।।१८४२।।
राणी का संसव किया । सासू सुसरां सूं भेद यह दिया ।।
जब तैं पट्ट देख्या इह पूत । तब तैं याकूं लाग्या भूत ।।१८४३।।
खाणा पान वस्त्र सब तज्या । वह तो करैं तुमारी लज्या ।।
तुम पूछो तिसका बिरतांत । कारण कवण तुम सूके गात ।।१८४४।।
मात पिता कुंवर ढिग गए । वाका मन की पूछत भए ।।
नरपति कहै करो सनांन । भोजन लीरखावो तुम पांन ।।१८४५।।
आभूषण तन तओ संवारि । तुमने इंछा सीता नारि ।।
अब हम जतन ब्याह का करा । तेरा कारज वेग ही सरा ।।१८४६।।
भामंडल का दुख जब गया । करि सनांन उठि भोजन किया ।।

चन्द्रगति द्वारा उपाय सोचना

चन्द्रगति मन सोचै घणां । कुछ हरषै कुछ चिंतावणा ।।१८४७।।

राजा जनक भूमि गोचरी । अउर रहै वह मिथलापुरी ।।
रथनूपुर तें दूर वह देस । बेटी कबहू न देय परदेस ।।१८४८।।
जे सीता आणिये चुराय । होय अनीत रहसि सब जाय ।।
उनके घर में बाढ़ै सोग । हमने बुरा कहें सब लोग ।।१८४९।।
चपल बेग सूं कही बुलाय । तुम अब मिथलापुर में जाय ।।
जनकराय आणौं मुझ पास । वाकूं कछु न दिखाज्यो त्रास ।।१८५०।।
चपलवेग चाल्या सिरनाय । चढि विवांण मिथलापुर माइ ।।

विद्याधर द्वारा मायामयी अश्व रचना

अस्व एक विद्याधर किया । द्विज गहि हटवाडै गया ।।१८५१।।
तापरि रतन जडित पलांण । नाचत कूदत करै खांचा ताण ।।
अस्व प्रशंसा जनक नृप सुणी । गुणग्य तहां सराहै दुणी ।।१८५२।।
आप जनक नृप देखण चल्या । गुण लच्छन सब देख्या भला ।।
व्यापारी सूं पूछा मोल । तब वह बांभण भाषै बोल ।।१८५३।।
पृथ्वी अैसा अस्व नहीं । बडे भाग्यता आज्य जनक है सही ।।
तुम निमित्त आण्यौं इस ठांव । दोइ सहस्र सोनिया भाव ।।१८५४।।
व्यापारी कुं दिया दिनार । घोडा ले बांध्या दरबार ।।
बहु प्रकार सेवा तिस होइ । तिहां मास बीता इक दोइ ।।१८५५।।
किंकर एक आयो इस ठाय । कही हथनापुर महु लगाय ।।
दुरजन आइ घेर्या सब देस । तुम चलि करो उपर नरेस ।।१८५६।।
सुणी बात भव सेन्यां पलांण । अस्वकोतिल घिरै निसांण ।।
सूर सुभट लीया बहु सग । बाजा बाजै लहर तुरग ।।१८५७।।
परवत पासि ढोल बहु पडे । हाथी तिण आगै टारै न टरै ।।
तब वह अस्व लिया मगवाय । ता ऊपर चढिया नरनाह ।।१८५८।।
हय नृप सहित उड्या आकास । सेन्यां माहिं शोक की त्रास ।।
सेन्या फिर मिथलापुर जाय । नवा भूप थाप्या तिण ठाय ।।१८५९।।
जनक आकास गमन जब किया । पुरपाटण बहुला देखिया ।।
सब पृथ्वी का देख्या देस । मन आनन्द्या जनक नरेस ।।१८६०।।
विजयारध गिर पहुंता जाय । अस्व मार्ग में उतर्या आय ।।
सुधी चालां चलैं तुरंग । रम्यकरण वन देखि सुरंग ।।१८६१।।
सहस्रकूट चैत्यालो जिहां । वन उपवन सरवर है तिहां ।।
पछी बैठा करैं किलोल । बोलै वाणी अमृत बोल ।।१८६२।।

सीतल पवन कवल की बास । भ्रमर गु ंजार करें चिहु ं पास ।।

राजा जनक का विद्याधरों की नगरी में आगमन

प्रथम पौलि जिन प्रतिमा बणी । हस्ती दोइ तिहां सोभा घणी ।।१८६३।।

ढालै कलस प्रतिमा परि भले । अस्व बांधि करि राजा चले ।।
गोपुर देखि भयो आनंद । बहुत वृक्ष तिहा पंकति थंध ।।१८६४।।
भीतर जिन सासन की ठौरि । देखी प्रतिमा च्यारौं ओर ।।
नमस्कार कीनू ं नरनाह । पूजा अरजा अधिक उछाह ।।१८६५।।

सेवा सुमरण चारू ं बार । रहस्य आया मनमें तिण बार ।।
राजा श्री जिणवर का ध्यांन । घोडा छोड गया स्वस्थांन ।।१८६६।।

विद्याधर का फेरचा रूप । पहु ंच्या तिहां चन्द्र गति भूप ।।
जनक राय आण्या इस देस । चलो वेग तुम मिलो नरेस ।।१८६७।।

जिन थानक वे बैठा आइ । ढील करो तो वह उठि जाइ ।।
सह परिवार विद्याधर मिले । श्री जिन जाति रूप तिहं सिले ।।१८६८।।

बजै बहुत बाजे कर नाय । बहु लोग पूजा कौं जाय ।।
सांभलि जनक चढि देखि उतग । बहुत लोग भूषण पचरंग ।।१८६९।।

देख्या चंद्रगति नरणां विवाण । के इक है राजा बलवाण ।।
केइ भूमि केई आकास । उतरचा भूमि चैत्यालय पास ।।१८७०।।

नमस्कार करि बइठा भूप । राजसभा दैदीप्य अनूप ।।
जनक प्रति पूछै चन्द्रगति । के इंद्र के धरणेन्द्र तुम आंत ।।१८७१।।

कै तुम विद्याधर के इन्द्र । तुम पहुचे वो थान जिणंद ।।
आनिन सकै अस अस्थल आइ । अपनां भेद कहो समझाय ।।१८७२।।

बोलै जनक मैं भूमिगोचरी । राजकरैं या मिथलापुरी ।।
माया रूपी घोडा आनि । हू ं आयो हू ं इस थान ।।१८७३।।

चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव

चन्द्रगति नृप आदर करै । एक वात की इच्छा धरै ।।
तुम घर सीता पुत्री सुणी । मेरा सुत प्रभामडल गुनी ।।१८७४।।
क्रिपा करि कन्या तुम देहु । विद्याधर सु ं होइ सनेह ।।
कहै जनक तुम सुणु हो राय । सीता दई राम रघुराय ।।१८७५।।

जब मैं वचन न देता ताहि । कह्या तुम्हारा फिरता नाहि ।।
चन्द्रगति बहुरि जनक सू ं कहै । रामचंद्र बल केता गेहे ।।१८७६।।

ताकूं जो पुत्री तुम देई । उनसूं प्रीत अधिक कर लेइ ।।
रामचन्द्र गुण वरणं भूप । वा सम कोई नहीं अनिरूप । १८७७।।

बरबर म्लेच्छ मिथलापुर आइ । बहुता नै घेरया मैं धाइ ।।
रामचन्द्र ते मारया घेरि । गए भाज ते नाये फेर ।।१८७८।।

वा समये मैं दीनी सिया । तासु कथन मैंने यह किया ।।
चन्द्रगति कहै हम देव समान । भूमिगोचरी हैं पसू समान ।।१८७९।।

कहा म्लेच्छ हैं इसा वराक । उनकू मारू मैं इक धाक ।।
बांधु मलेछ पल में पचषड । वे देहैं मोकूं नित दंड ।।१८८०।।

हमरी संका रावण मन धरै । भूमिगोचरी क्या सरभर करै ।।
जो तूम हमसों करो सनेह । तो हम सिखावैं विद्या अत्रेह ।।१८८१।।

आकास गामिनी विद्या देह । देश देश का कौतुहल करेह ।।
सब पृथ्वी पर हो तुम बली । हम सों प्रीति किये होवै रली ।।१८८२।।

जनक का उत्तर

बहुरि भणै जणक इह भाइ । तुम समुद्र वे तो भील राइ ।।
बापी नीर पिवै सब कोइ । समुद्र उदक न बांछै कोइ ।।१८८३।।

तुम हो शशि वे सूर्य समान । देखत भान कला होइ आन ।।
पाडल पत्र दीसै बहु भांति । सूरज तेज सो नासी कान्ति ।।१८८४।।

अगनि पतंगै त्रिण बहु जलै । दीप जोति मंदिर सब बलै ।।
होइ उजाला सब घर माहि । ता सरभर क्या करि है राइ ।।१८८५।।

तुम गयंद वह सिंह केसरी । बिन देखै भाजै तिह घडी ।।
विद्याधर सुणि कोपे घणे । इन हमकों ऐसे अब गणे ।।१८८६।।
भूमिगोचरी पशु सम चलें । हम आकाश तैं पृथ्वी दलैं ।।
किसकी तू बहु करै सराह । भूमिगोचरी बखाणें ताहि ।।१८८७।।
फिरि जनक नृप ऐसे कही । वंस इष्याक दसरथ नृप सही ।।
ताकै पटराणी हैं चार । पुत्र चारि तिण कूंषि अवतार ।।१८८८।।
एक सो पाच राणी है और । ते सोमै मंदिर की ठौर ।।
उत्तम आदिनाथ का बंस । धरम तीर्थं भए जिन अंस ।।१८८९।।
पंछी जिम तुम उडो अकास । ऐसा बल पौरष उपहासि ।।
जो तुम दिक्षा लेण मन करो । आरजखंड ते सिव संचरो ।।१८९०।।
तिहां सलाका त्रेसठ पुरुष । पूजैं सुरपति मानैं हरष ।।
इहां कोई आवैं सुर देव । करण चैत्य जिणवर की सेव ।।१८९१।।

आरिजखंड सम देस नहीं और । महापुरुष उपजैं तिन ठौर ।।
रामचंद्र लक्ष्मण बलवंत । तिनके गुण को नाहीं अंत ।।१८६२।।

चन्द्रगति द्वारा स्वयंवर रचाने का प्रस्ताव

चन्द्रगति ये कह्या उपदेस । रच्यो स्वयंवर जनक नरेस ।।
वज्रावर्त्त धनुष है एक । वा कूं लो मंडप तल टेक ।।१८६३।।
जो नर करै धनुष टंकार । बाण चलावै मंडप पार ।।
ताकूं दीजे सीता धिया । ऐसा वचन जनक सौं कह्या ।।१८६४।
जनक राय सोचैं तिण बार । कछु मन हरष कछु विस्मैं सार ।।
रामचंद्र तैं धनुष ना उठैं । मेरा वचन पडैं सब झूठं ।।१८६५।।
चंद्रगति प्रभामंडल सुकुमार । विद्याधर सहु लीना सार ।।
रथ परि जनक राय बैठाय । मिथलापुर के वन में आय ।।१८६६।।

मिथिला नगरी

केई भूमि केई आकास । उतरै मिथला के चिहुं पास ।।
देखि नग्र मन भयौ उलास । भामडल मन लील विलास ।।१८६७।।
जनक भूप नगर में गया । सकल लोक को अति सुख भया ।।
गली बंटाई बाजार उछाड । झार्क अटा झरोखां वाडि ।।१८६८।।
हाट पटण छाई सब ठौर । बाजा बजै नग्र मे सोर ।।
हस्ती बढ्या उछालैं द्रव्य । दई असीस प्रजा मिल सर्व ।।१८६९।।
पट बैठे जनक नरेन्द्र । राजसभा मै अधिक नरेन्द्र ।।
कलस ढालि फिरि बैठा राज । सीधा समला मनबंछित काज ।।१९००।।

रणवास में राजा जनक

राजा जनक गया रणवास । ऊंचे नीचे लेइ उसास ।।
बिदेहा राणी सेवा करै । चमर सहेली के कर ढलैं ।।१९०१।।
पूछै राणी सुणौ नरनाथ । तुम चित अटके काहु साथ ।।
कवण देस की देखी नारि । तासूं मन लाग्यो अपार ।।१९०२।।
मन मानें तुम व्याहो ताहि । मेरी बात सुणों नर नाह ।।
तब राजा बोले सत भाव । पिछला भेद सुणाया राव ।।१९०३।।
मायामई अस्व मैं लिया । मो विजयारध गिरि ले गया ।।
विद्याधर घेरया सब देस । सीता मांगै भामंडल नरेस ।।१९०४।।
बजरावरत धनुष है एक । वांकी उनकी है इह टेक ।।
जो कोई करै धनुष टंकार । सो ही कंन्या का भरतार ।।१९०५।।

रामचंद्र न सके संभार । बे ले जाहि सीता नारि ॥
इह चिंता मेरे मन बसै । रामनें न द्यू तो जग हंसै ॥१९०६॥

राणी द्वारा चिन्ता प्रकट करना

इतनी सुणत राणी पिछताय । कवरण पाप उदय मेरे भ्राय ।
जनमत भया पुत्र का हरण । कन्या जाइ तो पूरा मरण ॥१९०७॥
हाय हाय करि रोवै घणी । असी कठिन भ्राणि कै बणी ॥
तब राजा समझावै वयण । भ्रपणां मन राखो तुम भ्रयन ॥१९०८॥
मारूं विद्याधर सब ठौर । बे नहि भ्रावै पांव न पौर ॥

सीता स्वयंबर

राजा ने तबै स्वयवर रच्या । भली भली सौंज कर सच्या ॥१९०९॥
देस देस कुं पठाए दूत । सकल पृथ्वीपति भ्राई पहुत ॥
रामचंद्र लक्ष्मण रु भरत । सत्रुघन सब का लें मन हरत ॥१९१०॥
भ्राए सब मंडप राजान । कन्यां कर जयमाला भ्रान ॥
सुभस्वर ता है बीयता सग । रतन जडित कर छडी सुरग ॥१९११॥
खेचर भूचर भूपति घने । पहरि भ्राभूषण भ्राछे बणे ॥
एक तैं एक नृप भ्राये बली । कहां लगि वरणौं नामावली ॥१९१२॥
चंपापुर का हरिवाहन राय । ता ढिग घनप्रभु बैठा भ्राय ॥
केतुमुख दुरमुख भ्रौर प्रभामुख । श्री जैवांणारस का गुरुमुख ॥१९१३॥
जडराजा भांन सु प्रभा भूपती । मंदिर विसाल श्रीधर सुभमती ॥
वीरधर बंधव भद्र निह ठौर । नंदकेस के पुरु नृप भ्रौर ॥१९१४॥
गोविंद धर रघुपुरु का राव । राजा भोज सुभोज तिण ठाइ ॥
धाय नाम सगलां का कहै । कंन्या देखि फिर मारग गहै ॥१९१५॥
राजकुंवर देखे वहु भांति । रामचंद्र की देखी कान्ति ॥
बज्रावर्त्त धनुष तिहां धरया । सेवा करैं देव तसु खडा ॥१९१६॥
जे कोई धनुष चढावै भ्राय । सो सीता नै परणैं राय ॥
जैसी बिजली तैसा बज्र । ज्वाला व्रत धनुष वह भ्रज्ञ ॥१९१७॥
फुंकार फिरै तिहां नाग महान । कंपै भूपति जावै भाणि ॥
केई धनुष पासि नहीं जावैं । सूर सुभट करै बहु उपाव ॥१९१८॥
जो कोई पहुंचै किण ही भांति । भस्म होइ प्राण उड जात ॥
भूपति कहैं जनक कहा किया । इतने लौगों के प्राण जु लिया ॥१९१९॥

हमने छोडया असा व्याह । हम जीवत अपने घर जाहु ।।
रूपवंत त्रिय सों क्या काज । बुरी भली सेती रहु लाज ।।१६२१।।

सारा मान भंग इत भया । ब्रह्मचर्य पालें हम नया ।।
सकल भूप त्यां हारी मान । रामचन्द्र उठ्या तिरा बार ।।१६२२।।

राम द्वारा धनुष खेंचना

दशरथ नृप की आग्या लई । त्रिभुवन नाथ सो प्रणपति करी ।।
रवि सम तेज चन्द्र उणिहार । रामचंद्र का बल अंत न पार ।।१६२३।।

जैसा भेस सुदर्सण धीर । सोभै कंचन वरण सरीर ।।
जिम समुद्र अति अगम अथाहु । नहीं राम गुण को अवगाहु ।।१६२४।।

कर सूं धनुष जब लिया उठाइ । ततक्षण छिन में लिया उंचाइ ।।
करि टकार गह्यो जब बाण । गरज्यो धनुष अति मेघ समान ।।१६२५।।

वोलै मयूर पपीहा रटै । दादुर सबद सरोवर रटैं ।।
धरतीस्वर गिर कंपे घणे । जलहु नीर तब उछले घणे ।।१६२६।।

सीता द्वारा वरमाला डालना

जै जै कार देवता करै । पहुप वृष्टि वरपैं सिर परै ।।
रामचद गलै घाली माल । जै जै कार करैं भूपाल ।।१६२७।।

मान भंग विद्याधर भए । लजावंत होई उठि वए ।।
जनक दसरथ के बाजे बजे । ता सबद सौं दुरजन लजैं ।।१६२८।।

सिंघासन परि दसरथ राय । नमसकार कियो तिह आय ।।
सीताराम की जोडी बनी । ते सोभा मुख जाइन गिनी ।।१६२९।।

अैसी वस्तु नही जग माहिं । जाकी पटतर दीजे ताहि ।।
चद्रकिरण षेचर भूपति । कंन्या अस्टदस गुणवती ।।१६३०।।
रामचद्र कू दई बिवाह । सीता संग अधिक उच्छाह ।।
लक्ष्मण नैं लीनां करि धनूंष । उतारि चढाइ किया मन सुख ।।१६३१।।
राजा सकल रहे मुंह वाहि । इन सम हम कोई जोधा नाहि ।।
भरत सोच करैं मन बहुत । एक पिता हम चारू पूत ।।१६३२।।
मो पै धनुष उठ्या नहीं काय । इनुं का पूरब पुन्य सहाय ।।
पुन्य प्रतापैं ए हुआ बली । इनकी सरभर किम पाऊं रली ।।१६३३।।
केकई चितवैं पुत्र की ओर । मन मलीन देख्या तिरा ठोर ।।
सूरत मन की लाधी बात । पति सौं बचन कहै बहु भांति ।।१६३४।।
भरत तणैं मनमैं वैराग । दीक्षा लेसी सब घर त्याग ।।
कनक गेह सुप्रभा नारि । लोकसुंदरी पुत्री तिरा बार ।।१६३५।।

भरत का लोकसुंदरी से विवाह

वाहि कहो बरमाला लेहि । भरत तणे गले घालेइ ।।
जनक कनक प्रति कहै बुलाइ । कन्या आई मंडप ठाइ ।।१६३६।।
देखैं सकल भूपती राइ । माला दई भरत गले घालि ।।
लोकसुंदरी व्याही भरत । तजि वैराग भोग सुख करत ।।१६३७।।
ग्रैं ग्रैं करम महा बलवंत । मोह सिंधु में बूडै अन्त ।।
भवसागर तें कठिन निकाल । जे उछलै काहु बाल ।।१६३८।।
मोह सिला ले बोलै फेरि । जीव करम नें राख्या घेरि ।।
जनक नरेन्द्र दीनी जिवणार । देस देस के नृप की करै मुनहार ।।१६३९।।

मिष्ठानों का वर्णन

मंडप तलैं वे बैठा भूप । सोवनथाल भरि रखे अनूंप ।।
रत्नो जडित तवाई धरे । सुवन कटोरा दुग्ध ले भरे ।।१६४०।।
फीणा फीणी अरु बरफी स्वेत । घेबर लाडु परुस्या हेत ।।
खुरमे सीरा पूरी घनी । वहुत सुवास तनो की बनी ।।१६४१।।
धोल बडे व्यंजन बहु भांति । हूरे जरद बहु गणें न जात ।।
भात दाल अति अत्त सुवास । सिखरण का दौंना धरि पाति ।।१६४२।।
तामें बूरा लायची लौंग । मेवा मेल्या तिहां मोहन भोग ।।
मीठा मिरच जीरों का मिल्या । लूण संघातैं तिहां धिल्या ।।१६४३।।
जीम्यां भूपति एकई पांति । चलु लेइ मुख सोध करात ।।
लौंग कपूर केशरि जावतरी । बीडा बांध्या चोली धरी ।।१६४४।।
भावे रत्न कनक नग जरे । बीडा बांधि तिन अग्रे धरे ।।
नृपति खाय सभा के बीच । लगाए अडिग चावै गला नीच ।।१६४५।।
केसरि छिडकी बहुत गुलाब । रंगारंग हुआ बहु भाव ।।
कांमणि गावैं मंगलचार । सहु कुटंब की आवैं नार ।।१६४६।।
चौरी रची चउपंड बणाइ । पढै बेद धुनि पंडित राइ ।।
बाजा बहु वाजै दरबार । नृत्य करैं गावैं नर नारि ।।१६४७।।
रामचंद्र सीता का व्याह । दोऊ कुल में अधिक उछाह ।।
वाही लगन विवाहो धणी । ते सुख सोभा जाय न गिणी ।।१६४८।।
सोदा वहुत दिया भूपती । नाही गिणत भैताछती ।।
रहस रली सुं सुधरघा काज । आय अयोध्या भुगतैं राज ।।१६४९।।

दूहा

चल कुटंब लक्ष्मी घणी, पाई पुन्य पसाइ ।।
रामचंद्र लक्ष्मण बडे, भए मुकटमणि राय ।।१६५०।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र सीता विवाह वरणन विधानकं

२५ वां विधानक

चौपई

अयोध्या आगमन

सहु परिवार अयोध्या आइ । करी बधाई दशरथ रांइ ।।
सुख मे बीतैं आठों जाम । भोग्यां भुगतैं सीताराम ।।१६५१।।

सुद अषाढ अष्टमी सुभघडी । पूजा की सामग्री करी ।।
देव सथान सवारया घणां । भला भला चंदोवा तणां ।।१६५२।।

अष्ट दरब सब लीये सुध । पूजा पढैं पंडित सुबुधि ।।
गगा का जल उत्तम नीर । भरे कलस भारी तिहं तीर ।।१६५३।।

अति सुवास जल भरया सुवास । व्रत अठाई करैं परिवार ।।
अरचा चरचा पूजा पाठ । अैसी विध बीते दिन आठ ।।१६५४।।

पु रणवासी करैं सांतीक । उत्तम चलै धरम की लीक ।।
किया महोछव श्रीं जिन थान । देवसास्त्रगुरु प्रवांन ।।१६५५।।

गंधोदक लेना

गंधोदिक सिर लिया चढाइ । महल मांहि फिर दियो पठाइ ।।
सब राणी निज अंग लगाइ । सुप्रभा ने नहीं पहुंच्या जाइ ।।१६५६।।

जे व भ त्रिया गंधोदिक लेइ । ताकूं पुत्र जिनेश्वर देइ ।।
कुष्टी का कुष्ट जु भगैं । निरमल होइ देही जगमगैं ।।१६५७।।

कंचन सम काया तसु होइ । निसचै व्रत करैं जे कोइ ।।

सुप्रभा राणी की व्यथा

सुप्रभा राणी कर अहंकार । अणसण लें पौढी तिणबार ।।१६५८।।

पसचाताप मन मैं अति धरै । हीन पुन्य जो पूरब करै ।।
पति का तो कहुं दूषण नही । तातैं हमारी कांण न रही ।।१६५९।।

अब मैं तज दूंगी निज पराण । हमारी आज घटाई काण ।।
राजा आये महल मंझार । देखी पडी सुप्रभा नार ।।१६६०।।

मलिन रूप देखी वहां पडी । जाणें प्राण तजै इस घडी ।।
दशरथ जाइ पलंग परि बैठि । राणी उतर कर बैठी हेठ ।।१६६१।।

बांह पकड करि लई उठाय । पीलंग ऊपर निज पास बिठाय ।।
किण कारण तू करै अहंकार । किण मनुष्य तो कूं दई गार ।।१६६२।।

ताकी जीभ कटाऊं तुरन्त । जैसे ही पाऊं सुष तंत ।।
सुप्रभा कहै सुणो नरेस । मोकूं कहा देखी हीण भेस ।।१६६३।।

सकल कला गुण माहिं प्रवीण । कवण वस्तु मैं जाणों हीण ।।
गंधोदक सव कूं तुम दिया । मेरे ताई क्युं न बांटिया ।।१६६४।।

अब हूं मरूं मांडि सन्यास । अपणे जीवण की तज आस ।।
राय कहै तैं सुण्या पुराण । अैसी चित्त मैं मूल न आण ।।१६६५।।

क्रोध करि जो आत्मा दहै । लख चौरासी मा दुख सहै ।।
कुमति मरण भवभव होइ दुःख । चिहु गति मांहि न पावै सुख ।।१६६६।।

गंधोदिक लीयां थी कंचुकी । सुप्रभा रांणी क्रोध मां वकी ।।
सुप्रभा बोलै सुणुं नाथ । मुंह मोडया भीर ईनह हाथ ।।१६६७।।

मिल्यो तिहां सगलो रणवास । बैठी घेरि राणी चिहुं पासि ।।
इह गंधोदिक श्री जिनवर तणौ । इस पर क्रोध न कीजे घणों ।।१६६८।।

कंचुकी को नृत्य का आदेश

अंजुली भर छिडकी सब त्रिया । ततक्षिण क्रोध पयाण किया ।।
राजा कंचुकी सौं तब कहै । वेग नाचि राणी सुख लहैं ।।१६६९।।

कंचुकी का उत्तर

बोलै कंचुकी सुणो नरेश । वृध्य भए पंडुरा केस ।।
टूटे दांत देही जा जुगी । सब सरीर मे लीलरी पडी ।।१६७०।।

कांपै चरण थर हरै सरीर । बहै नांक नैणा थी नीर ।।
लाठी टेक सुर ढीले भए । तरुणा पाका पौरुष गये ।।१६७१।।

जैसी फूलै है अति सांझ । जिम जोवन विनसै पल माझ ।।
हूं किण पर नाचूं भूपती । देही में बल रह्या न रती ।।१६७२।।

तुमारै ही इहै प्रसाद । बहुतेरा सुख भुगते स्वाद ।।
रूपरंग चतुराई घणी । मुझ सो कोई न गुंणी ।।१६७३।।

वृद्ध भये कला सब घट गई । अप्थिर पद की सुध भई ।।

दशरथ पर प्रभाव

दसरथ के मन सांची लगी । वैराग भाव की चेष्टा जगी ।।१६७४।।

जोबन जल बुदबुदा समान । पलमैं होइ जाइ तिहां हांनि ।।
जोबन समैं धरम कबहू ना करै । अगले भव कुंवो हित धरै ।।१६७५।।
जीव लपटियो माया जाल । आय अचित्यो व्यापैं काल ।।
जरा घटाई देही मांस । तो भी इच्छै भोग विलास ।।१६७६।।
अगली सुध सब दई बिसार । पुत्र अर लक्ष्मी लाडई नार ।।
सुपना की सी है सब रिद्धि । जागति कबहूं न दीसै सिध ।।१६७८।।
सकल विभूत पुण्य तैं होइ । ताका भेद समझै सब कोइ ।।
पुण्य सिवाय सगा कोई नहिं । कहा राचै ऐसा सुख माहि ।।१६७६।।
उपजै विरणसै होइ विछोह । तासु कहा कीजिये भोग ।।
धन्य साध जिन तजियो गेह । ममता कबहूं न राखैं गेह ।।१६८०।।
मेरा है यह पुत्र सपूत । तिसकों सौंपों राज विभूत ।।
आतम का हित करू मन लाय । धरू साधु व्रत मन बच काय ।।१६८१।।
असी चित चिंता नृप करै । पंच महाव्रत कब मन धरै ।।

सर्व विभूति मुनि से धर्मोपदेश का श्रवण

सर्वभूति मुनिबर पैं आइ । च्यार ग्यांन झलकैं तसु काय ।।१६८२।।
बहुत शिष्य मुनिवर ता संग । तीन ग्यांन सों मोभै अंग ।।
केइ तरु तल केई जिन भूमि । केई सिला केई परवत गिन ।।१६८३।।
केई सरिता के तट तीर । धरयो ध्यांन मन मेरु सुधीर ।।
रितु चौमासो कांली घटा । सकल गयरण मेघसो पटा ।।१६८४।।
चमकै दामिरण गरजैं घरणा । मूसल धारा बरसैं घरणा ।।
मुनिवर बैठा अपरणें ध्यान । लगै बूंद अति तीर समान । १६८५।।
सहै परीस्या बीस अन दोय । दया भाव सब ऊपर होइ ।।
वाजा बजै बहुत परभात । उठै लोग जिन सूमरै प्रात ।।१६८६।
करि सनान जिन पूजा करी । भूपति मुनि बंदन चित धरी ।।
राय संघात चाल्या बहु लोग । देख्या साध आत्मा जोग ।।१६८७।।
दीनी तीन प्रदक्षिरणा राय । केवलि वाक्य सुण्या मन लाय ।।
सकल सदेह चित्त का गया । राजा फिर मंदिर आइया ।।१६८८।।
रांरणी सों वह मंदिर मांझ । राजा सेव करैं दिन सांझ ।।
भोग भुगति मैं बीतै काज । दसरथ करै अजोध्या राज ।।१६८९।।

इति श्री पद्मपुराणे विश्वभूति मुनिवर समीप धर्म श्रवण विधानकं

२६ वां विधानक
चौपई

भामंडल की चिन्ता

गई चउमास सरद रितु आई । कार्तिक मास महा सुखदाई ।।
धांन पांण पाणी का स्वाद । फूले कमल करें अलि नाद ।।१९९०।।
चंद्रसूरज की निरमल कांति । उज्वल जल सोभै बहु भांति ।।
भामडल मन चिंता घणी । अई कैसी करम गति बणी ।।१९९१।।
मम इच्छा सीता को करी । ब्याही राम भूमि गोचरी ।।
हम विद्याधर देव समान । हमारी कछुयन रही काण ।।१९९२।।
असी खुटक रहै दिन रात । वस्तध्वज कही मन की बात ।।
वृहतकेत साभलि सब भेद । करै सोच मन मां बहु खेद ।।१९९३।।
बोलै अन्य मंत्री तिहां घणां । दाव न को हम पास ई बणां ।।
सीता सम कोई नहि नारि । स्वरग मध्य पाताल मझारि ।।१९९४।।
रामचन्द्र सम अवर न बली । ते सीता सु मानै रली ।।
लक्षमण तणौं अस्यौ प्राकर्म । उनकै सदा सहाई धर्म ।।१९९५।।
जब सीता ब्याही थी नांहि । तब चोर ल्यावते ताहि ।।
तब कैसे लेता रामचन्द्र । हमौ किया जब झूठा दुंद ।।१९९६।।
अब वह कैसे हरियन जाय । राम लषण तै देव डराइ ।।
बृहस्पति केतु मंत्री तब कहै । कहा सोच तुम मनमें रहै ।।१९९७।।
विद्याधर हम जइसा देव । सीता हरन लागै ई भेव ।।
राम लक्ष्मण मांडै जुध । भूमि गोचरी लडै असुध ।।१९९८।।
हम विमाण चढि लेइ अकास । भूमिगोचरी के पुरवास ।।
भामंडल वीमाण चढ चलै । वृहतकेत मंत्री सब मिलै ।।१९९९।।
बहुत सुभट संग लीया चढाइ । पहुचे विदग्ध देस मा जाय ।।

भामंडल को जाति स्मरण होना

महीधर परवत देख्या वहुदेस । जाती समरण भया नरेस ।।२०००।।
पूरव भव करते इहां राज । द्विज नारी राखी वे काज ।।
तप करि विप्र भया वह देव । चित्रोत्सवा मै जुगल भए एव । २००१।।
जनमत समै मुझे सुर हरथा । चद्रगति तणै मंदिर ले धरथा ।।
महाकुबुधि बिचारी बुरी । बहन हरन की इच्छा धरी ।।२००२।।
अपने कुल की निन्दा करी । आई मुरछा मृतक सम परी ।।
बहुर गये रथनूपुर देस । चन्द्राइण देख्या सुत भेस ।।२००३।।

वैद किया बुलाय उपचार । सील कमल उर धरे समार ।।
कामिन फेरैं देही पर हाथ । बीजणा करैं सखी तिण साथ ।।२००४।।

हूं सचेत बोलियां कुमार । पूछैं राय पुत्र की सार ।।
पिछला कह्या सकल सनबंध । विषयां कारण हुआ अंध ।।२००५।।

सीता बहिन हूं वाको भ्रात । उपजे कुंख विदेही मात ।।
जनम समैं हरि ल्याया देव । तुम घर छोड दिया इह भेव ।।२००६।।

सकल सभा सांभलि सनमंध । सब संसार जाणियो धंध ।।
पोता कूं दीनूं सब राज । चले सुत पिता दीक्षा काज ।।२००७।।

महेन्द्र गिर इक उत्तम थान । सरवभूत हित मुनि ढिग आंन ।।
करि जोड कीनूं नमस्कार । प्रभु हमें दिक्षा द्यौ इणबार ।।२००८।।

बाजा बाजैं गुनी जसथाय । नृत्य करैं अपछर तिण ठाय ।।
करैं आरती महोच्छा घणे । भाट जैंजै कार जनक भणैं ।।२००९।।

प्रभामंडल जनक सुत सूर । ग्यांनवंत दाता भर पूर ।।
धन्य धन्य धरी धरम की देह । धरमध्यान सुं ल्याया नेह ।।२०१०।।

सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन

सीतां सुण्यां पिता का नाम । सोचै घणां राखि चित ठांम ।।
जनक पुत्र इहै है नृप कौण । मो संगि जनम हुवा था जौण ।।२०११।।

कोई हर ले गया जनम की वार । ताकी कबहुं न पाई पार ।।
सीता के भरि आये नैण । रामचंद्र तब पूछैं वयण ।।२०१२।।

किम दृग भरे कहा तुम दुःख । तुम कूं है मुंह मांग्या सुख ।।
सांची बात कहो समझाय । क्यूं दिलगीर भई किण भाइ ।।२०१३।।

पिछली कही जनक की बात । मो साथैं इक जन्म्या भ्रात ।।
वाकुं कोइ ले गया उठाइ । बोलै भाट जनक सुत राय ।।२०१४
तुम चालो तो देख्या जाइ । दरसन भ्रात को पाऊं राय ।।

दशरथ का मुनि के पास जाना

बीती रयण भयो परभात । दशरथ चल्यौ मुनिवर की जात ।।२०१५।।

च्यारूं पुत्र सहित परिवार । वहुतैं लोग भए असवार ।।
विद्याधर की सेन्यां घणी । मंदिर माया रूपी बनी ।।२०१६।।

राजसभा खेचर की जुडी । अनैं अजोध्या छाई खरी ।।
दरसन कियो मुनिवर को जाइ । नमस्कार कीया बहु भाइ ।।२०१७।।

विद्याधर आय सब मिले । समाधान पूछे बहु भले ।।
चरचा करैं धरम की सर्व । सातों तत्व और षट द्रव्य ।।२०१८।।

नव पदार्थ नैं काया पंच । जिनवाणी मुख बोले संच ।।
आदि अंत की चरचा करैं । जिनेश्वर वाक्य हिये में धरैं ।।२०१९।।

दशरथ नृप पूछें कर जोडि । प्रभुजी इनकी कहो बहोड ।।
किण कारण यह लेत हैं जोग । छोडे केम राज सुख भोग ।।२०२०।।

मुनि द्वारा बतलाना

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । विदग्ध देस महीधर की पार ।।
कुंडलमडल निहां भूपती । पिंगल बिप्र करै तिहां थियती ।।२०२१।।

नारि लई विप्र की छीन । विप्र दलिद्री था अति दीन ।।
चक्रध्वज प्रभावती का सुता । राजा ले त्रिय भोगता ।।२०२२।।

विप्र महा दुख घणा मन करचा । जती पास संयम आदरचा ।।
तप करि लह्या महेन्द्र विमांण । पिछला भव समझ धरी ग्यांन ।।२०२३।।

अनरण कुंडल मंडल गह्या । बांध्या ताहि बहुत दुख दिया ।।
बहुरि कुंडल दीया छोडि । मुनि मुख सुनी करम की खोडि ।।२०२४।।
तिहां अणुव्रत लिया मन लाइ । चित्रोत्सवा तप कीया जाइ ।।
दोउं उपज्या गरभ विदेह । जनक भूप के जुगलया एह ।।२०२५।।

वैर समझि इन बालक हर्या । गयण गया गिर कंदर फिर्या ।।
विजयारध रथनूंपुर जाग । चंद्रगति फिर घेर्या आय ।।२०२६।।
पुष्पवती नै पाल्या याहि । नाम धर्या प्रभामंडल ताहि ।।
नारद लिखी सीता का रूप । प्रभामंडल तब मोह्या भूप ।।२०२७।।

उन बाछी हरणे कु सीया । जाती सुमरण ग्यांन उपजीया ।।
इण कारण उपज्या वैराग । राज रिध दी सब ही त्याग ।।२०२८।।

ब्योरा सुणि सब चक्रित भए । सब संदेह इनूं के गये ।।

प्रभामंडल द्वारा प्रश्न करना

प्रभामंडल तब पूछै प्रश्न । चंद्रगति पुष्पवती प्रसंग ।।२०२९।।

कवण सनमंध इणु संग मिल्या । पुत्र समांन इनुं कै पल्या ।।
भरतषेत्र मोद इम गांम । विमुंच विप्र निवसै तिण ठांम ।।२०३०।।

अनकोसा ताकी है स्त्री । अतिभूत पुत्र सरिसा पुतरी ।।
ग्याना विप्र उर जामात । सरसा कुं ले भाज्या भ्रात ।।२०३१।।

मात पिता सुत निकसे खोज । तीनूं व्याकुल रोवै रोज ॥
भर्‌या साँझ सों छोड्या गेह । तीनूं बिछुडे ढूंढत एह ॥२०३२॥
बहुत प्रकारें ले ले नाम । ढूंढत फिरें नगर पुर ग्राम ॥
घर कूं चोर लूट ले गये । तीनुं फेर भिखारी भए ॥२०३३॥
विमुंच विप्र जमुनां पर गया । भिक्षा मांगि निज मारग लिया ॥
इन कुंवास नरइ मलीन । भ्रमत भ्रमत देही भई छीन ॥२०३४॥
उरजा देखि तब वासौं मिली । अनुक्रम बात पाछली मिली ॥
उनव सती कही समभाय । बेटी किसके घरै समाय ॥२०३५॥
हम तुम दोन्युं एक ही जात । मेरैं पुत्र हरी है राति ॥
पुत्र कू मिले गया संदेह । सरवार पुर गये दोऊं एह ॥२०३६॥
कमलांति अर्जिका के पास । दिक्षा लई सुगति की आस ॥
विमुंच विप्र भी दिक्षा लई । करी तपस्या मन वच कई ॥२०३७॥
पहुंचे तीनुं ग्रीव विमाण । अदभुत सरिसा अवर कयाण ॥
तीनुं थापै आंन की आंन । करै बहुत मिथ्या मत ध्यान ॥२०३८॥
जैन धरम की निंदा करै । मिथ्या धरम को निश्चै धरै ॥
सरसा बहुगति भ्रमी अथाइ । अंत भई हिरणी परजाइ ॥२०३९॥
चल्यो केहरी पाछै दोडि । हिरणी धसी दवानल माहि ॥
बहुरि कनक परवत परिजाइ । सिघ देखि भागी उचकाय ॥२०४०॥
छुटे प्राण हिरणी तहा मुई । चक्रध्वज सुता चित्रोत्सवा भई ॥
ग्यांना भ्रम्या बहुत संसार । धूमकेत घर लीया अवतार ॥२०४१॥
पिंगला नांस पुत्र ते भया । चित्रोत्सवा पुंगल ले गया ॥
अतिभूत च्यारो गति भ्रम्या । अंत समै हंस गति जम्यां ॥२०४२॥
ताराछ सरोवर क्रीडा करै । इक दिन जाय कीच में पडै ॥
लाग्यो कीच पांख भर गई । उड न सकै अपाहिज भई ॥२०४३॥
जिनवर थान जाइ गिर पडै । जसोमित्र तिहां मुनि तप करैं ॥
अंत सुण्यां परमेष्ठी नाम । किन्नर देव भया तिण ठाम ॥२०४४॥
दस हजार संवतसर आव । कुंडलमंडल हुवा राव ॥
विदग्ध नगर का राजा हुवा । पिंगल संग पहुंची चित्रोत्सवा ॥२०४५॥
त्रिया चोर द्विज नैं दुख दिया । पिंगल तप करि देवता भया ॥
विमुंच जीव चन्द्रगति भूप । अनकोसा पुष्पावती रूप ॥२०४६॥
उरजा भई विदेहा नारि । चित्रोत्सवा सीता अवतार ॥

भाई बहिन मिलन

भाई बहन जुगलिया भए । पुत्री पुत्र जनक घरि गए ॥२०४७॥
पूरव भव का कारण मिल्या । इस सनबंध इसके घर पल्या ॥
सुण्यो सकल पिछलो बिरतांत । उठी रोम सब ही के गात ॥२०४८॥
भामंडल सीता मिले रोइ । समझावैं उनको सब कोइ ॥
जनक कनै ए सब वेग पुचाई । अनितेडाइ विदेहा माई ॥२०४९॥
गया दूत पत्र दीया ताहि । वांचित मोह उदय भयो आइ ॥
पवनवेग तब कहै तुम चलो । पुत्र आपनां सेती मिलो ॥२०५०॥
चढे विमान सहित परिवार । भयो सुख मन हरष अपार ॥
गए अजोध्या मिले गल लागि । मात पिता मिलिया बड भागि ॥२०५१॥
धन्य जननी जिन पायो वीर । बाललीला देखी सधीर ॥
दिखलाई लीला बहुभाति । भयो सुख अति पित अरु मात ॥२०५२॥
रामचंद्र कै मन उल्लास । सकल कुटंब मिल्यो ता पास ॥
भामंडल कहै दिक्षा लेहु । रामचन्द्र समझावैं भेउ ॥२०५३॥
तुम बालक जोवन भरी देह । हम तुम हुवा अधिक सनेह ॥
जब हम दिक्षा लेस्या जाइ । तब तुम हम संग लीज्यो आइ ॥२०५४॥
भामंडल सेना सयुक्त । रथनूपुर मे जाय पहुंत ॥
जनक कनक का सब परिवार । मिथलापुरी गए तिहवार ॥२०५५॥
सीता राम अधिक सुख भया । बहु प्रकार आनंद सब थया ।
सगलां की चिंता मिट गयी । दिन दिन सहस विभव गुण थई ॥२०५६॥

अडिल्ल

पुण्य उदय परिवार बधै दिन दिन घणां ।
बिछुरैं प्रीतम मिलै बहुत घरि सज्जणां ॥
बैरी लागै पाय धरम परभाव सूं ॥
संपति मिलै अनेक कृपा जिनराज सौं ॥२०५७॥

इति श्री पद्मपुराणे भामंडल समागम विधानकं

२७ वां विधानक

चौपई

दशरथ का मुनि के पास आकर अपने पूर्व भव पूछना

राजा दशरथ मुनि पासैं गया । नमसकार करि चरणौं नया ॥
स्वामी मो मन रह्यौ सन्देह । मो पूरब भव भाषो तेह ॥२०५८॥

कवण पुण्य ये पाई रिद्ध । जनक कनक सुत च्यारों विद्ध ।।
सरवभूति मुनि अवधि विचार । ज्यों ज्यों भ्रमैं संसार ।।२०५६।।

हम तुम रुल्या अनंती बार । भ्रमतां कबहुं न पायो पार ।।
तीन लोक में नहीं विसराम । स्वर्ग मध्य पाताल सुठांम ।।२०६०।।

च्यारौं गति में डोल्यो हंस । कब उत्तम कब नीचै बंस ।।
सप्त तत्त्व के सूच्छम भेद । जाय सुणत संसय तरु छेद ।।२०६१।।

नित प्रति राखै उत्तम ध्यांन । जैन धरम का सुणैं पुराण ।।
दान च्यार दे वित्त समान । औषद अन्न अभय का दांन ।।२०२६२।।

जीव तत्त्व का सुणैं बयांण । एकै जीवइ निरंजन जान ।।
दोंइ प्रकार संसारी प्रांन । भव अभव्य जीव धरि ध्यान ।।२०६३।।

भव्य सोहौ जाणैं ये भेव । मन वच सत्य जिनेस्वर देव ।।
पूजा दान सामायिक करैं । पाप कर्म सबै परिहरैं ।।२०६४।।

तो निश्चय सिद्धालय जाय । समकित सुं रहैं दया के भाव ।।
कैई सिद्ध होइंगे और । पावैंगे तो निर्भय ठौर ।।२०६५।।

अभव्य जीव दरसन तैं दूर । देव शास्त्र गुरु समझैं नही मूल ।।
जिन वाणी ताकूं न सुहाइ । कुगुरु कुदेव कुशास्त्र ते धाइ ।।२०६६।।

समकित दया न समझैं कुछ । च्यारों गति मांहि सबै तुच्छ ।।
उपजत बिनसत लगै न बार । ऐसे जीव रुलै संसार ।।२०६७।।

तिहुं लोक घिरत घट जिम भरैं । तिहां के जीव नहीं नीवरे ।।
मोक्ष थानक भरि पूरन थाइ । नरक निगोद न रंच घटाइ ।।२०६८।।

धरम अधरम रु जीव अजीव । काल आकास द्रव्य षट नीव ।।
नव पदार्थ आने पंच काय । सकल भेद कहियो समझाय ।।२०६९।।

सेना पुर नग्र तिहां बसती बणी । उपसत नृप भामणी तसु तणी ।।
जैंन धर्म सौं प्रीत न चित्त । चंडी मुंडी मंडी पूजै सु बित्त ।।२०७०।।

मिथ्या धरम करैं मन ल्याय । तीरथ तीरथ सप्त भ्रमाय ।।
दया दान समझै नहीं भेव । पाप प्रमाद की इच्छा करेव ।।२०७१।।

करै वरत खावैं कंद मूल । तिल दांणा बहुला फल फूल ।।
सिंघाडा बींध्या को चूंन । वरत खांड नैं सीधा लूण ।।२०७२।।

काया पोष वरत बहू किया । झूठी क्रीया सौं चित दीया ।।
जल में कूद बिराधैं मीन । छापा तिलक ग्यांन करि हीन ।।२०७३।।

अणछाणी जल करै रसोइ । बहुत पाप ताकूं नित होइ ।।
मरि करि पहुंते नरक मझार । चउरासी लख भ्रम्या अपार ।।२०७४।।

दशरथ के पूर्व भाव

भ्रमत भ्रमत इंद्रकपुर नग्र । करै राज राजा जसोभद्र ।।
धारणी त्रिया तासु पट घनी । धारण पुत्र सोभा अति बनी ।।२०७५।।
व्याही नयण सुंदरि नारि । आया मुनिवर लेण आहार ।।
विधसुं द्वारा पेषण किया । ऊचा आसण वैसण दिया ।।२०७६।।
चरण धोय जल सीस चढाइ । वइयावर्त्त किया बहु भाइ ।।
मास उपासी मुनिवर जती । सुध आहार दियो भूपती ।।२०७७।।
अषय दांन दियो मुनिवर तहां । अधिक पुनीतण दंपति कहा ।।
समकित सुं पालै अनुवर्त्त । देवसास्त्र करै गुरुभक्त ।।२०७८।।
पूरण आव करि तज्या परान । क्षेत्र विदेह धातकी आंन ।।
भोग भूम दंपति तिहां पाइ । दोनुं भए जुगलिया आइ ।।२०७९।।
तीन पल्य की आयु प्रमाण । भुगति तीसरे स्वर्ग विमांण ।।
उहां तै चए प्रथइ देस । नंदघोष रहै तिहां नरेस ।।२०८०।।
वसुधा है ताकी असतरी । नंदवरधन जनम्यां सुभ घरी ।।
कोडि पुरव की भुगती आव । जसोधर पास सुण्यां धरम के भाव ।।२०८१।।
दिक्षा लही जतीश्वर पास । जसोधर मुनि लौकांतिक वास ।।
नंद बरधन पचम सुरथान । भुगत आव फुन चंया निदान ।।२०८२।।
मेरु सुदरसन पछिम ओर । विजयारध परवत की ठोर ।।
ससीपुर नग्र रत्नमाली भूप । विद्युलता राणी सु स्वरूप ।।२०८३।।
सुरजय ताकै भया सुपुत्र । विद्याधर बल सूं संजुक्त ।।
सिंध नग्र बज्र लोचव राय । रतनमाली चढे जुधकर भाय ।।२०८४।।
दारुन यूध दोउं धां भयो । रतनमाली नै क्रोध उपनुं भयो ।।
अगनि वाण कर लिया सभारि । मारि मारि किये दुरजन ठार ।।२०८५।।
देव एक आयो तिण ठाम । समझाया रत्नमाली नाम ।।
जो मारैगा इतने लोग । तोकूं होसी भव भव विजोग ।।२०८६।।
जे कोई एक जीवनै हनै । ताकों हुवैं नरक की गनै ।।
भव पिछला देव निज कहैं । राजा क्रोध छोडि इम कहै ।।२०८७।।
गधारी नगरी नृप भूत । उपमती नांमइ पिरोहित ।।
हिंस्या करै था घणी । इक दिन लबधि पुन्य की वणी ।।२०८८।।

दशरथ का पूर्व भव

कमल गर्भ मुनि आगम भया । सुणि नरेस पूजा कूं गया ।।
प्रदक्षिणा दई नृप तीन । नमस्कार करि बोलैं दीन ।।२०८९।।
स्वामी कहो धरम समझाय । पाप पुन्य का कैसा भाय ।।
कहैं मुनीसर सुणो नरेस । पुंनि तै जस होवै देस विदेस ।।२०९०।।
पुंन्य तैं ह्वं संसार में रिद्ध । पुनि तें पावै सगली सिद्ध ।।
पाप करम नित करैं ते मूढ । दया पालै हिंस्या रूद ।।२०९१।।
मरि करि चहूंगति मांहि भ्रमई । खोटी गति मां वनसैं जमई ।।
राजा सुण्यां धरम का भाव । थर हर कर कंप्या सब गांव ।।२०९२।।
उत नरेन्द्र उपसमी द्विज । दिष्या पालैं ब्रह्मचर्य ।।
तप करि पहूता स्वर्ग विमांण । पल्य पांच तिहां आयु पमांण ।।२०९३।।
प्रोहित जीव मिथ्या मन धरी । जैन चरचा राजा कै धरी ।।
उहां तैं लोक मध्य भए आइ । राजहस्त भूत का जीव है राइ ।।२०९४।।
प्रोहित जीव चय बडवा भया । हस्तनी गर्भ बडवा जिय चया ।।
हस्ती भूपति का गजराय । बहुत दिवस तिहां गए बिहाय ।।२०९५।।
जुध समै लागे बहु घाव । छूटा प्राण संग्राम की ठांव ।।
धीमत पुत्र हमति घर जाइया । जोजन गंधा राणी व्याहिया ।।२०९६।।
अर सूदन पुत्र हस्ती का जीव । दिन दिन बढै सुभट की नींव ।।
जाति स्मरण उपज्या तिण वार । कमलमर्द पले तप सार ।।२०९७।।
सतार स्वर्ग पाइया विमाण । हस्ती जीव मदार वण आण ।।
भया मृग तीहां पूगी आव । उपज्या गरभ भीलन की ठाव ।।२०९८।।
कालंजर भील कहावै नांव । आखेटक करम सु राखै भाव ।।
मरि कर गया सरकरा भूमि । कठिन करम तिहां आया भूमि ।।२०९९।।
भ्रम्या जौनि चउरासी लाख । समकित कदेइ न मुखतैं भाष ।।
भ्रम संसार मनुष गति लही । तिहा आइ कछु आश्रम गही ।।२१००।।
मै अब आइ संबोध्या तोहि । असुभ करम का टूटा मोह ।।
करी तपस्या छोडे प्रांण । रत्नमाली नृप तू भया आन ।।२१०१।।
रत्नमाली अन सूरज रजै । दोउं करचा पाप का कजै ।।
तिलक सुन्दर मुनि पै तब आइ । दिक्षा लई मुगति कै भाइ ।।२१०२।।
सूरज रज महा सुक्र विमांण । उहां तैं चय दसरथ भया आण ।।
नंदघोष ग्रीवक तै चया । सरवभूति मुनिवर वे भया ।।२१०३।।
चय इक देव हुवा है जनक । रत्नमाली जीव भया है कनक ।।
इण विध सुण्यां सकल परजाइ । संसय मन तें गया बिलाय ।।२१०४।।

दूहा

सब परजाइ दसरथ सुण्यां, ज्यों ज्यों भमियां हंस ॥
पु'न्यवंत सब जग प्रगट, सबतै उत्तिम वंस ॥२१०५॥

चौपई

दशरथ का वापिस घर पर आना

राजा फिरि आयो घरमांहि । मंदिर गये भई तब सांझ ॥
सरद रितु सुहावणी घणी । आभूषन की सोभा घनी ॥२१०६॥
चंदन अगर सों अंगीठी भरी । बास मदक रही तिन खरी ॥
ऊनमई सेज्या पाटंवर सोडि । केसर भरे गीदवे तिण ठोर ॥२१०७॥
दुग्धपान के कीजे भोग । जो दुख भूलै देख असोग ॥
बिछे गिलम तिहां अति ही अनूप । तणे चंद्रवे सेज्या रूप ॥२१०८॥
उत्तम औषध खावै वणाइ । तिनले गुण वरनै नहीं जाइ ॥
असे सुखिया भुगतै सुख । दुखियां तणां सुणु' अब दुख ॥२१०९॥
फाटे बसतर लूषी देह । मैलो मन अर पाप सनेह ॥
काठा मन अनै पानी धपै । चौम होई धाम मे तपै ॥२११०॥
कठिन कठिन सों बीतै काल । पाप करम का एही हवाल ॥
जैसी करणी तैसी गति । जाणै ए संसारी थिति ॥२१११॥

दूहा

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समझि विचार ॥
सुपना का सा सुख ए, जाति न लागै बार ॥२११२॥

चौपई

वैराग्य भाव—रामचन्द्र को राज सौंपना

राजा मंत्री सब लये बुलाइ । अब हम दिक्षा लेस्यां जाइ ॥
रामचंद्र को सोंप्यों राज । प्रजा तणी वह राखै लाज ॥२११३॥
मंत्री रुदन करै तिण बार । राणी रोवैं महल मझार ॥
भरत विचार करैं जांहि । सोचै बहुतिहां अै दुखदाहि ॥२११४॥
अधम पुन्य तै अब मैं तरघा । मोकू' नांही राजा करघा ॥
अब मैं दिक्षा लेस्यु' पिता संग । जों नहीं हुवै मेरा मान भंग ॥२११५॥
कैकेयी पुत्र देख्यो विरकत्त । राजा वर माण्यो तब चित्त ॥
गई भूप पासै तिण बार । सकल सभा कीयो नमस्कार ॥२११६॥

कैकयी का दशरथ के पास आना एवं अपने वर मांगना

अर्द्ध स्यंघासण दियो नरेस । हाथ जोडि बोले भुवनेस ।।
मोकु वर दीनां तुम क्या किया । अब मोकूं दीजे करि दया ।।२११७।।
तुम सम दाता कोई नहीं । जुग जुग की तरहै तुम मही ।।
बोलें राय सुणों कैंकिया । अब हम चाहैं दिष्या लिया ।।२११८।।
जो कछु वस्तु भली मो पासि । मांगि बेग ल्यो पुरौं आस ।।
रांणी नयण भरें बहू नीर । व्याप्या कंत बिछोहा पीर ।।२११९।।
नीची देखें धरती खणें । बढी बेर पीछें मुख भणें ।।
भरत लेण कहत है जोग । मैं किम सहस्यौं पुत्र विजोग ।।२१२०।।
अब जो भरत नैं द्यो राज । तो अब रहै हमारी लाज ।।

दशरथ द्वारा विचार

राजा दशरथ करैं विचार । कठिन वस्तु तैं मांगी नारि ।।२१२१।।
रामचंद्र सुत महा पवित्र । लक्षमरण मेरै महा विचित्र ।।
भरत राज पावै किण हाथ । हारयो वचन त्रिया कै हाथ ।।२१२२।।
रामचन्द्र जे पावै राज । भरत करै दिक्ष्या का काज ।।
मरै कैकेयी पुत्र विजोग । मोकूं बुरा कहैं सब लोग ।।२१२३।।
रामचंद्र हरि लियो बुलाय । सब विरतांत कहै समझाय ।।
कैकेयी नें मैं कह्यो वर दैंन । बल करि कियो राज सब लैंन २१२४।।
जों मैं वाच कुवाच अब करू । पृथ्वी मांहि अपजस सिर धरू ।।
भरत लेय जो दिक्ष्या जाय । तो कैकयी मरै हलाहल खाय ।।२१२५।।
मोकूं होइ घणी अपलोक । यो मुझ अधिक व्याप्यो सोक ।।
भरत राज देहु संसार । रामचन्द्र बोले तिण वार ।।२१२६।।
मात पिता की आग्या सार । जाका वचण कुंण सके टार ।।
निज मंदिर चढि देखें भरत । दीक्षा की मन इच्छा धरत ।।२१२७।।
कब सो पिता निकलैं घर बार । ताके लेस्यु संजम भार ।।
बुलाया राय सभा के बीच । राय वचन ज्यौं अमृत सींच ।।२१२८।।

भरत को आमंत्रण

अजोध्या का तुम भुगतो राज । अब हम करैं धरम का काज ।।
विणवै भरत सुणों तुम तात । बडे राम लक्षमण हैं भ्रात ।।२१२९।।
इन हजूर किम बैठों पाट । कस्या नें ताणों मोसुं हाठ ।।
राज्य विभूल अरथ भंडार । जाणों सहु संसार असार ।।२१३०।।

पुत्र कालित्र सगा नहीं कोय । संपति तरणा विछोहा होय ॥
देही आदि कोई साथ न चलै । अब मैं फिर माया मे मिलै ॥२१३१॥

जो तुम दिक्षा समझी भली । मैं भी संयम ल्यु मन रली ॥
हमनै किम नाखो इह मांहि । राज भोग की इच्छा नांहि ॥२१३२॥

राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव

रामचन्द्र लक्ष्मण इम कहै । हमारै चित्त ग्रैसी क्यू रहै ॥
तुम बाल घर जोवन वेस । तुमकूं दियो पिता सब देस ॥२१३३॥

अजोध्या तणौं राज तुम करो । चउथं आश्रम दिक्षा धरो ॥
दोइ कर जोडि भरत इम कहै । तुमारी आग्या मैं सरदहै ॥२१५४॥

तुम प्रभुजी करि हो किस की सेव । मोकूं कहि समझावो भेव ॥
रामचद्र भरत सुं इम कहै । हम वन वेहड किनर रहै ॥२१३५॥

सेवा करि हैं कुरण की जाय । वन में बैठि जपं जिणराइ ॥
दशरथ के चरणन को नये । बिदा मांगि माता पै गये ॥२१३६॥

माता के पास जाना

राजा दसरथ भयचक्र भया । मुरछा खाइ धरणि गिर गया ॥
सब सेवग मिल थांभै देह । पुत्र बिछोहो व्याप्यो तेह ॥२१३७॥

माता सुणतै खाइ पछाड । बडी बार तन भई संभार ॥
माता कहै सुणुं रघुनाथ । हम कू भी ले चालो साथ ॥२१३८॥

भरत राज पिरथी का रहौ । तुम अपने घर बैठा रहौ ॥
रामचंद्र बोले सुरण मात । रवि आगै शशि की नही क्रान्ति ॥२१३९॥

राम का उत्तर

हम आगै किम रहउ राज । वह पट बैठा हम कूं लाज ॥
हम दक्षिण दिस करि है गौंन । बन बेहड़ तिहा नाही भौन ॥२१४०॥

तुमकूं किस विध लेकर जांहि । गैला में दुख कैसे साहि ॥
जब हम कहीं लहै विश्राम । तब तुमसौं मिलवे का काम ॥२१४१॥

सीता साथ लही तिणबार । वज्रावर्त्त धनुष संभार ॥
हम तुमकूं कहा देख्या कपूत । भरत नैं सौंपी राज विभूत ॥२१४२॥

लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना

पिता न समझा धरम की चाल । हम कूं दीया देस निकाल ॥
त्रिया चरित्र सूं भूल्या राय । लक्ष्मण लीं तब भौंह चढाय ॥२१४३॥

धरती उठाऊं वक्राकार । भरत माहिं बल कहा अपार ।।
नगरि मांहित देहु निकाल । राज देहु रामचंद्रणैं इण बार ।।२१४४।।

बहुरियांन लक्ष्मण मन भयो । क्रोध लहर सब ही मिट गयो ।।
पिता आग्या किम टारी जाय । हमकूं भव भव करम बंधाय ।।२१४५।।

राम बनवास

राम मांहि मोतैं बल अति । उणां न आंणी अपनै चित्त ।।
तातैं कहि हैं ए वर्णं । पिता तणी आग्या नहीं हर्णैं ।।२१४६।।

आगै राम अनै पाछै सिया । लक्ष्मण ताकैं पाछै किया ।।
श्री जिन चैत्यालय जाय । विध सेती वंदे जिन राय ।।२१४७।।

सकल कुटुंब नगर का लोग । पाछैं लागि चले मन सोग ।।
राजा दशरथ भरथ सत्रुघन । सब रणवास भयो सब सून ।।२१४८।।

गोहनतैं बिदा कर दिये । वे तीनूं तबैं वन मां गए ।।
रोवैं स्वर्ग लोक के देव । सबै पृथ्वी अरण पायो भेव ।।२१४९।।

लोग कहै चलिस्यां सग राम । बन खंड में कैसें बिसराम ।।
सूरज देख दुख का भाव । जाइ छिप्यो अस्ताचल ठाम ।।२१५०।।

पंछी रुदन करैं चढ रूख । जलहर गए सकल जल सूख ।।
भई रयण जिण मंदिर जाइ । नमस्कार करि बैठा ताइ ।।२१५१।।

भरत शत्रुघन पायो राज । दसरथ गयो दिष्या कैं काज ।।
राज बहुत भए बैराग्य । राज भोग सहु जन करि त्याग ।।२१५२।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत राज, राम लक्ष्मण बनवास, दशरथ दिक्षा, विधानकं

२८ वां विधानक

चौपई

वनवास की प्रथम रात्रि

रामचन्द्र लक्षमण अरु सिया । जिन मंदिर में आश्रम लिया ।।
भई रयण सोया कछु बार । अरध निस चाले धनुष संभार ।।२१५३।।

निकसे एक नगर के बीच । देखे मंदिर ऊंचे अरु नीच ।।
अपनी अपनी सेज्या ठौर । सोवैं लोग न सुणिबे सोर ।।२१५४।।

कांमी थके त्रिया गल लाग । केई सुरत करैं हैं जाग ।।
कई त्रिया मदन सिख गया । कोकिला पंडित जन किया ।।२१५५।।

केई हारे पडे बेसुध । केई मूरख महा कुबुधि ।।
केई कथा धरम की चलै । सुरणें भेद ग्रस्त्री सुख लहैं ।।२१५६।।

केई दुखी दलिद्री पडे । टूटी भुपडे कै तल गिरे ।।
कई पडे मांहि बाजार । कई पडे रहैं पइसारिनी सार ।।२१५७।।

चोर फिरैं पर धन हरैं । पाहरुवा का सबद सुरण डरैं ।।
देखे सकल नगर के चिह्न । दुखी सुखी देखे भिन्न भिन्न ।।२१५८।।

पुह फाटी उग्यो जब भान । बहु सावंत ग्रजोध्या ते ग्रांन ।।
मारग घेर रहें वे ग्राय । रामचंद्र जिह पंडे जाय ।।२१५९।।

राजाग्रों का ग्रनुगमन

छोडा रथ कौतिल कर लए । भूपति सकल पयादे भए ।।
सखिया भू मनि धरते पांव । चल्या न जाय थके तिरण पांव ।।२१६०।।

जोता निबहे पाछैं घने । कालिंद्री जमुना कूं हने ।।
उछलै लहर मच्छ बहु चलै । गडगडाट सों जल न हलै ।।२१६१।।

तबै सहू राजा विनती करैं । प्रभु हम कैसे पार उतरैं ।।
तुम तो प्रभुजी उतरो पार । हम कैसें पहुंचें निरधार ।।२१६२।।

सबको वापिस जाने को कहना

रामचन्द्र बोलैं सुणु लोग । तुम स्या मारै सहु विजोग ।।
हम तापस वन वेहड वास । करिहौ कहा हमारे पास ।।२१६३।।

तुम फिर जाउ घर ग्रापरणें । दिन पलटया मिलिवो ग्रापरणें ।।
रामचद्र सीता गहि बाह । पैरि गया तिहां तटनी थांहि ।।२१६४।।

बैठा एक रूंख तलि जाय । वारि खडा भूपति बिललाइ ।।
देखो ग्रसुभ करम का भाव । ग्रैसा क्या दुख व्याप्या ग्राय ।।२१६५।।

ग्रवर मनुष्य की कीजे कहा । राम सरीखा इह दुख लहा ।।
हम फिर जांहि करैं कहा गेह । करि हां चिदानंद सो नेह ।।२१६६।।

सब मिल ग्रैसी चितबैं चित्त । इनुं जिन भवन करी जाइ थित्ति ।।
श्री जिन मंदिर उज्जल वरण । वृक्ष ग्रसोग दुख के हरण ।।२१६७।।
पूजा करी जिनेस्वर भगत । ऊचै चढि देख्या सब जगत ।।
ठांम ठांम देख्या देहुरे । रतन संभव मुनि तिहां तप करैं ।।२१६८।।

देइ प्रदिक्षणां पूछै धर्म । जती सरावग का सब मर्म ।।
पार उतरि ग्राये सब राय । सुण्यो धर्म तहा चित्त लगाय ।।२१६९।।

बहुत भूपति यां दिक्षा लई । धरम भेद सुणि निश्चय थई ।।
बहुतें श्रावक का व्रत लिया । दया धरम मांही चित्त दिया ।।२१७०।।
घणां फिर गया अजोध्यापुरी । भरत सूं मिले वीनती करी ।।
कही बात सगली समझाय । रुदन करें सुणि दुख अधिकाय ।।२१७१।।

दशरथ द्वारा रुदन एवं वैराग्य

दसरथ करैं करम व्यवहार । पुत्र वियोग भयो दुःख अपार ।।
कवण करम मैं खोटा किया । पुत्रा हैं देस निकाला दिया ।।२१७२।।
बहुरि समझिया मन में ग्यान । ग्रैसा मोह मे भया अयान ।।
कुण कुण भवका चितवो पुत्त । केई पुत्र कलित्र संजुत्त ।।२१७३।।
स्वरगां का सुख के के बार । देवलोक की भुगती नारि ।।
चिहुं गति का दुख सुख घणे । देह जीव सों प्रीत न बणें ।।२१७४।।
पुद्गल अणंत धरें सब जौंण । जीव सघाती कहिए कौंण ।।
पांच चोर हैं काया बीच । विष मय करें करम नित नीच ।।२१७५।।
विषय अभिलाष तैं बाढै दुख । विसहर डसते जैसा सुख ।।
पाछें हुवै प्राण का नास । अही समान इन्द्री सुख जास ।।२१७६।।
मोह जेल बंधियो संसार । मूरख मगन हुवैं निरधार ।।
स्वारथ रूपी है जग सार । धरम एक जिय को आधार ।।२१७७।।
बारह अनुप्रेक्षा हुवैं चित्त । आतम ध्यान विचारें नित्त ।।
दसरथ मुनि ग्रैसा तप करें । चिदानंद लिव चित मैं धरें ।।२१७८।।
अपराजिता रोवै दिन रात । कैकई सोग करै बहु भांति ।।
भरत करै माता का सोच । कहै चल देखुं माता मन सोच ।।२१७९।।

भरत का राम के पास जाना

उनकूं आनि बिठाऊ राज । उन आगैं मैं साधूं काज ।।
भरत सत्रुघ्न अस्व पलाण । बहुत संग लीया राजान ।।२१८०।।
पहुंचे कालिंदी पर जाय । गये पार बैठा तट ठांइ ।।
ह्वां तै मारग पूछत चले । छठे दिवस राम कूं मिले ।।२१८१।।
उतर दूर थी करें डंडोत । विनती तिनसों करें बहुत ।।
रोवें सत्रुघन भरत और । रामचंद्र बोलें तिण ठौर ।।२१८२।।
भरत बीनवै द्वै कर जोडि । तुम प्रभू हो त्रिभुवन सिर मौर ।।
मैंवर बोझ चलै किम वहल । हमसूं राज चलै नहीं छयल ।।२१८३।।

तुम राजिन लक्ष्मरण परधांन । तुम प्रभु हम छत्र उठावन वांन ॥
सत्रुघन ढारैंगा चमर । तुम पर बैठि बांधै कमर ॥२१८४॥

कैकयी का आगमन

पाछै आई कैकई माइ । राम लखण उठि लागे पांय ॥
रुदन करै समझावै बात । तुम बिन दुख पावां दिन रात ॥२१८५॥
अजोध्या चालि राज तुम करौं । मेरी चूक न जित मैं धरौ ॥
लघु भाई सेवैगा चरण । तुम त्रिभुवन के तारण तरण ॥२१८६॥
रामचंद्र बोले सुरग मात । हमकुं वनवास दिया है तात ॥
पिता आग्या किम कीने भग । हम तपसी भेष है सुख अग ॥२१८७॥
भरत सत्रुघ्न हम दीया राज निरभय सारौ बंछित काज ॥
तुम सब बिदा अजोध्या किया । आपण उठि वन मारग लिया ॥२१८८॥
विद्युत मुनी अजोध्या बास । भरत सुनै जिन मत का पास ॥
अरहनाथ के मंदिर जाइ । तिहू काल जिन पूज रचाइ ॥२१८९॥
धरम मार्ग का कीजे काज । प्रजा सुखी भरथ के राज ॥

राम का उज्जयिनी जाना

मालव देस उजीरणी नयर । वन उपवन की देखत सैर ॥२१९०॥
गाय रु भैस चरै तिहा घणी । खेती हरियल सोभा वणी ॥
मनुष्य न दीसै किणही ठौर । नगर सोभै रमणीक सु और ॥२१९१॥
लक्ष्मण राम अचंभा करैं । इहां का लोक कहां है दुरै ॥
देखो परवत ऊपर जाय । सकल बात भाषो तुम आय ॥२१९२॥
लक्ष्मरण जाय परवत चढ्या । देख देहुरो अंतः सुख बढ्या ॥
नमस्कार करि तरु परि चढयो । मनुष्य एक तहा दृष्टि पड़यो ॥२१९३॥
ताहि देख मन सोचै माहि । ताको भेद न पाऊं जाहि ॥
कै इह मनुष्य कै उभौ ठूंठ । कैसे बिन समझ्या कहुं झूंठ ॥२१९४॥
इह कूं देखूं अपने नयन । तब मैं कहूं राम सौं बयन ॥
उतर रूंख सौ वाढिग चल्या । पैडा माहि वह आवत मिल्या ॥२१९५॥
लूषी देह कूबडी षेह । फाटे बसतर लागै छेह ॥
नंगे पांव दुषित अति रूप । ताहि साथ ले आए भूप ॥२१९६॥
रामचंद्र सीतां ढिग आरिण । बटोही नैं जाण्यौ देव समारिण ॥
कहै यह इन्द्र अथवा धरणेन्द्र । कै विद्याधर सूरज चन्द्र ॥२१९७॥

रामचन्द्र ता करुणा करी । तू कहा चाल्यो किण नवरी ।।

सिंघोदर मिलन

देस मालवो नगर उज्जैण । करै राज सिंघोदर सैण ।।२१९८।।

दसापुर नगर थकी हू ं चल्यौ । बज्रकिरण समदृष्टी भलौ ।।
रामचंद्र पूछैं फिर बात । उण समकित पायो किण भाति ।।२१९९।।

पंथी भणै राय विरतांत । दशारण वन ग्रहैडे जात ।।
इह बन छोडि किण कारण गया । प्रीतदरसन मुनि दरसन भया ।।२२००।।

ग्रीष्म रितु पर्वत बहु तपै । ध्यानारूढ तहां भगवन जपै ।।
राजा मुनि नै पूछै ग्राइ । काया कष्ट सहो किण भाइ ।।२२०१।।

मनुष जनम कै लाहा लेइ । तप करि बाद जलावै देहि ।।
ग्रात्मा कु ं कही दीजे दुख । पंचइंद्री का भुगतो सुख ।।२२०२।।

भोजन कारण घर घर फिरो । निरस सरस ग्रहारइ करो ।।
ग्रातम दुख करो तुम बुरा । मनुष्य जनम दुर्लभ है खरा ।।२२०३।।

बोले मुनिवर भूपति सुणौ । मैं निज सुख कहां लग भणु ं ।।
राजा हंस करि पूछै बात । तपै सिला दुख पावै गात ।।२२०४।।

उडै धूल दुख सहै सरीर । भूख पियास परीसा पीड ।।
मुनिवर भणै सुणु ं भूपाल । इन्द्री विषय दुख का जाल ।।२२०५।।

सात नरक भुगतै इण साज । विषय सेव्या बिगरै सहु काज ।।
जे जीव विषय इन्द्री की करै । मान तजत कछु बार न धरै ।।२२०६।।

कारण मोह षिपै है जीव । भ्रमै संसार दुख की नीव ।।
राजा सुणि चरण कु ं नया । पाप प्राक्रम सगला मिट गया ।।२२०७।।

जती सरावग का सुणि धर्म । ग्रणौव्रत लीया सुभकर्म ।।
मुनि पै नेम लेई तिण बार । ग्ररिहंत बिन न करू ं नमस्कार ।।२२०८।।

गुरु निर्ग्रंथ ग्ररु शास्त्र जैन । इनकू ं सेऊं कर मन चैन ।।
राजा ग्राये ग्रपने गेह । दया धरम सु ं लाया नेह ।।२२०९।।
विषय बिना रहै नहीं घडी । श्री जिनवाणी हिरदै धरी ।।
प्रीतिवरधन मुनि मास उपास । निकल्या धरि भोजन की ग्रास ।।२२१०।।

बज्रकरण द्वारा पेषण किया । मुनिवर कू ं तब भोजन दिया ।।
बरखे रतन पुष्प तिण बार । मुनिवर जबै लीयो ग्राहार ।।२२११।।

राजा पासि रह्या उहै ग्राइ । नमसकार करै किण प्राय ।।
मुनिसुव्रत की प्रतिमा घडाइ । मुंदडी में थे बा लगाई ।।२२१२।।

नमस्कार प्रतिमा कूं करै । तुमारी काण न मनमें धरै ।।
लोक नें कछू समभत पडै । रधर बिन राजा सों कहै ।।२२१३।।

सिहोदर मन कोप्या राइ । राते नयन क्रोध के भाय ।।
बृहद गति बज्र किरण पं जाइ । सगली बात कही समझाइ ।।२२१४।।

सिंहोदर कोप्या है घणां । ताका जीव कूं चाहै हण्यां ।।
जे तुम भाग जाइ किण ठांम । तब तुम बचो तजो यह गाम ।।२२१५।।

पूछै तैं जाणी किण भांति । मोसूं कहि समझावो बात ।।
कुंदनपुर नगरी का नाम । समुद्र सिग वणिक तिण ठाम ।।२२१६।।

जमना नाम जाकै अस्तरी । दोइ पुत्र जनम्यां सुभ घडी ।।
विद्युत ज्वाल प्रथम सुत भया । वृहतगंत दूजा कूं थया । २२१७।।

मोकूं पिता द्रव्य बहु दिया । विणज हेत उज्जेणी गया ।।
कमला लता गणिका कूं देखि । मन अटक्यो ता रूप बिसेष ।।२२१८।।

अरथ खोयो सब दलिद्री भया । अति समझ चोरी चित दिया ।।
सिंहोदर मंदिर गणिका गई । श्रीधरी राणी को देखत भई ।।२२१९।।

कुंडल देखि चितवै तिण बार । अपणे कुंडल धरे उतार ।।
सखी सुं बोली वेस्या अस्त्री । मोकूं कुंडल लागें बुरी ।।२२२०।।

जैसे कुंडल है राणी कान । असे मोकूं दीजे आंन ।।
मैं सुण नृप मंदिर में गया । सिंहोदर सूं पूछै त्रिया ।।२२२१।।

किण कारण तुम दुचिते घणे । चिंता कवन तुम्हारे मनै ।।
वज्रकिरण मन दुविधा धरै । मेरी कांण नवै नहीं करै ।।२२२२।।

प्रतिमा नैं वह करै नमस्कार । मान भंग करै सभा मझारि ।।
मेरा अन्न खावै वह राय । मोसुं ऐसा करै दुराव ।।२२२३।।

वाकूं मारूं तो सुख लहूं । इह मतो मैं तो सूं कहूं ।।
ऊंचै चढि देखियो नरेस । घेरया उसनै तुम्हारा देस ।।२२२४।।
वज्रकिरण तब गढ मैं गया । कागुरै कागुरै बैठा सुरया ।।
पौलि किवाड मजबूत दिवाय । जुध निमित्त रूप बैठा राइ ।।२२२५।।

रंधरविसुत सिंहोदर का दूत । बज्र किरण पै आय पहुंत ।।
कहै क तूं प्रतिमा कू नवै । जती पाग्नि सुणि क्यूं निजदवै ।।२२२६।।

उनहै सुहावै असी रीत । सबकु चाहै किया अतीत ।।
तू काहे कूं खोवै जीव । राजा प्रतै न वावो ग्रीव ।।२२२७।।

बोले बज्रकिरण भूपति । राजरिध छोडूं सब मती ।।
धरम द्वार हमनें तुम देहु । दंपति आया निकाला लेहु ।।२२२८।।

मैं निस्चै छोडूंगा नाहि । राज भोग की अंछा नाहि ।।
दूत घर आया नृप पासि । वाकुं एक निरंजन पासि ।।२२२९।।

धरम द्वार की इछा ताहि । राज भोग की इछा नांहि ।।
सिहोदर फिरिया भूपति । सेना पड़ी सब घेरै धरती ।।२२३०।।

आस पास सब दिया उजाडि । तबतै भाजे हैं सब छांडि ।।
सुरगीत मतें मम आइया । इसकी खबर मैं अभी पाइया ।।२२३१।।

लागी अगनि जली झुंपडी । बली टूट अंग परि पडी ।।
हेम सांकली रत्न सों जडी । रामचंद्र दीनी तिण घडी ।।२२३२।।

परदेसी पहुंतो निज ठांम । भया सुखी जगत में नाम ।।
उहां तै चले असन निमित्त । दशांगपुर चैत्यालै करी थिति ।।२२३३।।

चन्द्रप्रभ की पूजा करी । लक्ष्मण सुं बोले तिस घडी ।।
नग्र मांहि सुं सीधा लाव । जिन सेती ज्युं भोजन खाय ।।२२३४।।

लक्ष्मण की बज्रकिरण से भेंट

सीतां त्रिषावती है घणी । दशागपुर तिहां गाढ अति बणी ।।
चहुंघां घेर रहै सामंत । लक्ष्मण ने जातां बरजंत ।।२२३५।।

धका धूम करि भीतर गया । गढ की पौलि खडा जिम भया ।।
बज्र किंवाड अटल तिहां दणे । सूर सुभट रखबाले घणे ।।२२३६।।

लक्ष्मण सूं पूछै तू कुणे । किहां तै किया तुमनै गौण ।।
कहेक हम परदेसी आय । अन्न हेत हम गढ मैं जात ।।२२३७।।

पोले दीनी खिडकी खोलि । बज्रकिरण आदर सों बोलि ।।
तुम किहां तै आवण किया । लक्षमण को आदर अति दिया ।।२२३८।।

बोले लक्षमण सुनो नरेस । अन इछा आये तुम देस ।।
पचामृत सूं थाल भराइ । लक्षमण आगे धरा मंगाय ।।२२३९।।

तब बोले लक्षमण कुमार । भाई भावज हैं जिण द्वार ।।
उन जीम्या बिन मैं किम खाउं । कहो तो तिस पास ले जाउं ।।२२४०।।

भोजन अन्न दियो भरि थाल । लक्षमण नैं बूझै भूपाल ।।
लक्षमण ले आयो जिण धांम । जिहां बैठा श्री सीताराम ।।२२४१।।

ऐसी आणी उत्तम वस्तु । राम कहैं लक्ष्मण नैं हस्त ।।
फासु जीमण आण्यां भला । बहुत सुगंध ता मांहि मिल्या ।।२२४२।।

करि प्रहार मन रहसे घणे । बज्रकिरण की ग्रस्तुति भणे ।।
धन्य यह सम्यक दृष्टि भूप । ग्रैसा भोजन दिया ग्रनूप ।।२२४३।।
सिंहोदर वाकूं देहै दुख । किस विध होवैं या कूं सुख ।।
हम तो खाया इसका धान । या का कारज करैं प्रमांन ।।२२४४।।

लक्ष्मण का सिंहोदर के पास आना

लक्षमण भेज्या सिंहोदर पास । पुण्य जीव का किम करैं नास ।।
वज्रावर्त्त धनुष ले हाथ । तरकस बांधि खडग ले साथ ।।२२४५।।
राय द्वार तैं उभा भया । पौलिय ग्रटक्या जांण न दीया ।।
कहै किमई हूं भरत का दूत । कहौ सिंहोदर स्यौं इह सूत ।।२२४६।।
राजा नै तब लिया बोलाइ । भरथ संदेसा कह्या समझाइ ।।
वज्रलोचन कहा किरी बिगाड । तै उसका दिया देस उजाड ।।२२४७।।
वह तो सेवै श्री जिनराज । तैं वाकूं भयवंता ग्राज ।।
वा को वेगि छोडि तू देई । इह ग्रपलोक मती तू लेह ।।२२४८।।
बोले राजा सुणि हो दूत । ग्रैसा कहा भर्त रजदूत ।।
ग्रापणी देस मनावो ग्रांण । ता पाछै हूं राखस्यौं कांण ।।२२४९।।
बज्रलोचन खावै मुझ धान । बहुरि भंग करै मम मांन ।।
वाकूं भला लगाऊं हाथ । ग्रैसी करै न काहू साथ ।।२२५०।।
जो याकूं मैं ग्रब द्यूं छोडि । तो बिगडै ग्रौर इ या होड ।।
बोले लक्षमण सुणुं नरेस । या कूं छोडि मांनि उपदेस । २२५१।।
राजा कहै सुण रे तू मूढ । वा संग तू का हुवै ग्रारूढ ।।
जैसा हुवै उसका मूल । ग्रैसा तेरा ह्वै है मूल ।।२२५२।।

लक्ष्मण ग्रौर सिंहोदर के मध्य झगडा

लक्षमण कहै ग्राया तुझ मरण । मानै नही भरथ की सरण ।।
कोप्यो भूप ग्रादि सब सभा । क्रोध सकल ही के मन धुवा ।।२२५३।।
कैई गदा गही तरवार । सगला ग्रावध लिये संभार ।।
लक्षमण कहै ढील क्यो करो । तुम में बल है तो वेगा लडौ ।।२२५४।।
ध्याय पडे सब ही सामंत । लक्षमण करै प्राण का ग्रंत ।।
जाहि गहै ता पटकैं भूमि । मारै मुंठी लातां घुंस ।।२२५५।।
मारि थपेड करैं संहार । सगली सेन्या दीनी मार ।।
राजा देखि ग्रचंभा करै । एक पुरुष ग्रैसा बल धरै ।।२२५६।।

राजा धाइ पड्या तिरण बार । बोलै सब्द मार ही मार ।।
कोई निकट आई नहीं सकै । जा पकडै ता मारै धकै ।।२२५७।।

तोड्या रथ अर छत्र नीसांण । बज्रकरण देखै राजान ।।
इह तो कोई हितू हमार । सब दुर्जन कीने संहार ।।२२५८।।

सिंहोदर के धाए सुभट्ट । गदा खडग से किया संघट्ट ।।
गोला सर वरषै ज्यौं मेह । पु'निवंत कै लगै न देह ।।२२५९।।

बज्रावर्त्त लक्षमरण संभार । सगला दिया मारि कर छार ।।
मारै खडग विजली सी घात । दारुरण जुध भया बहु भांति ।।२२६०।।

देखै लोग अचंभै होइ । इन्द्र कहै धरणेन्द्र है कोई ।।
कै विद्याधर कै इह देव । सिंहोदर सोचै मन एव ।।२२६१।।

सिंहोदर को लक्ष्मण द्वारा बांधना

लक्ष्मरण तबै दुपट्टारोड । सिंहोदर नें बांध्या दोड ।।
मारै लात धमु'के घरणे । रांण्यां उसकी विनती भरणे ।।२२६२।।

मोहि भीख दीजिये भरतार । तू दूजा मेरैं करतार ।।
लक्ष्मरण कहै रघु पासि ले जाहु । जे वे करैं दया का भाव ।।२२६३।।

तो मैं छोडु' या कौ न्याइ । ल्याये रामचन्द्र की ठांइ ।।
चंद्रप्रभु की पूजा करी । रामतरणी अस्तुति चित धरी ।।२२६४।।
वज्रकररण सेती रघु कहै । मांगि वेग जो इच्छा वहै ।।
बज्रकरण कहै मांगू एह । सिंहोदर ने छोडि तू देइ ।।२२६५।।

राज्य का बटवारा

धन्य धन्य भाषैं सब लोग । अभयदान का दीया जोग ।।
सिंहोदर कु' दसागपुर दिया । उजेरणी का राज बज्रकरण किया ।।२२६६।।

बहुत राय दरसन कू' आय । तीनसैं कन्या भेट क्यौं ल्याइ ।।
रामचंद्र लक्षमरण कहैं बात । हम परदेसी फिरैं अमात ।।२२६७।।

वन में फिरैं तहां घर नांहि । कैसे इनस्यौं करैं विवाह ।।
बारह बरस फिरां बहु देस । ता पाछै समझिये नरेस ।।२२६८।।

राजा सकल वीनती करै । अब ए कन्यां किरण ने वरैं ।।
तुमकौं आरणी ए धरि भाव । कैसे दीजे औरै ठांव ।।२२६९।।

कन्या सकल रही मुरझाय । जैसे फूलमाल कुम्हलाइ ।।
रामचन्द्र जिरण थानक गए । आधी रात विदेसी भए ।।२२७०।।

मनमें कछु नहीं ग्रहमेव । सुमरत चले जिनेसुर देव ॥२२७१॥

दूहा

जिनवाणी निश्चै धरैं, दया करैं षट्काय ॥
दुरजन सकल चरणां नमैं, श्री जिन धरम सहाय ॥२२७२॥

पर उपगारी राम हरि, परदुख भंजन हार ॥
पर कारज सारण निमित्त, प्रगट्यो जस संसार ॥२२७३॥

इति श्री पद्मपुराणे वज्रकरण सिंहोदर विधानकं

२६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण और विद्याधर मिलन

रामचंद्र सीता तिसाया भया । नीर लेण कुं लक्ष्मण गया ॥
तहां सरोवर निरमल नीर । छाया सगम विहंगम तीर ॥२२७४॥

नेत्र तसकर विद्याधर भूप । विजयार्द्ध पति गणी अनूप ॥
क्रीडा देखन आयो तिहा । वन लीला सव निरखी जिहां ॥२२७५॥

देख्यो लक्ष्मण पैले पार । रूप कांति कर दिपै अपार ॥
बहुत लोक भेजे ता पास । मनमे उपज्या अधिक हुलास ॥२२७६॥

सेवग आइ करै नमस्कार । करैं वीनती बारंबार ॥
चलो प्रभु बुलावै तुम राय । तुम दरसन देख्यां को चाव ॥२२७७॥

लक्ष्मण विद्याधर ढिग गयौ । नेत्रतसकर अति आदर दियो ॥
लक्ष्मण उठि बीनती करैं । वैसाण्या सिंघासण परै ॥२२७८॥

पूछै आए तुम किण काज । कवण वस्तु वाछो तुम आज ॥
लक्ष्मण बोले सुणौं नरेस । आहार निमित्त आए इण देस ॥२२७९॥

रामचंद्र सीता जिण थान । मैं पहुंच्या पाणी कुं आंन ॥
नेत्रतसकर बोलिया तिंह बार । सलोदन तेडिया रसोईदार ॥२२८०॥

व्यजन भले सवारे भोग । हीरे पीले बहुत पयोग ॥
अवर पकवान संवारे घणे । उत्तम घी मीठा में बणे ॥२२८१॥

राम बुलाये तिहा नरिंद । सीता सहित अधिक आनंद ॥
नेत्र तसकर चरणन कूं नया । बहुत प्रकार महोत्सव किया ॥२२८२॥

सिंघासरण ऊंचे बैठाय । करें आरती सेवें पाय ।।
रतन जडित सोने के चौक । करैं उबटरण मूले सोक ।।२२८३।।

करि सनांन फिर भोजन खाइ । बिदा होइ आगे कूं जाइ ।।
वनमे देखी सुभट मंडली । मारग की रोकी तिहां गली ।।२२८४।।

ए धसि करि तिहू आगे गये । कंचुकी देखि अचंभे भए ।।
देखी कन्या बहुत स्वरूप । वा समांन कोई नहीं चुप ।।२२८५।।

सामुद्रिक की सोभावरणी । अन्य कहां लग वरणैं गुणी ।।

लक्ष्मरण द्वारा प्रश्न

लक्ष्मरण तिस कूं पूछे बात । बालखिल्य नृप मेरो तात ।।२२८६।।
पृथ्वीदेवी कूंखि हू भई । कुबड नम्र महा सुख मई ।।
धरम राज मैं बीतै घडी । दुरजन दुष्ट सेती थरहरी ।।२२८७।।

राजा मलेच्छ है रुद्रभूत । चढि आए सेना संयुक्त ।।
पिता मेरे से किया जुध । बांधि ले गया करि बल बुध ।।२२८८।।

पृथ्वी देवी कारण कंत । निसदिन रुदन करै बहुमंत ।।
बसुधा मत्री निमती बुझिया । कहि होंणहार सूजिया ।।२२८९।।

राणी जब बालक नैं जरणैं । स्मे तो सब दुर्जन कूं हरणैं ।।
बहुरि राज नगरी को करैं । दुरजन तिस के पावां पडैं ।।२२९०।।

कल्याण माला हूं पुत्री जरणी । निमित्त ज्ञानी नैं ग्रैसी भरणी ।।
कन्या एक पुरुष के भेस । वनमें रहै नित्य विसेष ।।२२९१।।

दोई पुरुष को दरसरण लहै । ताहि देख दुख कोई न रहै ।।
सिंहोदर नृप को मैं दई । या कारण मैं वनमें रही ।।२२९२।।

सेन्यां मो पडी घेर चिहुं पास । कुंचुकी निकट मोहि इह आस ।।
मै तुम दरसन पायो आज । हूवा मनवांछित मम काज ।।२२९३।।

एक अचंभा मो मन घणां । जो मैं पुत्र होता गुण गणा ।।
तो नगरी का होता साज । पुत्री कैसे पावै राज ।।२२९४।।

रामचन्द्र इह आग्या दई । यांही भेष रहो तुम थई ।।
तीन दिवस रहिगौ वन मांहि । आधीरात छोडि तिहां जाइ ।।२२९५।।

कन्या जागि कहै बिललाइ । में सोय गई वे उठ गये आय ।।
मेकला नंदी उत्तर वन गए । करकारण वन देखत भए ।।२२९६।।

वामैं वृक्ष वेर के काग । देख्यरण पेड नारियल लाग ।।
सीता तबै विचारघा सौंन । हंसी जुध दो घडी मैं पौन ।।२२९७।।

अंत जीत कै ह्वंगी भली । रामचंद्र तब चाले टली ।।
असुभ सौण की छोडि वधाइ । वन ही वन निकसे रघुराइ ।।२२९८।।

रुद्रभूत राजा से युद्ध

रुद्रभूत राजा तिण ठांम । सेना घणी क्रोध कै काम ।।
रामचन्द्र सै मांडया जुध । हारी सेन्यां भई असुध ।।२२९९।।

रुद्रभूत पग ल्याग्या आइ । रामचन्द्र का दरसण पाइ ।।
रामचन्द्र पूछै बिरतांत । उन भाषी पिछली सब बात ।।२३००।।

कौसंबी नगरी का नाम । अहित अगन विप्र तिण ठांम ।।
प्रतिसरजा ताकै नारि । रुद्रभुत पुत्र भई अवतार ।।२३०१।।

सात विसण का सेवणहार । तसकराइ करत घेरया कोटवाल ।।
थिस्वानल राय पास ले गया । नृप तब उस पर कोपिया ।।२३०२।।

कहक इसकू सूली देइ । किकर उस गह्या बहुत दुख देइ ।।
सेठ एक नृप आगै जाइ । विप्र जाणि कै दिया छुडाइ ।।२३०३।।

उहां तै में आइया इह देस । काकोनद मलेछ पै भया नरेस ।।

बालखिल्य को मुक्त करना

रामचद्र इम आग्या दई । बालषिल्य नैं छांडो सही ।।२३०४।।

मलेच्छराय ने दीया छोड । सेवा करी दोय कर जोड ।।
सभा सहित कुबडपुर आइ । करी वधाइ बालषिल राइ ।।२३०५।।

सिंहोदर बज्रकिरण भी मिले । रुद्रदत्त बिदा कर चले ।।
इनका दुख कीया सब दूर । बालषिल सुख लह्या भरपूर ।।२३०६।।

दूहा

रामचद्र अति ही बली, लक्ष्मण भी बलवंत ।।
परकाज के कारणं, करै उपाव अनन्त ।।२३०७।।

इति श्री पद्मपुराणे बालखिल्य विमोचन विधानकं
३० वां विधानक

अडिल्ल

वन भ्रमण

रामचन्द्र लक्ष्मण कुमारै साथै सियां ।
आधीरातनि षंड गमण तहा तैं किया ।।
त्रिदस वन सुप्रसन्न नदी परवाहनी ।
तरवर अशोक सघन वन शोभा बनी ।।२३०८।।

चौपई

सीता की प्यास बुझाना

पंथीयातणां सुहावैं बोल । छाया सीतल बेल तंबोल ।।
उत्तरमस्तोही बन गए । महाभयानक देखत भए ।।२३०९।।
सीतानें लागी तिस घणी । पडै धूप बहुतै अणमणी ।।
कहि नकट न देखीए नीर । लागी त्रिषा अनंत अधीर ।।२३१०।।
ऊंचे चढि देख्यो कोई ठाम । उहां तैं देख्यो अरन इक गांम ।।
कपिल बिप्र बसै तिस ठोर । अगनिहोत्री अरु ठाढी पोल ।।२३११।।
यहां ते गए ब्राह्मण घर एह । करुणावंत बरम की देह ।।
देख प्रदेसी दया ऊपजी । सीतल नीर झारी भरि लई ।।२३१२।।
पाणी पीय लिया विश्राम । कपिल ब्राह्मण आयो ताम ।।
वडी पोट कांधा परि लियां । लकडी का बोझा सिर किया ।।२३१३।।
अंगोछा मस्तक परि लपेट । मैली धोती बांधी देह ।।
बांध जनेऊ तिलक ललाट । जाणैं होम क्रिया इह बाट ।।२३१४।।

विप्र द्वारा क्रोध करना

देह कूबडी चपटी नाक । अति कुरूप रही तसु आंख ।।
देखि विदेसी घर के पास । क्रोध वचन मुख बोल्या तास ।।२३१५।।
मीट चढाइ मुखस्यौ बोलै वरडाई । कुवचन कही त्रिया ने जाई ।।
देसी क्यूं बैठण दीये । लाज नही कछु इनके हिये ।।२३१६ ।
पौल पौल फडता फिरई पडैं । असे इनको जक नहीं पडै ।।
ए उठि चलेइ देखैं सब लोग । बहुत भीड दरसन के जोग ।।२३१७।।
कपिल विप्र लोगां सौं कहै । ए निलज्ज ऐसे ही रहैं ।।
कहा इनका दरसन तुम करौ । मूढ लोग तब बोलैं बुरो ।।२३१८।।
लक्ष्मण कोपि कपिल द्विज गह्या । फिर फिराय पटकन कूं चह्या ।।
रामचंद चित करुणा आइ । कपिल विप्र कूं दिया छुडाइ ।।२३१९।।

दया के पात्र

हरि नै समझावै रघुनाथ । इस पर कहा उठावो हाथ ।।
जती संन्यासी विप्र अतीव । बाल वृद्ध नारी पसु जीव ।।२३२०।।
पसु अपाहज मत मारो भूल । इनकी हत्या है अघ मूल ।।
आपते सबल ता ऊपर चोट । परजा जीव दया की ओट ।।२३२१।।
लक्षमण दया चित्त में धरी । धन्य साध जे रहैं वन पुरी ।।
पापी किरपण जे अग्यांन । उनकौं कह्यौ न षाणुं पांन ।।२३२२।।

बस्ती में जाने का त्याग

अब हम चलि वनवासा लेइ । बसती में फिर पांव न देह ।।
वनफल बीण करै आहार । किस किस की सुणि मांडै राडि ।।२३२३।।

बसती तजि आये वनवास । अंधकार निसवासर सास ।।
वरखा रितु घणहर चहुं ओर । काली घट सोमै चिहुं ओर ।।२३२४।।

रवि की किरण छाइ घण लई । सर्ब पृथ्वी अंधियारी भई ।।
वरखै मेह मूसलाधार । चमकै दामिन चारूं बार ।।२३२५।।

लक्षमण राम दुचिते घणे । छाया बिणा रहबो किम बणे ।।
दृष्टि पसार देखि चिहूंपास । मंदिर देखे चित्त उल्हास ।।२३२६।।

राम लक्षमण का मन्दिर में विश्राम करना

मदिर मे बैठा तब जाई । कपडे निचोड करि दिये सुखाइ ।।
भई रयण पोढ़े तिण ठाम । इतरकरण देव का नाम ।।२३२७।।

डरणें देखि ततक्षण भजि गया । विनाषुक प्रतै संदेसा दियां ।।
दोइ विदेसी अस्त्री एक । मेरे थांन रह्या कर टेक ।।२३२८।।

देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना

देवता बोल्यो अवधि बिचार । ए बलिभद्र नारायण अवतार ।।
ए आये है मेरे देस । सेव करूं हू सेवग भेम ।।२३२९।।

नगर सवारचा मिंदर भला । रत्न खचित सुवर्ण निरमला ।।
वाही जागई सेज्या सवार । गिलम चद्रवा वांदरवाल ।।२३३०।।

देव पुनीत आभूषण घणे । पाणी अन्न मौज सब बणे ।।
हाथी घोडा रथ पालकी । बसती बनी नई राम की ।।२३३१।।

लक्षमण राम उठे परभात । सीता जागी बीती रात ।।
गधर्व जात के गावै देव । बहुत प्रकार करी सुर सेव ।।२३३२।।

राम लक्षमण तब करै बिचार । या वन मैं तो थी ऊजाड ।।
किस प्रकार ए भई विभूति । तब यह वनसुर आय पहुत ।।२३३३।।

करि डंडोत वीनती करै । वसो राज हम सेवा करै ।।
बैठि झरोखे भुगतो सुख । नगर देख भूले सब दुख ।।२३३४।।

कपिल ब्राह्मण की चिंता

कपिल बिप्र सिर लकडी भार । बन तें काठि आंए तिण बार ।।
शिषा माहि देखै है नगरी । कंचन मंदिर रतन सूं जडी ।।२३३५।।

तब द्विज मनमें अचरज धरै । इहां तो थे बन बेहड घने ।।
किण प्रकार इहां हुवा नगर । राति वी चालै वणीयो सगल ।।२३३६।।

कै इह सुपने हैं परतक्ष । कै ममता माया है को जक्ष ।।
ऐसे सोच करै था खडा । मिल पणिहारी भरि सिर घडा ।।२३३७।।

पूछै ताहि इह नगरी कौण । कहै पणिहारी रामपुर भौन ।।
इह तो बसी धरम की पुरी । देव सगति इह माया करी ।।२३३८।।

पौलीदार रखवाले धरै । पापी दुष्ट नै परहा करै ।।
धरमी हुवै सो दरसण लहै । देखी माणस दूरै रहैं ।।२३३९।।

पूछै विप्र मैं किण विध जाऊं । पणिहारी कहै ले श्री जिण नामु ।।
मुणि पै सुण्या धरम का भेद । तातैं हुम्रा पाप का विछेद ।।२३४०।।

धर्मोपदेश सुनना

चरित्र सुर मुनि पासैं जाइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ।।
सुणि जिणधरम अणुव्रत लिया । धर्म लेस्या मांहि चित दिया ।।२३४१।।

राम लखण का दरसण पाइ । कपिल विप्र ने लिया बुलाइ ।।
बहुत विभव विप्र कुं दई । मनमें कछुवन आणी नहीं ।।२३४२।।

दूहा

जैन धरम पालै सदा, दया करै बहु भाय ।।
नवनिधि पावै जगत में, बहुरि मुक्ति में जाय ।।२३४३।।

इति श्री पद्मपुराणे कपिल जैनधर्म व्याख्यान श्रवण विधानकं

३१ वां विधानक

चौपई

चातुर्मास के पश्चात् गमन

सुख में इहां बीतो चउमास । बहुरि फिर निकले बनबास ।।
विनायक पति जोडे हाथ । नमस्कार करि नमायो मांथ ।।२३४४।।

जै सेवा मुझ से भई हीन । षिमां कीज्यो विनवुं आधीन ।।
बिन उपदेश कियो इह काज । क्रिया करो सेवग परि आज ।।२३४५।।

रामचंद्र लक्ष्मण कहै बैन । तेरा नगर में पायो चैन ।।
तैं बहु कीनी सेवा भगति । तेरा सुजस भया सब जगति ।।२३४६।।

हम तुमकुं सकुचाया आय । तुम जस महिमा कहिय न जाय ।।
इनका मोह देव बहु किया । मोती हार आन कर दिया ।।२३४७।।

कुंडल दिया सिया कूं आंण । ताकी जोति रवि किरण समान ।।
नगर छोड वन मारग गह्या । नए बसे थे ते घर रह्या ।।२३४८।।

माया रूपी खिरी विभूत । लोग उदास भए तब बहुत ।।

विजय वन में गमन

वन ही वन मारग कूं चले । विजय हरि के वन में नीकले ।।२३४९।।

पृथ्वीधर थे तहा भूपति । इंद्राणी राणी उज्ज्वल मती ।।
वनमाला जाकैं पुत्तरी । रूप लक्षण गुण सोभैं खरी ।।२३५० ।

कन्या भई विवाहण जोग । निमित्तग्यांनी इम कह्या नियोग ।।
लक्ष्मण की पटराणी होंइ । दसरथ दिक्षा लई इण सोइ । २३५१।।

लक्ष्मण राम गये वनवास । भरत सत्रुघन करैं विलास ।।
लक्ष्मण कूं अब पावै कहां । कन्या व्याह दीजिये जिहां ।।२३५२।।

सकल कुटंब रहसि मन करैं । कन्या बहु सुख मनमे धरैं ।।
राजा सुणी अजोध्या बात । दसरथ दिक्षा लई इण भाति ।।२३५३।।

वनमाला का लक्ष्मण पर आसक्त होना

वनमाला कहै लक्ष्मण बिन और । मेरे पिता भ्रात की ठौर ।।
लक्ष्मण कूं सुमरै दिनरात । इण भव मेरे अन्य न बात ।।२३५४।।

सांझ पडयां देवी की जात । वनमाला आज्ञा लहि तात ।।
कहै कहूं फांसी ले मरूं । कंत बिना कैसे दिन भरूं ।।२३५५।।

छांडि ऊढणा तरु सूं बांधि । गल में मेल्यो चाहै फांधि ।।
लक्ष्मण ने आई सुभ गंध । देखण गया ते सनबंध ।।२३३६।।

वाहि देखि तरु हेठैं छिप्या । वनमाला लक्ष्मण गुण जप्या ।
वनदेवी सुं विनती करैं । जे लक्ष्मण मो कूं अब वरैं ।।२३५७।।

तेरा मंढ चुणाउं देव । पूजा करूं बहुत विध सेव ।।
गल में चाहै फांसी लिया । इस भव मेरैं लक्ष्मण हिया ।।२३५८।।

अगलै जनम होई जियो मेल । अैसें करैं वह कन्या खेल ।।

लक्ष्मण का प्रकट होना

तबै प्रगटया लक्ष्मणां कुमार । तू अपघात करै किम नारि ।।२३५९।।
मैं हूं लक्ष्मन तू रख मन ठाव । नै पताजे तौ रथ ढिग आव ।।
इतनी सुणि ऊढणी लइ खोलि । ऊभल केरिकै बोलै बोल ।।२३६०।।

राम का लक्ष्मण के लिये में पूछताछ

रामचंद्र जाग्या अधरात । तिहां न देख्या लक्ष्मण कुमार ।।
सीतां सूं पूछी कित गया । ता समय इम बोली सिया ।।२३६१।।
पुकारो तुम आवेंगा दोडि । रामचंद्र करें सोरा सोरि ।।
रामचंद्र पूछें हसि बाल । कैसे समझे तुम बिरतांत ।।२३६२।।
आसीरवाद तू ऊनै दिया । सांची बात कहो तुम सिया ।।

सीता द्वारा उत्तर

सीता कहै अरध निस गई । चंद्रप्रकास उजैली भई ।।२३६३।।
वाही घडी लक्ष्मण वनमाला । दोऊं आये रूप रसाला ।।
जैसे रयण चन्द्र की प्रीत । अैसे सदा आनन्द की रीत ।।२३६४।।
रामचन्द्र ढिग लक्ष्मण बैठि । वनमाला सीता कैं हेठ ।।
चारूं वारता कथा कहै । सब सुख सुहावणां लहैं ।।२३६५।।
सीतल चालै पवन सुवास । वनमाला पुंगी आस ।।

वनमाला की तलाश

दासी जागी देवी थान । कन्यां नैं रोवैं हैरान ।।२३६६।।
सूर सुभट बहु चौकीदार । तुरी पलाणां गहि हथियार ।।
केई पाला केई सुवार । निकसे सब कन्या की लार ।।२३६७।।
वनमाला देखी इस ठोर । सब सैन्या का हुवा सोर ।।
देख्या रूप राम लक्षणां । चंद्रसूरज का जोडा बन्या ।।२३६८।।
कै इह इन्द्र स्वर्ग तैं आइ । किसकी पटंतर न दीया जाय ।।
करि प्रणाम विनवैं बहु भांति । तुम हो कवण कहां तुम जात ।।२३६९।।
रामचंद्र यह लक्ष्मण वीर । सोहैं दोन्यु कनक सरीर ।।
कही प्रभू सब बात पाछली । सबलां कै उपजी मन रली ।।२३७०।।
जैं जै सबद करैं सब लोग । सबलां का भाज्या मन सोग ।।
राजा पासि खबर तब दई । रांणी सुनि आनंदित भई ।।२३७१।।
छाया नगर हाट बाजार । बरतैं उमही बर नार ।।
रामतणां सोहै अति रूप । भूपति दीनी भेट अनूप ।।२३७२।।
करि महोछव बाजा बजवाय । रहस रली सूं हुवा उछाह ।।
बैठि सिंहासन रामचंद्र । सकल प्रजा मन भयो आनन्द ।।२३७३।।

लक्षमण पृथ्वीधर नृप पास । करैं बधाई मन उल्लास ।।
महासुख में थयो विहांण । और बजैं आनंद नीसांण ।।२३७४।।

पूरव भव के पुण्य तैं, पायो सुख अनंत ।।
वनमाला रहसी घणी, देख्या लक्षमण कंत ।।२३७५।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्षमण पटरानी लाभ विधानकं

३२ वां बिधानक

चौपई

अतीवीर्य राजा द्वारा अयोध्या पर आक्रमण

श्री नंदनगर अतिवीरज राव । वायगत दूत प्रथीधर कनैं आय ।।
दिया पत्र राजा के हाथ । विमुच प्रधान पढी सहु बात ।।२३७६।।
विजय सार्दूल वज्रधर भूप । वेगरथ सिंहरथ जम के रूप ।।
आठसहस्र मंगल तसु डोर । हय गय रथ पायक नहीं ओर ।।२३७७।।
मिलेछ षंड का राजा घना । आरज खंड के जाय न गिण्यां ।।
वे सव आय एकठां भए । और बहुत आवैंगा नए ।।२३७८।।
चिठी देख चले ततकाल । अजोध्या मारि चहै भूपाल ।।
भरत सत्रुघन करैं ऊपरि दौड । दस क्षोहणी दल हुवा इक ठौर ।।२३७९।।
रामचंद्र तबं दूत नै कहैं । अतिवीर्य क्यों उपद्रव चहै ।।
कहा भरत तुम किया बिगार । हमसे कहो बात निरधार ।।२३८०।।

लडाई के कारण

बोले दूत भरत के वैन । अतिवीर्य बैठा सुख चैन ।।
सहज विचार कियो मनमाहि । भरत भेट मुझ भेजै नाहि ।।२३८१।।
सब राजा मानैं है आंण । भरत सत्रुघन करैं न कांण ।।

दूत द्वारा सन्देश

सुरत बुध्य तिहां भेज्या दूत । अजोध्या मांहि जाय पहुंत ।।२३८२।।
भरत सत्रुघन नैं कही जाय । अतिवीर्य सेवा करो आय ।।
कै तुम देस छोडि कै जाव । भला चाहो तौं मो संग आव ।।२३८३।।

सत्रुघ्न का उत्तर

जैसे पडया अगन में तेल । सोंवत सिंघ जगाया हेल ।।
कोपि सत्रुघ्न बोलै वाक्य । अतिवीर्य ढूंगो कहा वराक ।।२३८४।।
ताकी सेवा हम जो करैं । ऐसा कहा अपर बल धरै ।।
उन तो सूतो सिंघ जगायो । वह जीवत छूटै किण पायो ।।२३८५।।

अब वह बचैं हमतैं किए भांत । देखज ताहि लगाउं हाथ ।।

दूत का पुनः निवेदन

बोलै दूत कोप करि घणां । तुमतो हो बालक बुध्य विनां ।।२३८६।।
अतिवीरज है इन्द्र समान । सकल भूप मानैं तसु आंण ।।
पिता तणैं भोले मति मूल । किसकै भोलैं करत हो फूल ।।२३८७।।
बात कहै तां काहा तुम वित्त । बहुत गर्भ कहा करते हो चित्त ।।

उत्तर प्रत्युत्तर

सत्रुघन कहै अरे सुण दूत । वाकी करत है सराह बहुत ।।२३८८।।
जैसे गज रूई का फैल । तिणगा एक करैं कस खेह ।।
जैसें धरमाते वैसाख । लोटै भूके ल्यावें तन राख ।।२३८९।।
हस्ती की सरभर कहा करै । वह मूरखि जो हम तैं लडै ।।
वाकूं कहि तू वेग संभारि । मारूं मीड मिलाऊं छार ।।२३९०।।
दूत दिया धक्का दे काढि । दूत चल्या दत्ता मन बाढ ।।

युद्ध की तैयारी

भूप पास परकास्यो भेद । अतिवीर्य सुणि कीयो मन खेद ।।२३९१।।
देश विदेश के भूपति जोडि । जनक कनक राजा हैं और ।।
वज्रकरण सिंहोदर राय । अजोध्या तैं चाले हरि आइ ।।२३९२।।
अब वे तुम परि ढोवा करैं । तुमतो घर में निश्चल पडे ।।
अतिवीरज कोप्या तिण बार । बहुत भूपति नै लिए हंकार ।।२३९३।।
अतिवीरज सूं जनक तणौं सनबंध । सबही आण जुडे बलवंध ।।
राम लक्ष्मण कोप्या केहरी । दसौं दिसा कांपी भय धरी ।।२३९४।।
अतीवीर्य गर्भ मनमाहि । तब लगि नहीं देखै हरि छांह ।।
उनैं भरत सौं वांध्या बैर । अब वे हमकूं मारैं घेर ।।२३९५।।

पृथ्वीधर का निवेदन

पृथ्वीधर विनवैं कर जोडि । तुम दोई वीर कर हो भोड ।।
वाकै दल जुडिया अधिकाय । कैसैं जुध करोगे जाय ।।२३९६।।
हम कूं आग्या द्यो तुम आजि । अब ही करैं तुमारा काज ।।
बोलैं रामचन्द्र तब बली । पराये बल पूजैं नहीं रली ।।२३९७।।
आपणा बल तौं आवैं काम । पराया भरोसा करैं न राम ।।
रथपरि बैठि रामलक्ष्मणां । सीता ढिग सुख मानैं घणां ।।२३९८।।

प्रथ्वीधर के आठौं पूत । नंदनगर तें जाय पहुंत ।।
सीता कहे सुण हो रघुनाथ । किम वर्णं जुध अतिवीरज साथ ।।२३९९।।

वहैनथं दलबल अतिघणां । अतिवीरज किम जावै हणां ।।
वा का तो है अतिवीर नाम । बहुत राय आये उस ठांम ।।२४००।।

जैसा नाम तैसा पराकरम । अतिवीरज कैं मन आया धरम ।।

भरत शत्रुघ्न को आमंत्रण

भरत सत्रुघन लीया बुलाय । अपणे हेतु करो इकठाय ।।२४०१।।
तबै ईणसौं मांडो जुध । अपनै हिरदै विचारो बुध ।।
राम लखन मन हंसि कर इम कहैं । अनंत वीरज नाम वह लहै ।।२४०२।।

जे निरबल ते कहै अतिवीरज मांहरे आगैं हैं अनवीरज ।।
हम हैं अति ही गंडुवा । वाका भय तुम क्यौं क्या हुवा ।।२४०३।।

भरत सत्रुघन कुल प्रताप । या परि वह घाय हैं आप ।।
जे हम मानैं याकी संक । कैसे जीतेंगे गढ लंक ।।२४०४।।

जो बल नहीं आपणी भुजा । कहा आणि करि है नर दुजा ।।

भरत की सेना

भरत कैं मैंगल सात सै भोर । चौंसठ सहस्र अश्व हैं और ।।२४०५।।

वाकैं दस क्षोहणी दल जुड्या । इस सेती जावै किम लड्या ।।
जे हमपैं जीत्या नहीं जाइ । भरत सत्रुघन करि हैं कहा आय ।।२४०६।।

जो हम कबहू सुणते नांहि । भरत दूत मारया था जाहि ।।
अतिवीरज सेती जो होती राड । इह उनकौं हणता तिण बार ।।२४०७।।
रघुवंसीया न ह्वंती लाज । अजोध्या तणौं बूझता राज ।।
हम रावल की जाणी नही सार । वाको डारै अब ही मार ।।२४०८।।
औरां नै काहे कूं हतूं । मारे चाहो सो करु मतो ।।
जब लग दिवस आंथवै नांहि । अबही चालि मारिये जाय ।।२४०९।।
मतो विचारत हुं गई रात । तब ही समझैंगे परभात ।।
जिन मंदिर में बासा लिया । जिन प्रतिमा का दरसण किया ।।२४१०।।
बृद्धि धरम मुंनि कूं नमस्कार । पूजा रचनां बारंवार ।।

गणिका का नृत्य

गणिका अखाडै संजूत । करि आई नृत्य बहुत ।।२४११।।
बहुरि गई नृप के दरबार । देखण चले लोक हजार ।।
सकल कला पात्र गुणवंत । नृपकै आगैं गावैं बहुत ।।२४१२।।

बाजैं बीण मृदंग अर ताल । मृगलोचनी सोहै सुविसाल ॥
दंत नासिका बणे कपोल । मधुर बचन कोकिला बोल ॥२४१३॥

सुघर कलाई सोभैं हाथ । बेणी बणी भुयंगम साथ ॥
कुच अति कठिन उदर त्रिवली । स्याम केस की सोभा भली ॥२४१४॥

कदली जंघ चरण अति भले । गज गति चाल हंस की चलै ॥
वा रहै सोलह श्रृंगार । आई पात्र राज के दुवार ॥२४१५॥

ठाम ठाम आभूषण बणें । अति वीरज राजा तब सुणें ॥
सभा जोडि बैठो नरपति । गावैं गुण कोकिला अति ॥२४१६॥

नृत्य के भाव

नाचै पात्र दिखावै भाव । थेई थेई करतां देखै राव ॥
कबहु लटि छूटै अर खुलै । मानौं भौं नाग का चलै ॥२४१७॥

ज्यौं घटा मांहि दामिन उद्योत । सरब सरीर कंचन सी जोत ॥
कबहु उछलै तोडै तांन । मारैं खैंचि नैंन सर बांण ॥२४१८॥

सभा मोहि ताकरि पायो दांन । वस्त्र कनक लीया आसमांन ॥
नए गीत गावैं अपछरा । देखण कूं सुरपति मन टल्या ॥२४१९॥

भरत शत्रु जस गुण गावै । अतिवीरज कौं समझावै ॥
तेरा मंत्री बुधि हीण । ताकौं मति दीनी है षीण ॥२४२०॥

भरत शत्रुघन रजपूत । महाबली ज्यारूं अवधूत ॥
जे तुम चाहो अपनां त्राण । भरत भूप की मानूं आंण ॥२४२१॥

वह सूरज सम तुम हो चंद । रवि अग्रे कला अमंद ॥
ऐसी सुणि कोप्या मन राय । उठी सगली सभा रिसाइ ॥२४२२॥

राजा काढि खडग लियो हाथ । गणिका परि तक मारयो मांथ ॥
टूटी तरवार बची अपछरा । अपणैं मन कछु भय नहीं करया ॥२४२३॥

पातरी का उत्तर

पातर बोली सुणि हो नरिंद । भरत ध्यान तैं मो भया आनंद ॥
कटयो नहीं मेरो इकबाल । तेरा खडग टूटा मिटे जंजाल ॥२४२४॥

जबै भरथ आवैगा आप । होइ सहाइ भरत गुण जाप ॥
सुणि सब लोक अचंभै भया । सबै विचार उपाया गया ॥२४२५॥

मंत्री तब समझावै बैन । देहि सीख राजा नैं चैन ॥
भरत सुमरण तैं पातर बची । अपणैं मन तुम समझो अची ॥२४२६॥

भरत नैं चालि करौ नमस्कार । तो तुम जीव का होइ उबार ।।
राजा कहै कहां है भरत । ताकी हम आज्ञा सिर धरत । २४२७।।

राय कहैं गणिका सुणि बात । जे तुम चालो मुझ संघात ।।
तिहां आप बैठा श्री राम । लछमण सीता सों जिण धांम ।।२४२८।।

राजा श्री जिन मंदिर जाय । अष्ट द्रव्य सूं पूज रचाय ।।

सीता के दया भाव होना

धरम मुंनि को करि डंडोत । रामचंद्र पग नम्या बहुत ।।२४२६।।

सीता कै मन उपजी दया । लक्षमण स्यौं कही कीजिए मया ।।

अतिवीर्य को अभयदान

रामचंद्र लक्षमण कृपावंत । अतिवीरज सों बोलैं इण मंत ।।२४३०।।

करौ राज तुम निरभै जाइ । अयोध्यापति की आज्ञा पाइ ।।
बहुरि न करों भरत सु बैर । अवर देस दीनां तुझ फेर ।।२४३१।।

बोले अतिवीरज भूपाल । राज करत जे व्यापा काल ।।
मरि करि जीव नरक में पडै । ऐसे दुःख नीची गति भरै ।।२४३२।।

छह षंड तणौं पावै राज । माया अघ त्रिसनां विण काज ।।
अब मैं लह्यो धरम को मार्ग । अब तक रह्यो माया में लागि ।।२४३३।।

अतिवीर्य द्वारा वैराग्य लेना

तुम प्रसाद अब भयो सचेत । अब हूं करूं धरम सूं हेत ।।
केसरवक्र सुत नें दे राज । आपन कियो दिगंबर साज ।।२४३४।।

तीन रतन तेरह विध धरम । दशलक्षण ह्वै पालैं छह कर्म ।।
अवधिज्ञान मुनिवर कूं भया । जीव जंतु की पालै दया ।।२४३५।।

नासा दृष्टि आतमाध्यांन । धरम कथा का करैं बखांण ।।
सहै परीस्या वीस अरु दोई । देह मात्र परिग्रह होइ ।।२४३६।।

द्वादस प्रेष्या सु लाइ चित्त । दया भाव सगलां सौं नित्त ।।
जैसे पिता पुत्र सौं नेह । षट् काया सों पाले नेह ।।२४३७।।

दश लष्यण गुण चक्र संभार । भावै सोलह भावन सार ।।
आरत रौद्रध्यांन करि दूर । धरम सकल राखै भरिपूर ।।२४३८।।

भरत सत्रुघन सुणौं इह बात । उस पैं दिष्या पाले किस भांति ।।
अतिवीर्य मांहि अति क्रोध । उन पाया किसका प्रतिबोध ।।२४३६।।

भरत कहै इम बात समझाइ । सूरवीर व्रत पालैं न्याइ ।।
कायर पालैं किम चारित्र । पालैं दिष्या सकल पवित्र ।।२४४०।।

दूहा

जैन धरम दुर्लभ घणां, पालैं बडे कुलीन ।।
कायर पालैं केम तप, अग्यांनी मति हीण ।।२४४१।।
अतिबीरज अति ही बली, करी धर्म सों प्रीत ।।
राज रिधि सब छोड करि, भजै श्री अरिहंत ।।२४४२।।

इति श्री पद्मपुराणे अतिबीरज विधानकं
३३ वां विधानक

दूहा

विजय और अतिवीर्यजुत, रामचंद्र के भक्त ।।
पाया राज नंद नगर का, प्रगटया जस बहु जुक्त ।।२४४३।।

चौपई

विजय राजा का विचार

विजय असफंदन करै विचार । असी वस्तु कहा संसार ।।
राम लक्षमण नें दीजे भेट । असी कवण वस्तु शुभ होत ।।२४४४।।
रवि दा मात रितुमाला पुत्तरी । अति बीरज सुता रूप गुण भरी ।।
लक्ष्मण कूं दीनी तिह बार । बहुत बिनय कीनी मनुहार ।।२४४५।।
चल्या भरत फिर अजोध्या देस । मारग मैं मिल गयो नरेस ।।
विजय असफंदन चरण कुं नया । भरत ताकुं उठि कंठ ल्याइया ।।२४४६।।
कंदर्पमा सुता विजय सुंदरी । भरत निमित्त दीनी घडी ।।

अतिवीर्य को कठोर तपस्या

मांनगिर पर्वत ऊपरै आय । अतिबीरज बैठा मुनिराय ।।२४४७।।
करैं तपस्या मन बच काइ । ग्यांन लहर उपजै बहु आय ।।
तप कै तेज देही मैं जोति । मानु पुंन्य शशि उद्योत ।।२४४८।।
भरत शत्रुघन विजय असफंद । गए तिहां अतिवीर्य मुनींद ।।
उत्तर सिंघासण करैं प्रणाम । बहु परिवार, भया तिण ठाम ।।२४४९।।
पर्वत मारग महा कठिन । चढमये नृपति बहुत जतन ।।
मुंनि कूं देखि भयो आनंद । बंदे चरण कमल सुख कंद ।।२४५०।।
विनयवंत करि वैयावृत्य । धन्य साध पालैं जे चरित्र ।।
सुणे धरम सब पातिग गये । नमस्कार करि बहु विध नये ।।२४५१।।

आए अजोध्या भुगतैं राज । मनवांछित हुवा सब काज ।।
विजय असफंदन किया विदा । प्रीत रहैगी दहुंवां सदा ।।२४५२।।
पृथ्वीधर कह करो विवाह । राम कहैं हम तो वन जांह ।।
पूरण दिन होसी वनमांहि । तबै व्याह करणें की चाह ।।२४५३।।

वनमाला को छोडकर आगे बढना

वनमाला नैं लक्षमण कहै । बारह बरस वनमांही रहैं ।।
तुमनैं साथ ले कहां दें दुख । फिर आवैं तब होवै सुख ।।२४५४।।
तब वनमाला रोवै घणी । लक्षमण समझावै कामणी ।।
हम फिर आवेंगे तुम पास । करो मति मन चित्त उदास ।।२४५५।।
होवैं समकित बिन सूल । मिथ्यादृष्टी मिथ्या मैं भूल ।।
असा हम कुं जो होवै पाप । जे हम फिर आवैं नहीं आप ।।२४५६।।
आधी राति उठे दोड भ्रात । सीता ले चाले संघात ।।

सुलोचना नगर

सुलोचना नग्र के वन में गए । अन्न पाणी आंण भोजन किये ।।२४५७।।
जिनमारग ये निकसे आय । देखि रूप सब मोहित थाय ।।
ए अपने मन निर्भय चलैं । देखे देश गांम अति भले ।।२४५८।।
खेमांजलपुर आश्रम लिया । रामचंद्र लक्षमण तिय सिया ।।
देस देस के मानस देष । भांति भांति की बोली भेष ।।२४५९।।
रंग रंग के पर्वत घने । नामावली कहां लग गिणे ।।
एक मनुष्य कहे था बात । सत्रुद्रुम की कछु कही न जात ।।२४६०।।

जित पद्मा की प्रतिज्ञा

कनक भाजन की अस्त्री । जित पदमा वाकी पुत्री ।।
राजा पैं कीनी इक टेक । मेरे हाथ की बरछी सह एक ।।२४६१।।
वाकुं पुत्री देहुं विवाह । करहु मंगलाचार उछाह ।।
असा पृथ्वी पर है कोंण । मरण आपणां चाहै जोण ।।२४६२।।
जो कोई निज तज दे प्राण । कुण विवाहै असी जाण ।।
जीव करह्या तजै घरबार । जीव समान नहीं संसार ।।२४६३।।
जिह सौंना तैं तूटै कान । बाकौं पहरैं कौण सयान ।।
असी भणकरां मैंने सुणी । बाहिर बुला कर पूछी घणी ।।२४६४।।
लछमण राम अचंभा किया । देखैं इह राजा की घिया ।।
असा गुण वामैं है कहा । एता गर्व मनमैं है गहा ।।२४६५।।

लक्ष्मण का जितपद्मा के पास जाना

लक्ष्मण गया नगर के पार । ऊंचे घर जैसा कैलास ।।
फटिक समान ऊजले वर्ण । जिनमंदिर देखे दुख हर्ण ।।२४६६।।

लक्ष्मण पहूंता राज दुवार । पौल्या आय फिरया अडबार ।।
तुम हो कौण कवण कहां जाव । मो सों बात कहो सत भाव ।।२४६७।।

हम आए नृप दरश निमित्त । देखण कारण हुवा चित्त ।।
पोल्या कहै कुछ उभा रहो । मैं अब जाय राय नें कहों ।।२४६८।।

भूपति प्रतैं कही समझाय । रूपवंत कोई आयो राय ।।
तुम दर्शन कूं ऊभो द्वार । हुकम हुवै तो ल्यांउ हकार ।।२४६९।।

राजा पासि लाए बुलाय । लक्ष्मण राजसभा में जांय ।।
पूछै नरपति तुम हौ कोण । किह नगरी सौं कीया गौण ।।२४७०।।

लक्ष्मण कहै हम भरत के दास । इहै बात सुणौ परकास ।।
जितपदमा पुत्री तुम गेह । तुम हती बहुलां की देह ।।२४७१।।

जे प्रतिग्या है तुमारी सांच । तो तुम मुझ बरछी मारो पांच ।।
अचरज करै राय मन माहि । अैसा धीरज यामें काहि ।।२४७२।।

जो मैं घालूं इस पर घाव । अपजस चढै बुरा व्है नांम ।।

पद्मा द्वारा बरछी के वार करना

लक्ष्मण कहै कहा करै विचार । बेग पांच बरछी मोहि मार ।।२४७३।।

अगन प्रजलती एक चलाय । लक्ष्मण ग्रही बीच मां धाइ ।।
दूजी बरछी फैंकी बली । लक्ष्मण नैं पकडी मन रलीं ।।२४७४।।

लक्ष्मण की विजय होना

इण विध चूकी पांचु चोट । पुंन्यवंत धरम की ओट ।।
तब राजा लक्ष्मण कुं नया । जितपदमा दीनी निज धिया ।।२४७५।

लक्ष्मण कहै वन में मोहि भ्रात । सीताराम जगत विख्यात ।।
उनकी आग्या ले करों विवाह । मेरा वचन सुणौं नरनाह ।।२४७६।।

राजा राणी सहित राम के पास जाना

राजा राणी जितपदमा पुत्री । मंगलाचार गीत विध करी ।।
परियण सहित राम पैं चले । बाजा बहुत बजाये भले ।।२४७७।।

उडी धूल आलोप्यो भान । सीताराम विचारैं ग्यांन ।।
लक्ष्मण सूं कछु भया विरोध । ऊंचे चढि करि लेहुं सोधि ।।२४७८।।

देख्या रहस रली सूं लोग । आवत देख्या कुरण संजोग ।।
सत्रुद्रुम आइ चरण कूं नया । जित पदमा सीता पद लया ।।२४७६।।
कियो महोत्सव पुर ले गये । पुन्य प्रसादें बहु सुख भये ।।
अधिक आनंद नगर में भया । जित पदमा चित हरप्या थया ।।२४८०।।

सोरठा

पूरब पुन्य पसाय, जिहां तिहां रख्या करै ।।
जीत भई सब ठांइ, रघुबसीन प्रताप अति ।।२४८१।।

इति श्री पद्मपुराणे जितपद्मा विधानकं

३४ वां विधानक

चौपई

जितपद्मा को छोडकर आगे बढना

राजा सौंज व्याह की करै । ए चलणे की इच्छा करै ।।
जित पदमा सूं लक्ष्मण कहै । तू अपने मन निरमै रहै ।।२४८२।।
फिर आवै तव करस्यां व्याह । तुम कूं वनमें कहां ले जाहि ।।
जित पदमा के लोयण झरै । नगर लोक सहु विनती करैं ।।२४८३।।
लक्षमण राम रहै हम देस । पुंन्यवत ए बडे नरेस ।।
राणी राय करै अरदास । पूरण सकल मनोरथ आस ।।२४८४।
अरध रात्रि वन मारग लिया । राम लखण जनक की धिया ।।

राम लक्ष्मण का बंसथल गांव में पहुंचना

देख्यां गांम नगर रु नयरी । बंसथलपुर बसती खरी ।।२४८५।।
लोग भागते देखे घणे । तीजे दिन इक कारण बने ।।

पर्वत पर बाजा आदि बजना

परवत पर कोई करै पुकार । ताके भय भाजै संसार ।।२४८६।।
पुरुष छिपै भुंहरा मझार । तिहां रहैंगे साझ सकार ।।
बाजै घणे दमामे ढोल । ज्यौ वह कान पडै नहीं बोल ।।२४८७।।
जो कोई वह सुणै हकार पुरुष नपुंसक होवै तिण बार ।।
कोई सुणि करि तजै पराण । असा दोष अछै तिण थांन ।।२४८८ ।
सीता सुणि बोली तब वैन । इस पर्वत परि होइ कुचैन ।।
इन लोगा संग तुम भी चलो । भय की ठौर रहै नहीं भलो ।।२४८९।।

राम लछमरा तब हंसइ । सुरगैं बे जबै अजोध्या बसइ ।।

राम द्वारा विचार करना

दख्यण दिस इक पर्वत ठाम । हाक श्रवण सु'रग डरपैं गांम ।।२४६०।।
सो प्रतष्य हम देख्या प्राजि । मनवांछित का हुवा काज ।।
गिरवर पर कु'रग करैं पुकार । ताका डर मानैं संसार ।।२४६१।।
सीता को तुम डरपो घणी । तुम भी जाहु जहां ए दुणी ।।
रामचंद्र सीता लक्षमरग । परबत चढि देखैं हैं सब बन ।।२४६२।।
रयरग भई वन के सब जंत । हस्ती स्यंध बोलैं दुरबंत ।।
स्याला सबद भयानक लगैं । राम लक्ष्मरग उस बन में जगैं ।।२४६३।।
बसन उतारि पहर कोपीन । धरे ध्यांन ऊभा तप लीन ।।
जैसे सोहैं कलस सुमेर । ग्रैसे सोहत हैं तिरग वेर ।।२४६४।।

अजगरों का निकलना

नीलांजन नगर की उणिहार । अजगर निकले तिहां च्यार ।।
दामनी ज्यौं जिह्वा नीकलैं । फु'कारता अगनि पर जलैं ।।२४६५।।
महा भयभीत करैं चिघार । इनकैं हे समकित आधार ।।
बहुत चिघारे विलषे भये । पुंन्यवंत डर भय नहीं थए ।।२४६६।।
च्यारु' अजगर रूप धरि देव । राम लक्ष्मरग की कीनी सेव ।।
पूजैं चरण बजावैं वीरग । नाचैं गावैं गीत नवीन ।।२४६७।।

देशभूसरग कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग करना

वा वन में देशभूसरग मुनी । कुलभूसरग करैं तपस्या घनी ।।
राष्यस आंरग दिखावैं नृत्य । वह अपने मन भय ना कृत्य ।।२४६८।।
उनकों चाहैं तप से टाल । वह हैं मन वच काया हुसियार ।।
अंधकार घरग घटा बनाई । उपसर्ग दिया मुनिवरांतैं धाइ ।।२४६६।।

अडिल्ल

मुनिवर ध्यांन गंभीर चित्त आतम दिया,
हृदय सुमरि नवकार ध्यान निर्मल किया ।।
आरत रौद्र निवार धरम सुकल गह्या,
ऐसा सुभट मुनिराज कष्ट बहुला सह्या ।।२५००।।

चौपई

राम लक्ष्मण का मुनि के पास जाना

लक्षमरग राम सौंरग सब चल्या । बज्रावर्त्त धनुष संभाल्या भला ।।
साधां नैं क्यू' देहै दुःख । विसर भाज्या उपज्यो सुख ।।२५०१।।

दोऊ मुनिवर नैं केवलग्यांन । जय जयकार करैं सुर आन ।।
पूछैं राम द्वंज कर जोर । नोल बंध किम पिछली खोर ।।२५०२।।
कारण कवण उपद्रव किया । विंतर किम तुम कूं दुख दिया ।।

व्यन्तरों के पूर्व भाव

बोलैं मुनिवर पूर्व भव भाव । पद्मनी नगर विजयगिर राव ।।२५०३।।
पट्टरांणी नामैं धारणी । भोग भुगति रति मांनै घणी ।।
अमृतस्वरित राजा का दूत । उपयोगा स्त्री उदित पूत ।।२५०४।।
मुदित नाम का दूजा पूत । वसुभूत विप्र मित्र बहूत ।।
उपयोगा विप्र पाप की रीत । अमृतस्वरि तैं रहै भय भीत ।।२५०५।।
पर्वतमूत मंत्रीय बुलाय । अमृतस्वर कहीं दिया पठाय ।।
वसुभूति विप्र कूं लीया साथ । विप्र षडग लीयों निज हाथ ।।२५०६।।
अमृतस्वरित कौं तिहां मारि । आय कही उपयोगा नैं सार ।।
वे दोनुं मन रहसे घणे । डांव पडैं दोन्युं सुत हणें ।।२५०७।।
वां दोन्यां वीर सुणी इह वात । इण भांभण मारया तुम तात ।।
अब तुम कूं मारैंगा आइ । सावधाण रहज्यो इण ठाइ ।।२५०८।।
इक दिन सोवैं था दोउ भ्रात । मारण आया द्विज अधरात ।।
उदित नें मारी तरवार । वसुभूत मारया तिण बार ।।२५०९।।
विप्रजीव म्लेच्छ अवतार । खोटी ज्योंन भ्रम्यो संसार ।।

मतिवर्धन मुनि का आगमन

मतिवरधन मुनिवर मुंनी । अनधरा आरज का ग्यानी गुनी ।।२५१०।।
वसंत तिलक वनमें तें आय । छह रितु फूल फले वन राय ।।
सूका तरवर हुवा हरया । जलहर सकल नीर सुं भरया ।।२५११।।
माली गया राय के पास । कही बीनती सहु सब भासि ।।
राजा सहु परिवार हकार । हाथी चढि चाल्यौ नरपार ।।२५१२।।
नगर लोक चाल्यो नृप संग । पहरि तनें आभरण सुरंग ।।
वन के निकट राय जब गया । गजते उतरि भूमि पग दिया ।।२५१३।।

मुनि की तपस्या

मतिवरधन मुनि के संग घने । वे ठाढे ध्यांन मांहि आपणे ।।
कोई पदमासन तप करैं । तीन रतन हिरदै में धरैं ।।२५१४।।
राजा अस्तुति करि दडोत । दरसन देखि सुख भया बहुत ।।
नरपति कहैं सुणों मुनिराय । तुमारी है राजा सी काय ।।२५१५।।

तुम काहे कूं लीया जोग । छाडे सकल राज के भोग ।।
बोले मुनिवर सुणौं बिचार । राजभोग तिहां थिर न संसार ।।२५१६।।

सुभ अरु असुभ करम परभाव । भ्रमैं जीव पावैं नहीं पार ।।
सुपना का सा है सब सुख । बहुर लहैं नरक का दुख ।२५१७।।

इत ऊबरैं निगोदरी वास । जनम मरण नहीं टूटी आस ।।
दिष्या नैं पावैं सिव वास । निरभै लामैं भोग विलास ।।२५१८।।

दरसन ग्यांन बलबीर्ज अनंत । सासय सुख लहै बहु भत ।।
विजय परवत सुणि दिष्या लई । राज विभूत पुत्र कों दई ।।२५१९।।

उदित मुदित द्वारा वैराग्य लेना

उदित मुदित उपज्यौ वैराग । भये दिगंबर घर सब त्याग ।।
सम्मेद सिखर की मनसा करी । गुरु आग्या लीनी तिहं घरी ।।२५२०।।

वन मे गए भील की पुरी । मग नहीं लहै तिहां स्थिति नरी ।।
साधैं जोग धरम के काज । ग्यान अंकुस सें मन गज राज ।।२५२१।।

पंचइन्द्री की रोकै चाल । मोह करम की तोडै माल ।।

म्लेच्छों द्वारा उपद्रव

मलेच्छ आय तब कीनी बुरी । साध हतण की इच्छा करी ।।२५२२।।

उदित कहै मुदित सौं बात । म्लेच्छ आवै हैं धालण घात ।।
हमकूं मारयां चाहैं आइ । तुम राखो दिढ मन बच काय ।।२५२३।।

अपनुं चित्त राखज्यो ठौर । टूटै जनम मरण की डोर ।।
उन मरथैं उपसर्ग निमित्त । पापी पाप विचारयो चित्त ।।२५२४।।

पहुंच्या तिहां भील का राय । दोन्युं मुनिवर लिये छुडाय ।।
तिन म्लेच्छा नैं मारया बाध । तोनैं क्युं दुःख दिया साध ।।२५२५।।

पूछैं राम राय की कथा । बाके भव भाषो सरवथा ।।
भरत नगर तिहां दोइ किसाण । सुरपक करपल्लव जांनि ।।२५२६।।

सुकतवाल कहारिया चोर । तिण किसाण छुडाया तिण छोर ।।
उन बालक जब बुधि सभारि । तप करि उपज्यो राजकुमार ।।२५२७।।

सब मलेछुं का हुवा राय । करै राज सोभा अधिकाय ।।
सुरपक करपल्लव धरम जाणि । तप कर उदित भए यहां आन ।।२५२८।।

पूरव जनम दिया अभय दान । ता सनबध छुडाये इस थान ।।
म्लेच्छां को दीनी अति मार । मरि करि पहुंच्या नरक मझार ।।२५२९।।

तोड वन उदर पूरणा भई । संन्यासी पै दिष्या लई ॥
पंच अगनि साधी बहुभांति । मरकरि भया देव की जात ॥२५३०॥
अगनि केतु नाम तसु भया । उदित मुदित संमेदगिर गया ॥

उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति

समाधि मरण करि छूटे प्राण । पाया स्वर्ग में देव विमाण ॥२५३१॥
अरिष्ट नगरी प्रिय वन भूप । कंचन नामा नारि अनूप ॥
दूजी पदमावती अस्तरी । रूपवंत लष्यण गुणभरी ॥२५३२॥
दोऊ देव चये अंत आय । पदमावती गर्भ भए आय ॥
प्रथम रत्नरथ चित्ररथ और । रूपवंत सोहै तिण ठौर ॥२५३३॥
आभा और अगनिकेत पुत्त । अनरथ नाम रूप बहुत ॥
राजा सुण्यु धरम व्याख्यान । छह दिन आव रही परमांन ॥२५३४॥
राज भार पुत्र ने दिया । आपण भेस दिगंबर लिया ।
रत्नरथ श्रीप्रभा सौ व्याह । राजभोग में करै उछाह ॥२५३५॥

अनरथ राजा का मान भंग एवं वैराग्य

अनरथ करै राय सौ बैर । मागै राज प्रथी का खैर ॥
चित्ररथ मंत्री सौं मंत्र विचार । सेनां जोड कीए जुध मार ॥२५३६॥
मान भंग अनरथ का होय । भये संन्यासी ग्यांन वियोग ॥
काय कष्ट सुं साधै जोग । छोडे सब संसारी भोग ॥२५३७॥
रत्नरथ चित्ररथ मुनिवर पैं गये । सांभलि धरम जतीसुर भये ॥
ईसान स्वर्ग में हुवे देव । सुर बहु करैं तिनां की सेव ॥२५३८॥

देसभूषण कुलभूषण का जन्म

सिघरत्नपुर क्षेमकरण नरेस । विमलाराणी पतिव्रता भेष ॥
ताके गर्भ स्वर्ग तें चई । देसभूषण कुलभूषण भई ॥२५३९॥
सागरघोष भूप की साल । विद्यापढि दोउ भए गुणाल ॥
चउदह विद्या बहत्तर कला । सर्वविद्या सीखी गुण भला ॥२५४०॥
विप्रसाथ दोऊ शिष्य ले जाय । सुत गुण देख आनंद्यो राइ ॥
सागरघोष बहु पायो दान । षेमंकर कीयो सनमांन ॥२५४१॥
नरपति औसा करै विचार । जोवनवंत भयो सु कुमार ॥
रूपवंत नृप को कोइ सुता । ताहि समभि कांई कीजे मता ॥२५४२॥
उहै भूपति को जांचै जाइ । औसी बात विचारै राय ॥

वनक्रीडा

दोऊ कुंवर वनक्रीडा चले । हय गय रथ पायक बहु भले ॥२५४३॥

रथ परि बैठा दोन्यु वीर । कमलक्षण करि दिपै सरीर ॥
कमलोत्सवा झरोखे द्वार । बैठी नयन आभरण संवार ॥२५४४॥

देसभूषण कुलभूषण देखि । यासौं कहूं विवाह विसेष ॥
वे दोन्यु आपस में जिद । नारि रूप हिया में निद ॥२५४५॥

उततैं भाट आवता मिल्या । आसीर्वाद दीया उन भला ॥
क्षेमंकर कै कुल आनंद । विमला उदर भए सुविचंद ॥२५४६॥

चिरंजीव ह्वै ज्यो तुम सदा । इनका सुजस बखाणै मुदा ॥

कमलोत्सवा का विचार

कमलोत्सवा इनकूं देखिया । धन्य वह जिनकै दोउं भया ॥२५४७॥

असी सुणी जबै इन बात । सोच करैं मनमे दोउ भ्रात ॥
सराह्या इन भैया की ठौर । हम मनमें आणी थी और ॥२५४८॥
जे इह अनि राषती भाव । तोऊ न कहती बहिन का भाव ॥
हम तो चित मां आण्या था पाप । क्यूं उतरैगा इह संताप ॥२५४९॥
मन ही मन में बांधे करम । ज्ञानवंत किम करैं अधरम ॥
धिग् यह जनम धिग् संसार । विषय भाव में रह्यौ अंधियार ॥२५५०॥
अब किण विध मिट सी अपराध । करैं तपस्या मन वच साध ॥

दोनों भाइयों के वैराग्य भाव

फिर आये जहा माता पिता । वैराग तणां करि दोन्यु मता ॥२५५१॥

कहै कि हय तुम इह सनबंध । इन्द्रिय विषय पाप का बंध ॥
अब तुम हम कूं आग्या देई । तो हम मुनि पासै व्रत लेहिं ॥२५५२॥

माता पिता द्वारा संताप

दपति सुनि मूरछा गति आइ । पुत्रां प्रतै कही समझाय ॥
तुमारा न देख्या मंगलाचार । तुम दोनों बालक सुकुमार ॥२५५३॥
करो राज तुम भुगतो सुख । कारज विन कवण सहो ए दुःख ॥
चउथै आश्रम दिक्षा जोग । अब भुगतो संसारी भोग ॥२५५४॥

कुमारों का उत्तर एवं वैराग्य लेना

बोले कुंवर संसार असार । व्यापत काल न लागैं बार ॥
बाल वृद्ध सगला नै खाय । काहु की करुणा न कराइ ॥२५५५॥
आग्या ले मुनिवर पैं गये । लुंचे केस दिगंबर भए ॥
बारह तप तेरह चारित्र । अठाईस मूल गुण है पवित्र ॥२५५६॥

तीन रत्न पालैं धरि भाव । साधैं तप या विध इण ठांम ।।
अनरथ सैन्यां कौमुदी नग्र । सुम राजा जा की बल अग्र ।।२५५७।।
रतिवंती राणी सम्यक् दिष्ट । ग्यांन किया में अधिक श्रेष्ठ ।।
राय सुणीह्या ऐसा महंह । दरसन कारण चल्या तुरंत ।।२५५८।।
अैसे तपसी करिए सेव । राणी निंदा करै अछेव ।।
वाद भयो राणी अन राव । समझै केम सुभासुभ भाव ।।२५५९।।
साधुदत्त मुनि के उपदेश । राणी मांड्यो वाद नरेस ।।

नागदत्ता का अनरथ तपस्वी के पास जाना

नागदत्ता कन्या सुं कही । अनरथ पासि जाह तुं सही ।।२५६०।।
सारे दिन रहियो वन मांहि । तपसी पास जाइयो सांझ ।।
जब वह चुकै आपणा ध्यांन । वाकुं ल्याज्यो कणिका थान ।।२५६१।।
पुत्री गई जहां अनरथ । लाग्या ध्यान आतम के मध्य ।।
कंन्या की पाई तबैं बास । अनरथ कहै फली मन आस ।।२५६२।।
मैं तो बहु प्रकार तप किया । अपछर यह फल पाइया ।।
तब कन्या तापस ने कहैं । मेरी माता मनोहर रहै ।।२५६३।।
तू पुत्री अपनो वर ढूंढोल । अब तुम चली मीहि घर मल ।।
तुम चरणन की सेवा करूं । तुम माथै तप व्रत आदरूं ।।२५६४।।
तब तापस आइया पास । कन्या बोली वचन प्रकास ।।
अब तुम चलों माता के पास । मोकूं देसी तुरत निकास ।।२५६५।।

तपस्वी का कन्या के साथ जाना

तपसी चाल्यो कन्या संग । त्रिया लाजी जिम व्याघ्र कुरंग ।।
तिहां सुमुख राजा जा छिप्या । वेस्या के घर आया तपा ।।२५६६।।
वेस्या दई अपणी पुत्तरी । भोग भुगत मानैं तिह घडी ।।

कुशान्ती होना

राजा तबैं बांध्या तापसी । पनिया सौ पीटयो करि हंसी ।।२५६७।।
राख्यो राति पाइगा बीच । मुंत लाद की मांडी कीच ।।
प्रभात भये बुलायो तुरंत । मुंड मुंडाय कै पाछणां बहुभंत ।।२५६८।।
गादह चढाइ फिराया देस । अैसा किया तपां का भेस ।।
मरि करि भुगती सातो नर्क । ऐसैं सहै भव भव उपसर्ग ।।२५६९।।
अंत भया बांभण का पूत । संन्यासी ह्वै तप करै बहुभंत ।।
ज्योतिग पटल देवता भए । वा सनमंध हमनैं दुख दए ।।२५७०।।

अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का आना

इक दिन चतुरनिकाया देव । अनंतवीर्य दर्शन कुं सेव ।।
तिहां इन्द्र नें पूछी बात । मुनिसुव्रत उपजे जिननाथ ।।२५७१।।

उन पीछे कवरण होइ केवली । देसभूषण कुलभूषण कथा चली ।।

दोनों मुनियों के केवलज्ञान होना

उनकूं उपजै केवलज्ञान । उन प्रभु देव विचारया ध्यान ।।२५७२।।

पूरव भव का जाण्यां भेव । भाया उपसर्ग कीया गहेव ।।
षेमंकर अर विमला माय । ले संन्यास तजी निज काय ।।२५७३।।

पहुंचे सौधर्म स्वर्ग विमांरा । उपसर्ग देख आए इस ठांरा ।।
महालोचन षेमंकर जीव । आया मोह करम की नींव ।।२५७४।।

हम घातिया कर्म सहू टाल । माया मोह का तोंडया जाल ।।
केवलग्यांन उपज्या इस घडी । सुर नर सहु मिलि सेवा करी ।।२५७५।।

दूहा

रवि प्रताप जग में तपै, ग्यानी ज्योति अनंत ।।
सुरगत भेद ससय मिटै, सुख पावैं बहु भंत ।।२५७६।।

इति श्री पद्मपुराणे देसभूषण कूलभूषण केवलज्ञान विधानकं

३५ वां विधानक

चौपई

सूरप्रभ राजा द्वारा राम का स्वागत

सूरप्रभ वंसस्थल को राई । बंसगिरि सोमैं बहु भाई ।।
बारह सभा सुरगै तहां धरम । रामलखरग को पायो मर्म ।।२५७७।।

भूपति सकल बर्णन कूं नए । दरसन पाइ कृतारथ भए ।।
नारायण बल अष्टम अवतार । सुमरयां हुवै जीव आधार ।।२५७८।।

सुप्रभराय मयंद सवार । पंचवर्ण कीने इकसार ।।
कियो महोछव आण्यो गेह । दीपै यह कंचन मय देह ।।२५७९।।

फिरै छत्र सिर ढारैं चंवर । बिछे कुसुम सब मारिग ठौर ।।
बहु पकवान मिठाई घनी । बहुत भांति की रसवती बरणी ।।२५८०।।

भात दाल तरकारी घृत । रस गोरस दीनां भरि घत ।।
रतनसवाई कंचन थाल । चौकी जडत बहु मोती लाल ।।२५८१।।

सुवर्ण झारी अमृत नीर । जीमैं राम लक्ष्मण दोउं बीर ।।
सीतां नै लीयो आहार । दई मुख सोधि बहु पान सवार ।।२५८२।।

अरगजा घाल्या बास गंभीर । वातै उपजै सुख सरीर ।।
लक्ष्मण राम बंस गिर चले । वनक्रीडा देखत मन बलै ।।२५८३।।

चैत्यालय देखै बहु भाइ । रतन बिंब बीसों जिनराय ।।
कहीं कचन के देहुरे । कहीं पाषाण लगाये खरे ।।२५८४।।

करै प्रतिष्ठा पूजा दान । सकल भूपती मानैं आंण ।।
रामचद्र लक्ष्मण सौं कहैं । वर्ण नहीं जो हम इहां रहैं ।।२५८५।।

लोग करें हमरी सब सेव । भरथ सींव सौं रहिये छेव ।।
कैसे रहिये भरथ की ठौर । रहैं जहां तहां लखै न और ।।२५८६ ।

सतवादी श्री रामचंद्र, लक्ष्मण चित्त विवेक ।।
बंसगिरि तजि आगैं चले, धारि धरम की टेक ।।२५८७।।

चौपई

राम का आगे गमन

राम गिरि छोडि वनमारग चले । बहु प्रकार तरु देखे भले ।।
अगले वन सब देखे सघन । मनुष्य न दीसै मारिग कठिन ।।२५८८।।

निस वासर तिहां एक समान । सघन वृक्ष दीसै तिहां भान ।।
सारे दिन चलिया कोस एक । गिरि कंदरा में रह्या टेक ।।२५८९।।

वनफल बीण करें आहार । पहुँचे करण रेवा तट पार ।।
उत्तम वृक्ष लागे फल फूल । सीतल पवन जाय दुख मूल २५९०।।
तिहां जाय रामचंदर रहैं । वनफल आणि अन्य न चहैं ।।

वन जीवन काल

वासण मोटा तिहा संवार । रसवंती करै सीता तिण बार ।।२५९१।।
पानन की पातल लें वणाइ । सुरही धेनु का दुग्ध मंगाइ ।।
नारिकेल के तंदुल अनूप । दाडिम दाख मुख स्वरूप ।।२५९२।।
चारोली पिस्ता बिदाम । ए वसता खाइं करैं आराम ।।

राम द्वारा चारण मुनियों को अहार देना

चारण मुनि सीतां दृष्टि देखि । मास उपवासी दिगंबर भेष ।।२५९३।।
रामचद्र ने सीता कहै । उठो वेगि पडगाहो गहैं ।।
दोउ मुनिवर ने देय अहार । रामचंद्र उठियो तिणबार ।।२५९४।।

नमस्कार करि पूजे चरण । मुनि दर्शन भव पातिग हरण ॥
वैयाव्रत करि दीयो दान । विधि सेती कीयो सनमान ॥२५९५॥

मुनिवर कौं दीनी सुखसोधि । अर्घदान बोले प्रति बोधि ॥
पुहुप रत्न वरषे तब घणे । सुर नर सब जै जै कूं भणे ॥२५९६॥

गृद्ध की कथा

गृध्र एक बैठा तरु डाल । भव सुमरण उपज्यो ततकाल ॥
केहू वेर लही मानव देह । धरमध्यान सुं धरयो न सनेह ॥२५९७॥

अकारथ खोयो सब जन्म । नटवत भेष करे सब कर्म ॥
मानुष होय कबहु पुन्य न कियो । शास्त्र सुणन को चित न दियो ॥२५९८॥

मुनिवर को नहीं दियो अहार । धरयो नहीं व्रत संजम भार ॥
पंषी भयो नित आमिष भष्यो । अब मैं कैसे अलेषै लिष्यो ॥२५९९॥

चरणोदक मुनिवर का पिया । असा ग्यांन गृद्ध को भया ॥
पषीन तैं कहा संयम पलै । मुनिवर चरणां में चित मिलै ॥२६००॥

जटारत्न सम पंषी बणै । सोभा तसु कहत न बनैं ॥
रामचंद्र पूछै विरतान्त । सुगुरु पनि सुपति भाषै बात ॥२६०१॥

जनपद करण नाम तिहां देस । बहुत नग्र ग्राम बहु बेस ॥
कंई गिरिपर कंई तलें । कंई बसैं नदी तट नलें ॥२६०२॥

कंई निबसैं महा उद्यान । कंई निकट नगर के थांन ॥
करण कुंडल का डंडक भूप । अस्वकरणी राणी सस्वरूप ॥२६०३॥

प्रवस्य सौं राजा आसक्त । भई रयण करिवा चाल्यी रित्त ॥
मारग में मुनि ध्यानारूढ । सर्प एक मंगायो नृप ढूंढ ॥२६०४॥

मुनि पर उपसर्ग

कीडी चढी साध की देह । परिबस्य कैं गयो भूपति गेह ॥
मुनिवर तबै मांड्यो संन्यास । वाके देह तणी नहीं आस ॥२६०५॥

विसहर मृतग चुबै गरल । असो अहि घाल्यो मुनि गल ॥
जो कोई आय उतारै सांप । तब वह वासो करै संताप ॥२६०६॥

अन्य देश का भूपति आई । देख्यौ सर्प मुनिवर की काई ॥
अस्व तैं उतरि मुनीसर पठतारि । राजा ये कीया नमस्कार ॥२६०७॥

उत्तम वस्त्र सें पूंछियो सरीर । वैयावृत्त करि मेटी पीर ॥
गयो भूप उपसर्ग निवार । दंडक फिर आयो तिण बार ॥२६०८॥

बोलै किणउं उतारयौ सांप । उतारया अनही राजा आप ।।
चढं कोप कहै कैलूं आंन । साधां नैं पीडूं इस थान ।।२६०९।।

मुनि के चारों ओर अग्नि जलाना

फिर बोल्या वाडा चहुं फेर । काठ संवारो बहु तिहां घेर ।।
काहूं कूं निकलण मत घोह । दावानल माहीं कीद्यो स्योह ।।२६१०।।
पापी दुष्ट विचारी बुरी । आई नरक जांणै की घडी ।।
च्यारों तरफ लगायी आग । मुनिवर ध्यान निरंजन लाग ।।२६११।।
लग्या झील देही सब जरै । मुनिवर नहीं ध्यांन तें टरें ।।
पावकध्वज सबन को देव । अगनि बुझाइ करी मुनि सेव ।।२६१२।।
वाही अगनि देही सब जाल । सकल प्रथी बल हुई लाल ।।
दाझे जीव जन्तु सब मुये । राजा नरक सातवीं गये ।।२६१३।।
भरम्यो लख चौरासी जौंनि । अब ए वृद्ध भए करि गौंन ।।
हमारा भव देख्यो परतक्ष । वानारसी नम्र रहै तिहां रक्ष ।।२६१४।।

अचलराय एवं गिरदेवी द्वारा मुनि को आहार देना

अचलराय गिरदेवी अस्तरी । रूप लक्षण गुण सोहैं घरी ।।
त्रिगुप्ति मुनिन कूं दियो आहार । दिखाया आपणां हाथ पसार ।।२६१५।।
मेरे सतति होय कि नांहि । भाषो मोहि जिम मिटैं दाह ।।
मुनि बोल्या होसी सुत दोइ । सुगुपति गुपति तेरे गरभ होय ।।२६१६।।
सोमप्रभ प्रोहित है राय । सोमिला स्त्री गर्भ कै आय ।।

सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना

प्रथम सुकेत अनैं अगनिकेतु । दोनूं वीर हैं बहु देत । २६१७।।
सुकेत अनंतवीर्य मुनि पास । दिक्षा लही सुगति की आस ।।
अगनिकेतु संन्यासी भया । पंचअगनि साधी तप किया ।।२६१८।।
सुकेतु विचारै औसा ध्यान । अगनि केतु तप करें अग्यांन ।।
काय कलेसस्यों दहै सरीर । अन्य जीव किन आवै पीर ।।२६१९।।
सूक्षम बादर विराधै प्रान । अणगालें जल करैं असनांन ।।
वा कूं परमो धूर्मैं जाय । गुरु सूं आज्ञा मांगी आय ।।२६२०।।
अनतवीर्य सुकेत सूं कहैं । अगनिकेत मन मिथ्या गहै ।।
तुम्हारा मानैंगा नहीं बैन । अग्यानी किम समझै अैन ।।२६२१।।
क्रोध मान माया का धणी । जैन धर्म खांडा की अणी ।।
रागदोष वाकै मन बसै । संयम क्रिया नहीं उलहसै ।।२६२२।।

वह तो समभैगा इस भांति । तोय्यु हम समझावै बात ।।
प्रकर महाजन सुधरा तिरी । वाकैं साथ तीन प्रछर तिरी ।।२६२३।।

आवैगा गंगा जल भरण । तीन दिन पाछैं उसका मरण ।।
पावैगी भूंडा अवतार । बीजे भव महिषी अवधार ।।२६२४।।

उहां तैं भी मरि बिलास कै ग्रेह । जा कंवर ग्राम सुतां हुइ एह ।।
जती सुकेत भ्राता पैं गया । दोन्यां सूं तिहां मेला भया ।।२६२५।।

वाही समैं रुधराजव आइ । तबैं सुकेत बोलैं मुनिराय ।।
अगनिकेत नैं पूछे ग्यांन । कहो कछु आगम व्याख्यान ।।२६२६।।

इस कन्यां का क्या होइ लिखंत । तो मैं जाणुं तुं महंत ।।
अगनिकेत कहै तुम भणो । तुमारा ग्यान सही मई गिणो ।।२६२७।।

कन्या का भविष्य

सुकेत कहैं कन्यां इह मरें । तीजो दिन या को नहिं टरे ।।
भेड भैंस गति ह्वं भी सुता । विसाल देह रूप की लता ।।२६२८।।

जवैं कन्या होइ जोवनवंत । प्रवर विलास मामा सु कहंत ।।
इह कन्या मोकुं तुम देह । भाणजी जाणि कही उण लेहु ।।२६२९।।

व्याहण आया मामा द्वार । अगनिकेत आयो तिण बार ।।
है संन्यासी प्रवार सुं आया । इह तो सुता तेरी इह आया ।।२६३०।।

तू कहा ऐसा हुआ अग्यांन । बेटी व्याहन कुं ओढी जान ।।
अैसी कथा कन्या नैं सुणी । उपजी अवधि भव सुमरणी ।।२६३१।।

कन्या द्वारा वैराग्य के भाव

धिग् धिग् भाई मोहनी करम । अैसैं जीव भर्में है मर्म ।।
इह अचिरज सब लोग्यां सुण्यां । भया वैराग सबही मणां ।।२६३२।।

अनंतवीरज मुनिवर ढिग गया । दिष्या लई करि मन वच कया ।।
रामचंद्र सीता नैं सुणैं । अवर वह शुद्ध वीनती भणैं ।।२६३३।।

अचल राजा गुपति सुगुपति । अगनिकेत लह्या समकित्त ।।
प्रवर अवर मामा बिलास । बिधरा नाम और कन्यां तास ।।२६३४।।

धरम मारग तुम मोसुं कहों । तुम प्रसादैं गति उत्तम लहौं ।।
रात्रि भोजन हिंस्या व्रत । अइसी रीत बहु पंथी धरत ।।२६३५।।

मुनिवर गए आपणैं थांन । सिष्याकुल भविजन मांन ।।
लछमण नें हस्ती वस्य कीया । ऊपरि ताके चढि आइया ।।२६३६।।

पुष्पवृष्टी देखै तिहां ढेर । जटा पंषी देख्या तिरण वेर ।।
रामचंद्र सूं पंछी कथा । प्रभु नें कह्या भेद सरवथा ।।२६३७।।

धन्य साध जे तारी तरै । बेर बेर तबै ग्रस्तुति करैं ।।
संसय मिटया गया संदेह । दया धरम सूं धरयो सनेह ।।२६३८।।

सोरठा

नर देही निध पाया, दांन सुपात्रां दीजिये ।
सुरग तणां सुख थाय, ग्रत मोष्य पद पावही ।।२६३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र सुपात्र दांन जटापंखी विधानकं

३६ वां विधानक

चौपई

राम की आगे गमन

अग्रे चलेरण की इछा करी । करन रेवा नदी बहै तिह खरी ।।
नाव बिना किम होजे पार । ग्रैसा तिरण ठां करै विचार ।।२६४०।।

सहर मांहि सत्ते माह एक । ताकी सोभा बणी ग्रनेक ।।
छत्री कलस मुगताहल घणे । रतन जोति सूरज सम बणे ।।२४४१।।

सिंहासरण परिवसन ग्रनेक । सज्या मोहै ग्रधिक विवेक ।।
चंदवा चंदन ग्ररगजा ग्रौर । बहुत जुगति राखी तिरण ठौर ।।२६४२।।

बाजा बाजैं ताके पास । उसपरि चढि चाले वनवास ।।
पार उतर देखे बहु देस । वन बेहड ग्रति परवत वेस ।।२६४३।।

रंग रंग के गिर पाषांन । उत्तम ठोर रहै मन सांन ।।
कहि झरैं पर्वत तैं नीर । कही नंदी निकसी तिहं तीर ।।२६४४।।

दंडक वन मैं पहुंचना

दंडक वन में पहुंचे जाय । बहुत पुष्प फूली वनराइ ।।
सोहै वन सुगंध ग्रति वास । देखत उपजै चित्त उलास ।।२६४५।।

ग्रडिल्ल

वन की शोभा

वेलि चंवेली जातिक चंपा केवडा ।
बने सरोवर कमल नीर निरमल भरया ।।
भ्रमर करैं गुंजार सुसब्द सुहावणे ।
फूले फूल ग्रनंत कवल कव लग गिणे ।।२६४६।।

नारिकेल खजुंर अंब अनें आमली ।
नींबु सदाफल बेर सेव कहवे भली ।।
बड पीपल अरु महुवा छांह सीतल जिहां ।
सकल जाति के रूंख देखि बहु सुख लहा ।।२६४७।।

केसरी अगर सुबास पुष्प चंदन घणे ।।
दाख चिरूंजी अवर पेड पाडल वणे ।।
पुंगी वृक्ष उतंग जायफल के वणे ।
धांन तणे बहु खेति तिहां सुंदर भणे ।।२६४८।।

चौपई

कहि हंसने कहां चकोर । बोलें सब्द सुहावन मोर ।।
कहें तीतर कहें लवे कपोत । सारस बग बतक बहोत ।।२६४९।।

घुघू कवुआ गिरध बटेर । सूवा सारो पंषी बहु हेर ।।
जै जै सबद करें चिहुं वोर । राम नाम सुमरण का सोर ।।२६५०।।

दंडक पर्वत तिहां उतग । गुफा में रहें सिंघ उमंग ।।
कहुं चीता कहिं सारंग रीछ । सांभर सूकर गैंडा हींछ ।।२६५१।।

आरणां भैंसा सुरही गाय । पसु जाति सगला तिह ठांइ ।।
सरवर माहिं कमला का फूल । चलैं पवन अति सुख का मूल ।।२६५२।।

चलै समीर तिहां गंभीर । पावै सगला सुख सरीर ।।
सबल वृक्ष हालैं पात । भयो आनंद वन मैं बहु भांति ।।२६५३।।

क्रीडा करें हंस वन मांहि । झरना झरैं तिहां सीतल छांह ।।
हरषै सकल दिवस धन्य आजि । रामचंद्र आए वन मांझि ।।२६५४।।

वन सोभा देखें अति भली । राति दिवस देखैं मन रली ।।
रंग रंग के दिपैं पाखांन । दमकै किरण उद्योत है भान ।।२६५५।।

फिटक सिला की जोति अनूप । सब ठां सोहै महा स्वरूप ।।

दंडक वन की शोभा

ता तलि करावरन बहै । महा अगनि उज्जल जल रहै ।।२६५६।।

परवत की झांई जलमांहि । भले वृक्ष तहां सीतल छांह ।।
स्वर्ग सूर ससी उडघण घणें । जल में दीसैं अति सोभा बणे ।।२६५७।।

रामचंद्र लखमण अर सीया । जटा पंषी निज कर पर लीया ।।
करि सनान जल क्रीडा करी । नीर उछालें अंजुल भरी ।।२६५८।।

वे सुख किए पर वरणे जाइ । विदध नगर बसै तिए ठांइ ।।
वरषा रुति का आगमन भया । तहां प्रभु ने बासा लिया ।।२६५६।।

दंडक बन अति उत्तम ठोडि । तिहां रघुपति त्रिभुवन सिरमोड ।।
पचवरण बादल आकास । वरषै मेह अधिक सुखरासि ।।२६६०।।

पर्बत तैं उतरैं जल भौमि । काली घटा रही अति झूमि ।।
दामिन जोति पृथ्वी पर होइ । दंपति रहसि करैं सब कोइ ।।२६६१।।

दूहा

दंडक वन वासा लिया, प्रगटयो तिहां चउमास ।।
रामचंद त्रिभुवन धणी, मन में धरैं उल्हास ।।२६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र दंडक बन निवास विधानकं

३७ वां विधानक

लक्ष्मण को सुगन्ध आना

लक्षमरण वन क्रीडा को आइ । बहुत सुगंध उठी तिए ठांय ।।
लक्षमरण मनमें करैं विचार । इह सुगध कैसी अपार ।।२६६३।।

ऐसी कही देखी न सुणी । इह सुगध वन मे घणी ।।
कैं इह मम सरीर की बास । कै इह रामचंद्र की सुवास ।।२६६४।

लषमरण सोचै बारंबार । इस विध वास नहीं संसार ।।
इहां श्रेणिक पूछै कर जोडि । श्री जिन भाषैं कथा बहोडि ।।२६६५।।

पूर्व कथा

ऐसी है किसकी सुबास । नारायण जु सराही तास ।।
श्री जिन भाषैं समझाय । श्रेणिक राय सुणे मन ल्याय ।।२६६६।।

आदिनाथ स्वामी छदमस्त । नमि विनमि मांगैं इह वस्त ।।
भरत बाहुबलि पायो राज । सुधरधा नहीं हमारा काज ।।२६६७।

भाषो बात तजो प्रभू मौंन । हम हैं राज नग्री का कौंन ।।
धरणेन्द्र ने दीयो इन राज । विजयारध का सौंप्या राज ।।२६६८।।

वाकै बंस धनवाहन भया । अजितनाथ कै समोसरण गयो ।।
भीम नाम राष्यस पति देव । आया करण श्री जिन की सेव ।।२६६९।।

धनवाहन स्यों भया मिलाप । त्रिकूटाचल कुं ले चाल्यो आप ।।
दीयो लंका कों तब राज । जोजन आठ लंक गढ साज ।।२६७०।।

ऐसो हार दियो वा हाथ । सुंचि सेती पूजी इह नाथ ।।
वाकै बंस रावण भयो बली । तिहूं षंड साध्या मन रली ।।२६७१।।

वाके भगनी है चंद्रनषा । षरदूषण पट राणी सखा ॥
वाकें गर्भ पुत्र द्वै भए । संबूक सुंवर निरमए ॥२६७२॥

सूरजहास षडग निमित्त संबूक की तपस्या

सूरजहास षडग निमित्त । संबूक साध्या तब बहु मंत ॥
वारह वर्ष दंडक बन रह्या । साधी विद्या षडग तब लह्या ॥२६७३॥

दिवस सात औंधे मुख रह्यो । संबू कुंवर षडक न गह्यो ॥
जे षडग आवैं मो हाथ । तत ले जाउं अपणैं साथ ॥२६७४॥

तस सुगंध वन भयो सुवास । लक्ष्मण गयो षडग के पास ॥
बहुत कष्ट थी पायो षडग । वारह वर्ष सह्यो उपसर्ग ॥२६७५॥

अैसे वासूं ल्यायो ध्यान । आप ही आवै कर्म प्रमान ॥
तब मैं ले जाउं निज गेह । इण प्रकारै साधी जन देह ॥२६७६॥

लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति

लक्षमण सूरजहास नैं पाइ । पुण्यबंत नारायण राइ ॥
ततषिण मूठ खडग की गही । जांणो जोति सूरज की लही ॥२६७७॥

देख्यो बहोत ऊजलै वरण । लषमण चाहै परिष्या करण ॥
यो है कसोख देखूं चलाय । या की कैंसी धार ठहराय ॥२६७८॥

बेडो वांस को रह्यो तिहां छाय । संबू कुंवर बैठो तिण ठाइ ॥
लक्षमण करै बेडा परि चोट । संबूक कुंवर कटयो तिण वोष ॥२६७९॥

उतर मूंड धरती पर पडया । गिरी लोथ तिहां लक्षमण खडा ॥
सूरजहास खडग इह भेव । करै देवता सगला सेव ॥२६८०॥

देव सकल बोलैं तिण बार । ए पुंन्यवंत अष्टम अवतार ॥
संबूक कंवर जु कीया तप । विद्या निमित्त किया बहु जप ॥२६८१॥

द्वादस वर्ष कष्ट बहु सहा । वाका हेत मन ही में रह्या ॥
बिन लहणैं पावै किम भांति । बारह बरष सहै दुखगात ॥२६८२॥

दोहा

बिना पुन्य पावै नहीं, कष्ट सहै दिन राति ॥
हीन पुन्य परभव किया, सुभ फल कैम लहंत ॥२६८३॥

पुंन्य जिहां तिहां फिरै, इतना लहै सुभाय ॥
विद्या विभव सरीर सुख, सो मिलै अगाऊ आय ॥२६८४॥

चौपई

देव पुनीत आभूषणों की प्राप्ति

देव पुनीत आभूषण घने । केसर चंदन सोभा वणे ।।
देवां नैं लक्षमण कूं दिये । नमसकार चरणन कूं किये ।।२६८५।।

आनखा लक्षमण कुमार । वनमें खडा लगी बहुबार ।।
सीता रामचंद्र सुं कहै । लक्षमण कहा अब लग वन रहै ।।२६८६।।

वेगा उठि वाकी सुधि लेहु । जटा पंषी तुम मोकूं देहु ।।
तब ही लक्षमण पहुंचे आय । तब पूछैं सब रघुपति राइ ।।२६८७।।

तुम यह खडग कहां ते लया । लक्षमण तव व्यौरा सब कह्या ।।
तव वह करैं बहुत आनंद । खरदूषण घर हवा दंद ।।२६८८।।

चन्द्रनखा द्वारा विलाप

चन्द्रनखा आवै थी नित्य । पुत्र सनेह घणुं थो चित्त ।।
नित प्रति देती आंन अहार । करती सदा पुत्र की सार ।।२६८९।।

देख्या बडा बांस का कटया । पुत्र ने देख्या मन सहु घटया ।।
कुमर खडग किस पर चलाइया । वन कुं काटि कहां उठि गया ।।२६९०।।

अग्रे देखी सुत की लोंथ । पडया मुंड कुंडल की वोथ ।।
देख्या कुंवर खाई पछाड । रोवै पीटैं करैं पुकार ।।२६९१।।

किस दुरजन मेरा मेरा सुत हण्यां । चन्द्रनखा सिर पीटैं घणां ।।
भई चित्त भ्रम विचारै एह । विद्या सुं काटि निज देह ।।२६९२।।

उठो पुत्र कहा करो चरित्र । तेरी बाट जोवैं सब मित्र ।।
चन्द्रहास रावण पै खडग । तुम चाहो लियो वह मांगि ।।२६९३।।

चन्द्रनखा की राम लक्षमण से भेंट

बहुरि संभल करि बोलैं मात । देखु मैं किण कीधा घात ।।
राम लक्षमण कुं देखे कही । इन मेरया सुत मारया सही ।।२६९४।।

देखि रूप सो भइ आसन । धन्य वह नारि ज्यासौं ए रतन ।।
चन्द्रनखा रोवै तिण वार । सीता आय पूछी तिण सार ।।२६९५।।

किण कारण तू रोवै घणी । कहो सांच काहे अणमणी ।।
चन्द्रनखा बोलैं तव वैन । मेरा जीव कुं महा कुचैन ।।२६९६।।

मात पिता मेरे को नांहि । अब में गही तुमारी छांह ।।
जे लक्षमण मोकूं करै व्याहु । तुम जाई समझावो ताहि ।।२६९७।।

नहीं लक्षमरण नैं इच्छा करी । मान मंड थई विद्याधरी ।।
चढि विमाण लंका को गई । रामलक्षरण मन ऐसी भई ।।२६६८।।

जो इच्छै थी चन्द्रनखा, लक्षमण घरी न चित्त ।।
कुमति विचारैं अति घणी, कवण चहै त्रिय हित्त ।।२६६६।।

इति श्री पद्मपुराणे संबुकबध विधानकं

३८ वां विधानक

चौपई

चंद्रनखा का खरदूषण के पास जाना

चंद्रनखा पहुंची निज भूमि । कपडा फाडि मचाई धूम ।।
खोस्या केस लगाई षेह । नखतैं सब वीलरी देह ।।२७००।।

इण विध खरदूषण पैं गई । सोगवंत तिहां बोलत भई ।।
पूछै पति सांची कहो बात । तो कूं किसै कही अवदात ।।२७०१।।

जिन वरांक तेरा किया सूल । वाका मरणां आया मूल ।।
जे यह छिपैं जाइ पाताल । मारूं घेर ताकूं ततकाल ।।२७०२।।

चंद्रनखा कहे दंडकारण । तिहां संबूक गया तपकरण ।।
सूरजहास खडग तिहां लह्या । रहैं भूमिगोचरी तिहां ।।२७०३।।

मेरा पुत्र उनु मारिया । मोसूं घणी करी है प्राणीया ।।
मैं तो घणी करी पुकार । कोई सहाय भयो न तिण बार ।।२७०४।।

हूं अबला वह पुरुष सरीर । कैसे उनसौं हुवै धीर ।।
सत राखन बहुतेरा करथा । एक बटोही तिहां दिठ परथा ।।२७०५।।

उन मोकूं तब दइ छुडाय । मेरा सील रहा इण भाइ ।।

खरदूषण का कुपित होना

खरदूषण कोप्या सुंण बात । चउदहै हजार भूपति संघात ।।२७०६।।

चउदह सहस्र मंगल तसु डोर । हय गय पायक रथ बहु और ।।
मंत्री सूं पूछै तब मंत्र । मंत्री मंत्र कह्यो तिण मंत ।।२७०७।।

बारह वरष कंवर तप किया । लक्षमण आवत ही पण लिया ।।
सेवा करैं देवता घणे । वासौं जुध किया किम बणै ।।२७०८।।

जौ तुम जुध करण की बात । भेजो दूत दशानन पास ।।
एकठा होय सेन्यां बहु लेय । तब तुम वासौं जुध करेय ।।२७०९।।

रावण के पास दूत भेजना

इतनी सुणि भेजा तिहां दूत । रावण पासि जाय पहुंत ॥
सोलह सहस मुकटबंध जुडे । हाथ जोडि प्रभु आगे खडे ॥२७१०॥
दस सिर बीस भुजा बलवंत । चन्द्रहास खडग सोभंत ॥
असक्त बांण गदा तसु पास । इन्द्र समान विभव बल तास ॥२७११॥

खरदूषण का दंडक वन पहुंचना

खरदूषण बेटा कै मोह । बहुरि उठा नारी का छोह ॥
वडे झुझारू चढे विमांण । दंडक वन ते पहुंचे आंण ॥२७१२॥
सुण्यां देव नंदीश्वर ज्याइ । कै कोई दुरजन चढ आव ॥
कै कोई गरुड चढै आकास । रामचंद्र इम बोलैं भास ॥२७१३॥
देखे दल नांगी तलवार । वज्रावर्त्त धनुष संभार ॥
सुर जहां सरकत सौ भरया । एक मनुष्य विडे तल मरया ॥२७१४॥
उन अस्त्री उनके घर जाइ । कह्यो सकल व्योरी समझाइ ॥
ता कारण चढि लाए घणां । अत्रै सावधान हुवां ही वण्यां ॥२७१५॥
सुण्यां सवद सीता निज कांन । रामचंद्र सुं लिपटी आंन ॥
बहुत सोर काहे ते होइ । केसरी सिंघ दहाडै कोइ ॥२७१६॥
लक्ष्मण तव करै वीनती । तुम सीता संग छोडो मती ॥

लक्ष्मण द्वारा युद्ध करना

इनसूं जाय करूं मैं युध । में हारूं तब लीज्यो सुध ॥२७१७॥
हार जाणौं तव पूरूं संख । तब कीज्यो तुम मेरा पक्ष ॥
सूरजहास खडग कर लिया । वज्रावर्त्त टंकार तब किया ॥२७१८॥
उततै छूटै विद्या बाण । बरछी धरसे गदा मेघ समान ॥
गोला गोली पडै अनंत । इततैं छूटैं बज्रावर्त्त ॥२७१९॥
लक्ष्मण कै लागै नहीं घाव । विद्याधर झुलैं तिण ठांव ॥
जैसे कमल सरोवर मांहि । असे मुंड भुवि मध्य तिरांहि ॥२७२०॥
हाथी घोडे पर्वत ढेर । पडी लोथ सगलो वन घेर ॥
झूझे सुभट स्वामि के काज । जिनकूं धान खाये की लाज ॥२७२१॥

रावण का आगमन

रावण सुणि आयो तिण बार । पहुंच्यो दंडकवन है मंझारि ॥
रामचंद्र सीता बैठारि । रावण दृष्टि सीता पर डारि ॥२७२२॥

सीता को देखना

सीता की देखी छबि घणी । ते मुख गोचर जाइ न भणी ॥
जे सीता के नख की कांति । असी नहीं मंदोदरी गात ॥२७२३॥

जुध तणी गति गयो भूल । उपजी कुबुधि मरण अनुकूल ॥
करै सौच सीता किम हरूं । मैं तो सील महाव्रत धरूं ॥२७२४॥

सीलव्रत टालों किण भांति । सोचैं घणा बणै नहीं बात ॥
अब लग में नहीं करी अनीत । छोडूं नहीं धरम की रीत ॥२७२५॥

अब जो सुणै दूसरा कोइ । तो अपलोक प्रथी पर होइ ॥
जो मैं छोडूं असी नारि । तो बिरहानल सहूं अपार ॥२७२६॥

असी विध याकूं ले जाउं । कोई न समझै मेरा नांव ॥

करणगुप्ति विद्या का ध्यान करना

करणगुपति विद्या संभारि । विद्या बोली बात विचारि ॥२७२७॥

रामचंद्र सीता के पास । लक्षमण जुध करैं वन नास ॥
रामप्रतैं असी हरि कही । मेरी हारि तबैं जाणों सही ॥२७२८॥

संख नाद सबद मैं करूं । तब तुम आपणा चित मैं धरूं ॥
करके नाद तब ऊपरि आइ । लक्षमण एम गये समझाइ ॥२७२९॥
जै तुम संखनाद करो भरपूर । रामचंद्र उठि आवैं सूर ॥
तब तुम तुम सीता हर ले जाव । इण प्रकार तुम करो उपाव ॥२७३०॥

रावण द्वारा शंखनाद करना

छोड्यो वांण भयो अंधकार । सिंघनाद पूरयो चिघार ॥

राम का लक्षमण के पास जाना

नाद करत रघुपति सांभल्यो । रामचंद्र लक्षमण ढिग चल्यो ॥२७३१॥

रावण द्वारा सीता हरण

खोटा हुवा राम ने सौंण । सीता ले रांवण करै गौण ॥
पुहप विमांण ले बैठा चल्यो । निकले मनि पाप विचार न करयो ॥२७३२॥

सीता का विलाप

सीता राम नाम उर जपै । लौंचै केस देह अति कंपैं ॥
रे पापी कह तू है कौण । मोकौं लेना चाहै जिम पौंन ॥२७३३॥

जटायु द्वारा आक्रमण

रोवैं सीता पीटैं निज देह । जटा पंषी आक्रमं करै एह ॥
मारै चोंच रावण के सीस । नष सौं चूंथ करै बहु रीस ॥२७३४॥

चलै रुधिर रावण के मुख्ख । जटा पंषी दीयो अति दु:ख ।।
रिस करि रावण पंषी गहा । तोडी पंख छेदन दुख सहा ।।२७३५।।
नांखि दियो पड्यो धरती आय । अधमुवा सुसै तिण ठांय ।।

रावण द्वारा खेद करना

सीता देख करत विल्लाप । रावण धुणै सीस निज आप ।।२७३६।।
अनंतवीरज स्वामी अरहंत । तिणपै लियो सील इणभंत ।।
कवण कुबुधि उपजी मो चित्त । परनारी सो लगाया हित्त ।।२७३७।।
पतिव्रता है सीता सती । इसके मन में पाप न रती ।।
छोडि राज मैं दिख्या लेहुं । उपजु वैराग विचारै भेव ।।२७३८।।
याने ले लंका मैं जाउं । बिन बांछा मैं संग न करूं ।।
इसकी इच्छा होवै जबै । करूं संग मिलाप मैं तबै ।।२७३९।।
मांही तो यह पुत्री समान । इह विचार पहुतो निज थान ।।
लक्षमण रामचंद्र सों कहैं । तुम क्यों आए वहां कुण रहै ।।२७४०।।
मैं तो सब दुरजन संहार । खरदूषण को मार्यो डार ।।

राम का विलाप

रामचंद्र तब बोले बैन । सिंघनाद सुणि भया कुचैन ।।२७४१।।
रामचंद्र फिर आये तिहां । सीता दृष्टि पडी नहीं वहां ।।
खाय पछाड धरती पर गिरे । सीतां सीतां मुख तैं करै ।।२७४२।।
फाडे वस्त्र सिर केस खंसोट । गह्यो धनुष किस पर करै चोट ।।
वन बेहड सरवर अरु वृक्ष । कहीं न देखी सीतां प्रतष्प ।।२७४३।।
जटा पंखी मारग में पड्या । सास उसास ले चाहै मर्या ।।
पंच नांम संभलाए कांन । जटा पंषी का भया प्रांन ।।२७४४।।
सीता तुमते रही रुठि । वह तो नाद सबद था झूठि ।।
हम कु तुम कहा देहो दुख । उठि आवो देखो तुम मुख ।।२७४५।।
व्याकुल भया रघुपति का मन । रुदन करत तब भ्रमिमो बन ।।
दोइ भाई तीजी सीता संग । भयो विछोह जीव का भंग ।।२७४६।।
हेर्या वन हेरी सब खोह । रामचंद्र ने व्याप्या मोह ।।
बहुत वियोग भया तिण बार । उठै लहर तब खायं पछाड ।।२७४७।।

दूहा

जैसा दुख रघु नैं भया, कहां लग करूं बखांण ।।
चित भरम्या त्रिभुवन धणी, भल्या सकल सयांण ।।२७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सीताहरण रामविलाप विधानकं

३६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण खरदूषण युद्ध

लक्षमण खडदूषण सों जुध । कायर देख रही ना सुध ।।
सूरवीर मन करैं उलहास । सुर नर असुर करैं जैकार ।।२७४९।।

विराधित चन्द्रोदिक का सुत । विद्याधर सेना संजुत ।।
लक्षमण को कीयो नमस्कार । विनयवंत हूं बारंवार ।।२७५०।।

प्रभुजी मुझ को आग्या देहु । दुरजन दल नाषु करि षेहु ।।
लषमण विद्याधर प्रति कहैं । मेरा पराक्रम अब तू लहैं ।।२७५१।।

देख जु इनकूं परलय करूं । खडदूषण जम मंदिर धरूं ।।
विद्याधर सब विस्मय होय । या सम दूजा बली न कोय ।।२७५२।।

धन्य धन्य करि विनती करैं । खडदूषण सौं जे तुम लडैं ।।
सब सेना बाकी मैं हणूं । अपने आगैं अवरन गिणूं ।।२७५३।।

विद्याधर विद्या संभालि । खडदूषण के सेनापति का काल ।।
वा सनमुख विद्याधर हुआ । पायक सों पायक लडि मुवा ।।२७५४।।
रथ सूं रथ टूटैं गिर पडैं । हाथी सूं हाथी तिहां भिडैं ।।
खडदूषण विद्या संभालि । गर्दभ मुख कीया तिण बार ।।२७५५।।

बडी दाढ भयदायक घणां । कहैक तैं मेरा सुत हणां ।।
अब मैं लेस्यूं सुत का बैर । चंद्रनखा विगोई तैं घेरि ।।२७५६।।

अब तुम को भेजूं जम पास । तो कूं अवर जनम की आस ।।
खैंच चलायो कात्रिक बांण । लक्षमण कैं लाग्यो आई कांण ।।२७५७।।
लक्षमण कहै सुणि रे तू गंवार । तू तो गदहा को उणिहार ।।
सिंघ गदह सरभर किम होइ । अब तूं आया आपा खोइ ।।२७५८।।
मार्यो बाण लखण नैं खैंचि । टूट्या छत्र निसान रथ पैंच ।।
खरदूषण धरती गिर पड्या । गहि तरवार भूमि पर पड्या ।।२७५९।।

लक्ष्मण की खरदूषण पर विजय

लखमण सुरजहास संभार । मार्या खरदूषण भूपाल ।।
ज्यूं माखी उडि जांय बयार । त्यौं सब सेन्या भागी हार ।।२७६०।।

जीत्या लक्षमरण जै जै थई । पुष्प वृष्टि लक्षमण पर हुई ।।
आया रामचंद्र कै थांन । देख्या सोवत चिंता भई आन ।।२७६१।।

सीता नहीं देखी तिरण ठौर । मनमें चिंता व्यापी और ।।
रामचंद्र जगायो जाय । पूछी चिंता खबर सुभाय ।।२७६२।।

रामचंद्र बोले तिरण बार । किण ही चोरी सीता नारि ।।
कै कोई सिंघ गया है खाय । कै छल करि ले गया कोई राय ।।२७६३।।

लक्ष्मण का विलाप

लक्षमरण करै बहोत विलाप । कवरण कर्म तैं भयो संताप ।।
वन मैं आय लिया आश्रम । कोई उदय भयो अशुभ कर्म ।।२७६४।।

इहां हुवै है सीता का हरण । पावै नहीं तो पूरा मरण ।।

विद्याधरों का आगमन

विराधित विद्याधर तिहां आय । रामचंद्र कै लाग्या पाइ ।।२७६५।।
रामचंद्र पूछै इह कौंन । इनूं कितही तै कीया गौंन ।।
लक्षमरण नैं महिमा करी घणी । या की कीर्त्त जाई न भणी ।।२७६६।।
मो कूं कीनी बहुंत सहाय । चंद्रोदित सुत विराधित राय ।।
लक्षमरण विद्याधर सूं कही । तुम सीता कूं ढूंढो सही ।।२७६७।।
जो नहीं सीता की सुध होई । हम दोन्यां मे बचै न कोइ ।।

चारों ओर दूत भेजना

कनकजटी का रतनजटी पुत्र । ठांम ठांम पठाए दूत बिचित्र ।।२७६८।।
रतनजटी सुणियां इह बोल । राम राम करि पुकारै रोल ।।

रावण के पास जाना

तिहां जाइ रावण कूं घेर । पापी ल्याव सीता इण बेर ।।२७६९।।
रामचंद्र त्रिभुवन जगदीस । अब तूं जाइ नवावो सीस ।।
तेरी लंका होइ विणास । इम भासै विद्याधर तास ।।२७७०।।
तो तूं जीवैगा दिन घणे । नाहीं तोकूं जीवत हणैं ।।
भयो जुझ रावण सुं तिहां । रावण सोच करै है जिहां ।।२७७१।।
इसकै साथ सेन्यां है घणी । मैं एकाकी सुं असी वणी ।।
माया सों सीता मृत करी । रतनजटी इह चिंता धरी ।।२७७२।।
या कारण आयो इस ठौर । सीता मुई करि दुख अति जोर ।।
रावण प्रतैं लगाऊं हाथ । वा को बांध ले जाऊं साथ ।।२७७३।।

रे पापी रावण बुधि हीण । इह तो बहन भामंडल की बीण ।।
तेरा काटैगा दस सीस । तोड़ैगा तेरी भुजा सब बीस ।।२७७४।।

रावण नैं तब मार्या बाण । रतनजटी तब पड़्या समुद्र में आंण ।।
पंच नाम का सुमरण किया । समुद्र तिर बाहर आइया ।।२७७५।।

कपि द्वारा देखना

कपि पर्वत परि उभो भयो । रावण लंका में तब गयो ।।
बिराधित नैं ढूंढी सब दिसा । सीया न लाधी मनमे संसा ।।२७७६।।

सब फिर आये नीची दृष्टि । राम लखन नैं व्यापियो अति कष्ट ।।
बिराधित नैं बोलैं रामचन्द्र । पूरब भव के खोटे बृन्द ।।२७७७।।

असुभ उदय हम पाये दुःख । तुम मो काहि न वांछउं सुख ।।
अवर फिरे तुम ज्याऊं देस । मेरा तुम मान्यां उपदेस ।।२७७८।।

सकल हमारे कर्म की चाल । तुम चिंता मति करो भूपाल ।।
विराधित बोलै विनती करैं । प्रभू अपणे संसय परिहरे ।।२७७६।।

दीप अढाई ढूंढैं जाइ । तुमकौं सीतां देहां आइ ।।
इक चिंता इक मनमें घणी । तुम खरदूषण ग्रीवा हणी ।।२७८०।।

अलंका गढ में पहुंचना

रावण कुंभकर्ण बलिवंत । भभीषण इन्द्रजीत सामंत ।।
मेघनाद में बल अपार । किषंदपुर सुग्रीव अंगद गुण सार ।।२७८१।।

किषंदपुर नल नील हणुमान । ए तुमसौं करि हैं घमसांन ।।
चलहु अलंका गढ लेहु । संद कुंमर निकाल कैं देहु ।।२७८२।।

पवन भामंडल विद्याधर राव । वे सब आगे हैंगे आव ।।
दोय रथ समराउ भले । लक्ष्मण राम अलंका चले ।।२७८३।।

जाइ अलंका गढ ले लिया । चंद्रनखा सुत काढिकैं दिया ।।
वे पहुंचे रावण के पास । राम कहै भलो बनवास ।।२७८४।।

सीता बिन सब देस उजाड । रामचंद्र चितवैं उपगार ।।
श्री भगवंत का तिहां देहुरा । पूजा करी भाव सुं खरा ।।२७८५।।

अष्ट द्रव्य सूं पूजै पांय । दुख संताप गए बिलाइ ।।
इण विध रहैं अलंका मांहि । सीतां कारण चित कराहिं ।।२७८६।।

दूहा

असुभ कर्म परभाव तैं, वाधी चिंता बेल ।।
जो कछु लिख्यो ललाट में, ताहि सकैं कुण पेल ।।२७८७।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता वियोग विधानकं

४० वां विधानक

चौपई

रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति

रतनजटी कंबु पर्बत थित्त । रावण देखे दक्षिण भयो चित्त ।।
मद चाल से चलै विमांण । रांवण लग्या कांम का बाण ।।२७८८।।

सीता प्रति बोलै आधीन । मुख दिखावो मोकूं परवीन ।।
जे मोकूं दर्शन नहीं देहु । मेरे प्रांण छुटैंगे अबेह ।।२७८९।।

तुम कारण प्राण मम जांहि । इह तो पाप सगलो तुम थाय ।।
तपसी कहा रांम लक्षमणा । तिनका दुख मानै मत घणां ।।२७९०।।

कहां अजोध्या तिनका घणी । वनमें रहूं तपसी रूप खुध्या घणी ।।
मैं तो नरपति सक्र समान । इछो सो पावो मन मांहि ।।२७९१।।

सर्व प्रथई पर है तुम राज । करो भोग मनबंछित काज ।।
जे तूं मेरा कोरा सिर मै देइ । तो मै मनतैं तजूं सनेह ।।२७९२।।

सोलह सहस्र राणियां मझार । तुझै पटराणी करूं सिरदार ।।
तुमकूं फेंर दिखाउं सुमेर । देखो यह सागर वहु फेर ।।२७९३।।

एह सुख देखो छंडो सोग । राजरिध का भुगतो भोग ।।

सीता का करारा उत्तर

सीता कहै सुणरे पापीष्ट । जे तू खोवै खोटी द्रष्ट ।।२७९४।।

जे तूं फरसै मेरी देह । ज्यूं सराफ तू होवैगा षेह ।।
परनारी भगतैं ने मूढ । पडै नरक दुख सहै अटूट ।।२७९५।।

मेरे रामचंद्र का ध्यान । उन बिन ततक्षण तजौ परांण ।।
राम बिना जितनां नर और । मेरै तात भ्रात की ठौंर ।।२७९६।।

हस्त प्रहस्त खरदूषण का लोग । चालकेत महाखेड कै मन सोग ।।
गिरवा नरष भूपति मिले आइ । खरदूषण तिहां झुझै राई ।।२७९७।।

रावण निकट आयकैं मिले । खरदूषण की सुणी पर जले ।।
गुण ग्रीवाहर रछ बाग । तिहां फल फूल रहे थे लाग ।।२७९८।।

अशोक वाटिका में सीता को रखना

असोष वृक्ष तले सीता राखि । चन्द्रनखा बिनवै सहु साखि ।।
खरदूषण संबूक को मारि । हमैं पताल तैं दिया निकारि २७९९।।

चन्द्रनखा का रावण से निवेदन

रावण चन्द्रनखा ने कहैं । तुम्ह उपाय ए फल लवे ।।
एता सब तुम्ह भया उपाय । मारया खरदूषण सा राव ।।२८००।।

गांव देस्यां तू बैठी खाइ । अपणां तन मन राखो ठांइ ।।
ग्रैसी कहैं अंतहपुर जाइ । सेज्या पोढ़े व्याकुल काइ ।।२८०१।।

मंदोदरी द्वारा रावण से पूछना एवं रावण का उत्तर

मंदोदरी पूछै कर जोडि । दुचिते कहा भए तुम खोडि ।।
रावण कहै सीता की बात । हरि लीयो वाकुं इस भांति ।।२८०२।।

खरदूषण संबुक कुमार । लक्षमण ने वे मारे डारि ।।
अवलोकिनी विद्या ने पूछ । वन मो बताई सगली गुह्य ।।२८०३।।

मैं वाकी सीता को हरी । वाहि विछोहा कंत की पडी ।।
वाकै राम नाम की जाप । अन्नपाणी बिन सहै कलाप ।।२८०४।।

ग्रैसी चतुर दूती जो होइ । वा कूं जाय समझावै कोइ ।।
मो सेती जो मानै रत्ति । तो मेरे जीय की मिटै चित ।।२८०५।।

वा बिन ए जात हैं प्रांण । सुध बुध मुजि गई सब स्याण ।।
मंदोदरी मन करै बिचार । करूं उपाव तो बचै भरतार ।।२८०६।।

दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास

दूती सुघड विचक्षण नारि । वा कौं ततक्षण लहै हकार ।।
सीता नैं समझावो जाय । अन्नपाणी जो अब ही खाय ।।२८०७।।

रावण तीन खंड का धणी । राम लक्ष्मण तपसी मुणी ।।
उनकै कारण क्या इतना दुःख । करो भोग भुगतो सब सुख ।।२८०८।।

दूती चली प्रीवारव ठांव । सोभा देखी नंदनवन भाव ।।
भले वृक्ष बेल बहु बणी । नामावली न जाये गिणी ।।२८०९।।

इन्द्रलोक सम उपवन बन्या । सीता सबद असोक तलि सुन्यां ।।
आ मुख राम नाम का ध्यांन । ताकै चित्त न आवै आन ।।२८१०।।

दूती जस रावण का गाय । करै नृत्य बाजित्र बजाय ।।
सीगल तजै न देखै तिया । अति पतिव्रता जनक की धिया ।।२८११।।

दूती दूत कर्म सब किये । सीतां कै कछु नांही हिए ।।
हाव भाव दिखलावे घने । मन नहिं मानैं सीता तने ।।२८१२।।

दूहा

दूती फिर आई सबैं, किये बहुत उपचार ।।
सत राखैं करतार सुं, कवण दुलावण हार ।।२८१३।।

चौपई

रावण की व्यकुलता

रावण सूं दूती कहै वयण । सीता तो खोलै नहीं नयण ।।
अन पांणी तजि लियो संन्यास । ऊंचे नीचे लेत उसास ।।२८१४।।
बहुत भांति समझायी ताहि । मंत्र जंत्र कछु लागे नांहि ।।
सुणी वात रावण अकुलाइ । हाथ मसलकर बहु पछताइ ।।२८१५।।
खिण बाहर खिण भीतर जाइ । ता कै चित्त कछु न सुहाइ ।।
भ्रम्या चित्त सब सुध बीसरी । चिंता मिटै न एकै घरी ।।२८१६ ।
भभीषण च्यारु मंत्री ते डाय । बैठि मतो इंण भांति उपाइ ।।

मन्त्रियों द्वारा विचार

रावण क्यां तै विभल हुयो । वाको कछु भेद न पाइयो ।।२८१७।।
सुभन मंत्र मंत्री इम कहै । खरदूषण के सोग मे रहै ।।
इह आश्चर्य विचारै खरा । बारह वरष संबुक तप करया ।।२८१८।।
सूर्यहास खडग तब लह्या । लक्ष्मण नैं पल ही मे गह्या ।।
वे दोन्युं थे मेरी वाह । असा मारया छिनकै मांहि ।।२८१९।।
ता कारण रावण दुख करै । भ्रम्या चित्त सुधि बुधि बीसरैं ।।
पचमुख दूजा मत्री कहै वैन । रावण को इस विध नही चैन ।।२८२०।।
लक्षमण एक खरदूषण दल घणां । उन तो सब सेन्या वल हन्यां ।।
खरदूषण मार्‌या संबूक । तातैं होइ रह्या है मूक ।।२८२१।।
सह आमती तीजा मंतरी । उनतो समझि बात कही खरी ।।
अश्वग्रीव प्रतिनारायण हुआ । सुप्रतिष्ठ नारायण नै ष्यो किया ।।२८२२।।
अब यह लक्ष्मण है अति बली । खरदूषण की सेन्यां दली ।।
वाकै सेन्यां जुडत न वार । रावण के मन इसो विचार ।।२८२३।।
चाथा मंत्री बोलै विनयवंत । विराधित विद्याधर बलवंत ।।
वह तो रामचंद्र सुं मिल्या । वाका हित सुग्रीव सों मिल्या ।।२८२४ ।
उसका मित्र बली हनुमान । रामचन्द्र सों मिलि है आन ।।
तो लंका टूटै तिह घडी । ऐसी बात चित्त में धरी २८२५।।

सुग्रीव राज भ्रष्ट जो करैं। लंका परि हथनांला धरैं ।।
सूर सुभट राखें चिहु ग्रोर। सुग्रीव राज छुडावो ठौर ।।२८२६।।

विद्याधर इक किषंदपुर गयो। तारा राणी सुं ग्रासक्त भयो ।।
सुग्रीव दियो देस तैं काढि। सूरज के सुत चिंता बाढि ।।२८२७।।

बहुत सोच दुहुं घां बणी, निसबासर इह ध्यांन ।।
रामचंद्र सीता धणी, बणी कहा ग्रब ग्राणि ।।२८२८।।

इति श्री पद्मपुराणे माया पुकार विधानकं

४१ वां विधानक

चौपई

राम सुग्रीव मिलन

किषंध नगर सूरज रज भूप। ताको पुत्र सुग्रीव स्वरूप ।।
तारा राणी ताकै पटधणी। ग्रंगद पुत्र बल सोभा घणी ।।२८२६।।

सुग्रीव दंडक वन मांहि ग्राय। देखी लोथ पडी तिरण ठाय ।।
बटोही पूछ्र सुण्यो सब भेद। भयो सोच मन में ग्रखेद ।।२८३०।।

मेरे मन इच्छा थी ग्रौर। खरदूषण झुझ्या इस ठौर ।।
ग्रब हूं मता कवरण सूं करूं। रावरण की सरणागति परूं ।।२८३१।।

बहुरि विचार करै सुग्रीव। जो मोकूं बांधै दस ग्रीव ।।
रामचंद्र सों जाकर मिलूं। तो मैं राज लहूं निरमलूं ।।२८३२।।

सात क्षोहणी दल सुग्रीव के संग। जाकै भयो राज में भंग ।।
राम लक्षमरण पैं गयो सुग्रीव। करि डंडोत नवाई ग्रीव ।।२८३३।।

मलिन रूप सुग्रीव कूं देखि। पूछैं रघुपति ताहि विशेष ।।

राम के द्वारा सुग्रीव के सम्बन्ध जानकारी पाना

विराधित सूं पूछयो विरतांत। सुग्रीव दुखित है सो कहि भांति ।।२८३४।।

विराधित बचन कहै समझाय। किषंधपुर नगरी का राव ।।
मायारूपी विद्याधर एक ग्राय। सुग्रीवरूप ग्रंतहपुर जाय ।।२८३५।।

तारा राणी करै विचार। इह तो है ग्रवरैं ग्रणुंहार ।।
किंकर तब ही लिए बुलाय। कही बेग सुग्रीव पै जाइ ।।२८३६।।

वन क्रीडा कूं भूपति गयो। मेरे मन एह संसय भयो ।।
किंकर दोड्या वनह मझार। दुचिता देख्यो भूप तिरण बार ।।२८३७।।

सोचैं नृप किंकर कूं देखि । अंगद गया मेर दक्षण विसेष ।।
वाकूं लावैं कछु इक बार । तो इहै आया इसैं विचार ।।२८३८।।

कै मन कुंवर भयो वैराग । दिष्या लेहै ग्रह कुं त्याग ।।
कै तारा राणी दुख दिया । यह कारण हूं दुखिता भया ।।२८३९।।

पहुंच्या किंकर विनती करी । प्रभू चलो उठि या ही घडी ।।
एक अचंभा देख्या आज । तुम सूरत कोई आयो राज ।।२८४०।।

अंतहपुरी कियो परवेस । राणी तुमसौं किया संदेस ।।
राजा आयो नगर मझार । दरबानैं रोक्या तिणवार ।।२८४१।।

अटक वचन मुख सेती कहै । राजा धंस्या तिहां यह लहै ।।
अपणी सूरत देख्या और । दोनूं भूप करै तिहां सोर ।।२८४२।।

मंत्री सोच मता इह किया । अंगद प्रतैं राज पद दिया ।।
वे दोन्यु नृप दिया निकाल । बाढी मनमें चिंता जाल ।।२८४३।।

जब लग समझ पडै कछु नहीं । तब लग राज तुमारा सही ।।
बिराधित दुजाइ हणुमंत । उनै न पाया इनका अंत ।।२८४४।।

ए दोन्युं एकं उणिहार । इनका न्याव नही निरधार ।।

राम द्वारा सुग्रीव को राज देना

रामचंद्र की क्रिपा भई । सुग्रीव भूप को उपमा दई ।।२८४५।।

तुमारे दुसमन को मारौं ठौर । अपणो कीज्यो राज वहोरि ।।
जो न सुधारौं तेरा काज । तो मैं दिष्या लेस्युं आजि ।।२८४६।।

धिग धिग इण संसारी रीत । ता कारण ऐसी विपरीत ।।
जैसा दुःख तुझै तैसा मोहि । हूं अब देस साथ द्यो तोहि ।।२८४७।।

तूं भी करो हमारा काम । सीता ढूंढ सुणावो ठाम ।।
कहै सुग्रीव सात दिन मांहि । वाकी सुधि पहुंचाऊं आहि ।।२८४८।।

सात दिवस मैं जो मोहि काम न करों । तो हूं अगनि मांहि जल मरूं ।।
भेज्यो दूत बिट सुग्रीव पास । वहै चढि आया जुध की आस ।।२८४९।।

दोनु तरफ दारुण जुध भया । सुग्रीवैं गदा मारि घर गया ।।
निर्भयवंत ते भया अडोल । ह्यां सुग्रीव बैठ्या फिर बोल ।।२८५०।।

रामपास इक दूत पठाइ । मेरी मदद करो जो आय ।।

सुग्रीव की विजय

उंन तो मारि किये चकचूर । मो सूं जुध भया भरपूर ।।२८५१।।

रामचंद्र सेना बहु जोडि । विट सुग्रीव परि दीनी दोड ।।
चढि दोडूया इन सनमुख प्राइ । बाजा मारू सबै बजाइ ।।२८५२।।

दोन्यू छोडे विषा बांण । बहुतां का उड गये परांण ।।
रामचंद्र भय करै न गात । विट सुग्रीव लडै इस भांत ।।२८५३।।

सुग्रीव राज पायो फिर देस । बहुत प्रानंद सुख लह्यो नरेस ।।
रामचन्द्र का महोछव किया । तेरह कन्या भेट ल्याइया ।।२८५४।।

सुग्रीव द्वारा तेरह कन्याओ को भेंट में देना

चन्द्राभान हृदया प्रावली । हिरदै दया धर्म की भली ।।
अनधरा नाम चउथी श्रीकांति । सुंदरवती चन्द्रसम कान्ति ।।२८५५।।

मनोवाहनी च्यारू सिरी । मदनोत्सवा गुणवंती खरी ।।
पदमावती जिनवती बहुरूप । गुण लावण्य अति दिसै अनूप ।।२८५६।।

पुन्य संजोग मिली ए नारि । रूप लक्षण गुण अगम अपार ।।
रामचंद्र कूं करि डंडोत । सगलां विनती करी बहोत ।।२८५७।।

देस देस के आये राय । कोई नही हम द्रष्टै आइ ।।
तुमारी सेवा हम करि हैं भली । बहुत भांति होसी मन रली ।।२८५८।।

श्री रामचंद्र पुनिवंत धरम अवतार हैं ।
पुंन्य गुण बल रूप लह्यो अणपार है ।।
कनक वरण कामिनी कै मन चाव है ।
हरी जु सीता नारि असुभ पर भाव है ।।२८५९।।

इति श्री पद्मपुराणे विट सुग्रीव विधानकं

४२ वां विधानकं

चौपई

कन्याओं के हाव भाव

कन्या सकल परम परवीण । ताल मृदंग बजावैं बीण ।।
कैई गावैं कैई नृत्य जु करैं । नो तन तान से कारैं खरैं ।।२८६०।।

रामचन्द्र का कुल्या न चित्त । अधिक सोच सीता को नित्य ।।
कामनी हाव भाव बहु किया । मन कै कछु न आई हिया ।।२८६१।।

राम लछमण बोले तिह बार । सुग्रीव अपनुं काज संभार ।।
अपणैं सुख की मानैं रुचि । सीतां का कछु करै न सोच ।।२८६२।।

राम लक्षमण किषंदपुर जाइ । सुग्रीव सौं बात कही समझाइ ।।
सुग्रीव आय चरण कूं नया । प्रभुजी मोह ऊपर कीजे दया ।।२८६३।।
असैं सीता सुधि ल्याऊ तोहि । तब मैं करूं तुमारी सेव ।।
रामचंद्र सुग्रीव सूं कहैं । इह संसय मेरे मन रहै ।।२८६४।।
मोह फंद में बिसर गयो सूध । अब में असी थापुं बुधि ।।

अक्षदत्त द्वारा माता प्राप्ति की कथा

ज्यों अक्षदत्त नै माता लही । तारा इण मुनिवर नैं कही ।।२८६५।।
अक्षदत्त किम पाई माइ । ते विरतांत कहो समझाइ ।।
अंजन नगर भूप तिहां यक्ष । राजलदे नारि उत्तम पक्ष ।।२८६६।।
यक्षदत्त वेस्या के ग्रेह । देखं कौतिग धरं सनेह ।।
दमंत्रवती ताकै निज वसै । अक्षदत्त तासूं नित हंसै ।।२८६७।।
तारायण मुनिवर यह देख । अक्षदत्त समझाया प्रेष ।।
इह तो तुझ माता परतक्ष । कहा अग्यांन भया दत्तदक्ष ।।२८६८।।
कुंवर भणं कैसे इह मात । व्योरा सुं भाषो ते बात ।।
मुनिवर कहैं मृतकवती देस । कनक महाजन सुण उपदेस ।।२८६९।।
धरणी नाम तास की नारि । धनदत्त पुत्र लियो अवतार ।।
दमंत्रवती व्याही अस्तरी । रूप लक्षण सौं सोमैं खरी ।।२८७०।।
धनदत्त चाल्यो लाद जिहाज । दमंत्रवती नै सौंपी लाज ।।
रत्नकवल दे तिसको गया । दमत्रवती सुं गर्भ स्थित भया ।।२८७१।।
सासु सुसरं दई निकाल । उत्पलका संग दीनी नारि ।।
रोवत चली साह की बहु । कोय न बैठन देवै कहूं ।।२८७२।।
विणजारै संगि दुख सौं जाइ । वनफल कबहु भोजन खाइ ।।
उत्पल दासी भुयंगम डसी । देह छोडि जम मंदिर बसी ।।२८७३।।
रही अकेली दुखित घणी । असुभ कर्म तैं असी बणी ।।
भयो पुत्र अति चिंता करी । में तो सुत जनम्यौ इस घडी ।।२८७४।।
जे राखुं तो पालूं किह भांति । रत्नकंबल में लपेटी राति ।।
जक्षराय को दीया पूत । जक्षदत्त नाम संयुक्त ।।२८७५।।
दमंत्रवती को दीया दाम । वह ती रहै वेस्यां निज ठाम ।।
जे तेरै मन आवै नहीं । रत्नकंवल गांठ कीडी में सही ।।२८७६।।

जक्षदत्त सुणि दोडियो तुरंत । रत्नकंबल गठडी में बहुमंत ॥
माता सूं पूछया सब भेद । मनतें कुमति भई सब छेद ॥२८७७॥
धनदत्त सेती मिलियो कुमार । भयो आनंद सकल परवार ॥
इण विध तुम कौं सीता मिलै । सूर सुभट बुलाइयो भलै ॥२८७८॥

चारों ओर सीता की खोज

दीप अढाई मैं सब ठौर । बेगां जाइ करो तुम दौर ॥
जहां सीतां देखो तुम जाइ । तिहां की खबर बेगा द्यो आय ॥२८७९॥
देस देस को नरपति गए । सुग्रीव बहुरि चरण को नए ॥
प्रभुजी मोकूं आग्या होइ । मैं भी थानक सोधुं कोइ ॥२८८०॥
बैठि विमांण चल्यो सुग्रीव । कांबु पर्वत की आयो सींव ॥
रतनजटी विद्याधर तिहां । फरहर्त्ता देख्या नेजा तिहां ॥२८८१
इह किसकी धुजा फरहराइ । उतर भूमि तिहां देखें आइ ॥
रतनजटी डरप्या तसु देखि । इह कोई है दुरजन भेष २८८२॥

रतनजटी और सुग्रीव की भेंट

सुग्रीव भूप पूछै रतनजटी । ते कहि रावण सीता हरी ॥
मैं बहु तेरा किया उपाय । ता तैं कोई न लागो डाव ॥२८८३॥
राम का नाम जपै थी सिया । दुखित बहुत जनक की धिया ॥
सुनि सुग्रीव रतनजटी ल्याइया । बैठि विमाण राम ढिग आइया ॥२८८४॥

रतनजटी द्वारा लंका का परिचय

रतनजटी कीयो नमस्कार । बात सकल भाषी निरधार ॥
राक्षसपुर इस सायर मांहि । सातसै जोजन चौडाइ जाहि ॥२८८५॥
एक वीस जोजन की लंबाइ । त्रिकुटाचल नव जोजन चौडाइ ॥
पचास जीजन की उंचाइ । बा सम गढ नाहीं किण ठांइ ॥२८८६॥
तीस जोजन कै लंका फेर । रावण कुंभकरण ज्युं मेर ॥
भभीषण तैं दुरजन सब डरैं । इन्द्रजीत मेंघनाद बल धरैं ॥२८८७॥
पंद्रहसै क्षोहणी बल संग । इंद्रादिक कियो मान भग ॥
दस नगर बसैं ता पास । पुर्वा सुमेरपुर अहिलादपुर बास ॥२८८८॥
जोधपुर हरिपुर सागरपुरी । अबरसुर तिहां नगरी ॥
रावण सम भूपति कोई नांहि । ऐसे बचन सुणे नरनाह ॥२८८९॥

अइसी पईज कहा तुम करो । सीता तणो सोग परिहरो ।।
अवर विवाहो भुगतो भोग । कहा करो तुम इतना सोग ।।२८९०।।

राम कहैं सीता बिन और । करूं नारि प्राणन कौं ठौर ।।
रावण कूं भेजूं जमलोक । रहै सदा लंका में सोक ।।२८९१।।

जांबूनद मंत्री का कथन

जांबूनद मंत्री कहै वयन । अपने मन कूं राखो चैन ।।
सीता किसपै आंणी जाइ । रवि समान तपैं रावण राय ।।२८९२।।

जैसे बंदर मोर के काज । व्याकुल भयो छोडि सब राज ।।
अंसे तुम भरमुं हो राम । जिह भरम्या कछु सरै न काम ।।२८९३।।

बंदर मोर की कथा

पूछैं राम बंदर की बात । उसका मोर गया किह भांति ।।
बैनां नंदी चैनपुर नगर । सर्व रुचि रहै नांमी सगर ।।२८९४।।

गुण पूरणा बाकी अस्तरी । विनयदत्त जनम्या सुभ घडी ।।
अह लछमी परणाई नारि । जोवन बैस सुख भोग मझार ।।२८९५।।

विसालभूत द्विज सों बहु प्रीत । अहलछमी बीचारी विप्रीत ।।
द्विज सौं कही विनयदत्त कुमार । हम तुम सुख भुगतैं संसार ।।२८९६।।

ब्राह्मण मन में पाप विचार । विनयदत्त को लेगया अरण मझार ।।
बांधि नेज सौं ऊंची डारि । फिर आयो विनयदत्त के द्वार ।।२८९७।।

अह लछमी कूं जणाई सार । मैं मारया तेरा भरतार ।।
दोन्यू खुसी हुआ मन बीच । विसालभूत कीया कर्म नीच ।।२८९८।।

दया न समझ्या मारयो जजमान । जिसपै लेता नित उठि दान ।।
छुंदर सेठ वा वन में गया । वाहि तरु तलि ठाढा भया ।।२८९९।।

ऊंचे कूं देख्या विनयदत्त । चढया डाल परि दया निमित्त ।
खोलि दिया सर्व रुचि का पुत्त । वा कुं पहुंचाया घर जुत्त ।।२९००।।
ब्राह्मण सुत भाज्या तजि देस । सेठ घरे बधाई बहु भेस ।।
नउतन जनम पुत्र का भया । छुंदर के हाथ सुं मोर उडि गया ।।२९०१।।
राजकुमर नैं पकडयो मोर । छुंदर करै पुर में अति सोर ।।
विनयदत्त प्रतै छुंदर इम कहै । मो सेती तुझ प्राण ए रहै ।।२९०२।।
मेरा मोर कुंवर ने ग्रह्या । जब बहु तेरा मानै कह्या ।।
मेरा मोर छुडाय दे मो हाथ । मैं तो भला किया तुम साथ ।।२९०३।।

वह तो भूपति मह्नु वाध्यां सुंदर । कैसे चोर लहै वह भगर ॥
बिनयदत्त बोले तिण बार । हुं बाध्या इह राजकुमार ॥२९०४॥
कैसे कहूं राज सों आइ । अउर चोर लेहू मन ल्याइ ॥
वह तो चोर फिरणे का नहीं । एह बात हम तुझ सौं कही ॥२९०५॥
असा कवण बली है सूर । रावणस्यौ सरभर करै पूर ॥

लछमरण का कोधित होकर निश्चय प्रकट करना

इतनी सुंणि लखमरण कोपाइ । जो रावण में बल अधिकाय ॥२९०६॥
तो क्यूं उन चोरी सूं लइ । वा कुबुद्धि मरण की भई ॥
कायर डरपैं नपुंसक लोग । चोर अन्याई मानैं दुख सोक ॥२९०७॥
क्षत्री डर मरने का करैं । निश्चय जाय नरक में पड़ैं ॥
अब लौं रावण था बलवंत । बन मै जब लग बलवंत ॥२९०८॥
केहरि की जब सुणैं हुंकार । निरमद ह्वै नासैं तिण बार ॥
लखमण कहै इण परि उपदेस । राजसभा मैं सुण्यो नरेस ॥२९०९॥
कुसुमपुर नग्रप्रभा सेठ रहै । जमुनां त्रिय निसदिन सुख लहै ॥
आत्मसंशि ताकैं सुत भया । इक दिन बन क्रीडा कौं गया ॥२९१०॥
प्रथमसेन का दरसन पाय । सेव करी बहु मन वच काइ ॥
उन तपसी चुरा इक दिया । सर्व गुणों का परचा किया ॥२९११॥
राजा की राणी अहि डसी । गारुड गुणी जुडे गुण बसी ॥
औषध जतन लगै नहि काइ । आतम शक्ति राजा पै जाइ ॥२९१२॥
चुरा धोइ लिया पंच नाम । डसी थी ज्याचेती नृप धाम ॥
राणी का विष उतरा सुण्या । राय तणा मन रहस्या घणां ॥२९१३॥
आत्मशक्ति को दिया बहु साज । बहुत बिभव अर आधो राज ॥
कुछ लछमी गडी थी कहां । खोदण गया आत्मसक्ति तिहां ॥२९१४॥
अजगर लेकरि गया पाताल । देखि धोह तिहां धस्या भुवाल ॥
अजगर ने मारी फौंकार । उठै सिला मारया तिह बार ॥२९१५॥
लिया द्रव्य सर्व उन जाय । हम सीता छोडैं किण भाय ॥
जैसें उन अजगर कूं हण्या । तैसे हम मारेंगे रावणा ॥२९१६॥
लंका कूं करि हैं चकचूर । हम आगैं कहा रावण सूर ॥
सकल भूपती बोले वयण । सुणौं प्रभू राखो चित्त चैन ॥२९१७॥
दीप धातकी अनंतवीर्य जिनेस । रावण ने पूछे बहु भेस ॥
तीन षंड जीते सब देस । मान्या मानैं सकल नरेस ॥२९१८॥

रावण की मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

मेरी प्राव कवण है हाथ । व्योरा सूं कहिए जिन नाथ ।।
श्री भगवंत की वांनी हुई । कोटि सिला उठावै जो कोई । २६१९।।
वाकै करि है तेरी मीच । निसचै जाणि बात मन बीच ।।

लक्ष्मण द्वारा शिला उठाना

जो तुम सिला उठावो जाइ । तो रावण कूं मारो भाइ ।।२६२० ।
लखमण कहै उठाऊं सिला । तब मो पौरिष देखो भला ।।
सुग्रीव साथ नृपति सब चले । साजि विमांण सौज सौ भले ।।२६२१।।
राम लक्ष्मण विमाण परि बैठि । पहुचे कोटि सिला कै हेठि ।।
अरध निसा गई सिला कै पासि । तिहां होइ सिवपुर की आसि ।।२६२२।।
नमसकार करि बारंबार । आठ सिध गुण पढे संभार ।।
बहुत विनय सों पूज जिनेस । मुनिसुव्रत पूजिया नरेस ।।२६२३।।
लक्ष्मण पढ्या पंच प्रभु नाम । सिला उठाइ लई तिस ठांम ।।
जोजन एक सिला उच्चंत । अठ जोयण चकली दीपंत ।।२६२४।।
दश जोजन की हैं लंबाइ । लक्ष्मण ततक्षण लई उठाइ ।।
जघा लग पहूंचाई आंन । बहुर धरी तब वाही थान ।।२६२५।।
जै जै देव दुंदभी भई । ए लक्ष्मण नारायण सही ।।
नल रु नील अनै सुग्रीव । सब नै मता मैं गाढी नींव ।।२६२६।।
बहुरि नरेन्द्र कहै ए बली । कथा नारायण की तब चली ।।
सात नारायण आगै हुआ । तिण थी प्रतिनारायण मुवा ।।२६२७।।
केई कहै इन उठाई सिला । रावण कैलास उठाया भला ।।
कोई कहै रावण विद्या सहाइ । हम लहै विद्या लेइ उंचाइ ।।२६२८।।
इन उठाई देही के बल । लक्ष्मण महाबली भू अटल ।।
कोऊ कहै ए दोनूं भ्रात । रावण का दल कह्या न जात ।।२६२९।।
ए उसको जीतैं किस भांत । ग्रैसा करो दोनूं घर सात ।।
रामचंद्र पै भूपति गए । राम कहैं ढीले किम थए ।।२६३०।।
बेगि चलो लंका परि अबै । रावण मारि ढाहौं गढ सबै ।।
कहैं भूप सुणौ त्रिभुवन राय । जब वह सीता देइ पठाइ ।।२६३१।।
तो कीजे काहे कूं जुध । हम वाकूं समझावैं बुध ।।
भभीषण ज्ञानवंत धरमैष्ट । दयावंत है समकित द्रष्ट ।।२६३२।।

तासूं कही बात समझाइ । वो कहै है रावण नैं आइ ॥
रावण कै सीलव्रत की टेक । अण वांछित किम तजै विवेक ॥२६३३॥
सिया तुम्हारी देगा आंणि । भेजो दूत कोई चतुर सुजांण ॥
पवनपुत्र बली हणमंत । सूरवीर महाबल अनन्त ॥२६३४॥

जो वह जाइ तो ल्यावै सिया । श्रीभूत दूत हणूमंत पैं गया ॥
लिख्या पत्र विवरा सूं भला । दूत लेई ततक्षण चला ॥२६३५॥

इति श्री पद्मपुराणे लक्षमण कोटिसिला उतक्षेपण विधानकं

४३ वां विधानक

दूहा

रामचंद्र लक्षमण सबल परदुख भंजण हार ॥
कोडिसिला उठाइ करि, प्रगट भए संसार ॥२६३६॥

चौपई

श्रीपुर नगर राजा हनुमान । सर्व सुखी परजा तिण ठांम ॥
नगर सोभ कछु जाय न गिणी । स्वर्गपुरी की महिमा बणी ॥२६३७॥

अनंग कुसमा खरदूषण पुत्री । दक्षिण आंखि फुरकै खरी ॥

लंका से दूत का आगमन

नरमद दूत लंका तैं आइ । संबुक खडदूषन की कहे समझाय ॥२६३८॥
रामचंद्र लक्षमण दोउ वीर । सीता नाम त्रिया उन तीर ॥
लक्षमण नैं मारया संबूक । खडदूषण भी हण्यां अचूक ॥२६३९॥
सेना जुडी नरपति घने । नांमावली कहां लग गिणे ॥
असी बात अंतहपुर सुणी । रोवै हणुमांन सब दूंणी ॥२६४०॥

अनंग कुसमा सब परिवार । आई मूरछा खाय पछाड ॥
पीटै हियोर खोंसै केस । हा हा कार करै बहु भेस ॥२६४१॥

पंषी वजवीण अनंई कोकिला । असा सबद उणों का नीकला ॥
असे भौमगोचरी कौंण । इण विध प्रगट भए भड जौण ॥२६४२॥

खडदूषण सा मारया राय । करै सोच अति दुखित अयाय ॥
श्रीभूत सुग्रीव का दूत । ग्यानवंत अतिबल संजुत ॥२६४३॥
कवण काज आये तुम दूत । असा कारिज कवण बहुत ॥
हनूमांन को करि नमस्कार । पवनपूत बोले तिण बार । ॥२६४४॥

द्वै करि जोडि करि बोलै दूत । निरभय वचन कहै अदभूत ।।
किषंदपुर का राजा सुग्रीव । माया रूपी विट् सुग्रीव ।।२६४५।।
राज लिया सुग्रीव का छीन । सुग्रीव आप फिरिया आधीन ।।
राम लक्ष्मण भूमिगोचरी । तिरण सूं जाइ वीणती करी ।।२६४६।।
रामचंद्र का दरसन पाय । तिरण सुं भेद कह्यो समझाइ ।।
मेरो दुःख दूरि करो तुम दूरि । कांम करो करुणां भरि पूर ।।२६४७।।
बिट सुग्रीव दूत दोउ जुटे । बहुत सुभट दोऊ घां कटे ।।
रामचन्द्र ने मारचा चोर । सुग्रीव ने दीया राज बहोरि ।।२६४८।।
इह सुणि हणुमांन आनंद । धनि धनि पुरुष राजा रामचंद्र ।।
पर दुख भंजन हैं श्रीराम । कोटिसिला, उठाई लक्ष्मण ताम ।।२६४९।।
उनकी सीता किरण ही हरो । तिरण थी खबर तुम कोई नीकली ।।
हणुमांन सुंणि अस्तुति करैं । कुल कलंक सुग्रीव के टरैं ।।२६५०।।
भावमंडला सुग्रीव की धिया । पिता राज सुणि हरषा हीया ।।
आदरमान दूत को दिया । उचित दांन वंदीजन लीया ।।२६५१।।
सुरगत दुःख सगला बुझि गया । बाजा बाजि बधावा भया ।।

हनुमान द्वारा राम के दर्शन करना

हणुमांन सेन्यां ले घणी । बैठि विमान सोभा अति वणी ।।२६५२।।
घोडे हस्ती रथ सुखपाल । लागे कनक रतन बहु लाल ।।
राम लक्ष्मण दरषन निमित्त । किषिधपुर आये हनुमंत ।।२६५३।।
कोडि सिला का सुण्या बखांन । अनंतवीर्य का वचन प्रमाण ।।
ये रावण का करि हैं नास । हूं सेवा करिहुं उंरण पासि ।।२६५४।।
किषंदपुर की समराई गली । सुग्रीव भूप मानैं अति रली ।।
घरि घरि बांधी बंदरवाल । घर घर छाये हाठ बाजार ।।२६५५।।
बहुत लोग अगवाणी चले । जाय करि हनूंमांन सुं मिले ।।
हस्ती पर हनुमान कुमार । सेन्यां चली नगर मझार ।।२६५६।।
सिंघासण बैठे रामचन्द्र । लक्ष्मण पासि सोहैं जिमचंद ।।
सुग्रीव नल नील बैठे तिण पासि । विराधित अंगद अंग सुवास ।।२६५७।।
बहुत नरेन्द्र सभा में खडे । सूर सुभट महागुण भरे ।।
छत्र चंवर रघुपति सिर ढरे । वदनही जोति सोभा अति टरैं ।।२६५८।।
स्याम केस लोचण अति वणे । नासा कपोल विशाल घणे ।।
रक्त उष्ट्रदंत छबि कुंद । हीरा जोति चलकाकी बुंद ।।२६५९।।

हीया कंठ भुजा सोभंत । उदर कमर केहरि की भंत ।।
कदली जंघ कमल से चरण । नख की जोति जैसी ससि करण ।।२९६०।।
रवि प्रताप शशि की ज्योति । हनुमांन कौ दर्शन होत ।।

राम का हनुमान को गले लगाना

चरण कमल बंदे हणुमन्त । रामचंद्र भए कृपावंत ।।२९६१।।
कंठ लगाइ सनमुख बैठाइ । आदरि मनोंहारि बहु भाय ।।

पवनपुत्र द्वारा प्रस्तुति

पवन पूत बोले कर जोडि । प्रभू तुम गुन का नावै वोरि ।।२९६२।।
जैसे रतन समुद्र में घने । ते गुण जाम न किस पैं गिणें ।।
तुमारे गुण प्रभु अगम अपार । राम नांम त्रिभुवन आधार ।।२९६३।।
तुम जीत्या बरबर मलेछ । बज्रावर्त्त धनुष कौ खैंचि ।।
सिंघोदर राजा नें जीत । पिता बचन की पाली रीत ।।२९६४।।
दंडकवन में लह्या सूर्यहास । संबुक खडदूषण कीए नास ।।
प्रति सुग्रीव बिद्या बैताल । तुम कूं देषि भाज्या तत्काल ।।२९६५।।
परपंची कुं मारया ठोर । सुग्रीव राज दीया बहोर ।।
किण ही पास न हुवो न्याव । ततक्षय कीयो तुम उपाव ।।२९६६।।
कहां लौं बरणों तुमारा उपगार । इह जस कीरत चलै संसार ।।
वेद पुराण कथा यह चलै । सीता कौं प्राणौं कौं मिलै ।।२९६७।।
सफल जनम मेरो तब सही । हणुमांन बात ए कही ।।
रावण परि लंका को जाउं । सीता को आणउं इस ठांव ।।२९६८।।
रामचन्द्र बोले जगदीश । जे तुम वचन मानें दशशीश ।।
तो सीता आंणउ हम पास । चोरी सुं आण्यां उपहास ।।२९६९।।
रावण चोरी सूं ले गया । हम चोरैं तो अपयस नया ।।
सीता अन्नपाणी सब तज्या । वाकुं दोनु कुल की लज्या ।।२९७०।।
हम बिन वह छोडेंगी प्राण । इह मूंदडी दीज्यो सहिनांण ।।
कहियो मन रखियो निश्चंत । किधंपुर राम लक्ष्मण निवसंत ।।२९७१।।
अन्नपाणी वाकुं खवाज्यो जाइ । निरभय मन राखियो धीरपाइ ।।
जांबुनंद बोल्या मंतरी । उन इक बुधि बताई खरी ।।२९७२।।
रावण लंकापति बलवंत । जिसकी आवल्यां तीनूं खंड ।।
कुंभकर्ण भभीषण वीर । इन्द्रजीत मेघनाद अति धीर ।।२९७३।।

लंका के रखवाले घने । पंखी जाण न पावै किणे ।।
तुम इण विध जाऊं परछन्न । लखै न कोई इसे जतन्न ।।२९७४।।

तुम हो एक वहै हैं घणे । तिनसुं बिगाड्या नहीं बणे ।।
मनुष जनम पावनां कठिन । देख सोच के कीज्यो गमन ।।२९७५।।

हनूमांन जब चढें विमांण । त्रिकुटाचल कौं कियो पयान ।।
रघुपति गले लाइकैं मिल्या । लक्ष्मण आदर कीने भल्या ।।२९७६।।

सींख लगैं भूपति सब आइ । पहुंचाए तिहां हणुवंत राय ।।
हणुमांन सुग्रीव सुं कहै । राजा सब किंधिदपुर रहै ।।२९७७।।

अवरै लोग बुलावो सूर । सेन्यां जोडो दल भरपूर ।।
आप चले रघुपति के काम । मनमें सुमरो सीताराम ।।२९७८।।

अडिल्ल

रामचंद्र जगदीसर परमपुनीत हें ।।
भव भव की हैं पुंन्य धर्म सों प्रीत है ।।
सूर सुभट सब आइ मिले बड भूपती ।।
रावण भया सुन हीन राम जागी रती ।२९७९।।

चौपई

प्रगट्यो पुंनि मिलइ सब सुख । जनम जनम का भूलै दु:ख ।।
सज्जन मित्र मिलैं बहु लोग । मनबंछित सब भुगतैं भोग ।।२९८०।।

तातैं पुंनि करो सब कोइ । पुत्र कलित्र लक्ष्मी बहु होइ ।।
रामचंद्र का सुणैं पुराण । भव भव पावैं ते कल्याण ।।२९८१।।

दूहा

चढि विमाण हणुमत, चल्यो राम के काज ।।
सूर सुभट अति ही बली, रूपवंत सब साज ।।२९८२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

४४ वां विधानक

चौपई

महेन्द्रपुर नगर

चढि विमाण देखे बहु देश । दंती पर्वत महैन्द्र नरेस ।।
महेन्द्रपुर की शोभा अति देख । भया मोह मन अति परेख ।।२९८३ ।

इस नगरी मेरा ननसाल । गर्भ समै मा दई निकाल ।।
मेरी माता कुं दुख दीया । परजंक गुफा में मेरा भव भया ।।२९८२।।

अमृत गुपति मुनि देख्या सही। अंजनी सूं सब पिछली कही ॥
इह राजा महेन्द्रसेन। मुझ माता कूं देता नहीं चैन ॥२९८५॥
तो क्यूं होता इतना दूख। रतन कूल तैं पाया सुख ॥
अब मैं इण सौं लेहूं बैर। महेन्द्रपुर कूं मारूं घेर ॥२९८६॥

हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना

आजे मारु चिमक्यो महेन्द्रसेन। सूर सुभट सूं बोलै वयण ॥
कवण देस का आया राइ। सेना सजो युध के भाय ॥२९८७॥
दुहूंधा छूटैं विद्या बाण। प्रसन्नकीर्त्ति आगैं बलवांन ॥
भया जुध प्रसन्नकीर्त्ति को बांधि। महेन्द्रसेन कोप्या सिर सांधि ॥२९८८॥
अर्क असफंदन हार। बाए सनमुख करि मारामार ॥
पर्वत सिला बिरख उखारि। पडै धणी हनुमंत परि मार ॥२९८९॥
तब हनुमंत बिद्या संभारि। बानर बहुत भए बिकराल ॥
जा कूं पकडैं लुंचै देह। कबहु उठाइ सिला कूं लेह ॥२९९०॥
जाकूं मारैं होइ संहार। तोड्या रथ महेन्द्र तिण बार ॥
कूद चढे हणवंत विमांण। मारै मुकी क्रोध मण प्रांण ॥२९९१॥
हनुमांन तब राखै कांण। पुरुषा सम नाना कुं आणि ॥
उस ऊपर तू उठावै हाथ। पुकारै सकल लोक जे साथ ॥२९९२॥
दुहिता कूं मारै अग्यांन। अंजनी सुत इह है हनुमांन ॥

परस्पर मिलन

इतनी सुणत मिल्या गल ल्याइ। जैसा सुणै था तिसा दिखाइ ॥२९९३॥
कुल मंडण तू उपज्या पूत। सकल गुणां लक्षण संजुक्त ॥
प्रसन्नकीर्त्ति दिया तब छोडि। मिलकैं अस्तुति करी बहोड ॥२९९४॥
पुर मैं आणि महोछा करैं। सब विरतांत सुणि मन मैं धरैं ॥
मो कूं हे कारज उताल। तुम किषंदपुर जाज्यो दरहाल ॥२९९५॥
रामचंद के सेवउं पांय। सेना ले वेगां तुम जाव ॥
महेन्द्रसेन प्रसन्नकीर्त्ति चले। श्रीपुर जाइ अंजनी सूं मिले ॥२९९६॥
बहुत दिया लक्ष्मी अनै चीर। कथा कही सुख हुवा सरीर ॥
हनुमान लंका कूं गया। हम किसंदपुर कुं गम किया ॥२९९७॥
रामचंद्र लक्षमण पैं जांय। सुणी सुरत सुग्रीव नरनांह ॥
महेन्द्रसेन आइया नरेस। आदर बहुत दिया आनंद ॥२९९८॥

दूहा

भया मिलाप कुटंब सूं, महेन्द्रसेन नरेन्द्र ॥
हनुमान अर अंजनी, मान्यां अति आनन्द ॥२९९९॥

इति श्री पद्मपुराणे महेन्द्रदोहिता मिलाप विधानकं

४५ वां विधानक

चौपई

दधिमुख द्वीप मातरा देस। मंदिर स्वेत शोभा बहु भेस ॥
वन उपवन नें बावडी कूप। महा रमणीक सुहावे रूप ॥३०००॥

अंतर वन सुभ थानक खरो। अजगर स्यंध देख मन डरो ॥
तिहां दोइ मुनिवर तप करैं। आतम ध्यान सु निश्चय धरैं ॥३००१॥

तीन कन्याओं द्वारा तपस्या

कन्यां तीन फिरैं तिरण ठांव। दावानल सुं जलै ए भाव ॥
एक तप करैं न डोलै चित्त। चलै पसेव परीसै सहंत ॥३००२॥

हनुमान द्वारा दावानल बुझाना

हनुमांन कुं उपजी दया। समंद्र माहि तैं जल भर लिया ॥
दावानल बुझाई दीयाइ। सगला तपसी लिया बचाइ ॥३००३॥

उनकूं विद्या की सिध भई। जाय मेरु प्रदक्षिणा दई ॥
दोई घडी में आए फेर। मुनि दर्शन कीया तिरण बेर ॥३००४॥

हनूमान कीया नमस्कार। पूछ्यो कन्या का व्यवहार ॥
तुभ तप करो कवरण निमित्त। अपनी बात कहो उत्पत्ति ॥३००५॥

कन्या के विवाह की भविष्यवाणी

मित्रादेस नृप गंधर्वसेन। जाकी कन्या बोलैं बयन ॥
अमरवती राणी गर्भ भई। चद्ररेषा हुं पहली थई ॥३००६॥

मंगमाला विद्युतप्रभा तीसरी। हमारे पिता स्वयंवर विध करी ॥
देस देस के नृपति आय। कोई न हमारी दृष्टि पडाइ ॥३००७॥

मानभंग ह्वै नृप फिर गये। परियण मांहि सोच अति भए ॥
मुनिवर कूं पूछ्यो मो तात। ए कन्यां दीजे किरण भांति ॥३००८॥

मुनिवर बोले ग्यांन बिचार। विट सुग्रीव जो मारै वार ॥
सो होसी इणका भरतार। मुनिवर कह गए उपगार ॥३००९॥

सकल देस का देख्या राव । यह है कवरण जिसका सुंदर नाम ॥
मुनि के वचन यह झूठे पडे । यह संसय परिचरण सब करैं ॥३०१०॥
अंबार्क विद्याधर आइ । मेरे पिता सूं कहै समझाय ॥
मैं हूं विद्याधर बलवंत । कन्या विवाह द्यो मोहि तुरंत ॥३०११॥
वासौं कही जो मारै ताहि । विट सुग्रीव नांम है जांहि ॥
सो विवाह सी इरण नै न्याइ । तू अपणे घर कूं उठ जांह ॥३०१२॥
बारह दिन हम कूं इत भए । मुनिवर कूं अष्टम दिन थए ॥
अंगारक आग लगाई वन । तुमे उपाया मोटा पुंन्य ॥३०१३॥
षष्ट वरष जो तपकूं करै । तब इह विद्या ताकूं फुरै ॥
तुम दरसन विद्या सिध भई । महापुरुष छो तुम गुण मई ॥३०१४॥
गधर्व सेन आये भूपती । बंदे चरण देखि मुनि जती ॥
हनूमांन सूं पूछ्या भेव । सकल बात सुणि कीनी सेव ॥३०१५॥
रामचन्द्र हन्या विट सुग्रीव । किषंदपुर है समंद की सींव ॥
उनसौं जाइ मिलो तुम राइ । हम लंका सीता कनें जाइ ॥३०१६॥
राजा सुंणि कियो उल्हास । ततक्षरण गयो राम के पास ॥
रामचंद्र लक्षमरण सूं मिल्या । गंधर्व सेन बली अति भला ॥३०१७॥
कन्यां तीनूं राम कौं दई । मन की चिंता सहु मिट गई ॥
अधिक उछाह भयो मनमांहि । सकल दूरि भाजी उरदाह ॥३०१८॥

दूहा

मनवांछित कारज भए, तप साधे थी तीन ॥
विद्या की तिहां सिध भई, पायो वर प्रवीण ॥३०१९॥

इति श्री पद्मपुराणे गंधर्वसेन लाभ विधानकं

४६ वां विधानक

चौपई

हनुमान का आगे जाना

त्रिकुटा चल गिरि ऊंचा थान । ताहि न सकै उलंघ विमान ॥
पास रही चाल्यो हनुमान । वा पर कोट देख्यो हनूराय ॥३०२०॥
प्रथम मंत्र मंत्री सौं कहा । यह गढ कवरण सवारथा तिहां ॥
तब मंत्री बोले सुविचार । सीता हरी तबै ए सवार ॥३०२१॥
खरदूषरण सूं झूझ्या सुण्यां । एक पुरुष सगला दल हण्यां ॥
अब कहु ये यहां आवै योइ । तो हम दल सब परलई होइ ॥३०२२॥

तार्थ माया का गढ करया । बहुत सौंज सुभट सौं भरया ।।
कोई देख सकै नहीं कोंट । जो कोइ जोर्व ता परि चोंट ।।३०२३।।
इतनी सुंणि धाया हणवंत । तोडि पौलि भीतर पैसंत ।।

बज्रमुख एवं हनुमान की वार्ता

बज्रमुख सांभलि इह बात । चढयो कोप उठी रोम गात ।।३०२४।।
दोनुं जुध करैं बहु भाइ । दोन्यां मांहि न कोई हटाइ ।।
हणवंत क्रोध चढै तिण बार । वज्रमुख झड़या तिहां राव ।।३०२५।।
लंका सुंदरी वज्रमुख की धिया । पिता बयर सांभलि जुध किया ।।
सेनां जोडि हणवंत से लडै । मन में बयार पिता को धरै ।।३०२६।।
छोडै विद्या वाण अनंत । झूझे सूरबीर सामन्त ।।
देख्या हनूमान का रूप । लंका सुंदरी मोही भूप ।।३०२७।।

लंका सुन्दरी और हनुमान के मध्य प्रेम होना

ऐसा रूप पुरुष नहीं कोइ । जैसा सु संगम अब होइ ।।
उतसौं हणुमंत देखी ए नारि । हाथां सूं छोडे हथियार ।।३०२८।।
दोनूं कै रहसि मन भया । लंकासुन्दरी के विमान पै गया ।।
दोनूं कै मन उपजी प्रीत । भूली सकल युध की रीत ।।३०२९।।
लंका सुंदरी बांण पर लिख्या । उलटा बांण हनुमांन पै नषा ।।
दोनूं मिलिया कियो विवाह । सुख भोगवै मन उछाह ।।३०३०।।
रहसरली सूं पुर में जाइ । पंचइंद्री सुख भुगतै काय ।।
हणुमांन बोले तिण बार । हमै जाइ हैं लंका मझार ।।३०३१।।
रामचंद्र का करना काम । हमकूं बिदा देहु तुम भाम।।
लंका सुन्दरी पूछै बात । सुण्यां सकल पिछला बिरतांत ।।३०३२।।

लंकापति का प्रभाव

कहिक लंकापति अति बली । तिण रोकी है सगली गली ।।
तिहां देवता सकैं न पैठ । तुमको होइ है रावण सूं भेट ।।३०३३।।
पकडै तोकूं वह राखै बांधि । जे तुम चलो मता मन सांधि ।।
कहै हणमत जो रावण लरै । वा का भय हम चित्त न धरैं ।।३०३४।।
इण विध जाइ करी परवेस । कोई न लहै तुम्हारा भेस ।।

हनुमान द्वारा समझाना

लंकासुंदरी पिता का सोग । रोवै घणी भर भया वियोग ।।३०३५।।

इस विध समझावैं हणवंत । वाका था ई मही निमित ॥
अत्री जे रण में दई पीठ । कुल कलंक लावै तसु दीठ ॥३०३६॥
वां का जाणहु इह विध लेख । तांकां कबहु न करो परेख ॥
समझाई लंका सुन्दरी । लिखे कर्म सों टरै न घरी ॥३०३७॥
जैसा कर्म उपावै जीव । तैसा भुगतैं अपनी ग्रीव ॥
तुमारा था अैसा संयोग । पिता मरण पुत्री संभोग ॥३०३८ ।
अब तुम सोग करो सब दूरि । सुष भुगतो वांछित भर पूरि ॥
भोग भुगत सों बीती रात । राम के काम उठया परभात ॥३०३९॥

दूहा

पुण्य पुरुष अति ही बली, इक पलमें भई जीति ॥
देव षेचर सुख ते लहैं, इह ही धरम की रीत ॥३०४०॥

इति श्री पद्मपुराणे लंकासुन्दरी विवाह विधानकं
४७ वां विधानक

चौपई

हनुमान का लंका में पहुंचना

लंका में पहुंच्या हणमंत । भभीषण नै जाणि दयावंत ॥
अंजनी सुत मंदिर में गया । आदर मांन बहुत तिण दिया ॥३०४१॥

विभीषण से भेंट

बेर बेर पूछैं कुसलात । बडी बार बतलाया बात ॥
कहै भभीषण सुण हणवंत । रावण कूं उपनी कुमत ॥३०४२॥
सीता कुं ल्याइया चुराय । परदारा सब को क्षय जाइ ॥
देस देस हुवा अपलोक । राजनीत में दोषी होक ॥३०४३॥
तीन षंड का रावण राय । खोटी मति इंण करी अन्याय ॥
अैसे भूप कर्म ए करैं । पृथ्वी पर अपजस सिर धरैं ॥३०४४॥
अधम करम करै जो नीच । उत्तम मध्यम में क्या बीच ॥
मैं याका सेवक हनुमान । तातैं मैं कही है आंन ॥३०४५॥
सीता रामचन्द्र कूं देइ । इतनां जस ले तुम लेहु ॥

विभीषण का रावण को समझाना

भभीषण सुणि रावण पै गया । बहुत भांति कर समझाइया ॥३०४६॥

सील रतन मत खोवो वीर । सीलवंत सुख लहै सरीर ।।
सीलवंत की कीरत होइ । सीलैं भला कहैं सब कोइ ।।३०४७।।

लछमण खरदूषण ने मारि । सेनां सकल करी तिण छार ।।
रामचन्द्र लछमण दोऊ वीर । जानैं सकल जुध की भीर ।।३०४८।।

जब वे आवैंगा इस ठौर । मांचैगी लंका में रोड ।।
सीतां देई रघु पास पठाइ । प्रथवी तणौं दुःख मिट जाय ।।३०४९।।

रावण का कोधित होना

इतनी सुंणि कोप्यो दस सीस । मेरी कवण सकैं करि रीस ।।
रामचंद्र से मारे घणे । इनको गिणती मां को गणे ।।३०५०।।

अब मैं सीता आंणी सही । असा कवण पुरुष है मही ।।
सीतां भेजवु उन पास । लाजै कुल होवै उपहास ।।३०५१।।

कहा करैगा तपसी राम । मोसुं जीत सकैं संग्राम ।।
जीती है मैं सगली मही । मोकूं किह का ही डर नहीं ।।३०५२।।

हनुमान का वानर रूप धारण कर सीता के पास पहुंचना

भभीषण कही हणवंत ने आय । हनुमांन उठि वन में जाय ।।
प्रमदा वन में बैठी घणी । फलैं फूल वृक्षावली बणी ।।३०५३।।

लंगूर रूप विद्या सूं करचा । सीता कूं देखण तरु परि चढया ।।
वदन मलीन हंगलो छै हाथ । सुमरण जाप जपैं रघुनाथ ।।३०५४।।

जाकैं राम नाम का ध्यान । वाकै चित्त न आवै आन ।।
दई छाप सीता ढिग जाइ । निरषत सीता नयन उघाडि ।।३०५५।।

तज्या सोग मन भयो उलास । दूती मुख देख्यो सु प्रकास ।।
जाय रावण सों विनती करी । सीता सोग तज्यो इण घडी ।।३०५६।।

दूती ने दीया बहु दान । मंदोदरी पठई सीता थान ।।

मन्दोदरी और सीता की वार्तालाप

मंदोदरी आय सखी संजुक्त । सीता की अस्तुति की बहुत ।।३०५७।।

सीता बोली तवै रिसाइ । हे निलज्ज मति पाप कहाइ ।।
राम तणी सुधि पाई अबैं । मेरा सोग विसर गया सबै ।।३०५८।।

भली करी तैं छोडा सोग । रावण सुं भुगतो सुख भोग ।।
तुमकुं सब तैं करि हैं बडी । भलां समझि तैं छोडी गुढी ।।३०५९।।

मंदोदरी कहै श्राप तैं सही । वे तपसी मुवा है कहीं ॥
किण ही पंछी आंणी छाप । तू मन में भरमैं है आप ॥३०६०॥
काहू बन में मारचा तापसी । पंछी छाप ले आयो नसी ॥
छाप देख मन गहे गही । कहां अजोध्या ताकी मही ॥३०६१॥
एक नगर के वे भूपती । रावण तीन खंड का पती ॥
उनका इतना करै भरम । ऐसा बचन लगाया मरम ॥३०६२॥

सीता द्वारा राम के सेवक को प्रकट होने के लिये कहना

तब सीता बोली सत बैंन । राम का सेवग देख्या नयन ॥
कोई हूँ हो प्रगटयो आय । मेरे मन को संसय जाय ॥३०६३॥

हनुमान का सामने आना

हणुमान प्रगटया तिण ठाइ । रही सहेली दृष्टि लगाय ॥
कै इह सुर कै खेचर भूप । कै इह कामदेव का रूप ॥३०६४॥
सीता कूं किया नमस्कार । अस्तुति बहुत करी तिण बार ॥
धनि धनि हो तुम सीता मात । ग्यारहू दिन दुख सह्यो इण भांति ॥३०६५॥
देह सुकाई करी अति षीण । राम नाम सुमरण में लीन ॥
अपणां राखियो मन अडोल । रामचंद्र इम बोल्या बोल ॥३०६६॥
किषकपुर में सेना जोडि । अब करि हैं लंका परि दोड ॥

सीता के प्रश्न

सीता कहै सुणुं हणुमांन । तुम अन राम कद की पहचान ॥३०६७॥
मैं तुम कूं नहीं देख्या सुण्यां । किस बिध उणस्यों सनबंध बण्यां ॥
उंनु कै कारण आये लंक । मनमें कछु अन आंणी संक ॥३०६८॥
व्यौरा सूं समझावै बात । मिटै संदेह सुंणि बिरतांत ॥
लक्षमण तणी कहो कुसलात । छाप एह पाई किण भांति ॥३०६९॥
कै रामचंद्र नै दीक्षा लई । कै इह छाप पडी तुम पई ॥

हनुमान का उत्तर

हणवंत बात कही समझाइ । रामचंद्र दंडक बन रहे आइ ॥३०७०॥
संबूक चन्द्रनखा को पूत । साधी विद्या तप किया बहुत ॥
द्वादश वर्ष में विद्या फुरी । सूरजहास आया तिह घडी ॥३०७१॥
लक्षमण नैं वह लीया खडग । संबू कू मार किया उपसर्ग ॥
चंद्रनखा देखै पुत्र का सूल । तब सुधि गई सबै भूलि ॥३०७२॥

खरदूषण सूं करी पुकार । कपडे फाडि लगाई डार ॥
खरदूषण अति क्रोध कराय । सेन्यां ले तिहां धाये आय ॥३०७३॥

लक्ष्मण वासूं मांडयो जुध । रावण नें इह पाई सुध ॥
कोप में चले पुहप विमांण । दंडक वन में पहूंच्या आंन ॥३०७४॥

तुम को देखि राम के पास । वाकी सुधि गई सब नास ॥
राजनींत सहु बीसर गई । तुमारे हरन की इछा ठई ॥३०७५॥

सिघनाद रावण पूरिया । रामचंद्र लक्षमण पैं गया ॥
रावण नें तब तुमकूं हरया । जटापंखी बल करि तिहां लडया ॥३०७६॥
वाकौं गहि रावण मारिया । ऊपर तैं धरती डारिया ॥
लक्षमण रामचंद्र कूं देख । कहिक तुम क्यों आए लेख ॥३०७७॥
सीता छोड आये एकली । एह तुम बात करी नहीं भली ॥
बेग जाओ सीता के पास । तुम बिन दुख होवैगा गात ॥३०७८॥

ढूंढे बन बेहड सब खोह । उनकों तुम सेती अति मोह ॥
सिवकति पाया पंषी जटा । देखा अंतसमय वन बटा ॥३०७९॥

पंच नांम सुणाए कांन । जटा पंषी गया स्वर्ग बिमांण ॥
लक्षमण खरदूषण नैं मारि । तुमरा हर्ण सुण्या तिण बार ॥३०८०॥

रतनजटी तुम पाछै दौडि । आंण करी रांवण सूं झोडि ॥
रतनजटी कैं लाग्या घाव । समुद्र में पडे रतनजटी राव ॥३०८१॥

उहां तैं तिरि कंचू गिरि गए । रामचन्द्र ने भेद तिण दिये ॥
बिराधित नैं लंका पाताल । आंणि बिठाए रघु ततकाल ॥३०८२॥
सुग्रीव राज परपंची छीन । तातैं हुआ फिरया आधीन ॥
रघुपति परपंची को मारि । सुग्रीव राज दियो तिणबार ॥३०८३॥
उंनौ वडा किया उपगार । ता कारण हम कियो है बिचार ॥
रावण तीन खंड का भूप । सीलवंत करुणा का रूप ॥३०८४॥
ताकी कीरत है संसार । अठारह सहस ताके घर नारि ॥
मैं सेवक रावण का सही । मेरा वचन फिरैगा नही ॥३०८५॥
तुमकूं देगा मेरे साथ । ले पहुंचाऊं जिहां रघुनाथ ॥
सीता हनूमान सूं कहै । तुमसे किते राम ढिग रहै ॥३०८६॥

मन्दोदरी का कथन

राम पास किता दल जुडया । मंदोदरी बोलै एही वडा ॥
कै इह बली के राम लक्षमणा । और न कोई बउधा जणा ॥३०८७॥

जब होता रावण का काम । हनूमान करता संग्राम ॥
इह बाकै भाई की ठोर । अैसा हितू न कोई और ॥३०८८॥
चंद्रनखा की दीनी पुत्री । अैसी याकी कृपा करी ॥
या कैं कर्म अैसी मति दई । याकै हिरदै अैसी मति दई ॥३०८९॥
कहां राम भूंम गोचरी । ताके दूत होइ आया इण पुरी ॥
सुग्रीव मति मरणे की भई । किंषदपुर तपसी कुं दई ॥३०९०॥
अब जो सुणैं रावण इण बात । देख जू तोहि लगावैं हाथ ॥

हनुमान मन्दोदरी संवाद

हणवंत कहै मंदोदरी सुणुं । तो पै बुधि नपै कों गिणु ॥३०९१॥
तेरी बुधि भई है हीण । खोटी मुति रावण को दीण ॥
तोहि कहे थे नव जोबनां । तो मैं गुण एकौ नहि बण्यां ॥३०९२॥
तो मैं जो होता गुण सार । तो वह क्या नै हरता परनारि ॥
खोटा करम उदै तुज भया । तेरा गुण सगला गिर गया ॥३०९३॥
रावण की दूती तू भई । पटकी महिमा सगली गई ॥
तूं वईरण रावण की सही । वाके जीव का तोकूं डर नहीं ॥३०९४॥
तैं मति दई मरण की ताहि । तोहि रंडापा की भई चाहि ॥
मंदोदरी आदि कोपी सब नारि । रे बानर कहो बचन संभारि ॥३०९५॥
कहो राम लक्षमण कूं मारि । बानर बंसी कहा गंवार ॥
जितने जुडे राम के पासि । होसी उनुं सगला को नासि ॥३०९६॥

सीता का उत्तर

सीता बोली सुणों सब तिरी । राम लखण की कीरति खरी ॥
पहला बरबर मलेछ कूं जीति । बज्रावर्त्त तैं सब भयभीत ॥३०९७॥
अैसा धनुष चढाया तुरंत । उनसे कौं नहीं बलवंत ॥
खरदूषण मारया संबूक । उनका बाण है महा अचूक ॥३०९८॥
सेना का नाहीं कछु काम । रावण कूं मारैं महीं राम ॥
समुद्र उतरि जो आवै एक । राखै रघुवंस की टेक ॥३०९९॥
तुम अब निश्चै होस्यो रांड । तुम जसकीर्त्ति मां होस्यो भांड ॥३१००॥

मन्दोदरी का नाटक

मंदोदरी आदि अठारह हजार । सहुं मिल बोलैं मुंह थी गाल ॥३१०१॥

कोसै सब झंझोडैं बांह । हनुमान महटाई जांहि ।।
सकल नारि धरती मैं मिलैं । कैसे हनूमान को लेइ चलैं ।।३१०२।।
वसन फाडि लोचै सिर केस । गई तिहां दशकंध नरेस ।।

हनुमान का सीता से निवेदन

सीता सों बोलैं हनूवंत । तुम कछु मन मां धरो मति चिंत ।।३१०३।।
जो तुम कहो तो अब ही ले जाउं । अपणौं मन राखो चित ठाउं ।।
अन्न खावो जल पीवो मात । नमस्कार कीयो बहु भांति ।।३१०४।।

हनुमान द्वारा भोजन

इला वाहण सों कहै हणवंत । करो रसोई व्यंजन बहुमंत ।।
किये पकवान सुगंधा घणां । छहरि रसोई उत्तिम वणां ।।३१०५।।
भात दाल उत्तम बहु घृत । प्राशुक जल सों स्नान करंत ।।
श्री अरिहंत का सुमरण किया । एक पहर दिन कर उगिया ।।३१०६।।
मन में असी इच्छा धरी । कोई मुनीस्वर आवैं इस घडी ।।
प्रथम सुपात्र नैं द्युं दान । पाछैं हम करिहुं जलपांण ।।३१०७।।
पूरब जनम किया मैं पाप । तो इह भयो मोहि संताप ।।
कै मैं दान कुपात्रै है दिया । कै सुत मात बिछोहा किया ।।३१०८।।

सीता द्वारा आहार ग्रहण करना

सीता जी लीयो आहार । इला हणवंत जीम्या तिण बार ।।

सीता का चिन्तन

सीता चिंतै राम की वात । तीरथ करण पिया संग जात ।।३१०९।।
कै मै मुनिवर कियो अपमांन । कै जल पीयो अणछांण ।।
कै मैं भोजन खायो राति । कै जिन धरम न सुहात ।।३११०।।
श्री भगवंत भज्या बिण भाव । समकित चित्त न हुवो सुहाव ।।
कुगुरु कुदेवां की कीनी सेव । कुशास्त्र उर धार्‌या भेव ।।३१११।।
कंदमूल फल खाये घणे । भला शास्त्र मन धर ना सुणें ।।
परनिंदा कीनी अधिकाइ । तो इह उदय भया मुझ आइ ।।३११२।।
अश्रुपात चुवै दृग भरे । तबइ हनुवंत वीनती करै ।।
जै तुम मात चलो मुझ साथ । पहुंचाऊं तुमनैं जिहां रघुनाथ ।।३११३।।

सीता के वचन

सीता कहै सुणो हणुमान । रामचन्द्र आवैं इस थांन ।।
तो मैं चलूं तिनां के संग । उणां बिणां चलणां नहीं रंग ।।३११४।।

हनुमान का प्रस्थान

सीताजी की आग्या पाइ । बिदा भए तब हणवंत राय ।।
पुहप गिरिवर पर ठाढा भया । तहां बहुत आई हैं तिरिया ।।३११५।।
वन क्रीडा देखैं थी नारि । हणुवंत रूप देखिया अपार ।।
वाजैं वीरण सुणावैं तांन । कोई कहै एही हणुमान ।।३११६।।

मन्दोदरी का रावण के पास जाना

मंदोदरि संगि गई सब तिरि । रावण सुं पुकार त्यां करी ।।
हणुवंत तणउं कह्यो विरतांत । उठ्यो कोपि रावण सुणि बात ।।३११७।।

रावण का कोपित होकर युद्ध का आह्वान

सूर सुभटां कूं आज्ञा दई । वेगा मारो हणुवंत जई ।।
दोड्या बहुत सुभट तिण बार । हाथों में नांगी तलवार ।।३११८।।
गदा गुरज बरछी तीर कवांन । इणैं प्रकारैं घेर्‌यौ हनुमांन ।।

हनुमान का युद्ध कौशल

लांगुली विद्या भली संभारि । ठौरि ठौरि के बृक्ष उखारि ।।३११९।।
मारे सुभट किये तिहां ढेर । उजाडि दिया उपवन चिहुं फेर ।।
सिला थंभ मिंदिर सब ढाहि । चौपटि किये तिहां ढेर उखारि ।।३१२०।।
सूरवीर झुझे तिह ठौर । कायर भाजि गये सब और ।।
हनूमांन बैठे तिन ठांम । जाके हिए राम का नाम ।।३१२१।।
रावण सुणुं सुभट परिहार । तब भेज्या बहुला असवार ।।
इंद्रजीत नै मेघनाद । जाणैं सकल जुध अनैं वाद ।।३१२२।।
मारि मारि करि दौडे घणे । जइसैं जम प्राणन कूं हणैं ।।
हनूमांन सनमुख भया आंण । मारई सिला करै घमसाण ।।३१२३।।
मैंगल को पकडै चिहुं पास । फैंकै ताहि घणे रहै ठांय ।।
तरु उपाडि कर मारै सीस । एक ही बार मरैं दस बीस ।।३१२४।।
सेनां झूझी राक्षस वंस । इन्द्रजीत मनमें करै संस ।।
हणवंत एक महा बलवंत । जिण मारे सगले सामंत ।।३१२५।।

इन्द्रजीत मेघनाद इम कहै । इन्द्रभूप हम ही तब गहै ।।
इह विध हम तैं कोई न लड्या । हणवत उपरि ढोवा कर्या ।।३१२६।।

छूटै सर गोला जिम मेह । धरती गगन उडी अति षेह ।।
गदा खडग की होवै मार । जित जित दीसै बानर वारि ।।३१२७।।
जाकूं पकडै लेई झकोर । लंका मां हुआ तब सोर ।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकडना

इन्द्रजीत विद्या संभार । नाग पास है इन्द्र का जाल ।।३१२८।।
वासौं बांध लिया हणवंत । मार्या घणां किया दुखवंत ।।
रावण पास आया हणुमान । कोप्या क्रोध बहुत मन आंन ।।३१२९।।
बांधि मुसक हथकडी डाल । गल में नौष जडे तिहंकाल ।।
पांव मांहि बज्र सांकुली । मारे बहुविध हणवंत बली ।।३१३०।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान का परिचय देना

इन्द्रजीत रावण सुं कही । भुंमगोचरी का दूत है अहीं ।।
इण पहिली महैन्द्रपुर जाय । महेन्द्रसेन जीते तिहं ठांइ ।।३१३१।।
भेजा ताहि कनै रामचन्द्र । गंधर्वसेन का मिटचा दंद ।।
मुनिवर का उपसर्ग निवार । भेज्या किषंधपुरी मझार ।।३१३२।।
वज्रकोटि लंका का तोडि । बज्रमुखी नै मार्या ठोडि ।।
लंकासुन्दरी आप विवाहि । बहुरि आया लंका मांहि ।।३१३३।।
सीता नै खबर राम की दई । मंदोदरी आदि मान भंग भई ।।
पुहपक वन इन दिया उजाडि । ढाहे बहुत हाट बाजार ।।३१३४।।
मिंदर घणां मिलिया छार । सुरसूभट बहु डाले मार ।।

रावण का क्रोधित होना

फोड्या कुआ बाव तालाब । रावण कहै क्रोध के भाव ।।३१३५।।
मैं तोहि ऊपर राखै था मया । तू उठि रामचंद्र पै गया ।।
राम लक्ष्मण सौं कद की प्रीत । उनकौं मिल्या भया तू मित्त ।।३१३६।।
मेरा डर तुम कूं नही भया । मेरा गुण तू वीसर गया ।।
खरदूषण की तो कुं कन्या दई । देस मांहि तो कीरत भई ।।३१३७।।
बहत देस दीने तुम सही । तै आपणे मन असी गही ।।
कहां राम लक्ष्मण तापसी । भ्रमति भ्रमति उन पाई महीवसी ।।३१३८।।

उनका दूत भया है आण । तोइ न भई कोक की काण ।।
भई निलज्ज पणा है तेरा । जिस में कछु विवेक नहीं धरा ।।३१३६।।
पवनंजय का तू नांही पूत । काहू कलंक तैं उपज्या दूत ।।
जै तू होता उत्तम बंस । तो नांही मानता उपदंस ।।३१४०।।
अब तोकुं मार करूं निरजीव । चंद्रहास सुं काटूं ग्रीव ।।

हनुमान का उत्तर

हनुमत बोल्यो निरभय बैन । तो पापी को होसी कुबैन ।।३१४१।।
अठारह हजार तेरैं थी अस्तरी । तैं काहे कूं सीता हरी ।।
तेरा मरण आया है सही । खोटी मति तैं मनमें धरी ।।३१४२।।
रत्नश्रवा कुल ज्योआ भया । राक्षसवंस कलंक तैं दिया ।।
तेरे कुल का ह्वै है नास । अब तु छोडि जीव की आस ।।३१४३।।
तेरा नहीं देखण का मुख । चौंर जार क्या मानैं सुख ।।
रावण कोपि गह्या कर खडग । हणवंत को कियो उपसर्ग ।।३१४४।।
देखैं बहुत पुरुष अरु नारि । नंगा करि फेर्‌यों घर बार ।।
अपणां प्रभू नैं ज्यां दीधा पीठ । ताका सूल ए सब दीठ ।।३१४५।।
घर घर का रावडा बहु जुडे । डारैं खेह सहु मूंठी भरैं ।।

हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका दहन

हनूमान सब बंधन तोडि । विद्या कीं संभालि बहौडि ।।३१४६।।
लंगूर रूप तिहां सेना करी । वीजली सम पूंछ अगनि संभरी ।।
सगली लका दई जलाय । सगला मंदिर दीए ढहाय ।।३१४७।।
चौपटि करि लंका का देस । चढि विमान हनूमान नरेस ।।
सीता सुण्यौ पकड्‌यो हनुमान । रोवै बहुविध करै आयान ।।३१४८।।
इला वाहन कहै चिंता मति करौं । हनूमांन अपरं बल धरौ ।।
लका कूं दहवट करि गया । सीता आसीरवाद यहु दीया ।।३१४९।।
चिरंजीव ह्वै है हणमंत । सीता असीस कहैं बहुमंत ।।
तिहूंलोक ह्वै ओ तुझ नाम । लहियो सदा सुख विश्राम ।।३१५०।।

दूहा

हनूमान साका किया, पुन्यवंत बलवांन ।।
वानर राव जस प्रगट्यो घणौं, कारिज कियो प्रवांन ।।३१५१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनूमान सीता मिलन विधानकं

४८ वां विधानक

चौपई

हनुमान का पुनः राम के पास आकर पूरा वृतान्त कहना

हणुमान सेन्यां में मिल्या । फिरे छत्र ता ऊपर भला ॥
किषधपुरी में पहुंच्या जाइ । अपणे मंदिर बैठा आइ ॥३१५२॥
सुग्रीव आदि भूपति सब चले । हनूमान सेती सहु मिले ॥
लंका तणुं सुण्युं विरतांत । सुग्रीव कहै रघुपति सौं बात ॥३१५३॥
वीती रयण उगोयो भांण । राम पास पहूंचे हनूमांन ॥
नमस्कार करि करी डंडोत । तिहां भूपति खडा बहूत ॥३१५४॥
पूछै राम सीता कुसलात । हनूमान कहैं सब बात ॥
प्रमदा बन में सीता रहै । दूती दूत बचन तिहां कहै ॥३१५५॥
सीता अनपांणी नहीं रोच । नाडि निवाय करै वहु सोच ॥
उसकै सदा रहै तुम ध्यांन । मनमें कछुवन आवै आन ॥३१५६॥
मैं उनकूं खवाई रसोई । राति दिवस बीतैं दृग रोइ ॥
सब दूती मैं दई बिडारि । रावण आगै करी पुकार ॥३१५७॥
रावण तणै भेजी लिस सैन । मैं लंका मैं कियो कुचैन ॥
तोडि बाग फोड्या सब गेह । लंका जाल करी सब खेह ॥३१५८॥
तुम सूं आइ कहा संदेस । मन आवै सो करो नरेस ॥

राम की चिन्ता

राम नयन सेती बहै नीर । जा हिरदै मीता की पीर ॥३१५९॥
धिग धिग भाई असा जीवणां । हम जीवत सीता दुख घणा ॥
जे सीता का दुख करैं दूर । तो हम वली कहावैं सूर ॥३१६०॥
जिम केहरि दावानल मांहि । ताका बल चालै कछु नांहि ॥
असी कठिन बणी अब आय । इण विध सोच करैं रघुराय ॥३१६१॥
लक्षमण कहै तो पहुंचो लंक । तो मन की पोषैं सब संक ॥
धन्य सुग्रीव धन्य हनुमान । इनुं दई सीता सुधि आनि ॥३१६२॥
अब जो भावमंडल ह्वै संग । रावण तणो करैं मान भंग ॥
सुग्रीव सेती बोलैं रघुनाथ । भामंडल आवै हम साथ ॥३१६३॥
वाकूं हम ढिग लेहु बुलाय । कै हमने द्यो पंथ बताइ ॥
सायर तिर हम लंका जाइं । तुम इहां रहो अपणी ठाइं ॥३१६४॥

राजाओं द्वारा निवेदन

सिंघनाद बोले भूपती । हनुमान कीनी यह गती ।।
उपाड वृक्ष ढाहे प्रासाद । अवर कियो रावण सूं वाद ।।३१६५।।
सूरवीर मारे बहु लोग । घरि घरि कियो लंका में सोग ।।
लंका वाल करो इण खेह । कुवा वापा ढाहे सब खेह ।।३१६६।।
रावण मन में राखैं बैर । सगलां कूं मारैंगा बेर ।।
रावण ने पकडी अनीत । विसर गया धरम की रीत ।।३१६७।।

युद्ध की तैयारी

वासुं सब मिल करस्यां जुध । अवर न कछु विचारो बुधि ।।
चंद्रमरीच इम भणैं नरेस । नृप एकठा भए सहु देस ।।३१६८।।
रामचंद्र का करो उपगार । रावण मारि मिलावो छार ।।
धनगति गज धुंन गति कुरकेत । भीम नल नील सुग्रीव समेत ।।३१३६।।
वज्रभूकरण अर भूपति घणे । सब का नाम कहां लग गिणैं ।।
महेन्द्रसेन पवनंजय राय । प्रसन्न कीर्त्ति की अधिकाइ ।।३१७०।।
विद्याधर एकठे सहु भए । सेना जोडि राम संग गये ।।
असवनी सुदी पंचमी दिनेस । दीतवार को चले नदेस ।।३१७१।।
नक्षत्र कात्तिका मेष था लगन । अवर भए सभी सुह सुकन ।।
लक्षमी सिर गागर दही । बलै अगनि तिहां धुआं नहीं ।।३१७२।।
पीछैं आवत मंद समीर । बोलै काक वृक्ष गुण धीर ।।
मुनिवर द्वं देखे ले अन्न । तीसूं उपजै काया चैन ।।३१७३।।
लंका तणां गिरा कांगुरा । रावण चित तब चमक्या खरा ।।
घडी साध सुभ कीया पयाण । सेना जुडी दिनां उनमान ।।३१७४।।
राम लक्षण दोऊ चढे विमाण । हय गय रथ पायक नीसांन ।।
मैंगल डोरि लाख पचास । बहुत विद्याधर रघुपति पास ।।३१७५।।
वेलंधर परवत परि गया । समुद्र नाम राजा तिहां रह्या ।।
नल नें पकडि बही नरेन्द्र । आणि दिया वाको करि बन्द ।।३१७६।।
लाग्या रामचंद्र के पाय । छोडि दिया तबै रघुराय ।।
वेलंधरपुर इम ने ले जाय । कन्या व्यारि हरि नैं दई आय ।।३१७७।।
श्री कमला दूजी गुणमाल । सुधी रतनचुला सुविसाल ।।
उहां तैं चले भये परभात । सुवेल परवत पहुंचे रघुनाथ ।।३१७८।।

सुखेम राय परि भेज्या नील । पकडिया तुरत न लाथी ढील ।।
हंस दीप कीयो बिश्राम । सब सेनां उतरी तिण ठांम ।।३१७६।।

जब लग भामंडल नहीं मिले । तब लग हंस द्वीप तैं न चले ।।
रही सेन सगली तिन ठौर । भूपति आय मिले सब ग्रौर ।।३१८०।।

अडिल्ल

पूरब पुन्य उदै बहुत सेना जडी
जीत भई मग चलत ही साधी पुरी ।।
चरण नये सब आय भूप बंदे घणे
दिन दिन अधिक प्रताप बढै चऊ गुणैं ।।३१८१।।

इति श्री पद्मपुराणे राम लंकापुरी प्रस्थान विधानकं

४६ वां विधानक

चौपई

रावण का चिन्तन

रावण ग्रैसी पाई सुधि । क्रोधवंत होई सोचै दसकंध ।।
अजोध्या नृप भूमिगोचरी । हम ऊपर आवै डर नहीं करी ।।३१८२।।

देखो इनहै लगाऊं हाथ । मेरे लोग सब मिलिया साथ ।।
यह देखो संसारी रीत । जिणकौं मैं जाणै था मित्त ।।३१८३।।

सेवग मोसौं वैरी भए । ग्रैसा कर्म उनां नै किये ।।
रामचंद्र किषधपुर राखि । सुग्रीव मेरी अपकीरत भाष ।।३१८४।।

हनूमान अवर नरपति मिले । मेरा उदय न चाहैं भले ।।
उनको समझा मैं आपणां । एसहु किये उनुं का उपणां ।।३१८५।।

जे तपसी सों मिलते नहीं । तो आए सकते नही ।।
ए ल्याये उनकू इस ठौर । एती सेन्यां उन साथैं जोरि ।।३१८६।।

ऐसा निडर नहीं कोई ग्रौर । ताथी मांची इण ठां रौर ।।
देख जू इनसौं ऐसी करू । पकडि लेय जममंदिर धरूं ।।३१८७।।

मेरा भय कछु चित्त न धर्‌या चित्त । अपणा नहीं बिचार्‌या वित्त ।।
परजा डरपै लंका मांझि । करै सोच निस वासर सांझ ।।३१८८।।

युद्ध की तैयार

रावण के सोलह सहस्र भूप । मुकुटबंध ते दिपैं अनूप ।।
मारिच भगदंत अमीचंद । हस्त प्रहस्त अने असफंद ।।३१८९।।

राजा घणे सभा में खडे । एक एक तैं अतिबल भरे ।।
रावण कैं बाजैं नीसांन । रहै सेनां सबद सुंण कान ।।३१९०।।

सोरठा

धनि धनि आज दिनेस, करैं काज जो प्रभु तणौं ।।
आनंदीया नरेस, सबद सुनत रणभेरि को ।।३१९१।।

चौपई

योद्धाओं का रावण को पुनः समझाना

जोधा सुभट जुडे सब आय । कुंभकरण भभीषण राय ।।
इन्द्रजीत बोले कर जोडि । उज्जल कुल मति लगावो खोडि ।।३१९२।।
अब लौं जस निर्मल चहुं देस । परत्रिय चोरी सुनो नरेस ।।
चढै अपलोक कछु किये अनीत । समझो प्रभू धरम की रीत ।।३१९३।।
वेद पुराण सुणी इह बात । परनारी है विष की जात ।।
खाय हलाहल इक भव मर । परदारा तैं भव भव दुख भरैं ।।३१९४।।
सीता रामचंद्र कूं देहु । निर्भय बैठा राज करेहु ।।
अठारह सहस्र हतैं तुम नारि । रूपवंत शशि की उणहारि ।।३१९५।।
कहा एक सीता बापडी । ता कारण एह अडी आपडी ।।

रावण का पुनः कोधित होना

सुणि रावण कोपियो बहुत । इन्द्रजीत क्यों डरपै पूत ।।३१९६।।
अस्त्री है चिंतामणि रत्न । जो आ पावै काहू जतन ।।
हाथ चढी किम दीजे छोडि । सूर सुभट को लागै षोडि ।।३१९७।।
अैसा भय किसका मैं धरूं । जे हूं अपणी टेक तैं टरूं ।।
जो तुम जुध करबे सौं डरो । जाय कहां छिपकै दिन भरो ।।३१९८।।

बिभीषण का इन्द्रजीत से वचन

भभीषण इन्द्रजीत सौं कही । तुम सम कोई दुरजन नहीं ।।
तू नैं इसे सुणाये बैन । या के मनकूं भयो अचैन ।।३१९९।।
भली बात याहे लागै बुरी । आई याके मरण की घडी ।।
राम लक्षमण दोऊ बलबंत । उनका सेवग है हनुमंत ।।३२००।।
सुग्रीव और विद्याधर घणे । भामंडल पराक्रमी सुणे ।।
दिन दिन सेना उन संग बधै । पल में उनके कारज सधैं ।।३२०१।।

इनैं अपणा नहीं जाण्या मर्ण । कीए जाय सीता का हर्ण ॥

रावण का विभीषण पर धावा बोलना

उठ्यो कोप रावण सुणि बात । चन्द्रहास ऊपरि धरि हाथ ॥३२०२॥

भभीषण कूं मारण निमित्त । असी खोटि विचारी चित्त ॥
भभीषण कूं तब चढ्यो विरोध । गह्या थंभ पाथर का सोध ॥३२०३॥

दोऊ वीर क्रोध कैं भाय । कुंभकरण बोल्या समझाय ॥
भभीषण सुं कहै तु धरि जाह । तब लग क्रोध घटै मन मांहि ॥३२०४॥

सीतल वचन रावण ने कहै । भभीषण लंका में नहीं रहै ॥
मात पिता बहु पायें पडैं । सगला सज्जन अरज करैं ॥३२०५॥

विभीषण का राम के पास जाना

तीस क्षोहणी दल लिया साथ । चल्यो सर्ण जिहां रघुनाथ ॥
तीन सहस लिया संग नारि । और सकल छोडया परिवार ॥३२०६॥

हंस द्वीप है जिहां श्री रामचंद्र । गयो भभीषण को सब दुंद ॥
वानर बंसी भभीषण कु देख । असी समझ करैं मन प्रेष ॥३२०७॥

रावण भेज्या है जुध निमित्त । हनुमान आदि संभल्या सामंत ॥
गहि हथियार उभा सबै तिहां । आगन्या होय तो अब मारैं इहां ॥३२०८॥

वज्रावर्त्त धनुष गहि राम । समुद्रावर्त्त लक्षमण गहि ताम ॥
भभीषण सेना बाहिर रही । आप आय पोल्या सौं कही ॥३२०९॥

विभीषण का द्वारपाल से निवेदन

भभीषण आय खडा है बार । मेरा जाय कहो नमस्कार ॥
आग्या होय तो दरशन करैं । सेवग आइ वीनती करैं ॥३२१०॥

करी वीनती द्वै कर जोडि । भभीषण ऊभा है तुम पौलि ॥

मन्त्रियों का परामर्श

आग्या होय तो देखैं चर्ण । मंत्री लागे मतो कर्ण ॥३२११॥

रावण तनो भभीषण वीर । कछु परपंच आया तुम तीर ॥
अब इह जो मांडैगो राडि । आवाद्यो मति सभा मझार ॥३२१२॥

मति सागर दूजा मतरी । उणी इक बुधि उपाई खरी ॥
रावण भभीषण भयो वइर । दूती इसी कह गई सबेर ॥३२१३॥

तुमारी सर्ण भभीषण आव । कृपा करो तो दर्शन पाइ ॥
भभीषण रामचंद्र कुं देखि । लक्षमण तणु रूप अति प्रेष ॥३२१४॥

विभीषण द्वारा राम का दर्शन

रामचंद्र का देख स्वरूप । बंदे चरण भभीषण रूप ।।
राम कहैं प्रावो लंकेस । तोकु दिया लंका का देस ।।३२१५।।

भभीषण मन में भयो आनंद । मेरे तुमही देव जिणंद ।।
कहो सकल किम लडिया भ्रात । होवै क्रोध कर्म की बात ।।३२१६।।

गिरगो भ्राता थे वे दोइ । चंपापुरि जाणैं सब कोइ ।।
सूरज देव राज सु करंत । मतिबती पटराणी गुणवंत ।।३२१७।।

सुगुपति मुनि भाष्यो धर्म । लीयो व्रत उण जाण्यो मर्म ।।
गिरगोभूत जाय था कहीं । इनैं रत्न लिखमी बहु लही ।।३२१८।।

प्रावत देखे लोग बहुत । ढांक बही लिखमी संयुक्त ।।
फिरि वे प्राए घरि प्रापणैं । उहां प्रवरैं की प्रवरैं वणैं ।।३२१६।।

कौसंबी नगरी के मध्य । बहुधन सेठ कुपदा मध्य ।।
प्रहदेव महादेव दोइ पूत । बहुधन मूंवा प्राव पहुंत ।।३२२०।।

ए दोन्यु उदिम कू चल्या । बे रत्न लखमी पाया भला ।।
लषमी घर लाया प्रारणैं । वे दोई आई धरती षणैं ।।३२२१।।

दोन्यू लडै न मानैं हार । गिरि गोभूत सूं भई राडि ।।
गोभूत कूं मारै तिन ठोर । प्रसुभ कर्म तैं हुवा प्रौर ।।३२२२।।

प्रहदेव महादेव ल्याया रतन । गिरितैं पहिचान्या सब जतन ।।
सुणी बात मन मे पछिताइ । उठै लहरि पावक कै लाग ।।३२२३।।

मैं क्युं मारया प्रपनां वीर । प्रइसै समझि न धारैं धीर ।।
तातैं करम इह करतूति । लोभैं हणैं पिता नैं पूति ।।३२२४।।
सुणी बात भाज्या संदेह । हंसद्वीप दिन प्राठ रहेइ ।।

सेना के साथ लंका द्वीप में पहुंचना

इघोड सहस क्षोहणी दल जुड्या । चार सहस रावण कै पड्या ।।३२२५।।

भामंडल साथ क्षोहणी सहस । प्रष्ट दिवस रहे द्वीप हंस ।।
बाजा बजाइ लंका में गए । ए सबद रावण कै भए ।।३२२६।।

सोरठा

रावण सकल बुलाये लोग । प्रैसा वण्यां तिहां संजोग ।।
सूर सुभट सब इकठे भये । बानई धारी भूपति नए ।।३२२७।।

रावण खोटया कुट, अंतरिगति सोच्या नहिं ॥
खोइ धरम का मूल, सज्जन तैं दुरजन भया ॥३२२८॥

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण राम समीप आगमन विधानकं

५० वां विधानकं

चौपई

अक्षोहिणी संख्या

श्रेणिक नृप जोडे दोइ हाथ । क्रिपा करि भाषो जिन नाथ ॥
क्षोहिणी गिनती किस भांति । मोकूं समझावो बिरतांत ॥३२२९॥
श्री सरवज्ञ के उत्तम बैन । सुणते सब के मन चैन ॥
गोतम स्वामी करै बखान । बारह सभा सुणैं धरि कान ॥३२३०॥
अष्टप्रकारी सेन्यां संग । च्यारि च्यारि इक इक के अंग ॥
पति हाथी घोडांने रथ । पायक और सुभट बहुथ ॥३२३१॥
हाथी एक पयदल पांच । तिगुनें एक एकतैं वांच ॥
असी विधतै गिणती चढै । इस लेखे आठ लौं बढे ॥३२३२॥

अथ क्षोहिणी कहैं छै । पति १ सेना २ मुष ३ अनीक ४ वाहनी ५ चमू ६ बरू ७ दंड ८ ये आठ प्रकार की सेना कही । नवमी अक्षोहणी कहजे । नवघोडा ९ अर तीन रथ ३ तीन हाथी ३ पनरह पायक १५ ए च्यार प्रकार सेनां का भेद छै ॥ हिवै मुख कहैं छै । हाथी ९ रथ ९ घोड़ा २७ पयदल ८१ पयादा १३५ ए अनीक हुई । अथ वाहनी कहैं छै । गज ८१ रथ ८१ घोडा २४३ इक्यासीय दल च्यार सै पांच । ए वाहनी कहैजे । चमू कहैं छै । दोय सै तियालीस २४३ हाथी रथ २४३ सात सै गुणतीस ७२९ घोडा बारा से पनरा १२१५ पयादा ए चमूं कहेबे । विरुथनी कहै छै । रथ ७२९ सात सै गुणतीस हाथी ७२९ सात सै गुणतीस । घोडा २१८७ इकबीस सै सत्यासी । पायक छत्तीस सै पैंतालीस ३६४५ । हिवई दंड कहे छै । इकबीस सै सत्यासी २१८७ हाथी । इकबीस सै सत्यासी २१८७ रथ ।

घोडा पैंसठ सौ इकसठ ६५६१ । प्यादा नवसौ पैंतीस । अर दस हजार हुवै ए दंडक कहेजे । अक्षोहणी कहै छै । गज इकबीस हजार । आठ सै सिहत्तर रथ । पैंसठ हजार छः सै दस घोडा । एक लाख नौ हजार तीनसै पचास पैंदल । एक अक्षोहणी कहे जे । प्रथम पति १ सेनापति २ गुलम ३ वाहिनी ४ पंचम सति । छठी प्रतिनांच ६ । सातमी चमुं ७ । अनीकनी ८ मने दस गुनी भई ।]

दोनों दलों के सामर्थ्य की चर्चा

इतने तैं क्षोहिनी इक होय । इस विध समझो गुनीअन लोय ॥
दोउं यां दल हुआ इक ठोर । मत्ता करै दोन्युं फोजां सोर ॥३२३३॥

कोइक कहै रावण दल घणां । रामचंद्र संग थोडा जना ।।
राक्षस बंसी है बलवंत । वानर बंसी किम होइ करंत ।।३२३४।।

जे राष्यस वानर कुं भषैं । असे लोक आपस में बकैं ।।
कोई कहै बली हनुमान । लंका कूं ढाही उन आंन ।।३२३५।।

सब लोगन कूं दीनी मार । वन उपवन कर दिया उजार ।।
सनमुख कोई जुध न करि सकै । इसही विध राष्यस संसकैं ।।३२३६।।

कोई कहै रावन प्रति बली । कुंभकरण की कीरत भली ।।
इन्द्रजीत मेघनाद बलवंत । इन्द्र भूप कौं कीना मंड ।।३२३७।।

रामचंद्र जीतैं किस भांत । रावण का बल कह्या न जात ।।
कोई कहै ए दोन्यू वीर । दंडक वन में कोई न तीर ।।३२३८।।

खरदूषण सुं लक्षमण लडया । सेन्यां सुधी परलय करया ।।
रामचन्द्र पै वज्रावर्त्त । लक्षमण कनै समुद्रावर्त्त ।।३२३९।।

रामचन्द्र लखमण सु पुनीत । रावण करीं पाप की रीत ।।
जिहां धरम तिहां ह्वै जय । रावण का होवैगा क्षय ।।३२४०।।

ऐसैं आपस मैं करैं सोच । अन्य वस्तु की भूली रूच ।।
कौण मरै कोण जीवत बचै । को व्यर्थ बात मैं पचै ।।३२४१।।

धरम मार्ग क्रिया सुध मूल । रात दिवस मन किया अडोल ।।
जे कोई छोडि जाइ संग्राम । दिक्षा ले करि आतम कांम ।।३२४२।।

तो होवै लोक में अपलोक । कातर कहैं ताकूं सब लोक ।।
असी प्राणि वणी है कठिन । तांकों कछु न होवै जतन ।।३२४३।।

इह भवसागर में जीव । भ्रमै च्यार गति गाढी नींव ।।
धरम दया तैं उतरैं पार । जो कोई सहै सयम का भार ।।३२४४।।

दूहा

आरत रौद्र निवार करि, धरम सुकल धरि ध्यान ।।
आतम सौं लव ल्याइकैं, तो पावैं निरवाण ।।३२४५।।

इति श्री पद्मपुराणे उभय बल मांन विधानकं

५१ वां विधानक

चौपई

युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान

रावण नृप इम आज्ञा दई । साजो सैन भूप सज थई ।।
रामचंद्र सौं करियो जुध । सब कूं भई मोह की बुधि ।।३२४६।।

अपने अपने गेह मंझार । करैं आलिंगन सब नर नारि ।।
पुत्र पौत्रादि सकल परिवार । लपटैं कंठ अनैं करैं पुकार ।।३२४७।।

पोषी देह स्वामी के काज । अब जो रहै तो पूरी लाज ।।
जे जीवांगा तो मिलि हैं आय । उत्तम क्षमा कहि निकसे राय ।।३२४८।।

रोवैं कुटुंब सब बारंबार । उन कूं व्याप्पा मोहि अपार ।।
न कछु जनम सेवग का जान । तजि कुटुंब देवैं निज प्रांन ।।३२४९।।

करैं बीनती रोवैं अस्तरी । जइ तुम जीत फिरो तिण घरी ।।
जब हम तुमतैं हुवैं मिलाप । तुम मुझै होइ संताप ।।३२५०।।

अपणां तजों तिण बार । तुम बिन सगलो जगत उजाड़ ।।
कोई नहीं बिवाही नारि । ते तेहीं समझै सुख की बार ।।३२५१।।

मोह फंद मैं बांधी दुनी । अैसी कठिन सबसौं वनी ।।
कोई आभर्ण करि असमांन । सुथरे बागे पहरे आंन ।।३२५२।।

सब हीं नैं बांधे हथियार । अपणा अपणां रूप संवार ।।
पूज्या पहलां देव जिणंद । सूरवीर मन करैं आनंद ।।३२५३।।

धन्य दिवस सही है आज । साधैं स्वामि धरम का काज ।।
कोई कहै कित सीता हरै । ता कारण इतने दल जुडे ।।३२५४।।

कुण कुण मरि हैं रण के मांझ । रावण मांही अधरम की झांझ ।।
सीता को जो देई पठाइ । तो कां जुध होता इण बार ।।३२५५।।

अब हम जाई दिखा लेहु । छोडि सब संसारनि एहु ।।
कातर कहैं लोग सब कोइ । ए बिचार उनके मन होइ ।।३२५६।।

रावण कै बाजैं नीसान । निकले सकल लोग तजि थान ।।
हस्त प्रहस्त अगाऊ चले । तिणां कै संग सुभट बहु मिले ।।३२५७।।

मारीच स्यंध जान भूपती । स्वयंभू प्रथोत्तम उज्जल मती ।।
पृथ्वी बल चंद्राक अवर चंद्रसुक । नरपति बहुत अवर असुक ।।३२५८।।

कुंभकर्ण अनैं इन्द्रजीत । मेघनाद अति महा पुनीत ।।
अढाई कोडि कवर असवार । सोभैं जिसा देव उणिहार ।।३२५९।।

रतनश्रवा अरु मालवान । रावण चाल्यो गज पलांण ।।
केई भूमिर केई विमांन । छाई किरण जाणु लोपैं भांण ।।३२६०।।

हांवै कोलाहल सबद न सुणैं । उडी धूल अंधियारो बणैं ।।
पचास लाख रावण की ढोर । हस्ती मातैं उभै पोर ।।३२६१।।

दूहा

रावण की सेन्या चली, तिसको नांही अंत ।।
एक एक रथी सरस रावण प्रति बलवंत ।।३२६२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

५२ वां विधानक

चौपई

राम की सेना

रामचंद्र अब साजी सैन । कीधो गवन महूरत चैन ।।
नल अरु नील अगाऊ चले । सूर सुभट लीने संग भले ।।३२६३।।

हनुमान जांबुनंद समांन । जैमित्र चंद्राभ बलवांन ।।
वरधन कुमर रतन महेन्द्र । भामंडल बहु अपर नरेन्द्र ।।३२६४।।

द्रिढ रथ प्रति कंठ महाबल । सूरज उदय सरब प्रिय अटल ।।
बेल प्रिय सरब सार्दूलबुध । सर्वोत्रएल सरब बुध ।।३२६५।।

निव निष्ठ अव संत्रास । विघन सुदन नटवर पास ।।
पापी लोल महामंडल । संग्राम चपल का बहु बल ।।३२६६।।

परम धीर प्रस्तर दिनवांत । भगदत्त द्रुपद पूर्ण चंद समान ।।
विधुसागर निससागर भूप । असकेद पादप चंद्र सरूप ।।३२६७।।

इंद्रोवधि और गोतर त्रास । सकट पौन बज्रकरण पास ।।
बलसील सिंघोवर समेद । अचल साल जाणैं सुभ भेद ।।३२६८।।

महाकाल अवर रविकाल । अंगतिलक सुखेन तरवाल ।।
भीम महाभीम रथ धरम । मनोहारि हर मुख बहु भरम ।।३२६९।।

धरमति मार अरु सूरजजटी । सिवभूषन अवर रतनजटी ।।
विराधित मनोहर खेम । नंद नंदनी विमत बाहन जो हेम ।।३२७०।।

बहुत भूप की सेना बणी । नामावली न जाये गिणी ।।
पचीस लाख हाथी की डोर । सुग्रीव साथ उभा नृप और ।।३२७१।।

भावमंडल फिरावैं छत्र । अग्रे लक्षमण महा विचित्र ।।
बाजा बाजैं होवैं सोर । अंगद अगाऊ हुवो तिण ठोर ।।३२७२।।

रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार

दोउं सेन्या सनमुख भई आय । हस्त प्रहस्त लडैं दोउ राय ।।
उत नल नील लडैं शस्त्र बांधि । बदन जुध भयो बहु भांति ।।३२७३।।

हस्त प्रहस्त कैं लाग्या घाव । भूमैं ऊभा सेनापति राव ।।
नल नील दोऊ जीत्या बीर । रामप्रताप अति साहस धीर ।।३२७४।।

श्री रघुबंस प्रताप, इनका बल सबतैं घणां ।।
रावण मन संताप, हस्त प्रहस्त दोन्युं मरया ।।३२७५।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त बध विधानकं

५३ वां विधानक

चौपई

हस्त प्रहस्त कथा

श्रेणिक नृप पूछै कर जोडि । हस्त प्रहस्त की कथा बहोडि ।।
राक्षस बंसी के सेनापती । उनै हणे बहुते भूपती ।।३२७६।।

इन सनमुख कोई जीत न सकै । नल नील आगे किम भकै ।।
नल नील नें मारया ततक्षणे । इह अचिरज कछु कहत न बणे ।।३२७७।।

इनका भेद ब्योरा सुं कहो । इह संसय मो मन का गहो ।।
श्री जिन की वाणी तब हुई । बारह सभा सुणे सब कोइ ।।३२७८।।

श्री गौतम समझावैं भेद । सब संसय का हो विच्छेद ।।
कंस सुमत सोमर का नाम । इंद्र कपिल बाभण तिण ठांम ।।३२७९।।

करण खेती करम किसांण । ते नित करैं दया सुं दाण ।।
नित उठि दान सुपात्रै देइ । पूजा रचना सदा करेइ । ३२८०।।

रागद्वेष इन कै मन नहीं । सोक पडयां उपजान्यां कहीं ।।
निस्वा कुटुंव नथासिक दार । इन्द्र कपिल द्विज लेहु हकार ।।३२८१।।

मांगै दामनि उपज्या खेत । मारैं किसांण द्रव्य के हेत ।।
भोग भूमिहर खेत्रै जाइ । दोन्युं विप्र देवगति पाइ ।।३२८२।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तैं लही स्वर्गगति ठांव ।।
निस्वा कुटुंबन वन कैं मांझ । दोनुं चले पड गई सांझ ।।३२८३।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तैं लही स्वर्गगति ठांव ।।
निस्वा कुटुंबन वन कै मांझ । दोनुं चले पड गई सांझ ।।३२८३।।

सीतकाल सुं दुखित भए । मरकरि सातमी नरकैं गये ।।
भरमे लख चौरासी जौनि । ते दुख वर्ण सकै कवि कौन ।।३२८४।।

दोऊं विप्र घर सुत भए । जनमत मात पिता मर गये ।।
दुख में दोउं सयाणां भए । संन्यासी पैं दिष्या लये ।।३२८५।।

पंचाग्नि साधै तप करैं । कबहुं जोग खड़ा ही धरैं ।।
दोऊं हाथ उन ऊंचा किये । नख बढाइ मृगछाला लिये ।।३२८६।।

बढी जटा उरथ्यांन मिथ्यात । भये देव दोऊ वे भ्रात ।।
दक्षिण उर विजयार्द्ध मेर । ग्ररंजय नगर बहु फेर ।।३२८७।।

बहन कुमार ग्रस्वनी ग्रस्तरी । बे दोउं देवां स्थिति धरी ।।
कंपिला सकार दूजा ग्रसो करा । ग्रस्वनी राणी गर्भ ग्रवतरा ।।३२८८।।

रथनूपुर इन्द्र के पास । करता सेवा अधिक उल्हास ।।
इन्द्र कपिल द्विज नृप के संग । दुरजन दल कौ करता भंग ।।३२८९।।

इनके सनमुख कोई न थपं । ए प्रधान रावण के तपं ।।
इन्द्र कपिल वे स्वर्ग में गये । वहां से चयकरि सूर्यभट भए ।।३२९०।।

सुख मांही कीने बहु भोग । भये दिगम्बर साधो जोग ।।
वाईस सहैं परीसह गात । दया लाख चउरासीं जात ।।३२९१।।

तेरह विध चारित्र पालैं । काया तजि सुर भया विसाल ।।
उहां तैं चव किषदपुर ग्राइ । सूरजरज के नल नील कहाइ ।।३२९२।।

पूरव भव के ए सनमंध । तातैं लिया बैर प्रतिबंध ।।
ग्यांनी वयर करै नहीं कोइ । रुद्र परिणाम खोटी गति होय ।।३२९३।।

रण ग्रन बैर टलै नहीं कहूं । जनम जनम बहुतैं दुख सहूं ।।
जे राखैं दया सुभ भाव । उनका तीन लोक में नाम ।।३२९४।।

सर्वसेती उत्तम क्षमा करै । खोटे बंधन जिय में धरैं ।।
जित जावैं तित ग्रादर होइ । उसकी कीर्त्ति करैं सब कोइ ।।३२९५।।

सोरठा

पूरब भव, प्रतिबंध, भुगत्या बिन कैसें टलै ।।
इही कर्म सनबंध, या माही एको तिल न सरैं ।।३२९६।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त नल नील पूर्व भव वर्णनंम विधानकं

५४ वां विधानक

चौपई

दूसरे दिन का युद्ध

रावण सुणि सेनापति बात । उठ्या क्रोध सुभटां कै गात ।।
दोउं वां सैन्यां उठी परभात । करि सनांन सुमरे जिण नात ।।३२९७।।

आभूषण पहरे निज अंग । संस्त्र बांधि चाल्या नृप संग ॥
रण की ठांम खडा दोउं आय । मारीच के सनमुख भये जाय ॥३२९८॥

घोडा से घोडा तब लडैं । मंगल सौं मंगल अति भिडैं ॥
रथ को रथ पर दिया हिया पेल । ऐसे भिडैं ज्यौं खेलत द्वै मल्ल ॥३२९९॥

दोउ घां बरखैं विद्या बाण । गोला गोली करै घमसान ॥
मारैं खडग टूक द्वै होइ । पीछा पाव न हटिहै कोई ॥३३००॥

मारैं गदा वज्र के समान । सेतपराजा झूझे बलवांन ॥
सिंह जटी क्रोध करि लडें । बहुत लोग दोऊ घां कटैं ॥३३०१॥

प्रथक राय झूझ कैं पडा । उदै मद संसत्र जघन दल जुडा ॥
भई मार इततैं टलैं न सूर । क्रोध करि भट लडैं बल पूर ॥३३०२॥

सकनंदन पाप जुध करै । पापनंदन झूझि करि पडै ॥
रामचंद्र के झूझे लोग । रवि आ लोप्पा करि के सोग ॥३३०३॥

भई रयण मिटियो संग्राम । सघलां ही पायो विश्राम ॥

तीसरे दिन का युद्ध

भयो दिवस उग्यो जग भान । दुहूंघां जुटया सूरमा आन ॥३३०४॥

बर्षा बाण पडे चहुं ओर । जैसे पडै मेह की डोर ॥
जुडा भूप छोडे जुरवांन । विसोलद्रूत के हरे परांन ॥३३०५॥

वानर बंसी अति भयभीत । राक्षस बंसी की भई जीत ॥
सुग्रीव आयो गज पलांण । अर्ज करैं आइ हनूमांन ॥३३०६॥

तुम अब ही बैठो इण ठाम । राक्षस वंस ऊपरि दोडूं मैं जाम ॥
हनूमांन धाया केहरी । राक्षस वंसी की सुघ बीसरी ॥३३०७॥

भाजै जिम मंगल मदमयवंत । सुणें सबद केहरि गरजंत ॥
तब कोप्या रावण बलवांन । अवर घणें विनती करैं आंन ॥३३०८॥

तुम आगे सारैं हम कांम । हमारा देखो तुम संग्राम ॥
धाए तिहां भूपती घणें । पडी मार दुरजन बहु हणें ॥३३०९॥

हनूमान तबैं गदा संभारि । घणां भूपति मारे डारि ॥
रावण की सेना चली भाग । तबै उसके हिरदै दोइ लाग ॥३३१०॥

कुंभकरण अनं संबुकुमार । चन्द्रक सादूंल दल भार ॥
जंबुमाली तन उदरी सुत बाल । महोदर तीन पुत्र सुबिसाल ॥३३११॥

घाय पडे सब एकै बार । जंबूमाली कात्रक बाग सौं मार ।।
तब भुभै रावण का पूत । कुंभकरण कोपिया बहुत ।।३३१२।।

मूर्छा बाण कुंभकर्ण छोडिया । सोइ गया सहु काया मरण ।।
देखै तबैं तिहां नल नील । घाय पडया ज्यौं उतरहै कील ।।३३१३।।

मारैं गदा तीर तरवार । भाज्या कुंभकरण तिण बार ।।
जीते रामचंद्र के बली । नल अरु नील सहु सेना दली ।।३३१४।।

रावण चढि दौडियो नरेन्द्र । इंद्रजीत बोलै बल वृन्द ।।
हमकूं आगन्या कीजे तात । देखो जुध करूं किहूं भाँति ।।३३१५।।

मनवाँछित हूं कारज करूं । दुरजन दल जम मंदिर धरूं ।।
त्रैलोकसार हस्ती सुपर्लान । इन्द्रजीत दोडे बलवान ।।३३१६।।

मेघनाद जंबूमाली चले । अस्त्रशस्त्र बहु कर लिये भले ।।
कुंभकरण अवर हनुमंत । सुग्रीव इन्द्रजीत सामंत ।।३३१७।।

मेघवाहन भामंडल लडैं । बज्रकरण विराधीत दोउ भिडैं ।।
ज्यौं घनहर वरषै घनघोर । छुटैं सर गोली चिहूं ओर ।।३३१८।।

बरछी गदा चक्रों की मार । बाजैं लोह उडै अंगार ।।
गज सेती गज टक्कर लेहु । घोडा सौं घोडा अरभेह ।।३३१९।।

पयदल रथ तिहाँ भुभैं घणे । मनमें हरष धरि जोधा बणे ।।
इन्द्रजीत राय सुग्रीव कहु भाइ । हमारा देस परगना खाइ ३३२०।।

हमारा डर तैं धरा न चित्त । समभैं नहीं आपणा वित्त ।।
देखि तोहि लगाउं हाथ । दूरि करौं देही तैं मांथ ।।३३२१।।

सुग्रीव छोडे विद्या बांण । राक्षस दल कीया घलहांण ।।
इन्द्रजीत छोडया मेघवांण । वरषै मेघ मुल्या अवसांण ।।३३२२।।

पडै बीजली परलय करै । पवन बांन सुग्रीव संभरै ।।
उडैं पटल राक्षस दल उडैं । रावण सुत क्रोध मन बढै ।।३३२३।।

अंधकार बांण कूं छोडि । भया अंधेरा सुग्रीव की वोड ।।
नागपासनी विद्या संभार । लपटे सर्प मुरछा तिह बार ३३२४।।

सुग्रीव कौं नागपास सौं बाँधि । मेघनाद एही विध सांधि ।।
भामंडल कुं इस ही भाँति । करै मुरछा सांस न गात ३३२५।।

कुंभकरण पकडे हणवंत । दोनूं भुजा भरि चाबै दंत ।।
अंद फंद भल्यो हणुमान । वा समझै ना छुटे प्रान ।।३३२६।।

बिभीषण का राम को परामर्श

भभीषण राम लक्षमण सों कहैं। तुमारे दल में सुभट न रहे ।।
तुम यातैं रहियो सावधान । सुग्रीव भामंडल कैं लाग्या बांन ।।३३२७।।

उनकी ल्याऊं लोथ उठाय । जो कोई बरिण आय उपाय ।।
अंगद सोच करै मन मांहि । सुग्रीव भामंडल रहै इहाहि ।।३३२८।।

कुंभकरण सों हुवा जुध । बाकी मारग बाही सुध ।।
हनुमांन छूटि करि गया । बहु उपाय अंगद नैं किया ।।३३२९।।
भभीषण आयो लोथ कुं लेन । इन्द्रजीत मेघनाद कहैं बैंन ।।
हम तो जीते हैं सब लोग । हमारी सरभर कूं कोनं जोग ।।३३३०।।

काका आए करवा जुध । या सनमुख किम लरिये युध ।।
पुरुषां परि किम करिए घाव । अब इहां चलै नहीं कहूं दाव ।।३३३१।।

समझि ग्यांन भाग्या तिण घरी । सुग्रीव लोथ इनकी देखै पडी ।।
भभीषण देखै इन ही को आइ । पडे मूर्छा मृतक की नांइ ।।३३३२।।

लक्षमण रामचंद्र सूं कहै । नल कौंअकुं विद्याधर गहै ।।
उनसों जीत सकै नहीं कोइ । रावण सूं किण परि जुध होइ ।।३३३३।।
रामचंद्र बोले सुण वीर । अपणां मन तुम राखो धीर ।।
रावण कुं मारैगे ठांव । समर मांहि राखो तुम भाव ।।३३३४।।

देशभूषण कुलभूषण केवली । चितागति देव कही थी भली ।।
जब तोकुं हुवैगा काम । तुम चितारो आउंगा उस ही ठांम ।।३३३५।।

देवों द्वारा राम को विद्या प्रदान करना

रामचन्द्र पैं आए देव । नमस्कार करि कीनी सेव ।।
रामचन्द्र भाष्यो विरतांत । सुर विद्या दीनी बहुभांति ।।३३३६।।

विद्या सिध करि कारज किया । दोय रथ विद्या सिध का दिया ।।
छत्र चमर मोतियन का हार । चितवत सेन्या होइ अपार ।।३३३७।।

मनबंछित कारज सब होइ । दुरजन जीत सकै नहिं कोइ ।।
विद्या लई सकल सुख मूल । मन की चिंता गई तब भूल ।।३३३८।।

दूहा

जैन धरम सब तैं बडा, निसचल राखैं चित्त ।।
संकट विकट उद्यान में, आइ मिलैं बहु मित्त ।।३३३९।।

इति श्री पद्मपुराणे विद्यासहाय विधानकं

५५ वां विधानक

चौपई

राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी

रामचन्द्र लक्षमण इह चित्त । पहरथा देव वस्त्र पवित्र ।।
चंद्रहास बांधा तरवार । आयुध सगले लिये संभार ।।३३४०।।

वज्रावर्त्त समंदरावर्त्त । लिये धनुष रणजीत के करत ।।
सिंघरथ ऊपर चढे रामचन्द्र । गरूड वाहन लक्ष्मण वृंद ।।३३४१।।
सेन्यां थाकं साथ जो लई । रवि की किरण उभिल भई ।।
कांपे तरवर कांपी मही । कंपे गिरिवर जलहर सही ।।३३४२।।

रामचन्द्र कोप्या भगवान । कौण कौण का जासैं परान ।।
रामचन्द्र सुमरिया जिणंद । दोनूं सोहै जिम सूरज चंद ।।३३४३।।

आकाश गामिनी विद्या संभार । रथ सुं फरस चली तिणबार ।।
वहै पवन लागै तन व्याल । उतरयो विष चेत्या भूपाल ।।३३४४।।

नाग फास के टूटे बंध । भया उजाला भाज्यो अंध ।।
जेते पडे थे मूर्छावंत । बोल उठे नाम भगवंत ।।३३४५।।

राम लक्षमण का दर्शन पाय । मन आश्चर्य भये सब राय ।।
राम लक्ष्मण थे भूमिगोचरी । किण विध इनने विद्या फुरी ।।३३४६।।

विद्या द्वारा मूर्छितों की मूर्छा दूर करना

आकाश गामिणी इन ही मे किधा । जीव दान सब ही कूं दिया ।।
उठे सकल लोग भुवि पडे । विद्या लाभ सुंणि रह जे घणे ।।३३४७।।
सुग्रीव भामंडल पूछैं सहुबात । चिंतागति सौं सनबंध किण भांत ।।
रामचंद्र लक्षमण समभाय । देसभूषण कुलभूषण मुनिराय ।।३३४८।।

बंसलगिरि उपरि धरया आतमध्यांन । उनकूं उपसर्ग भयो तिण थान ।।
हम उनका उपसर्ग निवार । केवलग्यान उपज्या तिण बार ।।३३४९।।
आये सुरपति पूजा करी । चिंतागति मित्र भयो तिण घरी ।।
दोन्युं मुनि का था इह तात । तपकरि भया देव की जात ३३५०।।
या सम अवर नहीं सुर कोइ । इन्द्र समान चिंतागति होय ।।
इन म्हारी स्तुति करी घणी । अैसी बात वासव भणी ।।३३५१।।
हूं सेवग थारो रघुपति । जब चितवो तब आवुं तित ।।
तब तुम मूर्छावंत होय पडे । चिंतागति ने चित मध्ये धरे ।।३३५२।।

आये देव तिण विद्या दई । श्योरो सुणि चिंता मिट गई ।।
सुभ अरु असुभ करम का जोग । सुभ कैं उदै करैं बहु भोग ।।३३५३।।
असुभ करम तैं पावैं दुख । दोनूं सरभर दें दुख सुख ।।
धर्म चितवता टूटैं पाप । पुण्यवत का टलै सताप ।।३३५४।।
संकट विकट में धरम सहाय । सुरपति नरपति सेवैं पाय ।।
धरम समान सगो नहीं कोइ । धरम हि तैं बहु विध सुख होइ ।।३३५५।।

दूहा

धरम दान सबतैं बडा, यातैं भलो न और ।।
संसारी सुख भुक्त करि, फिर पावैं सुर ठौर ।।३३५६।।

इति श्री पद्मपुराणे सुग्रीव भामंडल समाधान विधानकं

५६ वां विधानक

चौपई

दोनों ओर के योद्धाओं द्वारा युद्ध

इह प्रकार नृप रावण सुण्यां । आए आप राम लक्ष्मणा ।।
लंकापति हस्ती सुपलांण । चली सेन्यां बाजे नीसाण ।।३३५७।।
उत मारीच इत है सुग्रीव । वज्रमुख सारन जुध की नींव ।।
मिरत अवर जुटे सुक्रोध । मेघनाद विराधित ए जोध ।।३३५८।।
मेदयंत अंगद दोउ लडैं । कुंभकर्ण हणुमांन सूं भिडैं ।।
भभीषण देख्या रावण दृष्टि । क्रोध भई बोल्या भभिष्ट ३३५९।।
रे कपूत मूरख अग्यांन । भूमगोचरी का सेवग भया आन ।।
तो कूं अवही मारूं ठोर । भ्राता जाणि दिया है छोडि ।।३३६०।।

विभीषण रावण युद्ध

भभीषण कहै सुण रे पापिष्ठ । तैं तो करी पाप की दृष्टि ।।
सतवंती सीता कुं हरी । पाप पुन्य का भेद न धरी ।।३३६१।।
तेरी भई आयु बल षीण । तातैं बुधि है भई मलीन ।।
जे तू जीया चाहै भ्रात । रघु नैं मिलाउं मां हरै संघात ।।३३६२।।
सीता देकर लागो पाई । तेरा प्रान मैं देउं छुडाइ ।।
इतनो सुणित रावण कोपिया । क्रोधवंत तब वै भया ।।३३६३।।
जैसा सुं तैसा वे जुटैं । पाछैं पाँव न कोई हटैं ।।
सनमुख भए भूपती घणे । उनके नांउ कहां लगि गिणे ।।३३६४।।

धनुष खैंचि करि मारे बाण । भभीषण कै कंठ लाग्या बाण ॥
टूट्या धनुष भभीषण वच्या । बहु जुध दोउंवा मच्या ॥३३६५॥
बिजुली सम चिमकै षड्ग । बाई रहां तिहां समला खग ॥
तिहां होवै तीर तुपक की मार । बजधार सु करै संघार ॥३३६६॥
मारै खड्ग मुंड गिर पडै । तोउ न सुभट धरती पर पडै ॥
रुंड मुंड ह्वं लडै सासंत । झूझै बली महा बलवंत ॥३३६७॥
स्रोणित की वैतरणी बही । पडी लोथ कहां रही नहीं मही ॥
हाथी घोडे झूझे घणे । परवत सम ढेर तिहां बणें ॥३३६८॥
पग धरवे कूं रहीयन ठौर । दोउ धां मांची बहु झोडि ॥
राम कुंभकरण सुं जुध । लक्षमण नै इन्द्रजीत सूं विरुध ॥३३६९॥
दुहुंधां बाण पडै ज्यों मेह । भालिन फूटे इनूं की देह ॥
लक्षमण इन्द्रजीत ढिग भाय । झपडि रथ सौं पटके आइ ॥३३७०॥
रावण की सेना भाजि कै चली । इन्द्रजीत संभाल्या बली ॥
रथपरि चढ्या बहुरि संभारि । सेन्यां सकल लई हुंकार ॥३३७१॥
धुवां बाण छोड्या इन्द्रजीत । लक्ष्मण सूर्यवाण मन चित ॥
छोडे बाण उजाला भया । अंधकार सगला मिट गया ॥३३७२॥
नागपासनी छोडी विद्या । गरुड बाण तें होई भिद्या ॥
वह विद्या लक्षमण ने गही । छोडी इन्द्रजीत सामही ॥३३७३॥
रावण का सुत मुर्छावंत । नाफ फास सु बांधि तुरन्त ॥
कूंभकर्ण रामचंद्र सुं लडै । रथ समेत वह ऊंधा पडै ॥३३७४॥
रामचंद्र फिर रथ परि चढे । वा समए क्रोध अति बढै ॥
नाग फासि बांध्या कुंभकर्ण । मूर्छावंत प्राण का हर्ण ॥३३७५॥
लागे सर्प उनूं की देह । काटैं तिह का प्राण हर लेह ॥
खैंचै देह दुख व्यापै घणा । ऐसा कष्ट उनौं कौं बणां ॥३३७६॥
भामंडल इन्द्रजीत ढिग माण । रथपरि डाल लिये बलवान ॥
विराधित कुंभकर्ण लिये उठाय । रथ परि ततक्षण लिया चढाय ॥३३७७॥

लक्ष्मण रावण युद्ध

बोले रावण सुणि लक्षमणां । तेरा भी आया है मरणां ॥
लक्षमण बोलै रावण सुणौं । तो कुं अब पलही में हणौं ॥३३७८॥
दारुण जुध दोउवां होय । हारि न मानैं दुहुं में कोय ॥
अमसक्ति बाण रावण ने तांणि । लक्षमण कै उर लाग्या आणि ॥३३७९॥

गिरया भूमि सांस तब थक्या । रामचंद्र रावण सों जुटैं ॥
बज्रावर्त्त क बाण जू छुटैं । रामचंद्र रावण सों जुटैं ॥
घणीं बेर लग कीया जुध । रावण नैं मारि किये बेसुध ॥३३८०॥

गज के रथ सूं दीया डारि । सिंघों के रथ चढे संभारि ॥
उहां तैं फिरि रावण दिए डारि । मारि गदा तिहां तिह बार ॥३३८१॥

कोई न घाव रावण कै फुहा । रामचंद्र तब अैसा कहा ॥
अरे रावण तेरी उमर है घणी । तू छूटा है अबकी अणी ॥३३८२॥

लंका जाइ आश्रम गहौ । तो परि वयर लक्षण को रहौ ॥
तेरे टूक टूक जब करूं । तोकूं ले जम मंदिर धरूं ॥३३८३॥

रावण सब सेन्यां ले साथ । लंका पहुंच्या हरषित गात ॥
मैं लक्षमणां मारया है सही । मोकूं कुछ चिंता है नहीं ॥३३८४॥

जे रामचंद्र मुझसौं फिर लडैं । वातैं कछु कारिज ना सरैं ॥
भ्रात पुत्र की चिन्ता चित्त । देखो यह संसार अनित्त ॥३३८५॥

दुख सुख जीव तणी संगि लग्या । अैसा ग्यांन उणसमैं जग्या ॥
करैं सोच ग्यांन धरि चित । होणी टरै न अैसी स्थिति ॥३३८६॥

अडिल्ल

लक्षमण पडया अचेत राम व्याकुल घणां ॥
रावण भए नचिंत क्योंकि दुरजन हणां ॥
अैसा अवर न कोई तां हाथ रावण मरैं ।
देखो कर्म प्रभाव कहा ते कहा करैं । ३३८७॥

इति श्री पद्मपुराणे संग्राम विधानकं

५७ वां विधानक

चौपई

राम विलाप

रामचंद्र लक्षमण कैंपास । देख्या मृतक कहुं न सांस ॥
रघुपति देखरि खाइ पछाड । रोवैं पीटैं बारंबार ॥३३८८॥

हाय भाइ हम कैसी बणी । मंत्री बात कहैं थे घणी ॥
जब हम छोडि अजोध्या चले । सब परिवार कहैं मिले ॥३३८९॥

लक्ष्मण कूं नीकै राखियो । मनोहार वांणी भाखियो ॥
किस भांति नैं चलावो चित्त । लक्ष्मण कीज्यो भक्त हित्त ॥३३९०॥

मो कारण लक्षमण जीव दिया । अवर मांहुदी विकळी किया ॥
किम दिखाउं मुख आपणां । मोहि अपलोक चढ्या है घणां ॥३३९१॥

मैं देख्या भाई का मरण । अवर भया सीता का हरण ॥
काठ संकेल अगनि मैं जरूं । लक्ष्मण का कैसे दुख भरूं ॥३३९२॥

सहु राजन सूं रघुपति कहै । तुम हम संग बहुत दुख सहैं ॥
मेरा बहुत किया उपगार । पर उपगारी हो भूपाल ॥३३९३॥

बोलै भूपति इण परि बात । जीवैगा लक्ष्मण तुम भ्रात ॥
इसका हम करि हैं उपचार । चउकस राखो चोकीदार ॥३३९४॥

दुरजन कोई सकै नहीं आइ । कोई उपाधि न करि है यहां आय ॥
दिसौं दिसा रखवाला रहो । उला पैला का आहट लहो ॥३३९५॥

सब जागियो नरपति चिहुं ओर । चौकीदार मिलो कर सोंर ॥
तिण थांनक कोई पैठ न सकै । सहु जागियो इम जांण न सकै ॥३३९६॥

इति श्री पद्मपुराणे सकती भेद, राम विलाप विधानकं

५८ वां विधानक

चौपई

मन्दोदरी और सीता का विलाप

रावण मन में चिंता करैं । कुंभकर्ण इन्द्रजीत दोउ मरे ॥
रोवै राणी मंदोदरी । सुवरण वास तणी अंसतरी ॥३३९७॥

कैसे जीवां अइसे दुःख । अब सहु बाद उनूं विण सुख ॥
अंसा दुष रावण के मना । सीता सुण्यो मुवो लक्ष्मणा ॥३३९८॥

रोवै लुंचै सिर के केस । राखै सदा राम सुं सनेह ॥
हम मरती तो टलतो पाप । मेरे कारण हुवो विलाप ॥३३९९॥

सीता तबै समझावै बैंन । अपनां चित राखो तुम चैन ॥
लक्षमण का होवैगा जतन । अंसा दुख निवारै यतन ॥३४००॥
सीता समझि रही मुरझाय । अब सेनां मैं करैं उपाइ ॥

भामंडल और चन्द्रप्रति का आगमन

भामंडल जागियो नरेस । चंद्रप्रति नैं कियो प्रवेस ॥३४०१॥

पूछै भामंडल तू कूंण । किह कारण तैं कीयो गौण ॥
बोलै परदेसी दरसन निमित्त । मैं तो ध्यान धरया है चित्त ॥३४०२॥

भामंडल को है भूपति । लक्षमण कै बाण लाग्या सकति ॥
रामचंद्र बैठा उस पास । रघुपति तिण थां बहुत उदास ॥३४०३॥

चंद्रप्रति तब विनती करै । मैं हूं वैद्य कारज तुम सरै ॥
भामंडल इतनी सुणि बात । वाकौं ले चाल्यो संघात ॥३४०४॥
लंका माहि रोकै नहीं कोइ । इनका मनबांछित जो होइ ॥
रघुपति कौं उन करि डंडौत । नमस्कार फिर किया बहुत ॥३४०५॥
रामचंद्र पूछै तिरण बार । इहै है कौरण तुम लार ॥
कहैं ए वैद्य गुणवंत । लक्षमरण जतन करैं बहुमंत ॥३४०६॥
परदेसी कूं पूछै राम । तू किततैं आये इण ठांम ॥

वैद्य की जीवन कहानी

कहै विदेसी अपनूं भेद । विजयारध तहां विद्या भेस ॥३४०७॥
गीतपुर नगर समेइल राइ । सुप्रभा राणी रूप की काय ।
ताकैं पुत्र चन्द्रप्रति भया । बल पौरिष सौं सोभै नया ॥३३०८॥
वेलंधर का सहस्रबीर्य पुत्र । चंद्रबाण मोरिया तुरंत ॥
मैं पडया जाय अजोध्या मांहि । तिहां भर्य भूप आए सांझ ॥३४०९॥
मोकूं देखि दया उन करी । गंधोदिक छडक्या उण घडी ॥
उतरया दोष मोकूं भया चेत । उनां धरम सुं कीनुं हेत ॥३४१०॥
मैं उठि भरत सूं विनती करी । इस विद्या हैगी गुण भरी ॥
इसका मोहि सुणावो भेद । भरत भूप भाष्यो सब भेद ॥३४११॥
महिन्द्र उदै रावण मेघ भूप । गुणसाला राणी बहु रूप ॥
वाकै गर्भ विसल्या भई । रूप लक्षण सोभै गुण मई ॥३४१२॥

विशल्या की कथा

जब वह कन्या करै सनांन । वह जल पहुंचै रोगी थान ॥
तिनका रोग तबही मिट जाइ । सकति बाण का दोष विलाइ ॥३४१३॥
अजोध्या मांहि रोगी थे घणे । वाही जल तें नीके बणे ॥
तब तैं प्रगट भया वह नीर । गई सकल रोगी की पीर ॥३४१४॥
पूछै भरथ विसल्या परजाइ । बाका भव भाषो समझाय ॥
कवण पुन्य तैं पाई सिध । जिसके चरणोदक इह विध ॥३४१५॥
सकल रोग कूं परिहा करै । असे गुण चरणोदक धरै ॥
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । क्षेत्र विदेह स्वर्ग अनुहारि ॥३४१६॥
पुंडरीकनी सीमंधर जिनंद । चक्रवर्ति त्रिभुवन आनंद ॥
चक्रधरा वाकै पटधनी । रूपलक्षण गुण सोभै घनी ॥३४१७॥

अनंगसेना ताकै पुत्तरी । दानादिक गुरण मैं लावण्य भरी ।।
जोवन समै पुनर्वस को दई । दोन्यां मां प्रीत अति भई ।।३४१८।।

एक दिवस अनंग कुसमा नारि । खेलत देखी पुरवरि तिह बार ।।
विजयार्द्ध का विद्याधर धीर । देखी त्रिया आया तिह तीर ।।३४१९।।

गही बांह बिमारण बैठाइ । ले कै विजयार्द्ध कूं ते जाइ ।।
मंदिर मांहि भई पुकार । त्रिभुवन नंद सुंणी तिहं बार ।।३४२०।।

भेजे सुभट सुता की खोज । सब परियण मां मांची रोर ।।
विद्याधर देख्या गमन आयास । अनंग सेना बैठी ता पास ।।३४२१।।

वह षेचर एह भूमिगोचरी । सकल लोग बोल्या तिरण घडी ।।
रे रांक सुरण हो दुर धीर । हमसूं जुध करै तों बीर ।।३४२२।।

पडी मार तीर तरवार । टूटया रथ भाज्यो तिरण बार ।।
वह कन्या रथतैं गिर पडी । पंचनाम सुमरण आखडी ।।३४२३।।

महा उद्यान भयानक ठोर । करै विलाप रुदन अतिघोर ।।
मात पिता का सुमरै नाम । मनुष न दीसै है तिरण ठांम ।।३४२४।।

हाय कर्म तै असी करी । भूख प्यास सों सुध वीसरी ।।
वहै विरयां कुरण होइ सहाय । वहै विरयां कछु न बसाय ।।३४२५।।

दूहा

चक्रवर्त्ति की थी सुता, करती भोग विलास ।।
अशुभ कर्म के उदय से, पडी आय वन वास ।।३४२६।।

चौपई

वनवास के दुःख

तिहां स्यंघ चीता बहु व्याल । भयदायक रटै बहु स्याल ।।
वन के भयदायक तिरजंच । पडै सीत वस्तर नही रंच ।।३४२७।।

असा दुख सों बीतै काल । बन फल खाइ सुता भूपाल ।।
उनालै तपै सब मही । सीतल ठौर न पावै कहीं ।।३४२८।।

दुख में बीतैं आठु जांम । तिनहीं नहीं कभी विश्राम ।।
बरषा आगम बरषै मेह । सहे परीसा कोमल देह ।।३४२९।।

पवन चलैं बरषा झकझोर । चमकै दामिन आइ घटा घनघोर ।।
छोडि आस ससारी भोग । मन बच काय लगाया जोग ।।३४३०।।

दोय हजार वर्ष तप किया । अन्न पांरणी तजि संयम लिया ।।
भव्य तीन सु विद्याधर आइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ।।३४३१।।

धन्य साध अैसा तप करैं । छह रुति का दुख मन नहीं धरैं ।।
चिदानन्द सों ल्याया ध्यान । दया करैं सब ऊपर जांन ।।३४३२।।
बन में ए तप इण विध किया । जीव दया संयम व्रत लिया ।।
लबधदास कहैं तुम चलो । त्रिभुवन आनंद पिता सुं मिलो ।।३४३३।।
अनंग सेना मन में समझाइ । मैं संन्यास करया इण ठांय ।।
छोडे सब संसारी मोह । लबध दास समझाऊं तोह ।।३४३४।।
तब उठि गया भूपति सों कही । अनंगसरा देही सब दही ।।
उण वन में लीयो सन्यास । छोडि दिये सब भोग विलास ।।३४३५।।
त्रिभुवन नंदन देखण निमित्त । आया वन में देखी बहुभंत ।।
अजगर भया दुरधी का जीव । उन बहु धरी पाप की नींव ।।३४३६।।
डसी अनंगसरा तिहं घडी । देही छोडि स्वर्ग संचरी ।।
भुगति आव द्रोवनमेंघ गेह । गुणसाला गर्भ विसल्या एह ।।३४३७।।
इण प्रकार की पाई रिध । चरण उदिक होवै सब सिध ।।
त्रिभुवन नंद इह कारण देखि । उपज्यो संसार वैराग परेष ।।३४३८।।
जाण्यौं इह संसार सरूप । भ्रम्यो जीव धरि नाना रूप ।।
देही आदि सगो नहीं कोय । संपति तणां बिछोहा होइ ।।३४३९।।
चारूं गति भरम्युं चिदानंद । सुभ अनै असुभ तणे दोइ फंद ।।
कबहु रंक कबहु भुवनेस । जैसी करनी तैसा भेस ।।३४४०।।
मन वच काय लगाया ध्यांन । काठि कर्म पहूंच्या निरबाण ।।
वाईस सहस पुत्र समेत । ल्याया चिदानंद सों हेत ।।३४४१।।
दुरिम मुनिवर के पास । दिष्या लई सुगति की आस ।।
तेरह बिध चारित्र व्रत लिया । विषसुं पंच महाव्रत किया ।।३४४२।।
तीन रतन वरध्या दस दोइ । बाईस परीसह उन अंग होइ ।।
उसन काल गिर ऊपर तपैं । बरषा समैं रुख तलि छिपैं ।।३४४३।।
सियालै सरिता तट ध्यान । उपज्या उनकूं केवलग्यांन ।।
गए मुकति तिहां सिध अनंत । ज्योत ही ज्योत भई एकंत ।।३४४४।।
पुनवसु कै त्रिया का सोग । भए दिगंबर छांड्या भोग ।।
पच महाव्रत पांचु सुमति । मन बच काया तीनूं गुपति ।।३४४५।।
बाईस परीसा सहै अंग । द्वादश अनुप्रेंक्षा तह संग ।।
छह रुति के सुख दुख सहै सरीर । जाणैं षटकाय प्राणी की पीर ।।३४४६।।

दसौं दिसा वाके आभरण । श्री जिन बिना कोई नहीं सर्ण ॥
तप करि देह जाजरी करी । अंत समय अंसी मन धरी ॥३४४७॥

जे मैं निर्मल भूपति भया । मो पै त्रिया दुरबी ले गया ॥
मेरे तप का एह फल लह्यो । मो सम बली न दूजा मां कह्यो ॥३४४८॥

अनंगसरा सुं फिर सनबंध । हो जो अंसा किया बहु बंध ॥
देही छोडि लही अमर बिमांण । पायो स्वर्ग तीसरे थान ॥३४४९॥

आव भुगति दसरथ के गेह । भए पुत्र लछमण की देह ॥
अजगर मरि भैंसा गति भया । हस्तनापुर जनम जू लिया ३४५०॥

वर्धमान वणिक तिहा रहै । विणज हेत देसांतर बहै ॥
भैंसा लादि अजोध्या गया । तहां महिष गल कुष्टी भया ॥३४५१॥

कीडा पडि सहैं दुख घणे । पाप उदय तैं ए फल बणे ॥
कोई बालक मारैं ढेंल । खैंचैं पूंछ करैं वे खेल ॥३४५२॥

इस दुख नई भईसा मुवा । बआवर्त कुमार देवता हुआ ॥
रहै नरक में तिहां नारकी । उनूं कुं दुख करै मार की ॥३४५३॥

समझि कुबोध विचारि चित्त । मइय्या महिष अजोध्या करि थित्त ॥
उंन लोग मोकु दिया दुख । अब लेहुं वयर तो पाउं सुख ॥३४५४॥

उन छोडी कोई असी बयार । सर्व कुंभ या रोग तिण बार ॥
सगला दुखी थया पुरलोक । अजोध्या मैं प्रगट्या था रोग ॥३४५५॥

द्रोंवण मेघ की विशल्या पुत्तरी । उसके चरणोदिक पीडा टरी ॥
वह विसल्या लछमण की नारि । या तैं होइ इनका उपगार ॥३४५६॥

दूहा

पूरब भव सब ही सुणे, भाज्या सब संदेह ॥
जैसा कर्म कोई करै, तैसी गति पावेह ॥३४५७॥

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या पूर्व भवांतर विधानकं

५९ वां विधानक

चौपई

हनुमान अंगद को अयोध्या भेजना

सुण्यां रामचन्द्र पर जाइ । हणुमंत अंगद अजोध्या पठाइ ॥
भामंडल कुं दीया साथ । विरियांन लागी इणकी जात ॥३४५८॥

भरत सोवैं था सज्या ठोर । ए पहुंचे भूपति की पौर ॥
बीरा बजावैं गावै तांन । रघुबंसी कुल का करैं बखान ॥३४५९॥
भरथ भूप सांभली ए बात । तजि निद्रा वस्तर पहिरै गात ॥
द्वारै ऊभा देख्या तीन । महा सुघड बजावैं बीन ॥३४६०॥
तिनकुं पूछै भरत नरेस । तुम हो कवरण कहो संदेस ॥
कवरण काज आये तुम् रयरण । सांचे मोहि सुरणावो बयरण ॥३४६१॥

भामंडल का उत्तर

भामंडल बोले समझाय । राम लक्ष्मरण डंडक वन रहे जाय ॥
सुरजहास खडग तिहां लिया । खरदूषन संबुक जिहां दहा ॥३४६२॥
रावरण सीता हर ले गया । वानर वंसी का मदद भया ॥
[1]हरि कै लागया सकती बांन । हरि के हर ले गए परारण ॥३४६३॥
देहु नीर संजीवन मूल । तो कछु होवै जीवन सूल ॥
इतनी सुरिण कोप्या भरत । सत्रुघन सुरिणर क्रोध करंत ॥३४६४॥
असा क्या रावरण बलवांन । सीता कु ले गया निज थान ॥
मारू रावरण कू अब जाइ । वाही समय नीसान बजाय ॥३४६५॥
जागे सब नगरी के लोग । भरत कूं व्याप्या लक्ष्मरण सोग ॥
सुरिणवाजंत्र जान्यां सबै । अतिवीरज सुत आया तबै ॥३४६६॥
कै कोई दुरजन यहां आइ । आरण चढै बाजित्र वजाय ॥
भए एकठे नरपति घरणे । भरत सूं कहै उपाव किये वरणे ॥३४६७॥
जे तुम लंका पहुंचो राइ । तो इह रयरण बीत कै जाय ॥
लक्ष्मरण का होवैं काज । विसल्या भेजो इरण सायं आज ॥३४६८॥
कैकई गई मेघद्रव के गेहु । विसल्या सुण्यां लक्षमरण सुं नेह ॥
रोवैं कन्या लग्या सुन वारण । या समैं हुं पाऊं जारण ॥३४६९॥
तो लक्षमरण अब जीवैं सही । सूरज उदय कछु जतन नहीं ॥
सब मिल कियो यह बिचार । भामंडल संग विसल्या तिरण बार ॥३४७०॥
यासु पवन फरस कै लाग । उसही घडी लक्षमरण उठि जाग ॥
असक्ति वारण भाज्या आकास । लक्षमरण कों भई जीने की आस ॥३४७१॥
पवनपुत्र पकड्यो वह बारण । बोली विद्या पूछै हनुमांन ॥
असक्ति बारण नैं छोडे प्राण । पुण्यवंत सों चली न सयांन ॥३४७२॥

---

१. लक्ष्मरण

लक्षमण पुण्यवंत अति बली । बिसल्या नारि सर्वगुण मिली ।।
मैं विद्या अंसी असकत्ति । मोकूं जाणैं सबै जगत्त ।।३४७३।।

धरणेन्द्र ने ए विद्या दई । रावण कौं तिहां प्रापति भई ।।
बालि मुनीश्वर गिरि कैलास । वा समये असक्ति दिया तास ।।३४७४।।

मोकूं कोई सकै न टारि । जो मिल जत्न करै संसार ।।
विशल्या पूरब भव तप करै । ऐसी रिध उस तपतैं फुरै ।।३४७५।।

आवत सुणी बिसल्या नारि । अगले भव का लक्षमण भरतार ।।
मैं भागी लक्षमण तजि देह । पुन्य बराबर अवर न एह ।।३४७६।।

विसल्या द्वारा मूर्छा दूर करना

बिसल्या आइ लक्षमण के पास । केसर चन्दन लई सुवास ।।
रामचन्द्र कूं किया नमस्कार । लक्षमण तणी करी बहु सार ।।३४७७।।

कन्यां सहस्र बिसल्या साथ । सब मिल गावैं जस रघुनाथ ।।
ताल मृदग बजावैं बीण । गावैं सकल नारि प्रवीण ।।३४७८।।

लक्षमण का होश में आना

लक्षमण तब उठे अंगराइ । मुख तैं सुमरे श्री जिनराइ ।।
बोले लक्षमण रावण कहां । मार मार सबद मुख तैं भण्या ।।३४७९।।

रामचन्द्र समझाई बात । असक्त बाण लग्या तुम गात ।।
विसल्या मेघद्रवण की धिया । असक्त बाण इने दूरि किया ।।३४८०।।

गाए अनंत बधाये घणे । मूर्छा तणे सब दूखण हणे ।।
भेट्या सब सेनां के लोग । भूल्या तब परजा का सोग ।।३४८१।।

दूहा

बाईस परिषह उन सहे, षंडी च्यार कषाय ।।
असुभ करम सब टारि करि, भया नरायन राय ।।३४८२।।

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या आगमनं विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना

रावण सुनि लक्षमण उपचार । किये सचेत बिसल्या नार ।।
सकती बाण तैं हुवा असकति । पुन्यवंत कुं कछु न लगत ।।३४८३।।

बैठि सभा बहु मंत्री बुलाई । पूछैं माता लंका जाइ ॥
मृगांक मंत्री बीनती करै । कहुं सांच प्रभु हिरदै धरैं ॥३४८४॥
स्यंधा कै रथ श्री रामचन्द्र । ते आएं विद्या के बंद ॥
गरुड वाहन लछमण कुमार । विसल्या आएं विद्या सार ॥३४८५॥
जे तुम चाहो भुगत्यां राज । राक्षस बंसी राखो लाज ॥
सीता ले मिलो राम के संग । जो न होवई राज का भंग ॥३४८६॥
सदा रहै ज्यौं ऊन सौं प्रीत । छूटैं कुंभकर्ण इन्द्रजीत ॥

रावण का मन्तव्य

रावण कहै सुण मंतरी । भेज्यी दूत उनपै इन घरी ॥३४८७॥
रूपवंत हुवै चतुर सुजाण । निरभय वचण सुणावैं जाम ॥
छुडावो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हम उनसौं करैं मंत्र की रीत ॥३४८८॥
मैं नहीं वा करैं घमसान । चाल्या दूत सुघड सुजांन ॥

रावण के दूत का राम के पास जाना

सुंण उपदेस राम पैं गया । सेन्यां देखि विचार इह किया ॥३४८९॥
इनकै है सेन्यां अति तुछ । रावण कैं है सब कुछ ॥
जाइ पौलि ठाडा भया दूत । रामचंद्र सेन्यां संजूत ॥३४९०॥
पहुंच्या त्वरति बुलाई बसीठ । स्वामी काज को देइ न पीठ ॥
रामचंद्र का दर्शन पाइ । नमस्कार करि ऊभा जाइ ॥३४९१॥
विनती करूं सुण हो रघुनाथ । कुंभकर्ण इन्द्रजीत द्यो मो साथ ॥
रावण सुं राखो सनमंध । इत उत तैं चूकै इह धंध ॥३४९२॥
प्रजा बचै सब का दुख जाय । छोडो क्रोध धर्म के भाय ॥

राम का उत्तर

रामचंद्र बोलैं तिण बार । जो सीता भेजै हम द्वार ॥३४९३॥
भाई पुत्र उसका देउं छोडि । जब वह जीया चाहै बहोडि ॥

रावण के दूत का पुनः निवेदन

दूत कहै सांभलि राजान । रावण सम कोई नहीं आंन ॥३४९४॥
उन जीत्या है तीनूं षंड । सब भूपन पैं लिया है दंड ॥
जीत्या इन्द्र दशौं दिगपाल । राक्षस बंसी बली भूपाल ॥३४९५॥
जै तुम जीया चाहो राम । तो सीत का मति लेहु नाम ॥
छोडो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । तो तुमसौं छूटै नही प्रीत ॥३४९६॥

हमारे कुल को लागै गाल । बोलैं नहीं बचन संभाल ।।
सीता कुं दूजा कहै भरतार । लगैं कलंक तिहुं लोक मझारि ।।३४९७।।

रामचंद्र जो ढील न करैं । रावरण कूं हम परलय करैं ।।
लक्षमरण भावमंडल सूं कहै । दूत कु कछु दोष न लहै ।।३४९८।।

रावरण के बचन कहै इस ठौर । याकूं कछु न लागै खोडि ।।
सिंह कोप हस्ती परि करै । मृतक परि कछु काज न सरैं ।।३४९९।।

इह बसीठ उंदर सामान । ता परि कोपैं स्यंघ क्या ग्यांन ।।
इतनूं कहि मारैं क्या पाप । जोम्या बीतैं समझै आप ।।३५००।।

बलि वृद्ध विप्र तापसी । जोगी जती षुद्र मानसी ।।
पशु आश्रित पंषी अस्तरी । इनै मारि भुगतैं गति बुरी ।।३५०१।।

दूत मारैं का लागै दोष । सकल ही जीव दया कौं पोष ।।
जिहां दया तीहां धरम । अदया जाणहु पाप का मर्म ।।३५०२।।

भावमंडल का घट गया क्रोध । लक्षमरण नैं दीया प्रतिबोध ।।
सामंत दूत फिरि बोले बयन । समझो राम ज्युं पावो चैन ।।३५०३।।

तीन सहस्र विद्याधर सुता । ब्याही सकल सुख की लता ।।
जो विद्या तुम चाहो राम । मानुं नगर भलेरा गांम ।।३५०४।।

पुहपक विमान छत्र सुखपाल । हाथी घोडे मोती लाल ।।
अर्द्ध राज लंका का लेहु । सीता का हट छांडि देहु ।।३५०५।।

राम का प्रत्युत्तर

तब श्री रामचंद्र इम कहैं । अरे मूढ तू विवेक न लहै ।।
रावरण कै कोई मंत्री नांहि । भली बुधि समझावैं ताहि ।।३५०६।।

नारी देकरि भुगतो राज । ते अपणां बिगाडे काज ।।
तातैं भलो जांणु अतीत । वन में रहैं आतम सुं प्रीत ।।३५०७।।

फिरैं पयादा वन फल खाइ । वा सम सुखी अवर न कहवाइ ।।
श्री जिन जी सूं लगावैं ध्यान । राखै सदा आतम ग्यांन ।।३५०८।।

दूहा

राज काज त्रीया तजै, भुगतै सब विध सुख ।।
धिग् जनम वा पुरुष को, कुलहै लगावै दोष ।।३५०९।।
धक्का दीया दूत को, दिया सभा तैं काढि ।।
बचन न बोलै समझ करि, तातैं व्यापै गाढि ।।३५१०।।

चौपई

दूत का रावण के पास आना

गया दूत रावण के पास । भाषी सकल बात परकास ।।
भामंडल वचन कह्या समझाइ । लक्षमण ने तब दिया छुडाइ ।।३५११।।

दूहा

वह तो हठ छोडे नहीं, तजै न सीता नारि ।।
धरम नीत जे तुम करो, बेग मिटावो राडि ।।३५१२।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण दूत आगमन विधानकं

६१ वां विधानक

चौपई

रावण द्वारा चैत्य वन्दना

रावण सुणें दूत के वैन । करै सोच मन भयो कुचैन ।।
कुंभकर्ण अने इन्द्रजीत । मेघनाद तीनूं भयभीत ।।३५१३।।

वे बंधे मै भुगतूं राज । मेरा हुआ घनां अकाज ।।
बे ठाडे गलहूथं हाथ । सोगवंत करि नीचा माथ ।।३५१४।।

बहुत किया उनसों संग्राम । हारि न मानें लक्षमण राम ।।
जांनो अब मुझ कैसी बनें । निसचै वे प्राण मम हनें ।।३५१५।।

असी विद्या साधूं कोइ । दुरजन सकै न सनमुख होइ ।।
वडी बेर उपज्यो चितग्यांन । सब राउं सांतिनाथ जिन थांन ।।३५१६।।

मुनिसुव्रत स्वामी की सेव । करूं बिंब बीसौं जिनदेव ।।
सहस्रकूट कंचन देहुरे । रतन बिंब कंचन मों जडे ।।३५१७।।

देश देश चीठी पठवाइ । करो चैत्याले सगली सज्याइ ।।
पर्वत वन नगर अने गांम । भए देहुरे उत्तम ठांम ।।३५१८।।

पूजा प्रतिष्ठा करै सब लोग । धरै भाव करि तीनूं जोग ।।
मंदोदरी आदि अठारह सहस । पूजै सब त्रिय उत्तम वंस ।।३५१९।।

धरम महातम हिए बिचार । देव गुरु सास्त्र करैं मनुहारि ।।
पूजा दान करैं सब नित्त । दया धरम सों लगाया चित्त ।।३५२०।।

इति श्री पद्मपुराणे शांतिनाथ मुनिसुव्रत चैत्यालय विधानकं

६२ वां विधानक
चौपई

अस्टाहिनका महोत्सव

फागुन मास अष्टमीं स्वेत । अठाई व्रत करैं धरि हेत ।।
नंदीश्वर दीप जिनेस्वर भवन । सुरपति करैं तिहां गवन ।।३५२१।।

अमराधिप पूजैं जिन देव । करैं नृत्य मन वच सुनेहु ।।
कंचन कलस षीर जल लाव । ते ढालैं मस्तक भगवान ।।३५२२।।

रतनपुंज धरि पूजा करैं । जै जै सबद पाप कूं हरैं ।।
खेचर भूचर चैत्यालय भगवंत । रचनां रचैं तिहां बहुमंत ।।३५२३।।

तणे चन्द्र वे सोभय ठोर । वाजंतर बाजैं तिहां सोर ।।
अष्ट द्रव्य सामग्री घणी । वांदरवाल को सोभावणी ।।३५२४।।

पंडित मुनी पढैं जिनदेव । कहै ग्यांन के सूक्ष्म भेद ।।
वर्त्त अठाई उत्तम ध्यान । करुणा अंग वखाणैं ग्यांन ।।३५२५।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूजा बारंबार ।।
दुहुंधा वोर करैं सब धर्म । जीव जंत करुणा का मर्म ।।३५२६।।

सब ही सूं छोडें तिहां बैर । पुन्य काज लागे बहु फेर ।।
चरचा करैं धरम की रुची । पालैं क्रिया बहुत ही सुची ।।३५२७।।

सामाईक करैं त्रिकाल । सावधान सब ही भुवाल ।।
आत्मा लिव ल्यावैं बहु भाइ । ढिढसूं थुत्ति करैं सब राय ।।३५२८।।

दूहा

वर्त्त अठाई जे करैं, रालैं समकित सुध ।।
सो ही उत्तम जिन सही, करैं धर्म की वुध ।।३५२९।।

चौपई

शांतिनाथ मिंदर सु अनूप । पूजा करैं तिहां रावन भूप ।।
अष्टांग करैं नमस्कार । अस्तुति पढै सु बारंबार ।।३५३०।।

मन में विचारै अैसा भाव । जिहां लग बसैं नगर अन गांव ।।
आठ दिवस का पोसा लेहु । नित उठि दान सुपात्रां देहि ।।३५३१।।

जमदंड कुं इह आग्या भई । ढुंढेरा फेरि दुहाई दई ।।
जे ते हैं उत्तम कुल लोग । आठ दिवस अठाई जोग ।।३५३२।।

आरंभ तजि करो दिढ धरम । आठ दिवस छोडो सब कर्म ।।
जा के घर में नाहीं अन्न । तिस कूं द्यो मुंहमांग्या धन्न ।।३५३३।।

मंडारहु दीज्यो ताहि । जो कुछ चाहै सो द्यो वाहि ।।
सुणु सहु लोक भयो आनंद । पूजा रचै श्री देव जिनंद ।।३५३४।।

तीन काल पूजैं जिनदेव । सुणै सास्त्र गुरु की सारैं सेव ।।
दांन सुपात्रां विधि सौं देइ । अठाईं व्रत सफल कर लेहु ।।३५३५।।

जपै जाप राखैं चित ठौर । गहै मौन व्यापइ न है और ।।
कोइ चरचा कोइ आतम ध्यान । कोई कहै धरम व्याख्यान ।।३५३६।।

रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न

रावण चौबीस दिनां की टेक । सिध होवै तब विद्या एक ।।
जाकौं वह विद्या सिध भई । दरजन जीत सकै नहीं कोइ ।।३५३७।।

वे पूजैं स्वामी सांतिनाथ । रावण सुमरैं जहां हाथ ।।
चित्त न चलैं रहै मन धीर । जांणु बैठा वज्र सरीर ।।३५३८।।

दूहा

विद्या साधन कारणैं, दिढकर लाग्या ध्यांन ।।
हौनहार समझैं नहीं, कहा होइती आंन ।।३५३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण विद्या साधन विधानकं

६३ वां विधानक

अडिल्ल

सुणी इसी जब बात कहैं सब संजुत्त सूं ।।
उनतो लगया ध्यानक श्री श्री भगवंत सूं ।।
जो कोई आश्रम लेई पुरुष के मान कौं ।।
वह नहीं छोडै वांह सर्म की कांन कौं ।।३५४०।।

चोपई

व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना

कैसी विध उसकौं दुख देई । उनतो कियो धरम सूं नेह ।।
वाकैं करैं धरम की हांन । होइ पाप समझो धरि ध्यान ।।३५४१।।

जब हमसूं वह सनमुख लडै । तब हम भी उसमे जुध करैं ।।
धरम नीत सूं कीजे जुधि । पाप कर्म की छोडो बुधि ।।३५४२।।

वरत अठाईं उसका सही । वाकौं दूषण है यह नहीं ।।
वानर बंसी कहई नरेस । तुमतो कहो धरम उपदेस ।।३५४३।।

जई बालक तौ बिगडे काज । तौ नहि लागै उनकों लाज ॥
हम मारैं रावण कूं जाइ । ए आठ दिवस आइ बिहाइ ॥३५४४॥

पूरणमासी लगैं बिहाण । अपणैं अपणैं बैठि बिमांण ॥
मकरध्वज राजा संटोप । रतिबर्द्धन आया करि कोप ॥३५४५॥

वातादृण अरु सूरज उद्योत । महारथ पीतंकर बहु जोत ॥
नलनील असैं नृप घणे । नांमावली कहां लग गिणे ॥३५४६॥

पहुंचे लंका संभले वे भूप । रखवाले करैं रावन रूप ॥
कोप्या सकल सूरवां घेर । मंदोदरी समझावै तिण बेर ॥३५४७॥

लंकापति आगन्यां दई । हिंसा कर्म करो मति नई ॥
ए इस थांन धर्म की ठोर । झूझ कीये ते लागै खोरि ॥३५४७॥

आग्या बिन कीजे नहीं जुध । असें कहि मंदोदरी बुधि ॥
सगलां मिल तोडी पोल कुंवाड । लंका मांहि पडी तब राडि ॥३५४६॥

बंदरों द्वारा लंका में उपद्रव करना

लंगुर निज विद्या संभार । वानर वारन घर घर वारि ॥
जाकूं पकडैं लोचैं गात । बालक अस्त्री डरपैं बहु भांति ॥३५५०॥

रावण की माला लई छीन । लुंचैं ताहि बहुत दुख दीन ॥
भाजे लोग कोट में धसे । लुटैं गांम वानर जु हंसैं ॥३५५१॥

क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा

क्षेत्रपाल कोप्या तिण घडी । माया रूपी सेना करी ॥
मुंख बिकराल राजा नयन । मुदगर हाथ मार मुख वयन ॥३५५२॥

कोई रूप स्यंघ अरु सांप । अगनि रूप धरि देह संताप ॥
लांबी डाढि देह अस्थूल । पकडैं बिरछ उपाडैं मूल ॥३५५३॥

उनुं वृक्ष की कीनी है मार । बानर बंसी मानी हार ॥
भाजि छिपे भूल्या अवसान । छुट्या दुख लंका के थान ॥३५५४॥

बहुरउ विद्याधर संभार । मारे देव मनाई हार ॥
वे भाजे ए पीछा करैं । देखैं सकल अचंभा धरैं ॥३५५५॥

पूरणभद्र मणिभद्र खेत्रपाल । विद्याधर मारे भूपाल ॥
भाजे नरपति लंका छोडि । सूरबीर फिर लडैं बहुरि ॥३५५६॥

सनमुख भए विद्याधर भूप । वैं हूटैं नहीं कोध के रूप ॥
करैं देव बीजली घात । चलैं पग पवन हूटैं नहीं राति ॥३५५७॥

बरसै मेह मूसलाधार । आजै विद्याधर कुंवार ।।
वे दोन्युं देवल मांझ गये । हाथ जोडि तिहां ठाढे भये ।।३५५८।।

वानर वंसी कुमर सब आइ । हमकूं दुख दिया बहु भाइ ।।
श्री जिन सांतिनाथ के थान । रावण राय लगाया ध्यान ।।३५५९।।

सब परजा कूं उनों दुख दिया । जिन मंदिर में उपद्रव किया ।।
तुम अग्रे हम करै उपगार । बरजौ तुम उनसौं इंण बार ।।३५६०।।

लक्षमण कहैं रावण है चोर । सीता हर ल्याया इस ठौर ।।
साधैं विद्या सुं अजीत । एहै कवण धरम की रीत ।।३५६१।।

अब हम बहै सरभर हैं सही । जे यह विद्या पावैं नहीं ।।
तो हम पावैं सीता नारि । अई विद्या न हुवै अविकार ।।३५६२।।

कारिज हमारा बिगडै सही । अवर सोच हमकुं कछु नहीं ।।
पापी कूं तुम भए सहाइ । हमारा दुख तुम चित्त न सुहाइ ।।३५६३।।

अइसा तुम कछु करो विचार । टरै ध्यांन पावैं नहीं पार ।।
कहैं देव हम बोलैं नाहि । परिजा दुख करिय न चाहि ।।३५६४।।

जासों बयर तासुं करो युध । असा वचन कहै गए सुर सुध ।।
सुणे वचन सब निरभय भये । मन संदेह सहु के गए ।।३५६५।।

दूहा

रावण साधै ध्यान धरि, विद्या महा अजीत ।।
एक खोट वामै बडो, प्रमदा मांहीं चित्त ।।३५६६।।

इति श्री पद्मपुराणे समदिष्टी देव प्रहार अईकीर्ति विधानकं
६४ वां विधानक

चोपई

अंगद का लंका में जाकर वहां की स्थिति देखना

अंगद लंका देखण चल्या । किपधकांड गज साध्या भला ।।
चौरासी अरु सोहै झूल । घंटा वादि सुहावण मूल ।।३५६७।।

ऊपर वणी अंबारी लाल । जिहां बैठा अंगद भूपाल ।।
सूर सुभट संग भूपति घणे । पयादा लोग न जावैं गिणे ।।३५६८।।

बादल मांहि जिम पुंनिम चंद । तिम गज ऊपर अंगद सुरेन्द्र ।।
लंका देखि नगर की गली । वोडि वोडि सोभा अति भली ।।३५६९।।

लाल मृदंग बजै मुहचंगी । करैं नृत्य पातर रूबकी ।।
जिहां जिहां जिन के देहुरे । पूजा पढ़ैं पंडित सहु खरे ।।३५७०।।

बाजा बजैं सुहावरण रूप । तिहां कामिनी नारि अनूप ।।
अंगद कूं देखैं तिरण बार । धन्य नारि जिसका यह भरतार ।।३५७१।।

कोई कहै इह जननी धन्य । जिसकी कूंख भया उत्पन्न ।।
कोई कहैं बहन है धन्य । जिसका है यह वीर रवन्न ।।३५७२।।

सब मिलि नारि सराहैं रूप । नमस्कार करि फिरियो भूप ।।
लंका के गढ किया प्रवेश । चंद्रकांति मरिण मिंदिर भेस ।।३५७३।।

मंदिर का बहुतै विसतार । जो भूलै सो लहै न द्वार ।।
इन्द्र नील मरिण मंदिर और । रतन सफोटिक मिंदिर तिरण ठौर ।।३५७४।।

श्री भगवंत का है तिहां सथांन । अंगद नृप तिहां पहूंच्या आंन ।।
नमस्कार करि करी डंडोत । अस्तुति जिन की पढी बहोत ।।३५७५।।

तीन प्रदक्षिरणा दई नरेंद्र । सांतिनाथ पूजिया जिनेन्द्र ।।
रतनथंभ चैत्याले लगे । उनतैं अंधारा सब भगे ।।३५७६।।

बेदी मांही वनी अनूप । छत्री सोभै अधिक सरूप ।।

ध्यानारूढ रावण को देखना

जिहाँ रावरण था ध्यानारूढ । अंगद नैं तब पाया ढूंढ ।।३५७७।।

रे पापी पाखंडी नीच । धरया ध्यान कपट मन बीच ।।
असा परपंच करै हैं झूंठ । गही मौंन जैसा है ऊंट ।।३५७८।।

बिन विवेक देही कौं दहै । सत्य शील का भेद न लहै ।।
रावरण चित्त डुलावै नहीं । करतैं जाप्य अंगद नैं गही ।।३५७९।।

पुहुप उठाय मारे मुंह माथ । पकडि झंझोडे दोनूं हाथ ।।
मंदोदरी आदि सकल रणवास । चोटी पकडि आनी उन पास ।।३५८०।।

करैं आलिंगन मोडैं बांह । रावण मूंह तैं बोलै नांह ।।
सगली सखी पुकारैं घणी । करैं कहा अब असी बणी ।।३५८१।।

तुम बैठां हमको दुख होइ । तुमकों बुरा कहै सब कोइ ।।
रावरण का तिहां चित्त न टरैं । तब अंगद मुख तैं उच्चरै ।।३५८२।।

रे रावरण तैं सीता हरी । हूं ले जाऊं मंदोदरी ।।
जै तूं बली तो लेहु छुडाय । दासी करि हूं पिता की जाय ।।३५८३।।

मैं चाल्या जे तोहि दिखलाइ । मति कहियो ले गया चुराय ।।
रावरण मुख तैं कछुवन कहै । विद्या का ध्यान जीव में रहै ।।३५८४।।

रावण द्वारा विद्या सिद्धि

चिहुं ओर उजियाला भया। विद्या पाइ सुख उपज्या नया ॥
बोलैं विद्या प्रभु आगन्यां देहु। जो मन हुवै सो कार्य करेहु ॥३५८५॥
रावण कहै लक्षमण कुं बांधि। मेरा इंहि विधि कारज साधि ॥
बहुरूपिणी विद्या गुण धरौं। रावण सौं वह विनती करौं ॥३५८६॥
आगन्या देहु प्रभुजी मोहि। कुंण खुटक हिरदा मां तोहि ॥
तब रावण बोलैं तजि मौन। उठो वेग अब कीजे गौन ॥३५८७॥
बांधि आंणु राम लक्ष्मणां। तो समझौं तो मैं गुण घणां ॥

विद्या का रावण से निवेदन

विद्या कहै लंकापति सुणुं। दानव देव सकल मैं हणुं ॥३५८८॥
चक्रधारी सूं कछु न बसाय। अवर सकल कौं बांधू जाय ॥
सांतिनाथ का दरसन पाय। दई प्रदक्षिणां नवण कराइ ॥३५८९॥

अडिल्ल

रावण सोच विचार बहुत मन में करैं,
बिद्या भई जू सिध सुगुंण बहुला धरैं ॥
जो यन इंछ्ह बात सो यापैं है नही,
मो पै विद्या बहुत एक ये भी सही ॥३५९०॥

इति श्री पद्मपुराणे बहुरूपिनी विद्या आगमन विधानकं

६५ वां विधानकं

चौपई

रावण का गमन

सब रणवास जु करैं पुकार। अंगद दुख दिया तिण बार ॥
तुम अग्रे अंसी करी। तुमारि संक न मनमें धरी ॥३५९१॥
अंगद गांडु का कहा त्रिस। उंन कछु भय आंण्यां नहिं चित्त ॥
तुम नैं हमारी न आंनी दया। सब त्रिया कूं दुख दे गया ॥३५९२॥
रावण कोप कहै ए बैंन। मंइतो ध्यांन धरौ दिढ जइन ॥
जई किरोध करता मन मांहि। तो मोकुं विद्या फुरती नांहि ॥३५९३॥
वाकुं बुधि मरणे की भई। बेंदर बात उपाआई नई ॥
बे तो सब ही हैं कीट समान। मारू मींडक करू मसान ॥३५९४॥

सब त्रिया रासी करि मनुहार । पहुर आभूषण किये भूंगार ॥
चल्या मेहु बाजा झणकार । सुबरण चौका लिया संवारि ॥३५९५॥

वस्त्र उतारे करैं स्नान । तेल फुलेल उबटणा आन ॥
कंचन कलस गंगा का नीर । करई सेवा राणी भीर ॥३५९६॥

सांतिनाथ की पूजा करी । अष्ट द्रव्य सामग्री धरी ॥
बहुरि आय लीया आहार । पुष्पक बिमांण परि हुवा असवार ॥३५९७॥

बहुरूपणी का अब देखूं बल । ऐसी है या बिद्या अटल ॥
जितनी थी बिद्या की सइंन । सब गुंण देखे अपणे नयन ॥३५९८॥

कंपी धरती गिरि थरहरे । रामचंद्र का दल ऊपरे ॥

रावण के मंत्रियों द्वारा पुनः निवेदन

रावण के बोलैं मंतरी । तुम पाई बिद्या गुण भरी ॥३५९९॥

रामचंद्र लक्षमण हैं बली । सीता देहु ज्यों होवै रली ॥

रावण द्वारा पश्चाताप

मोहि भई भांण्यां की लाज । मोहि नहीं सीता स्युं काज ॥३६००॥

जई फेरूं तो मोहि लगै कलंक । सब कोई कहै इन मानी संक ॥
मोकूं उपजी बुधि कुबुधि । तुझि हरि लाया भूली सुधि ॥३६०१॥

मेरी आव थी जो इम ही लिखी । बैठि बिमांण देखउ भू सखी ॥
पुष्पक बिमांन सीता बैठारि । दिखलाया सगला संसार ॥३६०२॥

धिग धिग धिग है मेरी बुधि । कछु नही करी धरम की सुधि ॥३६०३॥
परनारी मैं काहे हरी । अपनी कीरत कीनी बुरी ॥
जो मैं जटा पंखी के पास । छोडि आवता दंडक बनवास ॥३६०४॥

भभीषण समझावै था मोहि । मैं वापरि कीया अति छोह ॥
वाके मारण की मति करी । भाई बीछडि गया तिन घडी ॥३६०५॥
जे मैं मानता उस तणां वचन । तो किम होती ऐसी कठिन ॥
कुंभकर्ण धनैं इन्द्रजीत । मेघनाद तीनुं भयभीत ॥३६०६॥

पडे बंदि मांरा सब जाइ । ए दुख मोपै सह्यो न जाइ ॥
उत्तम कुल को कालम ल्याइ । सीता कुं आंणी चुराइ ॥३६०७॥
सकल लोक निसदिन निंदा करैं । जो सुणि है सो कहि है बुरैं ॥
परनारी है बिसा भुवंग । अब अब दुख होवै जिव संग ॥३६०८॥

मैं समझैं था अमृत पाय । विष समान लागै मुझ आइ ।।
वाई हूँ देहुँ राम नैं जाइ । तो अब हूंबै एक अनैं राय ।।३६०९।।
उन अंगद मोसुं करी अति बुरी । बिभोषण ओहि सब सत्तरी ।।

रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय

अंगद और मारूं सुग्रीव । दोनूं मारि करूं छिन ग्रीव ।।
प्रभामंडल तम मंडिल करूं । हनूमांन जम मंदिर धरूं ।।३६१०।।
चंद्रहांस से सबकौं काटि । उनकूं भेजूं जम की बाटि ।।
देख जू अब मैं ग्रैसी करूं । मारि सबन कूं परलय करूं ।।३६११।।

दूहा

समझि ग्यांन विह्वल भया, पहुंची आवखु पूर ।
धरम रीत जांणी नहीं, उन जु कुमाया कूर ।।३६१२।।

इति श्री पद्मपुराणे बुधनिश्चै कृत विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

रावण की दैनिक क्रिया

बीती रयण किया सु विहांण । रावण उठि कीयो असनान ।।
पूजा करी देव भगवंत । बारबार सुमरै विनयवंत ।।३६१३।।
भोजन करि भूषण सवारि । मात पिता की कीनी मनुहार ।।

दरबार हाल

सब कूं दीने कंचन लाल । स्यंघासन बैठा भुवाल ।।३६१४।।
तिहां भूपती ठाढे घणा । रावण सोचैं मन आपणा ।।
कुंभकर्ण था मेरी बांह । इन्द्रजीत मेघनाद भी नांहि ।।३६१५।।
वे तीनूं रामचंद्र कै बंदि । उन बिन सगली सेना धंध ।।
हाथ गला थैं सोचैं सोच । अन्नपाणी थी छोडी रुच ।।३६१६।।
देखैं तिहां सकल मंतरी । उनू बुधि उपजाई खरी ।।
मन की बात उनूं सब पाइ । कहै बीनती सबै समझाई ।।३६१७।।
तुम कुछ चिंता आणौं आपणैं । तुम संग नरपति हूंगे घणैं ।।
विद्या एक एक तैं भली । पूजैंगी तुम मन की रली ।।३६१८।।
सुरवीर नहीं करैं विचार । उठो बेग बांधो हथियार ।।
मंदोदरी भांखै झरोखा द्वार । कैसी साजि करैं करतार ।।३६१९।।

अपशकुन होना

रावण आवधशाला कस्या । तिहां सुभन खोट सहु मिल्या ॥
डंड सौं छत्र पड्यो भूमि । टूटी धुरि भाग्या रथ भूमि ॥३६२०॥
आगैं होइ निकल्या मांजार । स्वान कान झाड्या तिन बार ॥
खोट सुगन रावण को भए । मंदोदरी सोचै निज हिये ॥३६२१॥

मन्दोदरी की चिन्ता

मंदोदरी पूछै निज मंतरीं । जे रावण टालै असुभ घडी ॥
समझावो तुम मेरी बात । ज्यौं टलि जावै एही बात ॥३६१२॥

मन्त्री का उत्तर

बोलै मंत्री माता सुणु । रावण समझै सबही तैं घणु ॥
वेदपुराण करै व्याख्यान । वा सम सुघड न दूजो जाण ॥३६२३॥
हम कछु कहैं तो मांनैं बुरा । हमारे कहे काज कहा सरा ॥
जो तुम वा समझावो आप । तोइ हमन को मिटै संताप ॥३६२४॥
मंत्री पास सुणे उपदेस । गई जहां दसकंध नरेस ॥

मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना

हंस गमन सोहै मंदोदरी । बहुती संग सखीयां खरी ॥३६२५॥
जैसे गंग समुद्र कूं मिली । मंदोदरी इम पति पै चली ॥
जैसे सबहै कालिंदरी । तिम वे संग सोहे अस्तरी ॥३६२६॥
जैसे इन्द्र इन्द्राणी के हेत । अइसी प्रीत इनोंको होत ॥
आवत देखी रावण निज नारि । बांधे था कटिस्युं तरवार ॥३६२७॥
बोलै भूपति कारण कवन । काहे कूं तुम कीया गवन ॥
मंदोदरी विनवै कर जोडि । मोकूं देइ सुहाग बहोड ॥३६३८॥
प्रभुजी मेरा मानों वचन । करो राज घर बैठा चइन ॥
रामचंद्र हैं सूर्य समान । तुम हो सब तारा समान ॥३६२९॥
कैसे लगै भांन कूं खेल । बालक ज्यों करता होइ खेल ॥
वह हैं तीन लोक के ईस । उनसौं करि न सकै कोई रीस ॥३६३०॥
सीता उनकी देहु पठाइ । निरभय राज करो इस ठाइ ॥
परनारी है दुख की खांन । तासौं होइ धरम की हानि ॥३२३१॥
कुल क्षय होइ जाहि हैं प्रान । ऐसी समझि विचार सुं ग्यांन ॥
सीक नदी अति ही गंभीर । जिसा लहु ज्युं सामै तीर ॥३६३२॥

है कालिन्द्री अगम अथाह । बुडत बांह गही तुम नांहि ।।
उत्तम कुल ए राक्षस वंस । तुम इह किया नरय का अंस ।।३६३३।।

तैं कुल खोया परनारी काज । कीर्ति तुम खोई अकाज ।।
परनारी के भुगतण हार । ते सब भए हैं इस संसार ।।३६३४।।

अर्ककीर्ति जैसे क्षय गया । श्री विजय की नारी ले गया ।।
असनघोष अने विजयसेन । श्री विजय के मन भया कुचैन ।।३६३५।।

उनू अर्कीर्त्ति कौं मारि । रूपणी त्रियां लई तिसवार ।।
अैसी तुमकू भई कुबुद्धि । अपणे जीव की करी न सुध ।।३६३६।।

सीता देहु रामकूं जाहि । निर्भय राज करो तुम राय ।।
कह्या हमारा करो तुरंत । ज्यों नगरी में होवैं संत ।।३६३७।।

रावण का उत्तर

रावण कहै मंदोदरी सुणु । अर्ककीर्त्ति सम मो मति गिणौं ।।
मैं जीते हैं सकल नरेस । इन्द्रभूप मान्यां आदेस ।।३६३८।।

मेरा बल है प्रगट तिहुं लोक । तू कांई चिंतवै मन सोक ।।
कहां राम हैं भूमि गोचरी । जिसका भय तू चित्त में धरी ।।३६३९।।

उनकी सेना दहवट करूं । राम है बांधि बंदि मैं धरूं ।।
जे मैं आंणी सीता नारि । फेर सकूं कैसे इण बार ।।३६४०।।

उत्तर प्रत्युत्तर

मंदोदरी सुंणि धूण्यो माथ । मेरा बचन तुम मानु नाथ ।।३६४१।।

कहां दीपक कहां सूरज कांति । तुम दीपक रवि हैं रघुनाथ ।।
भानु उदय तब दीपक किसा । उनका बल आगैं तुम जिसा ।।३६४२।।

तुम काहे को होवो दुखी । सीता देइ तुम रहो सुखी ।।
रावण बोलै करि नीचो मांथ । करै सोच बहुत है साथ ।।३६४३।।

जे पुरुष काहू का कर ग्रहै । तो क्यूं छोडै किसही के कहै ।।
मोहि भई मांणे की कांण । कैसे छोडूं अपणी आंणि ।।३६४४।।

मंदोदरी बिनवै सुणु नरेन्द्र । परनारी है पाप के फंद ।।
कीरत नासै अपजस होइ । पति परतीत करै नहीं कोइ ।।३६४५।।

फल इन्द्रायण अधिक स्वरूप । अैसा परनारी का रूप ।।
देखत लागै सोभावंत । फरसत खात लगैं विष अंत ।।३६४६।।

जैसे मणि भुयंग सिर देख । जो कोई लोभ करै वह पेख ।।
डसै त्रियाल जाई तसु प्राण । वह मणि तब कोई भुगतै आण ।।३६४७।।

जे कामी मैं डारैं हाथ । तिनकै हुवै प्राण का घात ॥
सवणिक सुणि मया अस्थान । परनारी हरि करिसो थांन ॥३६४८॥

जाइ नरक भुगतै चिरकाल । छेदन भेदन दुख का साल ॥
ताती पुतली त्यावै धंध । ए फल लहैं सील के भंग ॥३६४९॥

जे कुलीन ते पालैं सील । तजैं सील जे कुलैं कुलीन ॥
सीता मो कूं सौंपी देहु । तुम इह मेरा वचन करेहु ॥३६५०॥

जे तुम चाहो हो अति रूप । मैं हूं सबतें महा स्वरूप ॥
जैसा कहो तैसा करूं भेष । वैक्रिया रूप करूं असेष ॥३६५१॥

सीता नैं द्यो मेरे साथ । पहुंचाऊं जहांने रघुनाथ ॥

रावण का कोपित होना

ऐसी सुणि कोप्या दशशीस । मुंह चढाई नयनही बीस ॥३६५२ ।
तू मेरा भये सूं जाह । रावण तबै इण विध रिसाह ॥
परपुरषां की अस्तुति करै । मेरा भय जिय मैं न धरै ॥३६५३॥

तेरै कहा रामसूं काम । तो कूं जात है उनकी ठाम ॥

मन्दोदरी का पुनः निवेदन

मंदोदरी कहै फिर बैंन । प्रीतम तुम राखो चित चैंन ॥३६५४॥

इतना दुख सीता में कह्या । ता कारण इतना हठ गह्या ॥
वह तो कोई इच्छै नांहि । अटल सील धरतै है ताहि ॥३६५५॥

उत्तम कुल जनक की धिया । महा सती राम की त्रिया ॥
जे कुल हीन तजैं ते सील । बिभचारी कुल छांडे नींव ॥३६५६॥

बिना कारिज मरि है ए जीव । ए सब पाप चढैंगे नव ग्रीव ॥
पहिलां तजै आपनी देह । तब परदारास्यु किसा सनेह ॥३६५७॥

जिनकी तुमने सीता हरी । वै तोहि मारैंगे इस घरी ॥
सीख देत मानु तुम बुरा । तुम मरने कारन ही धरा ॥३६५८॥

विसन कुमार बिक्रिया रिद्ध । टारा दुख बाका पुनि सिध ॥
बलि पै मांगी पैंड जु तीन । तब बोल्या बांभण मति हीन ॥३६५९॥

छोटा भाग बांभण का सही । तीन पैंडि ही मांगी मही ॥
इतनी सुण तब बाई देह । मानवोत्तर पर्वत पग देहु ॥३६६०॥

दूजा चरण सुदर्शन मेरु । तीजा पग कूं रह्या हेर ॥
तीजा चरण बलि कै हीए । देवां नै संतोष तब दिये ॥३६६१॥

तुम हो जती दिगंबर भेस । समझ्यो ग्यान दया उपदेस ॥
तब मुनिवर कुं उपजी दया । बलि कूं छोडि वनवास लिया ॥३६६२॥

भूला नै दीजिये बताय । ग्यानी मूरख नहीं रिसाइ ॥
सीता देहु ज्युं मिटै राड । मानुं वचन ज्युं न पडै धाड ॥३६६३॥

आगैं भए नारायण सात । प्रतिनारायण मारे इंण भांत ॥
प्रथम त्रिपिष्ठ विजई बलभद्र । अश्वग्रीव मारे कर चक्र ॥३६६४॥

सुप्रतिष्ठ अचल हूवा अवतार । तारक मार किया संघार ॥
स्वयंभू धर्म तीजे भए । मेरक उन हण्यां समए ॥३६६५॥

पुरुषोत्तम सुप्रभु चौथो बली । निसुंभ कीत्तिरण ग्रीवा दली ॥
पुरुषसिंह सुदरसन पंचमें । मेरकुमार जिम मंदिर हुसें ॥३६६६॥

पुंडरीक नंद भए छठा । मदसूदन मारया चक्र पढैं ॥
दत्त नामात्र नारायण सातए । बल्लभ कौं मारया घातए ॥३६६७॥

अब है यह अष्टम अवतार । तुम प्रतिनारायण हैं इस बार ॥
नारायण का है इहै नियोग । प्रतिनारायण कैं कूल करै बिजोग ॥३६६८॥

तातैं मुझे व्यापै हैं इही । तुमकूं लक्ष्मण मारैगा सही ॥
तातैं निवऊं बारुंबार । अब जे सकै कलह कुं टारि ॥३६६९॥

अकारथ क्यूं दीजिये जीव । अब कछु करो धरम की नींव ॥
अणुव्रत पालो घर मांहि । सुख सौं बैठा सीतल छांह ॥३६७०॥

छह दरसन विध स्यों द्यो दान । सास्त्र सुणुंउ नित व्याख्यान ॥
अथ तेरह विध चारित्र जीतो । पंच इन्द्री सत्रु ॥३६७१॥

आठ कर्म जीतो तुम ईस । प्रकृति ते रहै एकसो अडतालीस ॥
भव जल तिर जावो सिव मध्य । अजर अमर तिहां पूरण रिद्ध ॥३६७२॥

उत्तम ग्यानी करै न पाप । सीता देहु राम कूं आप ॥
छुडावो कुंभकरण इंद्रजीत । मेघनाद छूटै इह रीत ॥३६७३॥

रावण का उत्तर

रावण सुणि इम उत्तर देइ । तुम ए वचन काहे कहेइ ॥
तोरी कूंख उपजे बलवंत । तू किम हो है भयवन्त ॥३६७४॥

मैं तो प्रतिनारायण नहीं । कौण नारायण है इस मही ॥
इंद्र भूप सम अवर न कोइ । वाकुं बस कीयो अब सोइ ॥३६७५॥

ऐसे हैं ये कहा बरांक । जिन की तुम मानों हो धाक ॥
मरण सुं कातर होइ सो डरै । सरस होइ सो वेगा मरै ॥३६७६॥

कहइ राम लछमण सू जुध । अब मैं अवरन समझू बुध ॥
भई रयण अस्त भया भान । ससि की ज्योति उदय भई आन ॥३६७७॥

रावण की रात्रि

रावण अंतहपुर आइ । भोग भुगत सौं रयण बिहाइ ॥
नगर लोग सब मानैं रली । कोई दुखी न सोभा भली ॥३६७८॥
घरि घरि दंपति भुगतैं भोग । ज्यौं दुखि मनैं देख वियोग ॥
उज्जल सिज्या उजल वस्त्र । सोमैं तिहां चांद की किरण ॥३६७९॥
सुरगपुरी सूर करैं विलास । बैठी नारि कंत के पास ॥
फूल सुगंध अरगजा ल्याइ । जिसकी बास मधुकर लुभाइ ॥३६८०॥
बीण बजावै गावैं तान । बोलैं वचन सुख की खान ॥
सखी विचक्षण बोलैं वाइ । पान खुवावैं बीडी बणाइ ॥३६८१॥
चउका बण्यां विराजै दंत । सोहैं हीरा की सी पंत ॥
कउक कला बाजई विचित्र । सोहैं हाथ कमल के पत्र ॥३६८२॥
कांमी कामनी मद मंत । बोलैं सबद कोकिला मंत ॥
ते सुख किसपै बरणे जाइ । जे बरणों तो पार न पाइ ॥३६८३॥
सुख सूं भुगते च्यारू जाम । करि सनान सुमरे जिन नाम ॥
पूजा करी निरंजन देव । भोजन भुंज विचारैं भेव ॥३६८४॥

युद्ध के लिये प्रस्थान

प्रभु की आज्ञा बजैं निसांन । सुण्यां सबद छोहे बलवांन ॥
काहू कूं व्यापै बालक मोह । रोवैं नारी प्रभु भयो बिछोह ॥३६८५॥
आंसू नयन भरे सब नारि । जुध करण चाल्या भरतार ॥
कहैं कंत सुणु वर आंन । हम लाए हुं प्रभु को आंन ॥३६८६॥
स्वामि काज को बरुया सरीर । करो काम मन राख्यो धीर ॥
करैं बेगि भूपति का काज । जै विधना अब राखैं लाज ॥३६८७॥
जीवांगा तो मिलस्यां आइ । सहु कुटंब भेटया मन लाइ ॥
भया विदा ने पलाण्यां तुरी । ऊंची चढि देखैं सब तिरी ॥३६८८॥
गए दूर सब दृष्टि न पडैं । मुरछावंत नारी गिर पडैं ॥
रावण की सेनां तब चली । भई भीड मार्ग नहीं चली ॥३६८९॥
देखैं अंटा अटारी लोग । हय गय पायक सुभट मनोग ॥
भूपति चढे बडे सामंत । बाजैं बाजी चले बलवंत ॥३६९०॥

घोडा रथ आगे सुखपाल । हस्ती पर रावण भूपाल ।।
दस सिर बीस भुजा सोभंत । के आकास गामी विद्यावंत ।।३६६१।।

भूमिगोचरी पृथ्वी पर चलैं । विद्याधर ऊंचे बहु भले ।।
लोप्या भानु न दीसै आकास । महासंघट सेना चिहुं पास ।।३६६२।।

दूहा

रावण की सेना चली, कंप्या सब संसार ।।
सूर सुभट जोधा घने, कहत न पावैं पार ३६६३।।

इति श्री पद्मपुराणे रणजोग विधानकं
६७ वां विधानक
चौपई

मन्दोदरी से अन्तिम भेंट

मंदोदरीं सुं रावण इम कहै । तू काहे चिंता चित गहै ।।
सुभटां साथ बणी है काम । जो जीवता बचै संग्राम ।।३६६४।।

फिर तोहि सेती होइ मिलाप । हौंणी होइ टरै नहीं आप ।।
बहु विध समझाई अस्तरी । बिछडे कंत हिए गम भरी ।।३६६५।।

ऊंचे चढि देखी सब सैन । धरि अंगण जीवकु कुचैन ।।
मैं समझाई रचि पचि हार । वचन न मान्यां मोहि भरतार ।।३६६६।।

अब कै कहा वणावैं दई । अठारह सहस सोच चित भई ।।
एक सहस मंगल मयमंत । रथसौं लगे अंजन गिर भंत ।।३६६७।।

छत्री कलस अति सोभा बणी । रतन जोति सी दमकैं घणी ।।
रावण बैठा रथ परि आइ । दससिर सोहैं बीस भुजाइ ।।३६६८।।

इन्द्र रथ सम रथ नहीं कोइ । असी सुणी रघुबंसी वीर ।।

राम द्वारा युद्ध की तैयारी

राचचन्द्र केहरि रथ चढे । गरुड वांहन लछमन बढे ।।३६६९।।

सेना चली चतुर विध संघ । सुर सुभट मन उठै तरंग ।।
इंद्ररथ रघुपति ने देखि । पूछै इह का कहो परेषि ।।३७००।।
कै परवत कैं कोई देस । कहीं न देख्या इसका भेस ।।
अंगद बोलै जांबूनंद । इह रथ रावण विद्यावंत ।।३७०१।।

लक्षमण सुणि कोप्या बहु भाइ । वा सनमुख सेना ले धाइ ॥

दोनों की सेनाओं में युद्ध

इत उत सेना सनमुख भई । काढि खडग लडाई लडी ॥३७०२॥
दंती अजनगिर जिम जुटैं । मद के मांते चुवे पटैं ॥
मारैं टक्कर टूटैं दंत । मसतक फूटैं बहैं रकत्त ॥३७०३॥
छोडैं बरछी मारैं बाण । पैदल सब झूझै घमसान ॥
किसही काढि लई तरवार । धाइ पडे करि मारुं मार ॥३७०४॥
तीर तुपक का लागैं घाव । सुरमां सभी लडैं तिह चाव ॥
तउब न मानैं दोउंधां हार । घायल घूमे रणह मझार ॥३७०५॥
रूंडमुंड परवत सा पडे । रथ सुं रथ अस्व सुं अस्व भिडे ॥
दोउ धां झूझै सूषत घणे । उनुं का नाम कहांलूं गणे ॥३७०६॥
धनुष खैंचि तक मारैं बांण । बहुतूं का छूंडै तिहां प्राण ॥
ग्रध आदि भर्ष तिहां आइ । सुरनर किंनर देखैं आइ ॥३७०७॥
बांने धारी जोधा लरैं । उंनू के पीछे पांव न पडैं ॥
कातर भाजैं जे रण कूं देख । कोई न उबरैं अैसा लेख ॥३७०८॥
अैसी कठिन बणी चिहुं फेर । जित भाजै तित मारैं घेर ॥
बइरी संग बइरी जुटे । तिनका क्रोध बहुतें घटे ॥३७०९॥
मारैं गदा करैं चकचूर । चक्र मारतां झूझैं सूर ॥
बरछी मारैं लेइ उंचाई । कोई गहि कर देहु बगाई ॥३७१०॥
बाथों बाथ लडैं बलवांन । सोणत बहै अति नदी समान ॥
इहै हनूवंत उतै मारीच । घेरि लिया सेना के बीच ॥३७११॥
तब धाए अंगद सुग्रीव । मदुक कुंभ विक्रम रण सींव ॥
पडी मार रावण की सैंन । झूझे राक्षस भया कुचैंन ॥३७१२॥
चिहुं कोर धाए सामंत । टूटैं खडग लोह बाजंत ॥
रावण देखे हारे लोग । आया आप जुध कै जोग ॥३७१३॥
रामचंद्र लक्षमण बलवंत । सन्मुख ए धाए पुंन्यवंत ॥
पुन्य तैं होवै निज जीत । पापी मरै महा भयभीत ॥३७१४॥
रावण रामचंद्र सों कहैं । अजहूं कछु सास रहे ॥
मारूं तोकुं बेग संवारि । लक्षमण बोलै बात विचार ॥३७१५॥
रे गंवार पापी तूं चोर । अबकैं पकडि मारूं ठौर ॥
वज्रावर्त्त राम कर गह्या । लक्षमण समुद्रावर्त्त ले रह्या ॥३७१६॥

धनुष लीया रावण नै तारिण । दाउ धां छुटै विद्या बांण ।।
भभीषण मयमत सुं जुध । बांध्या मैं भूपति बहु बुध ।।३७१७।।

दूहा

बहुत जुध दोउधां हुवो, कब लग करै बखाण ।।
सुर असुर गंधर्व सुं, सहू जीवनै दीये पराण ।।३७१८।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण लक्ष्मण जुध विधानकं

६८ वां विधानक

चौपई

देवताओं द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन करना

रावण लक्षमण दोउ लरैं । दस दिन बीते दोउं न टरैं ।।
सुर असुर किंनर गंधर्व । देखै जुध सराहै सर्व ।।३७१९।।
वर्षे फूल होई जैकार । इनका जस प्रगटया संसार ।।
चन्द्रवरधन कै आठ पुत्तरी । बैठि विमांण आई सुंदरी ।।३७२०।।
देखैं जुध पूछैं अपछरा । तुम हो कवन ध्यांन कहां धरयां ।।
चन्द्रवरधन राजा की धिया । जा समै बीवाही थी सिया ।।३७२१।।
तब हम लक्षमण कुं पिता दई । जैं लक्षमण जीतैं अब कही ।।
हमारे मन का कारज होइ । नातर हममैं जीवै नहि कोइ ।।३७२२।।
इतनी सुणि देई असीस । लक्षमण जीवो बहुत वरीस ।।
उचै चित्त लक्षमण वली । आनंदे सब मनमे रली ।।३७२३।।
किंनर दीया सिधारथ बांण । वह विद्या पाई तिह थान ।।

रावण द्वारा चिन्ता करना

रावण मनमें करै विचार । किमहि न मांनै लक्षमण हार ।।३७२४।।
विघन विनायक छोडे बाण । लक्षमण वाकी करै न कांण
सब विद्या छोडी तिह बार । चले बांण ज्यौं घनहर धार ।।३७२५।।
बाण सकल निर्फल होइ गए । रावण सोच विचारै हिए ।।
मेरी विद्या बांण अचूक । इह विरयां पराक्रम गए सूक ।।३७२६।।
बहुरूपणी विद्या सभालि । कोप चढे रावण भूपाल ।।
लक्षमण का चकबांण छोडि । एक मुंड रावण का तोडि ।।३७२७।।

अनेक रूप में रावण का लड़ना

टूटया एक भया होइ दस ओरि । बीसतैं दूणी भुजा तिह ठौर ।।
सूरजहास लक्ष्मण कर गह्या । काटैं मुंड रकत तिहां वह्या ।।३७२८।।

ज्यों ज्यों काटैं त्यों त्यों बधैं । सहस्र मुंड भुज दूणां बढ़ैं ।।
ज्यों ज्यों काटे भूजा अरु मूंड । लाख सीस भुज दोई लख दंड ।।३७२९।।

सकल भुजा आयुध को लिये । मार मार सबद मुख किये ।।
जिहां काटैं तिहां चलै रकत । नंदी बहे डूबै सहु जत ।।३७३०।।

परवत मुंड भुजा का भया । पडी लोथ पग जाई न दिया ।।
सोनत नंदी बहे तिहां लोथ । हाथी घोडे रथ सूर बहोत ।।३७३१।।

जैसे मगरमछ जल तिरैं । अैसे लोथ रकत में फिरैं ।।
जेता रण झूझा दोउ सेन । तिनका कहि न सकै कोइ बैन ।।३७३२।।

रावण की सब सुध वीसरी । लक्ष्मण भुजा थकी तब हरी ।।

रावण द्वारा चक्र चलाना

रावण तबै संभाल्या चक्र । सुदर्शन नाम भयानक वक्र ।।३७३३।।

सहस्र देवता सेवा करैं । चक्र सुदर्शन बहु गुण भरैं ।।
रावण के कर आया तिह घडी । रवि की ज्योति सब उन हरी ।।३७३४।।

चिमक सकल भाज्या रण लोग । कौंण कौंण का होय विजोग ।।
जिहां चक्र चलै सब दलै । कोई न बचै फिर जीवत मिलैं ।।३७३५।।

चक्र तेज तैं सहु जन डरैं । वा सनमुख कोई न उबरैं ।।
रामचंद्र लक्ष्मण सुग्रीव । भामंडल भभीषण नींव ।।३७३६।।

हनुमान सुभट थिर भए । कछु संक न आनैं हीये ।।
बोलै रामचंद लक्ष्मणां । रे बरांक सोचै क्या मना ।।३७३७।।

छोडि चक्र करूं द्वै टूक । वज्रावर्त्त सूं हनूं अचूक ।।
कोप्या रावन चक्र फिराइ । छुटया सुदर्शन मुख जाइ ।।३७३८।।

रामचन्द्र कर वज्रावर्त्त । लक्ष्मण कर समुंद्रावरत ।।
भभीषण संभाल्या त्रिसूल । चक्र फेर गमावै मूल ।।३७३९।।

हनुमान उठाई गदा । सुग्रीव वज्र संभाल्या तदा ।।
चक्र नै फोडि करैं चकचूर । अैसा मता करैं सब सूर ।।३७४०।।

चन्द्ररस्म अर भूपति घणे । छलबल निपुण राम संग बणे ।।
सुदर्शन चक्र लक्ष्मण ढिग आई । तीन प्रदक्षिणा दीनी आई ।।३७४१।।

लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना

लक्षमरण कैं वह बैठा हाथ । पुण्य सहाइ हुआ रघुनाथ ।।
पुन्य समांन सगा नहीं कोइ । पुंन्य ही तैं जग में जस होइ ।।३७४२।।

पुंनि सहाय दुर्जन हीन । पुंन्य पावै बुध्य प्रवीन ।।
पुण्य तें भोग मुगतैं संसार । पुंन्य बडो त्रिभुवन आधार ।।३७४३।।

पुन्य तै दुख दालिद्र जाइ । संकट विकट मे पुन्य सहाइ ।।
जल थल महियल मैं भय टरैं । ठग ठाकुर न उपद्रव हरैं ।।३७४४।।

पुन्य तै कंचन वरण सरीर । रोग सोग ने व्यापै पीड ।।
सब जग सेवै भय नहि ताहि । पुन्य समान भला कछु नांहि ।।३७४५।।

पुन्य तै पावैं धन सिध । पुन्य तें पावै सुर की रिध ।।
पुन्य तें पावै परियण सुख । पुन्यवंत का भाजै दुख ।।३७४६।।

सोरठा

रघुबंसी सु पुनीत, चक्र सुदर्शन पाइया ।।
तब सब भए नचीत, पूरव भव के पुंन्य सुं ।।३७४७।।

इति श्री पद्मपुराणे चक्रसुदर्शन लाभ विधानकं

६९ वां विधानक

चौपई

लक्षमण चक्र सुदर्शन पाय । आनंदे रघुवंसी राइ ।।

रावण का पश्चाताप

रावण बेर बेर पिछताइ । भुभी सब भेन्या इस ठाइ ।।३७४८।।

हय गय रथ अरथ भंडार । पुत्र मित्र संगी नहीं लार ।।
नारी लक्ष्मी आवैं फिर जाई । जैसे बुंद बुंद जाइ विलाई ।।३७४९।।

हुं माया जाल मांहि पड्या । परनारी जाय करि हरया ।।
मैं माया तजि लेता जोग । तो क्यूं होता इतनां सोग ।।३२५०।।

लक्ष्मी तज न सक्या अग्यान । मोकुं छोडि गई सुबिहान ।।
जे नर माया कै बस भए । धर्म विदारक स्वान ही हिए ।।३७५१।।

जनम अकारथ खोया आप । अइसां रावन करै विलाप ।।
अनंतवीर्य स्वामी के वचन । ते मैं देखे भेद भिन्न भिन्न ।।३७५२।।

कोटिसिला उठावै जाइ । चक्र सुदर्शन पावै आइ ।।
ते निसचैं रावण कुं हणै । हुआ परतक्ष श्री जिन भणैं ।।३७५३।।

राज मद में मैं हुआ अंध । बांध्या असुभ कर्म का बंध ॥
धन जोबन सुपने की रिध । जाग्या कछुयन देखें सिध ॥३७५४॥
जो मुरख ते मोह बसि पडे । वे क्यों भवसायर में नडे ॥
जे विषफल को देख लुभाइ । जाके भखें प्राण उड जाइ ॥३७५५॥
उस खायां इक भव ही मरै । परत्रिया तै भव भव दुख भरै ॥

विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श

रावण अपणी निंदा करै । भभीषण सु लक्षमण उच्चरै ।'३७५६॥
अवर नृपति जो मारौं आंण । ज्यों रावण राखै हम कांण ॥
तो करो राज लंका का वही । जीव दान बाकी द्यू मही ॥३७५७॥

रावण का कोधित होना

रावण सुणि अगनि जिम बलै । रे लक्षमण क्या मन में खिलै ॥
मैं रावण हूं बली बलवान । जे तै चक्र लह्या अब आंन ॥३७५८॥
चक्र पाया क्यू काज न सरै । जैसे चक्र कुंभार का फिरै ॥
चक्र फिराए होय न कछु । जैसे धन पावै कुल तुच्छ ॥३७५९॥
वे मन मैं ही अति गरवन्त । क्षुद्र पुरुष गर्भ बहुवन्त ॥
जे तू नारायण होता आज । मैं कहूं सोही करै तू काज ॥३७६०॥
इन्द्र सरीखा फेरै तू रूप । तो तूं सही नारायण भूप ॥
तू नारायण कैसे भया । दसरथ देस निकाला दिया ॥३७६१॥
वन बेहड तू भ्रमता फिरया । तब तैं कुछ कहुं न बल करया ॥
मैं बालकस्यों बूढा भया । तब ते मैं प्राकर्म बहु किया ।३७६२॥
मो पैं हे विद्या बल वही । हूं रावण जीती सब मही ॥
मोकूं तू जाणै है भलै । मो सूं कहा चक्र की चलै । ३७६३॥
तू भरम्या है चक्र फिराइ । वरांक पुरखां एहै सभाय ॥
जितना तरे संगी भूपाल । मारूं यदा धसैं पाताल ।३७६४॥
मैं रावण किस की करूं सेव । तुम कुं अब जिम मिंदिर देव ॥
निठुर वाक्य बोल्या बहुभांति । सकल सुण्यां राज रघुनाथ ॥३७६५॥

लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना

लक्षमण कोप्या चक्र फिराई । छुटया ज्यौं बीजली धाई ॥
रावण इन्द्रधनुष कर गह्या । अपणैं बल पौरष उमह्या ॥३७६६॥
चन्द्रहास खडग नीकाल । रोकै मार चक्र की चाल ॥
लाग्या चक्र रावण कै हीए । दोए खंड होइ प्राण उड गये ॥३७६७॥

जाणं पडै गिरि सुमेर । सोमैं दंत बिरचा रण बेर ।।
राक्षस बंसी रोवैं भूप । सुग्रीव आदि सोग वे सरूप ।।३७६८।।
रोवैं सकल उपाडैं केस । देखैं सब रावण के भेस ।।
हा हा कार करैं बहु सोर । रावण मृत्यु पड़ा तिण ठौर ।।३७६९।।

दूहा

परनारी के कारणैं, रावण दीये प्राण ।।
इह तन अपणां खंडीए, समझो एह सुजांण ।।३७७०।।

इति श्री पद्मपुराणे दसग्रीव बध विधानकं

७० वां विधानक

चौपई

विभीषण द्वारा भाई के मरण पर विलाप करना

भभीषण व्याप्या भाई सोय । रोवैं और चहुं घां लोग ।।
हाइ भाई ए तैंने क्या किया । मेरा कह्या तैं नहि माना हिया ।।३७७१।।
जो मोहि सेती भई कछु चूक । गही मौत रहै ह्वै मूक ।।
किरपा करो सुणावो वयन । तो अब मोहि होय सुख चैंन ।।३७७२।।
तुम बिन कैसे जीऊं वीर । तेरे दुख सों जलै सरीर ।।
तुम विन चले जात है प्रान । आइ मूर्छा मृतक समांन ।।३७७३।।
रामचन्द्र लक्षमण तब देख । भभीषण पड्या मृतक के भेस ।।
वैद्य बुलाइ करै उपचार । ऊषद दे करि वीजणां बयार ।।३७७४।।
बडी बांर में भया सचेत । व्याप्या मोह भाइ के हैत ।।
रावण का तब पकडै हाथ । लें ले लावै छाती माथ ।।३७७५।।
बार बार आलिंगन करै । हाय वीर तू अरथन मरै ।।
बहुरि भयो वह मूर्छावंत । जाणैं भया प्राण का अंत ।।३७७६।।
बहुत जतन सों भई संभार । अंतहैपुर पहुंची यह सार ।।

रावण की रानियों द्वारा विलाप करना

मंदोदरी रंभा चंद्रांन । चंद्रमन उरबसी त्रिय आंन ।।३७७७।।
मलीन रूपणी सीला रत्न । रत्नमाला रामोदरी बिला ।।
लक्ष्मी पदमा सु विसाल । रानी सहस्र सभी बेहाल ।।३७७८।।
पीटैं छाती कूटैं देह । सब मिल घालैं सिरमें खेह ।।
बिनवैं सब मिल रावण भोग । सब नगरी का रोवैं लोग ।।३७७९।।

हाय करम तैंने कहा किया । बिधवा भई महा दुख दिया ॥
कैसे जीवैं कंत के मुवे । सब मिल पीटैं अपनां हिये ॥३७८०॥

कोकिल सबद सुहावन बोल । सब परियणमां मांचै रोर ॥
सब आए जिहां रावरण पड्या । देखैं लोथ ज्यौं पर्वत गिरथा ॥३७८१॥

ले ले हाथ लगावैं हिये । इन रावण बहुतें सुख दिये ॥
बहुत भांति के भुगते सुख । अब कुं जीवैं कंत के दुख ॥३७८२॥

सब नारि आलिंगन करैं । अरण आई रावरण कां मरे ॥
जै सीता कुं देता आंण । तो क्यानें ये तजता प्रांण ॥३७८३॥

भूमिगोचरी की अस्त्री हरी । परनारी ज्युं पैनी छुरी ॥
अैसी विध रावरण कां मरैं । करम अटारे किम टरैं ॥३७८४॥

रामचन्द्र लक्षमरण तब आइ । समझावैं इनकूं बहु भाइ ॥
रावरण का था यही निरोग । अब तुम तजो सकल निज सोग ॥३७८५॥

भावमंडल कहै उपदेस । सुणुं वचन भभीषरण भुवनेस ॥
रावरण रण में साका किया । रह्या खेत सनमुख जिय दिया ॥३७८६॥

ते बलवंत टेक सों मरे । तिनका पावन रण में टरे ॥
धन्य पुरुष जे राखें टेक । ते सहस्र में गिणिये एक ॥३७८७॥

षत्री होंय मरैं पडि खाट । जनम अकारथ तिसका घाट ॥
इह रण था सुभटां की बोर । अैसा मरण न पावैं और ॥३७८८॥

धनि धनि ए रावण महाबली । जाकी जुधरणै पूजी रली ॥
चक्र चलाया मैं चित्त न किया । ए दिढ रावण मनमें लिया ॥३७७९॥

सफल मरण ए तिन विध जान । अैसे हैं उत्तम परमाण ॥

श्रेष्ठ मरन

संग्राम मांहि जे क्षत्री मरैं । कै तपकर संजम व्रत धरैं ॥३७९०॥

जीतैं आठ करम धरि ध्यान । ते उपजावैं केवलज्ञान ॥
पावै अजर अमर पद ठांम । जुग जुग रहै उनूं का नाम ॥३७९१॥

ले संन्यास तजैं जे प्राण । समाधि मरण जग मैं ए जान ॥
अैसी विध सौं मरैं जो कोइ । ताका सब विधसैं जस होइ ॥३७९२॥

अैसों का किम करिये सोग । ऊनूं का हठ वखाने लोग ॥
तीन लोक में अमर है जांन । वेद पुराण करैं हैं बखान ॥३७९३॥

वे नहीं मुवा सदा है अमर । अरिदम सा मुवा जान्यां सगर ॥

अरिदम की कथा

अईसा कैसो गहै न्याई । जे वह मुवां जीव छिपाई ।।३७६४।।

अख्यरपुर नगर हरदच भूप । लछमीवती राणी सुलरूप ।।
अरिदम पुत्र वाकैं गर्भ भया । जोवन समै उछाह अति थया ।।३७६५।।

वसुसुंदरी व्याही अमतरी । रूप लच्छन गुण लांवन भरी ।।
राजा राणी भए वैराग । राजबिभूत सकल साहिबी त्याग ।।३७६६।।

अरिदम पुरु का राजा किया । आप जाइ संयम व्रत लिया ।।
अरिदम अधिक प्रतापी थया । भूप प्रताप सकल छिप गया ।।३७६७।।

सब पृथ्वी का जीत्या नरेस । मनाय आंण लीया सहु देस ।।
फिर आया अक्षरपुर नगर । हाट बाजार छाए तिहां सगर ।।३७६८।।

घर घर बांधी बांदरवार । भया रहसि अति नगर मझार ।।
घरि घरि रली बधावा भए । परियण में सुख उपजे नये ।।३७६९।।

वहुत आनंदस्यौं आयो राय । रत्नमुष्ठि भर डारत जाय ।।
राजा अतहपुर मे गयो । राणी सुं इम हसि बोलियो ।।३८००।।
जो कछु नई वात तुम सुणी । अंसी हमस्यौं कहिये मुणी ।।
राणी कहे तुम सुणियो कंत । कीरतधर मुनिवर सु महंत ।।३८०१।।

इक दिन आए लेण आहार । भोजन पाय चल्या तिण बार ।।
मैं पूछया तुमारा परताप । कब आवैं प्रथिवीपति आप ।।३८०२।।
मुनि बोले जीतैंगा सब मही । पण वाकी आरवल तुछ रही ।।
वा दिन तैं चिंता है मोह । सुणु प्रभू समझाउं तोहि ।।३८०३।।
राजा सुणि कै गयो उद्यान । जहाँ बैठ्या मुनि आतम ध्यांन ।।
पूछै मुनि सूं तब ही नरेन्द्र । मेरे मन की कहो मुनिंद ।।३८०४।।
बोलैं मुनिंद पूछो तुम आव । एह दिन सात जीवण के राव ।।
पूछैं नरपति कारण कौंण । समझाओ स्वामी तजि मौन ।।३८०५।।
कहैं मुनीस्वर सुणौ भुवाल । विद्युत पात सो तेरा काल ।।
सोचैं भूपति मुनि सुंण वात । करूं उपाव बचैं जिव घात ।।३८०६।।
बुलाइ मंतरी मतो उपाइ । मुनि के वचन निरफल जाइं ।।
एक जतन सुं उवरो राइ । लोह की कोठी तुम करवाइ ।।३८०७।।
वाड वामैं राजा तुम पैठ । सांकल लगाव इवा हेठ ।।
वज्र सांकुल कठाडवां वांधि । डारै दह में जिहां नीर अगाध ।।३८०८।।

जहां दामनी का नहीं प्रवेस । या प्रकार बीतस्यौं नरेस ॥
छह दिन बीत सातवां भया । ग्रवै पैठि ग्रह भीतर गया ॥३८०९॥
नावांसुं सांकुला लगाइ । उठी घटा सहज के भाइ ॥
घन घटा होइ संसार उबार । कडकी दामनी मारघा तिणबार ॥३८१०॥
टूटा ग्रवा राजा दोइ खंड । होनहार महा प्रचंड ॥
करम रेख किम मेटी जाय । हौंणहार सौं कहा बसाय ॥३८११॥
राजा बीजली नें मारिया । उन मरणे का ग्रति भय किया ॥
ग्रैसे का सोग करया न्यांइ । रावण कुम्भ सामों ध्याइ ॥३८१२॥
प्रीतकर ने पांया राज । ग्ररिदम मुवा सरघा नहि काज ॥३८१३॥

दूहा

करचो सयाणय बहुत बिध, मंत्र जंत्र ग्रनैं उपाइ॥
हौंणहार टलनां नहीं, बहुत बणावो दाव ॥३८१४॥

इति श्री पद्मपुराणे ग्ररिदम विधानकं

७१ वां विधानक

चौपई

रावण का दाह संस्कार करना

रामचंद्र लछमन संजुत्त । तिहां बैठा भूपती बहुत ॥
भभीषण ने बहुते समझाय । दहन क्रिया कीजे ग्रब जाइ ॥३८१५॥
रावण तीन खंड का राव । जाका तिहूं लोक में नाव ॥
वेगी क्रिया तास की होइ । काया बिगडन पावैं सोइ ॥३८१६॥
जो मृतक कौं होई ग्रबार । उपजैं जीव वा देह मंझार ॥
ग्यांनवंत ढील नही करैं । उठो वेग ज्यौं कारज सरैं ॥३८१७॥
सब मिल गए मंदोदरी पास । ग्रठारह सहस जिहां त्रिया उदास ॥
सोगवंत बैठी सब नारि । देख राम नैं करैं पुकार ॥३८१८॥
नैनन नीर तहै ग्रसराल । रोवैं सगली खाइ पछार ॥
तब रघुपति समझावैं ताहि । भभीषण बीनवैं गहि बांह ॥३८१९॥
मंदोदरी बोली तब बात । दहन क्रिया कीज्यो भली भांति ॥
साज बिमांण पदमसिर गए । चंदन ग्रगर बहु बिध लए ॥३८२०॥
पदम सरोवर ग्रंदर ग्रांन । चिता संबारी उत्तम थान ॥
बोले तबैं श्री रामचन्द्र । कुंभकर्ण इन्द्रजीत हम बन्द ॥३८२१॥

मेघनाद और वंदमय । च्यारूं भटकै मानइ भये ॥
इनकूं अब तुम छोडो जाइ । दरसन करैं पिता का भाइ ॥३८२२॥

बानर बंसी बोले तव राइ । रावण तें वे बल अधिकाइ ॥
जे वह छूटैं तो लें बैर । राक्षस बंसी मिल उनसों फेर ॥३८२३॥

असा बल हम पै है नहीं । अब कैं उनसुं जीतैं कहीं ॥
उनकूं मारि करो तुम षेह । दूरजन सूं अब कैसा नेह ॥३८२४॥

मारि मारि करि लीजे जीव । अब ही उनकी काटो ग्रीव ॥
रामचंद्र चित करुणा आइ । उनका पिता जलै इस ठांइ ॥३८२५॥

अब नही दरसन पावै तात । बहुरि देखेंगे किह भांति ॥
फिर बोले सेना के लोग । असानैं किम छोडन जोग ॥३८२६॥

भावमंडल कहै छोडो उननै । जै तुम भय राखो नहि मनमें ॥
तुम मति कीज्यौं उनसों राडि । जब वे चतुर तो हम भी च्यार ॥३८२७॥

जो वे फिर भी हमसौं लडैं । तो हम भरोसा नाही करैं ॥
भावमंडल अनै हनूमांन । सुग्रीव अंगद चले बलवान ॥३८२८॥

वे च्यारू हैं बन के मांझि । महादुखी है दिवस न सांझि ॥
लोह पिंजरा चहुंघा सूल । ऊभा तिहां दुःख का मूल ॥३८२९॥

हाथ हथकडी पांव सांकुली । मन में तोष देह सब जली ॥
मन का छोडया सब संदेह । राजभोग से तज दिया नेह ॥३८३०॥
अबकै छूटैं तो तप करैं । फेर नही भवसागर पडैं ॥
असा ऊनां किया था ध्यांन । भावमंडल तहां पहुंच्या आंन ॥३८३१॥

कै रावन झुज्या संग्राम । तुमनैं कोकै लक्षमरण राम ॥
दरसन करो पिता का आइ । खोलि पिंजरा अपने संग ल्याइ ॥३८३२॥
नीची दृस्टि गैवर की चाल । आवैं ते च्याऊं भूवाल ॥

कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोडना

रामचंद्र प्रति आंखै सर्व । गलत भया ओधां का गर्व ॥३८३३॥

कहैं राम तोकूं दूं छोडि । जो तुम वैर न करो बहोडि ॥
वोले कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हमतो छोडी संसारी रीत ॥३८३४॥

जब छूटैं तब दिष्या लेहिं । राजभोग जल अंजलि देहि ॥
बेडी काडि छोडिया कुमार । रावण कीरिया करी संवार ॥३८३५॥

वहुतां नैं उपज्यो वैराग । घर परियण सगला सुख त्याग ॥
बहुतां ने मांड्यो संन्यास । अन्नपांणी तजि करैं उपवास ॥३८३६॥
कोई भए संन्यासी रूप । कोई गए लंका में भूप ॥
अपणे जाइ कुटुंब वे मिले । घरि घरि कथा राम की चले ॥३८३७॥

अपर मध्य मुनि का संघ सहित आगमन

अपर मध्य मुनि लहर तरंग । छपन सहस्र मुनिवर ता संग ॥
रिधवंत ग्रैसे वे साध । जिहां रहैं तिहां मिटैं उपाधि ॥३८३८॥
बैर भाव सब ही का टरैं । कोई नहीं उपद्रव करै ॥
लंका मैं वे आया मुनी । च्यार ग्यांन का धारक गुनी ॥३८३९॥
कुसुमादि वन में धारयो जोग । दरसन कूं आया बहुलोग ॥
तपकिरात कंचन सम गात । सब कोई करैं मुनीस्वर जात ॥३८४०॥
ग्रैसा मुनि तब करता गौन । तउ रावण नें हुतता कौन ॥
जादे समैं रहै वे जती । तिहां कष्ट नहीं व्यापै रती ॥३८४१॥

मुनि को केवल ज्ञान की प्राप्ति

सर्व मही है स्वर्ग समान । दोइसै जोजन लौं परवान ॥
सुकलध्यांन आतम ल्यो लाइ । केवलग्यान भया मुनिराइ ॥३८४२॥
अनंत सत स्वामी अरिहंत । भया जनम घातकी भगवंत ॥
इन्द्र धरणेन्द्र बहु विध देव । जनम महोछव कीनी सेव ॥३८४३॥
मेरु सुदर्शन पांडु का शिला । श्री जिण का महोछव किया ॥
सहस्र अठोतर कंचन कुंभ । खीर समुद्र नीर भरि सुंभ ॥३८४४॥
कलस ढालि जय जय करी । तीन लोक में महिमा धरी ॥
श्री जिन जी जननी कौं दिये । सुरपति फिर सुरआलय गये ॥३८४५।

धरणेन्द्र का आसन कंपित होना

आसण कंप्या तब धरणेन्द्र । अवधि बिचार कियो आनंद ॥
त्रिकुटाचल लंका में थान । अपर मुनी कूं केवलग्यांन ॥३८४६॥
जय जय सब्द देवता करैं । बाजा बाजैं देव उच्चरैं ॥

राम द्वारा विचार करना

रामचन्द्र बाजे जब सुणे । तब भूपति सोचैं मन घणे ॥३८४७॥
ग्रैसा कवण बली इस ठांइ । जिसके बाजा बजैं इह भांइ ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव । भामंडल अंगद गुण नींव ॥३८४८॥

मलनील कुंभकरण भूप । इन्द्रजीत मेघनाद अनूप ॥
लंका सींव गए सब राय । जय जय धुनि सुणी तहां आइ ॥३८४९॥

राम का मुनि के पास आना

सब मिल समझ्या इम राजान । मुनि नैं उपज्या केवल ग्यांन ॥
उतर भूप पयादे चले । ले पूजा सामग्री भले ॥३८५०॥

दे परदिक्षणां करी डंडोत । रघुपति पूछै धरम बहोति ॥
ध्याडं मति भाष्या मुनि भेद । सुभ अर असुभ करम का भेद ॥३८५१॥

उत्तम किरिया संगी जीव । मध्यम अधर अगति की नींव ॥
आरत रौद्र ने नीची गति । सात बिसन नरक की थिति ॥३८५२॥

धरम सुकल जीव का आधार । भवसागर तें उतरै पार ॥
इन्द्रजीत मेघनाद जोड दोइ हाथ । हमारा भव कहिए मुनिनाथ ॥३८५३॥

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । सब जीवों का होइ आधार ॥

मुनि द्वारा पूर्व भवों का वर्णन

जंबूद्वीप भरत छह षंड । कोसंबी नगरी तस मंड ॥३८५४॥

भवदत्त पंच सेठ के बाल । रूप लक्षन गुण अति सुविसाल ॥
सम्यक दृष्टि दोऊ बीर । सकल जीव की जाणै पीर ॥३८५५॥

ग्यान समुद्र मुनि आगम भया । दोऊ वीर दरसन कूं गया ॥
पूछि क्रिया सरावग जती । क्रीया करिकैं कहो सब भती ॥३८५६॥

सांभल धरम अणुव्रत लिया । मुनि कै पास बैठ तप किया ॥
चंद्ररस्मि नगरी भूपाल । दरसन कूं आया ततकाल ॥३८५७॥

करि प्रदक्षिणा कहै नमोस्तु । धर्म वृद्धि बोले मुनिरस्तु ॥
नंद सेठ ता नगरी मांझ । पूजैं जी जिन वासर सांझ ॥३८५८॥

लक्ष्मी घणी महा धरमेष्ट । चलैं चाल जे सम्यक दृष्टि ॥
इन्द्रमुखी वाकी अस्तरी । जिनवाणी निस्चै मन धरी ॥३८५९॥

सेठ चल्या मुनिवर की जात । हय गय वाहन नाना भांति ॥
बहुत लोग आए संग सेठ । राजा विभव छिपी ता हैठ ॥३८६०॥

पचसम देख अचंभा करै । नंद सेठ इतना बल धरैं ॥
राजा तैं अधिक परताप । भरम्यां चित्त बिसारी आप ॥३८६१॥

मेरे तप का एही निदान । पाउं जनम याके घर आन ॥
छोडी देह भया गर्भ आइ । इन्द्रमुखी सुख उपज्या काइ ॥३८६२॥

तप के महातम का परवेस । चन्द्ररश्मि भयानक रेस ॥
गिरे कोट के कांगरा भूमि । कांपी मही भ्राए कुम भूमि ॥३८६३॥
निमित्तग्यानी जोतिषी बुलाइ । इह निमित्त पूछैं नरराइ ॥
कहैं जोतिगी जोतिग देखि । नंद पुत्र के यह विसेष ॥३८६४॥
दोई पुत्र भुगतैंगे राज । ग्रैसे सकुन भए हैं ग्राजि ॥
राजा सोच करि करैं बिचार । होणी होइ सकै को टारि ॥३८६५॥
जे उसका हैं यही निमित्त । तौ क्यों ग्राणों विकलप चित्त ॥
राजा गरभ की चिंता करैं । नवमास पूरा ग्रवतरैं ॥३८६६॥
रतन बरधन जनमिया कुमार । बदन जोति शशि की उनहारी ॥
पाई बुद्धि ग्रति भए सचेत । राजा सेव करैं बहु हेत ॥३८६७॥
रतन वरधन परतापी भया । पृथ्वी जीत ग्रति ऊंचा थया ॥
सकल भूपति सेवैं पाइ । कर बंदन देवैं सब ग्राय ॥३८६८॥
भवदत्त तीजे स्वर्ग बिमान । इन मन मांहि विचारा ग्यान ॥
हम थे पुत्र सेठ के दोइ । पसचम जीव रतनवरधन होइ ॥३८६९॥
राजविभव में हुवा ग्रंध । वाकै नहीं धरम का बंध ॥
भरमैंगा बहु इस संसार । माया फंद में लहै न पार ॥३८७०॥
तातैं वाहि सम्बोधूं जाइ । ज्यूं बहु भवसागर में ना भरमाय ॥
ग्रैसी चित धर ग्राए देव । धारया रूप दिगंबर भेव ॥३८७१॥
पौलिया जांण न देवैं ताहि । रतनवरधन रूप धरया नरनाह ॥
राजसभा मांही सुर गया । पूछै नरपति ग्रचरज भया ॥३८७२॥
सुर समझावै पिछली बात । हम तुम थे दोन्युं भ्रात ॥
तू पसचम हूं हो भवदत्त । माया मोह में डूबै मत्त ॥३८७३॥
ग्रजहूं समझि जिम पावै पार । रतनवरधन कूं भई संभार ॥
तजै राज तप साध्या जाइ । नवग्रीवा परि पाई ठाइ ॥३८७४॥
उहां तैं चये ऊरवव नग्र । दोन्युं देवराज के कुंवर ॥
राज भुगत उपज्या वैराग । भए दिगंबर ग्रब धन त्याग ॥३८७५॥
तप करि दसमें स्वर्ग विमान । मंदोदरी गर्भ भए तू ग्रांन ॥
पसचम जीव भया इन्द्रजीत । भवदत्त मेघनाद इह रहू रीत ॥३८७६॥
इन्द्रमुखी इच्छा इह धरी । ऐसा पुत्र भए शुभ घडी ॥
चन्द्ररसम सेठ ग्ररनंद । भए जती भला मुकंदि ॥३८७७॥

तेरे तप का यह फल सही । हमारा बहुरि पुत्र होय कहीं ॥
इन्द्रमुखी मंदोदरी भयी । इह विभूत नव पाई नई ॥३८७८॥
सांभलि धरम दिगंबर भए । मंदोदरी पछतावा किये ॥
विधवा भयी पुत्र हुवा जती । कुंभकरण है इह मती ॥३८७९॥
अब हम दिन कैसे भरैं । बारह अनुप्रेष्या चित धरैं ॥
मंदोदरी संग अठारह हजार । तीस सहस्र राणी परिवार ॥३८८०॥
आरजिका सहस्र अडतालि । दिक्षा ले सुमरया तिहूं लोकपाल ॥
चंद्रनखा आरजिका व्रत लिया । करै तपस्या मन बच कया ॥३८८१॥
आतम ध्यान लगाया जोग । अवर विसारया सगला सोग ॥३८८२॥

दूहा

सुण्यां भवांतर पाछला, मन का मिटया अवसास ॥
राक्षस वंसी अतिबली, करैं मोक्ष की आस ॥३८८३॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रजीत मेघनाद भव निक्रमण विधानकं

७२ वां विधानक

अडिल्ल

राम लक्ष्मण का लंका में प्रवेश

रामचंद्र लक्षमण चलि लंका । सकल सेनां की मिट गई संका ॥
सेनां सकल भई इक ठौर । इन सम बली न दूजा और ॥३८८४॥
पचास लाख हाथी की डोर । हय गय रथ का नाहीं वोर ॥
हस्ती पर रामचन्द्र लक्ष्मण । सोहैं जैसे हैम रतन । ३८८५॥
चक्र सुदर्शन आगैं खरै । जिसकी ज्योति तेज रवि हरैं ॥
भूपति भूप चले सब संग । सोभैं उनके भले तुरंग ॥३८८६॥
हाट बाजार छाए चउहटैं । देखैं नारि अटारी अटैं ॥
कोई भारि भरोखा तिरी । स्वर्ग लोक की सोभा धरी ॥३८८७॥
जर्क सके समाने वर्णे । जिहां तिहाँ सु बराबर तणे ॥
बिराधित सुग्रीव हनूमान । रथ बैठा अंगद बलवान ॥३८८८॥
नरपति अवर बहुत ही वर्णे । नामावली कहां लौं गिणे ॥
रतनवृष्ट करैं रामचन्द्र । दरसन देख्या होइ आनंद ॥३८८९॥
पहूंचे पोलि लंका के कोट । इनकी छवि भांति भया ओट ॥
रत्नावली सूं पूछी सीता बात । पुहप करण परवत विख्यात ॥३८९०॥

उह बन में इह सीता सती । सुप्रीया सेव करै बहु भती ।।
आवत देख्या श्री रामचन्द्र । रहसी सेवग भयो आनंद ।।३८९१।।

जैसें शशि पूनम की ज्योति । एक पति का है अति उद्योत ।।

सीता की दशा

बांह पसार सुप्रिया कहै । श्री रामचंद्र का आगम लहै ।।३८९२।।

देखो सीता दृष्टि उघार । करो दरसन बेग भरतार ।।
सिर सीता के जटा मलीन । दुरबल देह घणी अति खीन ।।३८९३।।

कत विछोह तज्या सिणगार । बहुत लगी काया सूं छार ।।
जाकैं रामचन्द्र का ध्यान । महासती जगमें परधांन ।।३८९४।।

पतिव्रता जनक की धिया । अपना मन सब विध दृढ किया ।।
धनि सीता जे पालैं सील । पंचइन्द्री विषय राखै कील ।।३८९५।।

अपणा पति नै जाणैं सत्य । अवर माता पिता सुत चिंत्य ।।

सीता सत दिढ राख्या भला । निश्चैं तें तब रघुपति मिल्या ।।३८९६।।

राम सीता दर्शन

खोलि दृष्टि देख्यो रघुनाथ । नमस्कार करि जोडे हाथ ।।
ज्यूं जल पीवैं सूका खेत । फूलै फलै बहु होइ सचेत ।।३८९७।।

ऐसैं सुखसों वधै शरीर । विछोहा की भूल्या पीर ।।
भयो समागम देह संभार । लक्षमण आइ मिल्या तिणबार ।।३८९८।।

सीता कुं मसतक नंवाइ । नमा चरणन कूं लक्षमण राइ ।।
असीस दई सीता बहुभांति । बिछोहै की पुछी सब बात ।।३८९९।।

भावमंडल बहन सूं मिल्या । सब परियण सुख मान्यां भला ।।
विराधित सुग्रीव अवर हनुमान । नलनील अवर अंगद प्रांन ।।३९००।।

भूपति सकल करें नमस्कार । दई भेट फूलों के हार ।।
कुंडल कर्ण मोती अति दिपैं । जिनकी जोति कान्ति रवि छिपैं ।।३९०१।।

राम लक्षमण ज्यों सूरज चंद । सोभैं दोन्युं अधिक आनंद ।।
इन्द्र इन्द्राणी की सी जोड । सीता राम सोभैं तिह ठौर ।।३९०२।।

चंद्र रोहिणी जोडी बणी । ऐसी इनकी महिमा घणी ।।
सुखसों बीतैं बासर रयन । सकल प्रथी में हूआ चयन ।।३९०३।।

अडिल्ल

असुभ करम सब टाल आइ शुभ करम भले,
दोउयां दल संघार सूरमा अति भले ॥
सीता का सत फला जीत रघुपति भई,
रावण घाट्या कुडज जु कीरत सब गई ॥३६०४॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता राम मिलाप विधानकं

७३ वां विधानक

चौपई

लंका की शोभा

लंका के गढ भ्यंतर चले । तिहां चैत्यालय देखे भले ॥
रतन समान लगे पाखांण । तिनकी ज्योति दिपैं ज्यों भान ॥३६०५॥
सांतिनाथ जिन प्रतिमा तिहां । सहस्र कूट चैत्यालय जिहां ।
दरसन कीया देव जिणंद । सीता के मनमें आनंद ॥३६०६॥
सब नरेस तिहां अस्तुति करैं । जै जैं सबद सुणत मन भरैं ॥
परिक्रमा दीनी तिहां तीन । ताल पखावज बजावैं बीन ॥३६०७॥
घुरे दमामां नै करनाइ । कंसाल भेर बाजै तिहां ठांइ ॥
गुणीयन गावैं जिनपद भले । पढै सतोत्र भूपति सब मिले ॥३६०८॥
सांतिनाथ देवनपति देव । इन्द्र धरणेंन्द्र करै सब सेव ॥
देइ मुक्ति तिहां निरभय थान । अजर अमर जिहां पूरण ग्यांन ॥३६०९॥
असी वस्तु नहीं संसार । जिसकी पटंतर कहै वीचार ॥
दरसण अनंत नं ज्ञान अनंत । बलवीरज का नाही अन्त ॥३६१०॥
तारण तरण सांति जिन भये । भव्य जीव त्यारि मुकति को गये ॥
सब भूपति मिल पूजा करैं । सांतिनाथ पूजा मन धरैं ॥३६११॥
तिहां सुमाली अर माल्यवान । रतनश्रवा नरपति तिह थान ॥
गये भभीषण इनके पास । भूपति वे बैठा उदास ॥३६१२॥
मोह मंघ तै व्याकुल घणें । संसार रूप समझावै इने ॥
चहुंगति मांहि अमर नहीं कोइ । जामण मरण सब ही को होइ ॥३६१३॥
इस विध हैं संसारी भोग । जैसे नंदी नाव संयोग ॥
उतर गए पार वीछड गये सर्व । पुत्रकालित्र भूमि अर दर्व ॥३६१४॥

जेता विभव तेजा संताप । सूल थोडा बहुली प्रार्ताप ।।
पीडा चिंता कबही ना मिटै । सोग किये काया बल घटै ।।३९१५।।

कबहूं हुं पिता कवहु हुं पुत्र । कबहूं होइ मित्र कबहु होइ सत्रु ।।
कबहु भाई कबही हुं वहिन । भ्रमै जीव मोह के जतन ।।३९१६।।

ग्यानी सोग तजैं इह भांति । इह चिंता छोडो दिन रात ।।
सुख दुख जाणैं एक समांन । हिरदै राखैं उत्तम ग्यांन ।।३९१७।।

राखैं सदा धर्म सों प्रीत । पुण्य पाप की जाणैं रीत ।।
चिंता कूं छंडो तुम मात । म्हैं सेवा करि हूं बहुभांति ।।३९१८।।

दे प्रतिबोध प्राणे निज गेह । रसोई करवाई बहु नेह ।।
विदेहा रावण पटधनी । ताकै संग सहैली घनी ।।३९१९।।

बइठे मिंदिर सांति जिणंद । सुमरण करैं देव गुरु बंदि ।।
रामचन्द्र लक्षमण नै सिया । विदेहा कुं आदर बहु दीया ।।३९२०।।

छोडो सोग करो चित ठांव । हम सेवा करि हैं बहु भाइ ।।
तुम माता मन राखो चैन । करैं बीनती मधुरे बैन ।।३९२१।।

बिभीषण द्वारा राम का स्वागत

तिहां भभीषण आये पहुंच । वाकैं हिये धरम की रुचि ।।
दोइ कर जोडि वीनवैं खरो । चलो प्रभू भोजन विध करो ।।३९२२।।

बाजा बाजे मन आनन्द । हस्ती परि चढे रामचन्द्र ।।
लक्षमन आदि भूपती सबै । भभीषण हरखैं मन में जबै ।।३९२३।।

मेरा धन्य जनम है आजि । राम आए इतना दल साज ।।
मो परि क्रीपा करी जो आज । मेर इहां आया भोजन काज ।।३९२४।।

महोछव सब नग्र में किये । सबही आनंदा निज हिये ।।
पदमप्रभू निज मंदिर गये । दरसन देखि अधिक सुख भए ।।३९२५।।

पूजा रचना बारंवार । सकल नरेस करैं नमस्कार ।।
रतन जडित कंचन के कलस । उत्तम नीर वास तिहां सरस ।।३९२६।।

उबटणां ल्याए बहुत सुबास । भ्रमर न छोडैं उनके पास ।।
हेम रतन की चउकी बणी । रतनजोति विराजै प्रति घणी ।।३९२७।।

रामचन्द्र लछमन तिहां न्हाइ । मर्दन करै मर्दनयां आइ ।।
सकल भूपति करि करि सनांन । पूजा कीनी श्री भगवांन ।।३९२८।।

विविध व्यंजन

बहु पकवांन ग्रर व्यंजन घने । भात दाल सामग्री मिले ।।
कनकतबाई सोवन थाल । बैठा जिमैं सब भूपाल ।।३६२९।।
निरमल जल सौं भारी भरी । पीवैं भूपति मानैं रली ।।
दूध दही जीमें सब भूप । षट्रस व्यजन बणे ग्रनूप ।।३६३०।।
बीडा मांहि लेइ मुख सोधि । चोवा चंदन ल्यावै सुगन्ध ।।
पहिरि भीणे वस्तर सुवास । सीतल पवन बींजणा ब्यांर ।।३६३१।।
भभीषण जस प्रगटै भया । सब सेनां कु भोजन दिया ।।
मंत्री मंत्र करैं सुविचार । राजदेहु ग्रब पट बैठाइ ।।३६३२।।
कोई कहै ग्रजोध्या धनी । तिहां पट्ट बैठा सोभा घणी ।।
कोई कहै लंका बडी ठाम । रावण तीन षंड का राव ।।३६३३।।
इणही ठांम दीजिए राज । मनबंछित सीझै सब काज ।।
ग्रठोत्तर कलस राम पै ढार । लक्षमण कौ नींका बैठार ।।३६३४।।
दिया राज लंका का सर्व । कंचन कोट लहे बहु ग्रर्व ।।
लक्षमण बिसल्या सूं करि व्याह । सब मिल मंगल करैं उछाह ।।३६३५।।
एक था दसांग नगर कों राव । रूपवती कन्या का नांव ।।
कुबेर ईस बार खिल भूप । कन्या कलसण माल सरूप ।।३६३६।।
उजेणी नगर सिंहोदर राव । वज्र किरण राजा तिह ठाइ ।।
भेजी कन्या बहु गुणवंत । व्याह लक्षमणां बलवंत ।।३६३७।।
जे थी रामचन्द्र की मांग । कियो विवाह दुःख सब त्याग ।।
जे नारी पूरब पुंनि कर दई । राम लक्षमण की नारी भई ।।३६३८।।
सुख में बीत गए षट वर्ष । सब नगरी मानै बहु हर्ष ।।

इन्द्रजीत एवं मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति

इन्द्रजीत मेघनाद तप करैं । रिध पाय सब कूं परिहरैं ।।३६३९।।
मेघनाद नें केवलग्यांन । इन्द्रजीत धरि ग्रातमध्यांन ।।
टूटे चारि घातिया कर्म । उपज्या पंचम ग्यांन सुधर्म ।।३६४०।।
विध ग्ररियण तैं गए सिवपंथ । मेघबर तीरथ ग्यांन समर्थ ।।
तुंगी गिर पर्वत कैं थान । जंबू माली तप की ध्यान ।।३६४१।।
ग्रहिमंदर पायो सुविमाण । सुख विलास में होइ बिहांन ।।
भव कैं चउवीसी तप करै । एर्वत खेत्रइं जिम पद धरैं ।।३६४२।।

अनंतबोध धर प्रथम जिनंद । सुमति रमणी सुख होइ आनंद ॥
कुंभकरण तप करै बहुत । नरवदा नदी पर केवल हुंत ॥३६४३॥

सुरपति करैं महोछव तिहां । देही छोडि पहुंच्या सिव जिहां ॥
मई स्वामी मुनिवर तप करैं । पोदनापुर में ध्यांन दिढ धरैं ॥३६४४॥

आकास गामिनी पाई रिध । सब तीरथ फरस्यां उन सिध ॥
तप करि गया पचमे स्वर्ग । भया देव मिटिया उपसर्ग ॥३६४५॥

मारीच मुनी तिहां साधैं जोग । करैं बंदना सबही लोग ॥
पाई रिध तप कै परसाद । रागद्वेष छंडे सब वाद ॥३६४६॥

सहें बाईस परीसा धीर । अंसा तप साधैं बलवीर ॥
सीता सम सती नहि कोइ । भव कै भव गणधर पद होइ ॥३६४७॥

रावण होइ देव अरिहन्त । बांणी झालनी सिवपद संत ॥
इहां पूछै श्रेणिक कर जोडि । सीलवंत नारी भीऊर ॥३६४८॥

जे नारी उत्तम कुल बडी । पालैं सील ऊपमां चढी ॥
जिण ने दोऊ कुल की लाज । ते नही तजैं सील का काज ॥३६४६॥

जे विध वे पालै है सील । मन गयंद नैं राखैं कील ॥
मीता किण कारण अधिकाइ । गणधर होइ मुकति को जाइ ॥३६५०॥

श्री भगवंत तब कहैं विचार । सीता महासती है नारि ॥
विपत्ति भैई फिरि कंत के संग । अगन्यां किम ही करी न भंग ॥३६५१॥

रावण हरी परीसह सही । अपणां सत टाल्या वह नहीं ॥
ग्यांन अंकुस सों मन गयंद । वैराग्य भाव सों राख्या बंद ॥३६५२॥

वा का सत तै जीत्या राम । मन वांछित सब सीधा काम ॥
जे मन वच पालै इह कोइ । ऊंची गति पावै जिव सोइ ॥३६५३॥

लोक लाज सों राखै सत्त । निसचल रहै न ऊनका चित्त ॥
वे क्यों वाकी सरभर करैं । जैसा भाव तइसी गति भरैं ॥३६५४॥

जैसी करणी तैसी ठाँव । पालैं धरम नी सील सुहाव ॥
पचवैसि राजधान का ग्राम । नोदर विप्र रहै तिस ठाँव ॥३६५५॥

अभिमाना वाकी अस्तरी । अैसें अगनि पवन तैं जरी ॥
द्विज कौ सदा देहि वह दुख । कदे न राखै घर में सुख ॥३६५६॥

रात दिवस कलह वै करैं । ब्राह्मण देखि अैसी दुख भरै ॥
नोदर बांभण आन्यां अन्न । अभिमानां निकस गई वन ॥३६५७॥

पोदनापुर का रुद्र नरेस । बामनी उठि गई तिहां देस ।।
पुहुप करणं नगर ना नांम । लवध प्रसाद राणि तिह ठाम ।।३६५८।।

हेमंकर पंडित तिहाँ गुणी । राजा कंदरप क्रीडा घणी ।।
लग्या पांव राजा के माथ । मनमें सोच करैं नरनाथ ।।३६५९।।

भया परभाति काया करि सुध । बैठा पाट विचारी बुध ।।
भूपति बहुति सभा मैं आइ । नमस्कार करि लागे पाई ।।३६६०।।

पंडित गुणी आए परधांन । राजा उनसों पूछै ग्यांन ।।
राजा के माथै ल्यावे चोट । तासौं कहा कीजिये खोट ।।३६६१।।

मंत्री बोले सब तिण बार । वाका चरण काटो भुपार ।।
हेमंकर द्विज बोल्या करि ग्यांन । वेही चरन तुम उत्तम जांन ।।३६६२।।

दीजे वाहि भला आभरण । असी बात सुणी उन कर्ण ।।
भये कोप सभा के लोग । इण विध किम भाषी ये फोक ।।३६६३।।

विप्र ने कह्या भेद समझाय । बहुत विभूति दई तबै राइ ।।
मित्र जसा ब्राह्मणी एक । असांक द्विज मुंवां धरि टेक ।।३६६४।।

सिघइंद कवर अवर पुत्री । तिहां जटसाल द्विज नैं थिति करी ।।
सीखी विद्या भए सुजान । सस्त्र सास्त्र सीखउ परवांन ।।३६६५।।

राजा की पुत्री उन हरी । सिघइंद दोड्या तिह घरी ।।
घेरया द्विज तिहां हुवा जुध । सेनां की खोई सब सुध ।।३६६६।।

कन्यां जीत गया द्विज गेह । लबध प्रसाद नें छोडी देह ।।
विप्र भया नगरी का राव । सब भूपति में प्रगटयो नाव ।।३६६७।।

सील वृधि श्रीवृधन संजोग । पोदनपुर का मुगतै भोग ।।
राजा सुकेत वाघरपुर धणी । भूपति सूं वा भय व्यापी घणी ।।३६६८।।

सिघोद देवी ता असतरी । श्रीवरधन की संका धरी ।।
रयण समय दपति उठि भगे । पोदनापुर वन जाइ न लगे ।।३६६९।।

तिहां भुयंग डस्यौं सिंघ इंद । देवी राणी कैं हुवा दुंद ।।
रोवैं पीटैं वन मैं वही । तिहां सहाय हुवा कोई नहीं ।।३६७०।।

मधु मुनिंद करैं तिहां तप । दयाभाव श्री जिनवर जप ।।
मुनि नें सपरस आइ वियार । मृतक विष उतर भई संभार ।।३६७१।।

श्री मुनिवर कूं करी डंडोत । पूजा स्तुति करी बहुत ।।
बीती रयण उगीयो भाण । विनयदत्त पहुंच्यो तिहां आंण ।। ३६७२।।

सुण्या भेद रात का सेठ । अस्तुति करि उनकी ढिग बैठि ।।
श्री वरधन आया भूवाल । सिध इंद सुं मिल्या तिह काल ।।३६७३।।

सील बुद्ध माया सूं मिली । क्रोध लहर दोनुं की टली ।।
श्रीवर्धन जोड्या दोउ हाथ । मेरा भव भाखो मुनिनाथ ।।३६७४।।

अवधि विचार करै मधु मुनि । सोभापुर नगर प्रथी धणी ।।
भद्रसेन आचारिज तिहां । राजा धर्म सुणै नित जिहां ।।३६७५।।

एक दिन चाल्या जती कै पास । मारग में आई खोटी बास ।।
दुर्गंध तैं भया जीव बुरा । राजा अपणां घर कुं मुडा ।।३६७६।।

एक नारी को असा दुख । देह बसाई गंधावै मुख ।।
जिहां निकलै ते गली बसाइ । असी नारी वहै तिण ठाइ ।।३६७७।।

मुनि दरसन पाया तिण नारि । गया दुख वहै उतनी बार ।।
अमल राय सुणि अचरज करै । अणुव्रत गुरु पासैं धरैं ।।३६७८।।

आठ गांव आठ को राखि । राज विभूति पुत्र को भाखि ।।
दया दांन विचारै ग्यांन । आउ पोकरि सौधर्म विमांन ।।३६७९।।

उहां तै चइ श्रीवरधन भए । सुण्यां धरम चरण कुं नए ।।
मित्रजसा पूछै परजाइ । इह माता हूं किह भाई ।।३६८०।।

विप्र नैं तब दे दिया सराफ । नगरी जलैं उदैं भयो पाप ।।
बहुते लोग क्रोध कौं पाइ । हुतासन में दियो विप्र जलाइ ।।३६८१।।

वह द्विज मर करि हुवा बरांमन । रसोई करै राजा कै दिन दिन ।।
एक दिन मुनि नृप कै घर आइ । भोजन निमित्त ऊभा मुनिराइ ।।३६८२।।

बरांमन मुनि कू विष दिया । देही छोडि सुरपद पाइया ।।
विप्र मरि करि पहुंच्या नर्क । लख चौरासी रह्या गर्क ।।३६८३।।

मित्र जसा भई अस्तरी । असोषसरक की हुई पुत्री ।।
राजा पूछै एह संदेह । पुरुष सौं नारी भई क्युं एह ।।३६८४।।

कहैं मुनीसुर सुणु नरेस । अब तुम परतक्ष देखो भेस ।।
राजा सुकांत राज में मुवां । भोजन पुत्र सेठ की अस्तरी हुवा ।।३६८५।।

अभिमानां प्रसाद लवध की असई । करदह की राणी तब थई ।।
मधु मुनि किया अंत संन्यास । ईसान स्वर्ग पद पाया वास ।।३६८६।।

जे कोई धरै धरम सूं चित्त । निसचैं पावैं पंचम गति ।।
भवजल तिर जाई सिव मध्य । तिहाँ सासती पूरण रिध ।।३६८७।।

दूहा

धरम ध्यांन लव ल्याइ करि, धरैं ज संजिम भार ॥
चिहुं गति भ्यंतर ना रुलै, पावैं सुख अपार ॥३९८८॥

इति श्री पद्मपुराणे मधु आख्यान विधानकं

७४ वां विधानक

चौपई

नारद मुनि का अयोध्या में आगमन

नगर अजोध्या उत्तम थान । भरथ प्रताप तपै ज्युं भांन ॥
परजा सुखी दया चित धरणी । इन्द्रलोक की सोभाबरणी ॥३९८९॥
अपराजिता मिंदर सतखणे । पश्चात्ताप करे मन आपणें ॥
मेरी कुंख रामचन्द्र भए । जोवन समए वे उठि गये ॥३९९०॥
धरती पर धरते नहीं पांव । वन वेहड भ्रमैं दुःख के भाव ॥
पुत्रां नें देखूं किण भांति । अपराजिता रोवई मात ॥३९९१॥
अन नारी रोवैं ता संग । ज्यौं घनहर बरसैं बहती गंगा ॥
नारद मुनी आए तिण घरी । नमस्कार असतुत बहु करी ॥३९९२॥
चउका दिया बैठणां आंण । बहुत कियो आदर सनमांन ॥
सीलवंत वे नारद मुणी । जटाजूट वाणी करि गुंनी ॥३९९३॥
कमंडल पींछी कर में लिये । भसम लगाइ तन धोती किये ॥

अपराजिता से प्रश्न

पूछै नारद कहो मो मात । सुकोसल का कुल उत्तम भात ॥३९९४॥
राजा दसरथ की पटधरणी । तुम किम हो किम अणमणी ॥
तब बोली अपराजिता माइ । नारद मुनी तुम थे किस ठांइ ॥३९९५॥
रामचन्द्र लक्षमण बनवास । तिम कारण हम रहां उदास ॥
धातकी खंड में पूर्व विदेह । सुरेन्द्रपुर नगर गया था एह ॥३९९६॥
त्रिलोक ईस जिन का अवतार । मिंदर मेरु सुरपति तिहां वार ॥
ल्याई करी जनम की रीत । ढारि कलस उपजाई प्रीत ॥३९९७॥
इंद्र धरणेन्द्र आरती करैं । नर मानुष बहु सेवा करैं ॥
आभूषण पहराय कीए सिंगार । माता नें सोप्या तिण बार ॥३९९८॥
तेईस बरष रह्या मैं तिहां । तुमारा भेद कछुअन मैं लह्या ॥

राम कथा

सर्व प्राण हित मुनि पं सुणी । रामचन्द्र की कथा उण भणी ॥३९९९॥
रामचन्द्र लक्षमण अरु सिया । दंडक वन में आश्रम लिया ॥
सीता कूं रावण ले गया । रामचन्द्र लक्षमण नें दुख भया ॥४०००॥
विराधित सुग्रीव राम सूं मिल्या । रावण सुं जुधा किया उनों भला ॥
लक्षमण लाग्या सकती बाण । हुवा मूरछा गए परांण ॥४००१॥
द्रोवणमेघ की विसल्या धिया । उवै उपाव लक्षमण का किया ॥
सुणी बात अपराजिता माय । गिर गई भूमि मूर्छा खाइ ॥४००२॥
जे लक्षमण कै मारै सकति । कैसी हुई उनूं की गती ॥
सीता का सुषमाल सरीर । वन बेहड तिहां अन्न न नीर ॥४००३॥
बन फल खाइ रहै बन माहिं । बदी बीच महादुख ताहि ॥
जाय पडे समुद्र मंझार । कैसे पाऊं उनकी सार ॥४००४॥
नारद मुनि बोले समझाई । लक्षमण जीया करैं उपाव ॥
बांध्या कुंभकरण इन्द्रजीत । मेघनाद नें किया भयभीत ॥४००५॥
रावण नें मारी राज वे करैं । तुम मनमें चिंता मति धरैं ॥
अब मैं लंका गढ में जाइ । राम लक्षमण आणुं इस ठांइ ॥४००६॥

नारद का लंका में आगमन

नारद चाल्यो बैठि विमांण । त्रिकुटाचल कुं कियो पयांन ॥
पदम सरोवर रावण की चिता । अंगद क्रीडा करै सुख की लता ॥४००७॥
अंतहपुर अंगद के संग । खेलैं राणी मन उछरंग ॥
चउकस बैठे चौकीदार । नारद पूछै रावण सार ॥४००८॥
रखवाले कहैं सुणि रे अग्यांन । तू आकास से बैठा मान ॥
रावण कुं मारचा लक्षमण ठौर । रामचन्द्र सा बली न और ॥४००९॥
आई किंकर लक्षमण सों कही । अंगद ने तब हांसी गही ॥
तपसी कूं ल्यावो मो पास । देखैंगा राम तब करैं उपहास ॥४०१०॥
हस्ती चढ अंगद सु नरेन्द्र । नारद कुं ले चाले करि बन्द ॥
धकाधकी सूं किंकर गहिलिया । रामचन्द्र आगैं कर दिया ॥४०११॥

राम द्वारा नारद का स्वागत

रामचन्द्र नारद कुं देखि । आदर दिया ऋषीस्वर प्रेष ॥
नमसकार करि बैठाया पाट । भूपति सभा जुडी थी ठाट ॥४०१२॥
रामचन्द्र पूछैं कुसलात । मुनि जी कहो धरनी की बात ॥

नारद द्वारा अयोध्या। वर्णन

नारद कथा अजोध्या कही । अपराजिता केकई सुख नहीं ।।४०१३।।
तुम कारण झूरैं दिन रयण । उनके मन को नाहीं चयन ।।
जो तुम उनकी सुध ना लेहु । प्राण तजैं आंणौं निसंदेहु ।।४०१४।।
वेग चलो तुम मेरे संग । सोग वियोग सब होवै भंग ।।
रामचन्द्र लक्षमण सुणि बैन । व्याप्या मोह भरे दोउ नैंन ।।४०१५।।
विराधित सुग्रीव अंगद हनुमान । इनकी अस्तुति कही बखानि ।।
तुम कीया परमारथ कांम । तुमते रही हमारी मांम ।।४०१६।।
परदुख भंजन तुम भूपती । तुमसौं उर हों हां किम भती ।।
भावमंडल की अस्तुति करैं । तुम तैं ए सब कारज सरैं ।।४०१७।।
बहिन तणी मेटया सब दुख । तुम प्रसाद हुआ सब सुख ।।
भभीषण सुं बोले रघुनाथ । जे तुम आंनि मिले हम साथ ।।४०१८।।
तो हम जीत्या लंका देस । हमारा तुम मान्या उपदेश ।।
अजोध्या को हम करि हैं गौंन । तुम उपगार सकैं कहि कौंन । ४०१९।।
लंका राज हम तोकूं दिया । भभीषण बहुरि चरण कौं नया ।।
मेरी अरज सुणौं जगदीस । करो राज तुम बहुत बरीस ।।४०२०।।
हूं सेवग विनऊं कर जोडि । मात बुलावों इस ही ठौर ।।
हम पै राज सबैं किण भांति । मैं सेवग सेऊं दिन राति ।।४०२१।।
रामचन्द्र बोलैं लक्षमणा । जनम भौंम देखण कौं मना ।।
फिर बोले भभीखण राइ । सोलह दिवस रहौ इस ठाइ ।।४०२२।।

अयोध्या में राम द्वारा दूत भेजना

भेज्या दूत अयोध्या नगर । सावधान होवैं जन सगर ।।
विद्याधर तिहां भेज्या दूत । अपराजिता आवत देखे दूत ।।४०२३।।
आए दूत भरत कैं पास । सुणी जीत मन भया हुलास ।।
बहोत दिया दूत को दान । आदर भाव किया सनमान ।।४०२४।।
अपराजिता केकई पै आन । सुणे बचन भया मन आंन ।।
पीछे आवत देखी सैन । बहुत हुवा नगरी में चैन ।।४०२५।।
रतन कंचन बरसे तिह घरी । सब अयोध्या कंचन सूं भरी ।।
भरत भूप यह आग्या दई । अयोध्या फेर समारो नई ।।४०२६।।

सकल गेह कंचन के किये । रतनजडित चित्रसाली किये ॥
विद्याधर आये सूत्रधार । ते मंदिर अति भले संवार ॥४०२७॥
जे जे द्रव्य हीण था लोग । तिण का मेटया सब ही सोग ॥
जे कोई नगर गये थे छोडि । उह दुनियां ले आरिण बहुरि ॥४०२८॥
बहुत लोग अब भी बसे । लंका तैं वह अधिकी दिसै ॥
राजामंदिर सब ही भला । देखत ही सब का मन खुला ॥४०२९॥
बारह जोजन लांबी मही । दस जोजन चोडाई सही ॥
नगरी का कंचन भई कोठ । अन्य बहु मिट गई खडट ॥४०३०॥
श्रीजिन का चैत्याला कियो । आदिनाथ मंदिर तिहां भए ॥
दोई सहस्र थंभ की साल । सहस्र कूट सोमैं सुविसाल ॥४०३१॥
सहस्र थंभ की बेदी बणी । बंदरवाल मोती की घणीं ॥
सहस्र एक ध्वजा तिहां लगी । रतन जोति चहुंदिस जगी ॥४०३२॥
कमल सरोवर वापिका कूप । सीतल पवन सुहावन रूप ॥
अठतीस जोजन बन चहुं पास । फूलैं फलैं बहु वृक्ष सुवास ॥४०३३॥
सोलह दिन में संपदा सही । सुर नर देख अचंभै रही ॥
रामचंद्र इह पाई सुष । बलगो की कीणी तब बुष ॥४०३४॥

दूहा

अजोध्या कंचन की बणी, रतन लग्या बहु आइ ॥
अमर सुख व छोड करि, मोहे सुरपति आइ ॥४०३५॥

इति श्री पद्मपुराणे साकेत वरणनं विधानकं

७५ वां विधानक

चौपई

राम सीता का अयोध्या गमन

लंका राज भभीषण दिया । अजोध्या कूं पयाणा किया ॥
बइठि चले पुहुपक विमांण । विद्याधर संग हैं बलवान ॥४०३६॥
त्रिकुटाचल लंकागढ छोडि । झांई सोमैं है चिहुं ओर ॥

पुष्पक विमान से सीता को मार्ग का परिचय देना

मेरु सुदर्शन देख्यो सिया । पूछैं कवण ए ठांम सोभया ॥४०३७॥
बोले राम सुदर्शन मेरु । महोछा श्रीजिन जनमत बेर ॥
ए है जनम कल्याणक ठाम । इनका सुण्यो पुरांणु नांम ॥४०३८॥

दंडक वन देख्यावै राम । तुम दसकंध हरी था ठाम ॥
उहाँ ते आइ देखी बहै नदी । चारण मुनी आए थे जटी ॥४०३९॥
भोजन दान दिया था उनै । जटा पंखी पूरव भव सुने ॥
जटा पंखी इत सेती गह्या । रावण वा के प्राण कुं दह्या ॥४०४०॥
वंसगिर पर्वत देख्या वही । देसभूषण कुलभूषण सही ॥
उनुं का जब उपसर्ग निवार । केवल ग्यान लह्या तिण बार ॥४०४१॥
बालखिल्य जिहां था भूप । कल्याण माला पुत्री सुम्बरूप ॥
रख्या भूप करै था घणे । बाकौं माग्या था लछमणे ॥४०४२॥
दशांग नगर बज्रकर्ण नरेस । तिहां आंय परदेसी भेस ॥
उन दीया था हम प्रतैं आहार । बाका दु:ख चले थे टार ॥४०४३॥

अयोध्या दर्शन

आए तिहां अजोध्यापुरी । कंचन मंदिर सोभा अति खरी ॥
सीतां पूछे इह नगरी कौण । कनकमय दीसैं हैं जिहां भौन ॥४०४४॥
लंकां तैं दीसैं आगरी । बसैं सघन उत्तम जन भरी ॥
रामचंद्र बोले समझाइ । अजोध्या जनम भूमि यह ठांइ ॥४०४५॥
विद्याधरैं संवारी आंन । असा कोई अवर न थांन ॥
आए जिहाँ बीस देहुरे । रिषभदेव सोभैं अति खरे ॥४०४६॥
उतरे भूमि जिनदरस निमित्त । भरत सत्रुघन आए पहुंत ॥
देखी सेन्यां घणी विभूति । पुहपक विमांण सोभा संजुक्त ॥४०४७॥

राम लक्मण भरत शत्रुघन मिलन

रामचंद्र लखमण कैं पाउ । भरथ सत्रुघन लाग्या धरि भाउ ॥
उनुं लगाया उननैं कंठ । छुटि गइ मन मांहिली गंठ ॥४०४८॥
मैंगल छोर लाख पचास । अस्व रथ पाइक बहु भास ॥
देखैं नारि पुरुष सब लोग । सब नगरी में मिट गया सोग ॥४०४९॥
पुहपक विमांण परिच्याक बीर । सोभैं कनक वरण सरीर ॥
मोती माणक हीरा लाल । डालैं रामचंद्र परि उछाल ॥४०५०॥
सीता सती बहु सोभै पास । जैसे पूनम ज्योति प्रकास ॥
विराधित कूं देखि लोग सब कहैं । चद्रोदिक सुत इनैं संग रहैं ॥४०५१॥
जब खरदूषण सूं भई मार । तब विराधित किया उपगार ॥
दंडक बन तैं ले गए पाताल । रामलखण पहुचाए हाल ॥४०५२॥

देख्या अंगद सुग्रीव हनूमांन । इन सुग्रीव सेनां सब आंन ॥
रामचन्द्र का कीया काज । राखी रघुवंस की लाज ॥४०५३॥
हनूमांन बल महिमा घणी । इसकी बात आगैं भी सुणीं ॥
भावमंडल जनक का पूत । देव एक कीया बहु पूत ॥४०५४॥
जनमत ही सुर नैं इह हरया । विजयार्द्ध गिरिपैं गिर पडया ॥
पुहुपावती नैं पाल्या याहि । पुंन्यवंत पराक्रमी ताहि ॥४०५५॥
जितने राजा सेना साथ । जैसे इन्द्र देव की आथ ॥
बाजंतर बाजैं बहु संग । ता सबद सुख पावैं अंग ॥४०५६॥
गावैं गुणि जन मधुरे वैयन । करैं राग होई सुख चैन ॥
विरदावली जाचक जन कहैं । नगर लोक थकित होइ रहैं ॥४०५७॥
अपराजिता अवर कैकया । सुप्रभा और सकल सुख भया ॥
सतखिण मिंदर बइठी जाइ । दरसन देखैं पुत्र का आइ ॥४०५८॥
निकट पौल आइया बिवाण । माता पुत्र सूं भया मिलाण ॥
चारूं माता के पद नए । भरे नयन तब उनके हिये ॥४०५९॥
कंठ लगाय परियण भेटिया । नए जनम ए अब आइया ॥
असुभ कर्म तैं भया वियोग । पुंन्य उदय तैं भया संजोग ॥४०६०॥

अडिल्ल

पुंनि मिलै कुटुंब और सुख संपति घणी,
वृद्धि होइ परिवार जिती भावैं अणी ॥
करो धरम सुं प्रीत रिध बहु पाइये ।
मध्य लोक सुख देखि मोक्षपुर जाइये ॥४०६१॥

इति श्री पद्मपुराणे श्री रामचन्द्र लक्षमण अयोध्या आगमन विधानकं

७६ वां विधानकं

चौपई

अयोध्या वैभव

दोइ कर जोडे श्रेणिक राइ । प्रभु जी कथा कहो समझाइ ॥
केती विभव राम कैं भई । केती पृथ्वी साधी नई ॥४०६२॥
श्री जिन वाणी गहर गंभीर । सुणतै भाजैं प्राणी की पीर ॥
गौतम स्वामी व्यौरा कहैं । सुणि श्रेणिक मन निश्चैं गहै ॥४०६३॥
कनक कोट चतुःसाला नाम । तींन कोट अजोध्या ठाम ॥
एक कोट नगर के फेर । दूजा कोट फिर भीतर घेर ॥४०६४॥

तीजा कोट सब ही तें बडा । खातिका तीन निरमल जल भरघा ।।
च्यारूं पोल बज्र किवाड । हस्ती पील बनी मभ्भार ।।४०६५।।
जिन प्रतिमा की महिमा घणी । झालि कलस अति सोभा बणी ।।
रतनजोति सोभै चिहुं ओर । चंद्रका बणे घणे सब ठौर ।।४०६६।।
बणी पूतली जिहां लूंबत । सोभै सब ठामैं बहु भंत ।।
वृक्षावली का बणे कटाव । उनूं को कहां लग बरणाव ।।४०६७।।
सभामंडल भरोखा सु अनूप । सुख सेज्या परि पोढे भूप ।।
बहु सुगंध पाटंबर तिहां । मानसथंभ बिराजै जिहां ।।४०६८।।
बइठे पट्ट फिरैं सिर छत्र । चमर ढरैं गंगाजल जत्र ।।
सोलै सहस्र मुकट बंध राई । करैं सेव तेव मन वच काई ।।४०६९।।
बैजयंती सभा तिहां जुडी । बर्द्धमान मंदिर रिध बडी ।।
अनोपम गदा खडग कनकार । सूर जहां सुसोभै तरवार ।।४०७०।।
बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । असा धनुष बहु सोभा धर्त्त ।।
उत्तम वस्त्र सोभै सब अंग । जर्क सुबसन बणे पचरंग ।।४०७१।।
पंचास लाख गऊ को खीर । छपन लाख गऊ लक्षमण बीर ।।
सत्तर कोटि नगर में आंन । तीन खंड के भूपति जान ।।४०७२।।
सेव करैं नित सकल नरेस । नरपति खगपति मानैं आदेस ।।
चक्र सुदर्शन जोति अपार । प्रगटं तीन् लोक मभ्भार ।।४०७३।।
च्यारूं बीर पट्ट बैठें नित्त । सकल सभा में उनुं का चित्त ।।
बन उपवन के फल अरु फूल । देखि ताहि पथि करि हैं भूल ।।४०७४।।
उछलैं जल फिर उतरैं भूमि । वृक्षावली तिहां रही भुमि ।।
मंदिर बणे सब रोस के भले । तिहां बैठि नृप मानैं रले ।।४०७५।।
आस पास पर्वत्त उतंग । निर्मल नीर बहै तिहां गंग ।।
गिरवर तैं इहै ऊंचा कोट । छिपै भानु उह गढ की ओट ।।४०७६।।
सुर्ग सुख तजि मोहे देव । अजोध्या इंछै रघुपति सेव ।।
रामचंद्र की आगन्यां भई । धर्मसाला सब रावो नई ।।४०७७।।
पर्वत परि चैत्याला किये । नगर नगर जिन मंदिर भए ।।
अटूट भंडार घटैं है नहीं । भोग्य भूमि सब है मही ।।४०७८।।

सीता की नगर में चर्चा

नगर नगर चर्चा इह चली । रामचंद्र कीनी नहीं भली ।।
सीता कूं रावन ले गया । सीतां का सत कैसे रहा ।।४०७९।।

रामचंद्र सा करै ए कर्म । कैसे रहै धर्म का धर्म ।।
जे नारी बाहिर पग देइ । ताहि सुभट कैसे घर मैं लेइ ।।४०८०।।

उत्तम कुल की पूरी लाज । परे घर भ्रमैं तिण सौं नहीं काज ।।
असी चरचा घर घर होइ । असुभ कर्म मति बांधो कोइ ।।४०८१।।

भरत के मन में वैराग्य

भरत तणों मन भया वैराग । सकल रिध सौं मेल्यो लाग ।।
राजभोग बिष समझ्या सबैं । सब ही बिनासी जाणीं अबैं ।।४०८२।।

जोवण जल बुदबुदा समान । जरा व्यापैं तब थकैं परान।।
पांचु इन्द्री हुवैं क्षीण । पराक्रम थकैं देही होइ हीण ।।४०८३।।

तब कैसे पालै चारित्र । चार कषाय जीव के सत्रु ।।
विषय सताइस सहु दुख के मूल । जे अग्यान मोह में भूल ।।४०८४।।

लोही मुत्र हाड आमिष । ताहि देखि जिय मानैं सुख ।।
काया कूंडी काचा पिंड । जिम कुंभार बणावै मंड ।।४०८५।।

एक घडी में होई छार । जैसे यूं कहा करै बिचार ।।
मनुष्य जनम किस ही विध लहै । संयम को निश्चय सों गहै ।।४०८६।।

इह विभूति संध्या उणहार । सोभी जात न लागै बार ।।
जैसे दावानल बन दहै । बडे वृक्ष पल में भस्म करि रहै ।।४०८७।।

सब बन भस्म करै वह आग । तउ न हारै पल पल जाग्य ।।
जेता ईंधन डारैं ताहि । तो भी पावक तृपत न आहि ।।४०८८।।

ऐसे भुगतैं सब जग मही । तो भी तृष्णा मिटती नहीं ।।
ज्यों समुद्र अति ही गंभीर । गंगा नदी मिल्या सब नीर ।।४०८९।।

उमडै नही समुद्र किह भांति । असे जीव मोह के नसात ।।
रागद्वेष छोडो करि ग्यांन । सुख दुख समझैं एक समान ।।४०९०।।

जैसे गंगाजल के पास । काक धरै आमिष की आस ।।
मृतक परि बैठ चला जल मांहि । उठै लहर अगम अथाह ।।४०९१।।

समुद्र मांहि पहुंच्या वह काग । तिहां तैं निकसैं न आरण लाग ।।
देखैं उदक चिहुं दिसि ओर । उडने का पावै नहीं ठौर ।।४०९२।।

ऐसे जीव माया बस पडै । भवसागर में भ्रमता फिरै ।।
जैसे मींडक पंकज रुचि करै । तिहां भुजंग आय पकडै ।।४०९३।।

अैसे लोभ दे जीव नैं दुःख । नर्क पठावे तिहां नहीं सुख ॥
इह विभूति सपर्णां उरिपहार । अब हूं ल्यूं संयम का भार ॥४०६४॥
करैं विचार भरथ भूपती । किरण ही प्रकार होस्युं जती ॥
अब जैहूं संयम व्रत धरूं । सकल लोक मुज भाखे बुरू ॥४०६५॥
अब लूं राज अकेलै करा । रघु नैं देख जैन व्रत धरया ॥
कछु राखिये लोकाचार । कछु कीजिये जीव का आचार ॥४०६६॥
जैसैं केहरि पिंजरा मांझ । इम भरथ विचारै वासुर सांझ ॥

राम से भरत की प्रार्थना

रामचन्द्र सों बिनवै भरथ । आग्या द्यो तो लेहुं चारित्र ॥४०६७॥

राम का उत्तर

रामचंद्र समझावै बात । तो कूं राज दिया है तात ॥
हम आग्या देवे कूं कौन । तुमारे मिलन कूं किया था गौन ॥४०६८॥
करो राज परजा सुख देहु । चउथै आश्रम दिष्या लेहु ॥
चक्र सुदर्शन तुम पै रहो । जो कुछ आग्या हमसूं कहो ॥४०६९॥
छत्र धरावो अपने सीस । तुम हो सब पृथ्वी के ईस ॥
सत्रुघन चमर ढारैगा खडा । लक्षमरण मंत्री सब गुण बडा ॥४१००॥
तीन खंड का भुगतो राज । हमनैं नहीं राज सौं काज ॥
करैं वीनती भरत कर जोडि । कीया भोग कछु रही न खोडि ॥४१०१॥
स्वर्ग लोक सुख देखे घरणे । तो भी जात न जारणे भले ॥
इह बिभूति विनसत नहीं वार । माया में मरि भ्रमैं संसारि ॥४१०२॥
ऊंच नीच गति भरमैं जीव । सुभ असुभ की बांधै नीव ॥
करो दान पालो रतन तीन । च्यार दान विध सौं द्यो नित्त ॥४१०३॥
दयाभाव सों राखो चित्त । सुख दुख सम जाने ज्ञानवंत ॥
समझावै मंत्री परवीन ।दया दान राखो मन चित्त ॥४१०४॥
कारिमो दीसैं परिवार । कोई न चलै जीव की लार ॥
धरि चारित्र लहूं गति मोक्ष । तिहाँ सासता सुख संतोष ॥४१०५॥
स्यंघासन सौं उतरया भरथ । तब लक्षमरण करैं है थुति ॥

भरत को पुनः राम के द्वारा समझाना

अब ही तुम मति छंडो राज । जोबन समैं नहीं तप का काज ॥४१०६॥

वैराग भाव हम चित्त घरैं । हमारे संग तुम तप आचरैं ।।
केकइया माता बिललाइ । रामनी स्तवन करैं बहु भाय ।।४१०७।।

सीता अवर विसल्या आइ । सहु परिवार कहैं समझाइ ।।
कोमल काया लघु है वेस । महा कठिन मुनिवर का भेस ।।४१०८।।

षट रितु के दुख कैसे सहो । सब्बा भूमि परीसा लहो ।।
नीरस भोजन वन का वास । किम छांडो तुम भोग विलास ।।४१०९।।

स्वर्ग लोक सम है यह रिद्ध । अन्य जनम किए देखी सिद्ध ।।
श्रावक धरम पालो घरमांहि । परजा दान करो नित चाह ।।४११०।।

बाल समै तप करणा नहीं । चउथै आश्रम दिख्या कही ।।
वेग चलो अब करो सनान । हमारा वचन सुणु दे कान ।।४१११।।

पकडि बांह खैंचैं सहू अस्तरी । ल्यावैं उबटणा सुगंध अति खरी ।।
भारैं जल धोवैं सब अंग । भरथ ध्यान हूवा नहीं भंग ।।४११२।।

पूजा करी श्री जिनदेव । सकल अस्तरी करैं ऊभी सेव ।।
त्रिलोकमंडण छूटो गयंद । तोडि बंधण करया अति दुंद ।।४११३।।

पाडै हाट मंदिर अरु पौल । सब नयरी मां मांची रोर ।।
छूटैं अगन जंत्र अरु बांण । गज नहीं मानै कोई काण ।।४११४।।

उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन

जिहां भरथ करै पूजा ध्यान । मैंगल आया उनहीं थान ।।
व्याकुल हुई सब अस्तरी । भरथ भूप भय चित्त न धरी ।।४११५।।

रामचंद्र लक्षमण इह सुनी । उनकूं देखत हूं सब दुनीं ।।
डारे फांस हस्ती कूं घनी । मानैं नहीं क्रोध का धनी ।।४११६।।

देखि भरथ कूं हाथीनिया । नमस्कार सब बहु विध किया ।।
भरथ नरेस अचंभै भया । या का मद काहे तैं गया ।।४११७।।

जातीं समरण भयो गयंद । पुरव भव का समझ्या विद ।।
ब्रह्मोत्तर सुरग सुरगति पाई । उहां तैं चइ राजा के आइ ।।४११८।।

दान देह कीया बहु मांन । तातैं हस्ती उपज्या आंन ।।
दीजे कछु दया के निमित्त । चइयाव्रत कोजे बहु भंत ।।४११९।।

सोरठा

जो कछु दीजे दान, तजो सकल अभिमान कूं ।।
पावइ निरभय थान, दया धरम परभाव सूं ।।४१२०।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन मंडल छिहतरवां विधानकं

७७ वां विधानक

चौपई

भरत का हाथी पर चढ़ना

हाथी खडा धरम के ध्यांन । राम लक्ष्मण ढिग पहुंचे आन ।।
भूचर खेचर नरपति घने । चउर्यां फेर मनख इम भणें ।।४१२१।।

इह दंती सब तैं मयमंत । कैसे भाव धरया इन संत ।।
भरत आइ चढे ता पीठ । सीता विसल्या आक्रमी दीठ ।।४१२२।।

एभी संग चढी तिण बार । अपनीं अपनी ठाम विचार ।।
डोली डोला अनैं चकडोल । रथ पालखीया बहुत अमोल ।।४१२३।।

सेना बहुत चली ता संग । पहिर आभूषण भले सुरंग ।।
कुसुम अमोद नंदन उरिणहार । तिहां आए सगला परिवार ।।४१२४।।

उतर अंतहैपुर सब गये । सगले लोग अचंभै भए ।।
इह गैवर थां महाबलीष्ट । ऊभा रह्या मौंन करी दिष्ट ।।४१२५।।

हाथी द्वारा तप साधना

बहु महावत आए पास । भला भलीदा सौंज सुवास ।।
हाथी खावै न खोलै नयन । सेवग बोले मधुरे बैन ।।४१२६।।

आभूषण डारे सब डारि । गज नहीं देखै आंखि उघाडि ।।
आया अनैं सथानिक खडा । खम्बा सकल सउंज तिहां पडया ।।४१२७।।

जैसे खडा खंभ पाषान । तैसें मंगल ल्याया ध्यान ।।
अन की बात न पावैं कोइ । ए अचरज सब कैं मन होइ ।।४१२८।।

वैद्यक ग्रंथ संभाले वैद्य । अउषध ल्यावै मन में खेद ।।
विद्याधर जंत्र मंत्र बहु करैं । कुछ उपाय नहीं सुसरैं ।।४१२९।।

करैं जोतिगी ग्रह चाल । कोई कहै मारया है इन बाल ।।
अैसा गज पृथ्वी पैं नहीं । ए रावण कै था पारोधन सही ।।४१३०।।

जो कोई कहै सो करै उपाव । कोई न जाणै उसका भाव ।।
अपनी अपनी सब ही कहैं । भोई वैदन कोई रहै ।।४१३१।।

दूहा

करैं जतन सब गुणीजन, वैद्यक ग्रंथ विचार ।।
मन की को जाणै नहीं, रहे सकल पचि हार ।।४१३२।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन अलंकार समाधान विधानकं

७८ वां विधानक

चौपई

देश भूषण कुलभूषण मुनि का आगमन

देशभूषण कुलभूषण केवली । अजोध्या आए पूजी रली ।।
महेन्द्र वन अति उत्तम थान । सोभै दोऊ चन्द्र अरु भान ।।४१३३।।

तीन लोक मे प्रगटे मुनी । रामचन्द्र लक्षमण यह सुनी ।।
रघुपति मन में भए उछाह । दरसन हित चाले नरनाह ।।४१३४।

भरथ सत्रुघन चारों बीर । सोहैं कंचन वरण सरीर ।।
त्रिभुवन अलंकार हस्ती पलांण । तिहां बाजै आनंद निसांण ।।४१३५।।

सुग्रीव नील अंगद हनमान । भूपति संग चले बलवान ।।
अपराजिता अर केकईया । सुप्रभा संग चाली बहु त्रिया ।।४१३६।।

सीता आदि चलीं बहुनारि । आने लोक सकल परिवार ।।
पहुंचे वन तब उतरे भूमि । दर्शन पाय चरण कौं झूमि ।।४१३७।।

दई प्रक्रमां करी डंडोत । कहो वाणी धरम उद्योत ।।
कैसी विध धरम जती का होइ । कैसे श्रावग पालैं सोइ ।।४१३८।।

केवलग्यानी ज्ञान अपार । कहैं धरम मुनि प्राण अधार ।।
धरम समान सगा नहीं कोइ । धरमही तैं ऊंची गति होइ ।।४१३९।।

धरम सहाय जीव के संग । अन्यवि बरज्या रंग पतंग ।।
ऐसा है संसारी भोग । कबहु साता असाता जोग ।।४१४०।।

धरमहि सेती इन्द्र फणीन्द्र । चक्रवर्त्ति अर देव जिणंद ।।
ऊंची गति बहुरि निरवाण । पावै मोक्ष सासता थांन ।।४१४१।।

लक्ष्मण द्वारा हाथी के सम्बन्ध में जानकारी चाहना

लछमण पूछै द्वै कर जोडि । हाथी की कथा कहिये बहोड ।।
किण कारण इण कीया दुंद । समता भई भरत कूं वंद ।।४१४२।।

केवल लोचन ग्यांन अगाध । पूजत हैं प्राणी के साध ।।
नगर अजोध्या नाभि नरेस । मरुदेई सरस्वती के भेस ।।४१४३।।

सरवारथ सिध रिषभ देववास । छह महिना आगे परकास ।।
भई भौमि कनक सी सरब । रतनवृष्टि वरष्या बहु दर्ब ।।४१४४।।

गरभ जनम कल्याणक भए । सुरपति खगपति सब ही नए ।।
बज्रवृषभनाराच संस्थान । प्रथम जिनेन्द्र महा बलवान ।।४१४५।।

लख त्रियासी पूरब राज । पाछैं किये धरम का काज ।।
चार सहस्र भूपती साथ । आतम ध्यांन धरैं जिन नाथ ।।४१४६।।

जैसे सुदरसन अटल मेर । असे तप साधैं मन घेर ।।
अनि भूप सहि सकैं न भूख । लगी त्रिषा मन लाग्या सूख ।।४१४७।।

तब वे मुनि करैं विचार । जई फिर जाउं नगर मझारि ।।
मारैं भरथ सहु नैं ठौर । तातैं मत हम थापैं और ।।४१४८।।

दरसन च्यारि निराले भए । उनने भेष निराले किये ।।
उनमें भृष्ट भया मारीच । ग्यानामृत तैं सब को सींच ।।४१४९।।

सुप्रभा राजा प्रहलना अस्तरी । ते भी बसैं अजोध्या पुरी ।।
पुत्र दोइ वाकैं गर्भं भए । सूर्य उदैं चन्द्र उदै निरभये ।।४१५०।।

जब वे कुंवर जोवन के वैंस । मारिच पास सुण्यो उपदेस ।।
संन्यासी का साधै जोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।४१५१।।

च्यारूं गति भरम्या वे दोइ । कबहूं देव मनुष गति होइ ।।
कबहुं कि तिरजंच गति फिरै । तप करि राज पुत्र अवतरैं ।।४१५२।।

हस्तनागपुर हरिपति भूप । मनोलता राणी सु स्वरूप ।।
तास गर्भ चन्द्रउदय जीव । कुलकर नाम धरम की नींव ।।४१५३।।

विश्वकर्म विप्र अगनिकुल नारि । सूरज उदय लिया अवतार ।।
सुरति रति नाम पुत्र का धरचा । बेद पुराण विद्या सुं भरचा ।।४१५४।।

हरपति राजा तपकूं गया । राजभार कुलकर कूं दिया ।।
सुरति रति प्रोहित भूपति हेत । संन्यासी महंत शिष्य सों हेत ।।४१५५।।

पंचा अगनि साधैं वन मांहि । करैं तपस्या बहुत सांझ ।।
नरपति सुणि दरसन कूं चल्या । अभिनंदन मुनि देख्या भला ।।४१५६।।

तेरह बिध चारित्र का धणी । मति श्रुत ग्यांन अवधि उपनी ।।
मुनि देख्या वाकी ढिग जाय । नमस्कार करि लाग्या पाइ ।।४१५७।।

मुनि बोलैं राजा सु बैंन । दादा निज देखूं तुम नैन ।।
जिहां तापसी साधै ध्यान । जलै सरप वा लकडे थान ।।४१५८।।

राजा गया ते लकडा निकाल । चीरया ठुंठ निकल्या व्याल ।।
जैन धरम की धरी परतीत । धन्य साध जे इन्द्री जीत ।।४१५९।।

पाखंडी जाण्यां सब भेष । निश्चै जैन धरम सुं प्रेष ।।
राजा चाहै दिक्षा लेई । सुरति रति प्रोहित तब शिक्षा देइ ।।४१६०।।

तुम बालक अर संतति नांहि । संतति बिन दीक्षा नहीं काहि ।।
जे बिन संतति तप को धरैं । मर करि जीव कुगति में पडैं ।।४१६१।।

जब वह पुत्र सु ईसरथ । सौंपो राज रिध सब गरथ ।।
अपणा कुल का करिये धरम । अनि भेष धरो मति भरम ।।४१६२।।

ज्यों क्षीरकदम का पर्वत पुत्र । नारद सुं वाद किया बहुत्त ।।
वसू भूप कों भेज्या नरक । असा प्रोहित बरै जै भडक ।।४१६३।।

श्रीमदाराणी सुणि बात । राजानैं समझावैं बहुभांति ।।
नृप वाका मानैं नहीं कहा । प्रोहित खोट हिया में गह्या ।।४१६४।।

राणी सों विप्र कहै समझाय । राजा जैन धरम रुचि ल्याइ ।।
सीख हमारी सुणं न राय । मेरा जजमान हाथ तैं जाय ।।४१६५।।

विष देकरि मारैं इस घडी । राणी प्रोहित इह चित्त धरी ।।
विष देकरि तब मारया राव । राणी कुं कोट चुवै सव ठाम ।।४१६६।।

प्रोहित सातवां नरक दुख पाय । महा दुःख सों तिहां विहाइ ।।
राजा चउगै भरम्या जौन । अंत समय भए इक भौन ।।४१६७।।

मींडक मूसा मृग नै मोर । कुकर गति दोन्युं इक ठौर ।।
ऊंच नीच गति भरम्या भाइ । प्रोहित जीव हाथी की काय ।।४१६८।।

राजा जीव मींडक जल बीच । हाथी नैं रौंध्या तिहां कीच ।।
फिर मींडक उपज्या तिहं ठौर । कोवा खाय गया भी और ।।४१६९।।

मींडक जीव मूंसे गति पाय । हाथी तैं बिलाव गति आय ।।
मूसा कुं बिलाव किया भक्ष । दोनू उपज्या जल मैं मच्छ ।।४१७०।।

कुकडा मच्छ बिलाव नें मूसा । धीवर ने गह्या जाल में धस्या ।।
उहां तै मरि बांभरण कैं गेह । राजग्रही नगर विप्र का एह ।।४१७१।।

बहु बाकै सिष जउलका अस्तरी । अंतर सौं पुत्र जरणे सुभ घडी ।।
प्रथम रमन दूजा विनोद । मात पिता ले पालैं गोद ।।४१७२।।

जोबन समैं विचारैं एह । रमन धरै विद्या सुं नेह ।।
कुपढ मनुष पसू तें बुरे । जिन कछु भेद चित्त नहीं धरे ।।४१७३।।

पशु भला जो उठावै बोझ । मूरख जैसा जंगल रोझ ।।
गुनी होय तो समझै ग्यान । कुपढ कहा जानैं पहचान ।।४१७४।।

गुरण तें राज सभा में कारण । आदर भाव सदा सनमान ।।
गुरण हीरणां जैसे बिनु आंख । जैसे पंखी बिनू पांखि ।।४१७५।।

अैसी सोच वाणारसी गया । गुरु पै जाय चरण कूं नया ।।
तिहां सिष्य पढैं थे घने । सेवा करैं उनूं ढिग भरणे ।।४१७६।।

वै सिष्य भोजन देवै याहि । रमन पढै मन में उछाह ।।
च्यारूं बेद पढे मन ल्याइ । विद्या कला सीष्या बहु भाइ ।।४१७७।।

गुरु पै विदा होय करि चल्या । राजग्रही बन देख्या भला ।।
बर्षा भई घनहर घनघोर । बरषा भई बन नाच्या मोर ।।४१७८।।

भीजत चल्या रमरण तिण बार । देख मढी इक वस्त्र उतार ।।
वस्त्र निचोड वह सूतो तिहां । स्यामां भावज आई जिहां ।।४१७९।।

विनोद त्रिया असोग दत्त सूं नेह । उनैं कीया वचन जष्य कै गेह ।।
जब उठ स्यामा वन कूं गई । विनोद विप्र तरवार नांगी लई ।।४१८०।।

त्रीया पाछै चाल्या लाग । असोगदत्त अग्रै आवै था जाग ।।
कोटवाल कै आया हाथ । बांध मसक वह ले गया साथ ।।४१८१।।

गई बांभरणी मंड के बीच । रमन सोवै था लागी मींच ।।
विनोद जाणैं यह इस का जार । खडग काढि तसु सीस उतार ।।४१८२।।

देह छांडि मैंसा भया अंध । दोनूं जले वयर सनमंध ।।
भये भील मृग गति पाइ । वनमैं रहै वापैं भए काइ ।।४१८३।।

नगर कंपिला राजा स्वयंभूत । विमलनाथ दरसन हित जुत ॥
बे दोनुं मृग आ खडे राय । जिन मंदिर राखे तिहां जाय ॥४१८४॥

अनपांणी घास तिहां हरया । सेवा करैं जतन सुं खरा ॥
समाधिमरण में त्यागी देह । विनोद जीव सेठ कै भया गेह ॥४१८५॥

नाम धनदत्त लषमी गेह अपार । बाइस कोडि जुडें दीनार ॥
रमन जीव लहि स्वर्ग विमांन । भए पुत्र धनदत्त के आन ॥४१८६॥

वारुणी नाम सेठ की धणी । यांणी जाकैं पुत्र थिति वणी ॥
निमित्तग्यांनी पंडित बुलाइ । जनमपत्री लई लखाइ ॥४१८७॥

घडी मूहूर्त्त उत्तम बार । उपज्या वैराग तजै घर बार ॥
इतनी सुणी दंपती वात । पुत्र नैं बरजें बाहर जात ॥४१८८॥

वन उपवन मंदिर संवराइ । खाणां पीवणां सेवा सार ॥
फूल पान उवटणां सनांन । आभूषण दे बहुला आंण ॥४१८९॥

अैसी जुगत दिन बीते घणे । प्रभात समय सुपनां में सुणे ॥
अगले भव हम थे दोइ भ्रात । अब कै भए पुत्र अने तात ॥४१९०॥

भानु उदैं बाजेंतर होई । जै जै सबद करैं सब कोइ ॥
श्रीधर मुंनि कौं केवल ग्यांन । अैसी भूप नैं सुणी कान ॥४१९१॥

पंच भूमि तै देखी भीर । पहुंच्या चाहै मुनिवर तीर ॥
तबै उतरैं था साह का कुमार । डस्या भुयंगम खाइ पछाड ॥४१९२॥

मर करि स्वर्ग मां देवता भया । मनबांछित सुख भुगतैं नया ॥
चंद्रातपुर प्रकास यस भूप । माधई राणी महा सरूप ॥४१९३॥

उहां तै चया भया जगदूत । पाई सरोध जोवन संजूत ॥
प्रकास जस नैं दिक्षा लई । राज विभूत जग दूत ने दई ॥४१९४॥

भोग मगन में बीतै काल । दुर्जन दुष्ट तणं सिर साल ॥
राजा कूं उपज्या वैराग । राज भोग कूं चाहै त्याग ॥४१९५॥

मंत्री समझावैं राजनीत । संतति बिना नहीं होय प्रतीत ॥
जब होइ पुत्र तब छंडो राज । पालो प्रजा धर्म सुं काज ॥४१९६॥

राजा कूं लागैं बुरा सब कर्म । अणुं व्रत पालैं जिणवर धर्म ॥
राजभोग में छंडया प्राण । ईसान स्वर्ग पाया सुभ थान ॥४१९७॥

जंबू द्वीप क्षेत्र विदेह । अचल छत्री वालहरनी सूं नेह ॥
रतन संचय नगरी का नांम । ईसान स्वर्ग तैं चया तिह थांन ॥४१९८॥

अभीराम पुत्र जनमीया कुमार । छहुं खंड रहसी या संसार ॥
जनम समये दीया बहु दांन । और बजे आनंद नीसान ॥४१९९॥

दिन दिन कुमर बढै जिम चंद । देख रूप सुख होइ आनंद ॥
जोबन समय बिवाही नारि । राजसुता बरी तीन हजार ॥४२००॥

भोम मांहि बरतैं दिन रयन । कुमर बिचारै मनमें अयन ॥
स्वर्ग लोक सुख देखे घणे । तेभी जात न जाणे गिणे ॥४२०१॥

इह विभूति संसारी जरजरी । मगन हुवा पावै गति बुरी ॥
बैठा पट्ट तिहां रणवास । ग्यांन उदय हुवा परकास ॥४२०२॥

ए सुख समझै जहर समान । जो कोई भखै ताहि जहर समान ॥
विष खाइ एक जु बार । विषय लंपटी भ्रमै संसार ॥४२०३॥

जोबन जात न लागै वार । पडै जीव माया कै आधार ॥
पुण्य पापनैं जाणैं एक । जाके राखै मन में टेक ॥४२०४॥

ऊंच नीच गति डोलै हंस । उत्तम मध्यम पाए हंस ॥
पुण्य उदय पावै बहु सुख । जब बिहडै तब मानैं दुःख॥४२०५॥

रोग सोग चित आरत धरैं । फिरि फिरि जोनी संकट परैं ॥
अब मैं संयम व्रत कूं धरूं । जैन धरम निश्चय सूं करूं ॥४२०६॥

राणी सुणकर भई अडोल । असे सुणे कंत के बोल ॥
पालै व्रत तब राजिकुमार । एक अंतर लेइ अहार ॥४२०७॥

पाख महीनें करै पारणा । मंदिर देखैं जिहां सतधरणा ॥
उभा जोग लगावै ध्यान । देही दुर्बल कीनी जांन ॥४२०८॥

काल अनंत इन्द्रियां ने पोष । भरम्या जीव बिना संतोष ॥
तातैं देह डसौं इस भांति । सहूं परीसा अपना गात ॥४२०९॥

चउसठ सहस्र वर्ष तप किया । ब्रह्मोत्तर स्वर्ग पर बासा लिया ॥
धनदत्त सेठ काल को पाइ । लख चौरासी भरम्या जाइ ॥४२१०॥

पोदनांपुर सकतार्क द्विज । महिणी नारि घर की द्विज ॥
ता घरि अवतरया धनदत्त आइ । जोवन समये कर्म कमाइ ॥४२११॥

जूवा खेलैं सेवैं सात विसन । सातैं विध लेस्या अर किसन ॥
ब्राह्मण नैं सहू को दीये गाल । उनुं जब बेटा दियो निकाल ॥४२१२॥

मूदवत निकल्या देसांतर गया । गुरुसंगत विद्यारथी भया ॥
बसंत नगर मे विद्या पाइ । बहुर पोदनापुर में आइ ॥४२१३॥

ग्रीष्म रित त्रिषा अति लगी । विप्र गेह माता थी सगी ॥
तिहां आइकैं मांगे नीर । महिनी ब्राह्मणी आई तीर ॥४२१४॥

भरि झारी पाया जल ताइ । अवर चला नयनु वरिवाह ॥
तब परदेसी पूछे बयन । तैं क्यों माता भरे जल नैन ॥४२१५॥

कहे बंभणी मेरे था पूत । बाहिर नीकल्या दुःख बहुत ॥
जैं तै देख्या ह्वं तो कही । तो मोकुं समझावो सही ॥४२१६॥

जब वह बोल्या मैं हूं तेरा पूत । अब हूं विद्या पढे बहूत ॥
सकताकं पिता महिरणी माय । मिल्या पुत्र कंठ लगाय ॥४२१७॥

जिहां तिहां आदर होइ । जोतिग वैद्यक पूछे सब कोइ ॥
बहुत दिना सुभमारग चले । अंत फेर खोटे मति गये ॥४२१८॥

सात विसन सेव्या दिन रात । धर्म छांडि कुहावें कुजात ॥
वसंत अंगना बेस्या रित भया । वा संगति सगला गुण गया ॥४२१९॥

मात पिता का खोया दर्व । वाको बुरा कहैं हैं सर्व ॥
लज्यावंत होय देस ही तज्या । ससांक नग्र गया वह भज्या ॥४२२०॥

नदवर्धन रामा के भंडार । चोरी निमित्त गए तिह बार ॥
भूंप मता राणी सूं करें । प्रभात समय हम दिक्ष्या धरें ॥४२२१॥

अंसी चीवर सांभली बात । समझि ग्यांन कंप्या बहु गात ॥
इतनी बिभव राय ने त्याग । मनम्यां धरा बहुत वैराग ॥४२२२॥

मै जन्म्या मात पिता कै जाय । भिक्षा करि करि पोषी काय ॥
खोटे करम कमाये घणे । अब प्रायश्चित कहां लुं गिणे ॥४२२३॥

मदमत्त गया ससांक मुनि पास । दिक्षा लई सुगति की आस ॥
गंग गिर पै परीसै सहै । गुण निधांन मुनिवर तिहां रहै ॥४२२४॥

विद्या पटि समकित चित धरया । गुणनिधान केवल तप फुरया ॥
सुरपति नरपति पूजा करी । देखि विप्र जिन दिक्ष्या धरी ॥४२२५॥

आचिरज भया सबां कै चित्त । कईसीं भयाकैं मन थिति ॥
मास उपवासी ल्यावै ध्यान । ब्रह्मोत्तर पाया सु विमांण ॥४२२६॥

इन्द्र समां इनका प्रताप । सुख मां भूल गए संताप ।।
मदमत देव गए मार्वल पूर । सुख में भया दुःख का मूर ।।४२२७।।

भरत के पूर्व भव

हा हा कार करैं बहू भांति । ए सुख छोडि प्रवै कहां जात ।।
माया मांझि चया लोक मध्य । समेद सिखर थांनक है सिध्य ।।४२२८।।

हाथी उपज्या प्रति मयमंत । सहस्र जूथ मांहै गरजंत ।।
जइसै समुद्र गरजना करै । इह विध मंगल वन में फिरै ।।४२२९।।

जिहां सरवर देखें बहु भले । क्रीडा करै कमल तिहां खिले ।।
गंगातट पर पावै पीर । डरैं सकल देखें इस वीर ।।४२३०।।

महा भयानक दीसै रूप । या सनमुख नहीं प्रावैं भूप ।।
जैसा बादल सजल बडा स्याम । ऐसा दंती सोहै उस ठाम ।।४२३१।।

पर्वत पर चूवैं झरना झरै । भ्रमर गुंजार तिहां प्रति करैं ।।
तब रावण पाया था जिहां । हाथी सब दल मारे तिहां ।।४२३२।।

रावण ने पकड्या उस बार । त्रिलोक मंडल सा नहीं संसार ।।
रामचन्द्र लक्षमण की जीत । रावण झुझ्या हाथी भयभीत ।।४२३३।।

त्रिलोक कंटक त्रिलोक मंडल नाम । प्रइरापति सम इसका भाव ।।
भरथ तणै मन भया वैराग । तब धाए वा सनमुख लाग ।।४२३४।।

जाती समरण उपज्या चित्त । गहै मौन होइ रहै प्रनित्त ।।
प्रभिराम देव स्वर्ग तैं चया । दसरथ के या सुत भया ।।४२३५।।

सोरठा

सुणि पिछला सनबंध, सकल सभा चकित भई ।।
समझे भेद अनंत, पूरव भव सब प्रापणे ।।४२३६।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत त्रिलोक मलंकर भवकीर्त्तनं विधानकं

७९ वां विधानक

चौपई

भरत द्वारा वैराग्य लेना

भये प्रचंभय सगला लोग । रहै थकित जैसे साधै जोग ।।
जाण्या सकल कर्म का बंध । बहुतैं तज्या मोह का फंद ।।४२३७।।

भरत भूपती द्वै कर जोडि । नमस्कार कीया तबै बहोडि ।।
जीव भ्रम्यौं चिरकाल अनंत । हींडत हींडत नहीं पायो अंत ।।४२३८।।

थके बहुत न लहै विसराम । ज्यौ पथिक भ्रमैं गामों गाम ।।
शीतल छांह ढूंढै बन मांहीं । वाको कहीं पाइये नांहि ।।२३९।।

बहुंगति भ्रमत लह्यो नहीं पंथ । सुण्या नहीं जिणवाणी ग्रन्थ ।।
मिथ्या धर्म तैं लहीय न ठोडि । प्रभू बिन सरणा नाहीं और ।।४२४०।।

भवसागर अति अगम अथाह । सद्गुरु पकडैं बूडत बांह ।।
अजर अमर तहां पावै सौख्य । गुरु संगत तैं लहीए मोष्य ।।४२४०।।

आभूषण सब दीने डार । कुंडल सोभैं जोति अपार ।।
सहु उतारि कर लुंचे केस । मुनिवर भए दिगंबर भेस ।।४२४२।।

राजा सहस्र दीक्ष्या लई संग । केकई नयन बहैं जिम गंग ।।

केकयी का विलाप

हाइ पुत्र तैं कीनी बुरी । मेरी दया हूं हिय नहीं धरी ।।४२४३।।

जोबन समें तजे भरतार । पुत्र लिया संयम का भार ।।
ए दुःख मैं कैसे करि सहूं । पुत्र बिना हूं कैसे रहूं ।।४२४४।।

मूर्च्छावंत भई कैकईया । वैद्य उपाव घणा ही किया ।।
भई सचेत बहुरि बिललाइ । रामलखण बोले समझाय ।।४२४५।।

माता मति करो तुम विलाप । हम सेवा तुम करिहैं आप ।।
भरथ जु कुल उधारण भए । सुभट बरत जिण रुचिसौं लए ।।४२४६।।

केकयी का वैराग

पहले ही मन था वैराग । अब इन करथा सकल ही त्याग ।।
केकईया मन आण्यौं ग्यांन । धरम विचार किया सुभ ध्यान ।।४२४७।।

प्रथीमती आरजिका कैं पास । दिक्ष्या लही मुकति की आस ।।
तीन सै संग अनि असतरी । सत्य सील संयम सुं भरी ।।४२४८।।

आतम ध्यांन लगाया जोग । छंडया सब संसारी भोग ।।
दया भाव सबलां पर नित्य । समकित सुं भया निश्चल चित्त ।।४२४९।।

दूहा

धरयो ध्यान भगवंत सुं, आतम सुं धरि प्रीत ।।
भरथ भूप ही बहुबली, करी धरम की रीत ।।४२५०।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत केकइय निःक्रमण विधानकं
८० वां विधानक

चौपई

श्रेणिक राय करै प्रसन्न । कौण कौंण संगति हुवा मौन ॥
कैसी कैसी पाई ठाम । तिणका व्यवर सुणावो नाम ॥४२५१॥

वाणी एक तसु भेद अनेक । प्राणी करै व्याख्यान अनेक ॥
सिद्धार्थ रतनवरघन राय । अंबुवाहन जंबुनद धरि भाव ॥४२५२॥

सुसीमा नन्द आनदकंद । सुमति महा विधि सेती चंद ॥
जनवल्लभ इंद्रध्वज सतवाहन । हरि सुमित्र धर्म बलवांन ॥४२५३॥

संपूरन नंद सुदन सांत । सहम स्वेतांबर भये इह भांत ॥
केई गये पंचमी गति । केई स्वर्ग लोक की थिति ॥४२५४॥

रामचन्द्र लक्ष्मण द्वारा दुःख प्रकट करना

रामचंद्र लखमण बिललाइ । भरत बिना कछु चित्त न सुहाइ ॥
हा हा कार भए चिहुंओर । आभूषण सब डारे तोडि ॥४२५५॥

रुदन करै फाडैं सब चीर । रुदन करै वहु चलै जल नीर ॥
हाय भरथ हम आए क्यूं । हम भी तो संग दिक्ष्या ल्यूं ॥४२५६॥

तुम बिन कैसे जीवैं बीर । तुम विछुडे बहु पावैं पीर ॥
तब मंत्री समझावैं बैंन । सुणौं बात चित राखो चैंन ॥४२५७॥

भरथ ने कीये उत्तम कर्म । रघुबंसी कुल उपज्या धर्म ॥
सव परिवार चढाई रती । आप करी मुकती की गती ॥४३५८॥

राम का राज्याभिषेक

करो राज अब ढालो कलस । परजा सुख पावैं ज्युं सरस ॥
राम करै राज का काज । लक्षमण राज करो महाराज ॥४२५९॥

सब नरपति लक्षमण पैं गये । नमसकार करि गढे भए ॥
प्रभुजी चलो करो तुम राज । पटाभिषेक करो तुम आजि ॥४२६०॥

लक्षमण चले सभा संयुक्त । बाजंतर बाजैंया बहुत ॥
आए रामचन्द्र के पास । दोऊ भ्राता मन उल्लास ॥४२६१॥

पट ऊपर बैठे दोउ वीर । रतन कनक कलस भरि नीर ॥
ढारे कलस एक सो आठ । पदम नरायण राज का पाट ॥४२६२॥

मुकुट छत्र पुहपन की माल । सोभै मुगताह अनै लाल ।।
आभूषण पहैरैंण अनूप । तीन खंड का सेवैं भूप ।।४२६३।।
जै जै सबद करैं सब लोग । करैं कोतुहल अरि अति भोग ।।
सकल नारि सीता पैं गई । पट सौठाणि बधाई दई ।।४२६४।।
विसल्या कूं पटराणी किया । किंषधपुर सुग्रीव ने लिया ।।
अनि नगर नल नील कुं दिया अवर राजा मांगै सोइ दिया ।।४२६५।।
लक्षमण बिशल्या राम कैं सिवा । इनसौं बडी अवर न को तिया ।।
करैं राज इम भ्राता दोइ । नगर में हर्ष मानैं सब कोइ ।।४२६६।।
लंका राज विभीषण दिया । कंकणपुर सुग्रीव ने लिया ।।
श्रीपुर नगर दिया हनुमान । किंनर नगर रतनजटी मान ।।४२६७।।
भावमंडल रथनूपुर देस । भौमी अपनी लही दरेस ।।
जेते राजा थे उन पास । त्यां त्यां की सब पुंगी आस ।।४२६८।।

दूहा

असुभ करम को टाल करि, मिले कुटुंब सरेस ।।
मनबंछित सब सुख भए, पाया बहुला देस ।।४२६९।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र लक्षमण पट्टाभिषेक विधानकं

८१ वां विधानक

चौपई

शत्रुघन को राज देने की इच्छा

राम शत्रुधन लिये बुलाइ । कहैं वचन प्रभुजी समझाइ ।।
अरध राज प्रथवी का लेहु । देस भोग मनुष्य करेहु ।।४२७०।।
आनि देस के वंछउ दरेस । तिहां तिहां थाप कऊं महेस ।।
आणई मनमें करो विचार । जे मांगो ज के द्यूं इणबार ।।४२७१।।

दूहा

पोदनांपुर राजग्रही, पुरपट्टण बहु ठांम ।।
जो मन इच्छो सत्रुघन, कहो तिहां का नाम ।।४२७२।।

चौपई

सत्रुघन द्वारा मथुरा का राज्य चाहना

दूं कर जोड़ि सत्रुघन कहै । मथुरा नगर मेरे मन रहै ।।
रामचंद्र कहते तिह बार । मथुरापति का है बल अपार ।।४२७३।।

रावण तणीं जमाई वली । वापै बरछी कहिए भली ॥
एक चउट सूं हणैं सहस्र । अनि भले हैं वापै सस्त्र ॥४२७४॥

बरछी कर की करमें रहै । ऐसे गुण बरब तन गहै ॥
तुम वासों मति मांडो युद्ध । अवर देस मांगो तुम सुध ॥४२७५॥

सत्रुघन कहई सुनों रघुनाथ । कोई मति आवो मो साथ ॥
मेरी भुजा आवध समांन । दशरथ पुत्र महा बलवांन ॥४२७६॥

जो तीडी दल अति संघट्ट । गरुड चलै सब जाई अहट्ट ॥
असा दल बल वाकैं जुडया । माकं घेर वाहि ठां खरा ॥४२७७॥

रामचद्र मनमें बहु दिया । मधुराय विगार नहु कीया ॥
बिन अवगुन कैसे दुख देह । सबसों राखै धरम सनेह ॥४२७८॥

सत्रुघन सुन बीनती करै । आग्या प्रभु इन मन नही धरै ॥
असा मधु है कहां वरांक । जाकी मानु इतनी धाक ॥४२७९॥

जैसे मधु बडा सहेत । वार न लागै उसको गहेत ॥
घेर लेउं इस विधि तुरंत । तो मैं सत्रुघन महंत ॥४२८०॥

राम लक्षमण इह आग्या दई । सेनां साथ घनी कर लई ॥
समुद्रावर्त्त धनुप को लिया । वाजंतर सबद बहु किया ॥४२८१॥

माता सुप्रभा पै गया । नमस्कार करि ठाढा भया ॥
आग्या द्यो माता जी मोहि । जीतुं दुर्जन पाउं सोइ ॥४२८२॥

माता दीये आसिरवाद । होज्यो जीत भगवंत प्रसाद ॥

शत्रुघन द्वारा मथुरा पर चढाई

चले सत्रुघन सेना जोडि । पहुंचे आय मथुरा की ठोर ॥४२८३॥

चहुधां घेरि दमामा दिया । जईसैं पंछी पिंजरा किया ॥
इह विध घेरी च्यारूं ओर । सहु नगरी मां मांची रोर ॥४२८४॥

मधुराजा सोचै मन मांहि । मो सम बली अवर कोउ नांहि ॥
घेरया मोहि सत्रुघन आइ । मंत्री मंत्र करै उन पाय ॥४२८५॥

अचाणक घेरे मधुराई । करई विचार वईठतण ठाई ॥
जै उमडे दल मथुरा घणी । या कूं सजा लगावैं घणी ॥४२८६॥

कोई कहै रावण सा बली । रांमचन्द्र सों कछु ना चली ॥
रावण मारि जीते सहु देस । इन समान कोई नहीं नरेस ॥४२८७॥

रामचन्द्र का छोटा वीर । याकौं कौण सके करि धीर ।।
जे सुख फेरि रामचन्द्र चढैं । एक एक का मुंड बहु उडे ।।४२८८।।

के ते लकरें अपनें बार । जल नवका महा गुंण सार ।।
जीतैं सत्रुघन के हार । असी उनूं कहीं गवार ।।४२८९।।

सत्रुघन भेजिया बसीठ । ठाम ठाम दोडिया वीठ ।।
दूत गए वे नगर मझार । जिहां सहर मथुरा का दरबार ।।४२९०।।

सत्रुघन पै आए दूत । पूछै नरपति भेद बहुत ।।
कुबेरछंद वन पूरव और । मधु भूपति अब है वा ठौर ।।४२९१।।

क्रीडा करत बीतै दिन षष्ठ । वे सुख देखि भूले कष्ठ ।।
अंसा मैं घेरा वा ठांव । अवसर चूका बणैं न दाव ।।४२९२।।

सत्रुघन धाया तोडि किवाड । वन वेहड घेरया सब बाट ।।
तोडि बंध बेडी दई खोलि । दे असीस बोले सहु बोल ।।४२९३।।

तेरी जीत करै जगदीस । सब मिल प्राणि नमावै सीस ।।
अर्ध रात्र घेरया सहु देस । कोटि ढाहि कीया परवेस ।।४२९४।।

राजा मधु की भई संभार । बरछी रही मेहे मझार ।।
सोची राजा मरण आपनै । धीरज भी छोडया नहीं वणैं ।।४२९५।।

सेना मधु साथै जब जुरी । दोउयां मार बाण की पडी ।।
गोला गोली बरषै ज्युं मेह । घाव लगै सुभट की देह ।।४२९६।।

दूहा

हाथी सूं हाथी लरैं, रथ घोडे पाइक्क ।।
मुंह फेरैं नहीं सूरमा, पाछां हटै नहीं मग्ग ।।४२९७।।

पडी लोथ परवत जिसीं, बाजै लाल सुरंग ।।
कायर भाजै देख रण, हींसै खडे तुरंग ।।४२९८।।

लौनांरण मधु सुत बली, धस्या मृगराज समान ।।
धनुष गह्या कर आपणैं, सत्रुघन मारया तान ।।४२९९।।

मल्लयुद्ध

गिरया सत्रुघन रथ थकी, दूजा रथै संभार ।।
मारी गदा कुमार कैं, रथ टूटया तिण वार ।।४३००।।

फिर संभाल दोन्यू लडैं, अंसे लडैं जु मल्ल ।।
कोई हार न मानई, जोवन वंत अटल्ल ।।४३०१।।

लीना रण विद्या बान गहि, तोडे धुजा का दंड ।।
सत्रुघन खडग संभाल करि, लिए प्रांन जब छुंड ।।४३०२।।

चौपई

झुझा कुमार मधु सुंदर तणा । पुत्र मोह तब व्याप्या घणां ।।
चढे कोप सनमुख ए आइ । सत्रुघन बोलिया रिसाइ ।।४३०३।।

मधु राजा जो तेरा नाम । करो वेग तुम सनमुख काम ।।
तो मैं बल है तो तुं आव । जममंदिर तोहि भेजों राव ।।४३०४।।

दोनों दल में माची रार । कायर सबहुं पडे पुकार ।।
विद्याबांन सुं छाया भानु । असे जुध महा भयवान ।।४३०५।।

महासुभट झुझे पडि ध्यार । कातर भाज गये तिणवार ।।
मधु सूदन सोचै मन मांहि । सत छंडया पति रहनी नांहि ।।४३०६।।

एक दिन मरणा सही निदांन । काल रहै नहीं किस ही सयांन ।।
तातैं सनमुख झुझां जाई । कोप्या भूप सांभटी आई ।।४३०७।।

गदा खडग करि गहे संभार । वांन छुटै ज्यौं घनहर धार ।।

मधु राजा द्वारा युद्ध भूमि में वैराग्य

सत्रुघन मारी तरवार । मधुराजा धूमैं तिह बार ।।४३०८।।

आतमध्यान सु हिये विचार । भरमत फिरया जीव संसार ।।
समकित कबहि न आया चित्त । मिथ्या मोह भ्रम्या चहुं गति ।।४३०९।।

मनुष्य जनम धरि धर्म न किया । जनम अकारथ खोइ कर गया ।।
पुत्र कलित्र हय गय भंडार । इणमें यूं ही राच्या निरधार ।।४३१०।।

अष्ट मदों में माता फिरया । सात विसन सूं परचा करया ।।
संजम व्रत सूं करया न नेह । विष अभिलाष सुं पोषी देह ।।४३११।।

अचानक मरण भए है आज । अब कैसे होइ जीव का काज ।।
अन्न पान तजि लियो संन्यास । राज भोग की छोडी आस ।।४३१२।।

आरत रौद्र राग अर्नं द्वेष । धरम ध्यान मन मैं करि पेष ।।
उत्तम छिमा दसौं विध धर्म । दया भाव का जाण्यां मर्म ।।४३१३।।

कायोत्सर्ग धरयो न जोग । आभूषण अरणैं छोडे संजोग ।।
सत्रुघन आदि सकल भूपती । ऊभा देख्या मधुसूदन जती ।।४३१४।।

हस्ती सूं उतरा तिह घडी । नमस्कार बहु स्तुति करी ॥
जै जै सबद करैं सुर आइ । बरषैं पुहप तहां मुनिराय ॥४३१५॥

देही छोडि गये सनत्कुमार । भया देव मधुवतनीवार ॥
मथुरा के पट सत्रुघन बैठि । पूजा दान जिन मंदिर पैठि ॥४३१६॥

नगर लोग भए सब सुखी । तिहां न दीसैं कोउ दुखी ॥४३१७॥

दूहा

मधुसूदन भूपति बली, धरघा धरम दिढ चित्त ॥
संयम का परसाद तैं, भई स्वर्ग मां थित्त ॥४३१८॥

इति श्री पद्मपुराणे मधुसूदन विधानकं
८२ वां विधानक
चौपई

सत्रुघन राज मथुरा का करै । सहु पिरजा सुखस्यों दिन टरै ॥
बिद्या सूल देव की संगि । उडि गई देव के आनैं भाग ॥४३१९॥

सत्रुघन राज मथुरा का करै । सहू परिजा सुखस्यौं दिन टरैं ॥
सुर के आगै करैं बखांन । सत्रुघन हरे मधुसुदन प्राण ॥४३२०॥

राज लए मथुरा का छीन । वा आगैं मो गुन भए हीन ॥

मधु राजा के मित्रों द्वारा आक्रमण

सुण्यां देव मित्र मोहनां । वा समय मित्र कोप्या घनां ॥४३२१॥

ऐसा कहा मानुष्य बलवंत । जिनें मारघा मेरघा मित्त ॥
तल की धरती ऊपर उलट । लेस्युं बैंर मित्र का पलट ॥४३२२॥

ह्वां तैं चित गया पाताल । व्यंतर देव बुलाए तिह काल ॥
सेन्यां जोडि चल्या तब देव । धरणेन्द्र नें पूछया तब भेव ॥४३२३॥

कहो चमर सुर अपनी बात । सेना जोडि कहां तुम जात ॥
चमर इन्द्र कहे समझाइ । मेरा मित्र मारघा सत्रुघन राइ ॥
बैंर लेण चाल्या इण घरी । वा निमित्त ए सेना जुडी ॥४३२४॥

धरणेन्द्र द्वारा समझाना

सुंणि वचन बोलया धरणेन्द्र । सत्रुघन लछमण रामचन्द्र ॥
तीनं लोक के हैं जगदीस । इनसैं कुंण करि सकै है रीस ॥४३२५॥

हम रावण कुं दीये वांण । सगती उन आगे भई असगति ॥
लछमण तणी विसल्या नारि । वा आगें सब मानें हार ॥४३२६॥

उसका गंधउदक लावैं कोइ । सब की विद्या निर्फल होइ ॥
दोन्यू देव व्यंतरी और । वाहि देखि भाजी घर छोडि ॥४३२७॥

वाकै अंग पवन लगि चलै । सब निरोगी होइ पवन में मिलैं ॥
हमारी विद्या वासूं भई छीण । वे हैं महाबली परवीण ॥४३२८॥

जइ कउपसैं राम लछमण । बांधैं मोहि करैं बेजतन ॥
तैं मन मांहि विचारी बुरी । असी जीव में इच्छा धरी ॥४३२९॥

तब सूर बोले मैं हों देव । कहा मानुष जा का करै भेव ॥
बांधु सागर अति गंभीर । सत्रुघन कहा असा बलवीर ॥४३३०॥

मध्य लोग में ल्याया सेन । विचारैं देव धरणेंन्द्र के बैन ॥
भूमिगोचरी हैं बलवांन । या की परजा मांनै आंण ॥४३३१॥

परजा नै ऊपर नहीं किया । सब ही का फूटा हिया ॥

प्रजा को दुख देना

पहली दुःख प्रजा कुं द्युं । मधुसुदन का बैर हूं ल्यूं ॥४३३२॥

जुरि ताप पीडा फैलाइ । उछलै कउवा जम आगैं बिललाइ ॥
मरैं लोग मिट गया भोग । व्याप्या दुणा सोग विजोग ॥४३३३॥

सत्रुघन करै बहुत उपाव । कछुवन चलै काल सौं दाव ॥
छोडि नगर अजोध्या गया । भाई मिले महा सुख भया ॥४३३४॥

सुप्रभा माता कै सनमुख । पुत्र विछोहा मिल्या भूले दुख ॥
श्रीजिन भुवन इक समराइया । करी सांतक दान बहु दिया ॥४३३५॥

मनवांछित दान भला सनमांन । बजै तिहां आनंद निसांन ॥
सुणी जीत घरि घरि आनंद । सत्रुघन के मनमे दुखदुंद ॥४३३६॥

में मथुरा पाई थी भली । कवण करम तैं मोहि न मिली ॥
संपति मिल कर होय बिछोह । जाका हुवै घणा अंदोह ॥४३३७॥

घर अंगणै न सुहावै ताहि । रात दिवस मथुरा की दाह ॥
मथुरा नगरी उत्तम खेत । इसकुं बंछैं सुर करि हेत ॥४३३८॥

इन्द्रपुरी तैं मथुरा सुभ ठौर । वा पटतर नगरी नहीं और ॥
पुनि तैं लहीए असा थांन । मथुरा इन्द्र के लोक समांन ॥४३३९॥

दूहा

मथुरा नगर सुहावनां, असा अन्य न कोइ ।।
जिनां बहु पूरब पुंण्य कीए, ताहि परापति होइ ।।४३४०।।

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग विधानकं

८३ वां विधानक

चोपई

श्रेणिक राय करैं प्रसन्न । मथुरा सूं बहु त्यागा मन ।।
नगर अन्य बडे हैं अनेक । सत्रुघन किरिया क्यों अति टेक ।।४३४१।।

इतरा किम राखै वह सनेह । कहो प्रभु मो भाजे संदेह ।।
श्री जिनराय पिछला भव कहें । काहू मन संसा नहीं रहै ।।४३४२।।

मथुरा में जनमें देवकुमार । गदहा लादै मांटी भार ।।
काल पाय याछउ करा । लागी अगनि तिहां जल मरया ।।४३४३।।

उहां तैं मरि भैंसा अवतरया । वहै बारमैं महिष पद धरया ।।
सातवें भव विप्र कैं गेह । कुलधर नाम उत्तम गति देह ।।४३४४।।

अरिचा चरिचा संगत साध । कीया घणी सील विण वाद ।।
असकति राजा मथुरा धणी । ललिता राणी स्यौं जोडी बणी ।।४३४५।।

राजा गये साधने देस । ब्राह्मण खोलैं नंदी केस ।।
राणी देखै झरोखा द्वार । बांभण देख्या रूप अपार ।।४३४६।।

टेर लीया ऊपरि बडि बोर । भोगे मनमांनी तिह ठोर ।।
घणां दिवस बीता इस भांति । मंदिर पैं आया नृप राति ।।४३४७।।

रांणी प्रछन राख्यो द्विज । राय लख्यो मनमें अचिरज ।।
कहो राणी इह नर है कौंण । किस विध आया मेरे भौंन ।।४३४८।।

राणी त्रिया चरित्र विचार । राजा सौं कहै तिण बार ।।
इह भाज्या था बंदीवान । आइ घुस्या मंदिर कैं थांन ।।४३४९।।

याके पीछै दौडे सुभट । इतनी कांण मुं रहे अटूट ।।
इह बोल्या जे छूंटू आजि । तो दीक्षित होउं मुनिराज ।।४३५०।।

मैं या प्रति छिपाया राज । छोडो याहि दिष्या ले जाय ।।
भूपति सुणि कीयो नमस्कार । छोडे विप्र उसही बार ।।४३५१।।

वैराग्य भावना

विप्र के मनमें आयो सांच । अब हूं जीतूं इन्द्रीं पांच ।।
इन्द्रिय विषय किये बहु स्वाद । संयम बिना जनम गयो बाद ।।४३५२।।

तृष्णा लोभ कदे घाटै नांहि । भरमत फिरया चिहुं गति मांहि ।।
साध नाम सु उबरे प्रांन । करू तपस्या आतम ध्यान ।।४३५३।।

कल्यांण मुनीसुर के ढिग गया । केस उतारि मुनीस्वर भया ।।
सहै परीसा बीस अनै दोइ । तप प्रसाद ऊंची गति होइ ।।४३५४।।

स्वर्ग तीसरे रतन विमान । करै भोग तिहां सुख निधान ।।
मथुरा पति तिहां चन्द्राभद्र । सुधा राणी महा विचित्र ।।४३५५।।

सूरज अबद राणी का भ्रात । मउखांत पुत्र भए आठ ।।
कनक प्रभा रांणी दूसरी । रूप लच्छन गुण लावन्य भरी ।।४३५६।।

कुलधर का जीव आए ता कुंख । जन्म्या पुत्र भए घन सुख ।।
रूपवंत रवि जेम प्रताप । रहसे दोनूं माय अने बाप ।।४३५७।

जनम समै दीया बहु दांन । सब ही का राख्या सनमान ।।
दिन दिन कुंवर बढै पल घडी । देखत नयन रली अति खरी ।।४३५८।।

सावथी नगरी का नाव । कल्पद्विज बसै तिह ठाव ।।
अंगक त्रिया विप्र कै गेह । दंपति करै सदा सुख सनेह ।।४३५९।।

अचल पुत्र ताकै गरभ भया । जोवनवंत सोभै बहु कया ।।
मूख मांहि सुत दीना काढि । तिलक वन माहि विप्रसुत ताढि ।।४३६०।।

अचलकुंवर के आठो वीर । तीनूं मामा के मन पीर ।।
इह तो एक ही दीसै बलवंत । निसचै राज लहैंगा अंत ।।४३६१।।

इसके चाहै हण्यां परांन । कनक प्रभा सुणी इह कांन ।।
अचल पुत्र वइरी के साथ । मारया चाहै पुत्र अनाथ ।।४३६२।।

जाहि पुत्र देसांतर लेह । करो जाइ काहू की सेव ।।
दुरजन के संग फिरणां बुरा । तोहि उपदेस दिया मैं खरा ।।४३६३।।

इतनी सुणत भाजिया कुमार । वन में रुदन करै हा हा कार ।।
माप सोच करैं द्विज तिहां घणी । कै कोई देव कै पंडित गुणी ।।४३६४।।

कैं भूपति कै बगपति राय । पूछै कुमर विप्र जू आय ।।
कहो कुमर तूं अपणा नाम । किह कारण आए इस ठाम ।।४३६५।।

बोलै बचन तब अचलकुमार । मोकूं वन में दिया निकाल ।।
ता कारण रुदन करूं वन मांझ । कैसी बितई इण ठां सांझ ।।४३६६।।

करै विप्र बात इंह भाई । कोसंबी नगरी इंद्रदत्त राई ।।
मनोग कला वाके पटधणी । इन्द्रदत्ता पुत्री बहु गुणी ।।४३६७।।
विद्या गुंण अति ही प्रवीण । और सकल जाइगां नहीं हीण ।।
जो वाहि जीतैं ताहि वा बरै । नमंती कह्या अचल बसि करै।।४३६८।।
विसाख पंडित राजा कै द्वार । विद्या सीखैं राजकुमार ।।
अचल है राव पंडित बसक । राजकुमारी जीती असिक ।।४३६९।।
सुख मैं दिन कछु बीते ताहि । अचल हुवा तिहां नर नांह ।।
आस पास जीते सब देस । मथुरा आइ कियो परवेस ।।४३७०।।
वाजंतर चंद्रभद्र ने सुणे । सब सामंत अगाऊ बणे ।।
राजा सुणी पुत्र की सुध । भए आनंद बिचारी बुध ।।४३७१।।
चंद्रभद्र दिगम्बर भया । मथुरा राज अचल कूं दिया ।।
आठौं भाई मामा तीन । ए सब जाइ भये आधीन ।।४३७२।।
आप वांभण आवी तब द्वार । पोल्या अटक करै तिह वार ।।
राज सभा में नाचैं नट । विप्र सौं करै पौजियां हठ ।।४३७३।।
राजा दृष्टि वांभण पर पडी । आयो बुलावो वाही घडी ।।
आभूषण नीकां पहराइ । आप बराबरि राखै राय ।।४३७४।।
हय गय बिभव दीने बहुदेस । बहुतमया नित करै नरेस ।।
सुखसौं राज बहु अनें किया । सावथी नगर विप्रकूं दिया ।।४३७५।।
जय समुद्र मुनिवर पै गये । सांभलि धरम दिगंबर भये ।।
तेरह विध सौं चारित धरया । दया अंग दस विध तप करया ।।४३४६।।
आतम चित्त लगाया ध्यान । महेन्द्र स्वर्ग पाइया विमांन ।।
चउथं स्वर्ग देवता भए । पूरण आव तिहां तै चए ।।४३७७।।
अचल जीव सत्रुघन जान । आप कृतांत वक्र भया आन ।।
सेनापति सत्रुघन बली । जानैं धरम करम की गली ।।४३७८।।
कंई जनम मथुरा में पाए । मथुरा कूं चाहैं इह भाइ ।।
पुण्यवंत पूरव तप किया । ऊंची गति बहुतैं भव लिया ।।४३७९।।

सोरठा

पूरब भव का नेह, तातैं मोह किया घणां ।।
रूपवंत बल देह, फेर राज मथुरा वण्यां ।।४३८०।।

इति श्री पद्मपुराणे सत्रुघन पूर्व भव विधानकं
८४ वां विधानक

चौपई

मथुरा में सात मुनियों का आगमन

मथुरा आए मुनिवर सात । चारण मुनि ग्यानी विख्यात ।।
सुरमन श्रीमन श्रीनव जांणि । सरव सुंदर जोवानव आंणि ।।४३८१।।

विनयलाल अवर जयमित्र । अष्ट करम जीते उन सत्रु ।।
श्रीनंदा राणी सुंदरी । जाकै पुत्र भए सुभ घडी ।।४३८२।।

प्रीतंकर मुनि केवलज्ञान । जै जै करै देवता आन ।।
श्रीनंदराज धरम कुं सुण्या । पुत्र सहित दिगम्बर बन्या ।।४३८३।।

रय देह पुत्र बालक मास एक । थापे राज काज की टेक ।।
श्री नंदमुनि केवली भया । धरम प्रकास मुकति कौं गया ।।४३८४।।

ऐसा तुं तप करैइ बहुत । सहै परिस्या बहु रुत ।।
इनकौ उपजी चारण रिध । पोदनापुर गये वै सातुं सिध ४३८५।।

ह्वां ते आये अजोध्या देस । अरहदत्त देखे मुनि भेस ।।
देखै सेठ मन करै विचार । रति चउमासै किया विहार ।।४३८६।।

ए काहे का है ए मुनी । चउमासा मांडि चलै दुंनी ।।
वे मुनिसोव्रत जिन भौन । दरसन हेत किये थे गोन ।।४३८७।।

पंडित नई देखै चारण जती । आदर भाव किये बहु भंती ।।
अष्टांग मना सेठ अरहदत्त । सुंणो मुंनीसर थकत ।।४३८८।।

असे साध आए मो गेह । मैं उनसौं कीया न सनेह ।।
अपणी निंदा बहुतें करी । मेरे मनकूं आई बुरी ।।४३८९।।

कठिन पाप आपकौं किया । गदगद बोलै उमडै हिया ।।
वे मुनिवर थे चारण जती । हिंसा करम न लागै रती ।।४३९०।।

धरती तैं अधर रहैं चरण । दरसन कीया ह्वं दुख हरण ।।
मैं साधां की निंदा करी । मोहि कुछ न भई सुध तिह घडी ।।४३९१।।

पर निंदा है पाप का मूल । उपजी कुमति गई सुध भूल ।।
अण जाण्यां नर करैं जे पाप । मनकूं समझि करैं पश्चाताप ।।४३९२।।

पाप छोड करै उपवास । तुटै पाप पुन्य की आस ।।
जहां साध सोइ उत्तम ठाम । उनकूं देख धरै मन भांम ।।४३९३।।

मेरे घर तई मुनिवर फिरैं । आदर भाव सभी वीसरैं ।।
दानांतराय भई कुबुधि । तत्त्व रूप की करी न सुध ।।४३९४।।

दूहा

कोटि मिथ्याती दान दे, एक संजमी न समांन ।।
अणुव्रती ताथैं बडा, महाव्रती परमांन ।।४३९५।।

तीर्थंकर सम को नहीं, जा घर लेई आहार ।।
धन्य भाग उस जीव का. सब ही करैं मनुहार ।।४३९६।।

चौपई

इस विध च्यार मास पिछताई । करैं पाप खयऊ समझाई ।।
दान देण की इच्छा नित्त । धरमध्यान सौं एकै चित्त ।।४३९७।।

कातिग सुदि सातैं सुभवार । मुनिवर आये बनह मझार ।।
छह रुति के फल फूले घणे । भरे सरोवर निर्मल भरे ।।४३९८।।

अरहदत्त मुणि आया जिहां । बहुत लोग संग पहूंचे तिहां ।।
अस्वगयंद का नांही वोर । करैं महोछव जै जै सोर ।।४३९९।।

रामचंद्र लक्षमण सत्रुघन । भये आनंद सबन कै मन ।।
दरसन कूं आए तिण बार । नमस्कार करैं बारंबार ।।४४००।।

स्वामी हम परि कीपा करो । भोजन लेइ पुंन्य विस्तरो ।।

आहार विधि

मुनिवर बोले सुनो नरेस । जती न कहै भोजन उपदेस ।।४४०१।।

जे मुनि अपनी भोजन कहैं । पाप खोट अपने सिर गहैं ।।
मुनिवर उठैं आहार निमित्त । फासु भोजन लेय तुरंत ।।४४०२।।

छह रस का समझैं नहीं स्वाद । ऊंच नीच देखैं रह प्रसाद ।।
कर पात्र करि भोजन लेह । फिरि जोग बन ही मैं धरेह ।।४४०३।।

घरि घरि लोग नित करैं रसोइ । द्वारापेषण ठाढा होइ ।।
सत्रुघन पूछै जोडे हाथ । कहो धर्म मोसुं मुनिनाथ ।।४४०४।।

धरम जिनेस्वर कब लौं चलै । आगम कहौ सुणो हम भलें ।।

पंचम काल का प्रभाव

कहै मुणीस्वर सुणी नरींद । पंचम काल उपजैं न जिणंद ।।४४०५।।

अतिसय की होवैगी हांण । देव सहाइ होसी नहीं आंण ॥
उतम जन सेवई मिथ्यात । कुगुरु कुदेव की मानैं जात ॥४४०६॥

उतम कुल न करैंगा राज । नीच लोग भुगतैंगे राज ॥
जैंन धर्म की होवैगी हांण । मन वच काय सुनैं न बखांण ॥४४०७॥

माया धारी ह्वैंगा जती । ते पावैंगा खोटी मती ॥
श्रावक होइगे निंदक धर्म । देव सास्त्र गुरु लहे न मर्म ॥४४०८॥

खोटा मत पोखैंगे घणों । मिथ्यावेद निसचैं सों सुणैं ॥
पुत्र पिता में होइ विरोध । भाई भाई करि करैंगे क्रोध ॥४४०९॥

एक भूखा एक भुगतैं सुख । कोई न पूछैं दुखिया दुःख ॥
जई भाई कूं देइ उधार । दुरजन होइ लहैं तिन बार ॥४४१०॥

क्रोध कषायी होइ हैं मुनी । श्रावग सेवा न करि हैं घनी ॥
जैंन धर्म की होवै विछत्त । मिथ्यादृष्टी श्रावक चित्त ॥४४११॥

कुगुरु कुदेव की महिमा होइ । खोटा वेद सुणैं सब कोइ ॥
बहोत लोग होइंगा दुखी । को को होइ है सुखी ॥४४१२॥

सत्रुघन बोलै सुणों मुनीन्द्र । तुम कृपा तैं होई आनन्द ॥
तुम से साधक आवैं मो गेह । करया क्रितारथ मिटै संदेह ॥४४१३॥

आशीर्वाद

सप्त मुनिस्वर बोलै वैन । मथुरा राज करौ सुख चैन ॥
घर घर पूजो प्रतिमा भगवंत । चैत्यालय कीज्यो बहुभंत ॥४४१४॥

पूजा अरिचा सूं मन ल्याइ । दुख संताप सब जाइ विलाय ॥
मुनिवर गए अउर ही थांन । नरपति आए अपणे जांन ॥४४१५॥

रामचन्द्र की आगन्या पाइ । मथुरा चले सत्रुघन राइ ॥
मुनि थांनक वंदे मुनिराइ । रामचन्द्र कै पहुंचे आंन ॥४४१६॥

द्वारा पेषण कीए नरेस । चरणोदक लाए सुभ पेय ॥
विनयवंत होइ दीए दांन । उत्तम भोजन करि सनमांन ॥४४१७॥

अक्षय दान मुनि बोले बोल । घरि घरि बरषे रतन अमोल ॥
सत्रुघन मथुरा पहुंच्या वली । सकल प्रजा अति मानी रली ॥४४१८॥

जिनवर भुवन किया उच्चंत । पंडित सेव करैं बहुभंत ॥
वेद सास्त्र होवै दिन राति । सुणै लोग सुख मानैं गात ॥४४१९॥

घरि घरि पूजैं प्रतिमा लोग । रोग कष्ट भागियो वियोग ।।
सप्त रिष प्रतिमा चिहुं ओर । काहू कौं नहीं लागै खोडि ।।४४२०।।

नव जोजन मथुरा लंबाइ । जोजन तीन बसै चौडाइ ।।
सर्व सुखि कोई नहीं हीए । पंडित सुघड असै परवीण ।।४४२१।।

स्वर्गपुरी तैं मथुरा भली । महा सुगंध विराजै गली ।।
राजा राज विचारैं नीत । सर्व सु रासैं उत्तम प्रीत ।।४४२२।।

इन्द्र समान सत्रुघन राइ । बहुले भूपति सेवैं पाइ ।।
जिसका है रवि जेम प्रताप । भाजि गए सब दुख संताप ।।४४२३।।

दोहा

मथुरा नगर सुहावना, देवलोक समवास ।।
सर्व सुखी निवसैं तिहां, मांनैं भोग विलास ।।४४२४।।

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग निवारण विधानकं

८५ वां विधानक

चौपई

दक्षिण श्रेणी विजयारध मेर । रत्नपुर नगर बसै बहू फेर ।।
रतन भ्रमफंदन खेचर भूप । पूरणांतन राणी सु सुरूप ।।४४२५।।

मनोरमा पुत्री ता गेह । रूपवंत कंचन सी देह ।।
हरिमन पुत्र भये बलवंत । सेवा करैं बहुत सावंत ।।४४२६।।

कन्या जोवनवंती भई । नरपति सोच विचारैं मही ।।
मंत्रीयां सेती बोलै वयन । ढूंढो नरपति देखो नयन ।।४४२७।।

उत्तम कुल लक्षण संजुक्त । कन्यां तें होइ गुण बहुत ।।
मूरिख पंडित देखि विचार । उत्तम कुल जो होइ कुमार ।।४४२८।।

अति पंडित बैरागी होइ । दिष्या लेई उहैं वेगी सोय ।।
महामूरिख होइ दु:ख की खांन । कारज करैं जांण पिछांण ।।४४२९।।

देस देस कूं भेजा दूत । नारिद रिष तिहां आइ पहूंत ।।
सब मिल उठि चर्ण कूं नए । दरसण कीया कृतारथ भए ।।४४३०।।

कष्ट नम्र किया था गौन । भाखो बात तजो मुख मौन ।।
बोलै नारद सुणों नरेस । देखे पुर पट्टण बहु देस ।।४४३१।।

साधां का बरसन निमित्त । दीप अढाई मांहि भ्रमंत ॥
नृप पूछै नारद सू बात । तुम देस देखे भली भांति ॥४४३१॥

राजकुमार कोई देख्यो आप । तास कन्या देहुं मिटै संताप ॥
नारद रिष बोले तिह बार । नगर अजोध्या स्वर्ग उनहार ॥४४३२॥

रामचंद्र का लक्षमण बीर । रूप लष्पण कंचन सुसरीर ॥
बल पौरिष चक्र उन पास । तिहुं खंड का भोग बिलास ॥४४३४॥

भू खेचर सहु सेवैं ताहि । उन सम बली अवर कोई नांहि ॥
सगाई करो लक्षमण सु राइ । उत्तम कुल रघुपति के भाई ॥४४३५॥

इतनी सुणि कोपिया नरेन्द्र । हमारा मारया है वन भाई बंध ॥
रावण उन मारया है ठौंर । लंकागढ ढाह्या है तोडि ॥४४३३॥

उन कुं मारां तवैं हम जाई । अपणां जनम तब जाणां भाई ॥
वैरी सुं कैसा सनबंध । क्रोध चढे राजा मति अंध ॥४४२७॥

धक्का दे नारद नैं दिया काढि । मान भंग रिख चिंता बाढि ॥
लिखया लेख पट मनोरमा पेखि । दीये हाथ लक्षमण कूं देखि ॥४४३८॥

देव रूप नारायण कहै । इहैं पट रूप सैंदरूप कहाँ है ॥
कै किंनर कै खेचर सुता । देखत उपजैं काम की लता ॥४४३९॥

इंद्राणी कैं पदमावती । भोमि गउचरी नही इस भती ॥
बोलै नारिद गिर बैताडि । रत्नपुर नगर सबही तैं बाढि ॥४४४०॥

रतन असफंदन खेचर राय । हरिमन पुत्र क्रोध कैं भाय ॥
मनोरमा पुत्री है गुणवंत । वे नरेस चित्त बैर धरंत ॥४४४१॥

लीजे जुध करण का साज । मारौ दुर्जन ज्यौं सीझै काज ॥
विराधित कहें प्रभू तुम सुणौ । सेना जोडि दोऊं को हणौं ॥४४४२॥

वे विद्याधर हैंगे घणे । उंनु सै जुध अकेले न वणें ॥
देश देश का तेडो नरेस । राम लछमन चले रत्नपुर देस ॥४४४३॥

घेरया नग्र सुण्यां रत्नरथ । हरिमन पुत्र बली समरत्थ ॥
जिहां लौं थे विद्याधर राव । एकठें भए महा क्रोध के भाव ॥४४४४॥

हम धाया चाहे थे सही । भूमिगोचरी आए आप ही ॥
अब हम रांखैं अपनी टेक । करो जुध सेनां होइ एक ॥४४४५॥

राखैं पति पर्वत की आज । उन जीतैं लाजै कुल लाज ॥
दोउ थां सेना भई संभार । सर बरसैं ज्युं घनहर धार ॥४४४६॥

गोलो गोला अनै हथनाल । सिला पड़ै ज्युं परलै काल ॥
मारि मारि दोउंधां होइ । किन्नर देव देखइ सब कोइ ॥४४४७॥

हाथी घोड़ा पैंदल लड़ैं । बहुत लोग दोउंधां भिड़ैं ॥
मारैं गदा बज्र की घात । बरछी खडग प्राण ले जांत ॥४४४८॥

पडी लोथ परवत सी आन । सोनत बहै नदी तिहां असमांन ॥
पडै लोथ गिरध उनांहैं खाइ । ऊपर घणी चील मंडलाइ ॥४४४९॥

दूहा

भई जीत लक्षमण तणी, हारे विद्याधर भूप ॥
नारद रहैस्या वा समैं, देख जुध का रूप ॥४४५०॥

चौपई

विद्याधर भागे रण छोडि । वे भागैं अ मारैं दोडि ॥
नारद हंसि हंसि तालो देहि । सब मिल नींची मूंड करेय ॥४४५१॥

भागण कूं रही नही ठोडि । फेर संभाल करैं बे झोडि ॥
ज्यों केहरि तैं सारंग डरैं । इम लक्षमण तैं डर करि मरैं ॥४४५२॥

मनोरमां तिहां जुध कों देख । मनमें धारयो ग्यान विसेष ॥
मेरे कारण इतने मुए । पसचात्ताप मन मांही किये ॥४४५३॥

बैंठि विमाण लखमण ढिग आय । फूलमाल घाली गल जाइ ॥
लखमण कूं हुआ सतोष । मिटया जूध भया मन पोष ॥४४५४॥

दंपति आई वनकी ठोर । सुणियो राय सुता का सोर ॥
मनोरमां लखमण सुं मिली । सब मिल कहि यह हुइ भली ॥४४५५॥

हूम ढंढोला बहुला देस । लखमण महाबली भुवनेस ॥
मन की इच्छा पूरण भई । सबही की चिंता बुझ गई ॥४४५६॥

रत्नरथ नृप सहो परिवार । लक्षमण पास आए तिह बार ॥
सबही मिले भया सनबंध । तूटा असुभ करम का बंध ॥४४५७॥

रत्नरथ सेती नारद कहैं । तो मैं गुण पराक्रम ना रहे ॥
तूं कहै था वचन असार । अब काहे तैं मानी हार ॥४४५८॥

रत्न असकंद न बउले राई । तुम तो कोप्या रिष खाई ॥
मान भंग साथ का किया । तो इह दुःख हमैं पाइया ॥४४५६॥

तुम कलपै हम भया दुख । अब तुम कीया दोउं दला सुख ॥
करैं महोछव पुर में गए । मनोरमा बीवाही सुख भए ॥४४६०॥

भोग मगन में करैं उछाह । मनोरमां लछमन सा नाह ॥
पुंन्य प्रसाद नैं जीडी भई । ते सुख सोभा जाई न गिणी ॥४४६१॥

बहो पकवान भोजन करे । कंचन थाल भरि अग्रे धरे ॥
षटरस व्यंजन कीए घणे । सब भूपति मिलि जीमे भणे ॥४४६२॥

बीडा दिया हाथ ही हाथ । जितने लोग राम के साथ ॥
रहेसे सकल किया आनंद । बाजंतर बाजे सुख कंद ॥४४६३॥

अडिल्ल

पुण्य तणैं परसाद जीत सब ठां हुई ॥
साध्या सगला देस सबद जै जै हूई ॥
मानैं भूपति आंणि सुजस प्रगट्या घण्यां ॥
रामचंद्र गुण अगम अपार जांइ किस पै गणां ॥४४६४॥

इति श्री पद्मपुराणे मनोरमा विवाह लाभ विधानकं

८६ वां विधानक

चौपई

रतनपुर सुख भुगत्या सब साथ । बहुत देस जीत्या रघुनाथ ॥
रवि नभ वीचि सोभित पुरी । मेघ स्वाम सिव मघ नगरी ॥४४६५॥

गंधर्ववति अमरपुर देस । लिषमीधर तसु नगर नरेस ॥
किंनर गीत अमरपुर देस । लक्षमीधर तसु नगर नरेस ॥४४६६॥

श्रीगहभा सकृत अरंजय जोतपुर । अवरघणां तिहां साध्या नगर ॥
ससिधा गंधारमल देश । घनसिध सुथांन मनोभद्र नरेस ॥४४६७॥

श्री विजैकांतिपुर तिलक सथांन । बहुत भूप साधे बलवान ॥
विजयार्ध साध मनाई आंण । राम लखमण अति राजान ॥४४६८॥

इहां श्रेणिक पूछे परसन्न । लवनांकुस की कहो उतपन्न ॥
राम लक्षमण कै केती असतरी । केता पुत्र कुल वृद्धत करी ॥४४६६॥

राम लक्ष्मण का परिवार

जिनवांणी सुं संयम जाय । कहै भेद गोतम मुनि राइ ।।
सत्र सहैश्र लक्ष्मण कै नारि । रूपवंत ससि की उणिहार ।।४४७०।।

तामें आट पाठ की बणी । गुण लष्यण अति सोभा बणी ।।
विसल्या मेघद्रवण की सुता । प्रथम पटराणी सुख की लता ।।४४७१।।

रूपवंत अवर बनमाल । कल्यांण माला अनै रतनमाल ।।
जितपदमा मुखश्री मनोरमा । गुणलष्यण सब ही सो क्षमां ।।४४७२।।

अष्ट सहस्र राम के भोम । सोभै च्यारि पट्ट की धांम ।।
प्रथम सीता अनैं पदमावती । रतिप्रभा श्रीदामां सोभावती ।।४४७३।।

लक्षमण कैं पुत्र दोइ सै पचास । सात रत्न की पुंगी आस ।।
चक्र सुदर्शन छत्र अनै गदा । धनुष खडग अर बरछीक धुजा ।।४४७४।।

श्रीधर विसल्या कै गर्भ लह्या । प्रथवी तिलक रूपवंत जनमिया ।।
मंगल कल्याण माला का पूत । विमलप्रभू पदमावती संयुक्त ।।४४७५।।

वनमाला का अरजन वृष्य । जयवंती कैं सुत कीर्तरष्य ।।
मनोरमा संपूरण कीर्त्त । रतिमाला कैं श्रीकेस उतपत्ति ।।४४७६।।

अन्य कुमार कहां लागि गिणौं । नामावली कहा लौं भणौं ।।
ड्योढ कोडि उत्तम कुमार । च्यार वीर का वध्या परिवार ।।४४७७।।

पुन्य उदै ते बाधै वृष्य । करैं राज निकंटक रिध्य ।।
सात दिवस सुख में विहाइ । भोग भुपति मानैं तिहां राइ ।।४४७८।।

सोरठा

उदय भए जब पुंन्य, सुख संपति बाधी घनी ।।
अधिक प्रतापी भवन, जीत्या सब दुरजन अनी ।।४४७९।।

इति श्री पद्मपुराणे राम लक्ष्मण विभव विधानकं
८७ वां विधानक

चौपई

राजमहल

अति ऊंचे मंदिर रमणीक । कंचन रतन सहित रमणीक ।।
भले भले समराये चित्त । सीज्या तिण ठां बणी पवित्र ।।४४८०।।

सीता द्वारा स्वप्न दर्शन

कंचन पलंग पाट सु ं वण्यां । रतन जोति सू ं सोभै घणां ॥
पुहुप बिछाया पटंबर तलै । केसर भरया गींदवा भलै ॥४४८१॥

स्वेत विसन तिस परै बिछाइ । महा सुगंध भ्रमर लोभाइ ॥
छिड़के कुंमकुम भा संमारी ठोर । चंदन किवाड लग्या ता पोल ॥४४८२॥

तणे चंद्रवा मोती झालरी । अनेक प्रकार तिहां सोभै खरी ॥
तिण वस्त्रां की कीति अपार । सीता करै सोलह सिंगार ४४८३॥

आभरण चीर मोती का हार । संग सहेली रुण झणकार ।
पान फूल का डबा भरि धरैं । सीता सुपनां देखै खरे ॥४४८४ ।

रात पाछली घटिका च्यार । सुपिनां निश पाई तिह बार ॥
दोई केहरि गर्जत देखे । सायर निर्मल प्रेखे ॥४४८५॥

देव विमांण आवता जाणि । जाणुं सुख मैं घसैं आण ॥
भए प्रात जागण की वेर । गावैं गुणीजन मधुरी टेर ॥४४८६॥

पंच सबद बाजैं तिह घडी । सीता जागी करै मनरली ॥
करि सनान सुमिरे जिननाथ । बहुत सखी उन लीनी साथ ॥४४८७॥

पति सौं जाइ वीनती करी । सुपनां फल भाखो मन भरी ॥
सुणि रघुपति समझावै बात । पुत्र दोइ होसी ससिकांत ॥४४८८॥

देव दोई तेरे गर्भ चए । निसचै समझि आपणैं हिये ॥
सीता कैं मन भए आनंद । पंचनाम सुमरया जिणंद ॥४४८९॥

रिंत बसंत दंपति सो प्रीत । घर घर गुणीयण गावैं गीत ॥
मंजरि अंब सकल वनराइ । कोकिल वचन अति चित्त सुहाइ ॥४४९०॥

पंछी सवद सुहावन बोलैं । कामी तिहां अति करैं किलोल ॥
दिन दिन बाधैं धरम पुनीत । उत्तम वसन परि डाले चित्त ॥४४९१॥

पुंन्य पाप का इनैं विचार । पापी दलिद्री का इह विकार ॥
गर्भ विषै लष्यण को चिह्न । जाणौं ते पंडित परवीन ॥४४९२॥

पापी जीव गर्भ में पडै । क्रोध प्रमाद देह दुख भरै ॥
खावै ठीकरी माटी मांस । पुण्य हीण का इह प्रकास ॥४४९३॥

सीता का दोहिला

पुन्यवंत के लष्यण जांण । उत्तम वस्त खावै नित पाण ॥
सब सों राखै अधिक सनेह । दिन दिन जोति दिपै अति देह ॥४४९४॥

धरमध्यान सु सुणै पुराण । नित उठि देई सुपात्रां दान ।।
सीता दुर्बल देखी राम । पूछी कहो चित का नाम ।।४४९५।।

सीता कहै मेरे मन इही । पूजा रचना करउ सब मही ।।
जिहां लग तीर्थ भने केवली । जिन मंदिर पूजा विध भली ।।४४९६।।

रामचन्द्र इम लक्षमण सुणी । देस देस कूं चिठी बणी ।।
जिहां लौं जिणथानक किवलास । संमेद सिखर चंपापुर वास ।।४४९७।।

कंपिला अवर वाणारसी नगर । जिनमंदिर समराउं सगर ।।
महेन्द्र बन नंदन वन साथ । मुनिसुव्रत मंदिर जिन नाथ ।।४४९८।।

सहस्रकूट चैत्यालय तिहां । फेर संवारया कंचन सों जिहां ।।
इक इक सहस खंभ चिहुं फेर । वेदी मांझ बणी बहु घेर ।।४४९९।।

राम लखमण कुटुंब समेत । गए महेन्द्रपुर पूजा हेत ।।
तिहां सरोवर निरमल नीर । छाया सीतल विहंगम तीर ।।४५००।।

हंस चकोर सारस बहु जीव । सबद पपीहा बोलै पीव ।।
वसतर उतारि करई सनान । अष्ट दरव सुं पूज्या भगवान ।।४५०१।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन के गल घाले हार ।।
करी आरती हवण कराइ । बाजा बाजे गुणि गण गाइ ।।४५०२।।

दूहा

पूजा करि भगवंत की, देय सुपात्रां दान ।।
निसचै पावै परमपद, पहुंचै मोक्ष सुथान ।।४५०३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता दोहिला विधानकं

८८ वां विधानक

चौपई

पूजा करि फिर आये गेह । बहुत दान सनमान्या देह ।।
सुख में बीत गये दिन घणें । इंह आयगा कारण इक बणे ।।४५०४।।

सीता का नेत्र फडकना

दच्छण आंखि फरकै सिया । पश्चात्ताप मनमें करै सिया ।।
करम उदै बन बेहड फिरी । बन माहैं ते रावण अपहरी ।।४५०५।।

सोग समुद्र में तब बहु पडी । बरस बरस सम बीती घडी ।।
वे दुख भुगत अब भया था चैन । क्यों फरकै अब दच्छन नैन ।।४५०६।।

अनमन देखी कहै बीचार । असुभ करम को सकै न टार ।।
सुभ असुभ संगि लाग्या कर्म । आदि अनादि जीव कै मर्म ।।४५०७।।

जइसैं ससी का बधै प्रताप । पूनम ताईं पूरण आप ।।
अइसैं करमन का उहै हुवै । जैसैं ग्रहनैं ग्रहै कुवै ।।४५०८।।

पडिवा सेती कला हुवै हीण । असुभ कर्म करैं आधीन ।।
दुख सुख लग्या जीव कै संग । तुम मति करो अपना मन भंग ।।४५०९।।

गुणमाला बोली गुणवंत । वेद पुराण सुणो मन मंत ।।
सीता मन चिंता मा करो । एता सोच कहा चित धरो ।।४५१०।।

तुम सबतैं पटराणी बडी । राम तुमनैं छांडै नहीं घडी ।।
रामचन्द्र जीवो चिरकाल । तुमकों भय है किसका हाल ।।४५११।।

करो पूजा पुंनि सांतिक । पाप करम की मेटो लीक ।।
पुंनि दांन तप काटैं व्याध । वैयावृत्त कीजिये साध ।।४५१२।।

दुख कलेस सब जाइं विलाइ । ढील न कीजे देहु मंगाइ ।।
भद्रकलस सीता प्रधान । सब विध जाणैं पूजा दान ।।४५१३।।

तहि बुलाइ आज्ञा इह दई । उत्तम वसत मंगाओ पई ।।
जो मन इच्छै ताकूं देइ । पूजा प्रतिष्ठा बहुत करेइ ।।४५१४।।

रोग कल्पना हो गई दूर । बढै पुंनि रिध भरि पूर ।।
सुणी बात मन हुवा हुलास । आनि सोज राखी उन पास ।।४५१५।।

जैसा कोई चाहै स्याग । तइसा दे जइसा को मांग ।।
सांतिक प्रतिष्ठा होइ दिन रयण । पडित पढै सुहावने वैन ।।४५१६।।

वेद पुराण सब ही ठां होइ । बहोत पुंनि खाटै सब कोइ ।।
राम लक्षमण वैठा पट आइ । बहोत लोग मिले तहं ठाइ ।।४५१७।।

सोलह सहस मुकट बंध राइ । नमस्कार करि लाग्या पाइ ।।
पौंण छत्तीस ठाढी भई । ते सब नृप द्वार अग्रै षडी ।।४५१८।।

रघुपति चितवै प्रजा दसी । नींच लोग मिल मिल करि हंसी ।।
रामचन्द्र ने लिया बुलाइ । अपने अपने दुख कहो समझाइ ।।४५१९।।

विजय सूरज मध्य परवीन । वसकासव पींगल तीन ।।
राज सभा में ठाढे आइ । करि डंडोत नवण करि भाइ ।।४५२०।।

राम द्वारा प्रश्न पूछना

पूछैं राम कहो तुम सांच । किह कारण आये सब पंच ।।
सब मिल थकित रहे तिहां लोग । जिन पाषाण ध्यान धरि जोग ।।४५२१।।

निष्ट वयण कैसे करि कहूँ । भय चित घणां मूक होय रहैं ॥
राम कहैं चिंता मति करो । कहो निसंक सब भय परिहरो ॥४५२१॥

प्रतिनिधियों का उत्तर

विजय सूरज बोले कर जोडि । प्रभा भणी लागी इह खोडि ॥
रूपवंत जोवन भरी नारि । निकसैं आग्यां बिन भरतारि ॥४५२३॥

जिहां मन होवै तिहां वह जाइ । वे कछु कंत कहैं तो रिसाइ ॥
तब उत्तर बोलैं असतरी । सीता रावण का हरी ॥४५२४॥

ते सीता रामचंद्र नैं आणि । ता का सब बिध राखैं मान ॥
अैसे हैं वे त्रिभुवन पती । तिणी मन में न आणी रती ॥४५२५॥

सीता को वे बोडा कहैं । जे मुख निकसै सो ही कहैं ॥
सीता सती पतिव्रता असतरी । सील संयम सों सब विध खरी ॥४५२६॥

रावण सीलव्रत लीया । उनका सत सब विध राखीया ॥
सत्त सील इह विध रह्या सबै । उनकी रीत करैं ए सबै ॥४५२७॥

अैसा हमें बतावो ग्यांन । तासों रहै सबां की कांन ॥
देस देस में हूवा इह सूल । परजा भई सर्व सुख भूल ॥४५२८॥

जिह विध बसै होइ सुख चैन । तैसे समझावो प्रभु बैन ॥
रामचन्द्र सोचैं मन माहि । मेरे साथि देखैं दुख याहि ॥४५२९॥

राम की व्यथा

रावण दडक वन में आइ । सीता कुं ले गया चुराइ ॥
वांनर बंसी भए सहाइ । उनकी संगति पहूंचे तिन ठांइ ॥४५३०॥

मारथा रावण सेनां घणी । सीता ले आए आपणी ॥
अब तो भई सुख की बार । कैसे घरि तैं देहुं निकार ॥४५३१॥

तजूं राज वन में करूं बास । तो भी होइ महा उपहास ॥
उत्तम कुल को चढै कलंक । किस विध तजैं मन की संक ॥४४३२॥

पराया मन की जाणैं कौंन । बुरा कहै छत्तीसों पौण ॥
नारी महा दुःख की खांनि । अपकीरत हो इनकै जांन ॥४५३३॥

प्रतक्ष जानौं कुगति कांमनी । अैसे चित्त विचारो धनी ॥
मोही चित चुरा ले जाहि । लख चौरासी जौनि भरमाइ ॥४५३४॥

सर पड़स्या मरै एक बार । नारी बिस मरै बारंबार ॥
जै ले नीकलिया त्रिय संग । तो अब भया मान का भंग ॥४५३५॥

बिभचारिणी करै कुकर्म । कुल की लाजहुए कुंण धर्म ॥
सीता कूं ले आया ग्रहै । निर्मल कीना सु कहै ॥४५३६॥

किस किस के मै मूंदू मुख । मोकूं आइ वण्या है दुःख ॥
मेरे राज प्रजा सुख भरो । सीता राख्या अपजस धरो ॥४५३७॥

मैं जाणूं हूं सीता सती । इसकूं दोष न लागै रती ॥
राख्या चाहैं लोकाचार । दोई विध है निश्चै व्योहार ॥४५३८॥

राजा छोडै धरम की रीत । घटै मरजाद बधै बिपरीत ॥
राजा मुंह देखी प्रजा करै । सब का पाप अपने सिर धरै ॥४५३९॥

धरम विचार कीजिये न्याव । अपणां पराया जाणैं समभाव ॥
बहु विध सोच करै रामचंद्र । कहा बिचार कीजिये दुंद ॥४५४०॥

दूहा

राजनीति रघुपति करी, कंछुयन आण्या मोह ॥
प्रजानै उन कारणई, त्रियास्युं किया बिछोह ॥४५४१॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र प्रजारिख्या विधानकं

८९ वां बिधानक

चौपई

राम का कथन

रामचन्द्र बैठा पट आइ । निसंकत सौं कह्या बुलाइ ॥
बेग जाइ लखमण कुं लाव । गया दूत नारायण ठांव ॥४५४२॥

नमस्कार करि ठाढा भया । राम वचन हरि सौं भाषिया ॥
लखमण उठि आया तिण साथ । बैठा निकट तिहां रघुनाथ ॥४५४३॥

रामचन्द्र भाष्यां बिरतांत । प्रजानें सकल भाष्यो बिरतांत ॥
घरि घरि नारि कुमारग गह्या । मनमें कुछ संका नवि रह्या ॥४५४४॥

सासु सुसरा कंत की आंण । कबहू न मानें उनूं की आंण ॥
बे पाछा सीता का लेह । बिन सवारथ कलंक मैं देह ॥४५४५॥

जिसमें कुल को लागैं लाज । तिसकुं राख्या बणैं न काज ॥
अब लौं कुल को लग्या न दोष । पुरुषारथ करि पहुंचे मोष्य ॥४५४६॥

कोई न हमारैं पापी हुआ । ए दूषण अब लाग्या नवा ।।
जे रावण ने सीता कू हरी । तो इह विपत्ति हमको पड़ी ।।४५४७।।

सीता सत राख्या आपणां । परजा दोष लगावैं घणां ।।

लछमण का क्रोध

इतना लखमण सुणिया वैन । चढया क्रोध राते करि नयन ।।४५४८।।

कैसी परजा कहा बरांक । वे तुमसे बोलैं इह वाक ।।
सब कु मारि मैं परलय करूं । जीभ काढि खाल भुस भरूं ।।४५४९।।

सीता सती कूं इस विध कहैं । उनके मन संका नहीं रहै ।।
नृप की चरचा परजा करैं । ताकूं हाथ लगाउं खरैं ।।४५५०।।

अपना वित्त समझै नहीं आप । राज कथा को बोलैं पाप ।।
सबकूं घेरि निकटैं दहै । फेंर न असी मुख तैं कहैं ।।४५५१।।

रामचन्द्र तब कहैं समझाइ । परजा सुख चाहिए राइ ।।
परजा तैं राजा सोभंत । विण परजा कुण राय कहंत ।।४५५२।।

जिह विध दुख परजा का जाय । तैसा करिए भरत उपाइ ।।
बोले लक्षमण सुंण हो भ्रात । महासती है सीता मात ।।४५५३।।

वे हैं दुःख देष्या हम संग । सुख की बेर करो ग्रह भंग ।।
परिजा है कूरडो समांन । हस्ती नैं जूं भौंकै स्वान ।।४५५४।।
हस्ती मन न आणैं ताहि । उनका कह्या असा नर नाह ।।
जैं कोइ शशि पर नाखै धूल । वाही के सिर पडै अमूल ।।४५५५।।
अग्यांनी बोलैं अग्यांन । उनका वचन कहा परमांन ।।
सीता दयावंत बहूत । कोमल देह रूप संजुत्त ।।४५५६।।
गर्भवती किम दीजे काढि । दोई जीव सौं पावैं दुख वाढि ।।
रामचन्द्र बोलैं जगदीस । या कौं ले गया था दस सीस ।।४५५७।।

राम का निर्णय

ता कारन असी कहै न लोग । थिर नहीं इह संसारी भोग ।।
अपणी कीर्त्ति को इह संसार । जैं अपकीर्त्ति हुवै अपार ।।४५५८।।

हम तुम सा अपकीरत करैं । प्रथ्वी पर जस को फिर धरैं ।।
जैंसी परजा तैंसा राजा जिसी । जुग जुग चलैं हमारी हंसी ।।४५५९।।

धरमनीत करूं हूं सही । मेरैं बात मुंह देखी नहीं ।।
कृतांतवक्र तब लिये हंकार । रथि परि चढि दौडे असवार ।।४५६०।।

सेनां घणी तास के साथ । देखैं लोग धुणें सब माथ ।।
किस पर कोप्या रघुपति आज । कृतांतवक्र आया दल साज ।।४५६१।।
नमस्कार करि ठाढा भया । रघुपति वचन मानि कर लिया ।।
सिंघनाद बन भयानक घणां । तिहां मानुष्य न कोई जणां ।।४५६२।।
सीता को करि आश्रा भाव । तिहां छोडि फिर ल्यावो मति ना ।।
कृतांतवक्र तब गया सीता द्वार । माता तीर्थ चलो मोहि लार ।।४५६३।।

सीता को यात्रा के बहाने से ले जाना

समेदशिखर तीरथ निर्वाण । पूजा करो जिनेस्वर थांन ।।
जैसा कर्म उदै होवै आय । तैसी तैसी देखै ठाइ ।।४५६४।।
रहस रली सूं सीता चली । सब कुटंब सूं तब ही मिली ।।
रथ परि चढि चली संमेद । देखै सकुन विचारैं भेद ।।४५६५।।
सूका वृक्ष परि बैठे काग । चुंच मूंडपरि पटकण लाग ।।
देखे बुढिया मारग मांहि । बाल खसोटैं बैसे छांह ।।४५६६।।
सकुंन विचारई सीता तलैं । हम तीरथ कारण को चलैं ।।
कहा सकुन करैंगा मोहि । कछुवन मन धरया न रंच ।।४५६७।।
अग्रे देखैं पर्वत झरई । मानूं रुदन सब कोइ करई ।।
कहिं खलखलाट जल बहै । देखि रूंख तिहां आश्रम गहै ।।४५६८।।
महा गंग तिहां अगम अथाह । जलचर जीव सुखी वन मांहि ।।
तटपरि ऊंचे सोभैं रूख । सीतल पवन तैं भाजैं दुःख ।।४५६९।।
वनफल उत्तम लागैं घणे । निरमल नीर सोभा अति बणे ।।
गडगडाट सूं उछलै नीर । देखत ताहि रहै नहीं धीर ।।४५७०।।
स्यंघ नाद गंगा पार अणं । तिहां नांहि काहु की सर्ण ।।
एक नाम भगवंत सहाइ । और न कोई है इस ठांइ ।।४५७१।।
कृतांत वक्र तिहां रोवै आन । हाथ मुंड धरि सोचै ग्यांन ।।
सीता माता अति धर्मेष्ट । इनकौं फिरै उदै हुवा कष्ट ।।४५७२।।
असी महा भयानक ठौर । वन का जीव करै तिहां सौर ।।
मैंने आग्या प्रभुजी की पाइ । सीता कूं ल्याया इस ठांइ ।।४५७३।।
कृतांतवक्र सौं सीता कहै । सूर वीर धीरज कौं धरैं ।।
जई तुं डाडस डारै तोडि । तो हम मन दिढता रहैं छोडि ।।४५७४।।

कृतांतवक्र का रहस्य खोलना

कृतांतवक्र तब विनती करैं । सत्य वचन मुख तैं उच्चरैं ।।
प्रजा पुकारी रघुपति पास । हमारा नहीं नगर में बास ।।४५७५।।

घरि घरि नारि करैं विभचार । छोड्या सब लज्जा का भार ।।
जब बउलै घर का भरतार । उत्तर देहं सकल वे नार ।।४५७६।।

सीता रावण कैं घर रही । रामचन्द्र कुछ बात न कही ।।
फेरि आणि पटरांणी करी । तुम काय हमनें भाखो बुरी ।।४६७७।।

ऐसे पुरुष जे अंगीकर्त्त । तुम तो ढूंढो हमारा चरित्र ।।
रामचन्द्र सुंणि प्रजा वईन । मन में सोच भया कुचईन ।।४५७८।।

लखमण रह्या बहुत समझाय । उसका कह्या न मान्यां राइ ।।
मोहि बुलाइ आग्या इह दई । तब मोकूं चिंता इह भई ।।४५७९।।

कैसें छोडूं वन में सिया । कहैत सुणंता फाटै हिया ।।
उनसूं उत्तर कह्या न जाइ । तातैं तुमनें आंणी इस ठांइ ।।४५८०।।

सीता का सन्देशा

बोलैं सीता गदगद बोल । प्रजा रघुपति करो किलोल ।।
हमां उनूं की इहां लागि प्रीति । धन्य जीव जे होइ अनीत ।।४५८१।।

बहु सुख भुगते राज प्रसाद । यूंही जनम गमायो सब वाद ।।
धरम न चेत्या सुख की वेर । मानुष जनम कहां लहीए फेर ।।४५८२।।

जैसे कोई रतन को पाइ । फेरि समुद्र में दिया बुहाइ ।।
वेर वेर कहां पावै रतन । जे कोई करै कोटि जतन ।।४५८३।।

अैसा रतन मानुष्य अवतार । तामें भले मूंढ गमार ।।
करो धरम भवसागह तिरो । बहुरि न मोह फंद में पडो ।।४५८४।।

आई मूर्छा खाई पछाड । बडी बार में भई संभार ।।
फिर बोली सीता महासती । रामचन्द्र सूं कहज्यो वीनती ।।४५८५।।

परिजा नैं थे दुखि मत करौ । दया समकित्त चित्त में धरो ।।
पूजा दान करौ दिन रात । तुमारे समरण में इह भांति ।।४५८६।।

कृतांतवक्र तब रोवैं पुकार । अपने सिर लिया मैं भार ।।
सेवक का है जनम अकयथ । अपने बल होवै समरथ ।।४५८७।।

तो अपणों मन मानी करै । पाप अने पुंनि समझि चित्त धरै ।।
पराधीन कछु बोल न सकै । जिहां भेजै तिहां पल नहि टिकै ।।४५८८।।

जैसी आग्या सोई होय । ताको बरज सकै नहीं कोइ ।।
जे मै पराया भया आधीन । तो मैं करम कमाया आधीन ।।४५८९।।

सीता का बन में अकेलीपना

अपणी निंदा कीनी घणी । सकल बात सीता नैं सुणी ।।
सीता कहै पुत्र तू जाँहि । तेरा दोस इसमें कछू नांहि ।।४५९०।।

रथ तै पांव सीता तिहां धरया । कृतांत वक्र अयोध्या कुं फिरया ।।
बहुत सोच सीता मन करै । धीरज मनमें कैसे धरै ।।४५९१।।

महा भयानक बन की ठांव । तिहां नहीं माणस का नांव ।।
सिंघ गयंद तिहां अजगर घणे पसु पंछी बोलत जब सुणे ।।४५९२।।

पग धरणों कूं नांही ठौर । झांखरा सूल कटक और ।।
वे मंदिर पाटंबर सोज । रतनजोति सुख देखे चोज ।।४५९३।।

पांन फूल सुगंध फुलेल । चोबा चंदन सों करता खेल ।।
आठ सहस्र मेरे थी साथ । पटराणी थापी थी रघुनाथ ।।४५९४।।

हमारी आग्या मांनै थी सर्व । तीन खंड की लक्षमी दर्व ।।
ग्रैसा कर्म उदय हुआ आय । वे सुख खोसि भेजी इस ठाँय ।।४५९५।।

कै मै बच्छ विछोही गाय । कै मैं बाल विछोही माइ ।।
कै सरवर नैं बिछोहा हंस । कै पर थो नीका राख्या ग्रंस ।।४५९६।।

कै जिन भक्ति करी न मन ल्याय । कै जिनवांनी चित्त न सुहाइ ।।
मुनीस्वर सेवा कहीं नह खरी । साधां की निंदा चित्त धरी ।।४५९७।।

अणछाण्यां जल पीया जाइ । कंद मूल भषे अथाह ।।
ओछा तप कर लिया अवतार । मोहि बिछोह भया भरतार ।।४५९८।।

कुगुरु कुदेव कुसास्त्र पर चित्त । तार्थैं आइ भई इह थित्त ।।
पंछी दिया पिंजरा मांहि । तार्थैं हुवा इह दुःख दाहि ।।४५९९।।

हाइ राम लक्षमण कहा किया । मोकूं देस निकाला दिया ।।
हाइ जनक भावमंडल वीर । या समै कोई ना राखै धीर ।।४६००।।

वज्रजंघ द्वारा सीता का विलाप सुनना

वज्रजंघ पुंडरीक का धणी । वाकै संग सेन्या है घणी ।।
हस्ती कारण बन में आइ । पकडया गज बाजंत्र बजाइ ।।४६०१।।

सुण्यां सबद सीता का रोज । भया अचंभै देखै खोज ।।
इह वन इसा भयानक रूप । देखैं सबद सुणैं बहु भूप ।।४६०२।।

कै इंद्राणी कै पदमावती । कै किनर कै विद्यावतती ॥
सब सेन्या कर गहै हथियार । तिहां नांगी चिमकैं तरवार ॥४६०३॥

हय गय रथ किंकर ता संग । महाबली राजा वज्रजंघ ॥
असा वन भयानक अति घोर । मानुष्य नै आइ सकै कोई और ॥४६०४॥

दूहा

सुभ असुभ दोऊ करम, अपणी चली तिहां चाल ॥
भूपति नैं भिक्षु करैं, रंक नैं करैं निहाल ॥४६०५॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता वनवास विलाप वज्रजंघ समागम विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

सेना थकित रही वा ठांव । आगैं कोई धरै न पांव ॥
सूर सुभट अग्रे होइ चलै । धर्म कर्म समकित्ती भलै ॥४६०६॥

उतरे भूमि सीता कू देख । माता कहो तुम अपना भेष ॥
तुम हो कवण असे वनमांहि । ऐसा दुःख करो तुम कांहि ॥४६०७॥

सस्त्र देखि सीता भय करै । भीड देखि मन में अति डरै ॥
अरे वीर सब देहु डारि । आभूषण एही तू उतारी ।४६०८॥

मेरे नाम राम की आस । लेहु सकल छोडो मो पास ॥
बोलैं सुभट तुम मति करो । वज्रजंघ इहां नरपति खरो ॥४६०९॥

हाथी पकडन आया भूप । सम्यक्दृष्टी दया स्वरूप ॥
तीन रतन हैं वाके चित्त । जती भाव राखै है नित्त ॥४६१०॥

यु ही आया वज्रजंघ भूपती । बहुत लोग राजा के संगती ॥
सीता नैं पूछियो नरेस । माता कहो आपना भेस ॥४६११॥

महागंगा तिहां बहै अपार । ताहि उतर कैसे भए पार ॥
ए वन महा भयानक बुरा । कारज कवण पयाणां करा ॥४६१२॥

अपणा कहो सकल बिरतांत । सांची बात सुणावो मात ॥
पिछली बात कहो समझाइ । जनक सुता हूं मैं इस ठांय ॥४६१३॥

सीता द्वारा अपना परिचय देना

भावमंडल है मेरा भ्रात । विदेहा राणी है मुझ मात ।।
दसरथ है अजोध्या का राइ । च्यार पुत्र ताके अधिकार ।।४६१४।।

रामचन्द्र की मैं पटरानी । सुखपाई असी नहि बणी ।।
केइकेइ कुंवर दशरथ दिया । राम लखन वासा लिया ।।४६१५।।

भरथ सत्रुघन पाया राज । बहु विध प्रजा का सारै काज ।।
हूं भी फिरी राम के साथ । दंडक बन में श्री रघुनाथ ।।४६१६।।

तिहां मारया संबूक कुमार । खरदूषण लडिया तिण बार ।।
रावण नें तिहां मोकूं हरी । वाकै सील की थी आंखडी ।।४६१७।।

अनंतवीरज पासैं लिया सील । गया लंक लागी नहीं ढील ।।
बिराधित सुग्रीव हनूमान । बानर वंसी अति बलवान ।।४६१८।।

राम लक्षमण है विमान बैठाइ । लंका मे पहुचे सब जाइ ।।
रावण मारे लंका तोडि । तब मिलीया रघुनाथ बहोडि ।।४६१९।।

उहां ते आया अयोध्यापुरी । परजा ने चरचा इह करी ।।
रामचन्द्र ने इह चतुराई करी । फेरघट दिया सीता असतरी ४६२०।।

सीता कुं रावण ले गया । ईना फेर घर बासा कीया ।।
उहां असी चरचा मांहि । भरथ वैराग भयो मनमांहि ।।४६२१।।

दिक्ष्या ले पाया निरवाण । बीते मोह दिन गर्भ का जान ।।
भए दोहला इछ्या यही । तीर्थ पंचकल्याणक सही ।।४६२२।।

करूं जात्रा पूजा घणी । सब सामग्री उत्तम बणी ।।
महेन्द्रवन पूज्या भगवंत । मुनिसोव्रत स्वामी अरिहन्त ।।४६२३।।

कैलास जात्रा पूजण जोग । पंचमेरु बंदना निवोग ।।
पुहपक विमाण कीया संजुत्त । परजा तिण वा आय पहूंत ।।४६२४।।

करी पुकार राम पै जाय । नारद विगडैं हैं सब ठांइ ।।
सब प्रताप सीता का कहै । कैसे हम नगरी में रहैं ।।४६२५।।

बज्रजंघ समझावै ग्यांन । तुम समझो हो वेद पुराण ।।
आरत ध्यांन तुम करो दूर । बारह अनुप्रेक्षा समझो मूर ।।४६२६।।

च्यारु गति मांहि डोल्या हंस । कहीं नीच कहीं उत्तम बंस ।।
रोग सोग आरत मै रह्या । भ्रमत भ्रमत बिसराम न गह्या ।।४६२७।।

चारों गतियों के दुःख

सुभ नैं असुभ कर्म देउ साथ । सुख दुख देखे नाना भांति ॥
देव हुआ सुख निपता नहीं । छह महिना आव जब रही ॥४६२८॥

सब सुख भूल्या चिंता बीच । बहुत भ्रम्यां गति उत्तम नीच ॥
मानुष्य जनम भुगते बहु भोग । तिहां भया कुटंब का सोग ॥४६२९॥

रोगी रहै कहै नहीं सुख । पीडा चिंता व्यापैं दुःख ।
पाई गति पसू तिरजंच । तामें सुख पाया नहीं रंच ॥४६३०॥

खूंटे बांध्या हैं संताप । मरैं भूष तिस करैं संताप ॥
माछर देस देह कूं लगैं । लखा फिरैं निस बासर जगैं ॥४६३१॥

नरक गति दुख की तिहां खांनि ।छेदन भेदन सहै परांन ॥
सहै दुख यह बारंबार । भवसागर तें तिरचा न पार ॥४६३२॥

जनम जरामृत आसा डोरि । इनसों कदे न भया बिछोर ॥

बज्रजंघ का परिचय

इंद्रवंसी दूरि नवाह नरेस । भुगतै पुंडरीक का देस ॥४६३३॥

संबोधमती वाकैं पटनारि । तासु गर्भ लीया अवतार ॥
बज्रजंघ है मेरा नांव । धरम बहन का राखो भाव ॥४६३४॥

महा पुंनि पूरव भव किये । रामचंद्र से प्रभु तुम हिए ॥
असुभ कर्म तें डोले घने । ते सहु बाकि मोनुं सुने ॥४६३५॥

अब रघुपति आवैंगे आप । तुमारा मेटैंगा संताप ॥
तेरा गर्भ में जीव सुपुनीत । धरम उदें जाणी इह रीत ॥४६३६॥

तीरथ नाम करि तुम कूं काढि । रामचन्द्र मन चिंता बाढि ॥
तुम कूं हुवा धरम सहाइ । गज निमित्त मैं पहुच्या आइ ॥४६३७॥

चलो बहन तुम मेरे ग्रेह । दूरि करो मन का संदेह ॥
भावमंडल सम मोकूं जानि । सीता बैठाइ लई सु विमान ॥४६३८॥

दूहा

बज्रजंघ भूपति बल धरचा, धरम का बह्यो भाव ॥
सीता कुं बन मांहि तैं, बहिन कहि ले आव ॥४६३९॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता समास्वासन विधानकं

९१ वां विधानक

चौपई

सीता के साथ वज्रजंघ का आगमन

रतनजडित सोहै सुखपाल । मणि माणिक लागे बहु लाल ।।
पाटवणे पाटंबर बिछे । छत्री कलस मोती के गुथे ।।४६४०।।

सोहइ मुखमल तणे गलेस । जणे पंचरंग के भेस ।।
तामें बईठ सो सीतां चली । डोला डोला ता संग चिली ।।४६४१।।

बहुत सखी वा पाछैं हुई । ढिग ढिग गांव सब हरियल महीं ।।
देस देस के नृपति आइ । नमस्कार करि ठाढे राइ ।।४६४२।।

पुंडरीक सुराष्ट देस तिहां । सहु कोई सुखिया जिहां ।।
धर्मेष्ट सर्व बसैं तिहां लोग । पांनफूल सौं थाके भोग ।।४६४३।।

नगर बसै स्वर्ग अनुहार । जिसका बहुत बडा विसतार ।।
बन उपवन वापिका कूप । सोभा कमलां तणी अनूंप ।।४६४४।।

हाट बाजार छाए सब ठोर । कंचन कलस धरे सिर पोर ।।
छांटी गलियों नीर सुबास । देखैं नारि चढी आवास ।।४६४५।।

सीता आई नगर मझार । मंदिर में पहुंची तिस बार ।।
बज्रजंघ की राणी आइ । लागी सहु सीता के पाय ।।४६४६।।

बज्रजंघ बहु स्तुति करै । आजि भाग धनि म्हारा करै ।।
सीता बहन आई हम द्वारि । सब मिल करो नणद की सार ।।४६४७।।

ज्यौं पीहर में रहै पूतरी । अैसे रहे सीता तिह पुरी ।।
सुख सौं बीतै बासर रैन । पूजा दान करै मन चैन ।।४६४८।।

कृतांतवक्र की व्यथा

कृतांतवक्र मारग के मांझ । रोवत ताहि पड गई सांझ ।।
हाइ हाइ करि रोवै रोज । सीता का पाऊं कित खोज ।।४६४९।।

महा भयानक बन भयभीत । छोडी तिहां महा विपरीत ।।
किण पसुव सीता कूं भख्या । वा बन मे को करि है रिष्या ।।४६५०।।

आया रामचन्द्र कै पास । नीचो मुंडी खडा उदास ।।
नैनां नीर बहै असराल । मानूं चुवै मेघ की धार ।।४६५१।।

कठिन कठिन करि निकसै बात । बन में छोडी सीता मात ।।
महासती दई तुम निकारि । राजनीति करी नहीं विचार ।।४६५२।।

बन है भयानक गंगा पार । अजगर तिहां बडा विसतार ।।
रहै स्यंघ तिहां खोह मझार । अरनां भैंसा सांड सीयांर ।।४६५३।।

हसती भर्खं रीछ बाराह । पडै घूप पावै नही छांह ॥
वे दुख कैसे सीता सहै । बहु तुमारे सर्णं में रहै ॥४६५४॥

राम लक्ष्मण का रुदन

रामचन्द्र लखमरण सुंणि बैन । मूर्छा खाई पडे कुचैन ॥
हाइ हाय करि धरणी पडे । कोई बैदि जतन बहु करै ॥४६५५॥
तुम देख्यां बिन कैसां जीवां । बिन अपराध दुःख दिया नवां ॥
अब तोकूं कहां पाऊं सिया । महासती जनक की धिया ॥४६५६॥
वे दुख देखि लहे वे सुख । अब फिर पाए ऐसा दुःख ॥
कोमल वर्णन कोमल देह । दुख पशु का है तिहां गेह ॥४६५७॥
कंटक घणे मारग नहीं चलै । तिहां सीता जीवत क्यों मिलै ॥
वन में दौ लगी है घणी । ऐसी कठिन तिहां उनकों बणी ॥४६५८॥
कै कोई पसु के डसै वीयाल । कै कोई भील ले गये वीयाल ॥
ऐसा दुख सौं प्राणी सिया । अब मैं देस नीकाला दिया ॥४६५९॥
कहां पाऊं मैं सीता सती । मैं तो बुधि करी दुरमती ॥
रतनजटी जब सो सुध दई । हनूमांन तैं चिंता गई ॥४६६०॥
अब किसकौं भेजौं वन मांहि । ल्यावै खबर मिटै दुखदाह ॥
कृतांतवक्र तुम बोलो सांच । किण विध सहै दुःख की आंच ॥४६६१॥
सीता छोडी है कि नहीं । सत्य बचन भाखो तुम सही ॥
जैसें कह्या क्रोध कै भाइ । तैं ले छोडी वन मे जाइ ॥४६६२॥
सीता बिन हूं तजूं परान । बेग मिलाओ मोकूं आंन ॥
ज्यौं ज्यौं लहर हिया मैं उठाइ । त्यों त्यों रघुपति दुख अधिकाइ ॥४६६३॥
वस्त्र फाडि पघडी भुंइ डारि । महीपति खाई तबै पछाडि ॥
लखमण खागया मूरछाअंत । मानुं भए प्रांन का अंत ॥४३६४॥
करैं बैद सीतल उपचार । तबै उनुहुं कुं भई संभारि ॥
हा हा कर नित करत बिहाइ । परजा सकल दुःख कैं भाइ ॥४६६५॥
घरि घरि रोवइ पीटइ लोग । घरि घरि करइ सीता का सोग ॥
नौ महीना सोग में गये । लखमण समभावै विनती किए ॥४६६६॥
सीता सीलवंत सु पुनीत । ता थैं राखै मनमैं चित ॥
सील सहाई होय सब ठौर । पुन्य बराबर सगा नहीं और ॥४६३७॥
जल थल महियल सील सहाइ । वन बेहड जिहां लावै लाइ ॥
परवत समुद्र विषम जो होइ । धरम सहाई कहैं सब कोइ ॥४६६८॥

मैं जाणु सीता नै मुई । करो पुनि चिंता कछू नहीं ॥
भद्रकलस तब लिया बुलाइ । देहु दान सब को मन भाइ ॥४६६६॥
रामचंद्र राजसभा संभालि । मन तैं टरै न सीता सालि ॥
बहुत दिवस में भूले दुःख । राज भोग में मानैं सुख ॥४६७०॥

दूहा

प्रीतम बिछुडे दुख घणां, भूलैं नहीं दिन रयन ॥
सीता नैं वनवास दे, कैसे मानैं चैन ॥४६७१॥

इति श्री पद्मपुराणे राम विलाप विधानकं

९२ वां विधानक

चौपई

सीता के पुत्र जन्म

पूरण गर्भ भया नव मास । श्रावण सुदि पून्यूं परगास ॥
श्रवण नक्षत्र उत्तम शुभवार । जुगल पुत्र जन्म्या तिह बार ॥४६७२॥
लवनांकुस मदनांकुस और । तातैं अधिक विराजै ठौर ॥
जोतिगी पंडित जोतिग साध । भले मुहूर्त्त गुनां अगाध ॥४६७३॥
इन सम बली न होइ है आन । महापुनीत धरम की खांन ॥
बज्रजंघ अरु सब रणवास । सकल लोक अति करैं हुलास ॥४६७४॥
दांन मांन सब ही कूं दिया । घर घर रली बधावा किया ॥
परियण की आई सब नारि । सब मिल गावैं मंगलाचार ॥४६७५॥
करै नृत्य गुनीजन सब आइ । गावैं ताल मृदंग बजाइ ॥
ढोल दमामा करनाइ । वीण बांसुरी अनैं सहनाइ ॥४६७६॥
भांति भांति के बाजा बजै । सुनत सबद मन सुख ऊपजै ॥
बहुत नारि सीता कैं संगि । करैं सेव सुख पावैं अंग ॥४६७७॥

बालक्रीडा

निस बासर आग्या में चलै । दोनु बालक शसी में पलैं ॥
तेल उबटनां अरु असनांन । सोमैं दोन्यूं चंद्र अरु भांन ॥४६७८॥
पल पल घटियां बधैं कुमार । बदन जोति शशि की उणहार ॥
निकस्या दंत तारां की ज्योति । नख करांत की सोभा होत ॥३६७९॥
बालक लीला सीता देखि । भूल्यौ सोग इनांनैं प्रेषि ॥
कबहुं हंसैं कबहुं करैं रोज । चलैं गुडलियां उपजै चोज ॥४६८०॥
उठैं लागि अंगुली गहि चलैं । गिरैं भूमि तैं सोमैं भले ॥
कबहूं जननी गोदी लिये । लपटैं कंठ महा सुख दिये ॥४६८१॥

पाले पोसे हुए सचेत । सब मिलि करैं उनौं सों हेत ॥
सिद्धारथ मुनि आगम हुआ । राजद्वार प्रवेस जदि हुवा ॥४६८२॥
सीता द्वारा पेषरण करचा । नमस्कार करचा तिहां खडा ॥
धरम वृद्धि मुनि बोले बोल । पट बैठा तिहां रत्न अमोल ॥४६८३॥
लेई अहार उठ्या मुनि ईस । अखैदान बोलै आसीस ॥
सीता सुं बुझ्या विरतांत । सुण्या भेद कांपे सब गात ॥४६८४॥
वे दुख सुणि उपजी मन दया । धरम उपदेस सीता कूं दिया ॥
दोउ पुत्र आये तिह बार । दरसन पाय कियो नमस्कार ॥४६८५॥
दोउं रूपवंत गुणवंत । सुंदर देह महा बलवंत ॥
कोमल चरण नख जोति अपार । खंड पयोधर सीलै इकसार ॥४६८६॥
कटि केहरि हिरदा बिसतार । भुजा अनोपम जोति अपार ॥
कर कोमल नख असेत । कंध ग्रीवा बज्र सहेत ॥४६८७॥
उष्ट कपोलीं हीरा से दंत । मुंह कवांण दे सोभावंत ॥
बदन जोति सोभै सिर केस । स्यांम वर्ण सु विराजै भेस ॥४६८८॥
महा अटल सुदर्शन मेर । गुणगंभीर सागर कैं फेर ॥
इनके गुण इनही ते थणे । तो मुख गोचर जाहि न गिणे ॥४६८९॥
जई सरस्वती आपण मुख कहै । सीता सुत गुण पार न लहै ॥
ऐसे बालक देखे उन मुनी । विद्या पढाइ किये बहु गुणी ॥४६९०॥

अध्ययन

एक बार गुरु देहि बताइ । वे फिरि पढि सुणावैं समझाइ ॥
विद्या पढि पारंगति भए । रवि सा तेज ससी किरण सम थए ॥४६९१॥
जिहां लौं थे राजा अरु रंक । इनछं सुणि मानैं सब संक ॥
बज्रजंघ कुं मिलैं सब आइ । करैं सेव सब मस्तक नाइ ॥४६९२॥
जिहां निकलैं दोऊ कुमार । देख रूप मोहैं सब नारि ॥
इनकैं चित्त धर्म का ध्यान । पाप न गहै मन अपनैं आन ॥४६९३॥
बेद पुराण सुनइ मन लाइ । मिथ्या मारग चित्त न सुहाइ ॥
सम्यक दर्शन सम्यक ग्यांन । चारित्र भेद के करैं बखान ॥४६९४॥
सब परि छांह धरम की करैं । राजनीति विध समझैं खरैं ॥
सस्त्र विद्या धनुष टंकार । बांण विद्या सीखे बहु सार ॥४६९५॥
दोउ वीर सब गुण संयुक्त । महासती सीतां के पुत्र ॥
सोहई मुकट बस्त्र बणे अंग । बहुत कुमर करैं सेवा संग ॥४६९६॥

सीता देखि करै मन आनंद । जाणै दोऊ सूरज चंद ॥
पुण्यवंत ए दोऊ वीर । कंचन वरण सब बणे सरीर ॥४६९७॥
वज्रजंघ मन भया हुलास । मनोवांछित मन पुंगी आस ॥
सब भूपति में कीरत्ति बढी । दिन दिन कला प्रति ही चढी ॥४६९८॥
निरभय राज करैं आंपणा । पूजा दान मन लाया घणां ॥
दया अंग विधि पालैं भली । करैं राज मन में अति रली ॥४६९९

अडिल्ल

पुण्यवंत जित जांइ तिहां रिध हूं घणीं
सुख संपति अधिकार जीत पावै अणी ॥
रहै धरम सु प्रीत कला दिन दिन बधै ।
लवनांकुस सुपुनीत क्रांति पल पल चढै ॥४७००॥

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस उदय भव विधानकं

६३ वां विधानकं

चौपई

लवनांकुस भए जोवन भेस । वज्रजंघ चितवै नरेस ॥
लक्ष्मीदेई राणी सुर ग्यांन । ससी चला पुत्री गुणखान ॥४७०१॥
कन्या बत्तीस उनूं की साथ । लव कूं विवाह दई नरनाथ ॥
रहस रली सूं बीतैं द्यौस । कुस कारण विचारैं अज हौंस ॥४७०२॥
किस राजा पैं भेजा दूत । ताकैं पुत्री रूप संजूक्त ॥
मानै वचन ढील न करई । मेरा कह्या वेग सिर ढरई ॥४७०३॥

कुस के लिये पृथ्वीधर के पास दूत भेजना

पृथ्वीवती नगरी का नाम । पृथ्वीधर है जिण ठां राव ॥
अमृतवती राणी सुन्दरी । कनकमाला वाकै पुत्तरी ॥४७०४॥
अैसी कन्या किसको वरै । भेजो दूत कारज इह सरै ॥
पठए दूत प्रथवीधर पास । गए बसीठ कन्या की आस ॥४७०५॥
नमस्कार सभा पइठ । निरमै वाक कहै अति दीठ ॥
वज्रजंघ घर भाणज दोइ । रघुवंसी जाणैं सब कोइ ॥४७०६॥
लव को पुत्री दई आपणी । बत्तीस अवर राजा की घणी ॥
कनकमाला तुम कुस कूं देइ । मेरा वाकि हिए धरि लेहि ॥४७०७॥
भूपति सुणि कोपे तिण बार । अरे मूढ कहो बात संभारि ॥
वन वन फिरती आणी वहन । अवर वा कुं धार्म के चिह्न ॥४७०८॥

पृथ्वी धर का कुपित होना

उसके जरणे भाखिजे किये । जाति कुलीन विचारी हिए ॥
यूं ही कन्या दीन्ही ताहि । अैसा मूरख मैं तो नांहि ॥४७०६॥
तेरा दोस कबहू नहीं दूत । प्रभू के बाक्य कहै संयुक्त ॥
बर के जब इतना गुण होइ । तब कन्या पावैं वर सोइ ॥४७१०॥
उत्तम कुल उत्तम ही जात । सीलवंत जन होइ विख्यात ॥
रूपवंत अवर बेस परमांन । बल जोवन वैस सुभ थान ॥४७११॥
विद्या गुण लछण तिह जात । महासुभट सारै परकाज ॥
ताकूं दीजे कन्या सही । कर्मकलंकी नै देणी नहीं ॥४७१२॥
बोलै दूत राजा सो फेर । रामचंद्र सुत जांण्यो सुमेर ॥
सीता तणैं गर्भ तैं भए । रघुवंसी सम अन्य न थए ॥४७१३॥
निरभय मन राख्यो आपणों । कन्या दे सुख पावो घणों ॥
क्रोधवंत बोलैं भूपती । तो मैं बुधि नहीं है रती ॥४७१४॥
राज सभा बोलजे सोच । बिन विवेक तेरा ह्वं लोच ॥
धका दिलाइ दीनां है काढि । बंध्या दूत पडी थी गाढ ॥४७१५॥
बज्रजंघ नैं सुणाया भेद । भूपति के मन उपज्या खेद ॥
में तो मुखतैं बचन निकाल । मान्या नहीं प्रथवीधर भूपाल ॥४७१६॥
अन्य वचण सुनाया भेद । होई दोस अपणां लगांउलवेद ॥
सबके मन आवैं संदेह । फिर कारण उन करघा न नेह ॥४७१७॥
लागैं खोड सगाई फिरैं । अब हूं जाइ समझाउं खिरै ॥
बज्रजंघ पृथ्वी ऊपर चढ्या । प्रथवीधर राजा सौ मिल्या ॥४७१८॥
भगनी सुत मेरैं इह बली । रामचंद्र की कीरत है भली ॥
कन्या देहु विलम्ब मति करो । मेरा बचन सत्य चित में धरो ॥४७१९॥
बोलैं प्रथईधर समझाइ । सीता में होता गुण राइ ॥
तो रामचंद्र क्यूं दई निकाल । तो में अकल नही भूपाल ॥४७२०॥
पहलीं भेज्या था तें दूत । अब तुम ही आए पहुंत ॥
बिन विवेक तू है अग्यान । अपणी आप घटावै कांन ॥४७२१॥

बज्रजंघ एवं पृथ्वीधर में युद्ध

मान भंग हुवा बज्रजंघ । निकल्या कोप ज्यूं केहरी स्यंघ ॥
लूटया नगर मचाई रोर । देस परगने मारे रोर ॥४७२२॥

बिजयारथ था आगेवार । सनमुख आन करी उन मार ।।
झूझ विजयारथ धरणी पडया । असा सबद प्रथीधर सुण खरा ।।४७२३।।

देस देस के बुलाए मित्त । सेनां जोडो जुध की रीत ।।
बज्रजंघ के पुत्रं सुणी । उण भी सेना जोडी घणी ।।४७२४।।

लवकुश का युद्ध के लिये प्रस्थान

दोन्यु कुमर रहसि मन भया । करैं आज साका हम नया ।।
एते घने काहु कूं लोग । हम दोनूं उस सेना जोग । ४७२५।।

सीता कहै तुम हो लघु बैस । रण में कैसे करो प्रवेस ।।
कहैं कुंवर हम स्यंघ समान । हस्ती भाजैं अति बलबांन ।।४७२६।।

ए कीटक कहा सरभर करैं । सत्री रण में ते क्यूं डरैं ।।
करि सनान पूजे जिनदेव । भोजन भक्ति करी गुरु सेव ।।४७४७।।

बागा पहरि बांधे हथियार । पंच नांम पढि बारंबार ।।
रथ परि चढे आप आपणे । आयुध संग लीने तहां घने ।।४७२८।।

बहुते संग चले सामंत । उततैं प्रथवीधर बलवंत ।।
बज्रजंघ प्रथईधर लडैं । दोउधां बहोत सूरमां पडे ।।४७२९।।

बज्रजंघ दीए हराइ । लवनांकुस तब आए धाइ ।।
जैसे स्यंघ सारंग कुं गहै । भाजै पसु सुधि न रहै ।।४७३०।।

जैसे रूई आक की उडैं । प्रथईधर की सेना मुडैं ।।
पग धरणे कूं रही न ठौर । पडी लोथ भागैं रण छोडि ।।४७३१।।

प्रथईधर का कंपै गात । पोछै दौडे दोनूं भ्रात ।।
तब लवनांकुस बोलै बोल । चेत वचन अब का करैं भोल ।।४७३२।।

हमारा नांम धरै था मंड । अब कांई छोडै क्षत्री झुंड ।।
क्षत्रीकुल ह्वै पीठ न देइ । तू कलंक अपने सिर लेइ ।।४७३३।।

सनमुख आइ झुझ काइ न करै । गर्व वयण अब कां बीसरै ।।
प्रथिवीधर छोडे हथियार । हाथ जोड ठाढा तिण बार ।।४७३४।।

तुम हो रामचंद्र के पूत । तुम प्राकर्म कोई न सकै पुहुंत ।।
मो परि क्रिपा करो कुमार । तुमसा बली न इण संसार ।।४७३५।।

दोइ कर जोडि करै वीनती । बज्रजंघ मिलिया भूपती ।।
कनकमाला मदनांकुस को दई । मन की खुटक सगली मिट गयी ।।४७३६।।

लवकुश की विजय

बहुत विधन प्रथवी धर आन । देई भेंट राख्या सनमान ।।
भुगति भोग बीते बहु द्यौस । बिदा भए चाले मन हौंस ।।४७३७।।

एक सहस्र राजा ले साथ । विजय देस सौं भूपति बांधि ।।
पोदनापुर और बहु नग्र । राजा श्रणि मिले तिहां सग्र ।।४७३८।।

गिर कैलास उतारी सैन । नंदचारजीत भए सुख चैन ।
महागंग तैं उतरे पार । बहुत तमें कीया निरधार ।।४७३९।।

देश परगनां अने बहु गाम । साध्या घणां राजा के नाम ।।
उहां ते चले देस श्रापणे । नरपति साथ लिए निज घणे ।।४७४०।।

पुंडरीकनी रहि कोस सात । सतखणें वैठि सीता मात ।।
उडी धूल छाये आकास । पूछे सीता सखी जन पास ।।४७४१।।

वे कहैं कोई नरपति आइ । तातै रज उडै बहु भाइ ।।
वज्रजंघ नें पहुंची खबर । लवनांकुस मारे अति गवर ।।४७४२।।

जीत्या देस परगने घणें । बहुतराय सेना संग बणे ।।
सीता सुणी पुत्र की बात । उपज्या सुख अर हरषित गात ।।४७४३।।

वज्रजंघ आग्या इह दई । हाट बाजार छावो सब नई ।।
गली गली हूवा छिडकाव । कीया महोछव राख्या भाव ।।४७४४।।

सीता कूं किया नमस्कार । वज्रजंघ मिलिया तिण बार ।।
घरि घरि हुवा अति आनन्द । ए प्रतापी हैं ज्यों सूरज चंद ।।४७४५।।

निरभय करैं निकंटक राज । भई जीत मनबांछित काज ।।
वज्रजंघ का प्रगट्या प्रताप । सुख मांही भूल्या दुख संताप ।।४७४६।।

सीता रहैसी पुत्रां नैं देखि । मन संतोष्या लख्यण गुण पेखि ।।
सकल लोक परिजा अति सुखी । तिहपुर कोई है नहीं दुखी ।।४७४७।।

दूहा

पुण्य बडो तिहुं लोक में, धरम भाव धरि चित्त ।।
सततैं कीरत आगली, धरमैं सुख अनंत ।।४७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुश दिग्विजय विधानकं

६४ वां विधानक

चौपई

राम लखमण चित आंणी सिया । मोह उदय वे व्याकुल भया ।।
कृतांतवक्र को दे उपदेस । सीता सुध लेहु फिरो तुं प्रदेस ।।४७४९।।

कृतांतवक्र ए आज्ञा पाई । सिंहनाद वन हेरया आई ।।
पर्वत गुफा जोई सब ठाम । तिहां न कोई मानुष्य नाम ।।४७५०।।

नारद मुनि का आगमन

नारद मुनि आया पुंडरीक । सहु जगत में हैं पूजिनीक ।।
बज्रजंघ लवनांकुस तिहां । नारद मुनि बैठा था जिहां ।।४७५१।।

देखा मुनि उठि ठाढा भए । नमस्कार करि आदर बहु दिये ।।
पट बैठाये नारद मुनि । सीलवंत नारद अति गुनी ।।४७५२।।

आगम करि कृतारथ किये । कवण कवण तीरथ में गए ।।
नारद मुनि कही सहु बात । जिह जिह कीनी तीरथ जात ।।४७५३।।

धरम सुणाया पढ्या श्लोक । वर्ण समझाए तीनूं लोक ।।
वाणी सुणि सब करैं डडोत । आसीरवाद मुनि कहे बहोड ।।४७५४।।

रामचंद्र लक्षमण सा तेज । सदा बिराजो सुख की सेज ।।
दिन दिन कला तुम्हारी जोर । तो सम बली न दूजा और ।।४७५५।।

लवनांकुस बोलीया कुमार । ग्रैसे हैं कुण बली अपार ।।
इस विध हमनैं असीस तुम दई । कवण बंस उत्पन्न ते भई ।।४७५६।।

बिवरां सुं समझावो मोहि । हम यह वातें पूछूं तोहि ।।
नारद कहै सुणउ बिरतांत । सुमेर अंत पहूंचै किह भांति ।।४७५७।।

रसना सहस्र होइं इकबार । राम लखमण गुण लहुं न पार ।।
जैसे सायर अगम अथाह । बालक कर पसारै बांह ।।४७५८।।

वह समुद्र सकै को पेर । रामचंद्र गुण ग्रैसे फेर ।।
तीन लोक के वह जगदीस । सुर नर सकल नवावै सीस ।।४७५९।।

राम नांम तै तूटैं पाप । रोग विजोग मिटैं संताप ।।
इष्वाक वंस कुल उत्तम आंदि । धरम क्रिया सब ही तैं बाधि ।।४७६०।।

दसरथ नृप प्रतापी खरा । च्यार पुत्र गुण लष्यण भरा ।।
रामचन्द्र प्रथम भी और । उनसों सकल बिराजै ठौर ।।४७६१।।

लखमण से ती हैं बहु प्रीत । भरथ सत्रुघन हैं महा पुनीत ।।
कैकया कुंवर दसरथ दीया । अयोध्या नाथ भरथ कुं कीया ।।४७६२।।

सूरजहास लखमण तिहां पाइ । खरदूखण सुत मारा तिह ठांय ।।
अन चीते सुं कीनी चोट । संबुक हण्यां बिबेकी बोट ।।४७६३।।

रामलखण कूं दीये बनवास । सीता संग रही रनवास ॥
दंडक बन में आश्रम लिया । संबक कुंवर तिहां तप किया ॥४७६४॥

पसचाताप करैं मन मांह । बिन अवगुण हत्या बिबेकी छांह ॥
बार बार रघुपति पछिताहि । हौणहार मिटै किह भाइ ॥४७६५॥

खरदूषण मुणि कीनां जुध । रावण करी हरण की बुध ॥
सीता कूं रावण ले जाय । रावण मारि सीता ले आइ ॥४७६६॥

अजोध्या आए जीती सब मही । इन समांन नरपति को नहीं ॥
करम सदै हुवा तिहां आंण । सीता काढि दई बन जांण ॥४७६७॥

मदनांकुस बोलै तिह बार । किण अवगुण पर दई निकार ॥
नारद कहै सीता की कथा । आठ सहस्र मैं सीता समरथा ॥४७६८॥

जनक सुता सत सील की खांन । सीता सम कोई सती न आण ॥
परजा दोख लगाया आइ । सुणी बात जब रघुपति राइ ॥४७६९॥

ता कारण वे दीनी काढि । परजा कै सिर दोष इह बाढ ॥
इसा पाप तैं कहां निसतार । परजा गह्या पाप का भार ॥४७७०॥

दूहा

बिन अवगुण जे दोस दे, तेई मूढ अयान ॥
अंतकाल दुख भुगत करि, पावैं नरक निदांन ॥४७७१॥

चौपई

लवकुश की प्रतिक्रिया

मदनांकुस बोलीया कुमार । राम लछमण जे बुध अपार ॥
उनहैं करी न न्याव की रीत । तो इह बणाइ है विपरीत ॥४७७२॥

अपणे घरका करघा न न्याव । उनके घर का है खोटा भाव ॥
जिनकौं दई हमकौं असीस । बिन विवेक तूं है रिष ईस ॥४७७३॥

बोल्या नारद सभा मझार । रामचंद्र इह किया बिचार ॥
परजा दोष लगाया घणां । बहुत भांति रघुपति नें सुण्यां ॥४७७४॥

नारद का पुनः आगमन

निश्चै सीता का सत रह्या । लोकां झूठ वचन इह कह्या ॥
जे नही राखु लोकाचार । तो अपकीरत होय संसार ॥४७७५॥

जुग जुग कथा हमारी चलैं । मोह कियो कोइ कहैं नहि भलैं ॥
जे पृथ्वीपति महै कलंक । अवर कुमारग कहै निःसंक ॥४७७६॥

एक दिवस है मरण निदान । ताथैं बुधि करीजै जांन ।।
उन सम दूजा नहीं है और । रामचन्द्र लखमण की ओर ।।४७७७।।

चक्र सुदर्शन उनूं के साथ । तीन लोक में दहै नरनाथ ।।
उहां तैं उठि सीता के ग्रेह । नारद मुंनी दिगम्बर देह ।।४७७८।।

दरसन देख कियो नमस्कार । सिधार्थ बैठा तिह बार ।।
पूछी सीता नारद सूं बात । किण किण तीरथ कीनी जात ।।४७७९।।

नारद बोलै तीरथ कथा । तब फिर बोलैं सिधारथा ।।
अरे नारद तुं काहि है मुनी । कलह करम करता फिरै घणि ।।४७८०।।

आपस में भिडावै जाइ । तो कूं बहुत कलह सुहाइ ।।
नारद कहै हम क्या किया । सहज सुभाव उपद्रव किया ।।४७८१।।

मो कुं दूखण लागै कहां । सीता रोवै नयन जल वुहा ।।
लवनांकुस सीता पै गये । देख्या रुदन सोच में भए ।।४७८२।।

माता कहो तुम सांचे वयन । कारण कवन भरे तुम नयन ।।
जो कोई तुमसे बोलें बुरे । ताकुं हाथ लगाउं खरे ।।४७८३।।

जीभ निकासुं हतों पराण । जे कोई कहै कुवचन आंन ।।
सीता कहै पुत्र तुम सुणों । कंत विजोग दुःख उपज्यो घणों ।।४७८४।।

पूछै कुंवर कहो तुम मात । हमारा कहाँ बसै है तात ।।
विवरा सकल कहो समझाय । तो हमारा विकलप मिट जाय ।।४७८५।।

पिछली कथा कही तब सिया । बहोत भांति उडै है हीया ।।
जैसी कथा नारद पै सुनी । तैसी बात सीता सब भणी ।।४७८६।।

लवकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान

तवै उठ्या कुंवर रिस खाय । रामचंद्र चित दया न आय ।।
गर्भवती कूं दई निकाल । अबै बैर लेहुं पिता पैं जाइ ।।४७८७।।

घेर अजोध्या मांडू जूध । अब उनकी खोउं सब सुध ।।
सेन्या जोडि अजोध्या चले । सूर सुभट संग लीने भले ।।४७८८।।

एक सो स्याठ जोजन का अंत । भले भले निकसे सावंत ।।
अयोध्या सीम पहुंते आंन । लूटे नगर बहुतेरा थान ।।४७८९।।

डेरा दीया नदी के पार । रघुपति ने पहुंचाई खार ।।
कोई आया बली नरेस । लूटै आस पास के देस ।।४७९०।।

लवकुश द्वारा युद्ध

जुध निमित्त उतरया है आइ । वाका दल बल कह्या न जाइ ।।
रामचन्द्र लछमण नें सुण्यां । मनमें सोच किया अति घणा ।।४७९१।।

ग्रैसा कुण भूपति बलवंत । जिसका दल कहिए नहि अंत ।।
वे चढि आए अजोध्यापुरी । ल्याई उणु मरण की घडी ।।४७९२।।

देस देस कौ लेख पठाइ । भूचर खेचर लिया बुलाइ ।।
नारद लिया भावमंडल पै गया । सकल भेद व्यौरा सूं कह्या ।।४७९३।।

भावमंडल सुंण सीता विजोग । मनमें बहुतें व्याप्या सोग ।।
लवनांकुस का सुण्यां प्राकर्म । बहूता तणौं गुमायो भर्म ।।४७९४।।

नरपति घणां उनां के संग । अजोध्या पति किया मान भंग ।।
भावमंडल मन हरष अति किया । चढि विमान पुंहता जिहां सिया
।।४७९५।।

पुंडरीक नगरी मां जाइ । बहुन भाई मिलिया सुख पाइ ।।
सगली बात कही समझाइ । कछु हर्ष कछु विसमें राइ ।।४७९६।।

सीता कौं बैठाइ विमान । गगन मार्ग पहुंचाई आंन ।।
सुर नर देखें कौतिक आइ । दुहुं ठां सेन्या ठाडी जाइ ।।४७९७।।

दूहा

राम लखमन सुभट, सत्रुघन बलवान ।।
भूचर खेचर प्रथीपति, चढे बजाइ निसान ।।४७९८।।

चोपई

विराधित हिरन केस सुग्रीव । नल नील अंतक भुज मीव ।।
महीपति निकस्या उनु साथ । सिंघ गरुड वाहन रघुनाथ ।।४७९९।।

वज्रजंघ अरु भूपति घणे । बाने बारी अग्रे वणे ।।
पडी मार चक्र अरु बांन । रथतें गिरे आप भगवान ।।४८००।।

फिर संभालि रथ ऊपरि चढे । महा क्रोधवंत मन बढे ।।
गोली सर ज्यों घनहरं धार । दोउंवा सेन्या होइ संघार ।।४८०१।।

हाथी घोडे रथ सुखपाल । पडी लोथ झूझैं भूपाल ।।
पग धरणे कूं रही न ठौर । श्रोणत सों रण भरया बहोरि ।।४८०२।।

अडिल्ल

पडी लोथ परि लोथ गिरथ चूंटं घने ॥
कांपैं कातर लोग नाम झूझ का सुंणैं ॥
लडैं क्षत्री लोग जाहि कुल लाज है ।
स्वामी धरम को चित करैं वे काज है ॥४८०२॥

चौपई

कहीं घायल घूमैं हैं घणे । कहीं सुभट झूझे हैं बणे ॥
धड सिर पडैं देह तें छूटि । लुटहा लोग करैं हैं लूट ॥४८०४॥

ग्यारहै सहस्र राम के उमरांव । लवनांकुस सौं धरि भाव ॥
पवन वेगि मिले हणवंत । अवर गए बहुते बलवंत ॥४८०५॥

सोरठा

देखो कलुका भाव, जीत्यां सुं सब ही मिलैं ॥
मित्र बिछडा सव जाइं, हारि जाणि बिछुडै सबैं ॥४८०६॥

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस जुध विधानकं

९६ वां विधानक

चौपई

युद्ध वर्णन

रामचंद्र लवनांकुस लडे । मदनांकुस लछमन सुं भिडे ॥
कृतांतवक्र लडै बज्रजंघ । लाग्या घाव विराधित संग ॥४८०७॥

तबैं रघुपति समुझावैं ताहि । क्षत्री रण छोडैं किहु नांहि ॥
मेरे रथ का हुवैं सारथी । धावैं वेग रचैं भारथी ॥४८०८॥

विराधित रामचंद्र रथ बैठि । धाए मारि मारि करि वइठि ॥
बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । छोडैं ज्युं घनहर बरषंत ॥४८०९॥

उततैं छोडैं गोली बांण । प्रकास चक्र लखमण कर तांण ॥
उन सर छोड करी तब मार । उडया फिरै चक्र तिह बार ॥४८१०॥

चक्र सुदर्शन फेरि संभार । तामैं उठैं अगनि की झाल ॥
गडगडाठ दांमनी उद्योत । दसौं दिसा सबकों भय होत ॥४८११॥

गहे धनुष कुमर निज हाथ । छूटैं बाण ज्यों एकै साथ ॥
चक्र जाइ प्रकमां दई । पुन्यवंत कों भय नहीं हुई ॥४८१२॥

फिर आया लछमन कर चक्र । मनमें सोचैं लछमन संक ॥
अनंतवीरज स्वामी ने कह्या । कोटि सिला उठावै जो हुवा ॥४८१३॥

हूं नारायण त्रिखंडी ईस । मेरी कवरण सकै करि रीस ॥
भूचर खेचर दानव देव । सब मिलि करि हैं मेरी सेव ॥४८१४॥

उनका बचन न झूठा पडै । चक्रवर्त्ति कोई अवतरैं ॥
तातैं चक्र करै नहीं घाव । अब हूं कहा करूं उपाव ॥४८१५॥

नारद द्वारा लवकुश का रहस्य खोलना

नारद सिधारथ दोउं आय । राम लक्ष्मण सुं कहैं समझाय ॥
ए दोन्युं सीता का पूत । बलपौरिष दोउं संयुक्त ॥४८१६॥

जब तुम सीता दई निकाल । बज्रजंघ आया भूपाल ॥
धरम बहिन करि वह ले गया । नगरी का लोग हरषित भया ॥४८१७॥

प्रसुति भई तिहां पुत्र दोइ जण्यां । जनम महोछव कीने घरणां ॥
लवनांकुस दोनुं बलवंत । इन सम अवर नहीं सावंत ॥४८१८॥

रामचन्द्र लछमन ने सुरणीं । अपरणी निंदा कीनी घरणी ॥
हमकूं उपजी महा कुबुद्धि । करी न कछु न्याव की सुधि ॥४८१९॥

सीता कूं सत हुवा सहाइ । वह पाप भया हमकूं आय ॥
सीता प्रतैं निकाला दिया । तो मान भंग हमारा भया ॥४८२०॥

एक दोख चुक्या था नहीं । दूजा पाप अब हुवा सही ॥
जे झुझ थे ऐसे पूत । तो दुख होता हमैं बहूत ॥४८२१॥

ए थे देव कला के सिसु । गोत घावतई हुवा न सुख ॥
उतरे रथ ते सनमुख चले । दोन्युं पुत्र आइ कैं मिले ॥४८२२॥

लव कुश द्वारा पिता की वंदना

लगे चरण रघुपति के पुत्र । कंठां विलंबन लेय विचित्र ॥
धन्य दिवस आज की घडी । पिता पुत्र मिल्या हुंडी हुंडी ॥४८२३॥

बिमाण चढ़ी सीता इह देखि । मनमें आनन्द भए विसेष ॥
जाण्यां पुत्र महा सपूत । अपणैं मन हरखित बहुत ॥३८२४॥

दूहा

पुत्र आकर्म कुं देख करि, सीता चित्त हुलास ॥
पुंडरीक फिर कैं गई, पुंगी मन की आस ॥४८२५॥

चौपई

लवकुश का अयोध्या आगमन

बज्रजंघ की अस्तुति करैं । वाका गुण रघूपति विसतरैं ।।
दयावंत धरम का अंस । तुमते रह्या हमारा बंस ।।४८२६।।

जे तुम आय वन के माझ । सीता कुं भय व्याप्या नांहि ।।
सीता की तुम कीनी सेव । उनका सत्त रह्या इन भेव ।।४८२७।।

बइठे चढि पुहपक विमांण । रामचंद्र लखमण बलवांन ।।
लवनांकुस आगैं आरूढ । रूपवंत लष्यण गुण गूढ ।।४८२८।।

छाया नगर गली सब झाडि । छिडक्या नीर गली सब बाडि ।।
घरि घरि बांधी बंदरवाल । घर घर देखण समही नारि ।।४८२९।।

बाल वृध्य सब आये लोग । देख रूप भूले सब सोग ।।
कोई नारि सराहै रूप । इन पटतर कोई नांही भूप ।।४८३०।।

धन्य सीता जाके गर्भ ए भए । दोनूं स्वर्ग लोक तैं चए ।।
कोई देख रही मुरझाइ । सिथल भई बहु ताकी काइ ।।४८३१।।

सिरतैं पडैं भूमि पर चीर । रही न ऊनूं की सुधि सरीर ।।
छूटी लटि कटि ऊपर आइ । मानू लगे भूयंगम सिराइ ।।४८३२।।

स्यांम केस अति सोभा वणी । खुले हीए दोडी तहां घणी ।।
वे अपने मन निरमै जांहि । देखैं लोग हंसै सब ताहि ।।४८३३।।

सब के मन कुमरों का ध्यांन । भूलि गईं सब ही अवसान ।।
हारह मेल मोती के छडे । तेभी टूटि भौमि परि पडे ।।४८३४।।

आभरण की सब सुधि बीसरी । व्याकुल भई पुर की अस्तरी ।।
उनूं के मन कुछ आवै नहीं । सगली नारि थकित होय रहीं ।।४८३५।।

ज्यो पतंग पीपक सूं नेह । देखे लोइ होमैं सब देह ।।
दीपक कै कछु नाही राग । जलै पतंग ता सेती लाग ।।४८३६।।

रतनवृष्टि अति करैं कुमार । आनंद भयो सगले संसार ।।
रहस रली सुं दिवस विहाइ । पूजा करैं जिनेस्वर राइ ।।४८३७।।

दूहा

पिता पुत्र सों जब मिले, हुआ अधिक हुल्लास ।।
चैन भयो सब नगर में, पूजी मन की आस ।।४८३८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस अयोध्या आगमन विधानकं

९७ वां विधानक

चौपई

राज सभा बैठिया नरेस । मंत्री कहै समझ उपदेस ।।
लवनांकुस तो मिल्या कुमार । सीता नैं आणो इंह बार ।।४८३९।।

राम का चिंतन

रामचंद्र चितवैं तिण बार । सीता सती गुण लछण सार ।।
परिजा युं ही दूषण दिया । ता कारण हम काढी सिया ।।४८४०।।
अब जे सीता आंणौं फेर । कहैं लोग अैसे भी टेर ।।
तो होवें फिर नई उपाधि । कीजे कारज मन विच साधि ।।४८४१।।
जे फेर प्रजा को होवैं दुःख । कारन कवण हमारा सुख ।।
चंद्रउदर विराधित हणुमांन । सुग्रीव नल नील प्रधान ।।४८४२।।
रतनजटी आदिक भूपती । तिनूं विचारी उज्ज्वल मती ।।
देस देस कूं लेख पठाइ । भूचर खेचर लेहों बुलाइ ।।४८४३।।
करों प्रतिष्टा श्री जिनदेव । दानमांन जिन गुरु की सेव ।।
सकल सिष्ट कौं द्यो जिमणार । सीता भी आणउं तिहं बार ।।४८४४।।
सब सुं पूछै मंत्र विचार । सीता सत प्रगटै संसार ।।
तब सीता कूं आंणो ग्रेह । सब के मन का मिटै संदेह ।।४८४५।।
भेज्या दूत सकल ही ठांइ । चीठी देखि चले सब राइ ।।
नरपति तब वहां आए घणे । सहु परिवार मनोहर बणे ।।४८४६।।
उतरे निकट अजोध्या आइ । सगली भूमि हुई छिडकाय ।।
सब को भोजन दे रघुपति । कीए सनांन बहोत तिह भती ।।४८४७।।
पंचामृता जीमवैं भूप । सोंधा तंबोल बहुत अनूप ।।
उत्तम गंगा जी का नीर । प्रासुख संवार कलस भरि नीर ।।४८४८।।
कनक कटोरे पिवैं नरिंद । बैठी सभा तिहां पंकति बंद ।।
भावमंडल विराधित हनुवंत । भभीषण सुग्रीव सामंत ।।४८४९।।

सीता को लेने के लिये भेजना

नल नील चन्द्रउदर राइ । रतनजटी रघुपति राइ ।।
पुहपक विमांण दिया इन संग । अन्य भूप भेज्या वज्रजंघ ।।४८५०।।
पुंडरीक में पहुंचे आइ । सीता कै सब लागे पाइ ।।
ईनांनै देख सीता गहभरी । विद्याधर बहु अस्तुति करी ।।४८५१।।
चलो माता तुम हमारे साथ । तुम कारण भेज्या रघुनाथ ।।
सीता कहै परजा ही सुखी । हम कारण मति होवो दुखी ।।४८५२।।

उन प्रसाद हम सुख में रहै । उनुके लोग बुरे सब कहै ।।
तातैं रहैं हम याही ठांइ । सुख सों राज करो रघुराइ ।।४८५३।।

फिर बोले विद्याधर बैंन । करैं प्रतिष्ठा पूजा जैंन ।।
ता कारण आए सब लोंग । चलो बेग श्री जिन जोग ।।४८५४।।

सीता का आगमन

सीता चढी पहुपक बिमांन । आई अजोध्या जब लोप्या भान ।।
भई रयण तब आश्रम लिया । महेन्द्र वन में वासा किया ।।४८५५।।

बीती निस रवि कीयो प्रकास । देखी अजोध्या सुख का बास ।।
सीता संग सहेली घणी । झोला डोली बहु विध वणी ।।४८५६।।

रथ पालकी अवर चकडोल । गज मयमंत चले झकझोरि ।।
बाजे तिहां आनंद निसान । तास सबद सुख उपजत कांन ।।४८५७।।

बंभन बहुत वेद धनि करैं । भाट बिरद सुंण कैं मन हरैं ।।
सब त्रिय आई दरस निमित्त । भई भीड गलिये बहुमंत ।।४८५८।।

नमस्कार करैं सब कोइ । जै जै सबद दसों दिस होइ ।।
सुर नर किंनर जय जय करैं । पुहप वृष्टि प्रथिवी पर परैं ।।४८५९।।

रतन वृष्टि करैं सीता सती । पहुंची तिहां बैठे रघुपती ।।
सब मिल उठ करी डंडोत । लोगां अस्तुति करी बहोत ।।४८६०।।

रामचंद्र की भ्रकुटी कठोर । स्यंघनाद वन आये छोर ।।
तिहं वन देखि डरैं सब कोइ । निसचै मरणा वईठां होइ ।।४८६१।।

ए तूह वनतें जीवत फिरी । अैसे बन दिष्या नहीं धरी ।।
जै मै याही भेजी बुलाइ । याकै चित्त अमर खन आइ ।।४८६२।।

उठी दौडि उन ही के संग । परजा में होवै मान भंग ।।
सीता सों बोलैं रामचन्द्र । जे हम करी रावण सों दुंद ।।४८६३।।

तेरे कारण किया संग्राम । रावण नें पहुंचाया जम धांम ।।
जै मैं जाणता अैसी वात । प्रजा दोष कहै इह भांति ।।४८६४।।

तो क्यों करता पाप की छाप । इतना दोष लिया मैं आप ।।
रण में मारे इतने लोग । घर घर व्याप्या सोग बिजोग ।।४८६५।।

जितनैं दोहु थां झुझ्या जीव । अैसा दोष लीया में ग्रीव ।।
अैसा दुख सो आंणी सिया जाइ । जग में यह चरचा चली इंह भाइ
।।४८६६।।

तो हम तोकू दई नीकाल । मेरे मन उपज्या इहु साल ।।
सीता कहै सुणु पति प्राण । मेरे सदा तुम्हारा ध्यान ।।४८६७।।

तुम हो तीन खंड का पती । न्याव सु कीया एक इक रती ।।
अई घर का कर सको नहीं न्याव । औरें का करिहो किहु भाव ।।४८६८।।

गरभवती काढी बनवास । आरत ध्यान मैं जीव का नास ।।
मरकरि भ्रमती नीची गती । तुम को होती पाप की चिति ।।४८६९।।

तीन जीव का होता दुख । तुम को होती नहीं गति मोख ।।
बिन विवेक तुम असी करी । जीव दया चित्त नहीं धरी ।।४८७०।।

फिर कर बोलैं रघुपति बैंन । लेहु दिव्य हम देखैं नैंन ।।
जो मैं तेरा सांच पती जूं । परजा देखैं तदि मैं नहिं खिजूं ।।४८७१।।

अग्नि परीक्षा

सीता कहै लेहूं दिव्य पांच । अब तुम देखो मेरा सांच ।।
खाऊं हलाहल ताता लोह । तराजू बीच तिष्ठाबो मोह ।।४८७२।।

जो मैं सत तो मैं सरभर रहूं । देखो प्रत्यक्ष सील जस लहूं ।।
रचो चिता दावानल देहु । ता मैं मेरा परचा लेहु ।।४८७३।।

जो मैं सती न व्यापैं आग । जो कछु दोष तो प्रांण ही त्याग ।।
रघुपति कहै चिता हु रचो । जीवत हु पेरैं आंणों सचो ।।४८७४।।

सुणैं लोक कंपे बहु भाइ । रामचन्द्र तैं कछु न बसाइ ।।
जं अंगारा तन कैं छुवई । दाझैं तुरंत प्राणनि गवई ।।४८७५।।

महा भयानक ज्वाला भुरी । जिनमां बचै न एको घडी ।।
अगन मांहि भस्म होइ जाइ । असी कहि कर सब पछताइ ।।४८७६।।

सिद्धार्थ बोलियो नरिन्द्र । म्हारी बात सुणौं रामचन्द्र ।।
मैं तप किया वर्ष बहु सहस । पंचमेर तीरथ जिन अंस ।।४८७७।।

अकृतम चैत्यालय जिन गेह । करी तपस्या मन वच देह ।।
जो कछु हुवै सीता मैं कलंक । ए सब जाणि निर्मूल निसंक ।।४८७८।।

असी नारद ने भी कही । रामचन्द्र मन बैठी नहीं ।।
सीता का सत्त महा अटल । जैसे है सुमेर अचल ।।४८७९।।

जो सुमेर धसि जाइ पाताल । सीता का सत खोटी चाल ।।
रवि का तेज भी होई हीन । सीता का सत होई नही खीन ।।४८८०।।

रामचन्द्र ते आए ओक । ओदो बन में कुल होका झोक ॥
राम हुकम से बन में गए । खोदैं धरती बन अविरल गए ॥४८८१॥

राजनि हठ को मेटै कोण । अरज सकैं को चलती पौन ॥
अगनि कुंड कौं खोदैं भूमि । सब नगरी में मांची धूम ॥४८८२॥

महेन्द्र उदय बन में मुनि एक । सरब भूषन सुमरण की टेक ॥
तीन रतन हैं वाकैं सत्य । आतमध्यान दया सुचित्त ॥४८८३॥

दस लच्छण गुण ताकैं सत्य । मास उपवास पारणा नित्ति ॥
विद्युतवलक व्यंतरी आइ । मुनि कूं दुख दिया बहु भाइ ॥४८८४॥

इहां श्रेणिक नैं प्रश्न किया । किम उपसर्ग व्यन्तरी नैं दिया ॥
श्री जिनवांणी अगम अथाह । मिटै सकल हिरदा की दाह ॥४८८५॥

पूरब दिसा गुंज पुर नग्र । सिंघ वक्रम राजा बल अगर ॥
श्री देई अस्तरीं सम्यक दृिष्ट । धरम करम करि महा श्रेष्ठ ॥४८८६॥

सरब भूषण ताथैं उत्पन्न । रूपवन्त सौहै लच्छन्त ॥
जोबन समैं ते कुमार । आठ सहस्र बिवाही उत्तम नारि ॥४८८७॥

कर्णं मंडला पट की धणी । रूप लच्छण गुण लावन्य वणी ॥
संगि सहेली बइठी पासि । देख्या चित्र सिराहई तासि ॥४८८८॥

कर में पट चित्र का गहै । वारंबार सराहना कहैं ।
हम सिखर का था लिख्यारूप । सबतैं पुरुष है वह अनूप ॥४८८९॥

एक सखी ऐसा विध हसी । तेरैं मन ए ही जुरत बसी ॥
हैम सिखर सौं संगम करि जांहि । असी सुणि राणी मुसकाइ ॥४८९०॥

राजा कानि पडी इह बात । क्रोधवंत हुवा बहु भांत ॥
खोटी चरचा एक में करैं । पर पुरुष की इच्छा धरै ॥४८९१॥

विभचारिणी समझी मनमांहि । गह्या खडग सौं मारूं जांहि ॥
त्रिय परि कहा उठाऊं हाथ । स्वारथा रूपी हैं सब साथ ॥४८९२॥

झूंठे सुख में राच्या जीव । इह कुटंब सब दुख की सींव ॥
राजि कुटंब विभव सब त्याग । सरब भूषण उपज्या बैराग ॥४८९३॥

लौंचे केस दिगम्बर भेस । हुवा जती गुरु के उपदेस ॥
वा इह विध तप आतम जोइ । क्रिया चौरासी यह विध होइ ॥४८९४॥

कटि विहार अजोध्या आइ । करै तपस्या मन वच काइ ॥
करता मंजला राणी सुख पाइ । रोवै पीटै बहुत रिसाइ ॥४८९५॥

मैं उनकी कछु करी न खोड । उनीं बिचारी मन मैं और ॥
अब मैं या परि तजौं परान । आरत ध्यान धरयो उन ध्यान ॥४८९६॥

अन पाणी बिन छोडी देह । भई जखिणी यक्ष के गेह ॥
तब मन मांही अवधि विचार । सर्व भूपत्त की मैं थी नारि ॥४८९७॥

बिन अवगुण मुझ दूषण ल्याइ । वह तप करैं अजोध्या जाइ ॥
अब मैं उनसौं साधू और । बंधन बेडी बांध्या मुनि पैर ॥४८९८॥

जखिणी द्वारा मुनि पर उपसर्ग

जब मुनि चाल्या लेण अहार । बंधण छूट गए तिण बार ॥
जखणी कु तब उपज्या क्रोध । ल्याई अगनि तिहां बणी न सोध ॥४८९९॥

अंतराइ मुनि फिर करि चल्या । मास उपवासी पारणा टल्या ॥
बहुरि उठ्या आहार निमित्त । आंधी चली मारगे चकित्त ॥४९००॥

कांटे मारग मांहि बिछाइ । पग धरणें कू नांही ठांहि ॥
वाही ठांम थाप्या मुनि जोग । नगर मांहि तैं आवैं लोग ॥४९०१॥

व्यंतरी गई सेठ भंडार । अहेडा दे थैली तिहा डारि ॥
प्रभात भया तब खोजैं सेठ । थैली पडी साध पग हेठ ॥४९०२॥

आए सकल अचंभ होइ । भली बात भार्खं नहीं कोइ ॥
कोई कहै जो होता चोर । तो क्यूं ठाढा रहै इस ठौर ॥४९०३॥

ध्यानारूढ खडा मुनिराज । कुतो बांध्यो मला सु आय ॥
भविजन आवैं मुनिवर जात । टालि उपसर्ग पखाल्या गात ॥४९०४॥

पूजा करी भोजन जिमाइ । बनमें मुनि ने गए पहुंचाय ॥
व्यंतरी रतन हार चुराइ । मुनि कै गले गयी पहराय ॥४९०५॥

राजा सुणी राज की मार । देख्या साध कै गले मझार ॥
इसकौं देखि यह चरचा करै । जती के भेष वह चोर फिरै ॥४९०६॥

आगैं फोडे थे सेठ भंडार । अब इनै हरया रतन का हार ॥
तबी अंधी समझावैं जैन । इनसो बरत धरया है बैन ॥४९०७॥

जे इछा चोरी की धरैं । तो क्यूं प्रत्यक्ष राखैं गलैं ॥
समझ वचन अपने घर गए । व्यंतरी चिहुन करैं नए नए ॥४९०८॥

करि शृंगार आभूषण भले । हाव भाव मुकताहल भलैं ।।
ताल मृदंग बजावै बीण । नयन चपलाई बीते मईन ।।४६०९।।

गावै सरस प्राण हर लेइ । आतमध्यान न चित्त डुलेइ ।।
नाचै गावै मधुरी तान । सुनत वचन हर लेई प्रान ।।४६१०।।

मन वच काया खडा अडोल । व्यापै नहीं हिया मैं बोल ।।
तब वह जष्यणी नागी भई । करै आलिंगन बहु बिध भई ।।४६११।।

अपणां ध्यान न छोडै जती । खिलघी भई यक्षिणी सती ।।
मुख भयानक रूप विकराल । अपामारग देह की लाल ।।४६१२।।

केई अजगर केई सांप । लपट दोडि देहीं संताप ।।
केंई रूप व्याघ्र का करैं । गज का रूप महा भय धरैं ।।४६१३।।

निसंकित किया व्रत दृढ गात । व्यंतरी दिया उपसर्ग बहु भांति ।।
महामुनीस्वर आतम ध्यान । तब ही उपज्या केवल ग्यांन ।।४६१४।।

जै जै सबद दसों दिस सोर । सुरपति नरपति आए कर जोडि ।।
छाये रहे विमांण आकास । देख्या इन्द्र अगनि धूम प्रगास ।।४६१५।।

ताकै ढिग है सीता खडी । अगनि काय निकसै तिहां बुरी ।।
ईसान इन्द्र पूछै विरतांत । इह अचिरज देख्या इस भांति ।।४६१६।।

देखैई कुंड देवता खरे । तिहां कोई धीरज नहीं धरै ।।
एह याकी ढिग ठाढी कौन । भाखो बात तो मुख मौन ।।४६१७।।

सौधर्म इन्द्र कहै समझाइ । इह सीता पटराणी रघुराइ ।।
सत की महिमा सुरपति करैं । वाहि बिपत्ति ग्रैसी बिध परैं ।।४६१८।।

इह सीता सतवंती खरी । असुभ करम तैं विपत इहै पडी ।।
इसके भाव ताणैं केवली । पूछै जाइ समझ विध भली ।।४६१९।।

दूहा

सुर नर खग सब आइया, अगनि कुंड जिह थान ।।
देखि ताहि सोचत सबै, मुनि कौं पूछैं ग्रांन ।।४६२०।।

इति श्री पद्मपुराणे सर्वभूषण केवल उत्पत्ति विधानकं

९८ वां विधानक

चौपई

राम द्वारा पश्चाताप करना

रामचन्द्र नैं देखी चिता । सीता जलैं तो लागै हत्या ॥
पंछी आदि तिहां सूक्ष्म जीव । भया हम पाप की नींव ॥४९२१॥

खोटी बात मुख तें मैं कही । ऐसी कदे हुई थी नहीं ॥
कठिन पइजमै बांधी आज । जे परमेसुर राखै लाज ॥४९२२॥

दोइ बेर यह विछडी सिया । बहुरि मिलाप विधाता किया ॥
अब यह जलै चिता में जाइ । फेरि लहूं सीता किह भाइ ॥४९२३॥

पहिलैं पडूं चिता में आप । मोपैं सह्या न जाय विलाप ॥
ज्वाला कठिन जोजन कै फेर । सीता खडी ज्यों परबत मेर ॥४९२४॥

पंचनाम हिरदै संभाल । जिन चौबीसौं सुमरे तिहकाल ॥
सरव भूषण को करी नमस्कार । मन वच काय सत रहैं हमार ॥४९२५॥

अग्नि परीक्षा में सफलता

अगनि मांझ तैं जो ऊबरूं । झूंठ कहैं तो त्रिणां परि जलूं ॥
पंचनाम पढि चिता में पडी । सीतल भई अगनि तिह घडी ॥४९२६॥

उमडया जल धरती पै फिरै । बहैं लोग धीरज नहीं धरै ॥
विद्याधर गमया आकाश । चहुंधां लोग बहै बहु त्रास ॥४९२७॥

सीता का गुण सुमरै लोग । हम सीता कुं किया वियोग ॥
झूंठे वचन लगाया दोष । कैसे हम पावां संतोष ॥४९२८॥

सीता सुमरण चित्त में आंन । उबरै सकल सीता कै ध्यान ॥
निघटया नीर भया सुख चैन । कहैं सकल अस्तुति के बैन ॥४९२९॥

जिहां थी आग निकुंड की ठौर । बण्या सरोवर बैठक और ॥
फूले कमल भंवर गुंजाहि । भले विरख तिहां सीतल छांह ॥४९३०॥
कंचन पाल सरोवर बणी । हंस चकोर तिहां सारस घणी ॥
जलचर जीव पंखी हैं तिहां । रतन स्यंघासन सीता जिहां ॥४९३१॥
जै जै सबद देवता करैं । पुहपवृष्टि बहुत हीं पडैं ॥
लवनांकुस सरवर में धंसे । मन आनंद दोनूं हंसै ॥४९३२॥
नया जनम माता का भया । जल के बीच गए जिहां सिया ॥
नमस्कार करि लागे पाय । सीता भेटीं हिए लगाय ॥४९३३॥

सीता कौं जल तैं बाहिर आंन । दई बिठाइ स्यंघासन थान ।।
सत की कांति छवि सोभा घणी । कनक सलाक अगनि में बणी ।।४६३४।।

सब ही का संसय मिट गया । जै जै सबद सब ही ने किया ।।
रामचन्द्र बहु अस्तुति करैं । धन्य सीता अैसा सत धरैं ।।४६३५।।

तेरी सार न जाणी मूढ । तुमको देस दिया अगूढ ।।
तुमारे गुण की लही न सार । तुमनैं घरि तैं दई निकार ।।४६३६।।

असुभ करम जब उदैं हुआ । सुख में दुःख इक व्याप्या सिया ।।
अब अपणां मन राखो ठौर । तुमने दुःख न होइ बहोरि ।।४६३७।।

आठ सहस्र में सीता बडी । तुमारे सत की कीरत बढी ।।
सब मिल सेव तुमारी करैं । चालो ग्रह मन संसा टरैं ।।४६३८।।

मेर सुदरसन तीरथ जात । विजयारध पर्वत बहुत भांत ।।
गिरि सम्मेद कपिलापुरी । चंपापुर वाणारस नगरी ।।४६३९।।

जिन जिन बन विपत्ति मे फिरे । अब वे सुख में देखुं खरे ।।
लंका देखो अबर सब द्वीप । बसे नगर जे समुद्र समीप ।।४६४०।।

हमने दुख तुमकों बहु दिया । षिमा करो हम पर तुम सिया ।।
राज भोग भुगतो सब सुख । अब सब टल्या तुमारा दुःख ।।४६४१।।

सीता का उत्तर

सीता कहै धिग यह संसार । धिग जाणौं त्रिया अवतार ।।
राज सुख धिग अर्थ भंडार । करूं तपस्या ज्यूं पाऊं पार ।।४६४२।।

त्रिया जनम फेर नहीं होइ । करूं ध्यांन आतमा सुध होइ ।।
लोंच केस वसतर दीनां डारि । प्रथीमती आरजका लार ।।४६४३।।

सकलभूषण का दरसन पाइ । करैं तपस्या मन बच काइ ।।
रामचन्द्र ने खाइ पछाड । भई मूर्छा घणी भई संभार ।।४६४४।।

औषध वैद जतन बहु करैं । सीतली बीजणां ऊपर फिरैं ।।
बावन चंदन सुं छांटैं काइ । बडी बेर में चेत्या राइ ।।४६४५।।

हाइ हाइ रोवैं रघुराइ । गए सकल भूषण की ठांइ ।।
देई प्रदष्यणा करि नमोस्तु । धर्म वृध्य कही मुनि कस्तु ।।४६४६।।

ज्यों सुदरसन मेरु कै पास । जंबु वृक्ष सोहै अति उचास ।।
तैंसे रामचन्द्र तिहां बणे । बारह सभा लोग तिहां घणे ।।४६४७।।

लखमण सत्रुघन बैठा तिहां । लवणांकुश मदनांकुश जिहां ।:
अभय निग्रंथ जोरैं हाथ । प्रकासो धर्म श्री मुनिनाथ ।।४६४८।।

सप्त तत्त्व के सूक्ष्म भेद । सब संसय का होवै छेद ।।
सदगुरु वचन सुणैं मन ल्याइ । ते निश्चै पंचम गति जाय ।।४६४९।।

सोरठा

मुनिवर ग्यांन अनन्त, दरसन ग्यांन चारित्र सौं ।।
कहत न आवैं अन्त, वांणी भेद समभावणी ।।४६५०।।

सायर अगम अथाह, ताहि कवण विध तिर सकैं ।।
ज्यूं अंजुलि भरि वांह, ताही किम सरभर करैं ।।४६५१।।

चौपई

दरसन ग्यांन चारित्र संजुक्त । प्रतक्ष वात कहणे की सक्ति ।।
श्रुतग्यानी कहैं वेद विचार । ते कहा जाणैं कहैं निरधार ।।४६५२।।

में मति थोडा करूं बखाण । अणुमात्र मैं भाखुं ग्यांन ।।
जीव तत्त्व सब सौंज अनूप । एक सिध एक संसारी रूप ।।४६५३।।

अजर अमर सिद्धालैं सिध । अमैं जीव संसारी त्रिविध ।।
स्वरग मध्य पातालैं बास । चहूंगति भ्रम्या न पुंजी आस ।।४६५४।।

क्षेत्र काल भावु तप होइ । समकित सों दिढ राखै कोइ ।।
संगति साध लहैं तब ग्यांन । ते जीव पावैं निरवांन ।।४६५५।।

करै धरम पावै गति देव । मध्यलोक मानुष्य सुख एव ।।
तिरजंच जोति में दुख घरा मूल । पापैं लहैं नर्क अमूल ।।४६५६।।

नरकों के दुख वर्णन

सप्त बिसन का सेवण हार । सात नरक दुःख सहैं अपार ।।
रत्न शर्करा बालुक पंक अरु धूम । तम महातम ए सातौं भूमि ।।४६५७।।

हुंडक देह काया बहु बढी । भूख पियास सीत उसन बढी ।।
मुख का छिद्र हैं सुई समान । दुख का अंत न जानु सयान ।।४६५८।।

ज्वारी चोर का काटैं हाथ । परदारा ताती पुतली साथ ।।
सुरा पांन कुं ताती रांग । आखेटक का काटैं आंग ।।४६५९।।

वैतरणी ताता है तिहां । खासी पकडै जलु मैं जिहां ।।
मांस अहारी मुख ताता खंड । छेदन भेदन कीजिए खंडो खंड ।।४६६०।।

केई ऊपर मारा धरैं । चीरैं देह टूक दोइ करैं ।।
बहुरि हुवै देह की देह । मारैं मुदगर कीजे खेह ।।४६६१।।

पारा जिम समटै खंड फेर । पाप्या मैं राखई घेर ।।
जिहि जीव का खाया मांस । तिरण कारण वे पावैं त्रास ।।४६६२।।

निस भोजन प्रणगालो नीर । उंहा न जाणैं कैसी पीर ।।
मिथ्याती कु ऐसी गती । जिनवांणी कु न धारैं चिती ।।४६६३।।

देवसास्त्र गुरु निसचैं नहीं । ताहि नरक गति आवैं सही ।।
जे दुख मैं वरणौं समझाइ । ताका पार न पाया जाइ ।।४६६४।।

दूहा

उपसम वेदक खाइका, समकित विध है तीन ।।
जे मनमें निसचै धरै, ते जाणौं परवीन ।।४६६५।।

चौपई

जाकै है समकित दिढ चित्त । ते गति खोटी भ्रमैं न नित ।।
लहैं मुकति समकित परसाद । समकित बिना करणी सब वाद
।।४६६६।।

अंडज पोतज गर्भ उतपत्ति । स्वेतज सनमूर्छन उपजत्त ।।
पुदगल लानु ए विध धीर । अहारक तेजस कारमन सरीर ।।४६६७।।

संख्यात परदेसी अवर असंख्यात । अनंत प्रदेसी जीव की जाति ।।
अष्ट अंग ग्यांन का भेद । पंच खरे तीन खोटे रेद ।।४६६८।।

मतिश्रुत अवधि मनपरजय भली । पंचम ग्यांन कह्यो केवली ।।
चक्षु अचक्षु अवधि ए ग्यांन । दरसन मन परजय केवल प्रमांन ।।४६६९।।

कुमति कुश्रुति खोटी अवधी । करै दुर आतमा कु सौधि ।।
मध्यलोक में अढाई द्वीप । अवर समुंद्रह इहै समीप ।।४६७०।।

द्वीप समुद्र वर्णन

जंबुद्वीप जोजन इक लाख । लवण उदधि चउर्धा पाख ।।
जिह में बडा सुदर्शन मेर । षट् कुलाचल ढिग बहु फेर ।।४६७१।।

हिमवन महा हिमवन नील । विजयारध परवत असथूल अमील ।।
सीता नदी सीतोदा और । चउदह नदी निकसी गिरि फोड ।।४६७२।।

क्षेत्र भरत ऐरावत होइ । दस विध क्षेत्र दसों दिस सोइ ।।
घटै बढै तिहां व्यापै काल । एक सौ साठ खेत्र सुविसाल ।।४६७३।।

सदा सासता है वह खेत । दीप अढाई मांहि समेत ॥
धातकी पुष्करार्ध दुजा जाण । मानुषोत्र लगि पुरुष प्रवांन ॥४९७४॥
तामैं व्यंतर किन्नर बसैं । किंपुरुष महागंधर्व दिसैं ॥
यक्ष राक्षस भूत पिशाच । जोति पटल जोतीस्वर सांच ॥४९७५॥
नवग्रह नक्षत्र सतावीस । सोलह स्वर्ग सागर बाईस ॥
सौधर्म ईसान सानत्कुमार । महिंद्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सार ॥४९७६॥
लांतव कापिष्ट शुक्र महाशुक्र । सतार सहस्रार सह सुक्र ॥
आनत प्रानत आरन अच्युत । सोलम स्वर्ग कहे गये भगवंत ॥४९७७॥
ताके ऊपर नव नवोत्तरे । उस परि पांचि अणुत्तरे ॥
विजय विजयंती जयंत । अपराजित सरवारथ सिद्धि निवसंत ॥४९७८॥
मुगति क्षेत्र है ताके अंत । तिण ठां पहुंचा सिद्ध अणंत ॥
रामचन्द्र कीया परसन्न । मुगति भेद समझावो भिन्न ॥४९७९॥
मिटैं संदेह संसय को पीर । अजर अमर नहीं व्यापै ईर ॥
दरसन ग्यांन का नाहीं छोड । सदा सरवदा नहि है विछोह ॥४९८०॥
संसारी कुं कदे न सुख । सुभ असुभ तैं सुख अनैं दुःख ॥
सुभ संजोग तैं सुख का मूल । माया मोह में रहिया भूल ॥४९८१॥
भया विछोह सब सुख विसरया । रोग सोग आरत में भरया ॥
ए सुख जाणों दुःख समांन । मोक्ष सुख का अंत न आन ॥४९८२॥

सुख की तरतमता

सबतैं सुखी जानो प्रथीपति । उनतैं सुखिया है चक्रवति ॥
किन्नर देव हैं इनतैं सुखी । जोतगी के सुख बहुतैं बकी ॥४९८३॥
इन्द्र धरणेन्द्र सब ही तैं बाधि । सरबारथसिध सुख अगाध ॥
सबतैं बड़ा मोक्ष का सुख । तिहां न व्यापै कबही दुःख ॥४९८४॥
ते सुख किस पै बरणे जांहि । असी वसतु मही पर नांहि ॥
रामचन्द्र कीया नमस्कार । मोष्य पंथ किम उतरै पार ॥४९८५॥
सरवभूषण बोल्या केवली । जिन धरम वाणी सबतैं भली ॥

तत्व वर्णन

सप्त तत्त्व षट द्रव्य बखांन । नो पदार्थ नैं दरसन ग्यांन ॥४९८६॥
पंचकाय लेश्या हैं षष्ट । द्वादश अनुप्रेक्षा जू अष्ठ ॥
दयाधरम दस विध स्यौं करैं । सोलह कारण का व्रत धरै ॥४९८७॥

सम्यक्त सुं पाली चारित्र । ते मुनि कहिए सदा पवित्र ॥
जोतैं जोति मिलैं जब भाइ । तब वह अपा निरंजन राई ॥४९८८॥

सम्यक बिना करैं इह तपं । ग्यान कहैं के सुमरैं बहू जपैं ॥
मिथ्या सौं ल्यावै जे चित्त । उनको होवै नरक की थित्ति ॥४९८९॥

आतम ग्यान दीपक की जोइ । पावैं मुगति सिध तब होइ ॥
करम सकल हो जावै दूरि । रहै ग्यान नित प्रति भरि पूरि ॥४९९०॥

दूहा

जे जीव दृढ समकित धरैं, मिथ्या धरम निवार ॥
निसचैं पावैं परमपद, भुगतैं सुख अपार ॥४९९१॥

चोपई

जीव तत्त्व संसारी दोइ । भव्य अभव्य उभय विध होइ ॥
अभव्य तपस्या करैं अनेक । काया कष्ट बिना बिबेक ॥४९९२॥

जैं पावैं नवग्रीवक थांन । बहुरि भ्रमैं भवसायर आन ॥
मुकति न जाय पावई निगोद । अभव्य न सीझै पचरहै अमोद ॥४९९३॥

भव्य जीव समकित दिढ धरैं । ले चारित्र भवसायर तिरैं ॥
लहै मुक तिहां सुख निधान । दरसन तहां अनंत बल ग्यान ॥४९९४॥

पुदगल है वीजा तत्त्व । कासन मध्य होइ सब थिति ॥
दया भाव पूजा संजुत्त । मानव देह विना न होइ मुक्ति ॥४९९५॥

आश्रव होइ करम इह भांति । ज्यौं सरवर में नीर बहात ॥
बांधै पाल बधै तिहां नीर । वरसैं घनहर गहर गंभीर ॥४९९६॥

संवर पंचम तत्त्व का भेद । पालई फोडि करैइ जब छेद ॥
वधता नीर सकल बह जाइ । जो कछु पहिलै रहै तां ठांइ ॥४९९७॥

निर्जरा तत्त्व षष्ठमां जान । सुकै नीर जब भान तपैं आन ॥
ऐसैं करम निर्जरा होइ । मोख तत्त्व सातवां सोइ ॥४९९८॥

रामचन्द्र सुणि बोलै वैन । सबतैं उत्तम समझो जैन ॥
सकल बात को मिटयो संदेह । झूठी माया जांणी एह ॥४९९९॥

जीव का सगा न संगी कोइ । धर्म सहाई जीव कौं होइ ॥
राज विभूति तजौं सब नारि । मोया लछमन सोहू अपार ॥५०००॥

जिसकी माया न छूटै घडी । कैसे दिष्या पालौ खरी ।।
सकल भूषण बोलै सुविचार । तुम हो मुक्तिगामी अवतार ।।५००१।।

कोई दिन तुम मुक्ती राज । पाछै करौ आतम काज ।।
उपजै केवल पावै मुकति । सुर नर सकल करैगे भगति ।।५००२।।

इतनी सबकै निसचै भई । सेवा रामचंद्र मन दई ।।
सब काहू जाण्यां जगदीस । सुर नर सकल करै वे भगति ।।५००३।।

अडिल्ल

श्री रामचंद्र सुंनि धरम महिमां करी
जैन धरम सुं चित्त रहै पल पल घडी ।।
करई सेव सब लोग श्री रघुनाथ की
आवैं तप वन मांहि सुता जनक राय की ।।५००४।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता दिख्या राम धरम श्रवण विधानकं

९९ वां विधानक

चौपई

बिभीषण द्वारा प्रश्न

भभीषण बोलै दोई कर जोडि । कहो धरम बाणी जब होडि ।।
मेरे मनका मिटै संदेह । राम लखमण कूं घणां सनेह ।।५००५।।

किण कारण पाया वनवास । दंडक वनमें रहै निरास ।।
रावण पाई विद्या घनी । चार वेद ग्यांनी अर गुंनी ।।५००६।।

विद्याधर सेवैं सब आइ । तीन खंड के रावण राइ ।।
जा सनमुख जीत्या नहीं कोइ । चंद्र आदि मान भंग होइ ।।५००७।।

ज्ञानवंत जाणै राजनीत । परनारी परि डोल्या चित्त ।।
सीता कौं हरि लंका गया । तासैं बहुत उपद्रव भया ।।५००८।।

लछमण कै करि रावण मुआ । पहिला बंध बांध्या नवा ।।
सीता पतिव्रता अवतरी । इह कौं सदा विपति मैं परी ।।५००९।।

किहू कारण चरचा करै लोग । राजि भोग मैं भए विजोग ।।
इनके भव भाखो समझाइ । मेरे मनका संसय जाइ ।।५०१०।।

सर्वभूषण द्वारा विस्तृत वर्णन

सर्वभूषण बोले भगवान । बारह सभा सुणै दे कान ।।
जंबूद्वीप मई खेत्रवि भरत । दक्षण कोड नगरी समकित ।।५०११।।

मेंरदत्त सेठ बसैं तस मधि । सुनंदा असतरी महा सुबुधि ।।
ताकैं गरभ भए दो पूत । रूप लख्यरण सोभा बहुत ।।५०१२।।

प्रथम धनदत्त दूजा वसुदत्त । जगबल एक प्रोहित सोहंत ।।
सागरदत्त वरिणक तिहां बसैं । कनकप्रभा कामिनी संग रसैं ।।५०१३।।

गुणवंती ताकै पुत्तरी । रूपवंत लावण्य गुणभरी ।।
जोबनवंती गुणवंती भई । पिता जाइ धनदत्त नैं दई ।।५०१४।।

तिलक करि श्रीफल दे गोद । दोउंघां भयो हरख प्रमोद ।।
श्रीकांत नाम वणिक तिहां बसै । जाकै दीनार बारह कोडि लसैं ।।५०१५।।

उनकै मन तब बैठी बुरी । धनदत्त सु सगाई क्यु करी ।।
अैसी नारि सोमैं मो गेह । माता सुंरिण पुत्र को नेह ।।५०१६।।

धीरज सौं समझावै बात । चिंता सौं बहु दूवैं दुखी गात ।।
अब मैं जाइ करि करूं उपाव । राखि पुत्र अपणां मन ठांव ।।५०१७।।

माता वचन सुणि छोडया सोच । सागरदत्त घरि आय पहुंत ।।
कनकप्रभा सुं जाइ करि मिली । मनकी बात प्रगासी भली ।।५०१८।।

कहा नयदत्त कहां धनदत्त । वाका घर आया तुम चित्त ।।
कन्या दीज्ये इसा नैं जांइ । मेरै लखमी की अधिकाइ ।।५०१९।।

द्वादस कोड़ि दीनार घर मांहि । मेरी सरभर कोई नांहि ।।
फेर सगाई अपनी लेह । मेरा पुत्र नैं कन्या देह ।।५०२०।।

रतनप्रभा सुणि मन ललचाइ । कहैं कंत नैं और ही दिखाइ ।।
श्रीकांत है महा बलवंत । रूप लख्यरण महा सोभावंत ।।५०२१।।

सब तैं सुखी लक्ष्मी का धणी । वाहि देहु कन्या आपणी ।।
धनदत्त सेती लेहु छुडाइ । बोली अैसे घरणी इह भाइ ।।५०२२।।

वसुदत्त सुंरिण कोप्या बहु भांत । क्रोध चढे मसलै दोउ हाथ ।।
श्रीकांत खोटी बुधि लाग । चाहै धनदत्त की मांग ।।५०२३।।

जगबल सेती मता बिचार । गह्या खडग छिप्या तिह बार ।।
अरध समय अंधियारी रयन । वसुदत्त चल्या कपि राते नैंन ।।५०२४।।

नील बरण के वसतर साझि । जतन किया बैरी कैं काज ।।
श्रीकांत की पहुंच्या पौल । सोवत लह्या बगीचै ठौरि ।।५०२५।।

वसुदत्त नैं तब सोच्या ग्यान । अणचित्या का हणुं परान ।।
श्रीकांति सौं जणाई सार । तो मैं बल अधिक तो संभार ।।५०२६।।

मो सुं तूं करि जुध अपार । श्री कांति कर गही तरवार ।।
दोनुं जूझ्या एकण ठांव । भए मृग बंध्याचल भाव ।।५०२७।।

सागरदत्त सुणि इह बात । रत्नप्रभा समझाई इह भांत ।।
इह कन्या धनदत्त कूं दई । तेहैं उपाधि उठाई नई ।।५०२८।।

ता कारण तैं इतनी करी । वाके प्राण गए इह घरी ।।
धनदत्त कौ दे कन्या विवाह । कीए मंगलाचार उछाह ।।५०२९।।

लिख्या लगन साधी सुभ घडी । विवाहि दई गुणवंती तिह घडी ।।
बीता दिन बहुतैं इह भेस । चरचा करैं लोग इह देस ।।५०३०।।

इनका विवाह अभाग्या भया । वसुदत्त जीव एण कारण गया ।।
असी चरचा सुणी धनदत्त । वैराग भाव धरयो उंन चित्त ।५०३१।।
धिग विवाह धिग यह असतरी । ता कारण विपत्ति मोहि पडी ।।
तज्या देस वन मारग गह्यो । वन मैं रहै का था दुख सह्यो ।।५०३२।।

गुणवंती छोडी घर मांझ । कंत विना झुरै दिन सांझ ।।
मिथ्या धरम निसचैं मन धरैं । जैन धरम की निंदा करैं । ५०३३।।

मरि करि भ्रमैं मृगनी जाइ । बिंध्याचल मैं पाई ठांइ ।।
जिहां थे मृग दोन्युं इस मेर । हिरनी देष लई धनां घेर ।।५०३४।।

दूजा मृग दउड्या पाछैं ताहि । दोनूं मरि करि हुवा वाराहि ।।
उहां तै मरि हाथी दोई भए । भैंसे सांड की पीचीता थए ।।५०३५।।

बहुर सीयाल भ्रमैं जौंन । वैर बंध लाग्या इह गौंन ।।
वह धनदत्त फिरैं वन बीच । बिनां नीर तीरषा भए मीच ।।५०३६।।

भई रयण तिहां देख्या साध । गही मौंन जिन धरम आराध ।।
उनके कमंडल परिदिष्ट करी । जल पीवण की इछा की धरी ।।५०३७।।

मुनिवर अवधि विचारै ग्यांन । इह है भवि जीव इस थांन ।।
या कौं दीजे दया संबोध । धुरण भाव पुजैं इहै प्रोध ।।५०३८।।

मौन छोडि बोलैं तब जती । निस भोजन तैं खोटी गती ।।
जल पीवत होवई पाप । बहुं गति मैं सहै संताप ।।५०३९।।

अपणैं हाथ हम जलनै देह । तेरा मन इच्छै तो लेहु ।।
धनदत्त कै मन निसची भई । अनपांणी निस आखडी लई ।।५०४०।।

देहि छांडि सौधर्म विमान । महा रिधवंत सब मैं प्रधांन ।।
भुगति आव श्रेष्ठपूर नयर । मेर सेठ नांमी सरवर ।।५०४१।।

धारणी नाम थी पटरानी । सीलवंत सोभासु वणी ॥
पदमपुत्र जसके गरभ भया । देव जीव सुख दाई थया ॥५०४२॥

निसतर छाया धरमेष्ट । श्री दत्तारानी सम्यगदृष्टि ॥
प्रजा सुखी दुखी कोई नाहिं । सघन गेह तिहां सीतल छांह ॥८०४३॥

पदमरुचि हुवा असवार । वृषभ देख्या वनमें तिह बार ॥
अंत वांडवै थी पडया बिललाइ । वाहि देखि उपजी दया आइ ॥५०४४॥

उत्तर भूमि वाकै ढिग गया । पांच नाम श्रवण में दिया ॥
श्रीदत्ता गर्भ उपज्यो सो आइ । वृषभध्वज पुत्र कंचन सम काइ ॥५०४५॥

जनम समै दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ॥
दिन दिन कुमर बधै सुख मांहि । सात बरस का हुवा नरनाह ॥५०४६॥

जिह वन में मुवा था वहैल । वा बन निकस्या करण सहल ॥
देखि भूमि भव सुमरण लई । उतरा तिहां पिछली सुध थई ॥५०४७॥

हुं था वृषभ मरघा था परघा । पंचनाम किण ही कह्या खरा ॥
वहै प्रसाद राजा सुत भया । भव सुमरण चित में थया ॥५०४८॥

जेहुं मरता यूं ही परा । असा जनम कहां तैं धरघा ॥
अब जे उसकूं देखूं आजि । देहिं सकल वाहि कूं राज ॥५०४९॥

राज कुंवर इहै आज्ञा दई । चैत्यालय नींव दिवाओ सही ॥
कोस एकलों देहुरा करघा । तिहां चितराम बहुत विध धरघा ॥५०५०॥

भांति भांति के चित्र संवारि । वेद पुराण लिखाए तिह बार ॥
जिन चौईसौं बिंब कराइ । वृषभ की सूरत पौलि लिखवाइ ॥५०५१॥

तिहां रखवाले राखे घणे । दुष्ट मिथ्यादृष्टि कूं हणे ॥
पदमरुचि सेठ आया देहुरे । सहस्रकूट ध्वजा फर हरे ॥५०५२॥

देखी पौलि वृषभ का रूप । पिछली सूरत संभालि स्वरूप ॥
ध्यान लगाइ रह्या तिहां सेठ । किंकर गया राजा कै विठ ॥५०५३॥

कही बात व्योरा सुं जाइ । आया कुंवर जिण मंदिर ठांइ ॥
पदमरुचि देख्या राजकुमार । रहे थकित होइ इतनी बार ॥५०५४॥

तब पूछै वृषभध्वज राइ । तू कहा देख रह्या रिझाइ ॥
कहै सेठ पिछला विरतांत । सुनकरि आनंद्या बहु भांति ॥५०५५॥

धन्य पदम रुचि तेरी बुद्धि । तातैं पाई मैं वह रिद्ध ॥
तुम प्रसाद मैं यह मति लही । जो मन इच्छै सो थों सही ॥५०५६॥

निसक्खा नैं दिक्षा लई । राजविभूति वृषभध्वज नैं दई ।।
वृषभध्वज राज्य करि । भुगतैं राज करि मन सुधि ।।५०५७।।

पहली करी धरम की साइ । सुख भुगतैं सब मन भाइ ।।
वृषभध्वज राज करया बहु वर्ष । समाधिमरण कीयौं बहु हर्ष ।।५०५८।।

ईसान स्वर्ग परि हुवा देव । भुगतैं सुख किंनर करैं सेव ।।
पदमरुचि धरम के ध्यान । ईसान स्वर्ग में पाया विमान ।।५०५९।।

बिजयारध पच्छिम विदेह । नंदावत नगरी उत्तम गेह ।।
नंदीस्वर तिहां भूपती । कमलप्रभा राणी सुभ मती ।।५०६०।।

पदमरुचि जीव गरभ अवतरया । नयणानंद नाम तिहां धरया ।।
नंदीस्वर भरि संयम भार । नयनानंद नैं राज दिया तिह बार ।।५०६१।।

बहुत दिवस उन कियो राज । तप करि आप संभारया काज ।।
महेन्द्र स्वर्ग पाया सुख ठाम । उहां तैं चया षेमांकर गांम ।।५०६२।।

मेरु सुदरसन विमल वाहन भूप । पदमावती राणी सस्वरूप ।।
श्रीचन्द्र जनमियां कुमार । पिता नैं सौंप्या सब संसार ।।५०६३।।

विमलवाहन लिया संयम योग । श्रीचंद तिहां भोगवैं भोग ।।
समाधिगुपति मुनि आगम भया । ताकैं संगि सिष्य तप किया ।।५०६४।।

वनमें करैं तपस्या घणी । इनकी सूरत नगर में सुणी ।।
चले लोग बहु मुनि कौं जात । बाजंतर बाजैं बहु भांति ।।५०६५।।

राजा जब बाजंतर सुण्या । मनमैं सोच किया तब घणां ।।
नहीं कोई तीरथ नहीं कोइ परब । तिहां चली परजा बहु सरब ।।५०६६।।

किंकिर आइ जणाई सार । मुनिवर आए वन है मझार ।।
दरसन कौं परजा इह चली । भूपति सुणि उपजी मन रली ।।५०६७।।

मुनि के पास जाना

उतरि स्वंघासण करी डंडोत । नरपति चल्या तब लौग बहोत ।।
दरसन पाइ परदक्षनां दई । नमस्कार करि पूजा भई ।।५०६८।।

पूछै धरम जोडि दोइ हाथ । वांणी कहो श्री मुनिनाथ ।।
मुनि समाधि कहै बखान । च्यार वेद के उत्तम ग्यान ।।५०६९।।

प्रथमानुजोग प्रथमही जांन । करणानजोग दूसरा बखांण ।।
चरणांनजोग द्रव्यानजोग । इणके भेद सुणैं सब लोग ।।५०७०।।

नव विध है इन्हां का भेद । अक्षेपनी प्रक्षिप्तपनी पुंन भेद ।।
निक्षेपनी निक्षेप का संवेदनी । संसाभिवेद निरवेदनी ।।५०७१।।

पुंन भोगवै राम कारनी । जती सरावग विध सब भणी ।।
राजा सुणत भयो वैराग । राज विभूत कुटंब सब त्याग ।।५०७२।।

धुरतकांत पुत्र को राज । आप किया दिगंबर साज ।।
समाधिगुपत मुनिवर ढिग आई । दिक्षा लइ मन वच काइ ।।५०७३।।

तपस्वी जीवन

दया भाव आतम सुं चित्त । सूक्षम बादर त्रस थावर थित ।।
सब जीव जाणैं आप समान । क्रोध लोभ तजि माया मांन ।।५०७४।।

मास उपवास पारणां एक । कबही च्यार मास की टेक ।।
दान अदत्ता भूल न लेइ । उदंड बिहार इह विध सों करेइ ।।५०७५।।

कायोत्सर्ग पदमासन जोग । पूजा करैं सकल तिहां लोग ।।
रहै मौनि निसवासर तिहां । धरम हेंत कबही कछु कहां ।।५०७६।।

मुनि वाणी जीव का आधार । भव्य सुणैं ते उतरैं पार ।।
मिथ्यादृष्टी कै हिये न सांच । सेवैं विषइंद्री सब पांच ।।५०७७।।

सकल विषय छंडी मुनिराज । संसारी सुख मन न सुहात ।।
आप तिरैं त्यारैं बहु जीव । असा साधु धरम की नींव ।।५०७८।।

सहस अठारहै अंग समेत । सींल व्रत पालैं करि हेत ।।
त्रिण समान परिग्रह है नहीं । दसौं दिसा अंबर है मही ।।५०७९।।

सुमति पांच अरु तीन गुपति सही । बारह व्रत विध सुं पालै वही ।।
सहै परीसा बीस अनैं दोइ । बारह अभ्यंतर तप जोइ ।।५०८०।।

चउरासी किरिया कौं करैं । अठाईस मूल गुन धरैं ।।
समकित सों निश्चौं है । चित्त अनुप्रेक्षा सु विचारैं नित्त ।।५०८१।।

सीयालै सरवर की पाल । पडै सीत तिहां महा विकराल ।।
ऊनालै परवत पर जोग । छोडे सकल जाति का भोग ।।५०८२।।

वरखा काल वृष्य तल खरे । तिहां रौं च्यार मास नहीं टरैं ।।
मछर डांस अति डसैं बयाल । निरभय निर्चित मन की चाल ।।५०८३।।

देही छोडि ब्रह्म सु विमांन । भया इन्द्र महा बलवांन ।।
दस सागर की पूरण आय । ते सुख किस पै वरण्यां जाईं ।।५०८४।।

मृनाल कुंड नगर का नांव । विजयसेन राजा तिहं ठांव ।।
रतनचूला ताकैं असतरी । वज्रकुमर जनम्या सुभ घडी ।।५०८५।।

हेमवती परनाई नारि । स्वयंभ पुत्र जनमीया कुमार ।।
श्रीभर्त पुरोहित दयावंत । स्वस्तमती सत्री महागुनवंत ।।५०८६।।

मृगनी जीव भ्रमी बहु जौनि । भई हथनी गंगातट गौन ।।
कर्दम माहि हथनी थकी । उहां तैं बाहर निकल नहीं सकी ।।५०८७।।

व्याकुल भई मरण के भाव । तरंगवेग विद्याधर नाम ।।
आकासगामनी गया था जात । याहि देखि करुणा भई गात ।।५०८८।।

उतरि भूमि पढे नवकार । सरणां दए च्यार परकार ।।
हथनी मरि प्रोहित के ग्रेह । पुत्री भई सकोमल देह ।।५०८९।।

हुई वृध भई संभाल । मुनीस्वर देखि हंसी वह बाल ।।
पिता कहैं उसनैं समझाइ । ए मुनीस्वर ममता नहीं काए ।।५०९०।।

इनकूं हंस्या होय बहु पाप । भव भव सहै दुःख संताप ।।
असी सुणी पिता की बात । मनमें ग्यांन धरया बहु भांत ।।५०९१।।

सुण्या धरम जिन मारग गह्या । दिढ सेती समकित वह लह्या ।।
कन्या भई विवाहन जोग । रच्या स्वयंबर आए लोग ।।५०९२।।

स्वयंभु कुंवर इह इछा धरैं । जे कन्या मुझ कौं ही बरैं ।।
प्रोहित कहै कन्या जाकुं देव । सम्यक्त करै जिणेस्वर सेव ।।५०९३।।

संभ कुंवर मिथ्याती घणां । प्रोहित सोचै चित्त आपणां ।।
इह राजा मैं सरणैं बसूं । जे इह कन्या अवरै देस्यूं ।।५०९४।।

या सेती मुझ बांधै बैर । अब छिन माहि करूं कछु फेर ।।
मंडप दूरि करया तिह बार । सब कुंवर मन बैर अपार ।।५०९५।।

इक दिन मारया प्रोहित श्रीभूत । छोडे प्राण सम्यक्त संजुत्त ।।
ब्रह्मोत्तर पाइया विमाण । उह सम सुखी न दूजा जान ।।५०९६।।

वेदावती प्रोहित की सुता । व्यापी ताहि काम की लता ।।
वेदावती करै तब सोच । संभकुमर सौ वांछै रुचि ।।५०९७।।

सुपनां में भुगतै वह भोग । जागी तबै उसे व्याप्या सोग ।।
धिग धिग ए पांच इन्द्री के सुख । क्षण म्यंतर फिर होवैं दुःख ।।५०९८।।

मो कुं तो उपजी थी कुबुधि । विषया मिलाय डगाया चित्त ।।
अपणां मन बहुत ही भिष्ट । धरो ध्यांन जिन समकित दिष्ट ।।५०९९।।

आरजका हरिकांता के पास । दिक्ष्या लई मुगति की आस ।।
करैं तपस्या बन में जाइ । मास उपवास पारणां कुं आइ ।।५१००।।

तपकरि देह जोजरी करी । समाधि मरण कीया तिह घडी ।।
पहुंची ब्रह्मोत्तर कैं थान । देवंगना भई सुजांन ।।५१०१।।

संभु कुंवर सुण करै विजोग । वेगवती का व्याप्या सोग ।।
अंत समझ करि सोच्या ग्यांन । दिष्या लई जती ढिग आन ।।५१०२।।

स्वयंजै कौं कीया सरब का राव । प्रभासकुंद भया तिहां नाउ ।।
प्रभासकुंद कौं दीया राज । पिता किया दिगंबर साज ।।५१०३।।

प्रभासकुंद राज। अति बली । प्रजा सुखी मानैं सब रली ।।
एक दिन विचित्र सेन मुनि पास । सुणियो धरम कुगति को नास ।।५१०४।।

जोडचा राज भोग संसार । दिक्षा लई संयम का भार ।।
तेरह विध सौं चारित्र धरचा । छठै मास पारणां करचा ।।५१०५।।

इह विध सौं करै तपस्या आप । जनम जनम का टूटैं पाप ।।
राग दोष तजि आतमध्यांन । ग्रीषम रुति परवत पर आन ।।५१०६।।

सिला हैठै ऊपर तपै सूर । चार मास तपै इहं विध पूर ।।
बरखा काल रूख तल जाइ । तीन काल तप सौं मन ल्याइ ।।५१०७।।

मांछर चूंटै देही दहैं । बेलि लपट देही से रहैं ।:
सीयालै हेमांचल ठौर । गंगातट सीत को जोर ।।५१०८।।

बहुत बरस ऐसा तप कियां । कनक प्रभा खेचर आइया ।।
समेद सिखर जावै था जात । ताहि देख चिंत्या इह भांत ।।५१०९।।

धन्य इन्है खेचर गमन आयास । जो मन चलै तो पुरै आस ।।
जहां मन करैं तिहां इह जाइ । धन्य है विद्याधर एह राइ ।।५११०।।

मेरे तप का एह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ।।
तीन खंड का पाऊं राज । विद्या फेरैं करौ मन काज ।।५१११।।

देही छोडि शांति कुमार । रतनश्रवा घर लियो अवतार ।।
केकसी गरभ दसानन भया । पाछैं रावण नाम इह थया ।।५११२।।

धनदत्त जीव भयो रामचन्द्र । बसुदत्त लछमन बली अनंद ।।
वृसभध्वज भया सुग्रीव । जगवली ते भभीषण जीव ।।५११३।।

विभीषण का पुनः प्रश्न करना

गुणवान भामंडल देह । गुनवती भई जनक के गेह ।।५११४।।
भभीषण बोलैं दूं कर जोडि । बालि तणां भव भणौ बहोडि ।।५११५।।

किम रावण सों थयों विरुद्ध । करी तपस्या उन विन ही जुध ।।
क्यूं रावण उठाया कैलास । तिण ठां भया मान का नास ।।५११६।।

उनका भव व्यवरा सुं कहौ । इह मो मन का संसय दहो ।।
विदारण वन में एकैक मृग । इह मांहि सदा उपसर्ग ।।५११७।।

सामायिक करैं था एक मुनी । उन मृगनैं धरम निसचै सुनी ।।
देही तजि अरावत खेत्र । बृहत राजा सिव ती सोहत्र ।।५११८।।

मेघदत्त है मृग का जीव । भया पुत्र धरम की नींव ।।
विरध होय करि भया सचेत । जिनवाणी सूं ल्याया हेत ।।५११९।।

अणुव्रत पालैं वे घर मांहि । रागद्वेष मनमे कछु नाहि ।।
समाधिमरण सों छोडी देह । ईसान स्वर्ग देव कै ग्रेह ।।५१२०।।

पुरव विदेह विजयवंती देस । कोकिला नयर कांत सौम नरेस ।।
रतनाखी राणी गरभ आई । ईसान स्वर्ग सें चये तिह ठाइ ।।५१२१।।

सुप्रभ नामक भया कुमार । रूप लक्षण सुख महा अपार ।।
जोवनवंत भए जु कुमार । पिता ने राज दयो तिह बार ।।५१२२।।

आप तात दिष्या लई जाइ । करैं राज ते सुप्रभ राइ ।।
एक दिवस मुनि पासै गया । सुण्या धरम संयम व्रत लिया ।।५१२३।।

तेरह विध पालैं चारित्र । रागदोष जीते दोइ सत्र ।।
बाईस परीस्या सहे बहु बरस । आतमध्यान धरचा बहु रहस ।।५१२४।।

तप करि गया सरवारथसिद्ध । तिहां ग्यांन की पूरी रिध ।।
चरचा मांहि तिहां बीतै घडी । सकल ग्यांन रिध पूरण जुरी ।।४१२५।।

उहां तैं चया किधद सै ग्रेह । बालि पुत्र कंचन सम देह ।।
तिसकै सदा निरंजन ध्यांन । चित मांहैं कछु न आवै आन ।।५१२६।।

रावन सों तब हुवा वाद । दया निमित्त छोडे विष वाद ।।
गिरि कैलास कियो तप जाइ । रावण तिण थाणक सूं आइ ।।५१२७।।

थक्या विमाण क्रोध के भाइ । कैलास परबत लिया उठाइ ।।
मुनिवर समझ्या ग्यांन सौं देखि । दयाभाव अंतरगति पेखि ।।५१२८।।

बहुत साध गिर ऊपर रहैं । इह पापी सगला नैं दहूं ।।
चैत्यालय ते श्री जिनदेव । उनकी दया विचारैं भेव ।।५१२९।।

पदम अंगुष्ट सेती गिरदाव । धरयो मेर पातालैं जांवि ।।
दशानन चिघारयो तिहां । सकल साथ सौं रुदन करै जिहां ।।५१३०।।

मुनिवर कैं मन आई दया । पगा उठाइ ऊंचा कर लिया ।।
रावण मान भंग तब भया । नमस्कार बालि कुं किया ।।५१३१।।

मन वैराग भया तिह बार । उभा छोड्या सब परिवार ।।
तब धरणेन्द्र बिचारै ग्यांन । यह प्रतिनारायण उपज्या आन ।।५१३२।।

इनका है असा नियोग । भुगतैं तीन खंड का भोग ।।
जैं इह दिक्ष्या ले धरि ध्यान । त्रेसठ सिलाका होवैं हान ।।५१३३।।

धरणेन्द्र तब समोध्या ताहि । सक्ती बांण दे दीया ताहि ।।
ताहि समोधि दीया सक्ती । फेर संभाल्या भुगत्या जुक्ती ।।५१३४।।

तीन षंड जीत्या सब देस । लंका राज करै सुअसेस ।।
करम उदै ते भूमिगोचरी । उनै आई लंका स्थिति करी ।।५१३५।।

मारया रावन लीया बैर । जीत्या तीन षंड सब गैर ।।
सतपुर नगर पुनरबसु राइ । भूमिगोचरी बली अधिकाइ ।।५१३६।।

चक्रवर्ति की सुता विवाही । विद्याधर ले भाज्या ताही ।।
उन नारी तप बहु दिन किया । क्षातपुर पति पुनर्वासु की त्रिया ।।५१३७।।

पुनर्वसु कुं भये बहु सोग । राज छोड करि लीया जोग ।।
करी तपस्या आतम ध्यान । अंत समय बांध्या निदांन ।।५१३८।।

मैं बलहीन तो त्रिया ले गया । वा कारण बहुतैं दुख भया ।।
मेरे तप का इह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ।।५१३९।।

पुनर्वसु का जीव लक्षमण हुआ । या के करसैं रावण मुवा ।।
बेगवती मुनि निंदा करी । झूंठा बचन कह्या तिन घडी । ५१४०।।

मुनि नैं कही सील भंग किया । मिथ्याती यूं मनमें धारिया ।।
उदय भया वह करम अपूठ । समकित ये माना सब झूठ ।।५१४१।।

बेगवती असी अग्यांन । मुनि को दोस लगाया जान ।।
पाछैं समझि विचरी चित्त । पसचाताप करै नह नित्त ।।५१४२।।

मैं क्यूं मुनि मैं लगाया दोष । कुमति अग्यांन का हुवा पोष ।।
अब इह पाप टरै किह भांति । मैं यूं ही दुःख दिया मुनि नाथ ।।५१४३।।

रिष निंदा है सब तैं बुरी । पाप पोट अपणैं सिर धरी ।।
कठिन करम मैं किया अथाइ । ग्रैसा दोष मिटै किह भाइ ।।५१४४।।

समझि जैन की दिष्या लई । तप करि फिर उत्तम गति भई ।।
पूरब करम उदय भया आइ । पाया कष्ट असुभ के भाइ ।।५१४५।।

सीता सती दिढ राख्या सत । फिर पावैंगी पंचम गत्ति ।।५१४६।।

कवित्त

पर निंदा नहीं करैं साध जस ही कुं जाणहीं ।।
मिथ्या वचन नहीं जुणै, ताहि उत्तम जन मानही ।।५१४७।।

सील संयम दिढहु धरैं, दया करैं मन ल्याइ ।।
परकारज परमारथी, मोक्ष पंथ सो लहाइ ।।५१४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सरबार रामचंद्र पूरव भव बरननं विधानकं

१०० वां विधानक

अडिल्ल

सकल सभा मुनि पास भवांतर सब सुने ।
जनम जनम के भेद, सकल भूषण भने ।।
वैराग्य भाव भया लोग, नांम किहां लौं गिनई ।
रवि का होत उद्योत, अंधकारैं हनैं ।।५१४९।।

तिमिर जु गया सब भाजि, किरण रवि की जगी ।
घर वाहर उद्योत, अंधकार कहीं है नहीं ।।
तम जु गया सब भाजि, किरण रवि सी जगी ।
घर बाहर उद्योत, सबैं सोभण लगी ।।५१५०।।

जे दिष्टांत प्रवीण तिनइं जाणैं भली ।
परिहाजे जे अंधासुति हींण उनौं कै चित मिली ।।५१५१।।

कृतांत वक्र भवांतर बूझि । ब्योरा सुणि अंतरगति सूझि ।।
मन बैराग धरा बहु भांति । रामचंद्र सौं जोडे हाथ ।।५१५२।।

जीव भ्रम्या चहुंगति में आदि । समकित बिना जनम सब बाद ।।
भ्रमत भ्रमत नहीं पायी अंत । अब हुं धम्या सकती नहीं हुंत ।।५१५३।।

धरम वृक्ष की पाई छांह । तिह ठां बैठि मिटाऊं दाह ।।
दिष्या लेहूं रिषी के पास । गुरु संगति पूजै मन आस ।।५१५४।।

रामचंद्र बोलै समझाइ । तू सुखिया कोमल है काइ ।।
सेज पटंतर फूलां भरी । भूमि पांव कबहु नहीं धरी ।।५१५५।।

पंचामृत लेता हो अहार । इस गोरस बहु सौंज संवार ।।
पल पल होई तुम्हारी सार । कैसे लेहू संजम भार ।।५१५६।।

जैन धरम की क्रिया कठिन । कैसें पलै तुमारा जतन ।।
भूमि सोवणां निरस अहार । बाईस परीसह दु:ख अपार ।।५१५७।।

घरि घरि भोजन लेहु उडड । राव रंक कबहु भेद न मंड ।।
हम भी दिखा ले हैं आइ । हमारे संग होज्यौ रिखराइ ।।५१५८।।

कृतांतवक्र बोलै भूपती । एही वार में होउं जती ।।
फिर बोले आपण रघुनाथ । रुक जावो तब हमारे साथ ।।५१५९।।

लहै देवगति किसही सुरग । संभाल कीजियो मितर वरग ।।
जै मैं माया मांहि भुलाव । तुम संवोध ज्यौ मित्र सुभाव ।।५१६०।।

तब दिक्षा ले मैं भी तिरूं । बहुरि न भवसागर में पडूं ।।
कृतांतवक्र कौ आग्या दई । सब ममता मन तें मिट गई ।।५१६१।।

दूहा

कृतांत वक्र तब सोरसोग, वतक्र सुविक्रम निक्रांत ।।
बहुतो ने दिष्या धरी, ग्यान वंत विष्यात ।।५१६२।।

चौपई

सीता के संगी आरजिका घनी, अधिक प्रताप विराजै वणी ।।
सत अनै दत्त दिपै सब देह । रामचंद्र मन उपजा नेह ।।५१६३।।

रहे ध्यान धरि करै विचार । मो संग डोली सब संसार ।।
लोगां कारण मैं दई निकार । तिह तै हुवा दुःख अपार ।।५१६४।।

अति कोमल सीता की देह । वनमें जोग लिया तजि गेह ।।
वैं अई उत्तम सिज्या छोडि । पाट पटंवर सिज्या सोंडि ।।५१६५।।

पान फूल कोमल आहार । सखी सहेली करतीं सार ।।
राग रंग पखावज वीन । कथा कहानी कहैं प्रवीण ।।५१६६।।

पूर्व कथा

तब सउवती थी सीतां तहां । तब आईसा वन में तप गह्या ।।
वन में सिंह गरजनां करैं । हसती चिघाडैं सब ही डरैं ।।५१६७।।

सरस निरस मास कै पाख । पर घर भोजन मुखतैं नहीं भाख ।।
वे दुख कैसे सीता सहै । वेर बेर रघुपति इम कहैं ।।५१६८।।

सरप सियाल भयानक घणे । असे सबद जब सीता सुणैं ।।
कैसे जीवैगी उस ठौर । चउदहै आठ परीसह सहै और ।।५१६९।।

संसार स्वरूप का किया विचार । रामचन्द्र समझे तिंह बार ।।
धन्य सीता असा तप धरया । नमसकार दरसन को करया ।५१७०।।

लखमण किया चरण कौं आई । सीता गुण वरणवं सुभाई ।।
धन्य सीता राख्या दिढ सत्त । अपवाद आया लोकां कै चित्त ।।५१७१।।

जे जब लेता दिव्या जाई । रहता संदेह हर कं मन राई ।।
अगनि कुंडती जलहर भया । सब के मन का संसय गया ।।५१७२।।

दोनुं कुल की राखी लाज । आप किया आतम का काज ।।
पूरब भव पूज्या जिन देव । तो निसचैं कीनी जिन सेव ।।५१७३।।

एक भवंतर पाछै मोक्ष । वहुरि लगैगा देवतां सुख ।।
लवनांकुस करैं नमस्कार । दई प्रक्रमा बारंबार ।।५१७४।।

भूपति सकल करैं डंडोत । असतुति वोलैं लोग बहुत ।।
सब ही फेर नगर को चले । हय गय रथ पायक बहु मिले ।।५१७५।।

नर नारी देखैं बहु भाइ । बहुत सखी असे समुझाइ ।।
असी विभव सीतां गई छोडि । सहैं परीसह वन की वोडि ।।६१९६।।

जैन धरम का दुरधर जोग । स्वरग लोक सम छांडे भोग ।।
कोई कहै धन्य रामचन्द्र । परजा कारण सह्या सब दुंद ।।५१७७।।

मोह तजि सीता दई काढि । विछोहा तन सह्या है वांढि ।।
कोई कहै सीता करी बुरी । पुत्र जणती ममता नैं करी ।।५१७८।।

मन में धरया न उनका मोह । पल में सब ही का किया विछोह ।।
ए बालक उपजे उस कुंख । खीर पिलाई पुत्र तैं पोखि ।।५१७९।।

ते माया दई सबैं बिसारि । बैंठी वन में तिहां उजाडि ।।
कोई कहै इह लौं सनमंध । घर परियण सब जाण्यां धंध ।।५१८०।।

तार्थें धरि दिक्षा का भेष । बारहै विध तप करै असेष ।।
भव जल तिर तैं बाई मोक्ष । जनम जरा के टूटैं दोख ।।५१८१।।

रामचन्द्र मन्दिर मां गए । राजसभा में बैठत भए ।।
राणी सब अंतहपुर आइ । पूजा दान करै बहु भाइ ।।५१८२।।

सोरठा

ल्याए आतम ध्यान, मोह माया सब परिहरी ।।
सीता सत प्रवांन, सुरनर सब महिमां करी ।।५१८३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता प्रव्रज्या विधानकं

१०१ वां विधानक

चौपई

सीता की पूर्व कथा

श्रेणिक नृप कर जोडे हाथ । फेर धरम सुणावो नाथ ।।
लवनांकुस गरभ स्थिति करी । ते मुझ सकल सुणावो चरी ।।५१८४।।

स्यंघनाद वन भय की ठोर । तिहां सीता कुं आए छोडि ।।
महा विलाप सीता ने किया । कवण करम तें ए दुख भया ।।५१८५।।

सिद्धारथतैं बहुत हित हुवा । कै पहिला कैं सनबन्ध नवा ।।
सिद्धारथ बहु विद्या पढाई । ते सब कहिए ससंय जाई ।।५१८६।।

श्री जिन की बानी तब हुई । भव आताप सगली बुझ गई ।।
गौतम स्वामी निरणय भणैं । सभा मध्य श्रेणिक भी सुणै ।।५१८७।।

जंबुद्वीप में क्षेत्र विदेह । किकदा नगर बसै बहु गेह ।।
रतिवरधन राजा सुपुनीत । सुदरसना रांणि सुपुनीत ।।५१८८।।

वाकैं गरभ पुत्र दोई भए । प्रीतंकर हीतंकर सुख किए ।।
दिन दिन बढैं सयाने होई । कुल मंडण बालक ए होई ।।५१८९।।

सरव गुपति राजा मंतरी । राज विभूति तिहां अति जुडी ।।
बीजावल प्रधान की तिरी । उसकैं मन उपजी मति बुरी ।।५१९०।।

रतिबरधन सूं संगम करौं । अपणौं जनम तब जाणउं खरो ।।
राजा वन क्रीडा कौं चला । सरव गुपति मंदिर हितां भला ।।५१९१।।

ता मंदिर तलैं बैठा आइ । बीजावली उझकी झरोखैं जाइ ।।
दोन्हुं की हुई दिष्टि ब्यार । मुख सों बोली पाप व्यौहार ।।४१९२।।

सीता की पूर्व कथा

राजा सुनि समझावै बहुत । परजा कुं देखु भरि नैन ।।
जैसे पिता देखै पुत्तरी । ऐसी दिष्ट राख जे खरी ।।५१९३।।

जे राजा हूं करै अधरम । कुल कलंक लगावै बहु जनम ।।
तुम्हारा सेवक की नारि । मुख सों कहिए बात संभारि ।।५१९४।।

बीजावली मनमें पिछताइ । मै कांइ बचन कह्या इहं आइ ।।
मांन भंग हुवा इह घडी । अपणे मन बहु चिंता करी ।।५१९५।।

सरवगुपति अपणैं घरि जाई । त्रिया बचन बोलै समझाई ।।
मै ने आज सुणी हैं इक बात । तैरा कांम भ्रस्ट होगा परभात ।।५१९६।।

राजा तो परि कोप्या घणां । ऐसा दुख तोकुं आइकै बण्यां ।।
सुणि प्रधांन अति करै विलाप । मन में चिंता अति ही व्याप ।।५१९७।।

राजमंदिर में देहु आगि । चहुंवा जलै न छुटै भागि ।।
रयण समै वे कीनां दहन । राजा जाग्या देखी अगनि ।।५१९८।।

निकस्या भूप सुरंग दुवार । दोनूं लीना संग कुमार ।।
सुदरसनां राणी अगनि में जली । भाजण कों नहीं रही गली ।।५१९९।।

रतनवरधन कासी मैं गया । सरवगुपति राजा तिहां भया ।।
कासिप राय कासी का धनी । बल पौरिष ग्यानी गुन गनी ।।५२००।।

सरवगुपति नै भेजा दूत । मेरी आगन्यां मांनि बहुत ।।
इतनी सुणि तब कोप्या राव । रतनवरधन उन मारचा ठांव ।।५२०१।।

जो सेवक ठाकुर को हणै । एह अनीत कहो कैसे बनैं ।।
अब जू इन्हैं लगाऊं हाथ । फेर न बिगारैं काहु साथ ।।५२०२।।

कहा बरांक सरवगुपति । जिह की आगन्यां आणां निती ।।
जीवत पकडी हणुं पराण । धका दिवाया दूत है जांण ।।५२०३।।

दूत गया सरवगुपती पास । कासी बचन कहै सब भास ।।
ऐसी सुणि सेन्यां कूं जोडि । कासी राय पैं कीनी दौडि ।।५२०४।।

घेरचा नगरी नीसांन बजाय । सुणे सबद तिहां कासिप राइ ।।
उन भी सेना लई हकार । सूर सुभट धाए तिह बार ।।५२०५।।

दंडवरधन रतनबरधन कों देखि । कासिपराय कह्या परेखि ।।
सुणि राजा मन भयो आनन्द । देख्या प्रत्यख चरणन कुं बंदि ।।५२०६।।

पूर्व कथा

अस्तुति करि सेवा बहु भांति । भयी जैन नगरी मां सांति ।।
सबै सुख्या रतनबरघन बली । मिले सकल पुजी मन रली ।।५२०७।।

सरवभुपति बांध्या तिह घरी । आया राय किंकदा पुरी ।।
पट बैठाइ रहे सब लोग । सुखसौं रहइ भूल्या सब सोग ।।५२०८।।

राजा करुणा चित्त बिचार । सरबगुपति छोड्या तिह बार ।।
सेवा सौं तब कीया दूरि । पापी पाप कमाया भर पुरि ।।५२०९।।

भविदत्त मुनि दरसन पाई । सुण्या धरम रति बरधन राई ।।
प्रीतंकर हितंकर कौं दीया राज । आप लिया दिगंबर साज ।।५२१०।।

सरबगुपति भी दिक्षा लई । बीजावली मुई राच्यसी भई ।।
मनमें कुबुधि बिचारी नई । बैर भाव उपजावैं सही ।।५२११।।

राय कीया मेरा मान भंग । सरवगुपति तप करै वा संग ।।
दोनु मुनि पर किया विरोध । आंधी मेह दु:ख का श्रोघ ।।५२१२।।

बहु उपसर्ग दोन्यू मुनि सह्या । केवलग्यान वा समै लह्या ।।
गए मुकति जै जै ध्वनि हुई । पंचमगति पाई मुनि दुई ।।५२१३।।

सुदरसनां जल मुंइ तिह बार । पुत्र मोह की करी संभार ।।
वे दोन्युं मेरे गरभ भए । दुह विरयां ले बिछुड क्यों गए ।।५२१४।।

एक वेर मिलज्यो फिरे आंन । अंत समय राख्या इह ध्यान ।।
प्रीतंकर हेमंकर भूप । विमल मुनीस्वर देख स्वरूप ।।५२१५।।

नमस्कार करि पूछया धरम । दोन्युं भए जती कैं करम ।।
करैं तपस्या बारह विध । चारित्र साधैं तेरह मन सुध ।।५२१६।।

बीस दोइ परीसा सहैं । नवग्रीवेक पाई उनि जहे ।।
कासिप देस वामदेव नरेस । गुणां अस्तरी धरम कै भेस ।।५२१७।।

वसुदेव वासद पुत्र दोइ भए । जोबन समय विवाह करि दए ।।
वसुदेव कैं विस्वा अस्तरी । वासिट कै प्रीयांगणा गुण भरी ।।५२१८।।

श्रीदत्त मुनीं कूं दिया अहार । पाया भोग भूमि अवतार ।।
तीन पल्य की भुगती श्राव । इसान स्वर्ग परि पाया ठाँव ।।५२१९।।

उहां तैं चए रतन बरधन के ग्रेह प्रीतंकर हितंकर एह ।।
वे पहूंच्या नवग्रैवक विमांन । उहां तैं चया सीता गरभ आय ।।५२२०।।

पूरव भव छोडी थी माई । तातैं हुवा माया भरम आई ॥
मात विछोहा सो इहां भया । वह संग संक इहां ऊ भया ॥५२२१॥

सुदरसना जीव भमी बहुंगति । सदा भरम ध्यान सुं हिति ॥
तपकरि मस्त्री लिंग कीना भंग । करि करणी सुगुरु गुरु संग ॥५२२२॥

उसका जीव सिधारथ भया । वह सनबंध इस सूं थया ॥
ए ही करम का सरबंध । निसदिन सेवै देव जिनंद ॥५२२३॥

सोरठा

भव भव किया सु पुन्य, समकित सों मन दिढ रह्या ॥
लवनांकुस बलवन्त, रघुवंसी जग में तिलक ॥५२२४॥

इति श्री पद्मपुराणे लवणांकुस पूरबभव विधानकं

१०२ वां विधानक

चौपई

सकल भूषण कीरत सब देस । सुरनर पूजा करैं नरेस ॥
बहुजन भए जती के भाव । जपैं घणां जिण जी का नांव ॥५२२५॥

किणही सरावक का व्रत लिया । सरब जीवां की पालैं दया ॥
पूजा दांन करैं सब कोइ । घरि घरि कथा सीतां की होई ॥५२२६॥

धनि सीता अइसा तप करैं । मोह माया सब सुख परिहरैं ॥
आठ दिवस कबही इक मास । रस दोष का कीया नास ॥५२२७॥

ऊंच नीच लखै नहीं गेह । सरस निरस भोजन कूं लेह ॥
लोही मांस गया सब सूख । क्रोध लोभ साधी तिस भूख ॥५२२८॥

तप की जोति दिपै सब गात । जैसे ससि पूनम की कांति ॥
जरजरा भई मुरझाई बदन । जैसे काष्ट पुतली के तन ॥५२२९॥

बासठ बरस तपस्या करी । तेंतीस दिन तपस्या में टरी ॥
छोडि काय लह्या अच्युत विमान । भया प्रति इंद्र लह्या सुख थान ॥५२३०॥

बीस दोइ सागर की ठांव । तप करि पाई एती आव ॥
राम कथा सब पूरण भई । श्रीजिन कथा कही इहां नई ॥५२३१॥

स्वर्ग सोलह प्रद्युमन अरु संबु । कृष्ण गेह उपज्या कुल बंस ॥
बाईस सागर चउसठ वहुत । उपजे मुनति पाय हरिबंस ॥५२३२॥

श्रेणिक पूछै है कर जोडि । जिनवाणी का नांही ओड ।।
जितने भेद सुणे धरि कांन । तिरपत न हुवे सुणे पुराण ।।५२३३।।

एक एक तैं वाणी सरस । जे सुणिए बहुतेरा बरस ।।
तउव न जावें जीव अघाइ । प्रद्युम्न संबु के कहै परजाइ ।।५२३४।।

प्रद्युम्न संबुकुमार के पूर्व भव

सालिग्राम नित्योदय राइ । सोमदेव बांभण तिह ठाइ ।।
अगनिला कै भए दोइ पुत्र । अगनिभूत दूजा वायभूत ।।५२३५।।

विद्या पढि भए परवीन । इन अग्रे पंडित सब हीन ।।
बेद पुराण कहैं मुख पाठ । राखैं घणी गर्भ की गांठ ।।५२३६।।

इन समान न पंडित और । ऐसा देस देस में सौर ।।
नंदिवरधन मुनिवर महा मुनी । वाकै संग शिष्य बहु मुनी ।।५२३७।।

वन में जोग लिया उन आय । आगम सुण्या नित्योदय राइ ।।
उतर स्यंघासन वाही दिसा । करि डंडोत मनमां बहु हंसा ।।५२३८।।

सकल लोग संगति बहु चल्या । बाजंतर जिहां बाजैं भला ।।
भई भीड वे द्विज के बाल । इनके मन संसय का साल ।।५२३६।।

नांही पर्व नांही त्यौहार । इतनां कहां जांहि इकधार ।।
सुणी बात वण आये जती । दरसण कूं चाल्या भूपती ।।५२४०।।

सकल लोग जावैं वा निमित्त । जोग ध्यांन तिहां महा महंत ।।
इतनी सुणि वे उठे रिसाइ । वे क्या हैं हम सू अधिकाइ ।।५२४१।।

हम सूं कवण है पूजनीक । मूरख चलै हैं गडरिया लीक ।।
अब हम करि हैं उनि सों वाद । जे हम से जीतैं वे बाद ।।५२४२।।

तो हम जांणैं उनका ग्यांन । नांतर ए सब लोग अग्यांन ।।
दोंनूं विप्र गए बन मांहि । ध्यानारूढ दिखे तिण ठांहि ।।५२४३।।

संबूकुमर मुनीस्वर एक । जिसके हीए जिनेस्वर टेक ।।
मुनि की ढिग दोउं विप्र जाइं । कहि कहां ते आए इस ठांइ ।।५२४४।।

बोलैं जती सहज के भाइ । आय पहुंचे याही ठांइ ।।
पूछैं मुनी तुम कहां ते आए । आगम कहो सकल समझाइ ।।५२४५।।

दोन्युं हंसे विप्र के पुत्र । भई भई बुधि महा विचित्र ।।
देखि प्रत्यक्ष होइ अग्यान । सालिग्राम हमारा थांन ।।५२४६।।

मुनिवर बोले अपनो गति कहो । कवरण परजाइ तैं इह गति लहो ॥
ऐसी सुणि भए चिक होइ । गति अगति की जाणैं नहीं कोइ ॥५२४७॥

वेद पुराण में की होइ बात । कहैं सकल बांको बिरतांत ॥
हमको अवधिग्यान एह नाहिं । गति आगति समझावै ताहि ॥५२४८॥

मुनिवर बोले मोपैं तुम सुणौं । तुमके भव सब ही में भणौं ॥
मगध देस सालिग्राम समीप । भरत खेत्र तिहां जंबूद्वीप ॥५२४९॥

कर्म करि हैं बाह्म करि सांन । जो तिण गया धरती बन थांन ॥
घडी च्यार खेती घर आइ । भोजन किया दिवस में जाइ ॥५२५०॥

तिहां अनरह बरखा धनघोर । सात दिनां बन माडया जोर ॥
भूखे सियाल थे तिहां दोइ । सात दिवस भूखे दुखी होइ ॥५२५१॥

अत्त चांम की भौजी तिहां । भखी शृंगाल मरण ते लहा ॥
उठी सूल दोन्युं मर गये । सोमदेव के सुत दोउ भए ॥५२५२॥

उन किसाण तिहां सुध लहो । देख ब्रत मन विस्मय भई ॥
देखे मुए दोई सियाल । लिये उठाइ उचेडी खाल ॥५२५३॥

वहि द्विज सुवा पाइ कै काल । पिता पुत्र के उपज्या बाल ॥
अष्ट वर्ष का हुवा पुत्र । देखो खाल स्याल संजुक्त ॥५२५४॥

अब सुमरणा विप्र कुं भई । मेरी प्रसूति पुत्र घर भई ॥
कैसे कहूं पुत्र कूं तात । बहु सौं किह विध कहिए मात ॥५२५५॥

ऐसी समझि रहा दोऊ मूक । मुख तैं वचन न बोलैं चूक ॥
अगनिभूत वायुभूत दोऊ बीर । गये तुरन्त सरकैं तीर ॥५२५६॥

देखी खाल टंकी तिह ठांव । समझि सांच हीए करि भाव ॥
गूंगे से सब कही मन कीं बात । मिटैं भेद सब ही इह भांत ॥५२५७॥

उठि प्रमुखि साध पैं गया । नमस्कार करि ठाढा भया ॥
मुनिवर सकल कही समझाय । अपने मन में मति पिछताइ ॥५२५८॥

आदि अनादि चिहु गति बीच । कबहीं उत्तम कबही नींच ॥
नटवा भेष धरया बहु जौंन । लख चौरासी में कीया गौंन ॥५२५९॥

पिता होइ पुत्र का पुत्र । माता होइ घरणी संजुक्त ॥
नारी तैं जननी उतपन्न । कब ही होई भाई बहन ॥५२६०॥

कबही अरि अरु कब ही मित्र । कबही माता होइ कलित्र ।।
कबही राजा कबही रंक । कबही ठाकुर सेव निसंक ।।५२६१।।

कबही धारैं देव स्वरूप । कबही दुखिया महा कुरूप ।।
कबही कामदेव उणिहार । कबही कुष्टी रोग अपार ।।५२६२।।

जैसे फिरै रहठ की घड़ी । कबही रीती कबही भरी ।।
असी सुणि सब संशय गया । अष्टांग नमस्कार तब किया ।।५२६३।।

प्रभुजी मोकूं दिष्या देहु । बांह पकडि हूं व्रत ग्रह लेहू ।।
मुनिवर कहैं फेरि घरि जाइ । आगन्यां मांगि कुटंब पै आइ ।।५२६४।।

तबै दिष्या देनी तुम्हें सही । विन आगन्या तपस्या नहीं कही ।।
प्रभुजी आए आपने गेह । सकल सभा का मिटया संदेह ।।५२६५।।

केई समझि धरैं चारित्र । किनही लीया श्रावक व्रत ।।
जिहां तिहां कथा इहै चलैं । दोन्युं विप्र मनमें जलैं ।।५२६६।।

स्याल जोनि तैं वे विप्र भए । अकाम निर्जरा पंडित थए ।।
इतनी जात कहा है देव । जाणैं नहीं धरम का भेव ।।५२६७।।

ब्राह्मण देव कहा और स्वरूप । अगनि देव कहें नर भूप ।।
कैसे भए देव एह जीव । करैं कर्म पाप की नींव ।।५२६८ ।

ब्रह्म सों परमातम चिह्न । संयम क्रिया की विध किन्ह ।।
ए पापी होमैं अगिणत जीव । करैं बृत्त पाप की नींव ।।५२६९।।

कंद मूल फल लेह अहार । पुंन्य पाप की नहीं विचार ।।
निस भोजन अण छाण्यो नीर । दया भेद जाणैं नहीं पीर ।।५२७० ।

सर्प देव कैसें करि होइ । जिसके डस्या न जीवैं कोइ ।।
अवनि दया करै नहीं काई । जो कछु पडै भस्म होइ जाई ।।५२७१।।

मूरख पुरुष नैं देवता कहैं । स्यांन भाव का भेद न लहैं ।।
विप्र वही जो पालै दया । धन्य साध जो इह विध तप किया ।।५२७२।।

पूरव भव की जाणें वात । उनतैं अवर न उत्तिम जात ।।
राजा रंक सकल ही लोग । अस्तुति करैं जे सावैं जोग ।।५२७३।।

विप्र के मन भया विरोध । निस आए घरि चित्त विरोध ।।
काढि खडग दोनूं इक बार । बहुरि करैं धरम विचार ।।५२७४।।

प्रद्युम्न एवं संबुकुमार के पूर्व भव

विप्र संन्यासी तपेसुरी । अतीत अनागत लघु अस्तरी ॥
इनकै मारयां उपजै पाप । भव भव सहैं दु:ख संताप ॥५२७५॥
जइ तेरा मनमें है बैर । पहिले तु हमकूं मारि करि ढेर ॥
दऊं न डरैं न मारे जाहिं । दोनु तोनइ खडग सब बांहि ॥५२७६॥
बांध्या यक्ष दोनुं बांका हाथ । उभा द्विज बैठा मुनिनाथ ॥
प्रभात समैं आगे सब सेठ । लघु वृद्ध बंदनीं चाल्या पेठ ॥५२७७॥
नमस्कार करि पूरा करी । वा मुनि पं सब ही की दिष्ठ पडी ॥
अगनभूत वायुभूत विप्र । हाथ जोडि कर नांगेसे पुत्र ॥५२७८॥
ऊंचे कर दोन्युं का बंध । उभा इम दोन्यु द्विज अंध ॥
सती जती बैठा सुअडोल । गहि मौन बोलैं नहि बोल ॥५२७९॥
जे आवैं ते मारी देह । रे पापी कीन्हीं कहा एह ॥
मुनिवर बैठे वन में आंनि । इनकैं चित्त निरंजन ध्यान ॥५२८०॥
किसही सु नहि करते नोख । सब ही नैं दई मारग मोष्य ॥
मुनिवर कूं तुम दीना दु:ख । तैसा अब देखउ परतष्य ॥५२८१॥
बहुत लजाए बांभरण दोइ । धिग धिग कहै जगत सब कोइ ॥
सोमदेव अगनला माई। मुनिवर कैं बे लाग्या पाई ॥५२८२॥
स्वामि नमुं हूं दोउ कर जोडि । हमनें दिखणीं बी इनहैं छोडि ॥
पुत्र भीख दीजे करि मया । तुम प्रभु पालो हो अति दया ॥५२८३॥
मुनि बोलैं दंपति सों बात । हमारैं नहीं क्रोध की जात ॥
विनती करैं जष्य सौं घणी । अतिरिगति जष्य अैसी सुणी ॥५२८४॥
कहै जष्य ए पापी दुष्ट । इनां दीया है साधनइ दु:ख ॥
जैसा सुं बोलै तैसा सुणैं । जैसा बावै तैसा लुणैं ॥५२८५॥
ज्यौं दरपण मां देखै कोइ । जैसा चितै तैसा होइ ॥
जे मुख को टेढा करि देखैं । तैसा ही तामैं दरसन लेखै ॥५२८६॥
जे देखई सुधा करि बदन । तैसा तामें हैं दरसन ॥
ए हैं पापी महा अग्यान । इनैं न छोडूं अपनैं जान ॥५२८७॥
मुनिवर बात जष्य सूं कहैं । सुष्यम बादर करुणां चित महैं ॥
ए दोन्यूं पंचेन्द्रिय जीव । छोडो वेगि इनकी ग्रीव ॥५२८८॥
जीव दया कारण व्रत करैं । हिंसा तैं निस बासर डरैं ॥
वनमें रहैं परीसह सहैं । ते कैसें जीवां नैं दहैं ॥५२८९॥

अतिरिक्त छोडो तुम यज्ञ । इन दोन्युं सों न करो कुज्ञ ।।
विप्र छोडि दिया तिरण बार । उनौं विप्र कुं कराया नमस्कार ।।५२९०।।

तबै अणुव्रत विप्र कू दिया । जैनधर्म निसचै सूं किया ।।
धरम पुराण कहैं मन ल्याइ । खोटी क्रिया विप्र दई बिहाइ ।।५२९१।।

जीव दया के पालैं भेव । असुभ करम का कीया छेद ।।
सोमदेव अगनिला व्रत गह्या । उनपै व्रत न जावै सह्या ।।५२९२।।

मरि करि भ्रम्या बहुत संसार । दोन्युं विप्र स्वरग तिंहू बार ।।
भुगति आव अजोध्यापुरी । सुभदर दत्त राजा रिध जुरी ।।५२९३।।

धारणी राणी कै गरभ आइ । पूरणप्रभ मानभद्र जाइ ।।
पाई वृद्ध सयाणें भए । राजा कै इहै उपजी हिए ।।५२९४।।

उन दोन्यूं कौं दीयो राज । आपण किया धरम का काज ।।
बहुत दिनां भुगते सब देस । मुनिवर बल किया प्रवेस ।।५२९५।।

मुनि नरेन्द्र दरसन कुं चले । चिंडाल पास कुकरी गले ।।
उनकौं देख अपनां नेह । भेटघा चाहैं उनसौं देह ।।५२९६।।

मन में सोच करैं बहु भाइ । चलैं पूछिये मुनिवर जाइ ।।
गये साध पैं करि डंडोत । राजा पूछी बात बहुत ।।५२९७।।

स्वामी एक अचंभा सुणौ । इनहै देखि मोह ऊपन्यो घणुं ।।
कवणएकवण हम जात । ए प्रतष्य चिंडालहै पांति ।।५२९८।।

जिह के छियां लीजिए सुधि । तासुं होय मिलण की रुचि ।।
बोले ईह सोमदेव विप्र । अगनिलाए ए सुनी अगिप्र ।।५२९९।।

पूरब भव का माता पिता । ता कारण मोह की लता ।।
एक मास रही है आव । चंडाल कूकरी संन्यास तिंह आव ।।५३००।।

काल पाइ नंदीसुर द्वीप । दोन्यां भए देव सु समीप ।।
दोई भूपति नई धरमणां । जैंन धरम विध पालैं घणा ।।५३०१।।

देही छोडि सौधरम विमांण । तिहां तैं चए अयोध्या आंन ।।
हेमनाभ राजा कई गेह । अमरावती राणी रूप की देह ।।५३०२।।

ताकैं जा अति प्रतापी भए । हेमप्रभ संयम व्रत लिए ।।
राजभार मधु कीट नैं दिया । आप गुरु ढिग संयम लिया ।।५३०३।।

राजा मधु अति प्रतापी भए । नाम सुंणत अरि उठि गए ॥
सर्व नृपति मानैं तिह आण । ए मुनिपरि रविचंद्र समाण ॥५३०४॥

राजा भीम न मानैं संक । जसकै गढ अति विकट विहंक ॥
तिह कारण राजा मधु चला । बीरसेन मारग मैं मिल्या ॥५३०५॥

निज्रोध नगर मैं करि सनमान । बहुत भेट आगैं धरी आंन ॥
चन्द्राभा बीरसेन की अस्तरी । रूपवंत लावण्य गुण भरी ॥५३०६॥

उभकी आइ झरोखैं द्वारि । भाई देखी नीर संभारि ॥
राजा भया मूरछावंत । जाणौं भए प्राण का अंत ॥५३०७॥

चेत्यो राजा करै विचार । फिरता आई करूं उपचार ॥
भीम राजा से मांडया खेत । बांध्या तुरंत जुध के हेत ॥५३०८॥

आया तुरंत अजोध्या देस । चंद्राभा मन खटक नरेस ॥
देस देस को लेख पठाइ । सब कुटंब तब नृपति बुलाय ॥५३०९॥

आए सकल देस के भूप । जीमणा दीया महा अनूप ॥
काहूं कुं अस्व रथ दिया सिरपाव । किहुं कूं गज परगने गांव ॥५३१०॥

सबकों दिया जिस्या परवांन । सो कुटुंब का राख्या मांन ॥
बीरसेन सों ऐसी कही । तुम भी जावो अपनी मही ॥५३११॥

कछु आभरण संवरैया अभी । बिदा करस्यां चंद्राभा तभी ॥
बीरसेन नें किया पयांन । मधु राजा चन्द्राभा आन ॥५३१२॥

अंतहपुर पटराणी थापि । राजा मनमें विचारया पाप ॥
भोग भुगति सौं वीतैं काल । राजा तजी धरम की लाज ॥५३१३॥

जे रखवाला चन्द्रा पास । ते सब आजे होइ निरास ॥
बीरसेन कूं इह सुध भई । चन्द्राभा छीन उनुं नै लई ॥५३१४॥

बीरसेन बहुत विललाइ । बलवंत सो कछु न बसाइ ॥
इह प्रथवीपति जाकै हैं देस । इह प्रबीन इह बडा नरेश ॥५३१५॥

छांडी राज फिरै विकराल । व्याप्या हीए नारी का साल ॥
वनमें फिरै अधिक विललाइ । वाकैं चित्त कबहु न बसाइ ॥५३१६॥

करै पुकार गिर गिर फिरै भूमि । ऐसी महा मचावै धूमि ॥
चन्द्राभा ऊंचा सूं देखि । कंत फिरै इहै असे भेस ॥५३१७॥

बेर बेर राणी पिछताइ । मांहरै दुःख फिरै इन भांइ ॥
राज भिष्ट हो डोलै मही । इसकै कोई सहाई नहीं ॥५३१८॥

मो कारण बंसी बलि फिरै । पिछतावै राणी हिए भरै ॥
भ्रमत फिरै कारण सरै नाहि । बंजिम प्रिय विष्ट परथा कांहि
॥५३१९॥

नमस्कार करि पूछै धरम । सुणे भेद लागै चिन मरम ॥
दिष्या लई संन्यासी पास । पंचाग्नि साधै वनवास ॥५३२०॥

देही छांडि लही गति देव । इह राजा सुख विलसै एव ॥
झरोखै बैठा राजा जाइ । कोटवाल आया तिह ठाइ ॥५३२१॥

एक मरद पकरया परनारि । हाथ बांध ल्याया तिह बार ॥
राजा सुणी किया इह न्याव । इह को हणौं चोर की ठांव ॥५३२२॥

फिर ऐसा न करै कोई कांम । खोवै धरम लजावै गांव ॥
तबै राणी चंद्राभा कह्या । राजा जी तुम भेद न लह्या ॥५३२३॥

इनुं कहा अबै बिगार । जिनौं को मारि करो हो छार ॥
इनको बहुत दीजिये दान । निरभै करो ज्युं मनमांन ॥५३२४॥

इनौं की पूजा करणां न्याइ । कहा चूक भई इनतें राय ॥
राजा कहै सुण राणी बात । तेरी मति भिष्ट भई इह भांति ॥५३२५॥

अन्याई की तू पूजा कहै । दान दिलावै भेद न लहै ॥
अन्यायी है यह महा पापिष्ट । इनको दीजे महान कष्ट ॥५३२६॥

जितना हुवै पुन्य विसतार । भूलि न करै कोई बिगार ॥
चन्द्राभा समझावै वैंन । अपना वचन परिषो करि नैंन ॥५३२७॥

कहां तैं मो करि आंनी व्याह । मुझ बिन व्याकुल है मेरो नाह ॥
जो राजा खोटा हुवै आप । तिसकी प्रजा करै अति पाप ॥५३२८॥

त्रिया वचन सुणि भई संभालि । सत्य वचन समझे भूपाल ॥
हाइ हाइ कर मींडै आप । मैने कियो प्रथी को पाप ॥५३२९॥

मो सरिखा करम ए करैं । पृथिवी परि को अपजस धरैं ॥
उज्जल कुल लागो कालौंस । अब हूं धोऊं कइसी रोस ॥५३३०॥

मो कूं भई पाप की बुधि । भूली राजनीति की सुधि ॥
कठिन पाप कैसे होवै दूरि । ताहि न होवै ऊपष मूल ॥५३३१॥

मन वैराग धरयौ अति सोच । राज भोग सौं छोडी रोंचि ॥
सहस अब वन उत्तम मही । सिद्ध पदम मुनि आए सही ॥५३३२॥

राजा सुणि मुनिवर हिग गया । नमस्कार करि ठाढा भया ।।
करै बीनती मस्तक नाय । पाप करम मैं किया अथाह ।।५३३३।।

कैसे टरै पाप का दोष । गुरु संगति से लहिए मोष्य ।।
मुनिवर कहैं वखान बहु भाइ । राजा भेद सुणी मन लाइ ।।५३३४।।

कुलवर्द्धन कूं राजा किया । आप आइ संयम व्रत लिया ।।
कीटभ नैं भी दीक्षा धरी । करैं तपस्या दोउ मिल खरी ।।३५३५।।

सूरज तपैं पर्वत की सिला । काया तपैं पसीना चल्या ।।
बहैं पाप देह तैं छूट । ग्यानामृत की पीवैं घूंटि ।।५३३६।।

वर्षा में तरु तलि खरे । मूसलधार मेह की पडै ।।
मांछर डांस तनमें लगैं । बयाल आइ आइ कैं लगैं ।।५३३७।।

सीयाले सरवर की पाल । पडै तुसार चलै बहु ब्यार ।।
षटरित मांहि परीस्या सहैं । बाईस विध कही है त्युं तन दहैं ।।५३३८।।

ऐसा तप करि करी है देह । अच्युत स्वर्ग इन्द्र पद एह ।।
इनकी प्रति इन्द्र सीता जीव । तहकाल थिर सुख की नींव ।।५३३९।।

मधुकीटभ अच्युत विमान । तिहां तैं चए द्वारावती आन ।।
दोऊं भए कृष्ण घरि आय । रूपवंत बल सोभैं काय ।।५३४०।।

मधु का जीव भया पद्मन । रुकमरिण नैं गर्भ पाईज तंन ।।
कीटभ हुआ संबु कुमार । जांबवती उर लिया अवतार ।।५३४१।।

दूहा

कथा कही परदुमन की, श्री जिनवर समझाइ ।।
श्री गौतम विधि सों भणी, सुणी जु श्रेणिक राइ ।।५३४२।।

जो सुणैं हैं एह पुरांण, ते निसचै समकित गहैं ।।
पावैं अमर विमाण, दशा अंग मनआं रहे ।।५३४३।।

इति श्री पद्मपुराणे मधु कीटक भव विधानकं

१०३ वां विधानक

चौपई

कंचनपुर तिहां कंचन रथ । सुरेन्द्र इन्द्र गुंन करि समरथ ।।
दोइ कन्यां ताकै घर सुता । रूप लक्ष्यरण गुंरण करि सोभिता ।।५३४४।।

स्वयंवर रच्या बुलाये राइ । देस प्रवेस बसीठ पठाइ ।।
नृपति आये कांचन पुरी । सहु नृपति की सोभा पुरी ।।५३४५।।

रथ परि बैठी दोन्यु पुत्तरी । जगतिपति कंचुकी अति खरी ।।
सबइन का नाम कंचुकी कहे । कन्या दृष्ट न कोई लहे ।।५३४६।।

विद्याधर देखिया नरेस । भूमिगोचरिया दिस कियो प्रवेस ।।
राजा सकल अचंभा करैं । अब इस कन्या किस कुं वरै ।।५३४७।।

कन्या कै चितां हि आवै कोइ । मान भंग सब नृपति होइ ।।
लवनांकुस देखिया कुमार । फूलमाल गल डारे हार ।।५३४८।।

जैं जैं कार करैं सहु लोग । लखमण कैं सुत मान्या सोग ।।
आठ पुत्र तिण सैं पंचास । भए कोप मन धरैं उदास ।।५३४९।।

लवनांकुस हम तैं क्या भले । घाली माल इनां कैं गले ।।
हम मांडैंगे इनसे राडि । भूपति सब मिल करैं विभाड ।।५३५०।।

इनकै हीए गांठ यह पडी । कैसे छूटै इह यस घडी ।।
आठ भूप की कन्या आठ । वे माला ले वइठी दे गांठ ।।५३५१।।

आठुं कै गले घाली माल । इनके मनतैं मिटै न साल ।।
मंदाअगनि लवन नै व्याहि । ससांकचक्रा मदनांकुस नांहि ।।५३५२।।

आठ व्याह आठुं कुं भए । अधिक सुख उपज्या उंन हीए ।।
लवनांकुस कौ आठौं देखि । बहुरि मनमां करैं परेखि ।।५३५३।।

हम तो है नारायण पुत्र । तीन षंड मां रह्यो न सत्रु ।।
रावण मारचा हमारे पिता । जीत्या सकल देस पुर जिता ।।५३५४।।

तीन सै अठावन हम वीर । महाबली अर सांहस धीर ।।
जो कछु है सो हमारा दल । हम समान किसका है बल ।।५३३५।।

मान भंग हमारा किया । उंनै व्याह लवनांकुस लिया ।।
जे ए हमसैं मांडैं युध । मार गुमांवा इनकी सुध ।।५३५६।।

रूपमती सुत कहैं विचार । तुमारी हांसी हुवै संसार ।।
तुम तीनसै अठावन वीर । ए कन्या थी दो सरीर ।।५३५७।।

कैसे होता तुम सों काज । कैसी रहै तुमां कुल लाज ।।
राम लखमण है बहु प्रीत । दुख सुख भुगतैं एकै रीत ।।५३५८।।

जैसे तुम तैसे ये भ्रात । छांडो मोह करो मन सांत ।।
सुख संसार सदा नहीं थिर । सागर अंत रहे नहीं थिर ।।५३५६।।

एकरण दिवस होई विरणास । ता थैं करौ मुगति की आस ।।
मुकति जानु सुख सदा अचल । श्री जिनवाणी रहै अटल ।।५३६०।।

समकित सौं निश्चै जब करो । जैसे पाई अमर पद धरो ।।
बहुत भांत समझायो ग्यान । सबकों भयो धरम सौं ध्यान ।।५३६१।।

लखमरण की माग्या कुं गए । हाथ जोडि ठाडे दोउ भए ।।
आदि अनादि भम्यु सहं तित । समकित बिना न पाई गति ।।५३६२।।

भम्यौं लख चौरासी जौंनि । चिहुंगति मांही कीनु गौन ।।
रोग सोग आरत मां फिरया । श्री जिन वाक्य न चित मां धरया
।।५३६३।।

अब दिष्या ले साधैं जोग । जनम जरा का मेटैं रोग ।।
लखमरण बोलैं सुरण हो कुमार । जैन धरम खांडे की धार ।।५३६४।।

तुम बालक भरि जोवन बैस । कैसे सधै जती का भेस ।।
भुगत्या नहीं सुख संसार । नऊल तुम ब्याही है नारि ।।५३६५।।

उनहि छोडि जई दिष्या लेहु । उनके सूल तुम कहा करेहु ।।
जई तुम उनका गहो संताप । तो तुमको होवई बहु पाप ।।५३६६।।

इह है भोग भुगत की बेर । चउथैं आश्रम संयम फेर ।।
ए सुख छांडि लीजिए न जोग । जोबन समय भोगवो भोग ।।५३६७।।

अणुव्रत सरावग का लेहू । पूजा दान सुपात्रां देहु ।।
च्यारू विध के दीजे दांन । बैयाबरत सब का सनमांन ।।५३६८।।

बोलै कुमर सुणु तुम तात । भ्रमे लख चउरासी जात ।।
संपय विभव बहुत परवार । भव भव बीभ लहे नहि पार ।।५३६९।।

जम की पासि पडै जब हंस । होइ सहाई धरम का अंस ।।
स्वारथ रूपी सब संसार । पुद्गल आदि न कोई लार ।।५३७०।।

पुन्य पापनै एकै कर जान । इनतैं फिर भुगतैं इह आन ।।
तप करि कैं पावै निरवान । भ्रमै नहीं भवसागर आंन ।।५३७१।।

महाबल मुनिवर ढिग जाइ । दिक्षा लही मन बच काइ ।।
आतमध्यान लगाया जोग । छोड दिये संसारी भोग ।।५३७२।।

दूहा

धरयो ध्यान चिद्रूप सौं, दया भाव करि चित्त ।।
लक्ष्मण के सुत अतिबली, कियो धरम सुं हित ।।५३७३।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्ष्मण पुत्र निष्क्रमण विधानकं

१०४ वां विधानक

चौपई

भावमंडल नें चेत्या धरम । सकल जनम बांधिया कुकर्म ।।
जब रांवण सुं कियो संग्राम । बहुत लोग मारे तिह ठाम ।।५३७४।।

अवर देस कूं बांधे घणे । दुरजन दुष्ट बहुत ही हणे ।।
पांचु इन्द्री सुख कियो अथाह । मानुष जनम दियो यूं ही गमाइ ।।७३७५।।

आतम काज समार न सक्या । मोह फंध माया बस थक्या ।।
अब जे छोडुं राज विभूत । हय गय वाहण विभव संयुक्त ।।५३७६।।

ए नारी किन्नर उणिसार । कोमल अंग कमल सुकुमार ।।
सदा सुख सों बीतै घडी । मो बिन छह रित आई बुरी ।।५३७७।।

बारह मास किम सह संताप । मुझ बिन मरैं करै विललाप ।।
इनां की कल्पना लागै माहि । किस विध इनसूं करूं बिछोह ।।५३७८।।

कोई कोई भूपति बलवान । मानैं नहीं हमारी आंन ।।
साधूं सबकूं संसा करि दूर । तबै दिक्षा लेहूं भर पूर ।।५३७९।।

असी विध मन सोचैं धनी । इह जागै इक कारण बण्यां ।।
सोवै था सत खणं आवास । बिजली पडी प्राण का नास ।।५३८०।।

मन मां चितवैं था कछु और । अण चित्या हुवा इण ठौर ।।
जिण नहीं ढील धरम की करी । तिसका मन की पुंजी रली ।।५३८१।।

धरम करण कौं करै विचार । सोचि सोचि जे राखै टारि ।।
जनम अकारथ यूंही खोइ । अवसर चूकै कबहुं न होइ ।।५३८२।।

धरम काज कीजिए तुरंत । पावै सुख अरु मोष्य लहंत ।।
सोच करंत जे व्यापै काल । फेर पडै माया के जाल ।।५३८३।।

चित चेतन सों त्यागै प्रीत । धन्य धन्य पुरुष अतीत ।।
आप तिरैं अवरां नैं त्यार । फेर न बहुरि भरमैं संसार ।।५३८४।।

दूहा

धरम विलंब न कीजिए. करिये पहुंच समांन ।।
मन वांछित सुख भोगवैं, बहुरि लहै निरवांन ।।५३८५।।

इति श्री पद्मपुराणे भावमंडल परलोक गमन विधानकं

१०५ वां विधानकं

चौपई

हनुमान की तपस्या वर्णन

लखमण सम अन्य न कोई भूप । बल पौरिख अरु महा स्वरूप ।।
रामचन्द्र सेती अति प्रीत । जाणैं सकल धरम की रीत ।।५३८६।।

उनालै भुगतैं सुख घणे । सीतल मनोहर जल सु वणे ।।
ऊंचा मंदिर अति उत्तंग । महा सुगंध फूल सुरंग ।।५३८७।।

झरनां तैं तिहां निकसै नीर । उछलै जल सुख हुवै सरीर ।।
गोझर छांडी छाई छान । ई मांफिक सुख भुगतै हनुमान ।।५३८८।।

वहुरि विचार करै मनमांहि । यह संसार भरयो दुख मांहि ।।
पुत्र कलित्र सब लिये बुलाई । उनसौं बात कही समझाइ ।।५३८९।।
इह संसार बिजली उद्योत । फिर छिन में अंधियारा होत ।।
हम तुमसौं ईहां लग थी प्रीत । अब हम जाइ हो इहां अनीत ।।५३९०।।

इनका चित्त निहचल थंभ । रोवैं परिजन लोग कुटंब ।।
चढि सुखपाल चैति बन गए । राजा प्रजा परियण संग थए ।।५३९१।।

सेनां सकल भई उठि संग । बाजा बाजैं ताल मृदंग ।।
धरम रतन मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि बोलै राइ ।।५३९२।।

स्वामी मोकूं दिष्या देहु । बांह पकडि अपनी संग लेहु ।।
विद्युतगति सुत नैं दे राज । सौंपी सब परिवार की लाज ।।५३९३।।

मुकट उतारि सबै श्रृंगार । वसतरि फाडि दिए तिह डारि ।।
लौंचे केस दिगंबर रूप । सात सै पंचास अवर संगि भूप ।।५३९४।।

करैं तपस्या मन वच काइ । आतमध्यान धरै मन लाइ ।।
तेरह विध सौं चारित्र धरया । बारह वरत द्वादस तप करया ।।५३९५।।

समकित अष्ट अंग संजुक्त । अष्ट अंग धरि ध्यान बहुत ।।
अनप्रेंध्या का प्रेष्यन करैं । ग्यांन लहन कारणे वे चरैं ।।५३९६।।

दस लक्षण गुंण चक संभार । सब श्रावक तिहां दिए डारि ।।
अष्ट करम से मांडे युध । सहैं परीसा बाईस सुध ।।५३९७।।

छठे महीने लेई आहार । मन बच काई दृढ अपार ।।
आतम चिदानंद सौं ध्यान । केवल ग्यान लहै हनुमान ।।५३९८।।

करि विहार फिरे बहु देस । भव्य जीव कूं दे उपदेस ।।
श्रीमती लक्ष्मी अरु घणी । बंधमती आरजिका सुं भणी ।।५३९९।।

दिख्या देहु हम कूं आजि । हम भी करैं आतमा काज ।।
सब ही मिले संयम व्रत लिया । निश्चल ध्यान निरंजन किया ।।५४००।।

देहीं तैं ममता राखी नहीं । जिनके चित्त समकित है सही ।।
हनोंमान प्रतिबोधे घणे । अष्ट करम अरि सब हणे ।।५४०१।।

हनूमान पंचम गति लही । जोति मां जोति समाही सही ।।
मुकति वध सुख उत्तम थान । दरसन बल वीरज बहु ग्यांन ।।५४०२।।

दूहा

कथा सुनैं हणुमांन की, करैं दया सुं ध्यांन ।।
देवलोक सुख भुगति करि, पावैं ते निरवांण ।।५४०३।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमांन निर्वाण विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

रामचंद्र जब असो सुणी । हनूमांन छोडी सब दूनी ।।
भया मुनी दिगंबर भेस । करैं अति काया कलेस ।।५४०४।।

अबर चेती कुबरां की बात । रघुबर सोचै इह विरतांत ।।
रे रे भई मूरख छोडै राज । काया कष्ट सहै बिन काज ।।५४०५।।

देषत असुभ करम का भाव । राज छोडि भिक्षा सैं चाव ।।
ए सुख छांडि परीसा सहैं । असे बहुरि कहां सुख लहैं ।।५४०६।।

मूरिख लंघण करि करि मरैं । पूरब पापन के कहां टरैं ।।
निंदा करी हणु की घणी । इन्द्रलोक मैं चरचा इह बणी ।।५४०७।।

सौधर्म इन्द्र की सभा तिहां जुडी । सकल विभूत तिहां सोभै खरी ।।
पुरांण कहै इन्द्र जिहां सौधर्म । सिद्धांत वाणी समझावै धर्म ।।५४०८।।

सप्त तत्व षट् द्रव्य बखांन । नव पदारथ कहैं सुर ग्यांन ।।
सुणें देव सब अस्तुति करैं । प्रभु ए भेद कब कवरण पै पढ़ैं ।।५४०६।।

मनुष्य बिना न तपस्या होइ । देव धरम करि सकै न कोइ ।।
पूजा देव करण समरथ । जैन धरम बिन सबै अकथ ।।५४१०।।

अरिहंत देव सम अन्य न देव । और धरम जनम का भेव ।।
मिथ्याती सास्त्र जे कहै । उसके वचन न चित्त में गहै ।।५४११।।

वकता सरोता नरकै जाइ । तिहां को नांहि दया सुं भाव ।।
श्री जिनवाणी जीवन मूल । समकित कौं छोडो जिन भूल ।।५४१२।।

देव एक बुलाइ सभाइ । मध्यलोक में जनमैं जाइ ।।
तिहां माया में होइ अचेत । कैसे पलै धरम सों हेत ।।५४१३।।

राम लखमण ब्रह्मलोक तैं चए । ते माया में मयमत्त भए ।।
रामचन्द्र लखमण सों प्रीत । पल नहीं बिछडै ग्रैसी रीत ।।५४१४।।

मोह के बसि दोनूं हैं घणे । एक च अष्ट करम कुं हनैं ।।
प्रीति न छोडै किस ही भांति । यूं ही उनकी आव विहात ।।५४१५।।

दूहा

भोग भुगत मानैं रली, दियो धरम बिसराइ ।।
दया विहूंणा मानवी, किन न पावै भव पार ।।५४१६।।

इति श्री पद्मपुराणे संकर सुर संकर कथा विधानकं

१०७ वां विधानक

चौपई

रतन चूल अर तमचूल । दोनूं देव अणाथ का मूल ।।
एता कह्या उना का मोह । पल नहीं होवै उनका बिछोह ।।५४१७।।

इन्द्र बात नैं आणी हिये । दोन्यूं चाहैं परचा लिये ।।
मध्य लोक आया दोउ देव । कहै इक देखै इनका भेव ।।५४१८।।

रामचन्दर कै मन्दिर गए । जुगल देवता परपंच किये ।।
मायामई एक परपंच रच्या । मंदिर में रुदन मचाया सचा ।।५४१९।।

राम राम करि रोवैं नारि । पीटैं सिर मां डारैं छारि ।।
पोलिये रुदन सुण्यां तिह बार । दोड्या आया लखमण द्वार ।।५४२०।।

मंत्री आगैं पीटै सीस । रामचंद्र मुवा जगदीस ।।
मंत्री नै खाई पछाड । रोवै पीटै सब संसार ।।५४२१।।

लखमण आगै पटकी पाग । रामचंद्र सुणी देही त्याग ।।
सुण लखमण का फाटा हीया । हाइ हाइ करिनें मृतक भया ।।५४२२।।

राम बिनां मैं कैसे जीउं । हा हा करि प्राण दे देहुं ।।
धाइ करि उठ्या देखूं हूं राम । पड्या मूरछा हुई तिहु ठांम ।।५४२३।।

मंत्री रोवै ढोलई वाव । गए परांन जीव कां न नांव ।।
सत्रहसै सहस्र रोवैं अस्तरी । हाइ हाइ करि धरणी पडी ।।५४२४।।

कोई पकडि उठावै बांह । कोई इक सबद सुणावो नाह ।।
कोई लपट दई कंठ लगाइ । कोई करैं बीजणा वाइ ।।५४२५।।

कोई पग हलावै आइ । कोई देखै मुख की रताइ ।।
मृतक देखि सकल बिललाइं । तब वे दोई देव बिलषांइ ।।५४२६।।

हम उपाया नउतन पाप । ए ता जीव करैं बिललाप ।।
नारायण की हत्या लई । हम एह उपाधि इनकों मुई ।।५४२७।।

हांसी करता हुवा नास । लखमण नैं उपजी अति त्रास ।।
हम सैं हुई महा कुबुधि । इतना किया आंणि विरुध ।।५४२८।।

असा पाप टरैंगा किसै । दोन्यां देवां कै दुष मन बसै ।।
इन्द्र वचन उन किया प्रतीत । पाप पोट निज सिर धरीत ।।५४२९।।

रामचन्द्र सुणी इह वात । लखमण मुवा तुमारा भ्रात ।।
हाइ हाइ रुदन करैं श्रीराम । राणी रुदन करैं ले नाम ।।५४३०।।

मंदिर में पडी देखी लोथ । वासों लपटे वोंथां बोथ ।।
पग देखै अर सीले हाथ । ग्रीव न टिकै ढरै तिहां माथ ।।५४३१।।

पगडी पटकी बस्तर फाडि । भ्राता भ्राता करैं पुकार ।।
मोह उदय तें हुवा अन्ध । बोलो वेग ज्यौं जीउं मैं बंध ।।५४३२।।

खाइ पछाढि मेलैं सिर धूल । रुदन सू पीटैं सुध सब भूल ।।
बडी बेर चित पाया ग्यांन । हम मोह माया में डुब्या जान ।।५४३४।।

मोह मांहि भ्रमें चिहु गति । करैं तपस्या पावैं स्थिति ।।
रामचंद्र पै आग्या मांगि । महेन्द्र वन के मारग लागि ।।५४३५।।

अमृतस्वर मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि लागे पाइ ।।
स्वामी हम परि क्रिपा करो । भव सागर से हम है ले तिरो ।।५४३६।।

दिष्या ले बैठे गुरु पासि । पूछें तिहां मनोरथ आस ॥
रामचंद्र थे बडा श्रेष्ठ । सीता भामंडल कुमर भ्रष्ट ॥५४३७॥
हनुमान लखमण अब मुवे । बिछडे सकल अचंभै भए ॥
बहु विभूति इन्द्र सम भई । एक दिवस में सब थिर गई ॥५४३८॥
इह संसार जु रंग पतंग । सब रंगिये महा सुरंग ॥
उतरतां बार न लागै ताहि । तब इसका कहा पतियाय ॥५४३९॥
तासूं बहुत लगावै रुचि । भूलि गई अगली सब सुधि ॥५४४०॥

दूहा

राज किया तिहुं षंड का, भुगत्या सुख अपार ॥
पुन्य विभव सब खिरगई, जात न लागी बार ॥५४४१॥

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस दीक्षा विधानकं

१०८ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप

रामचंद्र देखैं निरतांइ । पीत बरण देखै सब काइ ॥
किह कारण रूठा इह भ्रात । मुख सौं कबहुं न बोलै बात ॥५४४२॥
अन्य दिवस मोहि आवत देखि । आदर करता पटाभिषेक ॥
मेरे साथ बहुत दुख सहे । दंडक वन मांहीं जब हम रहे ॥५४४३॥
रावण मारे मेरे काज । रघुबंसी की राषी लाज ॥
तुम बिना कैसे जीउं आप । कैसे इह मेटो संताप ॥५४४४॥
सुकोमल देह टटोलै राम । सीता मोह व्याप्या इस ठांम ॥
बचन न बोलै होइ रह्या मूक । मोसों कहा भई अब चूक ॥५४४५॥
उठि लखमण तु लेह संभालि । लवनांकुस वन गये कुमार ॥
दिक्षा कारण वन में गये । फेरो उनकूं जती न भए ॥५४४६॥
जब वह जाय कर लेसी जोग । तब हुवैगा मन कूं सोग ॥
वे बालक बहु कोमल अंग । कैसे पालैं दिष्या गुरु संग ॥५४४७॥
उनां की वय है भोग विलास । रहई उनों वन मांहि आवास ॥
अब तुम उठ करि ल्यावौ फेरि । रामचंद्र बोले बहु बेरि ॥५४४८॥
उडिगया हंस वह मृतक पडे । राम विवेकी मोह मां नडे ॥
मुवा मानुष कैसे बोलै बोल । माया के बसि हुवा भोल ॥५४४९॥

भई रयण सिज्या बिछवाइ । लखमण कूं तब लिया उठाइ ॥
सिज्या परि पोढाए जाय । सोवैं अपने कंठ लगाय ॥५४५०॥

काहूं कूं निकट न आव न देहि । बहुतैं राम करै सनेह ॥
इह सेज्या न्यारी है ठौर । तिहां आई सकै नहीं और ॥५४५१॥

मो से कहो मनका सब भेद । तो होवैं संसय का छेद ॥
ऐसी विधि बीती सर्वरी । भया प्रभात पाछिली छरी ॥५४५२॥

पांच नाम कहि उठो संवारि । भूपति खडे तुम्हारे द्वार ॥
पहराए सब वस्त्र संभारि । राजा सकल करैं नमस्कार ॥५४५३॥

तेरे ऊपर जांउ उठो वीर । तुम विन जलै है मेरा सरीर ॥
रामचन्द्र सोचैं बहु भांत । पीतबरण दीसै किरात ॥५४५४॥

उठै मोह बहुत बिललाइं । पहिले मैं मरता तजि काइ ॥
तेरा दुःख हूं कैसे सहूं । विना लषमण कहो कैसे रहूं ॥५४५५॥

दूहा

बाल संघाती बीछडे, उठै अगन की झाल ॥
मोह माया के उदय तैं, मिटै नहीं जग जाल ॥५४५६॥

इति श्री पद्मपुराणे लखमण मृत रामचंद्र विलाप विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

विद्याधर लखमण मरत सुणी । सब ही नै तब मुंडी धुणी ॥
हा हा कार हुवै सब ठौर । देस देस में माची रौंड ॥५४५७॥

भभीषण आदि सकल नरेस । सुग्रीव ससांक वतक्र दुष के भेस ॥
जिह लग छे विद्याधर भूप । अजोध्या गए रुदन के रूप ॥५४५८॥

रामचंद्र कूं करै नमस्कार । रोवैं पीटैं खाइ पछाड ॥
पगडी पटकैं फाडै चीर । सबके हिए लखमण की पीर ॥५४५६॥

रामचन्द्र रोवै करै पुकार । रोवैं पीटैं खाइ पछाड ॥
उठों बीर इनसूं तुम बोल । मन की घुंडी बेग तुम खोल ॥५४६०॥

जै मुझतैं कुछ हुआ विगाड । छिमा करो तुम अब की बार ॥
तब राजा समझावैं घने । एता मोह कीए नहीं बने ॥५४६१॥

जीव जाइ पावैं गति और । तुम क्या करो रोग सौं सोर ॥
रुदन किये लछमण जो फिरै । सब मिल यतन बहु विध करैं ॥५४६२॥

दहन किया तुम करो याहि । इहै न जीवैं किस ही उपाय ।।
असी सुणि कोप्यो रघुईस । अब ही काटूं सब के शीस ।।५४६३।।

मौसौं लखमण मुं हैं रूठ । याहि मुंवा कहैं बोलैं झूंठ ।।
भभीषण बोलैं समझाइ । ए मूरिष कहा जानैं राइ ।।५४६४।।

लखमण पड्या मूरछावंत । तासौं कहैं प्राण भए अंत ।।
याकुं ओषधि करि हूं भली । ऐसी सुण मन चिंता दली ।।५४६५।।

घटे विरोध भया सत भाव । भभीषण बोलैं तब राव ।।
चारूं गति में एह सुभाव । काल न छोडैं किस ही ठाव ।।५४६६।।

तीर्थंकर अनै चक्रवत्ति । नारायण प्रतिनारायण सत्ति ।।
बलभद्र अनई कामदेव । रुद्र काल बसि हुवई एव ।।५४६७।।
सायर बंध सुरों की आव । व्याप्पै काल न छोडैं ठांव ।।
मनुष्य पसू नरक गति दलैं । काल चक्र सब ही पै चलै ।।५४६८।।

काहू की न दया चित आइ । बालक वृद्ध तरुण को खाइ ।।
सोवत रोवत जागत खात । गावत नांचत चित्त से कात ।।५४६९।।

जल परवत गुफा मुंए रहै । इन्द्रह की सरणागति गहै ।।
तोउ न छोडैं काल अटल । सकल खडा देखैं तिहां दल ।।५४७०।।

मात पिता सज्जन नें कुटुंब । कोई न संकै काल को थंभ ।।
पुरुष थे सा कठै गए । समय पाइ काल बस थए ।।५४७१।।
इहै कछु नई भई है नांहि । कीजे एती मोह की दाह ।।
मोह करम बैरी बलबान । धन्य साध जिन जीत्या जान ।।५५७२।।

भरमै जीव मोह के काज । कबही रंक कबही होवैं राज ।।
बिन समकित जो कुगति ही घणी । आदि अनादि जाइ न भणी ।।५४७३।।

कवण कवण गति का परिवार । छोडे बहुत न पाया पार ।।
ज्यौं बुदबुद जल उपजै षमै । असे सब जीव गति भ्रमैं ।।५४७४।

जब लग हंस तब लग प्रीत । जीव बिना पुदगल भय भीत ।।
वासुं कहा कीजिए नेह । कीजिए सदा सरन सुं गेह ।।५४७५।।
धरम जीव का करैं आधार । मोष नगर पहुचावन हार ।।
लखमण काया कीजिये दहन । या का सकल मृतक है चिहन ।।५४७६।।
इतनी सुण्यां फिर कोप्या राम । बैरी मित्र न होइ निदान ।।
भाई का अब सांधु बैर । रांवण का बदला लहैं फेर ।।५४७७।।

जीवै लखमण मेरा भ्रात । इसका कहै जलावो गात ॥
दुरजन बचन क्यु मानु आज । माहि नहीं काहू सूं काल ॥५४७८॥

अब बोलैं तुम छोडो क्रोध । तुमारा देखिया मैं समोध ॥
लखमण कूं तुम मृतक कहो । मोह राम रमन कछु लहो ॥५४७९॥

दूहा

जांणि बूझि सुध बीसरी, मोह करम कै भाव ॥
मुंवां कूं जीवत कहैं, लिया फिरैं इस ठांव ॥५४८०॥

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण संसार परिष्या विधानकं

११० वां विधानक

चौपई

राम का तीव्र मोह

सुग्रीव आइ करी बीनती । मृतक देह में जीव न रत्ती ॥
माया में ज्युं रहे भुलाइ । कहो ज्युं चिता संवारैं जाइ ॥५४८१॥

दहन क्रिया लखमण की करो । राज विभूत फिर संभरो ॥
असा सुणि कोप्या रामचंद्र । दहन करो तुमारो कुटुंब ॥५४८२॥

मेरा भाई रूसि कै रह्या । तासु मुवा सब मिल कै कह्या ॥
लखमण उठो सुणुं दे कान । कैसा बोल बोलैं अग्यांन ॥५४८३॥

चलो कहीं रहिए वनमांहि । हमसों तब कोई कहै कछु नांहि ॥
खोटा वचन कहै सब लोग । मन कुं कछु उपजावै विजोग ॥५४८४॥

बांधि पोट कांधा परि डारि । मारग गहियो तहां उजाडि ॥
मनमें किया अति उपाव । सनांन करो तुम लखमण राव ॥५४८५॥

दूहा

चउका ऊपरि बैठाण करि, किया उबटणां गात ॥
सनान कराया मृतंक कुं, रघुपति अपनैं हाथ ॥५४८६॥

चौपई

वस्त्र पहराए उज्जल वरण । अवर भले साजे आभरण ॥
पंचामृत सैं थाल भराइ । विनय करि बोलैं रघुराइ ॥५४८७॥

करैं ग्राम लखमण मुख देइ । वह मृतक कैसे करि लेइ ॥
मुख परिषालैं विनवैं घणा । लखमण मानौं मेरा भणा ॥५४८८॥

तुम बिन अन पांणी नहीं खावजे । मेरा बचन किम नहीं मानजे ।।
भले भले गंधर्व बुलावजे । ताल मृदंग बांसरी बजावजे ।।५४८९।।

सब मिल गावैं एक ही वार । जे लखमण सुणै संभार ।।
गावैं गुणी जन बाजैं जंत्र । कैसें बोलै मृतक तंत्र ।।५४९०।।

बहुरि लिवा कांधा परि आप । षष्ट मास अति सहैं संताप ।।
षेचर भूचर डोलैं चिहुं पास । राम न छोडैं लखमण आस ।।५४९१।।

खरदूषण का संबुकुमार । च्यार रतन सुत बली अपार ।।
बज्रमाली राष्यस वंस । लखमण का जान्यां उड गई हंस ।।५४९२।।

रामचंद्र कुं व्याकुल सुन्यां । इनुं संबु खडदूषण हुण्यां ।।
काढि दिये थे अलंका आइ । विराधित नैं पहुचाए जाइ ।।५४९३।।

रावण सा इनुं मारया बली । सबकी मांनैं मरदन गली ।।
आया अबै हमारा दाव । अजोध्या जाइ विठावैं नाव ।।५४९४।।

च्यार रतन और माली बज्र । सेन्यां ले सब धाए सस्त्र ।।
घेरी अजोध्या मारू बजाइ । चेत्या सुभट संभाल्या राइ ।।५४९५।।

अयोध्या पर आक्रमण

रामचंद्र सों जणाई सार । दुरजन चढि आये तुम द्वार ।।
तुम पट बैठो हम करि हैं जुध । रामचंद्र कुं आई सुध ।।५४९६।।

कंधा झोली लखमण कुं लीए । जुध उपाव बहु विध किये ।।
बज्रावर्त्त गह्या टंकार । हल और सस्त्र लीये संभार ।।५४९७।।

दोउ धां मांड्या सुभटा षेत । झुझैं स्वामि धरम के हेत ।।
दारुण जुध दोउधां हुवा । पीछे पांव धरैं नही कुवा ।।५४९८।।

जटा पंखी स्वर्ग विमान । उन मन मांहि विचारया ग्यान ।।
मेरा प्रभु राम लखमण । उनुं की आय बनी है कठिन ।।५४९९।।

अब इस बिरियां करूं सहाय । कृतांतवक्र जीव तिंह ठाइ ।।
जटा देव सों पूछी बात । अब तुम मध्य लोक कूं जात ।।५५००।।

देव रूप जटायु द्वारा सहायता

जटा देव पिछली कही कथा । दोनूं अवधि बिचारी जथा ।।
रामप्रसाद भुगत्यां बहु सुख । व्याप्या अंत मोह का दुख ।।५५०१।।

जाइ संबोधे इतनी बार । दोन्युं दैव आए रणह मंझार ।।
जटा देव सेन्यां में दोडि । दुरजन के दल मांची रोर ।।५५०२।।

जिहां तिहां परवत दिखलाइ । आज न पावैं सबै हराइ ।।
पाथर पडैं जिम बरसै मेह । सुध न रही दुष्टों की देह ।।५५०३।।

निकसण कूं पावैं नहीं गली । महा संकट सेन्यां तिह मिली ।।
अैसा दल कहीं देख्या नांहि । रामचन्द्र गति का नहीं थाह ।।५५०४।।

हमारी महा हीन है बुधि । रामचंद्र सौं मांड्या जुध ।।
भभीषण मनैं करै था हमैं । बिन आग्या अभी मानैं रमैं ।।५५०५।।

ए ईश्वर इनकी बडी कला । हमारा इनसौं कबहुं न चला ।।
अब जे निकसण पावैं आज । दिख्या ले साधैं धरम का काज ।।५५०६।।

जटा देव दया मन आव । धरम द्वार देखै छंडै राइ ।।
चार रत्न बज्रमाली नरेस । दोन्यु भए दिगम्बर भेस ।।५५०७।।

रतनवेग मुनिवर पै जाइ । दिक्षा लई करि मन बच काइ ।।
सहे परीस्या बीस अर दोइ । महा मुनीस्वर जिह विध होइ ।।५५०८।।

जटा देव साध्यां कुं देखि । नमस्कार उन किया परेष ।।
धन्य जती जे साधैं जोग । तजैं सकल माया का भोग ।।५५०९।।

कृतांतवक्र द्वारा राम को समझाने के लिये माया रचना

कृतांत सुर अन्य जटा देव । इनुं रच्या माया का भेव ।।
मारग मांहि कछु सूकी डाल । क्यारी रची अति ही सुविसाल ।।५५१०।।

कुवा उलीचैं सींचैं नीर । बाडि बनावैं वाकै तीर ।।
रखवाली करैं बहु भांति । बरजैं सब कूं भीतर जात ।।५५११।।

रामचंद्र देख्या यह सूल । रे मूरख तुम काहे भूल ।।
सूकी लकडी किम ह्वैं षडी । ते एती क्युं करी जषडी ।।५५१२।।

बिन कारज एता दुख सहै । सूकी डाल ए फल कहां गहै ।।
तबैं माली नै उत्तर दिया । तुम कां मृतक कांधै लिया ।।५५१३।।

इह जीवै तो इह उपजै सही । सूकी डाल ए भी फल गही ।।
इतनी सुण कोप्या रामचन्द्र । वन में भी हम कूं दुख दुंद ।।५५१४।।

ता कारण बसती कुं त्याग । इहां भी हमकूं कुबचन लाग ।।
कहां मारूं माली सिर चोट । अैसा बचन कह्या इन खोट ।।५५१५।।

मेरा वीर रुठ कैं रह्या । मृतक कहैं इन भेद न लह्या ।।
हो लखमण सुणौं इह बात । माली बचन कहैं इह भांति ।।५५१६।।

उठो वेगि लगाऊं हाथ । अैसी कहैं न काहू साथ ।।
तउ मैं क्यारी सब ढाहि । अग्रे चल्या रघुपति राइ ।।५५१७।

अन्य जु देख्या तेली एक । पीलैं रेत न करैं बिबेक ।।
राम पूछै तेली सूं भेद । काहै करै रेती सु खेद ।।५५१८।।

रेत मांझ तेल क्यूं लहै । आप पचै र बैलकूं दहै ।।
बोला तेली सुणु तुम राम । जं जीवै यह मृतक इस ठांम ।।५५१९।।

रेत मांझ भी निकसैं तेल । मृतक जीवै तो सही ए पेल ।।
अैसी सुणि बोले रघुनाथ । ई गंवार तेली तु कुजाति ५५२०।।

रूठे कूं कहै तू है मुवा । अपने जीव का डर नहि हुवा ।।
कहा मारूं तेली पर षडग । कई सूं तोडि किया उपसरग ।।५५२१।।

अग्रे देख्या कोतक अवर । मटकी नीर बिलौवें तिह ठोर ।।
गुवाल थी बोलैं रघुनाथ । जल में माखरण निकसैं किह साथ ।।५५२२।।

कहै अहीर मृतक जे जीयई मुवा । तो जल मांहि घडि सनहुवैं ।।
कहै किसाण जे जीवैं मुवा । तो इह कमल हुवैं नवा ।।५५२३।।

क्रोधवंत तब होइ कै चल्या । जटा देव कौतिक किया भला ।।
मृतक एक लीया धरि कंध । रुदन करै मोह में अंध ।।५५२४।।

रामचन्द्र नैं दिष्या ताहि । समझावै वाकूं नरनाह ।।
एतो मोह करै किम मूढ । मुवा न जीवैं महा अगूढ ।।५५२५।।

जं लखमरण भी पावै प्राण । इह फिर जीवैं तेरा जांन ।।
जें राजा जीवावैं मुवा । तो ए भी जीव पावैगा नवा । ५५२६।।

छह महिने वाकूं गए बीत । ज्यों लखमण त्यों या की रीत ।।

राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना

अैसी सुण चेत्या रामचन्द्र । तोडया तुरत मोह का फंद ।।५५२७।।

ज्यौं असोग वृक्ष कूं पाय । जोग बिजोग सकल बह जाइ ।।
त्रिषा सैं व्याप्या पीवै नीर । मिटै सकल त्रिषा की पीर ।।५५२८।।

जैसे श्री जिनवाणी सुणें । भव्य जीव पावै सुख घणें ।।
ज्यों वटोही कौं बन मांहि । सीतल पावै वृक्ष की छांह ।।५५२९।।

जैसे तपसी पावै मोष्य । जनम जरा के टूटै दोष ।।
मोह दग्ध सबही बुझ गई । उपज्या ग्यांन चेतना भई ।।५५३०।।

बिहु भ्रमावै जीव बहु जौन । थिरन रह्या किया तिह गौन ।।
मात पिता सुजन परिवार । कीया भव में मोह अपार ।।५५३१।।

कोई नहीं जीव का सगा । सुभ अरु असुभ कर्म संग लग्या ।।
सुभ साता तैं पावै सुख । असुख उदय तैं पावै दुख ।।५५३२।।

मुवा न जीवै किस ही भांति । मैं क्यूं दुख किया दिन रात ।।
विकलप चुक्या भया संतोष । ग्यांन लहर सूं काया पोष ।।५५३३।।

तिहां देव करी वादली । पवन सुवास चली तिहां भली ।।
नांनी बूंद मेह की चुवै । देवांगनां चरणन कूं नवैं ।।५५३४।।

गावैं गीत सुहावना बोल । ताल मृदंग बजावैं ढोल ।।
रामचंद्र गुण गावै आन । महा सुकंठ सुहावनां तान ।।५५३५।।

दोनूं सुर तिहां अस्तुति करैं । तबै रघुनाथ पूछै उन खरैं ।।
तुम हो कवण कहो सांची बात । रूप अरुप बिराजै कांति ।।५५३६।।

कहैं देव हम तुम्हारे भगत । जटा पंखी मैं पाई सुर गति ।।
जब रावण नैं सीता हरी । तब में अपणी बल बहू करी ।।५५३७।।

उन मुन नै डारियां रोड । तुम ही सुनाए पचनाम बहोडि ।।
तुम प्रसाद मैं हुवा देव । सुख में कबहुं जाण्यां भेव ।।५५३८।।

सीता की सुध वीसर गया । तुम कारिज मै कवहुं न किया ।।
तुम व्याकुल लखमण कै काज । तब मुझ आसण कांप्यो आज ।।५५३९।।

इह कृतांतवक्र का जीव । सकल भूषण पै सुनी धरम की नींव ।।
तुम वचन कीया था एह । जे तुम लहो देव की देह ।।५५४०।।

हम माया में रहैं भुलाइ । वा समैं हमें समोधियो आइ ।।
जटा देव जब तुम पै चल्या । तब हम सौं मारग में मिल्या ।।५५४१।।

हम भी सुणि आये तुम पास । अब तुम करो मुगति की आस ।।
विद्याधर अनैं भूमिगोचरी । सगली सभा राम ढिग जुडी ।।५५४२।।

सत्रुघन सुं बोलैं राम । मध्य लोग की मुगतो ठांम ।।
राज विभूति दई सब तोहि । उत्तम षिमां कीजिए मोहि ।।५५४३।।

सत्रुघन विनवै तिण बार । तुम प्रसाद मुगत्या संसार ।।
राज भोग मैं किया अथाह । तुम कौं छोडि कहां हम जायं ।।५५४४।।

हम थी करैं तपस्या संग । राज भोग जिन रंग पतंग ।।
तप करि साधैं आतम ग्यांन । बहुरि न भ्रमैं भवसायर आंन ।।५५४५।।

राम सत्रुघन चिंता इह धरी । सकल सभा मिल अस्तुति करी ।।
धन्य राम त्रिभुवन पति राइ । धरम ध्यान यूं मन दिढ ल्याई ।।५५४६।।

सोरठा

मन में धरइ बैराग, राज रिध सब परिहरी ।।
दया भाव सूं राम, धर्म प्रीत राखो खरी ।।५५४७।।

इति श्री पद्मपुराणे लखमण संस्कार मित्र देव आगमन विधानकं

१११ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन के सांभलि बैन । रामचन्द्र सुख हुवा चैन ।।
धन्य सत्रुघन तेरी बुधि । समकित सुं तैं राखी सुधि ।।५५४८।।

अनंग लवन लवन का पूत । दीधीं सगली राज विभूति ।।
पट बिठाइ करि ढ़ाले कलस । अनंग लवन सबही में सरस ।।५५४९।।

परजा की रक्षा बहु करैं । दया दान चित बहु विध धरैं ।।
दुरजन दुष्ट सबैं छिप गये । मित्रां के सुख उपज्यो हिये ।।५५५०।।

भरथ चक्र ने छंडया राज । अैसा रामचन्द्र ने किए काज ।।
संभूषण भभीषण का पूत । दीयों लंका राज विभूत ।।५५५१।।

राजनीति सब जाणैं भली । प्रजा सुखीं मन मानै रली ।।
मदगम सुत अंगद का बली । सुग्रीव राज सोंप्या विध भली ।।५५५२।।

वेईराग भाव तब भयो नरेस । चाहै भया दिगंबर भेस ।।
अरहैदास सेठ पैं गए । सेठ महोत्सव बहू विध किए ।।५५५३।।

पूछैं सेठ से रावजी बात । गरु बतावो उत्तम जात ।।
सेठ कहैं सुव्रत हैं मुनी । चारण रिध ताहि ऊपनी ।।५५५४।।

मुनिसुव्रत स्वामी का बंस । महामुनी धरम का अंस ।।
अैसी सुणि मुनिवर पैं चले । अष्ट द्रव्य जे उत्तम भले ।।५५५५।।

पूजा कारण चले भूपाल । सेनां सकल चली तिह काल ।।
वन पैं मुनी का दरसन पाइ । उतरै भूमि सरब ही राइ ।।५५५६।।

करि डंडोत चरण कूं नए । देइ परिक्रमा ठाढे भए ।।
अस्तुति करि वोलियो नरेन्द्र । ठाढे भए साध को वृन्द ।।५५५७।।

स्वामी हम कूं देहु चारित्र । जीतें मोह कर्म के सत्र ।।
राजा सहस सोलह संग और । सत्ताईस सहस्र त्रिय संग और ।।५५५८।।

राम द्वारा मुनी दीक्षा होना

मुनिवर का पाया उपदेस । रघुपति भए दिगंबर भेस ।।
राज दोष तजि साधैं जोग । छांडे सकल जाति का भोग ।।५५५९।।
श्रीमती पास अर्जिका भई । बाईस विष सौं परिस्या सहीं ।।
अवधिग्यांन रघुपति को भया । धर्म उपदेस घणां नैं दिया ।।५५६०।।
सो बरषां लगि रहे कुमार । तीन सै बरस पिता की लार ।।
चारि सहस्र वरष भुवि साध । ग्यारह सहस्र पांच सो अडसठि बाधि
।।५५६१।।
इतना राज करया मन ल्याइ । पचीस वरष में केवल उपाइ ।।
एक सहस्र नैं बारह वरष । करी तपस्या मन में हरष ।।५५६२।।
खोटा खरा समझि तन भेद । मिथ्यातम का किया विछेद ।।
धरमरीत समझावैं ग्यांन । मिथ्या मानैं जे अग्यान ।।५५६३।।
जैन धरम की निंदा करैं । ते मिथ्याती नरकां पडै ।।
बहु तूनैं समकित पद गह्या । प्रानी का संसा नहीं रह्या ।।५५६४।।

सोरठा

सरब आउषो सत्रहै हजार, अनैं पांच वरष ।।
रामचंद्र जगदीश, प्रतिबोधे भविजन घणे ।।
धरया ध्यान इह ईस, ते महिमां कहां लग गिणे ।।५५६५।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रीराम निःक्रमण विधानकं

११२ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

आतम ध्यान करै रामचन्द्र । वाणी सुणत होई आनंद ।।
इनके गुण अति अगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ।।५५६६।।
रसना कोटिक करैं बखान । उनके गुण का अंत न आंन ।।
इन्द्र धरणेन्द्र जे अस्तुति करै । ते नहीं वोड अंत निखरै ।।५५६७।।
छठै महिने निमित्त आहार । नंदसतल नगरी के मझार ।।
रवि की जोतिन का परताप । महा मुनीस्वर सोभैं आप ।।५५६८।।
ईरज्या समिति सौं गजगति चाल । मांनौं मेर सुदरसन हाल ।।
सोभै कंचन बरण सरीर । उमडे लोग भई अति भीर ।।५५६९।।

देखैं रूप सराहैं गुनी । इनकी महिमा जाइ न गिनी ।।
कैं सुरपति कैं कोई देव । ग्यांनवंत ते समझैं जीव ।।५५७०।।

श्री रामचंद्र आए मुनिराइ । अहार निमित्त पहूंचे इस ठांइ ।।
घर घर द्वारा पेषण होइ । खेम सुष करैं सब कोइ ।।५५७१।।

उत्तम वस्तु र सोधैं सुध । सब कैं दान देरण की बुध ।।
सब ही व छै असा भाव । धन्य वहै जीमैं जिह ठाम ।।५५७२।।

नग्री में हुवा बहु सोर । छूटा हाथी बंधन तोडि ।।
दाहे फोडे हाट पट्टण ठांइ । घोडा छूटा तोडि हिरणहिरणाइ ।।५३७३।।

कोलाहल सुरिण प्रतिनदी भूप । निकस झरोखा देखैं भूप ।।
मुनि कौं देखि कहै रण भाइ । भेज्या किंकर लेहु बुलाय ।।५५७४।।

दोरा घणां आए मुनि पास । नमस्कार करि विनती भास ।।
दोइ कर जोडि बीनवैं खरे । हम पर प्रभुजी क्रिपा जो करैं ।।५५७५।।

हमारा राजा पासि तुम चलो । भोजन लेहु धरम में मिलो ।।
उनां नैं जाण्यां मुनी का भेद । अंतराय भया मुनी कुं खेद ।।५५७६।।

फिर आया वन मे धारया जोग । पसचाताप करैं सब लोग ।।
अब कैं बे मुनि आवैं फेरि । विध सौं भोजन द्यां इह बेर ।।५५७७।।

मुनि कूं भई अंतराइ, भूपति विधि समझैं नहीं ।।
फिर आए वन ठांइ, लिव ल्याए चिद्रूप सौं ।।५५७८।।

इति श्री पद्मपुराणे गोपुरसौं छोभ विधानकं

११३ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

षष्टमास अर गह्यो संन्यास । एक वरष पीछैं ए आस ।।
जे वन मे पाऊं आहार । भोजन कूं इछो तिह बार ।।५५७९।।

नगर मांहि नैं कबहु जांहि । असा मन राख्या उछाह ।।
प्रतिनंद राई प्रभावती अस्तरी । उनूं सोच असी विध करी ।।५५८०।।

जवउं दंड आवै इहां मुनी । दांन देय करि सेवा घनी ।।
नंदन बहुरि सरोवर वन मांझ । दंपति गए क्रीडा कुं सांझि ।।५५८१।।

करी रसोई उत्तम भली । बहु पकवांन सौंज बहु मिली ।।
महासुगंध मनोहर बने । हरिष हरिष बडे कीए घने ।।५५८२।।

षटरस व्यंजन प्रासुक नीर । भात दाल और उजली खीर ।।
रामचन्द्र उठिया मुनीन्द्र । राजा राणी भयो आनंद ।।५५८३।।

विधि सौं द्वारा पेषण किया । चरण धोइ गंधोदक लिया ।।
वैयाव्रत सौं दीया दान । मुखसौ बोंल्या सुभ भगवांन ।।५५८४।।

भई दुदुभी किनर गीत । रतनवृष्टि पुहुपन की रीत ।।
जैं जै कार देवता करैं । धन्य धन्य वचन मुख ही धरैं ।।५५८५।।

वनमें फिर कर लाग्या ध्यान । राजा कै चित समकित आंन ।।
बहुतां नैं समकित व्रत लिया । । सब ही कै मन आई दया ।।५५८६।।

दांन सुपात्रह दीजे सही । अरचा चरचा पूज करेइ ।।
बहुतों नैं छंडया मिथ्यात । मुनिसुव्रत सेवैं दिन रात ।।५५८७।।

रामचंद्र दें धरम उपदेस । मानैं राव रंक उपदेस ।।
अमृत वचन प्राण आधार । उतरैं भवसागर तैं पार ।।५५८८।।

मुनिवर ग्यांन गंभीर, कहैं धरम समझाइ करि ।।
पावैं हैं पर पीर, रामचद्र मुनिवर बली ।।५५८९।।

चौपई

नासा दृष्टि आतम ध्यान । बारह तप द्वादश व्रत जांनि ।।
तेरह विध सौं चारित्र धरा । समकित सौं दिढ राखैं खरा ।।५५९०।।

संच महाव्रत पांच सुमति । मन वच काया तीनुं गुपति ।।
संका रहित रह्या वन मांझ । करैं सामायिक बासर सांझि ।।५५९१।।

चउदह आठ परीसा सहैं । राग द्वेष सुं परहा रहैं ।।
च्यार कषाइ करी सब दूर । क्रोध मान माया कूं चूर ।।५५९२।।

अठाईस मूल गुण पाल । तोडया मोह करम का जाल ।।
पंचइन्द्री की रोकी चाल । छांडि दिया माया जजाल ।।५५९३।।

आरत रुद्र दुई ध्यान हैं बुरे । ते प्रभु नैं सब परिहरे ।।
धरम सुकल सो ल्याया चित्त । सुकल ध्यान की जांणी थित्त ।।५५९४।।

षट लेस्या का करया विचार । कृस्न नील कापोतैं टारि ।।
पल पल महाध्यांन चित चढया । शुक्ल ध्यांन बहु विध चित पढ्या
।।५५९५।।

सह रति सहैं परीसा घणी । धरम सुणावै संबोधि गुणी ।।
करि बिहार फिरे बहु देस । बहुतां नैं दियो धरम उपदेस ।।५५९६।।

भूचर खेचर दानव देव । निस दिन करैं राम की सेव ।।
कोटिसिला पहुंचे रामचन्द्र । नमस्कार करि ताकूं बंदि ।।५५९७।।

सिध सुमरण करि बैंठे तिहां । धरम ध्यान आतम गुण लिहां ।।
क्षिपक श्रेण आतमगुण लहौंन । श्रैसी विधि सौ ल्याया ध्यांन ।।५५९८।।

स्वयंप्रभू अच्युत विमांन । उनैं अवधि धरि समझ्या ग्यांन ।।
पूरब भव का किया विचार । मैं थी सीतां स्त्री अवतार ।।५५९९।।

रामचन्द्र लखमण दोउ वीर । नारायण बलभद्र सरीर ।।

सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन

मैं पटराणी राम भरतार । दुख सुख देख्या लारौं लार ।।५६००।।

लछमण मुवा अधोगति गया । रामचन्द्र व्याकुल अतिभया ।।
समझि जैन की दिष्या लई । राज विभूति सब तैं तजि दई ।।५६०१।।

द्वादस गुणस्थान करी स्थिति । अबै डुलाउं उसका चित्त ।।
ए थे भाई दोन्यूं बली । रामचंद्र बांधी स्थिति भली ।।५६०२।।

इहु ले मोष्य वहु भुगतैं नरग । उहां भोगमैं महा उपसरग ।।
इननै जान्यां संसार स्वरूप । दिक्षा धरी दिगंवर रूप ।।५६०३।।

जाई तैं पटालु करूं ग्रसत । भुगताउं संसारी वसत ।।
नंदीस्वर की कराउं जात । लछमण नैं काढूं किह भांत ।।५६०४।।

श्रैसी समझि उतरया सीतेन्द्र । कोटिसिला जठैं रामचन्द्र ।।
बहुत देव आए ता संग । बरसैं अति ही फूल सुरंग ।।५६०५।।

मंदा पवन पटल जल घणाई । झमकै मेह दगध कूं हुणेंइ ।।
छह रितु के फूले फूल । सीतल छांह सुख का मूल ।।५६०६।।

पंछी सगला करैं किलोल । सबद सुहावन मधुरे बोल ।।
मोरइ आंव कोइल धुनि करैं । सुवा पढै जिनवाणी खरैं ।।५६०७।।

सुर सीतां का रूप बणाइ । हंस गमन सोभा बहु पाइ ।।
रामचंद्र के उनमुख आइ । कहैक बोलो रघुपति राइ ।।५६०८।।

तुम कूं सब वन ढूंढत फिरी । अब हम भई महा सुभ घडी ।।
मैं दरसन अब तुम्हारा लह्या । चरण छांडि अब जाऊं किहां ।।५६०९।।

मैं मान्या नहीं तुम्हारा वचन । करी तपस्या वन मैं कठिन ।।
मो परि प्रभू होइ क्रिपावंत । अजोध्या चलि सुख करो अनंत ।।५६१०।।

तुम्हारी आग्या राखूं सीस । छंडो तप भुगतो सुख ईस ।।
करो राज भोग संसार । तपके किए देह सब छार ।।५६११।।

छीजै काया घटै स्वरूप । हम सीता नारी अन्य नैं स्वरूप ।।
चालो गेह भोग सब साज । काया सैं कष्ट सहो बेकाज ।।५६१२।।

मैं वन में साधै थी तप । श्री जिन ध्यान करै थी जप ।।
विद्याधर की कन्या आइ । मोसूं कही बात समझाइ ।।५६१३।।

जोवनवंत क्यूं दीक्षा लेइ । पच इन्द्री नैं क्यूं दुख देइ ।।
आतम कष्ट किया बहु दोष । जोवन वैस कीजिए पोष ।।५६१४।।

वृद्ध अवस्था कीजिए जोग । अब घर चालि कीजिए भोग ।।
तूं फिर आवै राम के पास । हम हैं कन्या इह मन आस ।।५६१५।।

तुम पटराणी हम सेवा करैं । रामचन्द्र सौं सब सुख भरैं ।।
वे भी तुम पै आवैं अन्तरी । तब सांची जाणुंगे खरी ।।५६१६।।

देवांगना एक सहस्र । बालक बैस रूप की हस ।।
सोलह सबै कीए शृंगार । आभरण सबै सोमैं इकसार ।।५६१७।।

रूणझणांट उतरी अपछरा । सबद सुहावन रस सुं भरया ।।
कोकिल कंठ कहै मुख बैन । रूपवंत अति दीरघ नैन ।।५६१८।।

बहुराग छतीस रागनी । सोलह कला संपूरन वनीं ।।
ताल मृदग बजावैं बीन । करैं नृत्य बोलैं आधीन ।।५६१९।।

राजभोग तजि बंठे आंन । ए सुख छंडि कहा होइ अग्यांन ।।
चलो प्रभू हमारे संग । सुख भुगतो दुख का करो अंत ।।५६२०।।

इन्द्री मोस्या होइ हैं पाप । ए सुख छीडि सहो संताप ।।
इह है भोग भुगत की वैस । मानूं तुम हमारा उपदेस ।।५६२१।।

बहुतैं भाव दिखावैं खरी । नांचै सरस महा गुण भरी ।।
वांह सठावै जंभाई लेह । पग अंगुष्ठ भूमि परि देह ।।५६२२।।

उछल घडी गहै द्रुम डोर । तोडै फूल सोमैं रंग सार ।।
सिर तैं वस्त्र धरिन परि पडैं । गावैं नाचैं भय नहीं धरैं ।।५६२३।।

मीठा वचन ठंठोलु हास । उनकूं नहीं संसारी श्रास ॥
सुकुल ध्यान सूं ल्याया चित्त । अनुप्रेष्या कूं परखैं नित्त ॥५६२४॥

स्याठ तीन तोडी परकित्त । च्यार करम सूं छुटया हित ॥
महा सुदि पिछली निस रही । दोइ घडी तैं अधिकी नहीं ॥५६२५॥

केवलग्यांन लबधि तिह बार । दसों दिसा भयो जय जय कार ॥
निरमल दीसैं दस हुं दिसा । दरसन किया मिटै है संसा ॥५६२६॥

इन्द्र श्रासण कंप्या तिह घडी । अवधि विचार बनती करी ॥
उतरी हेठैं डंडवत किया । धनदत्त कुमार कूं आग्या दिया ॥५६२७॥

कंचन मढी रची तिह ठौर । जै जै कार करी सुर और ५६२८॥

दूहा

इन्द्र धरणेन्द्र किन्नर सहित, किया महोत्सव आइ ॥
अष्ट द्रव्य सूं पूज करि, बारह सभा रचाइ ॥५६२९॥

व्यंतर देव सेवा करइ. नरपति खगपति और ॥
वाणी सुणि सब सुख लहैं, पाप बंध का छोर ॥५६३०॥

चौपई

सीत इन्द्र अवर सब देव । बिनवै सकल दीनता भेव ॥
हमनैं मता उपाया पाप । तुमकूं छल बल दए संताप ॥५६३१॥

तुमारा चित्त सुदर्शन मेर । असा कवण सकै तिह फेर ॥
हम परि क्षमा करहु जगदीस । बारंबार नवावैं सीस ॥५६३२॥

केवल वाणी अगम अथाह । उपजैं पुन्नि मिटै सब दाह ॥
मनकूं संसय होवै दूर । प्रांणी का है जीवन मूर ॥५६३३॥

रवि कै उदै तिमिर मिट जाइ । वाणी सुणत मिथ्यात पलाइ ॥
उपजी बुध धरम कैं सुनै । निहचै अष्ट करम कूं हनै ॥५१३४॥

केवलि वचन अपार, वानी सुनि निहचौ धरै ॥
सुख भुगतै संसार, बहुरि जाइ मुक्तैं बरैं ॥५६३५॥

इति श्री पद्मपुराणे पद्मस्य केवलज्ञान प्राप्ति विधानकं

११४ वां विधानक

चौपई

सीतेन्द्र लखमण चित आंन । वह राखै था मेरा मांन ॥
सेव हमारी कीनी घणी । उसकी महिमा जाइ न गिणी ॥५६३६॥

नरक बालुका भूमि तीसरी । ताकी गति असी स्थिति पडी ॥
अब मैं वाकूं काढूं जाइ । असे देव विचारूं भाइ ॥५६३७॥

मानुषोत्र पर्वत कैं निकट । तिहां बहुते मारग निकट ॥
धरया देव बालुका ठांव । राष्य सरूप है संबुक नाम ॥५६३८॥

लखमण कूं देवै बहु त्रास । मारै मुदगर बांण का नास ॥
फिर कर बिषर होइ इह देह । पल पल मारि करैं इह खेद ॥५६३९॥

पारा ज्यूं बिखरै फिर जुडै । मार मार सबद बहु करै ॥
जे जुझे थे रावण संग । भारत रुद्र में तज्या था अंग ॥५६४०॥

ते थी सकल भया इक ठौर । भुगतै दुख करैं अति घोर ॥
छेदन भेदन मुदगर मार । सहैं बेदना अगम अपार ॥५६४१॥

भोजन रयण मांस जो खाई । मद मधु सुरापांन ज्युं अचाइ ॥
उबर नैं कठूंबर भखै । ताता घंड लोह दे फकैं ॥५६४२॥

होट चीर ठोंसैं है प्यंड । ऊपर तैं ठोकैं हैं डंड ॥
तातो रांग डालैं सुख मांहि । सुरा पान का ए फल आंहि ॥५६४३॥

करैं आखेट हनैं बहु जीव । सुलां रोप्य दुख की नीव ॥
छेदन भेदन बारबार । ज्वारी चोर का काटैं हाथ ॥५६४४॥

परनारि बेस्या सुं रत्त । लोह फूतली कीजे जफत ॥
जोर भिडावें देही जुडै । सात विसन का ए दुख भरैं ॥५६४५॥

वैतरणी मैं दीजे डारि । मच्छ कछ ले काया फाडि ॥
कोई रूप सिंघ कोई स्वान । भखैं देह दुख पावै प्रान ॥५६४६॥

जिसका था तिसको कुछ वरै । देह परीस्या उनकूं धरैं ॥
सीतेन्द्र लखमण कुं जानि । संबुक नें समझाया ग्यान ॥५६४७॥

आरत रुद्र सेती इह गत्ति । अजहु मूढ न चेत्यो चित्त ॥
देख नारकी भय चिक करेइ । इहतो देव क्रांति बहु लहेइ ॥५६४८॥

सुरनै देख ह्वै गए सांत । पुछै संबुक देव कुं बात ॥
अवर छोडि आए तिहा घणे । राखो देव सरण आपणे ॥५६४९॥

पूर्व कथा

सीतेन्द्र बोलै समझाई । हूं सीता तू लखमण राई ।।
रामचंद्र की थी पटघणी । दंडक बन की प्रापति बनी ।।५६५०।।
तिहां तप साधै संबुक कुमार । लखमण नें मारिया अचुकार ।।
भया जुध खड़दूषण साथ । मोहि हरी लंका के नाथ ।।५६५१।।
रामचंद्र लखमण सुधपाई । संग्राम किया रावण सु' आई ।।
रावण मारचा मोहि आणी जीत । उदय भई करम की रीत ।।५६५२।।
घरतै मोहि दई निकास । भय दिव्य दीया जीवन की आस ।।
तप करि अच्युत स्वर्ग विमान । जैन धरम की मांनी आंनि ।।५६५३।।
जैन बिना नहीं लहिए मुक्ति । लखमण भया मोह की शक्ति ।।
कारण पाइ तिहां थी मरचा । छह मांसा लग राम लिये फिरा ।।५६५४।।
कृतांतवक्र अनै सुर जटा । उनही संबोघ्या मोह तब घटा ।।

बालुका पृथ्वी में रावण, लक्ष्मणएवं संबुकुमार की दशा

रामचंद्र नै दिष्या लई । केवल लबधि ग्यांन की भई ।।५६५५।।
असी सुणत अचभा भया । दया भाव कै मन भया ।।
रावण लखमण संबुकुमार । तीनु' बालुका भू'म मझार ।।५६५६।।
इनसु' देव कहैं समझाइ । तुम दुख दूर करो ले जाइ ।।
लखमण कू' जब लिया उठाइ । देही बिखर गई तिहं ठांइ ।।५६५७।।
बहू विध जतन किया तिह ठांई । पावै नहीं उनु'का जीव उपाई ।।
ज्यों दरपण में झांई देखि । हाथ न आवै किस ही भेष ।।५६५८।।
अ'सी भांति नारकी देह । दीसै प्रतिछ ऊपजै सनेह ।।
हाथ लगाया बिखरी पडै । नरक मांहि परस्पर भिडैं ।।५६५६।।
बेर बेर दुख पावैं घणां । रावण लखमण इह विध भणां ।।
हम तो बांध्या करम अथाइ । भुगत्या बिन न छूटा जाई ।।५६६०।।
अब कै करम भुगत्यां ही बणै । असी तुम पासैं हम सुणैं ।।
बहुरिन आवैं असी गति । इहां सु'णी कब लहैं मुगति ।।५६६१।।
देव कहै समकित मन धरो । मुगति करम इक भव ते करउ ।।
तप करि पहुंचोगे निरवाण । बहुरि न भ्रमैं चतुरगति आंन ।।५६६२।।
समकित बिन वीत्यो बहुकाल । कबहुं न चूका माया जाल ।।
बिन निसरै डोल्या बहु जौनि । च्यारू' गति मैं कीयो गौंन ।।५६६३।।

रोग सोग बहु पीडा सही । जैन धर्म मौं प्रीत न गही ।।
जे बहु करैं दान तप जाप । समकित बिना न टूटैं पाप ।।५६६४।।

अब राखो निसचल दिढ चित्त । केवल बाणी मानौं नित्त ।।
ग्रैंसी सुणि वे ग्रस्तुति करी । धन्य सीतेन्द्र दया चित धरी ।।५६६५।।

हम तो समोध्या दया निमित्त । निसचल रख्यां इक समकित्त ।।
बैठि विमांण चल्या ग्राकास । ग्रच्युत स्वर्ग जिहां था बास ।।५६६६।।

नरक देखि भया भयभीत । हीयो धदकै कांपै चित्त ।।
ग्रैंसे दुख भुगते कई बार । हींडत जीव न पायो पार ।।५६६७।।

राम केवली राम के पास ग्रागमन

श्री रामचन्द्र कूं केवलज्ञान । चले ग्रमर सुणि धरम बखान ।।
तारन तरन श्री रामचन्द्र । दरसन देखत होइ ग्रानन्द ।।५६६८।।

सीतेन्द्र के संग सुर घने । किंनर गंधर्व बहुतैं बने ।।
कंसाल ताल बाजैं बांसुरी । बीरण मृदंग की सोभा खरी ।।५६६९।।

करैं नृत्य गावैं बहु गीत । रामचन्द्र गुण सुमरण चित ।।
ग्राये देव महोच्छा कारण । समोसरण देख्या दुख हरण ।।५६७०।।

समवसरण

बारह सभा बैठी तिंह ठौर । निरमल दीसैं च्यारूं ग्रोर ।।
वन की सोभा ग्रति रमणीक । फूले फलैं दे दीसैं नीक ।।५६७१।।

जाणों भूमि रत्न मणि खरी । ग्रैंसी जुगति देवतां करी ।।
देई प्रक्रमा सिष्टाचार । ग्रस्तुति पढैं वे बारंबार ।।५६७२।।

तुम सम राम ग्रबर नहीं बली । मोह करम की प्रगति दली ।।
ग्यान खडग सौं करम बस किये । उत्तम ध्यांन विचारया हिये ।।५६७३।।

परिसह पवन तै पाप उडाइ । ग्रैसे तप साध्या मुनिराइ ।।
सुकल ध्यान सों केवल पाइ । भव जल पडे लगे ढिग ग्राइ ।।५६७४।।

जो तुम पाया मारग मोष्य । हमपै संगि ग्रपणौं द्यो सोष्य ।।
हमारी थी तुम परि बहु मया । पहुंचाग्रो मुक्ति करो ग्रब दया ।।५६७५।।
रामचंद्र इमि वाणी कहैं । जिनवाणी जे मन बच गहैं ।।
तब कोई पावै सरग मुक्ति । तेरह बिध सौं धरैं चारित्र ।।५६७६।।

जब लग क्रोध रु माया मान । लोभ काम तैं ग्रमै ग्रग्यांन ।।
पाथर कौं हीया तल राखि । जलपै तिरया चाहै धरि कांधि ।।५६७७।।

ऐसी हैं ये च्यार कषाय । ज्यों पाषाण सों तिरयों न जाइ ।।
पाथर संग तिरथा हैं कोइ । तारण समकित रथ ना होइ ।।५६७८।।

तजि कषाय तिरे संसार । छोडि देई सिर तैं सब भार ।।५६७९।।

लखण गुण के मारग जोइ । राग दोष छोडैं ए सोइ ।।
पंच महाव्रत समिति पांच । मन वच काया निसचै सांच ।।५६८०।।

छह रुति सहै परीसहा अंग । समकित नै दिढ राखै संग ।।
सम्यक दरसन ग्यांन चरित्र । इह विध होवै जीव पवित्र ।।५६८१।।

प्रश्न करना

भव जल पडैं जाइ सिव मध्य । जोति हीं जोति मिलिया विध्य ।।
सीता इन्द्र किया परसन्न । इह संदेह है मेरे मन्न ।।५६८२।।

राजा दसरथ जनक नै कनक । अपराजिता केकसी प्रभा वनक ।।
लवनांकुस का सबैं वृतांत । इनकी गति भई किण भांति ।।५६८३।।

भावमंडल कैसी गति लही । इह चिंता मेरे चित रही ।।

राम की वाणी

श्री रामचंद्र की वाणी हुई । भव्य जीव सुणैं सब कोई ।।५६८४।।

राजा दसरथ आणत विमांण । जनक कनक भी वाही ठाण ।।
अपराजिता केकसी कैकइया । सुप्रभास वैं देवगति पया ।।५६८५।।

व्हां तैं अपणी आर्वल पुर । एका भव मुकति मै जुरि ।।
भावमंडल तणी सुंण कथा । भोग भूमि तणां नैं दीपता ।।५६८६।।

भोग भूमि का भोगतै सुख । उनकूं ए करती नहीं दुःख ।।
सीतेन्द्र पूछैं वे कर जोडि । भावमंडल की कहो बहोडि ।।५६८७।।

कुर भोग भूमि कवण पुन्य लही । उनै तपस्या कीनी नहीं ।।
रामचन्द्र बोलैं भगवान । भावमंडल का कहै बखांन ।।५६८८।।

नगर अजोध्या सेठ कुंभपति । मकरी त्रिया सेती बहु हित ।।
काम वज्रांक दोन्युं पुत्र । ज्युं शशि की अति क्रान्ति ।।५६८९।।

भोग मुगति दिन बीता घणे । भया वैराग कुंभपति मणे ।।
अमृतसोग मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई मन वच करि काइ ।।५६९०।।

मकरी सुन कैं तब वैराग । इन भी सकल परिग्रह त्याग ।।
अरथ द्रव्य पुत्रां नैं दिया । इन भी जाइ जैन व्रत लिया ।।५६९१।।

असोग तिलक वन में धरि जोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।
वे दोनूं जे सेठ के पूत । सुख मैं थे लखमी संजुक्त ।।५६९२।।

इक दिन मात पिता चित आंन । दोनु गए तिहां उद्यान ।।
अमृतसोम मुनि कौं देख । नमस्कार करि पूछैं भेख ।।५६६३।।

हमारे मात पिता कित ठांव । कहो प्रभू तिह है हम जांव ।।
मुनिवर नैं वे दिये बताइ । ये भी भए दिगम्बर राइ ।।५६६४।।

करैं तपस्या आतम ध्यांन । गुरु आउषो पूरी जांन ।।
नवग्रीव पाइया बिमांन । सिखउ किया ता मकर का ध्यांन ।।५६६५।।

पंचास जोजन रेत की मही । तिहां मनुष काई दीसै नही ।।
पड़ै धूप धरती बहु तपै । रूख नहीं तिहां छाया छिपै ।।५६६६।।

असे मारग निकते साध । देख्या वृक्ष घेर सु बांध ।।
वाकी छाया बइठे जाइ । भावमंडल वहां निकस्या आइ ।।५६६७।।

देख जती तिहां थंभ्या विमांण । उतरि भूमि पग लाग्या आन ।।
मुनिवर कूं दीया आहार । मारग सगला भला संवार ।।५६६८।।

वइयाव्रत कियां बहु भांति । मुनिवर गये जिनेस्वर जात ।।
भावमंडल अंतहपुर जाइ । मांन भालिनी गुणहराइ ।।५६६९।।

सोवै थे सप्त खर्णं ग्रेह । दामनी घात सों छोडी देह ।।
दंपति जीव दख्यनी ओड । भोग भूमि की पाई ठोड ।।५७००।।

तीन पल्य की आव प्रमांण । तीन के साका कीया जांण ।।
आंवला सम तैं लेइ अहार । बहुर सुरगगति लेइ अवतार ।।५७०१।।

उहां तैं चए फेरि तप करैं । तब दोनूं सिव मग पग धरै ।।
सुपात्र दान फल हुवा सहाइ । तातैं दान देहु मन ल्याइ ।।५७०२।।

लवनांकुस पंचम गति लहैं । प्रानी का संसा नहीं रहै ।।
सीता देव पूछै कर जोडि । रावण लक्षमण की कहो बहोडि ।।५७०३।।

किस विध इनका कारज सरै । वे कद भव सायर तै तिरै ।।
रामचन्द्र कहैं केवल बचन । बालुका भूमि रावण लछमन ।।५७०४।।

सागर सात भुगतैगे राज । उहाँ तैं निकसि पूरब षेत्र की ठाव ।।
हरिक्षेत्र विजयावती नगर । सुनदा सेठ धरम का अगर ।।५७०५।।

रोहिणी नाम साह की अस्तरी । सील संयम सो सोभै खरी ।।
दोनूं उसकै लें अवतार । अरहदास तसु प्रथम कुमार ।।५७०६।।

रिषभदास दूजा हुवौ पुत्र । दोनुं गुण लख्यण संजुक्त ॥
अणुव्रत पालैं वे दिन रात । सीलवंत सोभा की कान्ति ॥५७०७॥

सुख सेती तिहां आव विहाइ । सुर सौधरम अमर की काय ॥
सागर एक आयु बल पूर । या ही देस चवैं दोऊ सूर ॥५७०८॥

कुमार कीरति तिहां भूपती । लखमी राणी के गरभ थिति ॥
जयकीरति जय प्रभु औ होइ । रूप कान्ति करि सोभैं दोइ ॥५७०९॥

अणौव्रत करि धरम सों ध्यान । ह्वां तैं पावैं लांतव सुर थांन ॥
स्वर्ग लोक के भुगतैं भोग । भूलि गये पिछला सब सोग ॥५७१०॥

सीतेन्द्र अजोध्या में चवै । चक्रवर्त छह षंड भोगवैं ॥
दोनुं देवपुत्र हुए आइ । इन्द्ररथ अंभोदरथ राइ ॥५७११॥

सर्वरतन रथ दिष्या लेइ । राज भार पुत्र को देई ॥
तपकरि पावैं विजयवंत वास । इन्द्र अंभोद दिक्षा गुरु पास ॥५७१२॥

सोलह कारण का व्रत पाल । विजय अंत पहुंचैं तिह बार ॥
उहां तैं चय रावण को जीव । ह्वै अर्हन भरत जंबूद्वीप ॥५७१२॥

सरबरतन गणधर होइ । धरम उपदेस सुणैं सब कोइ ॥
जाइ मुकति तिहां सुख अनंत । फिर पूछैं सीतेन्द्र महंत ॥५७१४॥

लक्षमण के प्रति जिज्ञासा

कहां उपजैं लखमण महान । पुष्कराद्ध द्वीप चवै आंन ॥
सद भूपति पुत्र नगर कैं ग्रेह । दोई पदइ याइ धरि देह ॥५७१५॥

चक्रवर्त्ति हुवौ अरिहंत । पावै भव सागर का अंत ॥
सात वरष बीतैं जब जाइ । हम भी लहैं मुगति पद ठांइ ॥५७१६॥

सीतेन्द्र कीया नमसकार । गये फेर सुर अपने द्वार ॥
ह्वांते फिर आये सब देव । कुरु भोग भूमि का देख्या भेव ॥५७१७॥

भामंडल ते वह सुर मिलया । पिछला सनबंध सुणा था भला ॥
देव गया फिर अपनैं थान । रामचन्द्र सिद्धउ कै ध्यान ॥५७१८॥

पचीस बरस लौं सुमरे सिध । पहुंचे प्रभु मुगति की रिध ॥
चतुरनिकाय आये सब देव । जय जय सबद दुंदुभी भेव ॥५७१९॥

पुष्प वृष्टि भई तिहां घणी । निर्वाण कल्याणक सोभा बणी ॥
अष्टद्रव्य सूं पूजा करी । पढे मंत्र जिनवाणी खरी ॥५७२०।

सोतोदेन्द्र सुमरैं धरि चित्त । गुणावाद सों ल्यावे हित्त ।।
पूजा करि पहुंचे सुर लोक । अस्तुति भई तीनूं लोक ।।५७२१।।

पद्मपुराण के स्वाध्याय का महात्म्य

रामचंद्र गुण समुद्र गंभीर । सुमरण किया मिटै सब पीर ।।
अनुमात्रक किया बखांन । रामचन्द्र का पदमपुराण ।।५७२२।।

जे कोई सुणैं उठि परभात । सुखसेती बीतै दिन रात ।।
षत्री होई सुणैं बलवान । जिहा तिहां कहिये जयवांन ।।५७२३।।

दुरजन दुष्ट लगैं सब पाइ । कोई न सनमुख जीतै आइ ।।
सब परि उसकी होवै जीत । जाणैं सकल जुध की रीत ।।५७२४।।

जे कोई सुणैं धरम के काज । पावै तीन लोक का राज ।।
धरम ध्यान सुं पाप न रहै । केवल ग्यांन जीव वह लहै ।।५७२५।।

धरम प्रकास जिहां जाइ निरवांण । भ्रमैं नहीं भवसागर आंन ।।
दुखी दलिद्री नर जे सुणैं । बढैं लछि सुख पावै घणे ।।५७२६।।

नारि विहुंणा जे नर होइ । मन बांछित फल पावैं सोइ ।।
पुत्र हेत जौं सुणैं पुरांण । सुख सम्पति पावैं असमान ।।५७२७।।

प्रथवी परि प्रगटै जस घणां । रोग कलेस जाइं सब हण्या ।।
करम उदै ते व्यापै दुख । राम सुमरि पावैं सब सुख ।।५७२८।।

जे पापी सुणि निंदा करैं । ते जीव घोर नरक में पडै ।।
मिथ्याती प्रतीत नैं चित्त । सरधा नहीं धरम सुं हित ।।५७२९।।

जे समकिती सुणैं पुराण । पावैं गति देव निरवांण ।।
श्रेणिक नृप सांभलि इह भेद । सब संसय का हुवा खेद ।।५७३०।।

सकल सभा मन भयो संतोष । बहुत प्राणी या पाई मोष्य ।।
श्री जिनवाणी का नांही अंत । वचन एक भेद बहु मंत ।।५७३१।।

गौतम स्वामी कह्यौ अरथाई । अमृत वांनी सबैं सुहाइ ।।
सरव भूत सुणि हिये विचार । अवधि ग्यांनी समझै निरधार ।।५७३२।।

जगसेन सूरति केवली । मुख पाठ उन भाखी भली ।।
क्रितांतसेन ने लिष्या इह ग्रंथ । कोडि सिलोक संपूरण अर्थ ।।५७३३।।

अवरानैं पुराण लिख पढैं । जिसके सुणैं धरम हित बढै ।।
उनका सिष्य सबदन मुनि भया । इन्द्रसेन मुनि नैं पट दिया ।।५७३४।।

अरहसेन भये सु मुनिंद । लखमनसेन ज्यों पृथिवी चंद ॥
बिन ओकया स्लोक सहस्र ज्यों स्पाठ । बरण्यों बहु तिहां पूर्जा पाठ
॥५७३५॥

रवि षेणाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना

रविषेन किया अठारह सहस्र । सुणैं भव्य जीव सौ बांधैं बंस ॥
होई पुन्य उत्तम गति लहैं । भव भव दुख दालिद्र न रहैं ॥५७३६॥

अथवा लहै अमर पद थांन । कारण पाइ लहै निरवाण ॥
मिथ्याती जे धरम का दुष्ट । उनकुं सदा रहै बहु कष्ट ॥५७३७॥

जिनवाणी तैं भाजै दूरि । तिण नैं होवै दुख भर पूरि ॥
दालिद्र सदा न छोडै संग्य । इष्ट वियोग अनिष्ट ग्रग्य ॥५७३८॥

मन की इछा कदे न होइ । आदर भाव करैं नहीं कोइ ॥
तिसकुं कोई न महिमा होइ । जिहां तिहां महिमा जलंभा लेइ ॥५७३९॥

कलह करम सों बीतै घडी । खोटी बुधि नहीं बीसरी ॥
रात दिवस में आरत ध्यान । पावै अंत नरक गति थांन ॥५७४०॥

भव्य जीव सुणैं धरि रुचि । सदा हुवैं उत्तम गति सुचि ॥
सीलव्रत पालै बहु भाइ । काटि करम ऊंची गति जाइ ॥५७४१॥

असी जाणि चलैं मग सुधि । धरम होइ बाढै अति बुधि ॥
कुमति कलेस सकल मिट जाइ । राम नाम तसु होइ सहाइ ॥५७४२॥

सहस्र एक अरु दोईसैं बरस । छह महीने बीते कछु सरस ॥
महावीर निरवाण कल्याण । इह अंतर है रच्या पुराण ॥५७४३॥

रविषेण नाम मुनिवर निरग्रन्थ । पदमपुराण रच्या सुभ ग्रन्थ ॥
तिसके सुण्या होइ बहु रिध । कारण पाइ पद पावै सिद्ध ॥५७४४॥

चलै देस नाम जो लेइ । ताको मनवंछित फल देइ ॥
जैसे रवि का होइ प्रकास । होवै अंधकार का नास ॥५७४५॥

पद्मपुराण पढने की महिमा

अैसा है यह पदम चरित्र । मिथ्या मोह मिटै सब सत्र ॥
पढैं पढावैं कहैं बषांन । पावैं स्वर्गं देव विमांन ॥५७४६॥

समकित सेती पढ़ै अरु सुणैं । निसचै अष्ट करम कुं हणैं ।।
केवलग्यांन होइ उतपत्ति । पावै निसचै पंचम गति ।।५७४७।।

जिस समै वर्णन होइ पुराण । सुख बिलास और सदा कल्याण ।।
मनवांछित फल पावै घणे । ते प्रानी सब निसचै सुणे ।।५७४८।।

दूहा

पदमपुराण कुं जे पढ़ैं, बांच सुणावै और ।।
तिहूं लोक का सुख लहैं, पावैं निरभय ठौर ।।५७४९।।

११५ वां विधानक

चौपई

काष्ठा संघ पट्टावली

काष्ठा संघी माथुर गच्छ । पहुकर गण में निरमल पछ ।।
महा निरग्रंथ आचारज लोह । छांड्या सकल जाति का मोह ।।५७५०।।

तेरह विध चारित्र का धणी । कांम क्रोध नहीं माया मणी ।।
महा तपस्वी आतम ध्यांन । दयावंत बहु निरमल ग्यांन ।।५७५१।।

जिहां है उत्तम क्षिमां आदि । छोडैं पांच इन्द्री का स्वाद ।।
रूप निरंजन ल्याया चित्त । अठाईस मूल गुण नित्त ।।५७५२।।

चौरसी क्रिया संजुक्ति । जे क्षाइक समकित सौं रत्ति ।।
कहै ग्यांन के सूक्षम भेद । वाणी सुणत मिथ्यात का छेद ।।५७५३।।

अग्रोहे निकट प्रभु ठाढे जोग । करै बंदना सब ही लोग ।।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध । त्रेपन क्रिया बताई सोध ।।५७५४।।

पंच अणुव्रत सिख्या च्यारि । गुणव्रत तीन कहे उर धारि ।।
बारह व्रत बारह तप कहे । भवि जीव सुणि चित में गहे ।।५७५५।।

मिथ्या धरम कियो तिरां दूरि । जैन धरम प्रकास्या पूरि ।।
विध सौं दान देइ सब कोई । सासत्र भेद सुंणि समकित होइ ।।५७५६।।

दस लाख्यणी बताया धरम । तीन रत्न का जाण्यां मरम ।।
व्रत विधांन समझाई रीत । पूजा रचना करैं सुचित ।।५७५७।।

श्री जिन के कीए देहुरे । चउबीस बिंब रचना सु करे ।।
चउविध दांन दे वित्त समांन । चउघरीया प्रणधमी प्रमांन ।।५७५८।।

जीव दया पाले बहुभांति । भोजन नीर विवरजित राति ।।
दीपग मयांन जाग्य सब हिए । बहुत संबोधे श्रावग कीये ।।५७५९।।

दिल्ली मंडल का मुनिराय । जिसके पट्ट भया बहु ठांइ ।।
धरम उपदेस भव्यां कुं भला । पूजा प्रतिष्ठा जामें भला ।।५७६०।।

पंडित पटधारी मुनि भए । ग्यांनवंत करुणां उर थए ।
मलयकीर्त्ति मुनिवर गुणवंत । तिनकैं हिए ध्यांन भगवंत ।।५७६१।।

गुणकीर्त्ति अर गुणभद्रसेन । गुंणावाद प्रकासैं जैन ।।
भान कीरति महिमां अति घणी । विद्यावंत तपस्वी मुनि ।।५७६२।।

कुंवरसेन भट्टारक जती । क्रिया श्रेष्ठ हैं उज्जल मती ।।
उनकैं पट सुभचन्द्र सुसेन । धरमवखांन सुणावैं बैंन ।।५७६३।।

मूल संघ भट्टारक प्रशस्ति

श्री मूलसंघ सरस्वती गछ । रतनकीरत मुनि धरम का पछ ।।
तारण तरण ग्यांन गंभीर । जाणैं सहु प्राणी की पीर ।।५७६४।।

तप संयम तै आतमध्यान । धरम जिनेस्वर कहैं बखान ।।
छूटै मिथ्या उपजैं ग्यांन । जे निसचै धरि मनमें आंन ।।५७६५।।

गुरु के वचन सुणि निसचै धरैं । ते जीव भवसागर तिरैं ।।
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या संसार । पहुंचे स्वर्गलोक तिह बार ।।५७६६।।

उनकैं पट्ट रामचन्द्र मुनी । आचारिज पंडित बहु गुनी ।।
कहैं ग्यांन के सूक्ष्म अंग । ई बुद्धि उनके प्रसंग ।।५७६७।।

महा मुनीस्वर उत्तम बुधि । कहैं धरम जिन वाणी सुधि ।।
जिसकैं हिए होइ समकित । सरधा करैं धरम में नित ।।५७६८।।

श्री रामचन्द्र का सुणैं पुराण । सुख संपति पावैं कल्याण ।।
धरम दया पालैं मन लाइ । ते जीव मोक्ष पुरी मां जाइ ।।५७६९।।

दूहा

पदम पुराण पूरन भया, रविषेना की बुधि ॥
जे निहुसचैं धरिकैं सुणैं, पावैं समकित सुधि ॥५७७०॥

इति श्री पद्मपुराणे सभाचंद्र कृत सपूरनंम् ॥ संवत १८ से ५६ आषाढ बदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पंडित मोतीराम लिखायतं साहु जी गंगाराम जी की बहू जाति बोरायां माडलगढ का उतराय अठाई का व्रत में पंडित मोतीरामेन दीये ग्रंथ संख्या हजार ११ रुपया ७ दीया निजरानां का । शुभं भवतु

नामानुक्रमणिका

(पद्मपुराण में प्रमुख महापुरुषों के नाम पचासों बार आये हैं—जिनमें राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, रावण, विभीषण, मंदोदरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इसलिए ऐसे नामों के यहां पूरे पृष्ठ अंकित नहीं किये हैं)।

आ, इ, उ

क, ख, ग

च, छ, ज

त, थ, द, ध, न

प, ब, भ, म

य, र, ल, व

स ष श ह

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	विशेष
७७	—	षष्ठ संधि	विधानक समाप्ति पर जोड़े
१००	नवम विधानक	अष्टम विधानक	
१०६	दसम ,,	नवम ,,	
११३	नारन पर उपवर्ग	नारद पर उपसर्ग	
१२६	१३ वां विधानक	११ वां विधानक	
१३१	१४ वां ,,	१२ वां ,,	
१३७	१५ वां ,,	१३ वां ,,	
१४६	१६ वां ,,	१४ वां ,,	
१५६	१७ वां ,,	१५ वां ,,	
१६१	१८ वां ,,	१६ वां ,,	
१६४	१९ वां ,,	१७ वां ,,	
१७४	२० वां ,,	१८ वां ,,	
१८०	२१ वां ,,	१९ वां ,,	
१८१	२२ वां ,	२० वा ,,	
१८४	२३ वां ,,	२१ वां ,,	
२६६	सुप्रीव ,,	सुग्रीव ,,	
२३१	२६२४	३६२४	
३५१	दलन	मिलन	
४००	कनथ	कथन	

लेखक एवं सम्पादक का परिचय

नाम— कस्तूरचन्द कासलीवाल

जन्म स्थान— सैंथल–तहसील दौसा, जिला जयपुर (राजस्थान)

जन्म तिथि— ८ अगस्त १९२०, भाद्रपद संवत् १९७७.

पिता— श्री गैंदीलाल जी । माता— श्रीमती गेन्दाबाई

भाई— श्री चिरंजीलाल जी (ज्येष्ठ भ्राता) वैद्य प्रभुदयाल जी भिषगाचार्य (कनिष्ठ भ्राता)। बहिन— श्रीमती गुलाब देवी

पत्नी— श्रीमती तारा देवी

पुत्र— निर्मल कुमार, नरेन्द्र कुमार

पुत्रियां— निर्मला, शशिकला एवं सरोज

पौत्र पौत्री— अविनाश, आलोक एवं अमृता

शिक्षा— एम. ए. (वर्ष १९४६ आगरा विश्वविद्यालय) शास्त्री (जयपुर)
पी-एच. डी. (राज. विश्वविद्यालय–सन् १९६१)
विषय—Jain Grantha Bhandars in Rajasthan

प्रमुख गुरु— पं. चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ

व्यवसाय— केन्द्रीय सेवा (सन् १९४९ से १९७८ तक)
साहित्यिक सेवा—सन् १९४७ से अद्यावधि

लेखन एवं सम्पादन—

I. १–५ राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची (पांच भागों में) (६) प्रशस्ति संग्रह, (७) प्रद्युम्न चरित, (८) जिरणदत्त चरित, (९) हिन्दी पद संग्रह, (१०) राजस्थान के जैन सन्त–व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (११) महाकवि दौलतराम कासलीवाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१२) चम्पा शतक, (१३) शाकम्भरी प्रदेश के विकास में जैनों का योगदान, (१४) Jain Grantha Bhandars in Rajasthan, (१५) वीर शासन के प्रभावक आचार्य, (१६) महाकवि ब्रह्म रायमल—व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१७) कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि, (१८) भट्टारक रत्नकीर्ति एवं कुमुदचन्द्र, (१९) आचार्य सोमकीर्त्ति एवं ब्रह्म यशोधर, (२०) बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एवं हेमराज, (२१) बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि, (२२) मुलतान जैन समाज–इतिहास के आलोक में, (२३) मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण, ३० से भी अधिक ग्रन्थ।

II. दश से अधिक अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ एवं स्मारिकाओं के सम्पादक के प्रमुख रूप में सहयोग,

III. नाटक–परित्यक्ता, लड़की, नयी दिशा, तपस्विनी, घर की लाज, धरम करम आदि, सभी मंचित ।

IV. २०० से भी अधिक लेख—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में—Illustrated Weekly, कादम्बिनी, सप्तसिन्धु, परिषद् पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका, राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रदूत, नवभारत टाइम्स, वीरवाणी, सन्मतिवाणी, तीर्थंकर आदि ।

V. सम्पादक—वीरवाणी (पाक्षिक) जयपुर,

VI. संस्थापक—श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी, महिला जाग्रति संघ;

VII. अध्यक्ष—राज. जैन साहित्य परिषद्, ज्ञान विद्यालय,

VIII. सम्मानित वीर निर्वाण भारती मेरठ, अ. विश्व जैन मिशन अलीगंज, महिला जाग्रति संघ जयपुर, भ. महावीर २५०० वां परिनिर्वाण समिति, दि. जैन समाज निवाई आदि ।

IX. सक्रिय सदस्य—अ. भा. दि. जैन विद्वत् परिषद्, शास्त्री परिषद्, अ. भा. दि. जैन परिषद्, दि. जैन महासमिति, दि. जैन महासभा आदि, संयुक्त मंत्री दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर,

X. सन् १९६१ से लेकर सन् ८४ तक आरा, गयाजी, वाराणसी, नागपुर, अहमदाबाद, सागर, इन्दौर, उज्जैन, देहली, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, पाली, ब्यावर, कोल्हापुर, यादवपुर, कलकत्ता, जबलपुर, कोटा, अजमेर, बम्बई, सोलापुर, आदि नगरों में आयोजित ७० से भी अधिक सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में निबन्ध वाचन

XI. साहित्यिक खोज शोध के अन्तर्गत अब तक सैकड़ों कृतियों एवं उनके कवियो की प्रथम बार खोज,

XII. १५ से भी अधिक बार आकाशवाणी जयपुर एवं देहली द्वारा दर्शन, साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति पर वार्ताओं का प्रसारण

XIII. वर्तमान गतिविधि—जैन साहित्य की खोज एवं शोध, समाज सेवा, शोधार्थियों को मार्ग निर्देशन आदि ।

पता :—867, अमृत कलश, बरकत नगर, किसान मार्ग, टोंक फाटक, जयपुर–15